

کتابخانه

کتابخانه

1850



ہندوستانی کلاچر مہاساہتی کا پرچا

پہلی طر—

ناراچند، مہاواندین، مہاکمال ہسن، نیرامناث، سندرلانی

قارا جند - بھگوان دین - مظفر حسن - بشپٹر فاقہ - سفلر لال

جولائی ۱۹۲۷

جولائی ۱۹۲۷

سکا

کیا کس سے

۱—دو بپدے (گوت) — شری "نیرج" کانپور	۱	۱	...
۲—جناتا کی ہندوستانی — ڈا۰ مالتا پساد	۲	۲	...
۳—تین گیت — روائیڈناث ڈاکور	۳	۳	...
۴—مائلانا مہامد کابم — شری رتنلال کسلا	۴	۴	...
۵—شاکر کپڑی (کھانی) — شری نیرا مہاکر	۵	۵	...
۶—سماج اور ساناج — جناب بھنگول ہنوم ساہب	۶	۶	...
۷—پرواں سے بپدے پرچر (گوت)	۷	۷	...
۸—ہندوستانی کلاچر اور سنگیت — بنگت	۸	۸	...
۹—آج کی دنیا — شری "نیرج"	۹	۹	...
۱۰—کچھ کتاہیں	۱۰	۱۰	...
۱۱—ہماری رات	۱۱	۱۱	...

۱—دو جوتے (گیت) — شری "نیرج" کانپور	۱	۱	...
۲—جنگلی ہندستانی — ڈاکور مالتا پساد	۲	۲	...
۳—تین گیت — ریڈر فاقہ کپڑی	۳	۳	...
۴—مولانا محمد قاسم — شری رتن لال کسلا	۴	۴	...
۵—آخر کیوں (کھانی) — شری وشو پربھاکر	۵	۵	...
۶—سماج اور ساناج — جناب عبدالکلام صاحب انصاری	۶	۶	...
۷—پنگوں سے پالا دیئے پتھر (گیت)	۷	۷	...
۸—ہندستانی کلاچر اور سنگیت — بنگت	۸	۸	...
۹—آج کی دنیا — شری "نیرج"	۹	۹	...
۱۰—کچھ کتاہیں	۱۰	۱۰	...
۱۱—ہماری رات	۱۱	۱۱	...

کرمات—ہندوستان میں کچھ روپیہ سال ہا ہر دس روپیہ سال
 ایک پرچا دس آتے۔

قیمت—ہندوستان میں کچھ روپیہ سال ہا ہر دس روپیہ سال
 ایک پرچا دس آتے۔

‘नया हिन्दु’

‘नया हिन्दु’

जिल्द ३

(जुलाई सन् १९४७ से दिसम्बर सन् १९४७)

लेखक और उनके मज़भून

अ

संका

अ

श्री अयोध्या प्रसाद गोयन्धी

वर्द्ध शायरी का मर्म

(जनाब) अल्लाफ मसहवी

द्वार (गीत)

(भाई) आँकार नाथ जी शास्त्री

एकता और भी अधिक ज़रूरे में

(जनाब) अकरम साहब इलाहाबादी

सपन पूजा (गीत)

बालक शिकारी

(जनाब) अब्दुल हलीम साहब अंसारी

समाज और साम्राज्य

नया हिन्द की सालगिरह

क्या देखा

में आदमी नहीं है

खुनके आँसूओं का नखराना

(मौलाना) अफसईद साहब मुमकावी

दिसंबर

(आचार्य) काका कालेरकर

हम विरवास क्यों खोएं

भी किशोर लाल मशरूवाला (बर्धा)

रोमन हरूफ में देशी भाषाएं

अहिंसा के विकास पर एक नखर

कुछ किताबें

कल्पना कानन

इनसान

नगाने

मानव धर्म प्रचारक

गरिबी या असमंती

१०४

...

...

भरखि
खटपट चाल
नोवाखाली में
प्रारंभिक रचनाएं (तीसरा भाग कहानियाँ)
प्रेम तरंग उर्फ तराना चलकत (हिस्सा दोयम)
विरव का राजनैतिक भविष्य
ए. मुसलिम भाई
रुहं रोशन मुस्तकबिल
श्री कंदार नाथ मुखाफकर नगर
नोआखाली
श्री फुजियत (कौमी सिरदमतगार)		
आज की दुनियां (१)
" (२)
" (३)
" (४)
" (५)
" (६)
कौसरी बेगम लखनऊ
दो दोस्त कहानी

ग

५६६	हिन्दुस्तानी कलचर और	...
५७०	संगीत (५)	...
५००	" (६)	...
५०२	" (७)	...
५०३	श्री गुरु दयाल मलिक	...
५६२	में हैं आकाश	...
५६३	आपने दिल से एक दो बातें	...
५६४	ड० गोरख प्रसाद	...
४७४	देवनागरी में सुधार	...
६६	भाई चन्द्र दत्त सेनानी	...
१७६	हिन्दू मुसलिम ब्योहार	...
२७६	श्री चिरजीत (देहली)	...
३७७	पंखों से बांध दिये पत्थर (गीत)	...
४: ४		...
५८३		...
१७०	(डा०) जाकर हसन उस्मानिया यूनीवर्सिटी हैदराबाद	...
	हमारे गिनावे के कुछ आंकड़े और हमारा राज...	...
	(जनाब) जाकर हुसैन खाँ कानपुर	...
	व्यवान के बारे में कुछ बातें (एक खत)	...

ज

श

स

दी धियासाक्रिकल मुवमेन्ट से

इसलाम - अपने को अल्लाह की मरथी पर खोड़ देना

३२६

(भाई) मयुकर खेर

इंसानियत (कहानी)

(डा०) मसऊद हुसैन खां अलीगढ़

गुलामों का नाच (गीत)

(प्रो०) शैयद मसीउर्रामा जायसी

बिकट कहानी

(हजरत) परवाया जाफरी

गीत

....

....

१०३

(डा०) माता प्रसाद गुप्त

जनता की हिन्दुस्तानी

(जन।व) बिस्मिल साहब इलाहाबादी

लिखें, बोलें, पढ़ें हिन्दुस्तानी (गीत)

नया दौर (गीत)

....

....

५१३

श्री यालवक्य अजमेरी

हिन्दी का पहला मुसलमान कवि

स

र

(डा०) भगवान दास बनारस

सब भजहार्यों की एकता (१)

" " " " (२)

....

....

४१३

श्री रतनलाल वंसल

मौलादा मोहम्मद कासिम

....

....

भगवान दीन

गाविच

....

....

४४१

रबीन्द्रनाथ ठाकुर

....

....

तीन गीत	२०	पन्द्रह अगस्त
"	१२३	आषाढी का यह दिन
पूजा के तीन गीत	२२०	हिन्दुस्तानी और दो लिखावटें
राह देखना	३२५	गांधी जी और अमृतसरी गौखलाहट
श्री राम जी दर	१५२	पंजाब की बरबादी
जलियां वाला बाग की कुब्र यादगारें	२६३	बला की बरदाश्त
"	४५६	खून की बाढ़ कैसे रुके
"	५६५	हिन्दुस्तानी (विधान सभा के मेम्बरों के नाम चिट्ठी)
"		पं० जवाहरलाल नेहरू का संदेश
व				(बम्बई की हिन्दुस्तानी कानूनस के नाम)
श्री वासुदेव	३११	हिन्दी या हिन्दुस्तानी (महात्मा गांधी)
सच्ची बात (गीत)	३३	दो अकतुबर
श्री विष्णु प्रभाकर		आषाढी की अदलबदल
आखिर क्यों (कहानी)		निन्यानबे की कुश्तानी
				जानबचा कर भागे हुआं सें
				हम यह चाहते हैं
				अब उटूँ लिखावट क्यों
				दो लिखावटें क्यों सीलें
				एक अवतार और चाहिये
				देहाती दुनिया
				पंजाब हमें क्या सिखाता है
ह						
(लाला) हरुवन्त सहाय देहली	१५०			
हाथ हिन्द	६२			
हमारी राग	१६७			
बर्तानियां की नई तख्तबाना				
इन्दोनीशिया पर हमला				

”نیا ہفت روزہ“

جلد ۳

(جولائی ۱۹۴۷ء سے دسمبر ۱۹۴۷ء)

لیکھک اور اُن کے مضمون

الف

اگر لائی) اور سعید صاحب جھنگاری

بھرم کیا ہے

اگر لائی) اور سعید صاحب جھنگاری

سین پوجا (گیت)

چالاک شکاری

بھلائی (اطلاعت شہیدی

چار (گیت)

بھلائی) اور نگار ناتیقہ جی شاستری

ایکتا اور بھئی اندھک خظرتہ میں

زینا علی شہیدیا پر ساہ گریلاہ

حاجی نثر شاعری کا مزم

ب

بھلائی) رسال صاحب الہ آبادی

۲

۴۱۷ ... لکھیں 'بولیں' پڑھیں ہندستانی (گیت)

۵۱۳ ... نیا دور (گیت)

۴۱۳ ... (ڈاکٹر) بیگم اور اس جی بنارس

۴۱۹ ... سب مضمونوں کی ایکٹا (۱)

۴۴۱ ... سب مضمونوں کی ایکٹا (۲)

۴۴۱ ... (سہا قسا) بیگم اور انہیں جی

صفحہ

پ

حضرت) پرواز جعفری

(گیت)

۱۰۴

۲۰۷

۴۹۶

ق

تھیوسا فیکل سوہنت سے

۱۷۴

ج

ڈاکٹر) جعفر حسن عثمانیہ یونیورسٹی حیدرآباد

ہمارے گناہوں کے کچھہ آنکڑے اور سارا راج

(جناب) جعفر حسین خان کانیپور

زبان کے بارے میں کچھہ باتیں (ایک خط)

۱۲۸

۲۵۴

۱۷۴

۱۰

ع

(جناب) عبدالکلیم صاحب انصاری

۲۷
۱۴۵
۱۵۲
۲۳۸
۵۱۵

ساج اور ساج
 نیا ہند کی سالگرہ
 کیا دیکھا
 میں اسی نہیں ہوں
 خون کے آنسوؤں کا نذرانہ

خا

(شہداء) دراجت دہلی

پتھر سے پائے ہمہ دئے پتھر (گیت)

(بھائی) جعفرات سینائی
 غنمو سلم بیو ہار

ف

(شری) فوزیہ (قوسی) خدمتگاری

۹۹
۱۷۹
۲۷۹
۳۷۷
۴۸۴
۵۸۳

آج کی دنیا (۱)
 " (۲)
 " (۳)
 " (۴)
 " (۵)
 " (۶)

۱۴۴ ... (۲) (۱)
 ۲۹۳ ... (۳) (۳)
 ۴۵۹ ... (۴) (۵)
 ۵۹۵ ... (۸) (۷)

(شری) ریپنر ناتھ تھاکر

توں گیت

توں گیت

میرجے کے تیں گیت

راہ دیکھنا

کا

(اچاریہ) کا کا کالیگر

ہم وشواس کیوں کہوئیں

کچھہ کتا ہیں
 کلینا کازن

(شری) رتن لال بنسل

سرانا محمد قاسم

مولانا محمود الحسن

حاجی رشید احمد انگوہی

۲۲۱
۸۹

۲۲
۲۲۹
۵۳۸

D۳D	ایچے دل سے ایک نورو باقیں	۹۰
D۱	(بہکت) گیش پُرساہ سوریدی	۹۱
۲۳۶	ہندستانی کلچر اور سنگیت (۵)	۱۹۶
D۵۰	" (۶)	۲۸۸
	" (۷)	۴۹۹
D۶۸	(ڈاکٹر) گورگہ پُرساہ	D۰۰
	دیو فاگری میں سفہار	D۰۰
	سات پُرساہ گیت	D۰۳
	جہتا کی ہندستانی	D۹۲
	(بھائی) مدھ کر کھنر	D۹۳
	انسانیت (کہانی)	D۹۴
۲۶۰	(ڈاکٹر) سعوت حسین خان علی گٹھہ	۴۲۰
۲۳۳	غلاموں کا ناچ (گیت)	D۲۱
۲۳۹	(پروفیسر) سنیچ الزماں جالیسی	۲۷۰
	بکت کہانی	۴۷۴
	(شہری) تیرج کانپور
	نو چوڑے (گیت)	۳۲۹
	(شہری) ورسو دیو

ن

و

	انسان
	انگلی
	ساتو سور پُرجا رک
	غریب یا امیری
	جھورگہ
	بہت پت لال
	نواکھالی میں
	پُرا رڈیک رچنائیں تیسرا بھاگ
	پُریم ترنگ عرت قرانہ الفات (حصہ دوم)
	وشر ۲ راج فیکٹ بھوشیمہ
	اک سلم بھائی
	روح روشن استقبال
	(شہری) کمور لال مشرک والا ورڈھا
	روشن خرفوں میں دیشی بھاشائیں
	اھنسا کے وکاس پر ایک نظر
	(شہرستان) کوٹھی دیکم
	نو سوست (کہانی)
	(شہری) کیدار ناتھ
	نواکھالی
	گ
	(شہری) گرو دیال سنگ
	میں ہوں آزاد

سچی بات (گیت)
 رشتہ پر بھیا کر
 احر کیوں (کہانی)

ہماری رائے

پرتیبہ کی نقی تصویر

انٹرنیٹ پر حملہ

پندرہ اگست

آزادی کا یہ دن

ہندستانی اور دو لکھاوتیں

گاندھی جی اور اترتسری بوکھلاہٹ

پنجاب کی جڑواہی

بلا کی جڑواہٹ

جون کی جڑواہہ کیسے رکے

ہندستانی (ودھان سبھا کے ستروں کے نام چھٹی)

پنقت جوہر الال نورو کا سندیسہ پستی کی

ہندستانی کانفرنس کے نام

ہنوسی یا ہندستانی (سہاک گاندھی

دو اکتوبر

آہاس کی اہل بدل

ننانوے کی قربانی

جان بھیا کر بھیا کر ہوؤں سے

۳۱۱

۳۳

۹۲

۱۹۷

۱۹۸

۲۰۰

۲۰۲

۲۰۵

۲۹۱

۲۹۳

۲۹۶

۲۹۸

۳۰۳

۳۰۵

۳۹۱

۳۹۳

۳۹۹

۴۰۲

ہم یہ چاہتے ہیں
 اب اردو لکھاوت کیوں
 دو لکھاوتیں کیوں سیکھیں
 ایک اوتار اور چاہتے
 دیہاتی دنیا
 پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے
 (لالہ) ہنوزت سہاے دہلی
 سہاے ہند

۱

(شری) یاگیمہ ولک اجپری
 ہندی کا پھلا مسلمان کوئی

نیا ہند

جلد ۳

جولائی ۱۹۵۷

نمبر ۶



مطبوعہ

۱۹۵۷ء

جات آئی، بلکہ ہم دھرم اور ہندستانی بولے
 دیا ہند، پیسے کا کھڑکھڑے پریم کی جھولی

دو چوہے

(श्री "नीरज" कानपुर)

क्या करेगा प्यार वह भगवान को ?
 क्या करेगा प्यार वह ईमान को ?
 जन्म लेकर गोद में इत्सान की—
 प्यार कर पाया न जो इत्सान को ॥

आज बनने के लिये मिटना पड़ेगा,
 आज बढ़ने के लिये बनना पड़ेगा,
 नासता की दिन्दिगी भी मीत ही है—
 प्यार कीने के लिये मरना पड़ेगा ॥

جات آئی، بلکہ ہم دھرم اور ہندستانی بولے
 دیا ہند، پیسے کا کھڑکھڑے پریم کی جھولی

دو چوہے

کیا کرے گا پیار وہ بھجوان کو ؟
 کیا کرے گا پیار وہ ایمان کو ؟
 جنم لے کر گوڈ میں ایتان کی —
 پیار کر پایا نہ جو ایتان کو

آج بننے کے لئے مٹنا پڑے گا،
 آج بڑھنے کے لئے بننا پڑے گا،
 ناستا کی دیندیگی بھی میت ہی ہے—
 آج جیسے ہے ایتان کی موت ہی پڑے گی

जनता की हिन्दुस्तानी

(श्री भाषा समाद गुप्त, एम० ए०, डी० लिट०)

[यह लेख लेखक ही के शब्दों में छापा जा रहा है. कमानों के अन्दर के शब्द हमारे हैं—पठितर]

हमारे और बहुत से राष्ट्रीय जनताओं के समान ही राष्ट्र-भाषा का सवाल नया नहीं है. और पिछले कई बरसों में बहुत सी लिया पढ़ी भी इस के बारे में हुई है. पर इस समय—जब कि हमारे देश में एक कुछ-दिनी राष्ट्रीय सरकार चल गई है, और हम अपने देश के लिये एक संव-दिनी राष्ट्रीय सरकार बनाने जा रहे हैं—इस पर कुछ और विचार करना जरूरी लग रहा है.

एक बात यहाँ आप से आप यह उठती है कि राष्ट्रभाषा को अरुत ही क्या है? क्या उसके बिना राष्ट्र या राष्ट्रीयता नहीं हो सकती? अगर स्थित-जरतौड कई अलग अलग भाषायों को एक भी एक राष्ट्र हो सकता है, और इंगलैंड और अमेरिका को एक ही भाषा बोलते हुए भी अलग अलग राष्ट्र हो सकते हैं, तो राष्ट्र के होने के विचार से राष्ट्रभाषा के सवाल को क्यों ऐसी बड़ाई दी जावे? राष्ट्र तो राष्ट्रीयता की चाह से होता है, भाषा से नहीं. जो यह कहा जावे कि प्रांतों के आपस के व्यवहार के लिये एक ऐसी भाषा की जरूरत है, तो पढ़े लिये के लिये यह काम अंग्रेजी तथा अनपढ़ों के लिए दृष्टी पृष्टी हिन्दुस्तानी कर ही देती है. जो यह कहा जावे कि हिन्दू-मुसलिम एकता के विचार से ऐसी भाषा की जरूरत है, तो जबाब में कहा जा सकता है कि हिन्दू-मुसलिम भेद

जिन्ता की भेदस्तानी

(श्री भाषा समाद गुप्त, एम० ए०, डी० लिट०)

[यह लेख लेखक ही के शब्दों में छापा जा रहा है. कमानों के अन्दर के शब्द हमारे हैं—पठितर]

हमारे और बहुत से राष्ट्रीय जनताओं के समान ही राष्ट्र-भाषा का सवाल नया नहीं है. और पिछले कई बरसों में बहुत सी लिया पढ़ी भी इस के बारे में हुई है. पर इस समय—जब कि हमारे देश में एक कुछ-दिनी राष्ट्रीय सरकार चल गई है, और हम अपने देश के लिये एक संव-दिनी राष्ट्रीय सरकार बनाने जा रहे हैं—इस पर कुछ और विचार करना जरूरी लग रहा है.

एक बात यहाँ आप से आप यह उठती है कि राष्ट्रभाषा को अरुत ही क्या है? क्या उसके बिना राष्ट्र या राष्ट्रीयता नहीं हो सकती? अगर स्थित-जरतौड कई अलग अलग भाषायों को एक भी एक राष्ट्र हो सकता है, और इंगलैंड और अमेरिका को एक ही भाषा बोलते हुए भी अलग अलग राष्ट्र हो सकते हैं, तो राष्ट्र के होने के विचार से राष्ट्रभाषा के सवाल को क्यों ऐसी बड़ाई दी जावे? राष्ट्र तो राष्ट्रीयता की चाह से होता है, भाषा से नहीं. जो यह कहा जावे कि प्रांतों के आपस के व्यवहार के लिये एक ऐसी भाषा की जरूरत है, तो पढ़े लिये के लिये यह काम अंग्रेजी तथा अनपढ़ों के लिए दृष्टी पृष्टी हिन्दुस्तानी कर ही देती है. जो यह कहा जावे कि हिन्दू-मुसलिम एकता के विचार से ऐसी भाषा की जरूरत है, तो जबाब में कहा जा सकता है कि हिन्दू-मुसलिम भेद

वाहरी शक्ति का पैदा किया हुआ है, और उस के हिन्दुस्तान छोड़ने ही यह भेद मिट जावेगा. जो यह कहा जावे कि उन प्रान्तों में जिनमें साहित्य की और संस्कृति की भाग्य हिन्दी और उर्दू हैं, भाषा एक न होने पर स्कूलों और कालेजों में पढ़ाई कैसे हो, अथवा उन प्रान्तों के लिये रेडियो की भाषा क्या हो ? तो यह कहा जा सकता है कि दोनों भाषाओं के माध्यम वाले (चारों से तालीम देने वाले) स्कूल कालेज और रेडियो स्थान अलग अलग हो सकते हैं, अथवा स्कूलों कालेजों में माध्यमों के हिसाब से अलग अलग सेकशन हो सकते हैं, और एक ही रेडियो स्थान से भी दोनों माध्यमों में एक दूसरे के आगे पीछे खबरें और संदेश सुनाए जा सकते हैं. इसी तरह और भी कितनी ही बातें राष्ट्रभाषा की जरूरत के पक्ष (तर्कदारा) में कही गई हैं, और पंडितों ने उनके जवाब देने का यत्न किया है. अविक अंश में उनके उत्तिक है, यह बात हृदय से हो सकता है, वे भी न मानें.

पर कुछ ऐसी भी बातें राष्ट्रभाषा के पक्ष में हो सकती हैं जिन का जवाब इतना सुगम नहीं हो सकता. कई भाषाओं की बात यदि हम थोड़ी दूर के लिये छोड़ भी दें, हिन्दी और उर्दू ही का मामला सामने रखें, तो वतलाइए : हम अपने विचार ऐसे मिले जुले सुनने वालों के सामने कैसे रखेंगे, जिनमें से कुछ हिन्दी भर प्रायः कुछ उर्दू भर जानते और समझते हैं ? क्या हर एक बोलने वाले की एक भाषा में कही हुई सारी बातें उर्दू (तर्जुमा) उसी समय उर्दू भाषा में किये जा सकें (मरकज) और इस प्रांत की

हस्ताई हिन्दुस्तानी
आपरी छुट्टी का पैदा किया हुआ है, और उस के हिन्दुस्तान छोड़ने ही यह भेद मिट जावेगा. जो यह कहा जावे कि उन प्रान्तों में जिनमें साहित्य की और संस्कृति की भाग्य हिन्दी और उर्दू हैं, भाषा एक न होने पर स्कूलों और कालेजों में पढ़ाई कैसे हो, अथवा उन प्रान्तों के लिये रेडियो की भाषा क्या हो ? तो यह कहा जा सकता है कि दोनों भाषाओं के माध्यम वाले (चारों से तालीम देने वाले) स्कूल कालेज और रेडियो स्थान अलग अलग हो सकते हैं, अथवा स्कूलों कालेजों में माध्यमों के हिसाब से अलग अलग सेकशन हो सकते हैं, और एक ही रेडियो स्थान से भी दोनों माध्यमों में एक दूसरे के आगे पीछे खबरें और संदेश सुनाए जा सकते हैं. इसी तरह और भी कितनी ही बातें राष्ट्रभाषा की जरूरत के पक्ष (तर्कदारा) में कही गई हैं, और पंडितों ने उनके जवाब देने का यत्न किया है. अविक अंश में उनके उत्तिक है, यह बात हृदय से हो सकता है, वे भी न मानें.
पर कुछ ऐसी भी बातें राष्ट्रभाषा के पक्ष में हो सकती हैं जिन का जवाब इतना सुगम नहीं हो सकता. कई भाषाओं की बात यदि हम थोड़ी दूर के लिये छोड़ भी दें, हिन्दी और उर्दू ही का मामला सामने रखें, तो वतलाइए : हम अपने विचार ऐसे मिले जुले सुनने वालों के सामने कैसे रखेंगे, जिनमें से कुछ हिन्दी भर प्रायः कुछ उर्दू भर जानते और समझते हैं ? क्या हर एक बोलने वाले की एक भाषा में कही हुई सारी बातें उर्दू (तर्जुमा) उसी समय उर्दू भाषा में किये जा सकें (मरकज) और इस प्रांत की

نیا ہند
 جنرل کی ہینڈ بک
 جولائی سن ۱۹۰۰

نیا ہند
 جنرل کی ہینڈ بک
 جولائی سن ۱۹۰۰

نیا ہند
 جنرل کی ہینڈ بک
 جولائی سن ۱۹۰۰

نیا ہند
 جنرل کی ہینڈ بک
 جولائی سن ۱۹۰۰

نیا ہند
 جنرل کی ہینڈ بک
 جولائی سن ۱۹۰۰

نیا ہند
 جنرل کی ہینڈ بک
 جولائی سن ۱۹۰۰

کار پورانی اور ساماننباری کھدیاں (راتنوں رات ریباز) کو تیرتوں
توں کے ساپ ہسنے در کیا کیا ہے، بھ بھی کول کم بھائی کو
بان نہی ہے: دوسرے پانوں کی ماگابوں کے تیرتوں نیکاد بھ
ہے، اتنوں نیکاد دوسری کوئی ماگاب نہی ہے، کبھیکی بھ مابھ دیش کی
ماگاب ہونے کے ساپ ساپ بھ سنسکرت کی پوتی ہے، تیرتوں
اتنسی ہیندوستان کو ساری ماگاب نیکالی ہڈ ہے اور
دلیلی اور بھتار ہیندوستان (ہیند آجام) کی ماگابوں میں بھی
تیرتوں کی شادابلی (تکبوں) بھیکائی کے ساپ لیا جا چکی ہے: دسلیلی
پانوں کے آپاس کے سبھی سنننننن اور بھتار ہیندوستان کے ساپ
دیش کی سنسکرت کا سنننننن بھونے میں بھی بھ مارد کار سکتی ہے:
اور اس समय کی بھیشی ماردار سے مٹننننن اس نے اپنی
ساری شاکت کے ساپ لیا ہے: تیرتوں کو ن اسے ہی رادھماگاب
کا پد (درجا) دیا جاوے، اور کبھی اس کا آسان کیمو دوسری
ماگاب کو دیا جاوے؟ بھتوں بھت کول تیرتوں ہے.

اور کو رادھماگاب بنانے کے پل میں بھی کول پانوں ہی بھونے
کھی گئے ہے: اور بھی سنسکرت کی ہی پوتی ہے، مہل ہی اس
نے کارسی اور آرتی سے ناوا بھونکر اپنا نیک کا ساہلیت
بنا لیا ہے: اور ہیندو تیا ماسلیم سنسکرتوں کے مہل
رپال کی ماگاب ہے: دلیلی کی نہی جاگ سے ہسنے بھی لاس
بھتار ہے، ہاں بھ سے بھ بھاکوں بھتار نہی ہڈ ہے:
مبارکمانوں کو بھ ساپ لیا ہے، انکے ہڈ تھک پھوننا
ہے: تو دسی کا سھارو، لونا ہونا: مابھ پور (Middle East)
سے سنا بھتار ہے بھونے کے لیلے بھ بھ کام کی ہونا: ہماری

بھتوں بھتوں

پان اور سانس وادی روڈھوں رادھسی ریت رواج کو تیرتوں
بھتوں کے ساتھ اس نے دور کی آرتی بھی کھچھم پلا لیا ہے تیرتوں
دوسری کوئی بھتار نہیں ہے، کبھیکی بھتار بھتار ہونے
کے ساتھ ساتھ اس سنسکرت کی بلوں کو تیرتوں سے آرتی ہندستان کی
ساری بھتار بھی نکلی ہوں ہیں اور دھنی اور بھتار ہندستان (ہندوستان)
کی بھتاروں میں بھی تیرتوں کی شادابلی (تکبوں) ادھکائی کے ساتھ لیا
جا چکی ہے: اس نے پانوں کے آرتی کے سبھی سنسکرت اور بھتار
ہندستان کے ساتھ دلیلی کی سنسکرتوں کا سنسکرت بھونے میں بھی یہ مارد
کر سکتی ہے: اور اس سے کے بھیشی سھار سے تیرتوں میں اس نے
اپنی ساری شاکت کے ساتھ لیا ہے: اس نے ہی رادھماگاب
بھتار کا پد (درجا) دیا جاوے، اور کبھی اس کا آرتی کسی دوسری
بھتار کو دیا جاوے؟ بھتوں بھت کول تیرتوں ہے.

اور کو رادھماگاب بنانے کے پل میں بھی کول پانوں ہی بھونے
کھی گئی ہیں: اور بھی سنسکرت کی ہی پوتی ہے، مہل ہی اس نے
اپنی ساری شاکت کے ساتھ لیا ہے: تیرتوں کو ن اسے ہی رادھماگاب
کا پد (درجا) دیا جاوے، اور کبھی اس کا آرتی کسی دوسری
ماگاب کو دیا جاوے؟ بھتوں بھت کول تیرتوں ہے.

نئی جگہ میں اس نے بھی ہاتھ بٹایا ہو۔ تب کہوں نہ اسے راضی بھاشا

بنایا جاوے؟ کہتا: ہوگا کہ یہ بات بھی کچھ نہ سمجھتی ہیں۔

جو سوال یہ ہو کہ کیا دونوں میں سے کسی ایک کو ایضاً بھاشا

ان کو کام چلایا جا سکتا ہو یا نہیں، تو یہ کہنے میں کسی کو کراہت ہی

بڑھا ہوگی کہ یہ بات ان ہوتی نہیں ہوگی۔ انا کہ اس میں کچھ گھٹنا ہی

ہو سکتی ہو۔ اوپر جن کاموں سے لے لاکھڑ بھاشا کی ضرورت بتائی گئی

ہے ان کے دھیان سے انگریزی کی جگہ لینے سے لے ہماری دونوں

بھاشائیں ٹھیک ہیں۔ یہ ضرور ہو کہ ایک کیش کا دعویٰ مان لیا

جانے پر دوسرے کو طال ہوگا، اور اولے کا مسنا کرنا پڑے گا۔

جو حقائق نے یہی سوچ کر دونوں یکسوں میں سمجھوتے کی سہنڈستان

کی۔۔۔ صورت نکالی ہو، اور اس کے اوسار سے کام کرنے بھی

گئے ہیں۔ پھر اس سے معاملہ کچھ سمجھتا رہا نہیں دکھائی دیتا، کارن

یہ ہو کہ اس پر کار سے سمجھوتوں کو جتنا سندھیہ کی آنکھ سے دھین

گئی ہو، اور اس کا یہ سندھیہ ایک صد تک واجب بھی لگتا ہو۔

مثال کے لئے ہم ۱۱ اگست، ۱۹۴۶ء کے امریکین میگزین (اپریل ۱۹۵۶ء)

سے نیچے کبھی باتیں لے سکتے ہیں۔ یہ مثال کا دعویٰ کے نام سے

دے رہے ہیں۔ پرنالیں، نام کے نوٹ سے ہیں اور انگریزی اکثرول

میں ہیں۔

دھم طور پر لوگوں کو یہ سلام ہی نہیں ہو سکتا کہ

پرتال جائز ہو یا ناجائز، سوا اس کے کہ پرتال کی تائید

کریں ایسے لوگ کریں جو غیر جانبدار، یعنی عین آئین ہوں،

نہیں، آگام میں دھم نے بھی لاپھ بڑھایا ہے؛ تب کہوں نہ دھم نے راضی بھاشا

بنانیاں، جاوے؟ کہتا: نہ ہوگا کہ یہ بارتوں میں کبھی نہ کبھی

بھارتی ہے۔

جو سوال یہ ہو کہ کیا دونوں میں سے کسی ایک کو ایضاً بھاشا

ان کو کام چلایا جا سکتا ہو یا نہیں، تو یہ کہنے میں کسی کو کراہت ہی

بڑھا ہوگی کہ یہ بات ان ہوتی نہیں ہوگی۔ انا کہ اس میں کچھ گھٹنا ہی

ہو سکتی ہو۔ اوپر جن کاموں سے لے لاکھڑ بھاشا کی ضرورت بتائی گئی

ہے ان کے دھیان سے انگریزی کی جگہ لینے سے لے ہماری دونوں

بھاشائیں ٹھیک ہیں۔ یہ ضرور ہو کہ ایک کیش کا دعویٰ مان لیا

جانے پر دوسرے کو طال ہوگا، اور اولے کا مسنا کرنا پڑے گا۔

جو حقائق نے یہی سوچ کر دونوں یکسوں میں سمجھوتے کی سہنڈستان

کی۔۔۔ صورت نکالی ہو، اور اس کے اوسار سے کام کرنے بھی

گئے ہیں۔ پھر اس سے معاملہ کچھ سمجھتا رہا نہیں دکھائی دیتا، کارن

یہ ہو کہ اس پر کار سے سمجھوتوں کو جتنا سندھیہ کی آنکھ سے دھین

گئی ہو، اور اس کا یہ سندھیہ ایک صد تک واجب بھی لگتا ہو۔

مثال کے لئے ہم ۱۱ اگست، ۱۹۴۶ء کے امریکین میگزین (اپریل ۱۹۵۶ء)

سے نیچے کبھی باتیں لے سکتے ہیں۔ یہ مثال کا دعویٰ کے نام سے

دے رہے ہیں۔ پرنالیں، نام کے نوٹ سے ہیں اور انگریزی اکثرول

میں ہیں۔

دھم طور پر لوگوں کو یہ سلام ہی نہیں ہو سکتا کہ

پرتال جائز ہے یا ناجائز، سوا اس کے کہ پرتال کی تائید

کریں ایسے لوگ کریں جو غیر جانبدار، یعنی عین آئین ہوں،

نہیں، آگام میں دھم نے بھی لاپھ بڑھایا ہے؛ تب کہوں نہ دھم نے راضی بھاشا

بنانیاں، جاوے؟ کہتا: نہ ہوگا کہ یہ بارتوں میں کبھی نہ کبھی

بھارتی ہے۔

جو سوال یہ ہو کہ کیا دونوں میں سے کسی ایک کو ایضاً بھاشا

ان کو کام چلایا جا سکتا ہو یا نہیں، تو یہ کہنے میں کسی کو کراہت ہی

بڑھا ہوگی کہ یہ بات ان ہوتی نہیں ہوگی۔ انا کہ اس میں کچھ گھٹنا ہی

ہو سکتی ہو۔ اوپر جن کاموں سے لے لاکھڑ بھاشا کی ضرورت بتائی گئی

ہے ان کے دھیان سے انگریزی کی جگہ لینے سے لے ہماری دونوں

بھاشائیں ٹھیک ہیں۔ یہ ضرور ہو کہ ایک کیش کا دعویٰ مان لیا

جانے پر دوسرے کو طال ہوگا، اور اولے کا مسنا کرنا پڑے گا۔

جو حقائق نے یہی سوچ کر دونوں یکسوں میں سمجھوتے کی سہنڈستان

کی۔۔۔ صورت نکالی ہو، اور اس کے اوسار سے کام کرنے بھی

گئے ہیں۔ پھر اس سے معاملہ کچھ سمجھتا رہا نہیں دکھائی دیتا، کارن

یہ ہو کہ اس پر کار سے سمجھوتوں کو جتنا سندھیہ کی آنکھ سے دھین

گئی ہو، اور اس کا یہ سندھیہ ایک صد تک واجب بھی لگتا ہو۔

مثال کے لئے ہم ۱۱ اگست، ۱۹۴۶ء کے امریکین میگزین (اپریل ۱۹۵۶ء)

سے نیچے کبھی باتیں لے سکتے ہیں۔ یہ مثال کا دعویٰ کے نام سے

دے رہے ہیں۔ پرنالیں، نام کے نوٹ سے ہیں اور انگریزی اکثرول

میں ہیں۔

دھم طور پر لوگوں کو یہ سلام ہی نہیں ہو سکتا کہ

پرتال جائز ہے یا ناجائز، سوا اس کے کہ پرتال کی تائید

کریں ایسے لوگ کریں جو غیر جانبدار، یعنی عین آئین ہوں،

और जिन पर आम लोगों का पूरा विश्वास हो. हड़तालें, नुदर अपने मामले में राय देने के हक्कदार नहीं. इसलिए या तो मामला ऐसे पंच के सिपुर्द करना चाहिये, जो दोनों तरफ के लोगों को मंजूर हो, या उसे अदालती क्रैसले पर छोड़ देना चाहिये. जब इस तरीके से काम किया जाता है, तो आमतीर पर पब्लिक के सामने हड़ताल का मामला पेश करने की नीवत नहीं आती. अलबत्ता, कर्मा कर्मी यह जरूर होता है कि भगदूर मालिक पंच के या अदालत के क्रैसले को ठुकरा देते हैं, या गुमराह मजदूर अपनी ताकत के बल मालिक से जबरदस्ती और भी रियायत पाने के लिए क्रैसले को मंजूर करने से इन्कार कर देते हैं. ऐसी हालत में मामला आम रिआया के सामने आता है.

१३

ऊपर की पाँतों में पूरे पचास शब्द ऐसे हैं जिनकी जगह पर हिन्दी या उर्दू के अपने शब्द आ सकते थे. किन्तु इनमें से तीन जगहों पर हिन्दी शब्द आए हैं, और बाकी ४७ जगहों पर उर्दू शब्द आए हैं, या यों कहिये कि हिन्दी के शब्द १०० में ६ हैं, जब कि १०० में ९४ शब्द उर्दू के हैं. 'हरिजन-सेवक' में इधर कुछ कम या अधिक यही नीति बरती जा रही है. हिन्दी या नागरी लिपि में निकलने वाली और भी कुछ पत्रकार और पुस्तकें इस शैली की बताई जा सकती हैं. उर्दू या फारसी-अरबी अक्षरों में भी इसी प्रकार हिन्दी की शब्दावली के प्रचार का कोई उपाय हो रहा है, इसका मुझे ज्ञान नहीं है. पर जो एक हो, तो दूसरा भी होना चाहिये, यह भले ही है कि इतने पर भी दो-यलों को फिर भी जचित ठहराना कठिन ही होगा.

जुलाई १९७७

जिन्ता की हस्त-लिखी

और जो प्रेस लोगों का पुरा-शुवास हो. प्रश्नल फोर अपने मामले में लाई-वै के हकदार नहीं. इस लिये जो सल-वै के सिपुर्द करना चाहिये, वो हदतों हक के वॉल को मंजूर हो या उसे एरॉय फिषल प्रेसोर्ट देना चाहिये. जब इस तरीके से काम किया जाता हो, तो आम तौर पर पब्लिक के सामने प्रश्नल का मामला पेश करने की नीवत नहीं आती, अलबत्ता कभी कभी ये मजदूर होता हो, जो मजदूर एक पंच के या अदालत के फिषल को ठुकरा देते हैं, या गुमराह मजदूर अपनी ताकत के बल, एक से जबरदस्ती अद कभी रियायत पाने के लिये फिषल को मंजूर करने से इन्कार कर देते हैं. ऐसी हालत में मामला आम रिआया के सामने आता हो.

अदालत की बातों में लोर से ब्यास शब्द लिये गये हैं, जो की जगह पर उर्दू या आरुद के अपने शब्द आ सकते थे. किन्तु इनमें से तीन जगहों पर उर्दू शब्द आये हैं, और बाकी १०० में ६ हैं, जब कि १०० में ९४ शब्द हिन्दी के हैं. 'हरिजन-सेवक' में इधर कुछ कम या अधिक यही नीति बरती जा रही है. हिन्दी या नागरी लिपि में निकलने वाली और भी कुछ पत्रकार और पुस्तकें इस शैली की बताई जा सकती हैं. उर्दू या फारसी-अरबी अक्षरों में भी इसी प्रकार हिन्दी की शब्दावली के प्रचार का कोई उपाय हो रहा है, इसका मुझे ज्ञान नहीं है. पर जो एक हो, तो दूसरा भी होना चाहिये, यह भले ही है कि इतने पर भी दो-यलों को फिर भी जचित ठहराना कठिन ही होगा.

تو ہندوؤں نے دونوں بھاشاؤں کو ایک دوسرے کے نیکو دہانے کے
 ساتھ ایک اور آیا ہے، دونوں بھاشا میں — اور لکھا دہانے
 کیت پرانت میں بھاشا کے کسی نہ کسی روپ میں بولی اور کام میں
 بھی لائی جاتی ہیں، کم سے کم پڑھائی پڑھائی کے کئی برسوں تک انہما
 کی آگے سے دیکھی جاتی ہے، کہنے کی ضرورت نہیں کہ یہ صلاح سندھیہ اور ڈور
 کے ۱۰۰ میں سے ۲۰ سے ادھک لوگوں کے ساتھ اور سنسکرت
 کی بھاشا نہیں ہو سکتی اور سندھی ۱۰۰ میں ۵۰ سے ادھک کے
 ساتھ اور سنسکرت کی بھاشا ہوتی ہے، ۲۰۰ والے ۵۰۰ والوں کی بھاشا
 سے پرہیز کریں تو ٹھیک ہی ہے، ۵۰۰ والے بھی ۲۰۰ والوں کی بھاشا
 سے بڑی جات پھیلتی ہے، اپنی سنسکرتی کی پرکھتیا (پرکھتیا) جاتا
 پڑتی ہے، اس لئے اس کے لئے یہ اٹھایا جائے کہ ۵۰۰ پر جو ہے
 وہاں ٹھیک نہ ہوں تو بھی جتنا کی مرضی کے خلاف اس پر ایک
 ایسی بات لانا جس کے بہت کالہ اور مفید ہونے میں اس سے یہ جو اور
 جس میں اس کی چھوٹی عورتوں کو اس کے کچھ برس گئے ہوں کہاں
 ایک اور کیت (ٹھیک) ہو گا؟

انہما ہندوؤں نے دونوں بھاشوں کو ایک دوسرے کے نیکو دہانے کے
 ساتھ ایک اور آیا ہے، دونوں بھاشا میں — اور لکھا دہانے
 کیت پرانت میں بھاشا کے کسی نہ کسی روپ میں بولی اور کام میں
 بھی لائی جاتی ہیں، کم سے کم پڑھائی پڑھائی کے کئی برسوں تک انہما
 کی آگے سے دیکھی جاتی ہے، کہنے کی ضرورت نہیں کہ یہ صلاح سندھیہ اور ڈور
 کے ۱۰۰ میں سے ۲۰ سے ادھک لوگوں کے ساتھ اور سنسکرت
 کی بھاشا نہیں ہو سکتی اور سندھی ۱۰۰ میں ۵۰ سے ادھک کے
 ساتھ اور سنسکرت کی بھاشا ہوتی ہے، ۲۰۰ والے ۵۰۰ والوں کی بھاشا
 سے پرہیز کریں تو ٹھیک ہی ہے، ۵۰۰ والے بھی ۲۰۰ والوں کی بھاشا
 سے بڑی جات پھیلتی ہے، اپنی سنسکرتی کی پرکھتیا (پرکھتیا) جاتا
 پڑتی ہے، اس لئے اس کے لئے یہ اٹھایا جائے کہ ۵۰۰ پر جو ہے
 وہاں ٹھیک نہ ہوں تو بھی جتنا کی مرضی کے خلاف اس پر ایک
 ایسی بات لانا جس کے بہت کالہ اور مفید ہونے میں اس سے یہ جو اور
 جس میں اس کی چھوٹی عورتوں کو اس کے کچھ برس گئے ہوں کہاں
 ایک اور کیت (ٹھیک) ہو گا؟

انہما ہندوؤں نے دونوں بھاشوں کو ایک دوسرے کے نیکو دہانے کے
 ساتھ ایک اور آیا ہے، دونوں بھاشا میں — اور لکھا دہانے
 کیت پرانت میں بھاشا کے کسی نہ کسی روپ میں بولی اور کام میں
 بھی لائی جاتی ہیں، کم سے کم پڑھائی پڑھائی کے کئی برسوں تک انہما
 کی آگے سے دیکھی جاتی ہے، کہنے کی ضرورت نہیں کہ یہ صلاح سندھیہ اور ڈور
 کے ۱۰۰ میں سے ۲۰ سے ادھک لوگوں کے ساتھ اور سنسکرت
 کی بھاشا نہیں ہو سکتی اور سندھی ۱۰۰ میں ۵۰ سے ادھک کے
 ساتھ اور سنسکرت کی بھاشا ہوتی ہے، ۲۰۰ والے ۵۰۰ والوں کی بھاشا
 سے پرہیز کریں تو ٹھیک ہی ہے، ۵۰۰ والے بھی ۲۰۰ والوں کی بھاشا
 سے بڑی جات پھیلتی ہے، اپنی سنسکرتی کی پرکھتیا (پرکھتیا) جاتا
 پڑتی ہے، اس لئے اس کے لئے یہ اٹھایا جائے کہ ۵۰۰ پر جو ہے
 وہاں ٹھیک نہ ہوں تو بھی جتنا کی مرضی کے خلاف اس پر ایک
 ایسی بات لانا جس کے بہت کالہ اور مفید ہونے میں اس سے یہ جو اور
 جس میں اس کی چھوٹی عورتوں کو اس کے کچھ برس گئے ہوں کہاں
 ایک اور کیت (ٹھیک) ہو گا؟

نیا ہینڈ جناتا کی ہینڈ سٹائل
 میں ایک بھاضا ہونے پر بھی ہندی اور اردو میں سے ایک سنسکرت کی تہتم شمشادول کی اور جھلک اور دوسری فارسی عربی کی تہتم شمشادول کو اپنا کر ایک دوسرے سے اور اپنے مول رصحت بہت دور جا پڑی ہے۔ اور جو وہ اپنے آج کے روپ میں سادھارت ہینڈ کے سامنے رکھی جاویں تو کبھی بھی ان کا ۱۰۰ میں ۲۰ حصہ بھی سمجھنا اُس کے لئے پڑوسی کھیر ہوگی! کھیر دوسرا ۸۰ جا پڑی ہندی ہو تو 'جا پڑی' اردو ہو تو 'لہہ' جا پڑی کسی بھی بانٹ کے حساب سے دونوں کی ملاوٹ ہو تو کبھی جو اُس کے سمجھنے باہر کی چیز ہو، تو اُس کے لئے برابر ہو 'انتر' ادھک سے ادھک سونے اور لہہ کی بیڑی کا ہو سکتا ہو۔ اردو کی مثال کے لئے چ اوپر دیکھا ہوا 'ہر جین سینک' کا اردو دھون (حوالہ) یا جا سکتا ہو اور ہندی کی مثال کے لئے نیچے دئے ہوئے اسی سے اچھے کو یا جا سکتا ہو۔

میں سے ایک ہندوستانی اور اردو میں سے ایک سنسکرت کی تہتم شمشادول کی اور جھلک اور دوسری فارسی عربی کی تہتم شمشادول کو اپنا کر ایک دوسرے سے اور اپنے مول رصحت بہت دور جا پڑی ہے، اور جو وہ اپنے آج کے روپ میں سادھارت ہینڈ کے سامنے رکھی جاویں، تو کبھی کبھی ان کا ۱۰۰ میں ۲۰ حصہ بھی سمجھنا اُس کے لئے پڑوسی کھیر ہوگی! کھیر دوسرا ۸۰ جا پڑی ہندی ہو تو 'جا پڑی' اردو ہو تو 'لہہ' جا پڑی کسی بھی بانٹ کے حساب سے دونوں کی ملاوٹ ہو تو کبھی جو اُس کے سمجھنے باہر کی چیز ہو، تو اُس کے لئے برابر ہو 'انتر' ادھک سے ادھک سونے اور لہہ کی بیڑی کا ہو سکتا ہو۔ اردو کی مثال کے لئے چ اوپر دیکھا ہوا 'ہر جین سینک' کا اردو دھون (حوالہ) یا جا سکتا ہے، اور ہندی کی مثال کے لئے نیچے دئے ہوئے اسی سے اچھے کو یا جا سکتا ہے۔

“ساधारणतः लोगों को यह नहीं ज्ञात हो सकता कि हड़ताल बचित है या अनुचित, इसके अतिरिक्त कि हड़ताल का समर्थन ऐसे लोग करें जो निषेध हों और जिन पर सर्वसाधारण का पूरा विश्वास हो. हड़तालों स्वयं अपने स्वार्थ के विषय में सम्मति देने के अधिकारी नहीं. इसलिए या तो नगड़ण ऐसे पञ्च के द्वारा में दे देना चाहिये जो दोनों पक्षाँ के लोगों को मान्य हो, या उसे न्यायालय के निर्णय पर छोड़ देना चाहिये. जब इस विधि से

तत्सम = उगों के रंगों, जैसे कि, उस्ताच, लैन्टन.
 तद्वत् = वदले हुए, जैसे अभि, उस्ताद, लालटेन.

میں سے ایک ہندوستانی اور اردو میں سے ایک سنسکرت کی تہتم شمشادول کی اور جھلک اور دوسری فارسی عربی کی تہتم شمشادول کو اپنا کر ایک دوسرے سے اور اپنے مول رصحت بہت دور جا پڑی ہے۔ اور جو وہ اپنے آج کے روپ میں سادھارت ہینڈ کے سامنے رکھی جاویں تو کبھی بھی ان کا ۱۰۰ میں ۲۰ حصہ بھی سمجھنا اُس کے لئے پڑوسی کھیر ہوگی! کھیر دوسرا ۸۰ جا پڑی ہندی ہو تو 'جا پڑی' اردو ہو تو 'لہہ' جا پڑی کسی بھی بانٹ کے حساب سے دونوں کی ملاوٹ ہو تو کبھی جو اُس کے سمجھنے باہر کی چیز ہو، تو اُس کے لئے برابر ہو 'انتر' ادھک سے ادھک سونے اور لہہ کی بیڑی کا ہو سکتا ہو۔ اردو کی مثال کے لئے چ اوپر دیکھا ہوا 'ہر جین سینک' کا اردو دھون (حوالہ) یا جا سکتا ہو اور ہندی کی مثال کے لئے نیچے دئے ہوئے اسی سے اچھے کو یا جا سکتا ہو۔

“साधारणतः लोगों को यह नहीं ज्ञात हो सकता कि हड़ताल बचित है या अनुचित, इसके अतिरिक्त कि हड़ताल का समर्थन ऐसे लोग करें जो निषेध हों और जिन पर सर्वसाधारण का पूरा विश्वास हो. हड़तालों स्वयं अपने स्वार्थ के विषय में सम्मति देने के अधिकारी नहीं. इसलिए या तो नगड़ण ऐसे पञ्च के द्वारा में दे देना चाहिये जो दोनों पक्षाँ के लोगों को मान्य हो, या उसे न्यायालय के निर्णय पर छोड़ देना चाहिये. जब इस विधि से

तत्सम = उगों के रंगों, जैसे कि, उस्ताच, लैन्टन.
 तद्वत् = वदले हुए, जैसे अभि, उस्ताद, लालटेन.

کوش کیا جاتا ہے، تو معاہدہ: जनता के समक्ष हड़ताल का भागड़ा. उपस्थित करने की परिस्थिति नहीं आती. यह अवश्य है कि कर्मों कभी यह भी होता है कि अभिमानी स्वामी पञ्च के या न्यायालय के निर्णय को टुकरा देते हैं, या कर्तव्य-विमूढ़ मजदूर अपना शक्ति के बल पर स्वामी से अकारण और भी सुविचार्य पाने के लिये निर्णय को मानने से अस्वीकार कर देते हैं. ऐसी दशा में भाड़ा साधारण जनता के सम्मुख आता है."

उपर की उर्दू और हिन्दी की मिसालों में लगभग १०० में ५० हिस्सा ही शब्द ऐसे हैं जो साधारण जनता की समझ के बाहर के हैं, अधिक नहीं, और इसका कारण यह है कि दोनों में ज्ञान चूम्क कर बीच की ही शैली बरती गई है, फिर भी जो साधारण जनता के हित का ध्यान है, तो उपर की बात को बहुत कुछ नीचे के शब्दों में रखना होगा.

"मामूली ढंग पर लोगों को यह ज्ञान ही नहीं पड़ सकता कि हड़ताल ठीक है या नहीं, जब तक कि हड़ताल की सही कोई ऐसे लोग न करें जो किसी भी पक्ष के न हों, और जिन पर सब लोगों को पूरा विश्वास हो. हड़ताली अपना तई अपने मामले में राय देने के हकदार नहीं. इसलिए या तो मामला ऐसे पंच के हाथ में देना चाहिये जो दोनों पक्ष के लोगों को मंचर हो, या उसे अदालत के फंसले पर छोड़ देना चाहिये. जब इस रीति से काम किया जाता है, तो मामूली ढंग पर जनता के सामने हड़ताल का मामला रखने की नीवत नहीं आती. हाँ कर्मों कभी यह भी होता है कि घमंडी मालिक पंच के या अदालत के फंसले को टुकरा देते हैं, या वहके मच-

کاریہ کیا جاتا ہو، تو معاہدہ: جاريتا كے سامنے ہڈتال کا حصہ استیحت کرنے کی باسکتھی نہیں آتی. یہ اوشیہ ہو کر کبھی بھی نہ بھی ہوتا ہو کر ابھانی سوامی پنچ کے پانی سے الہ کے زسنہ کو ٹھکرا دیتے ہیں یا کر تہ بجزہ مزدور اپنی فکلی کے بل پر سوامی سے اکارن اور بھی سو بھہا میں پانے کے لئے زسنہ کو ماننے سے اسویلا کر دیتے

ایسی وظا میں جھگڑا سا دھارن جنتا کے سٹکھ آتا ہو. اور پے کی اورو اور ہندی کی ظالوں میں لگ جھگڑا. میں پچاس حصہ ہی شہہ لیے ہیں جو سا دھارن جنتا کی سمجھ کے باہر کے ہیں اور ٹھک نہیں اور اس کا کارن یہ ہو کر دولوں میں جان بوجھ کر پنچ کی پنچ کی سبیلی برتی گئی ہو. پھر بھی جو سا دھارن جنتا کے بہت کار دھارن ہو، تو اور پے کی مات کو بہت سمجھ پنچے کے شہدوں میں رکھنا ہوگا.

معمولی ڈھنگ پر لوگوں کو یہ جان ہی نہیں پڑ سکتا کہ ہڈتال ٹھیک ہو یا نہیں، جب تک کہ ہڈتال کی کسی کوئی ایسے لوگ نہ کرے، جو کسی بھی پیش کے نہ ہوں، اور جن پر سب لوگوں کو بھلا و خوش اس ہو. ہڈتالی اپنی نہیں اپنے مطالے میں رائے دینے کے حق دار نہیں اس لئے یا تو معاملہ ایسے پنچ کے ہاتھ میں دینا چاہئے جو دونوں پیش کے لوگوں کو منظور ہو یا ایسے عدالت کے فیصلے پر چھوڑ دینا چاہئے. جب اس رتی سے کام کیا جاتا ہو، تو معمولی ڈھنگ پر جنتا کے مچر سائے ہڈتال کا معاملہ رکھنے کی فوسٹ نہیں آتی. ہاں کبھی کبھی یہ بھی ہوتا ہو کہ ہندی مالک پنچ کے با اس عدالت کے فیصلے کو ٹھکرا دیتے ہیں یا بجائے مزدور

پھر آپنی تاکت کے بل پر ایک سے زبردستی اور کبھی رعایتیں اپنے لئے نہیں کرتے۔ اس لئے فیصلہ کرانے سے انہیں کوہن کر رہے ہیں۔ اسی رشا میں مخالف سادھوان جنات کے سامنے آئے ہیں۔

یہ واقعہ کچھ اور سچ اور سادھوان جنات کے لئے ادھک کچھ میں آئے وہاں بنائے جاسکتے تھے، پر اس بات کا دھیان رکھنے کے کارن کہ واکھوں کی بناوٹ بھرک مول کی ہی رہی ہے۔ میں کیا گیا ہو۔ پھر بھی اس بات کا حق کی گئی ہو کہ کوئی شدید ایسا برائے پارس جو اس کے لئے آن بانا ہو، بلکہ بھرک سارے شدید اس کی بند کی بول چال کے ہوں۔

ہمارے دیش کا ۱۰۰ میں ۹۰ حصہ گاڈل میں رہتا ہے، ۸۵۰ اکثر

نہوں پہنچاتا ہو اور پڑھا لکھا تو وہ بھی کیا پت ہی ہوگا۔ اس لئے جو ہمیں بھاشا کے سوال پر اپنے دیش کے پت میں دھیان سے دھیان کرنا ہو، تو اس کی ضرورت کہ ہم بھاشا کی سب سے پہل

ضرورت سمجھ کر ابھی ہیں ایک اسی کا دھیان رکھنا ہوگا۔ اس ۹۵ کی بھاشا میں سچ سچ سادھوان ہو، اس کو سہ سوال کی اڑاویہ پڑھانی پڑھنا چاہئے (بائنوں کی تعلیم) پڑھنا، تاکہ، سینا، گرام سینا، کینڈوں

گرام سینوں اور گرام سینوں کی آدمی کے مد سے جان کار بنانا ہو، تو ایسا ہی بھاشا کا سہارا لینا ہوگا جو اس ۹۵ کے لئے ادھک سے ادھک ٹم ہو، اور جس کی بھاشا بھرک اسی کی بھاشا کی پڑھانی اور

پکار کی بھاشا کا رابطہ ہم کھوج لینے میں، تو ہم اس ۹۵ کی پڑھانی اور

آہی کی ریش کا سدھار اس کے کھوں کی مدد سے۔ پڑھانی اور بھاشا

جنات کی ہندستان

اپنی طاقت کے بل پر ایک سے زبردستی اور کبھی رعایتیں اپنے لئے نہیں کرتے۔ اس لئے فیصلہ کرانے سے انہیں کوہن کر رہے ہیں۔ اسی رشا میں مخالف سادھوان جنات کے سامنے آئے ہیں۔

یہ واقعہ کچھ اور سچ اور سادھوان جنات کے لئے ادھک کچھ میں آئے وہاں بنائے جاسکتے تھے، پر اس بات کا دھیان رکھنے کے کارن کہ واکھوں کی بناوٹ بھرک مول کی ہی رہی ہے۔ میں کیا گیا ہو۔ پھر بھی اس بات کا حق کی گئی ہو کہ کوئی شدید ایسا برائے پارس جو اس کے لئے آن بانا ہو، بلکہ بھرک سارے شدید اس کی بند کی بول چال کے ہوں۔

ہمارے دیش کا ۱۰۰ میں ۹۰ حصہ گاڈل میں رہتا ہے، ۸۵۰ اکثر

نہوں پہنچاتا ہو اور پڑھا لکھا تو وہ بھی کیا پت ہی ہوگا۔ اس لئے جو ہمیں بھاشا کے سوال پر اپنے دیش کے پت میں دھیان سے دھیان کرنا ہو، تو اس کی ضرورت کہ ہم بھاشا کی سب سے پہل

ضرورت سمجھ کر ابھی ہیں ایک اسی کا دھیان رکھنا ہوگا۔ اس ۹۵ کی بھاشا میں سچ سچ سادھوان ہو، اس کو سہ سوال کی اڑاویہ پڑھانی پڑھنا چاہئے (بائنوں کی تعلیم) پڑھنا، تاکہ، سینا، گرام سینا، کینڈوں

گرام سینوں اور گرام سینوں کی آدمی کے مد سے جان کار بنانا ہو، تو ایسا ہی بھاشا کا سہارا لینا ہوگا جو اس ۹۵ کے لئے ادھک سے ادھک ٹم ہو، اور جس کی بھاشا بھرک اسی کی بھاشا کی پڑھانی اور

پکار کی بھاشا کا رابطہ ہم کھوج لینے میں، تو ہم اس ۹۵ کی پڑھانی اور

آہی کی ریش کا سدھار اس کے کھوں کی مدد سے۔ پڑھانی اور بھاشا

नाटकों आदि से—आज' से ही कर सकते हैं, और उसकी आँवों की मदद से—मदरसों, प्रौढ़ पढ़ाई घरों आदि से—कुछ महीनों में प्रायः उसे अक्षर सिखा देने के बाद से ही. और जो हम इसकी जगह पर हिन्दी या उर्दू के आज के रूप को, या उनकी आपस की किसी मिलावट के रूप को लेकर चलते हैं, तो उस दरजे की भाग सिखाने में ही सीखने वालों को ज़रूर और बुद्धि के हिसाब से तीन से पाँच बरसों का समय लग सकता है, और उनकी अपसली पढ़ाई बहुत कुछ उसके बाद हो सकेगी. राष्ट्र के हर एक नागरिक का ३ से ५ बरस तक का समय इस तरह अक्षरणा ही बरबाद करना, विशेष करके उस दशा में जब कि उसकी औसत उम्र २५ बरस से अधिक नहीं है, क्या हमारे लिए कोई छोटटा अपराध होगा ? और जो हम उसकी पढ़ाई में उसकी अपनी भाषा का रूप रख कर उसकी उम्र का ३ से ५ बरस का समय बचा देते हैं, तो यह क्या हमारी किसी प्रकार की छोटटी सेवा होगी ?

और, जो दोनों भाषाओं को उनके आज के एक दूसरे से दूर जा पड़े रूप में इस प्रान्त में अनिवार्य ढंग से सिखाने का यत्न किया गया तब ? तब ऊपर बताया गए समय के अगुने से लेकर देने समय की बलि प्रान्त के हर एक पढ़ने वाले की उम्र से देनी होगी. साथ ही इस इंतजाम से जनता भाषा में सीखे और हलके पन की जगह पर टेढ़े मोढ़े और भारीपन को ही बढ़ापन देना सीखेगी, और दोनों को अलग अलग सीखने पर बह दोनों को एक समझने की जगह पर अलग अलग भाषाएँ ही तो समझेगी ? ऐसी दशा में वह बीच की भाषा क्या बन पाएगी जो सबसुब राष्ट्रभाषा हो सके ?

ناکوں آوی سے — آج سے ہی کر سکتے ہیں، اور اس کی آکوں کی مدد سے — مدد سہول، پڑھائی گھروں آوی سے — کچھ پہنچو میں پہلے آسے اکثر سکھا دینے کے بعد سے ہی. اور جو ہم اس کی بگیر ہندی یا اُردو کے آج کے روپ کو، یا ان کی آپس کی کسم لاوت کے روپ کو لے کر چلے ہیں، تو اس درجے کی کھاشا سے کھانے میں ہی سیکھنے والوں کی عمر اور رسمی کے حساب سے یوں سے پانچ برسوں کا لے سکتا ہے، اللہ ان کی اصلی پڑھائی بہت کچھ اس کے بلد ہو گئی. رخصت کے ہر ایک بھری کا ۲ سے ۵ برس تک کا ہے. اس طرح اکارت ہی برباد کر دینا، رخصت کر کے اس دشا میں جب کہ آج اس کی اوسط عمر ۲۵ برس سے اٹھک نہیں ہے، کیا کارے لے سکتے ہیں، جیو، ایڑا دھ بھگا؟ اور جو ہم اس کی پڑھائی میں اس کی اپنی کھاشا کا روپ رکھ کر اس کی عمر کا ۲ سے ۵ برس کا سے بچا دیتے ہیں، تو یہ کیا ہماری کسی بیکارگی چھوٹی سیٹا ہوگی؟

اولاً جو دھن بھاشاؤں کو ان کے آج کے ایک دوسرے سے دور بنا دے روپ میں اس پرانت میں انجوائیہ، ڈھنگ سے سکھانے کا یوں یوں جب ۶ جب اوپر بنائے گئے سے کے ڈیڑھ سے لے کر دوسرے سے کی بی پرانت کے ہر ایک پڑھنے والے کی عمر سے دینی ہوگی. ساتھ ہی اس انتظام سے جنتا بھاشا میں سیدھے اور پگے بن کی جگہ پڑھنے پر منت اور بھاری بن کو ہی برتق دینا چھے گی، اللہ دونوں کو، الگ الگ سیکھنے پر وہ دونوں کو، ایک سمجھنے کی جگہ پر، الگ الگ بھاشا میں ہی دیکھنے کی پوری دشا میں وہ بھی کی بھاشا کی بن پانچ پانچ پانچ پانچ پانچ

भाषा का यह साधारण जनता का रूप खोज निकालना हिन्दु-स्तानी प्रदेशों की जरूरत नहीं है, बल्कि सारे देश की और सभी प्रान्तों की है. सारे देश की तो यह राष्ट्रभाषा के ध्यान से है, पर सभी प्रान्तों की है इसलिए कि लगभग उन सब में साहित्य की भाषा साधारण जनता की भाषा से दूर पड़ती जा रही है. जो किसी भी प्रान्त को प्रान्त की भाषा के सहारे पढ़ाई करानी है, तो आज या कल उसे भी अपनी भाषा का यह रूप खोज निकालना है, नहीं तो वह भी हिन्दुस्तानी प्रदेश से कम अपराधी न होगा और हिन्दुस्तानी प्रदेश की भाषा का यह रूप न हो जाने पर उससे उत्तरी भारत के सारे प्रान्तों की भाषाओं का इसी प्रकार का रूप तै करने में बड़ी मदद मिलेगी, क्योंकि हिन्दुस्तानी प्रदेश की जनता की भाषा उनके सबसे निकट पड़ती है.

लेखकों, प्रकाशकों, और अखबार वालों की मदद इस जनता की भाषा को आप ही प्राप्त होनी चाहिये, क्योंकि इस भाषा से उनका थोड़ा हित न होगा. पढ़ाई लिखाई इस सहारे से जितनी ही बढ़ेगी, उतनी ही उनकी रचनाओं की माँग भी बढ़ेगी. पर जो वे साधारण जनता के काम के प्रकाशनों (किताबों वगैरा) की भाषा आज उसकी भाषा कर देते हैं, तो आज ही उनकी खपत प्रायः (अकसर) तिगुनी हो सकती है. मान लीजिये कि हिन्दुस्तानी बोलने समझने वाली जनता में अन्तर पहिचानने

के हिन्दुस्तानी प्रदेश' से मेरा मतलब इस लेख भर में देश के इस समूचे हिस्से से है, जिसमें हिन्दी या उर्दू को अपने साहित्य और संस्कृति की भाषा के रूप में अपना लिया है.

बिहार का ये साधुजन बिहार का रुप कवच छलाना बिहार बिहार की ये जरूरत नहीं है, सारे देश की और सभी प्रान्तों की है. सारे देश की तो ये राष्ट्रभाषा के ध्यान से है, पर सभी प्रान्तों की है इसलिए कि लगभग उन सब में साहित्य की भाषा साधारण जनता की भाषा से दूर पड़ती जा रही है. जो किसी भी प्रान्त को प्रान्त की भाषा के सहारे पढ़ाई करानी है, तो आज या कल उसे भी अपनी भाषा का यह रूप खोज निकालना है, नहीं तो वह भी हिन्दुस्तानी प्रदेश से कम अपराधी न होगा और हिन्दुस्तानी प्रदेश की भाषा का यह रूप तै करने में बड़ी मदद मिलेगी, क्योंकि हिन्दुस्तानी प्रदेश की जनता की भाषा उनके सबसे निकट पड़ती है.

लेखकों, प्रकाशकों, और अखबार वालों की मदद इस जनता की भाषा को आप ही प्राप्त होनी चाहिये, क्योंकि इस भाषा से उनका थोड़ा हित न होगा. पढ़ाई लिखाई इस सहारे से जितनी ही बढ़ेगी, उतनी ही उनकी रचनाओं की माँग भी बढ़ेगी. पर जो वे साधारण जनता के काम के प्रकाशनों (किताबों वगैरा) की भाषा आज उसकी भाषा कर देते हैं, तो आज ही उनकी खपत प्रायः (अकसर) तिगुनी हो सकती है. मान लीजिये कि हिन्दुस्तानी बोलने समझने वाली जनता में अन्तर पहिचानने

के हिन्दुस्तानी प्रदेश' से मेरा मतलब इस लेख भर में देश के इस समूचे हिस्से से है, जिसमें हिन्दी या उर्दू को अपने साहित्य और संस्कृति की भाषा के रूप में अपना लिया है.

بہت زیادہ سے زیادہ ہے۔ ہندوستان میں ۱۸۵ ملین آدمی ہیں، جن میں سے تقریباً نصف یعنی ۹۰ ملین ہندوستانیوں کے ساتھ ساتھ ۹۰ ملین سے زیادہ مسلمان ہیں۔

۱۸۵ ملین آدمی میں سے تقریباً نصف یعنی ۹۰ ملین ہندوستانیوں کے ساتھ ساتھ ۹۰ ملین سے زیادہ مسلمان ہیں۔

ہندوستان کی مجموعی آبادی تقریباً ۱۸۵ ملین ہے، جس میں سے تقریباً نصف یعنی ۹۰ ملین ہندوستانیوں کے ساتھ ساتھ ۹۰ ملین سے زیادہ مسلمان ہیں۔

ہندوستان میں ۱۸۵ ملین آدمی ہیں، جن میں سے تقریباً نصف یعنی ۹۰ ملین ہندوستانیوں کے ساتھ ساتھ ۹۰ ملین سے زیادہ مسلمان ہیں۔

ہندوستان کی مجموعی آبادی تقریباً ۱۸۵ ملین ہے، جس میں سے تقریباً نصف یعنی ۹۰ ملین ہندوستانیوں کے ساتھ ساتھ ۹۰ ملین سے زیادہ مسلمان ہیں۔

ہندوستان میں ۱۸۵ ملین آدمی ہیں، جن میں سے تقریباً نصف یعنی ۹۰ ملین ہندوستانیوں کے ساتھ ساتھ ۹۰ ملین سے زیادہ مسلمان ہیں۔

نیا ہند
نیا ہند
نیا ہند

نیا ہند
نیا ہند
نیا ہند

نیا ہند
نیا ہند
نیا ہند

نیا ہند
نیا ہند
نیا ہند

ہندوستانیوں کا رچنے کے بارے میں کم سے کم نیا لکھی جاتے۔ ضروری ہوں گی۔

۱۔ یہ حصہ بھی کچھ ہندی اور اردو کی بول چال کے لئے چلتے پر لگوں کے

۲۔ یہ حصہ بھی کسی دوسری भाग की बेसिक या दूसरी किसी शब्दावली के हिन्दुस्तानी पर्याय भर (एक ही माने वाले लक्षण) लेकर, या इधर उधर मानमाने शब्दों को वीन बदल करके ही बनाई हुई न हो, बल्कि एक ऐसी शब्दों में पूरी भाषा हो जिसमें हिन्दी और उर्दू के बड़े से बड़े केशों के सार परिभाषण (और इस्तलाही) शब्दों के स्थान पर इसके शब्दों से काम निकाला जा सकता हो, पारिभाषिक (इस्तलाही) शब्दों की बात अलग है; पर साथ ही इस भाषा की शब्दावली अधिक से अधिक छोटी भी हो.

३۔ इस में इस प्रकार की शब्दावली बिल्कुल न हो जो हिन्दुस्तानी के प्रदेश गाँवों की जनता के लिए अनर्चीनी हो, बल्कि भरसक इसकी सारी शब्दावली उसमें चलती भी हो.

४۔ अधिक से अधिक सुगम होने के नाते इस शब्दावली से यह आशा तो की जायगी कि यह हिन्दुस्तानी प्रदेश की दोनों मुख्य लिखा-बटा नगरी और उर्दू में लिखी जा सके, पर इस प्रकार का कोई बचन न होना चाहिये कि किसी भी लिखावट की किसी कमी के

ہندوستانی کا روپیہ طے کرنے کے بارے میں کم سے کم نیچے لکھی

۱۔ یہ حصہ بھی کچھ ہندی اور اردو کی بول چال کے لئے چلتے پر لگوں کے

۲۔ یہ حصہ بھی کسی دوسری بھاشا کی بیک یا دوسری کسی شبداولی کے

۳۔ اس میں اس پر کار کی شبداولی بالکل نہ ہو جو ہندوستانی پریش کے گاؤں کی جنٹا کے لئے آن پھینھی ہو، بلکہ جو ہندوستان کی ساری شبداولی اس میں چلتی بھی ہو.

۴۔ ادھک سے ادھک ٹنگ ہونے کے لئے اس شبداولی سے

نیا ہند جولائی ۱۹۶۹
تاریخ اور ہندی اور انڈیا کی ریختوں میں اس نے بڑی بڑی خدمات کی ہیں اور ہندی اہل پر ایم بھی ہیں۔

۲- بیسک ہندستانی دیا کریں۔ جس میں اس کی دو صفیاں مشہور ہیں، 'کیر ریٹا' سمجھا اور 'کیر ریٹا' اور ہندی اہل انڈیا میں ان کے بچوں کے ساتھ کھانا کھانے کی روٹی کا وچار ہے۔
۳- بیسک ہندستانی دیو کی ہیں۔ جس میں بیسک ہندستانی کے مجموعے سوال پر جوڑتے ہیں وہاں کیا ہے۔

۴- بیسک ہندستانی کی بھاشاؤں اور انگریزی میں اور دوسرے زبانوں کی بھاشاؤں اور انگریزی کا ایک ایک کوشش ہے۔ ہندستانی کے لئے اور اس کا کام ہے۔

۵- بیسک ہندستانی کی بھاشاؤں اور انگریزی میں اور دوسرے زبانوں کی بھاشاؤں اور انگریزی کا ایک ایک کوشش ہے۔ ہندستانی کے لئے اور اس کا کام ہے۔

۶- بیسک ہندستانی کی بھاشاؤں اور انگریزی میں اور دوسرے زبانوں کی بھاشاؤں اور انگریزی کا ایک ایک کوشش ہے۔ ہندستانی کے لئے اور اس کا کام ہے۔

نیا ہند جولائی ۱۹۶۹

تاریخ اور ہندی اور انڈیا کی ریختوں میں اس نے بڑی بڑی خدمات کی ہیں اور ہندی اہل پر ایم بھی ہیں۔

۲- بیسک ہندستانی دیا کریں۔ جس میں اس کی دو صفیاں مشہور ہیں، 'کیر ریٹا' سمجھا اور 'کیر ریٹا' اور ہندی اہل انڈیا میں ان کے بچوں کے ساتھ کھانا کھانے کی روٹی کا وچار ہے۔
۳- بیسک ہندستانی دیو کی ہیں۔ جس میں بیسک ہندستانی کے مجموعے سوال پر جوڑتے ہیں وہاں کیا ہے۔

۴- بیسک ہندستانی کی بھاشاؤں اور انگریزی میں اور دوسرے زبانوں کی بھاشاؤں اور انگریزی کا ایک ایک کوشش ہے۔ ہندستانی کے لئے اور اس کا کام ہے۔

۵- بیسک ہندستانی کی بھاشاؤں اور انگریزی میں اور دوسرے زبانوں کی بھاشاؤں اور انگریزی کا ایک ایک کوشش ہے۔ ہندستانی کے لئے اور اس کا کام ہے۔

यह लेख जनता की हिन्दुस्तानी में ही लिखा गया है। लगभग ५० ही पारिभाषिक शब्दों को मद्द जो गई है, नहीं तो ४००० शब्दों के इस लेख में आप हुए सभी शब्द अवधी क्षेत्र की साधारण जनता में चलते और समझे जाते हैं। इतना जरूर मैंने किया है कि कुछ शब्द जो अपने तत्सम रूप में भी अवधी क्षेत्र में समझे जा सकते हैं, और हिन्दी या उर्दू में तत्सम रूप में ही लिखे चले जाते हैं, उन्हें मैंने तत्सम रूप में ही रक्खा है।

इस लेख में काम में लाए हुए पारिभाषिक शब्द यह हैं: जनता, राष्ट्र, प्रांत, साहित्य, संस्कृति, स्कूल, कालेज, माध्यम, संकशन, केंद्र, व्यवस्थापिका, सभा, सामंतवाद, शब्दावली, पुच्छ, नोट, पत्रिका, शैली, प्राइमरी, अनिवाप्य, नागरिक, तत्सम, उलथा, वाक्य, प्रौढ़-शिक्षा, प्रदेश, लेखक, प्रकाशक, जनतांत्रिकरण, टेकनिकल, विषय, विवेचन, वैसिक, व्याकरण, ध्वनियों, शब्द-रचना, अर्थविन्यास, प्रयोग, पर्याय, परिभाषित, पारिभाषिक, कोश, तद्भव, व्युत्पत्ति, रचना, तुलनात्मक, प्रचार, योजना, क्षेत्र।

जुलाई १९४७

जिन्ता की हिन्दुस्तानी

खासतः

ये लिके जिन्ता की हिन्दुस्तानी में ही लिखा गया है। एक बहक ५० ही पारिभाषिक शब्दों की मद में लिखा है, नहीं तो ४००० शब्दों के इस लेख में आप सभी शब्द अवधी क्षेत्र की साधारण जनता में चलते और समझे जाते हैं। इतना जरूर मैंने किया है कि कुछ शब्द जो अपने तत्सम रूप में भी अवधी क्षेत्र में समझे जा सकते हैं, और हिन्दी या उर्दू में तत्सम रूप में ही लिखे चले जाते हैं, उन्हें मैंने तत्सम रूप में ही रक्खा है।

इस लेख में काम में लाए हुए पारिभाषिक शब्द यह हैं: जनता, राष्ट्र, प्रांत, साहित्य, संस्कृति, स्कूल, कालेज, माध्यम, संकशन, केंद्र, व्यवस्थापिका, सभा, सामंतवाद, शब्दावली, पुच्छ, नोट, पत्रिका, शैली, प्राइमरी, अनिवाप्य, नागरिक, तत्सम, उलथा, वाक्य, प्रौढ़-शिक्षा, प्रदेश, लेखक, प्रकाशक, जनतांत्रिकरण, टेकनिकल, विषय, विवेचन, वैसिक, व्याकरण, ध्वनियों, शब्द-रचना, अर्थविन्यास, प्रयोग, पर्याय, परिभाषित, पारिभाषिक, कोश, तद्भव, व्युत्पत्ति, रचना, तुलनात्मक, प्रचार, योजना, क्षेत्र।

تین گیت

(رवीन्द्रناथ ٹاگور)

۱

باپسہ

آگار تونھاری پرسی مرنجی ہو تو میں ایک بار फिर इस दुनिया के समन्दर के किनारे जहाँ सुख और दुख की लहरों का खेल हमेशा चल रहा है, वापस आ जाऊँ. फिर पानी पर फिरती चलऊँ और मٹی میں खेलے اور مايا रुषी हिरन की तरह हरनी के पीछे अपने आँसुओं में तैरूँ.

फिर अंधेरी रात में काँटे बाले रास्ते पर चलूँ, तैसा भी हो, घायल होता होता बचूँ या मरूँ.

क्याकि मैं जानता हूँ कि वच भा फिर तुम्हीं हुये भय में आकर मेरे साथ हँसते हँसते खेलोगे और मैं इस दुनिया को नए तौर से प्यार करूँगा.

(गीतार्ह से)

२

शुभ प्रभात

आज किसके घर का दरवाजा खुल गया है. किसके लिये आज सुबह सूरज का निकलना उसकी मुद्रा बदल गया है. किसकी राजपोशी के लिये, सोने के घड़े में रोशनी भर कर, सुबह आशीर्वाद लिये अंधेरे को पार करके चली आई है? सारे जंगल में

میں گیت
(رابندر ناتھ ٹاگور)

والیسی

اگر تھناری ایسی مرضی ہو تو میں ایک بار پھر اس دنیا کے سمندر کے کنارے جہاں سکھ اور دکھ کی لہروں کا کھیل ہمیشہ چلتا رہا ہے۔ واپس آ جاؤں۔ پھر پانی پر کشتی چلاؤں اور مٹی میں کھیلوں اور مایا روپی ہرن کی طرح سرنے کے پیچھے اپنے آئسہوڈوں میں تیروں۔

پھر اندھیری رات میں کانٹے والے راستے پر چلوں جیسا کہ میں ہو گیا ہوں۔ آج میں جانتا ہوں تب بھی پھر تم ہی مجھے بھیس میں آکر میرے ساتھ بیٹھے بیٹھے کھیلو گے اور میں اس دنیا کو نئے طرز سے پیار کر دوں گا۔

(گیتا رھ سے)

شعبہ پر کھیات

آج کس کے گھر کا دروازہ کھل گیا ہے۔ کس کے لئے آج صبح سورج کا نکالنا اس کی مراد بر لایا ہے۔ کس کی راج پوشی کے لئے سورج سے گھونٹ میں روشنی بھری ہے اور بار بار آشیہر سے کو پیار کر کے چلی آئی ہے؟ سارے جنگل میں

नया हिनद

तीन गीत

जुलाई सन् '४७

मूल खिल उठते हैं और नए पत्ते हवा में नाचते हैं ? किसके दिख के अन्दर उनहीं माला गंधी गई है ? बहुत सदियों के सौगात को किसने आज कनूल किया है ? किसको चिन्दगी में सुबह ने आज अंधेरा बिलकुल दूर कर दिया है ?

(गीताई से)

३

साथी

मेरे रास्ते के साथी में तुम्हें बार बार नमस्कार करता हूँ. इस मुसाफिर का नमस्कार तुम कनूल करो.

चिन्दगी में—जुदाई में—तुकसान में और अलिरों दिन के मालिक—इस दूरे हुए पर का नमस्कार तुम कनूल करो.

ए नई सुबह को रोशनी, हमेशा से चली आई चिन्दगी की रफ्तार—

इस नई उम्मीद का नमस्कार तुम कनूल करो.

चिन्दगी के रथ के चलाने वाले, मैं हमेशा से रास्ते का मुसाफिर हूँ.

इस रास्ते पर चलने वाले का नमस्कार तुम कनूल करो.

(गीताई से)

बंगाल से तरजुमा—गु. म.

जवाब

तैयारी

पहिल

पहिल कबल आँखें हैं और नई आँखें हैं नाचते हैं कस ? कस के डल के अन्दर उन की आँखें हैं ? बहुत सदियों के सुगात को कस ने आज जवाब किया है ? कस की रुंदगी में चिन्दगी ने आज अंधेरा बाबल दूर कर दिया है ?

३

साथी

मेरे रास्ते के साथी में तुम्हें बार बार नमस्कार करता हूँ. इस मुसाफिर का नमस्कार तुम कनूल करो.

चिन्दगी में—जुदाई में—तुकसान में और अलिरों दिन के मालिक—इस दूरे हुए पर का नमस्कार तुम कनूल करो.

ए नई सुबह को रोशनी, हमेशा से चली आई रुंदगी की रफ्तार—

इस नई उम्मीद का नमस्कार तुम कनूल करो.

चिन्दगी के रथ के चलाने वाले, मैं हमेशा से रास्ते का मुसाफिर हूँ.

इस रास्ते पर चलने वाले का नमस्कार तुम कनूल करो.

(गीताई से)

बंगाल से तरजुमा—गु. म.

مौلانا محمد اسلم

(شری راتن لال بंसल, किराबाबाद)

सन १८५७ की आबादी को लड़ाई नाकामयाब हो जाने के बाद बर्लोजलार्ड संगठन के चौथे नेता हाजी इमदादुल्ला साहब मक्का के लिये रवाना हो गए. मक्का जाने से पहले उन्होंने हिन्दुस्तानी मुसलमानों में मुल्क को आबादी के लिये लड़ने और संगठित होने के असूलों का प्रचार करने का काम मौलाना मुहम्मद कासिम साहब को सौंपा. उस वक़्त मौलाना मुहम्मद कासिम साहब के सामने ऐसी दिक्कतें थीं, जिनका पूरा पूरा खयाल भी इस वक़्त नहीं किया जा सकता.

उनकी सबसे पहली और सबसे बड़ी दिक्कत तो यह थी कि सन् १८५७ के इन्कलाब में हिस्सा लेने के जुम में सरकारी जासूस हाथों में फांसी का कन्दा लिये जागह जागह उनकी मौजूदगी संघते फिरते थे. मौलाना को फांसी का डर तो न था. क्योंकि अगर डर होता तो वह हाजी इमदादुल्ला साहब के साथ ही मक्का जा सकते थे. लेकिन वह चिन्दा रहना चाहते थे जिससे कि इस तरह का जो पिछले करीब डेढ़ सौ बरस से चलती आ रही थी और जिसका शाह बलोजल्लाह साहब से लेकर हाजी इमदादुल्ला साहब के जमाने तक बड़े बड़े देश भक्तों ने अपने बदन से साँचा था, किसी तरह आगे भी चिन्दा रख सकें. वह यह भी जानते थे कि हाजी इमदादुल्ला साहब का मक्का चला जाना ही ठीक है. क्योंकि उग्रवाद मशहूर होने की वजह से उनके जल्द पकड़े जाने

”मौलانا محمد اسلم“

معرضت لال بंसل خیرفہ آباد

۱۸۵۷ء کی آزادی کی لڑائی کا کامیاب اظہار کے بعد دلی والی انگلیش کے چھٹے نینا طامی امداد ط صاحب کے لئے روانہ ہو گئے۔ کرتے جاتے سے پہلے انہوں نے ہنرمندانہ سالانہ میں ایک کی آزادی کے لئے لڑنے اور شہادت کے اہم اہل کار پر حاکم کر کے کام چلانا محمد قاسم صاحب کو سونپا۔ اسی وقت مولانا محمد قاسم صاحب کے سامنے ایسی ہی چھٹی جن کا پورا پورا خیال بھی اس وقت نہیں کیا جاسکتا۔ ان کی سب سے پہلی اور سب سے بڑی دقت تو یہ تھی کہ ۱۸۵۷ء کے انقلاب میں حصہ لینے کے جرم میں سرکاری جاغیوں انہوں میں پھانسی کا پھندا لٹے بچر بچر ان کی موجودگی سے بچنے کے لئے مولانا کو پھانسی کا عمل تو نہ تھا کیونکہ اگر ملے جاتا تو وہ حاجی امداد صاحب کے ساتھ ہی کرتے جاتے، لیکن وہ زندہ رہنا چاہتے تھے، جس سے اس تحریک کو جو کھلیا قریب ڈیڑھ سو برسوں سے چلتی آ رہی تھی امداد صاحب کو ظاہر قی اللہ صاحب سے لے کر حاجی امداد صاحب کے زمانے تک برس برس دیش دیش بھگتوں نے اپنے خون سے سینا تھا، کسی طرح آگے بھی زندہ رکھ سکیں۔ وہ یہ بھی جانتے تھے کہ حاجی امداد صاحب کا کرتے جانا ہی کھلیا ہی ہو۔ کیونکہ زیادہ مشورہ ہونے کی وجہ سے اس کے جلد ہیرو جانے

کا لہنہ ہے اور باقی کے ساتھیوں میں میں ہی ایسا ہوا جو اس شخص کو، جو اس وقت قریب قریب بالکل ہی ختم ہو چکا ہے، اس شخص سے زندہ کرنے کے لئے کوشش کر رہے ہیں۔ یہ وہی وہی شخص ہے جس کا نام اس کے بچوں کی ایوان طہی کا ایک بڑا بھوت ہے کہ ایسے وقت میں بھی ان کے نظام میں کسی طرح کی بھوت نہیں پڑی۔ تحریک کے نام نے جن سے یہ کام ہوا ان سے نہیں بچ سکتا۔ وہ چلا گیا اور جس سے یہ کام ہوا وہ ہندوستان میں ہی رہے وہ ہندوستان میں ہی رہے۔ مولانا محمد قاسم صاحب کے سامنے ایک دوسری وقت یہ بھی کہ ۱۹۵۷ء کی ناکامیوں اور اس کے بعد کے انگریزوں کے ظلموں نے مسالوں میں بڑی کسٹ آتی پیدا کر دی تھی۔ ایک عالم خیال یہ پیدا ہو گیا تھا کہ انگریزوں کی طاقت اتنی بڑی ہو کر ان سے بڑھنے کا خیال کرنا اپنی وجود کی برابری کو بھونکا دینا ہو۔ اسی سے یہ بھی خیال پیدا ہوا کہ جب انگریزوں سے اس وقت لڑنا نہیں ہوگا اور ان کی حکومت میں ہی رہنا ہوگا۔ انگریزوں نے ان سے زیادہ سے زیادہ رعایتیں حاصل کی جائیں اور ان کے دل میں یہ بات بھٹادی جائے کہ مسلمان قوم اب انگریزوں کی آئی ہے وہاں وہاں بڑھتی ہوئی ہندوستان کی دوسری قوم ہے۔ اس لئے مسلمانوں کو ان کے خیال اور ان کے خیال میں دوسری قوموں کی طرح حوصلہ دینا چاہیے۔ ایسا خیال رکھنے والوں میں کچھ ایسی بڑی بڑی ہمتیاں بھی تھیں جو اپنے اپنے خیالوں اور قابلیت کی وجہ سے مسلمانوں کو بڑھتی ہوئی ہمت دینے لگیں۔

نیا دھند مولاانا محمد قاسم جلد اول سے یہ کام ہوا وہ ہندوستان میں ہی رہے وہ ہندوستان میں ہی رہے۔ مولانا محمد قاسم صاحب کے سامنے ایک دوسری وقت یہ بھی کہ ۱۹۵۷ء کی ناکامیوں اور اس کے بعد کے ظلموں نے مسالوں میں بڑی کسٹ آتی پیدا کر دی تھی۔ ایک عالم خیال یہ پیدا ہو گیا تھا کہ انگریزوں کی طاقت اتنی بڑی ہو کر ان سے بڑھنے کا خیال کرنا اپنی وجود کی برابری کو بھونکا دینا ہو۔ اسی سے یہ بھی خیال پیدا ہوا کہ جب انگریزوں سے اس وقت لڑنا نہیں ہوگا اور ان کی حکومت میں ہی رہنا ہوگا۔ انگریزوں نے ان سے زیادہ سے زیادہ رعایتیں حاصل کی جائیں اور ان کے دل میں یہ بات بھٹادی جائے کہ مسلمان قوم اب انگریزوں کی آئی ہے وہاں وہاں بڑھتی ہوئی ہندوستان کی دوسری قوم ہے۔ اس لئے مسلمانوں کو ان کے خیال اور ان کے خیال میں دوسری قوموں کی طرح حوصلہ دینا چاہیے۔ ایسا خیال رکھنے والوں میں کچھ ایسی بڑی بڑی ہمتیاں بھی تھیں جو اپنے اپنے خیالوں اور قابلیت کی وجہ سے مسلمانوں کو بڑھتی ہوئی ہمت دینے لگیں۔

(۱۰۰)

نیا دھند 1 مہولانا سید احمد کاظمی مولانا سید 187

میں سب سے بڑی ہستی سر سید احمد خاں صاحب کی تھی جو مولانا ملک علی کے شاگرد ہونے کی وجہ سے مولانا قائم صاحب کے گرو بھائی ہوتے تھے۔ سر سید احمد صاحب نے 1857ء کے انقلاب سے پہلے ہی انگریزوں کی فوجی میں آجکے آنگریزوں کی فوج میں وہ ان کے کام کرنے کے ڈھنگ کا آن پر گرا انگریزوں کی فوج میں کے انقلاب کے بعد انگریزوں نے دلی میں جو نقل عام کا تھا، اس میں سر سید احمد صاحب کے ایک نئے بچا مارے آئے تھے۔ انہ ان کی بوڑھی ماں کو ایک فوجی گھر میں چھپ کر جان بچائی۔ بڑی تھی جیسا کہ بھی جانتے ہیں۔ سید احمد صاحب نے غلامی کے وقت اپنی جان خطرے میں ڈال کر بھی کئی انگریزوں کی جان بچائی تھی۔ اس لئے جب انگریزی فوجوں کے ذریعہ ایسے خاندان کی اس برادری کا حال انہوں نے سنا تو اس کا اثر ان پر پڑنا لازمی تھا۔ اس زمانے میں ان کی گھسی مشہور کتاب "اسباب بناوٹ" میں ہم اس اثر کو آسانی سے محسوس کر سکتے ہیں۔ لیکن جلد ہی وہ دوسرے خیالات میں بہ چلے۔ اس وقت سرکاری فوجیوں سے مسلمانوں کو الگ رکھنے کی انگریزوں کی پالیسی نے ان کے دل پر گہرا اثر ڈالا اور انہوں نے محسوس کیا کہ اس طرح ہندوستان کے مسلمانوں کو گہرا دھکا دئے گا، اور وہ تسلیم و دوسری چیزوں میں ہندوستان کی دوسری قوموں سے بری طرح ڈھکی چھپی ہیں۔ اس سے بچنے کا انہیں صرف ایک ہی راستہ سوچنا پڑا مسلمانوں کے دلی

جولائی 1877ء

مولانا محمد قائم

شیارہند

(18)

نیا ہند مولانا محمد قاسم مولانا محمد قاسم سے انگریزوں اور انگریزی تہذیب کے لئے جو نفرت ہو وہ بحال رہی جائے اور انگریزوں کے دل سے بھی سلاموں کے باغی ہوئے کا خیال مٹا دیا جائے۔

سارے سارے بھارت بھارت پر اپنے عقیدے کے سچے محقق اور قوم کی جی بھلائی چاہنے والے تھے۔ ان کے دل میں اپنی قوم کے لئے اتنا ہی درد اور اس کی ترقی کے لئے قربانی کرنے کا ویسا ہی جذبہ تھا جیسا مولانا قاسم صاحب کے دل میں تھا۔ دونوں ایک ہی استاد کے شاگرد تھے۔ پھر بھی دونوں کا راستہ نہ صرف ایک دوسرے سے الگ بلکہ ایک دوسرے کے خلاف تھا۔ ایک کو انگریزوں کی ہر ایک چیز میں نئی روشنی اور خوبی ہی محلی نظر آتی تھی تو دوسرے کو انگریزوں کی بھلائی سے بھی نفرت تھی۔ ایک انگریزوں کی وفاداری میں ہی قوم اور ملک کی ترقی دیکھتا تھا تو دوسرے کے لئے انگریزوں کی مخالفت نہ کرنا اپنے ایمان کو دھمکا دیتا تھا۔ یہ اس بات کی جتنی جاننے مثال ہو کر بھی کبھی ایک ہی مقصد ہوئے ہوئے بھی وہ نہایت سچے اور نہایت قابل انسانوں میں بھی کتنا گرا خرق اور درود ہو سکتا ہو۔

اس طرح مولانا محمد قاسم صاحب کے سامنے دوسری بڑی مشکل یہ تھی کہ مسلمانوں کے انقلاب کی ناکامی کی وجہ سے بہت جلد مسلمانوں میں انگریزوں کے لئے وفاداری رکھنے اور ان کی خدمت کو اپنانے کا پرچار جاری ہو چکا تھا۔ اس پرچار میں انگریزوں کے بجا رہنے والوں سے اس وقت تک کہ وہ دوسری طرف ایک کے لئے دوسری سازشوں کے مقاصد کے باوجود قریباً تمام انگریزوں کے مقاصد میں چلا کر انگریزوں سے بھارت کے نیا ہند مولانا محمد قاسم مولانا محمد قاسم سے انگریزوں اور انگریزی تہذیب کے لئے جو نفرت ہو وہ بحال رہی جائے اور انگریزوں کے دل سے بھی سلاموں کے باغی ہوئے کا خیال مٹا دیا جائے۔

سارے سارے بھارت بھارت پر اپنے عقیدے کے سچے محقق اور قوم کی جی بھلائی چاہنے والے تھے۔ ان کے دل میں اپنی قوم کے لئے اتنا ہی درد اور اس کی ترقی کے لئے قربانی کرنے کا ویسا ہی جذبہ تھا جیسا مولانا قاسم صاحب کے دل میں تھا۔ دونوں ایک ہی استاد کے شاگرد تھے۔ پھر بھی دونوں کا راستہ نہ صرف ایک دوسرے سے الگ بلکہ ایک دوسرے کے خلاف تھا۔ ایک کو انگریزوں کی ہر ایک چیز میں نئی روشنی اور خوبی ہی محلی نظر آتی تھی تو دوسرے کو انگریزوں کی بھلائی سے بھی نفرت تھی۔ ایک انگریزوں کی وفاداری میں ہی قوم اور ملک کی ترقی دیکھتا تھا تو دوسرے کے لئے انگریزوں کی مخالفت نہ کرنا اپنے ایمان کو دھمکا دیتا تھا۔ یہ اس بات کی جتنی جاننے مثال ہو کر بھی کبھی ایک ہی مقصد ہوئے ہوئے بھی وہ نہایت سچے اور نہایت قابل انسانوں میں بھی کتنا گرا خرق اور درود ہو سکتا ہو۔

اس طرح مولانا محمد قاسم صاحب کے سامنے دوسری بڑی مشکل یہ تھی کہ مسلمانوں کے انقلاب کی ناکامی کی وجہ سے بہت جلد مسلمانوں میں انگریزوں کے لئے وفاداری رکھنے اور ان کی خدمت کو اپنانے کا پرچار جاری ہو چکا تھا۔ اس پرچار میں انگریزوں کے بجا رہنے والوں سے اس وقت تک کہ وہ دوسری طرف ایک کے لئے دوسری سازشوں کے مقاصد کے باوجود قریباً تمام انگریزوں کے مقاصد میں چلا کر انگریزوں سے بھارت کے نیا ہند مولانا محمد قاسم مولانا محمد قاسم سے انگریزوں اور انگریزی تہذیب کے لئے جو نفرت ہو وہ بحال رہی جائے اور انگریزوں کے دل سے بھی سلاموں کے باغی ہوئے کا خیال مٹا دیا جائے۔

اس طرح مولانا محمد قاسم صاحب کے سامنے دوسری بڑی مشکل یہ تھی کہ مسلمانوں کے انقلاب کی ناکامی کی وجہ سے بہت جلد مسلمانوں میں انگریزوں کے لئے وفاداری رکھنے اور ان کی خدمت کو اپنانے کا پرچار جاری ہو چکا تھا۔ اس پرچار میں انگریزوں کے بجا رہنے والوں سے اس وقت تک کہ وہ دوسری طرف ایک کے لئے دوسری سازشوں کے مقاصد کے باوجود قریباً تمام انگریزوں کے مقاصد میں چلا کر انگریزوں سے بھارت کے نیا ہند مولانا محمد قاسم مولانا محمد قاسم سے انگریزوں اور انگریزی تہذیب کے لئے جو نفرت ہو وہ بحال رہی جائے اور انگریزوں کے دل سے بھی سلاموں کے باغی ہوئے کا خیال مٹا دیا جائے۔

نیا ہند 1 جولائی سن ۱۸۷۰
مہتمم مولانا محمد کاظم

موسلمانان مائلینو آئیر آئالینو کو لہرنو لہرنو سچاؤں دیکر
کالہ پالنی ہنجر رہی آئی. اےسی حالن مں مائلانان مودہنماد کاسیم
ساہب کئ سامانہ یاد سجال پشہ آا کئ ہن آئیوں کائ ماکابلالا کیم
لرہہ کیمیا آاؤہ آئیر موسلمانانوں ک وائیولڈاؤہ آماول کئ ہنڈہ کئ
نئیو لاکار اولنہ آناآادی کئ سٹالائول کئسہ پئدا کیم آائی ؟
کولہ دینوں باؤہ آاؤہ ہنجاؤہ سئ ہانوی ہماناؤوللا ساہب نہ کیمیا
مامولوں سئی آناؤہ پلر ااک سچاؤہوا مودرسا کایم کرنے کئی سکیم
مائلانان کاسیم ساہب کو ہنجنی. لو اولنکو آؤہرہ مں یوؤو رولشانی
نجر آاؤہ آئیر سن ۱۸۷۰ کئ ہنکلالو کئ سیک ۱۰ براس باؤہ
یانوں سن ۱۸۷۰ مں آراروی لاریول ۱۵ مودرم ۱۸۷۳ ہیزری کو
۱) سہارنپور سئ ۲۰ مائل دُور دِوبند جئسہ ااک نلہابول مامولوں کیمو
مں اولہنوں 'دار-اول-اولم' (ہولم کائ ویر) کئ نام سئ ااک مچاؤہوی
مودرسا کایم کرنے دیا. ہس مودرسئ کو کایم کرنے مں مائلانان
کاسیم ساہب کئ آلالاوا اولنکئ پورانی ساپی ہانجو ررئیؤ آہماد
ساہب گنؤوہی کائ، آو رادر مں ہسسا لئنے کئ آورم مں کاسی پانہ
پانہ وچو ی، لٹاپ ہانو آا. اولنکئ آلالاوا مائلانان مودلواؤہ آلالی
ساہب آئیر آئیر اولنکئ ہانڈہ مائلانان آولیککار آلالی ساہب نہ
سئی ہس کام مں پُری مودد کئی آئی.

مائلانان کاسیم ساہب نہ آاؤہ یاد مودرسا کایم کیمیا، لو
ن اولنکئ پاس پئسا آا آئیر ن کوءئ پئسہ بالان موددگار ہی آا.
آام لوگوں کائ ہالو یاد آا کیموہ اولنہ باؤوں کرنے آئی ڈرتو ی،
پلر مودد کائن کرتا ؟ مودرسئ کئ سب سئ پاللو کالیمولم
مائلانان مودد اول ہسن لو، آو آانہ اول کر مائلانان کاسیم

مولانا محمد کاظم
سلان مولویوں اور عالمن کو کسی لمبی سزا میں سے کر لائے یا نہ بھیج
دی تھی. ایسی حالت میں مولانا محمد کاظم صاحب کے سامنے یہ
سوال پیش تھا کہ ان چیزوں کا مطالبہ کس طرح کیا جاوے اور سزاؤں
کو دوانا مولوی جماعت کے مجتہد کے سپیشے لاکر ان میں آڑلی کے
خیالات کیسے پیدا کر جائیں۔

کچھ دنوں کے بعد جب حجاز سے حاجی سلطان صاحب نے کسی
معمولی سی جگہ پر ایک مذہبی مدرسہ قائم کرنے کی اسکیم مولانا کاظم صاحب
کو کچھ ہی قاتان کو اس اندھیورت میں مقبولی روشنی نظر آئی اور مدرسہ
کے انقلاب کے صرف دس برس بعد یعنی ۱۸۷۴ میں مولانا کاظم صاحب
۱۰۔ محرم ۱۲۸۳ ہجری کو سہارنپور سے بائیں میں دودہ دلو بند جسے
ایک نہایت معمولی فقیہ میں انھوں نے دارالعلوم رحیم کا کھرا کے
نام سے ایک مذہبی مدرسہ قائم کر دیا۔ اس مدرسہ کو قائم کرنے میں
مولانا کاظم صاحب کے علاوہ ان کے برائے ساتھی حاجی رشید احمد
صاحب کچھ ہی کا جو بند میں مقعدہ لینے کے جرم میں پھانسی پائے
پائے بیٹے تھے، خاص ہنڈہ لٹا ان کے علاوہ مولانا ہمشاہ علی صاحب
اور ان کے بھائی مولانا ذوالفقار علی صاحب نے بھی اس کام
میں پوری مدد کی تھی۔

مولانا کاظم صاحب نے جب یہ مدرسہ قائم کیا تب نہ ان
کے ہی سب سے کچھ اور نہ کوئی ایسے والا مددگار ہی تھا۔ عام
لوگوں کا خیال یہ تھا کہ وہ ان سے آئیں کرتے بھی ڈرتے تھے پھر مدرسہ
کون کرتا ؟ مدرسہ کے سب سے پہلے طالب علم مولانا کاسیم صاحب کے بھائی مولانا

نیا ہند کے متعلق جاننا اور وہی اللہ تعالیٰ جانتے کے متعلق امام نے شروع میں مدد لیا ہے اس لیے کہ اس وقت کوئی نہ جانتا تھا کہ یہ جو وہ چاروں ایک بڑے بڑے سے مولوی کے آگے بیٹھے ہوئے کلام پاک کی بلی کی کر پڑھ رہے ہیں اللہ ہی میں وہی اور بادشاہ سے بجائے کے لئے ایک ہیئت تک نہیں ہو چکے ہوں۔ اس کے بعد وہی تک کی آزادی کے ساتھ ہیوں کی ایک خاص مخالفت اور نہ صرف ہندستان بلکہ دنیا بھر کے اسلامی مدرسوں میں ایک خاص مدد سے بن جائے گا۔

اس کے بعد ان بعد ہی سرسید احمد صاحب نے علی گڑھ میں مسلمانوں کو انگریزی تعلیم دینے کے لئے ایک کالج کھولنا شروع کیا۔ اس میں پڑھانے کے لئے بالایت سے انگریز تدریس مولانا سرسید احمد صاحب کی خواہش تھی کہ کالج کی اس محکمہ میں مولانا تقی صاحب بھی شریک ہو جائیں مگر تقی صاحب نے اس میں شریک ہونے سے انکار کر دیا۔ اس بارے میں سرسید احمد صاحب اور ان کے ساتھیوں و مولانا تقی صاحب میں جو کچھ خط و کتابت ہوئی وہ دلچسپیت امتیاز کے نام سے ایک کتاب کی شکل میں نکلی جیسی ہے۔ اس کتاب سے یہ معلوم ہوتا ہے کہ مولانا تقی صاحب اس زمانے میں بھی جب کسی سلطان مولوی کے لئے انگریزیوں کی عملداری کی کتب پیش کرنا بھی کالے پانی کی سزا کے ہوتے دیکھا کرتے تھے اسے اپنے دوچار اور حبیبتوں کو ظاہر کرتے تھے۔

نیا ہند کے متعلق جاننا اور وہی اللہ تعالیٰ جانتے کے متعلق امام نے شروع میں مدد لیا ہے اس لیے کہ اس وقت کوئی نہ جانتا تھا کہ یہ جو وہ چاروں ایک بڑے بڑے سے مولوی کے آگے بیٹھے ہوئے کلام پاک کی بلی کی کر پڑھ رہے ہیں اللہ ہی میں وہی اور بادشاہ سے بجائے کے لئے ایک ہیئت تک نہیں ہو چکے ہوں۔ اس کے بعد وہی تک کی آزادی کے ساتھ ہیوں کی ایک خاص مخالفت اور نہ صرف ہندستان بلکہ دنیا بھر کے اسلامی مدرسوں میں ایک خاص مدد سے بن جائے گا۔

اس کے بعد ان بعد ہی سرسید احمد صاحب نے علی گڑھ میں مسلمانوں کو انگریزی تعلیم دینے کے لئے ایک کالج کھولنا شروع کیا۔ اس میں پڑھانے کے لئے بالایت سے انگریز تدریس مولانا سرسید احمد صاحب کی خواہش تھی کہ کالج کی اس محکمہ میں مولانا تقی صاحب بھی شریک ہو جائیں مگر تقی صاحب نے اس میں شریک ہونے سے انکار کر دیا۔ اس بارے میں سرسید احمد صاحب اور ان کے ساتھیوں و مولانا تقی صاحب میں جو کچھ خط و کتابت ہوئی وہ دلچسپیت امتیاز کے نام سے ایک کتاب کی شکل میں نکلی جیسی ہے۔ اس کتاب سے یہ معلوم ہوتا ہے کہ مولانا تقی صاحب اس زمانے میں بھی جب کسی سلطان مولوی کے لئے انگریزیوں کی عملداری کی کتب پیش کرنا بھی کالے پانی کی سزا کے ہوتے دیکھا کرتے تھے اسے اپنے دوچار اور حبیبتوں کو ظاہر کرتے تھے۔

کے خلیفہ کا کافی مالک کھمیاں کے لئے گئے۔ انگریزی سلطنت کی طرف سے ان لوگوں کو ایک عرصہ سے دیوانہ تو مشہور کر ہی دیا گیا تھا، ساتھ ہی ساتھ ان کو رجسٹر لینڈ (پرملی کرپا ہادی) لکیر کے فقیر اور ملک و قوم کا دشمن اور انگریزوں کی سلطنت کا باغی بھی قرار دیا گیا۔ سچ بات یہ تھی کہ آخری الزام کے سوا باقی سب بالکل بے بنیاد تھے۔ اور آخری الزام یہ تو ان کو خود بھی اعتراض نہیں تھا۔

مہولانا کا سیم صاحب اس پر حطار سے ذرا بھی نہیں گھبرائے وہ جانتے تھے کہ جب کوئی قوم اس طرح بکلی دی جاتی ہے تو اس کے خیالوں میں بڑی الجھن پیدا ہوجاتی ہے۔ اور بہت بار وہ اپنی بھلائی جاننے والوں ہی کی دشمن ہوجاتی ہے۔ انھوں نے ان باتوں کی پرواہ نہ کر کے چپ چاپ اپنا کام جاری رکھا اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ دیوبند کا یہ مدرسہ جو صرف تین چار طالب علموں سے شروع ہوا تھا دونوں دن رتی کرتا گیا اور تمام ہندوستان اور ہندوستان کے باہر کے اسلامی ملکوں سے بھاری تعداد میں طالب علم وہاں آنے لگے۔ جب اس طرح مدرسہ کی ترقی ہونے لگی اور اس کا اثر مسلمانوں پر پڑھنے لگے تو پھر ایسے لوگ بھی جن کو ابھی مدرسہ کے کام میں لگانے میں بھی دہشت ہوتی تھی مدرسہ کے کام میں لگانے لگے۔ ان کی طرف سے یہ سوچھا ڈبھی پیش کیا جانے لگا کہ اب مدرسہ کے لئے سرکاری مدد بھی حاصل کرنے کی کوشش کی جائے اور اس طرح مدرسہ کی الی حالت مضبوط بنا دی جائے۔

نیا ہیند ۱ مہولانا کا سیم جولائی سن ۱۹۰۶ کے خلیفہ کا کافی مالک کھمیاں کے لئے گئے۔ انگریزی سلطنت کی طرف سے ان لوگوں کو ایک عرصہ سے دیوانہ تو مشہور کر ہی دیا گیا تھا، ساتھ ہی ساتھ ان کو رجسٹر لینڈ (پرملی کرپا ہادی) لکیر کے فقیر اور ملک و قوم کا دشمن اور انگریزوں کی سلطنت کا باغی بھی قرار دیا گیا۔ سچ بات یہ تھی کہ آخری الزام کے سوا باقی سب بالکل بے بنیاد تھے۔ اور آخری الزام یہ تو ان کو خود بھی اعتراض نہیں تھا۔ مہولانا کا سیم صاحب اس پر حطار سے ذرا بھی نہیں گھبرائے وہ جانتے تھے کہ جب کوئی قوم اس طرح بکلی دی جاتی ہے تو اس کے خیالوں میں بڑی الجھن پیدا ہوجاتی ہے۔ اور بہت بار وہ اپنی بھلائی جاننے والوں ہی کی دشمن ہوجاتی ہے۔ انھوں نے ان باتوں کی پرواہ نہ کر کے چپ چاپ اپنا کام جاری رکھا۔ اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ دیوبند کا یہ مدرسہ جو صرف تین چار طالب علموں سے شروع ہوا تھا دونوں دن رتی کرتا گیا اور تمام ہندوستان اور ہندوستان کے باہر کے اسلامی ملکوں سے بھاری تعداد میں طالب علم وہاں آنے لگے۔ جب اس طرح مدرسہ کی ترقی ہونے لگی اور اس کا اثر مسلمانوں پر پڑھنے لگے تو پھر ایسے لوگ بھی جن کو ابھی مدرسہ کے کام میں لگانے میں بھی دہشت ہوتی تھی مدرسہ کے کام میں لگانے لگے۔ ان کی طرف سے یہ سوچھا ڈبھی پیش کیا جانے لگا کہ اب مدرسہ کے لئے سرکاری مدد بھی حاصل کرنے کی کوشش کی جائے اور اس طرح مدرسہ کی الی حالت مضبوط بنا دی جائے۔

(۱۹)

• سوभावों के खतरों को भट पहिचान लिया चूंकि मद्रसा किसी के जाती अतिथार में नहीं था. इस लिये वह मद्रसे के काम में किसी को हिस्सा लेने से रोक तो नहीं सकते थे, लेकिन वह यह भी बर्दाश्त नहीं कर सकते थे कि इस तरह मद्रसा सिर्फ लड़कों को कितानो तालिम देने वाला एक मद्रसा बन कर रह जाय और अपने सन्चे असूलों को भूल जाय. इस खतर से मद्रसे को बचाने के लिये उन्होंने कुछ कायदे बनाए, जो उनके कान्तिकारी विचारों को बिलकुल साफ जाहिर करते हैं. यह कायदे रिसाला अलकसिम १३४७ हि० के दारुलउल्म नम्बर में शायया हुए थे और उसी से उनका कुछ हिस्सा यहाँ निकल किया जाता है—

(१) आवादी क्रमों (विचारों की आवादी) के साथ मौके पर कलमुल हक (सन्चाई) का एलान हो. कोई सुनहरी तमझों (तालाब) और मुस्जियाना दबाव (बढ़पन का दबाव) या सर परसना मराअत (रजाकरने वालों को तरफ से दी हुई रियायतें) उसमें हायल न हों (रकावट न डालें).

(२) इसका तालुक आम मुसलमानों के साथ जायद से जायद हो, ताकि यह तालुक खुद व खुद मुसलमानों में एक नज्म (संगठन) पैदा करदे जो उनको इस्लाम और मुसलमानों की शान पर कायम रखने में मुईन (सहायक) हो.

इन दोनों कायदों से यह साफ मतलब निकलता है कि मौलाना कसिम साहब के नजदीक इस मद्रसे की सबसे बड़ी अहमियत सिर्फ यह थी कि इसके चारिये तमाम मुसलमानों में उसी तरह से

سوجھاؤں کے خطوط کو جھٹ پھیان لیا. چونکہ مدرسہ کسی کے ذاتی اختیار میں نہیں تھا، اس لئے وہ مدرسہ کے کام میں کسی کو حصہ لینے سے روک نہ نہیں سکتے تھے۔ لیکن وہ یہ بھی برداشت نہیں کر سکتے تھے کہ اس طرح یہ مدرسہ صرف لوگوں کی کتابی تعلیم دینے والا ایک مدرسہ بن کر رہ جائے اور اپنے بچے اصولوں کو کھول جائے، اس خطرے سے مدرسہ کو بچانے کے لئے انھوں نے کچھ تدابیر بنائے۔ جو ان کے کرائت کاری و مباحثوں کو بالکل صاف ظاہر کرتے ہیں۔ یہ تادمے در سال الفاسم، ۱۳۴۲ ہجری کے دارالعلوم نمبر میں شائع ہوئے تھے۔ اور اسی سے ان کا کچھ حصہ یہاں نقل کیا جاتا ہے۔

آزادی تمیز و مداروں کی آزادی کے ساتھ موقع پر کلامی (تجلی) کا اعلان ہو. کوئی شہری محضوں (الانج) اور مرتباً دباؤ (بریت) کا دباؤ یا سرپرستار نہ مراعات ارتکا کرنے والوں کی طرف سے دی جائے۔

۲۔ اس کا تعلق عام مسلمانوں کے ساتھ زیادت سے زیادہ ہو تاکہ یہ تعلق خود بخود مسلمانوں میں ایک نظم (تعمیرت) پیدا کر دے جو ان کو اسلام اور مسلمانوں کی شان پر قائم رکھنے میں ہمیں (سہاگت) ہو.

ان دونوں تادموں سے یہ صاف مطلب نکلتا ہے کہ مولانا قاسم صاحب کے نزدیک اس مدرسہ کی سب سے بڑی اہمیت صرف یہ تھی کہ اس کے ذریعہ تمام مسلمانوں میں ایسی طرح سے

یہ وصیت ایک ایسا کرائٹ کاری برساتو بیڑا جس سے ہندستان کی اگلی بیڑھیاں ہمیشہ ایک روشنی حاصل کرتی رہیں گی۔ اس کے ایک ایک لفظ سے یہ ظاہر ہوتا ہے کہ مولانا قاسم صاحب کہتے ہیں اظہارِ اوستہ کی آزادی کے لئے مجھے دینا ہے۔ انہیں صرف چاہ تھی کہ وہ کسی طرح ان کی قوم پھر سے مستحکم ہو کر آزادی کے میدان میں آکھڑی ہو۔ ۱۹۴۷ء تک یعنی اپنی زندگی کی آخری گھڑیوں تک وہ برابر اسی کام میں لگے رہے۔

مولانا قاسم صاحب نازت ضلع سہارن پور کے رہنے والے تھے ان کے والد کا نام مولانا اسد علی تھا۔ انہوں نے علمی اعداد و اند صاحب اور مفتی صدر الدین صاحب سے تعلیم حاصل کی تھی۔ مفتی شیخ صدر الدین اپنے زمانے کے ایک بہت بڑے عالم اور بولی الہی جماعت کے دوسرے امام شاہ عبدالحزیر صاحب کے شاگردوں میں سے تھے۔ مفتی صاحب کے ایک دوسرے مشور شاگرد مولانا ابوالفضل آزاد کے والد شیخ محمد خیر الدین صاحب تھے۔ ان کے علاوہ مولانا قاسم صاحب نے کچھ دینی سیک مولانا مولانا علی صاحب سے بھی پڑھا تھا۔

دلی الہی جماعت کے اہل میں مولانا قاسم صاحب اس کے ایک خاص اہمیت رکھتے ہیں کہ ایک طرح سے اس سٹیٹھن کی بنیاد ان کو پھر سے جلائی پڑی۔ ۱۹۵۵ء بھی اس حالت میں جب کہ ظلم کا طوفان باری تھا۔ وہ ایک عجیب رحمت کے آدمی تھے جو بالکل نا اسیدگیوں کے اندھیرے میں بھی روشنی کی کوئی نہ کوئی کرن پیدا کر لیتے تھے۔ ۱۹۷۰ء کے بعد مولانا

یہ وصیت ایک ایسا کرائٹ کاری برساتو بیڑا جس سے ہندستان کی اگلی بیڑھیاں ہمیشہ ایک روشنی حاصل کرتی رہیں گی۔ اس کے ایک ایک لفظ سے یہ ظاہر ہوتا ہے کہ مولانا قاسم صاحب کہتے ہیں اظہارِ اوستہ کی آزادی کے لئے مجھے دینا ہے۔ انہیں صرف چاہ تھی کہ وہ کسی طرح ان کی قوم پھر سے مستحکم ہو کر آزادی کے میدان میں آکھڑی ہو۔ ۱۹۴۷ء تک یعنی اپنی زندگی کی آخری گھڑیوں تک وہ برابر اسی کام میں لگے رہے۔

مولانا قاسم صاحب نازت ضلع سہارن پور کے رہنے والے تھے ان کے والد کا نام مولانا اسد علی تھا۔ انہوں نے علمی اعداد و اند صاحب اور مفتی صدر الدین صاحب سے تعلیم حاصل کی تھی۔ مفتی شیخ صدر الدین اپنے زمانے کے ایک بہت بڑے عالم اور بولی الہی جماعت کے دوسرے امام شاہ عبدالحزیر صاحب کے شاگردوں میں سے تھے۔ مفتی صاحب کے ایک دوسرے مشور شاگرد مولانا ابوالفضل آزاد کے والد شیخ محمد خیر الدین صاحب تھے۔ ان کے علاوہ مولانا قاسم صاحب نے کچھ دینی سیک مولانا مولانا علی صاحب سے بھی پڑھا تھا۔

دلی الہی جماعت کے اہل میں مولانا قاسم صاحب اس کے ایک خاص اہمیت رکھتے ہیں کہ ایک طرح سے اس سٹیٹھن کی بنیاد ان کو پھر سے جلائی پڑی۔ ۱۹۵۵ء بھی اس حالت میں جب کہ ظلم کا طوفان باری تھا۔ وہ ایک عجیب رحمت کے آدمی تھے جو بالکل نا اسیدگیوں کے اندھیرے میں بھی روشنی کی کوئی نہ کوئی کرن پیدا کر لیتے تھے۔ ۱۹۷۰ء کے بعد مولانا

بہارِ ہند
مائلانا محمدامد کاسیم
جولائی سن ۱۸۷۰

میں آنگرہوئی اہماتداری کے سبب ایک ایک ساگران بنانے راتنا انکا
ہو کامنہا۔ وہ سب سے اوپر ایک کی آزادی کو چاہتے تھے اور
اس کے لئے سب کچھ قربان کر سکتے تھے۔

سن ۱۸۷۷ میں انکی مائل کے بکنات والیڈلٹاڈ جماعت کے
سنگٹن کی نیوی فیر سے کامی نام چوکی थी، इसके लिये अब
एक ऐसे आदर्मी की जरूरत थी जो उनके बाद इस काम को
सम्हाल ले. मौलाना कासिम साहब की निगाह तो इस सिलसिले
में दारल उल्म के सबसे पाहिले विद्यार्थी मौलाना महमूदउल
हसन पर थी, जो अपनी तालीम पूरी करके मद्रसा देवबन्द
में ही मुदरिस हो गए थे. लेकिन अभी उनकी उम्र
थोड़ी ही थी, इसलिये कुछ दिनों के लिये यह बोध
दाजी रशीद अहमद साहब गंगोही ने सम्हाला. रशीद अहमद
साहब ऐसे वेबडक आदर्मी थे कि जब मौलाना सादुद्दीन साहब
काशमीरी और मौलाना अमानुल्ला साहब ने उनसे हिन्दुस्तान के
'दारल हरव' होने की बात पूछा, तो उन्होंने यह कतवा दे दिया
कि हिन्दुस्तान 'दारल हरव' है. इसका साफ मतलब यह था
कि आंगरेजों से लड़ाई जारी है और हर एक मुसलमान का
यह मजहबो फर्ज है कि उस लड़ाई में पूरा हिस्सा ले.

दाजी रशीद अहमद साहब سن १८०५ तक जिन्दा रहे. उनके
बाद मौलाना महमूदउल हसन साहब ने वालीडल्लाई जमात की
इमाامت का बोध सम्भाल.

فی اسند
مولانا محمدحکیم
جولائی سن ۱۹۰۵

میں آگریزی عللاری کے خلاف ایک سنگٹھن بنائے رکھنا ان کا اس
کام تھا۔ وہ سب سے اوپر ایک کی آزادی کو چاہتے تھے اور
اس کے لئے سب کچھ قربان کر سکتے تھے۔

سن ۱۹۰۵ میں ان کی موت کے وقت ولی اللہی جماعت کے سنگٹھن
کی نیو پھر سے کافی جرم کی تھی۔ اس کے لئے اب ایک ایسے
آدمی کی ضرورت تھی جو ان کے لئے اس کام کو سمجھال لے۔ مولانا
حکیم صاحب کی نگاہ تو اس سلسلہ میں داخلہوم کے سب سے
پہلے دو بار تھی مولانا محمدحکیم صاحب پر تھی جو اپنی تعلیم پوری کر کے
مدرسہ دیوبند میں ہی ایک مدرس ہوئے تھے لیکن ابھی ان کی
عمر تھوڑی ہی تھی اس لئے کچھ دنوں کے لئے یہ بوجھ جاری
رشید احمد صاحب لنگرہوی نے سمجھالا، لیکن احمد صاحب ایسے بے صلاح
آدمی تھے کہ جب مولانا صاحب الدین صاحب کا شیمی ہی اور مولانا
امان اللہ صاحب نے ان سے ہندستان کے احوال طلب ہوئے
کی بابت پوچھا تو انھوں نے یہ فتویٰ دے دیا کہ ہندستان
'دارالحراب' ہے۔ اس کا صاف مطلب یہ تھا کہ انگریزوں سے لڑائی
جاری ہے اور اللہ ہر ایک مسلمان کا یہ مذہبی فرض ہے کہ اس لڑائی
میں پولاد حصہ لے۔

حاجی رشید احمد صاحب سن ۱۹۰۵ تک زندہ رہے۔ ان کے
پہلے مولانا محمدحکیم صاحب نے ولی اللہی جماعت کی امامت کا بیڑہ
سمجھالا۔

آخیر کبھی

(شری-विष्णु-प्रभाकर, चौ० प०)

शंकर हमेशा कुछ न कुछ सोचा करता है, उसके दोस्त उसे सपने देखने वाला कहते हैं, पर उसे परवाह नहीं, वह सोचता है, इस दुनिया की बात सोचता है, उस दुनिया की, तारों की, और कुछ नहीं तो घर में भागत फिरते नेबले की बात ही ले बैठता है, पर इधर उसे सोचने के लिये नया मसाला मिल गया है, राह में अभी अभी दंगा हुआ, कुछ हिन्दू मुसलमान वायल हुए, कुछ मर गए, आवादी में कुछ ज्यादा फरक नहीं पड़ा पर जहां देखो कौज, सबसे बड़ी सुर्जावत यह कि संरेशाम से घर में बन्द होकर बैठो, शंकर बेताब हो उठा—आखिर यह करण्यु क्यों लगा है ? लोग लड़ते क्यों है ? पेट में छुरा क्यों भोंक देते है ? आखिर क्यों..... ?

बस उसकी देन चल पड़ी, हिन्दू मुसलमान, इश्यर के मानने वाले और न मानने वाले, धर्म की वरकरत, और इतनीनी खिन्नागी के बुनियादी असूल इन सभी मसलों पर उसने विचार कर डाला, करते करते उसे लगा कि उसने जलभरें सुलझा ली है, तब उसने सोचा यह दुनिया कितनी पागल है ? मामूली सी बात को लेकर इतना तूफान खड़ा कर दिया है, यह बच्चों की सीधी सी बात उदांक दिमाग में नहीं आती, आखिर क्यों यह इतनी

आखिर क्यों

(शरी-विष्णु-प्रभाकर, चौ० प०)

शंकर हमेशा कुछ न कुछ सोचा करता है, उसके दोस्त उसे सपने देखने वाला कहते हैं, पर उसे परवाह नहीं, वह सोचता है, इस दुनिया की बात सोचता है, उस दुनिया की, तारों की, और कुछ नहीं तो घर में भागत फिरते नेबले की बात ही ले बैठता है, पर इधर उसे सोचने के लिये नया मसाला मिल गया है, राह में अभी अभी दंगा हुआ, कुछ हिन्दू मुसलमान वायल हुए, कुछ मर गए, आवादी में कुछ ज्यादा फरक नहीं पड़ा पर जहां देखो कौज, सबसे बड़ी सुर्जावत यह कि संरेशाम से घर में बन्द होकर बैठो, शंकर बेताब हो उठा—आखिर यह करण्यु क्यों लगा है ? लोग लड़ते क्यों है ? पेट में छुरा क्यों भोंक देते है ? आखिर क्यों..... ?

बस उसकी देन चल पड़ी, हिन्दू मुसलमान, इश्यर के मानने वाले और न मानने वाले, धर्म की वरकरत, और इतनीनी खिन्नागी के बुनियादी असूल इन सभी मसलों पर उसने विचार कर डाला, करते करते उसे लगा कि उसने जलभरें सुलझा ली है, तब उसने सोचा यह दुनिया कितनी पागल है ? मामूली सी बात को लेकर इतना तूफान खड़ा कर दिया है, यह बच्चों की सीधी सी बात उदांक दिमाग में नहीं आती, आखिर क्यों यह इतनी

نیا سینہ

تو بھی اس کی پین یا دہی اندر آکر بولی — اور وہ لکھے

اس نے لاپرواہی سے کہا — میرے رکھ دو۔

— پی لئیجیو نہ، ڈراڈا ہو جائیگا۔

— ابھی پیتا ہوں جی، تم نے کام نپٹا لیا؟

— جی کیوں؟

— کچھ نہیں ایسے ہی ذرا باتیں کرنی تھیں، معمولی سی بات تھی۔

پارہوئی اس پڑھی — آپ کی معمولی سی بات میں طبعی بھول، میرے

پاس اتنا وقت نہیں ہے۔ آرت لائیو وہ بولا کرنا ہے۔

اور یہ کہہ کر چلتی چلی گئی، شکر اتا لہو اٹھا کوئی ہونا چاہیے

جس سے میں باتیں کر سکوں، جس کو میں سمجھا سکوں۔

رات بچھیل جی تھی، جاڑوں طرف شکر آٹا تھا، جھبک کر کی گئی تھی

والی آواز بھی سنا کی نہیں تھی، اور ایک ہی کونسی بات سے گونیا یا

پینا ہوتی تھی، نندی کا کنارہ ٹوٹ کر پانی میں دھکیٹ سے گونیا یا

پیشین یہ ابھن شکر کے لئے نکلتا، اور ایک ہی ایسا جان پڑتا

تھی کوئی بھاری بھیری آہ تھی، پر آج شکر نے اور ذرا بھی دھکیان

نہیں دیا، وہ جانتا ہو کہ آج کل اس کے جانوں طرف کی کوئی کبری طرح

پھینسی ہوئی ہے، ان کے سامنے زندگی اور موت کا سوال ہے، اس لئے

وہ ایک دوسرے کو مار دینا چاہتے ہیں، سوال اٹھا — سب ہائے

پہلے ہی کو جیتا کتن رسا ہے؟ جواب لا — جو طاقتوہ ہیں، تو زندگی کی

تیار، طاقت ہے، اس دھار کے آسے ہی پاس کا

دل درد سے کراہ اٹھا — طاقت سب سے بڑی چیز ہے، طاقت کی

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

نیا سینہ

पूजा करना इन्सान का पहला कर्त्तव्य है. ताकत से डर पैदा होता है और डर से शान्ति.....आह! शान्ति डर की बेटी है. तभी उसमें आलस और मुस्ती है. तभी उसमें मौत है..... उसका दिमाग भलभलाया—पर शास्त्र कहते हैं.....एक दम वह चौंक पड़ा—कहाँ खटखट हुई. आंखें और कान चौकन्ने हुए. कानों ने सुना कोई धीरे धीरे आ रहा है. दिमाग ने सोचा—कौन? पार्वती. नहीं. तो.....आंखों ने देखा—ओह! यह तो एक आदमी है. मत खिल उठा. कितनी अच्छी बात है. मुझे आदमी की ही जरूरत थी. मुझे उससे बहुत बातें करनी हैं. और वह जल्दी से उठा. खिच दवाया और मुड़ कर निहायत अदब से कहा—आइये, आइये. मैं आपकी राह देख रहा था. आप खूब आए. मुझे आपसे बहुत बात करनी है. मसलत यह ताकत क्या है? लोग इसे क्यों चाहते हैं और.....अरे! आप खड़े हैं. आइये न, आगे आइये. यहाँ बैठिये, पलंग है.....आह! आप सोचते हैं कोई और आसकत है, जो नहीं, पार्वती पुलोवर चुन रही है, मुल्ला सो रहा है और आप चाहें तो किबाड़ बन्द कर देता हूँ.

शंकर मुड़ा और दरवाजे की चटकनी बन्द कर दी. अजनबी अभी तक चुत की तरह खिड़की के नीचे खड़ा था. न बोला था न सुनता था. बस एक टक देखता था. उसके चेहरे पर अन्धारा था पर जिसम तन्दुरुस्त और गठा हुआ था. उमने शलवार और कुरता पहना था. सिर नंगा था. पैरों में पुरानी पेशावरी चप्पलें थीं. कपड़े भी साफ नहीं थे. शंकर अब आगे बढ़ा और पास-अपकर उसको बांह से पकड़ लिया, बोला—आप कुछ सोच

लुवा करे. शान का पैला फुस हो. طاقت से ठंडा पैदा होता हो. और लुसे शांति.....आह! शांति हृदय की बेटी है. तभी उसमें आलस और मुस्ती है. तभी उसमें मौत है..... उसका दिमाग भलभलाया—पर शास्त्र कहते हैं.....एक दम वह चौंक पड़ा—कहाँ खटखट हुई. आंखें और कान चौकन्ने हुए. कानों ने सुना कोई धीरे धीरे आ रहा है. दिमाग ने सोचा—कौन? पार्वती. नहीं. तो.....आंखों ने देखा—ओह! यह तो एक आदमी है. मत खिल उठा. कितनी अच्छी बात है. मुझे आदमी की ही जरूरत थी. मुझे उससे बहुत बातें करनी हैं. और वह जल्दी से उठा. खिच दवाया और मुड़ कर निहायत अदब से कहा—आइये, आइये. मैं आपकी राह देख रहा था. आप खूब आए. मुझे आपसे बहुत बात करनी है. मसलत क्या है? लोग इसे क्यों चाहते हैं और.....अरे! आप खड़े हैं. आइये न, आगे आइये. यहाँ बैठिये, पलंग है.....आह! आप सोचते हैं कोई और आसकत है, जो नहीं, पार्वती पुलोवर चुन रही है, मुल्ला सो रहा है और आप चाहें तो किबाड़ बन्द कर देता हूँ.

رہے۔ یہ۔ پر یقیناً ماننے آپ سے زیادہ سمجھ سے زیادہ نہیں سمجھ سکتے۔
 ویسے تو انسان کی عادت ہو کر وہ "میں ہوں" کے ساتھ ساتھ
 "میں جانتا ہوں" اس سچائی کی حفاظت ہی جان سے کرنا ہو گی۔
 آج میں اس سے بھی کہنے لگتا ہوں۔ میں نے ایک اور سچائی
 کی کھوج کی ہے۔ اسی کو لے کر میں کسی آدمی سے پوچھا کرتا تھا۔
 گھر میں باروتی ہے بر وہ تو "میں ہوں" سے آگے بڑھتی ہی
 نہیں رہتا ہے آپ کی مانگتے ہیں؟ کہتے کہ وہ اس کی باہر کیڑے
 گھسیٹتا ہوا سا ایک سے پاس لے آیا اور پھر دونوں ہاتھوں سے
 اسے چھان دیا۔ روشنی میں اس سنا چہرہ تک اٹھنا دیکھا وہ کچھ لمبا
 پتلا، رنگ صاف اور نقشہ آدمی کا ہے۔ پتلا پوٹری اور منہ صاف اور
 کچھ موٹے، آنکھیں کچھ دراؤنی، ایک عجیب شکل والی میرانی اور ہونٹ
 سے بھری ہوں۔ شکر بولا۔ ان تو آپ کیا لگتے ہیں؟
 وہ جیب

— آپ نہیں بولتے؟ کیا گونگے ہیں؟

وہ کاٹا اس کی آواز بھونکی۔ جی..... ای..... ای..... ای.....

خوشکر سکر آیا۔ آپ گونگے نہیں ہیں بڑا اچھا ہوا۔ تو کہئے آپ کی
 کہتے ہیں۔ اندر کوئی چیز کی طرف گھوما دیکھا۔ دو دو دکھا ہوا ہے۔ بولا۔
 دیکھتے ہیں بھی کیا یہ وقت ہوں۔ آپ آئے اور آپ سے بحث کرنے
 کو تیار ہو گیا آپ کی بات تک نہیں پونجھی۔ یا دق ٹھیک کہتی ہے۔
 میں کچھ نہیں سوچتا۔ کسی مزید بات ہے؟ ہمیشہ سوچتا رہتا ہوں اور ہر
 اقدام سے کہہ دیتی ہے۔ آپ بالکل نہیں سوچتے۔ اس کا مطلب ہے میں

بہت چوپ.

—آپ نہیں بولتے؟ کیا گونگے ہیں؟

وہ کاٹا، उसकी आवाज फूटी—ज...ई...ई...ई...

शंकर मुस्कराया—आप गंगे नहीं हैं, बड़ा अच्छा हुआ. तो
 कहिये आप क्या कहते हैं. और कह कर मेज की तरफ घुमा.
 देखा—दूध रखा हुआ है. बोला—देखिये मैं भी कैसा बेबकूत है.
 आप आप और आपसे बहस करने को तैयार हो गया. आपकी
 बात तक नहीं पूछी. पावती ठीक कहती है—मैं कुछ नहीं सोचता.
 कैसी मजेदार बात है? हमेशा सोचता रहता हूँ और पावती आराम
 से कह देती है—आप बिल्कुल नहीं सोचते. उसका मतलब है मैं

سمن پور سمن کی بول نہی سولہا. شایر بھ ڈیک کھنی ہ. آپ پھلی بار آپ ہ. شاکس مں آپکو مہمان کھتا ہ. اور لیٹا ہ مہمان کو سمن پھلیہ ارب دینا چاہیے. اور آپ دھ پیلیہ اور کھراپاں تو پارنی کو پکار.

—تو.....

—پکار "شایر تانا رنا ہ.

—تو نہی

—آپ تکلف کرتے ہ. آپ آپ ہ. آپ مہر سبھ پینے اور ہاں! جاہی کی رت ہ. مہر پاس بادام رتے ہ.

اور بھ ڈیا. آلالماری بولی. تو کتہ، تو پالیہ اور ایک شاشی نکال لایا. شاشی مں سولہا کے لیہ بادام اور کات رتے ہ پ، انہی کو کتہ مں ڈالا، پالیہ مں دھ بھرا. پیر ڈی مہر ڈیا کر پلنگ کے پاس رتی. سب سمان اس پور سناپا اور بولا—اے شایر! شایر اور بات کریں.

لوک سولہا کی مں تھ شاکر کی پیٹ اسکی ترک اور آجناوی توری سے ڈا اور لیٹکی کے پاس آپا، سولہا اور بولی سے لایہ مں ڈی پی ہڈی بھرا کھنا چاہتا. تہی شاکر سولہا. آجناوی کاپا، بھ چیخ رتہ سے بھنی لیٹکی کے کرا پور گیر پھی. شاکر کویکا—کپا گیتا؟ بھر ڈیا پیر کرام کرنے لگا. آجناوی کے کاتا تو رت نہی. مہر سولہا گیا. بھر کاپنے لگا پور شاکر نے اسے نہی دیا. کرام پورا کر پکیا تو بولا—اے شایر! شایر اور بات کریں. تہی اسکی تھر لیٹکی پور پھی، کھ چیخ کھک رہی تھی. بھ

جولائی ۱۹۲۰
آزادیوں
نیا سمن سے برے کی بات نہیں سوتی. شاید وہ ٹھیک کہتی ہو آپ کی بار آئے ہیں. شاکر میں آپ کو سمان کہا ہے. اور لکھا ہے کہ سمان کو سب سے پہلے اگلے دینا چاہیے. پیر آپ دودھ پیئے اور کھ کھائیں تو پارنی کو پکاروں.

—جی.....
—پکاروں. شاید کھانا کھا ہو.

—جی نہیں.
—آپ تکلف کرتے ہیں. آپ آئے ہیں. آپ میرے ساتھ دودھ پینے اور ہاں! جاہی کی رت ہے. مہر پاس بادام رتے ہیں. اور وہ اگلا. الماری کھولی. دو لیٹ دو نیالے اور ایک شیشی نکال لی. شیشی میں مٹا کے لئے بادام اور کاجو رکھے ہوئے تھے انہیں کو لیٹ میں ڈالا گیا لے میں دودھ بھرا. پیر ڈی مہر ڈیا کر لیٹ کے پاس رکھی. سب سمان اس پر سجایا اور بولا—اب آئے کھائیں گے اور بات کریں گے.

—میں اسی بیچ میں جب شاکر کی بیٹھ اس کی طرف تھی ابھی پھرتی سے اگلا اور کھڑکی سے پاس آیا. بھلا اور تیری سے لکھ میں پھی ہوئی ایک چیز باہر کھینکا جا رہی تھی. شاکر بولا—کی شاکر! دودھ دیکھا کھرا کھڑکی سے فرش پر گر پڑی. شاکر بولا—کی شاکر! دودھ دیکھا کھرا کھڑکی سے گلا. اسی کو تو تو تو نہیں. تو سوکھ گیا. کھ کھرا کھڑکی سے گلا. اور باتیں نے اسے نہیں دیکھا. کام لیا اور کھلا تو بولا—اب آئے کھائیں گے اور باتیں کریں گے. تھی اس کی نظر کھڑکی پر پڑی. کچھ چیز چک رہی تھی. وہ

ایک ہیں۔ دونوں کے سلسلے ایک ہیں، دونوں کے حل ایک ہیں، پھر یہ کہہ کر بڑھ گھڑا لا کیوں آئی؟ کچھ میں نہیں آتا آخر کیوں.....؟

اپنا بول چلنے کے بعد شاہی کے لئے جب لشکر نے اجنبی کی طرف دیکھا تو وہ سُنہ بی کا جو ڈالے ہوئے گلائے کا بیٹا ہوا اسی کی طرف ایک ٹپک دیکھ رہا تھا۔ لشکر کے دیکھتے ہی اُس نے پیالہ میز پر رکھ دیا اور کا جو کہ جلدی جیسا ڈالا۔ تب تک لشکر نے تین چار کا جو کھائے اندر آدھا پیالہ دودھ پی لیا پھر بولا۔ اچھا! ایک سیدھا سا سوال پوچھتا ہوں۔

—جی۔

—تو تم آدمی ہو تو میں دیکھ ہی رہا ہوں۔ غریب گئے اور مشکل سے پیٹ بھر پاتے ہوئے بی بی کے بچے بھی ہیں، ہوتے ہی ہیں۔ ان کا بچہ پیٹ نہ بھرتا ہوگا تو کھوٹ بھٹتا ہوگا۔ دیکھو نہ میں کبھی دفتر میں باہر ہوں۔ کھانے پینے اچھے کرتا ہوں پر سچ اندر کبھی وہ بھی نہیں کرتا۔ ہاں ذرا مسیحا میں خرق ضرور آئی۔ تم بڑوں کا کھانا کھاتے ہو، میں بھوکوں کا کھانا ہوں پر آدمیوں کا نہ تم کھاتے ہو نہ میں۔ اجنبی کی آواز اسی بار گھٹیک گھٹیک پھونکی، بولا۔ سچ کہتا ہوں!

بابو جی آدمی جوں بھی پیٹ نہیں بھر پاتا۔

—جاننا ہے۔ تو بھاری سُرور کھ رہی ہے۔ کبھی کبھی ہے؟

—جی ہاں۔

—تو جینے کے لیے آپ ہیں، بی بی، چار بچے اور.....

—جی ہاں ہے۔

—آپ کو کتنی کھانا ہے؟

—جی ہاں

—جی ہاں

—جی ہاں

—جی ہاں

—جی ہاں

—جی ہاں

—جی ہاں

—جی ہاں

—جی ہاں

—جی ہاں

—جی ہاں

—جی ہاں

—جی ہاں

—جی ہاں

—جی ہاں

—جی ہاں

—جی ہاں

—جی ہاں

—جی ہاں

—جی ہاں

—جی ہاں

—جی ہاں

—جی ہاں

نیا دھند

— ایک ڈکھان پر ناکر ہے چالیس रुपये मिलत है.
— अब सोचा. सात आदमी और चालिस रुपये. फिर इतना
बड़ा शहर जिसमें एक से एक बढ़ कर आर्लाशान इमारतें. सैकड़ों
बैंक. मिलें. फौजियां और चमचमाते बजार हैं. दर क्यां जाते
हैं तुम्हारा मालिक कितना कमाता है.

— जी उनकी फिराने की बड़ी दुकान है. थोक फरोशा है. खुदा
भूट न खुला पांच छे हजार माहवार तो कमाते ही हैं.
— तो कर्मा सोचा ऐसा क्यां है ? क्यां थोड़े से लोग दूसरों की
महलत पर पंश करते हैं ? क्यां इन्होंने इतना धन जमा किया है ? क्यां
पर्माना बहा कर भी तुम भूके मरते हो ? आखिर क्यां ? कर्मा सोचा ?

अजनबी कुछ जबाब नहीं दे सका. अब वह कुछ बेतकलुक
से यादगम खाने की कोशिश कर रहा था. शंकर ने फिर कहा—
उनके बच्चे याकर खराब करने में फरब समझते हैं. खुदा उनको
खुराब करने को भी देता है. उनकी औरतें पंश इशरत की
पुनलियां बन कर गरीब—दिलो में आग लगाती फिरती हैं. खुदा
उनके लिये आग लगाने के सामान मोहरया करता है पर तुम्हारे
बच्चे महलत करके जब पेट भरने को रोटी मांगते हैं तो उन्हें नहीं
मिलती. तुम्हारी मां. तुम्हारी बहन, तुम्हारी बीबी अपनी इज्जत
हकने के लिये कपड़ा मांगती हैं वह भी खुदा उन्हें नहीं दे सकता
कर्मा सोचा में दोस्त. ऐसा क्यां है ?

अजनबी का हाथ रुक गया था. उसका दिल भरा आ रहा
था. उसकी खंवार आँवों में रोशनी चमकने लगी थी और खुदा
वसी तरह मेज पर रखा हुआ था. अन्दर से पार्वती दो बार

— ایک ڈکھان پر نوکڑیوں جا لیں روپے ملتے ہیں.

— اب سوچو. سات آدمی اور چالیس روپے. پھر اتنا بڑا شہر جس
میں ایک سے ایک بڑھ کر عالی شان عمارتیں، سینکڑوں بینک، لیں،
ٹیڈیاں اور چمچاتے بازار ہیں. دودھ کیوں جلتے ہو کھارا، ایک کتنا
کما ہے؟

— جی ان کی برائے کی بڑی ڈکان ہو. ٹھیک فروش ہیں. ضابطہ
دہلوائے یا بیخ چھ ہزار ماہوار تو کما تے ہی ہیں.

— تو کبھی سوچا ایسا کیوں ہو؟ کیوں کھوڑے سے لگ دھروں کی
محنت پر عیش کریتے ہیں؟ کیوں انھوں نے اتنا دھن جمع کیا ہو؟
کیوں پسینہ بہا کر بھی تم بھوکے مرنے ہو؟ آخر کیوں؟ کبھی سوچا؟

ابھی کچھ جواب نہیں دے سکا. اب وہ پچھنے سے ابدم کھان
کی کوشش کر رہا تھا. شکر نے پھر کہا— ان سے بچے کھا کر خراب
کرنے میں فخر سمجھتے ہیں. ضا ان کو خراب کرنے کو بھی دیتا ہو. ان کی
عورتیں عیش عشرت کی پتلیاں بن کر غریب—دلوں میں گر لگتی
پھرتی ہیں. ضا ان کے لئے لگ لگائے کے سامان ہوتا کرتا ہو
پر کھارس بچے محنت کر کے جب میٹ کھونے کو روٹی مانگتے ہیں تو
انھیں نہیں ملتی، کھاری ماں، کھاری بہن، کھاری بی بی اپنی عزت دھکنے
کے لئے کپڑا مانگتی ہیں وہ بھی ضا انھیں نہیں دے سکتا. کبھی سوچو
بیرے دوست، اب کیوں ہو؟

ابھی کچھ بات نہ کر سکا تھا. اس کا دل کھرا آ رہا تھا. اس کی
خون خوار آنکھوں میں بدستنی چلنے لگی تھی اور پھر اس کی
طرح نیز پر رکھا ہوا تھا. اندر سے پارتھی دو بار

شکر کو سونے کے لئے بولنے آئی۔ اس نے دیکھا دروازہ بند ہے اور مشاہدہ کسی کے ساتھ بڑی تیزی سے باہیں کر رہے ہیں۔ وہ لوٹ گئی۔ پھر آئی۔ دروازہ اسی طرح بند تھا۔ شکر ابھی اسی جگہ تھا، اس نے دوسری آواز سنی جاہلی، کھڑی رہی پر آواز آئی تو شکر کی ہی تھی۔ اگرچہ وہ غصہ میں تھی تو بھی وہ شکر کی طرف پھینچ گئی۔ اپنے سامنے وہ کبھی کسی کو نہیں بولنے دیتے۔

اور شکر کہہ رہا تھا۔ میرے دوست! سوچتے سب ہیں، تم! ہم

ہم، وہ سب پر آپکامیاب مالت سونچتے ہیں۔ کیا سونچتے ہیں۔ تم پورب کی طرف پورب کی طرف کرتے ہو؟ تم جیت کیوں پوجتے ہو؟ تم شادی ایسے ہو؟ تو جاتے ہو؟ عرض کہ جھپٹکا، طلال، آغا کون، فضل، الشیر، بگڑا، کون جاتے ہیں؟ سوچتے ہیں اند لڑتے ہیں۔ فیصلہ کون جانتا ہے مرکز ہم کہاں جاتے ہیں؟ کیا پھر جنم لیتے ہیں یا نہیں؟ جس چیز کا کوئی حاضر ثبوت نہیں اس کے بارے میں فیصلہ کیسیا؟ اور جس کے بارے میں فیصلہ نہیں ہو سکتا اس کے بارے میں لڑائی کیسی؟ یہ تو ایسے مسئلے ہیں کہ جن کو دل جیسی پھر کھوج کر لے رہیں۔ باقی سب لوگ آزادی سے کسی بھی طرف نہ گئے کر کے پلٹا کوئیں۔ باقی مسجد کے آگے باجا اود گائے کی قربانی ایسی باہیں چڑھ تو یہ ہو نہیں، بہانے ہیں۔ دن بھر آرام دھڑ دھڑاتی ہو، اوائی جہاد دھیں دھیں کرتے ہیں، موٹر یوں ایل پکارتی رہتی ہے پھر کبھی کہہ کر ایک بابا نہیں جگ سکتا۔ اور صرف

جولائی ۱۹۷۷

آبلیجیٹ کیمیا

شکر کو سونے کے لئے بولنے آئی۔ اس نے دیکھا دروازہ بند ہے اور مشاہدہ کسی کے ساتھ بڑی تیزی سے باہیں کر رہے ہیں۔ وہ لوٹ گئی۔ پھر آئی۔ دروازہ اسی طرح بند تھا۔ شکر ابھی اسی جگہ تھا، اس نے دوسری آواز سنی جاہلی، کھڑی رہی پر آواز آئی تو شکر کی ہی تھی۔ اگرچہ وہ غصہ میں تھی تو بھی وہ شکر کی طرف پھینچ گئی۔ اپنے سامنے وہ کبھی کسی کو نہیں بولنے دیتے۔

اور شکر کہہ رہا تھا۔ میرے دوست! سوچتے سب ہیں، تم! ہم

ہم، وہ سب پر آپکامیاب مالت سونچتے ہیں۔ کیا سونچتے ہیں۔ تم پورب کی طرف پورب کی طرف کرتے ہو؟ تم جیت کیوں پوجتے ہو؟ تم شادی ایسے ہو؟ تو جاتے ہو؟ عرض کہ جھپٹکا، طلال، آغا کون، فضل، الشیر، بگڑا، کون جاتے ہیں؟ سوچتے ہیں اند لڑتے ہیں۔ فیصلہ کون جانتا ہے مرکز ہم کہاں جاتے ہیں؟ کیا پھر جنم لیتے ہیں یا نہیں؟ جس چیز کا کوئی حاضر ثبوت نہیں اس کے بارے میں فیصلہ کیسیا؟ اور جس کے بارے میں فیصلہ نہیں ہو سکتا اس کے بارے میں لڑائی کیسی؟ یہ تو ایسے مسئلے ہیں کہ جن کو دل جیسی پھر کھوج کر لے رہیں۔ باقی سب لوگ آزادی سے کسی بھی طرف نہ گئے کر کے پلٹا کوئیں۔ باقی مسجد کے آگے باجا اود گائے کی قربانی ایسی باہیں چڑھ تو یہ ہو نہیں، بہانے ہیں۔ دن بھر آرام دھڑ دھڑاتی ہو، اوائی جہاد دھیں دھیں کرتے ہیں، موٹر یوں ایل پکارتی رہتی ہے پھر کبھی کہہ کر ایک بابا نہیں جگ سکتا۔ اور صرف

کرنے والے بھی عجیب دامغ ٹالے ہیں۔ لیٹری کے لئے لاکھوں گائے کھتی ہو پر ایک گائے کے لئے نفل بہا دیں گے۔ یہ کوئی عجیب کے اصلی مسئلے تھوڑے ہی ہیں۔ اصلی مسئلہ یہ ہے کہ میں ہوں " اس کا حل ہو " دوسرے بھی ہیں " دوسروں کے ہونے میں ہی میرا ہونا ہو۔ میں جانتا ہوں " دوسرے جانتے ہیں گیان کی کوئی حد نہیں ہے بعد کی آہیں ہیں۔ ہم پہلے جو اصلی بات ہو اس کو بھول گئے ہیں۔ دوسری جو نقلی ہو اس کے لئے پاگل ہوئے پھرتے ہیں۔ ایک دوسرے کو کھانا چاہتے ہیں۔ ایچھا بناؤ سب مسلمان ہو جائیں تو کیا سوال ختم ہو جائے گا؟ دنیا میں اتنے مسائل تراج ہوئے اللہ ہی سمجھ گیا وہ سب سکھ گئے کیا انہوں نے " میں ہوں " دوسرے ہوں " دوسروں کے ہونے میں میرا ہونا ہو اس سچائی کو پہچانا؟ ہستوں یا ہستوں؟ دیا کی صورت عیسائی کے بھکتوں نے یا عقل کے نیچے تفسیر نہیں کے چیلوں نے یا تختہ کتبہ کے پیروں نے بنیادی سچائی کا ہمیشہ پالن کیا اود کرتے ہیں؟ یہاں پیارے دوست! اس سچائی کو پہچاننے کے لئے کسی کے پاس جانا ضروری ہی ہو؟ بات نہیں ہو۔ یہ اسانی زندگی کا بنیادی مسئلہ ہو اود اس کے لئے انسان بنے رہنا ضروری ہو۔ سوچنا چاہئے کہ دوسروں کے ہونے میں میرا ہونا کیسے ہو؟ اتنا چ پیدا کر کے بھی کسان بھوکا کیوں رہتا ہو؟ کل جا کر بھی ہمارا تھوڑے لمحوں میں سرکھول چھینا ہو؟ کیرا اکر بھی چلا آتے کیوں نہیں ڈھک پائے اس کے جواب میں اکثر کہ جانا ہو۔ جو پیدا کر کے ولے ہیں وہ اپنی پیدا کی ہوئی چیز کا استعمال نہیں کرتے۔ مرنوں پر گئے کھیل آتے ہیں یہ وہ خود انہیں نہیں کھاتے مٹنے میں کتنی پیلی

کرنے والے بھی آخیر کیم دیند ہے۔ میلادری کے لیتے لاکھوں گائے کھتی ہیں۔ ایک گائے کے لیتے نفل بہا دیں گے۔ یہ کوئی عجیب کے اصلی مسئلے تھوڑے ہی ہیں۔ اصلی مسئلہ یہ ہے کہ میں ہوں " اس کا حل ہو " دوسرے بھی ہیں " دوسروں کے ہونے میں ہی میرا ہونا ہو۔ میں جانتا ہوں " دوسرے جانتے ہیں گیان کی کوئی حد نہیں ہے بعد کی آہیں ہیں۔ ہم پہلے جو اصلی بات ہو اس کو بھول گئے ہیں۔ دوسری جو نقلی ہو اس کے لئے پاگل ہوئے پھرتے ہیں۔ ایک دوسرے کو کھانا چاہتے ہیں۔ ایچھا بناؤ سب مسلمان ہو جائیں تو کیا سوال ختم ہو جائے گا؟ دنیا میں اتنے مسائل تراج ہوئے اللہ ہی سمجھ گیا وہ سب سکھ گئے کیا انہوں نے " میں ہوں " دوسرے ہوں " دوسروں کے ہونے میں میرا ہونا ہو اس سچائی کو پہچانا؟ ہستوں یا ہستوں؟ دیا کی صورت عیسائی کے بھکتوں نے یا عقل کے نیچے تفسیر نہیں کے چیلوں نے یا تختہ کتبہ کے پیروں نے بنیادی سچائی کا ہمیشہ پالن کیا اود کرتے ہیں؟ یہاں پیارے دوست! اس سچائی کو پہچاننے کے لئے کسی کے پاس جانا ضروری ہی ہو؟ بات نہیں ہو۔ یہ اسانی زندگی کا بنیادی مسئلہ ہو اود اس کے لئے انسان بنے رہنا ضروری ہو۔ سوچنا چاہئے کہ دوسروں کے ہونے میں میرا ہونا کیسے ہو؟ اتنا چ پیدا کر کے بھی کسان بھوکا کیوں رہتا ہو؟ کل جا کر بھی ہمارا تھوڑے لمحوں میں سرکھول چھینا ہو؟ کیرا اکر بھی چلا آتے کیوں نہیں ڈھک پائے اس کے جواب میں اکثر کہ جانا ہو۔ جو پیدا کر کے ولے ہیں وہ اپنی پیدا کی ہوئی چیز کا استعمال نہیں کرتے۔ مرنوں پر گئے کھیل آتے ہیں یہ وہ خود انہیں نہیں کھاتے مٹنے میں کتنی پیلی

पर असल में कितनी शानत दलील है. फल दरखत की खुराक नहीं है. जो उसकी खुराक है वह उसे खुद व खुद मिलती है. कुरुरत उसे गैस देती है. इन्सान खाद देता है, पानी भी देता है. न दे तो फल न मिले. लेते का देना है. दूसरी तरफ अनाज पैदा करने वाले किसान की खिन्दगी वही अनाज है जो वह पैदा करता है. वही उससे खीन लिया जाता है और उनको दिया जाता है जिन्होंने उसको लिये कोई मेहनत नहीं की. आखिर क्यों ? आखिर यह बात मुन्हारी समझ में क्यों नहीं आती. आखिर क्यों तुम जेब में छुरे डाले उन आदिमियों को मारते की टोह में रहते हो जो कभी बंश तुन्हारी ही तरह भूके नंगे और बेघर है. फर्क सिर्फ इतना है वह शायद तुन्हारी तरह पूजा नहीं करते और मुझे तो इसमें भी शक है कि तुम या वह कभी सही मानी में पूजा करते भी हो..... कहते कहते शंकर अपनी जगह से उठा. फिर छुरा उठाया और घुमाने लगा. छुरा घूमता और बिजली की रोशनी में चमक उठता. अजनबी अचरज से उसे देखता रहा. शंकर यकायक रुका और उसके सामने आकर बोला—यह छुरा आपका है ?

अजनबी काया—मेरा.....

—जो यह छुरा आपका है.

—जो हाँ.

—तो फिर लीजिये और मुझे मार दीजिये. इसीलिये तो आप

चर से निकले थे. एकदम जैसे बिजली कौंधी. अजनबी काँप काप

उठ. अन्दर कोई तेजी से खोखा और फिर गिर पड़ा. शंकर जैसे

दुजियार में लौटा और बेसाकता बोला—पार्वती... उसने जल्दी से दरवाजा

जुलाई १९७७

अंशुकी

नया हिन्द
 पर اصل میں کتنی غلط دلیل ہے۔ پھیل درخت کی خوراک نہیں ہے۔
 جو اس کی خوراک ہے وہ اسے خود بخود ملتی ہے۔ قدرت اسے گیس
 دیتی ہے۔ انسان کھاد دیتا ہے، پانی بھی دیتا ہے۔ نہ دے تو پھیل نہ
 لے۔ لینے کا دینا ہے۔ دوسری طرف اناج پیدا کرنے والے مسلمان کی
 زندگی وہی اناج ہے جو وہ پیدا کرتا ہے۔ وہی اس سے پھین لیا جاتا
 ہے اور ان کو دیا جاتا ہے اور پھیل لے اس کے لئے کوئی سخت نہیں ہے۔
 اہل کیوں؟ آخر یہ بات مختاری سمجھ میں کیوں نہیں آتی۔ آخر کیوں تم
 جیب میں پھیرے ڈال ان آدمیوں کی ٹوہ میں رہتے ہو جو کم و بیش
 مختاری ہی طرح بھوکے ننگے اور لے پھر ہیں۔ فرق صرف اتنا ہے کہ وہ
 شاید مختاری صحیح سٹوں میں پوچھا کرتے بھی ہو۔ بشکر کھتے تھے اپنی
 جگہ سے اٹھا پھر پھیرا اٹھا یا اور کھالے کھا۔ پھر اگھوٹا اور بجائی
 روشنی میں چمک اٹھتا۔ اسی اجرج سے اسے دیکھتا رہا۔ شکر
 پکائیں ڈالا اند اس کے سامنے آکر بللا— یہ پھیرا آپ کا ہے؟

اسی کاٹنا—میرا.....

—جی یہ پھیرا آپ کا ہے.

—جی ہاں.

— تو پھر لیجیے اور مجھے مار دیجیے۔ اسی لئے تو آپ گھر سے نکلے

تھے۔ ایک دم جیسے بجلی کوٹھی، اسی کاٹنا کاٹنا اٹھا۔ اندر کھلی

تیزی سے پھینا اور پھیرا پھیرا پھیرا پھیرا۔ شکر جیسے ڈنڈیا میں لٹا اور

بے ساختہ بللا— پاروتی... اس نے جلدی سے دروازہ

یوٹو، رتلا۔۔۔سامنے کراہے پر پاروتی بےسودہ سے پڑی ہے۔ اسی سے مہلتا سے گھارا۔۔۔پاروتی پاروتی.....

اجتلاہی پئیے پائیے بڑی آغا یا. اسی سے کہا۔۔۔جلاہی سے پانی لے آئیے. شکر نہ تھی؟ پانی اٹھایا کر حاکم کرنا رو اٹھا۔ اپنی بڑی سے متعلق سے بچے کو اٹھایا اور کہا۔ منہ میرے پانی کے پھینے دیجیے.

شکر نے ویسا ہی کیا، ایک لمحہ دو، تین لے. پاروتی گھنٹائی.....

پاروتی بولی۔۔۔آجی. پاروتی بولی۔۔۔آجی. پاروتی بولی۔۔۔آجی.

کبھی طبیعت ہو؟ اچھی ہو. کہہ کر پاروتی نے آگھیں کھول دیں. غور سے شکر کو دیکھا، پھر دیکھا۔۔۔کہیں اس کے بچے کو لے جلاہی جلاہی میں گھوم رہا ہو. پھر دیکھا کہ پچکارتا ہو بہ بچے بار بار سب اٹھتا ہو. اچھا سے بولی۔۔۔کون ہو؟

ایک دوست۔۔۔ ایک دوست.

ہاں دوست ہے. نہ ہوتا تو کیا اس طرح گھومتا.

اور کہہ کر شکر ہنس پڑا۔۔۔دروپاک کہہ کر کہا. کمال لگانا کرتے تھے. بھرا کا نام سون کر جان نیکل جائے. بڑی بھرا تو کیا جیوٹی. دوسرے کا جیانا دھم کر دیتی ہیں. بھرے میں لیتے رہتے یا تو جان پر بھرا جاتی..... پاروتی اور

کھولا دیکھا۔۔۔سا سے فرض پر پاروتی بےسودہ سی پڑی ہو. اس نے مہلتا سے بھر کر پھلا۔۔۔پاروتی پاروتی.....

ابھی مجھے اٹھایا تھا. اس نے کہا۔۔۔جلاہی سے پانی لے آئیے. شکر نہ تھی؟ پانی اٹھایا کر حاکم کرنا رو اٹھا۔ اپنی بڑی سے متعلق سے بچے کو اٹھایا اور کہا۔ منہ میرے پانی کے پھینے دیجیے.

شکر نے ویسا ہی کیا، ایک لمحہ دو، تین لے. پاروتی گھنٹائی.....

پاروتی بولی۔۔۔آجی. پاروتی بولی۔۔۔آجی. پاروتی بولی۔۔۔آجی.

کبھی طبیعت ہو؟

اچھی ہو. کہہ کر پاروتی نے آگھیں کھول دیں. غور سے شکر کو دیکھا، پھر دیکھا۔۔۔کہیں اس کے بچے کو لے جلاہی جلاہی میں گھوم رہا ہو. پھر دیکھا کہ پچکارتا ہو بہ بچے بار بار سب اٹھتا ہو. اچھا سے بولی۔۔۔کون ہو؟

ایک دوست۔۔۔ ایک دوست.

ہاں دوست ہے. نہ ہوتا تو کیا اس طرح گھومتا.

اور کہہ کر شکر ہنس پڑا۔۔۔دروپاک کہہ کر کہا. کمال لگانا کرتے تھے. بھرا کا نام سون کر جان نیکل جائے. بڑی بھرا تو کیا جیوٹی. دوسرے کا جیانا دھم کر دیتی ہیں. بھرے میں لیتے رہتے یا تو جان پر بھرا جاتی..... پاروتی اور

کھولا دیکھا۔۔۔سا سے فرض پر پاروتی بےسودہ سی پڑی ہو. اس نے مہلتا سے بھر کر پھلا۔۔۔پاروتی پاروتی.....

ابھی مجھے اٹھایا تھا. اس نے کہا۔۔۔جلاہی سے پانی لے آئیے. شکر نہ تھی؟ پانی اٹھایا کر حاکم کرنا رو اٹھا۔ اپنی بڑی سے متعلق سے بچے کو اٹھایا اور کہا۔ منہ میرے پانی کے پھینے دیجیے.

شکر نے ویسا ہی کیا، ایک لمحہ دو، تین لے. پاروتی گھنٹائی.....

پاروتی بولی۔۔۔آجی. پاروتی بولی۔۔۔آجی. پاروتی بولی۔۔۔آجی.

کبھی طبیعت ہو؟

اچھی ہو. کہہ کر پاروتی نے آگھیں کھول دیں. غور سے شکر کو دیکھا، پھر دیکھا۔۔۔کہیں اس کے بچے کو لے جلاہی جلاہی میں گھوم رہا ہو. پھر دیکھا کہ پچکارتا ہو بہ بچے بار بار سب اٹھتا ہو. اچھا سے بولی۔۔۔کون ہو؟

ایک دوست۔۔۔ ایک دوست.

ہاں دوست ہے. نہ ہوتا تو کیا اس طرح گھومتا.

اور کہہ کر شکر ہنس پڑا۔۔۔دروپاک کہہ کر کہا. کمال لگانا کرتے تھے. بھرا کا نام سون کر جان نیکل جائے. بڑی بھرا تو کیا جیوٹی. دوسرے کا جیانا دھم کر دیتی ہیں. بھرے میں لیتے رہتے یا تو جان پر بھرا جاتی..... پاروتی اور

پوری طرح ٹھیک ہو گئی تھی، بلا گئی۔ بولیں۔ میں تو کبھی کبھی صحیح صحیح پھڑپھڑے بازی ہوئے والی ہو۔ تم بلبے دلیے ہو ڈرا دیتے ہو۔ جاؤ ان سے بچنے کو لے آؤ۔ میں کان کے سونے کے لئے لبرے لال ہوئی۔

پاروتی بڑی اور آہل اندر چلی گئی۔ فخر اٹھا اور اجنبی کے پاس آکر بولا۔ صفات کرنا۔ میں پتھارا نام پوچھیں تو بھول ہی گئی تھی۔

بچے رفیق کہتے ہیں۔

—تو برفیق صاحب بچے مجھے دیکھے۔ لبرے لال میں لا رہا ہوں برفیق جو دکلا۔ پر میں جاؤں گا۔

—جاؤں گے، کرنا میں بہ کیا کہتے ہیں؟

—جائیں گے۔ برفیق نے سر جھٹکا لیا۔ بھتہ سے آواز ہوئی۔ فخر نے آکر لبرے لال لیا۔ پاروتی نے پوچھا۔ کھانا تو نہیں کھائیں گے۔

—پاروتی نے اس بات کو زور سے دہرایا۔ اے بھائی پوچھتی ہیں کھانا تو نہیں کھائیں گے۔ کاپٹا ہوا جواب لا۔ نہیں نہیں۔

—پوچھو دیکھو۔

—پوچھا دیکھا۔

—جواب دیا۔ جی بیا تو۔

—پوچھا دیکھا۔

—پوچھا دیکھا۔

—پوچھا دیکھا۔

—پوچھا دیکھا۔

—پوچھا دیکھا۔

—پوچھا دیکھا۔

—پوچھا دیکھا۔

—پوچھا دیکھا۔

—پوچھا دیکھا۔

پوری طرح ٹھیک ہو گئی تھی، بلا گئی۔ بولیں۔ میں تو کبھی کبھی صحیح صحیح پھڑپھڑے بازی ہوئے والی ہو۔ تم بلبے دلیے ہو ڈرا دیتے ہو۔ جاؤ ان سے بچنے کو لے آؤ۔ میں کان کے سونے کے لئے لبرے لال ہوئی۔

پاروتی بڑی اور آہل اندر چلی گئی۔ فخر اٹھا اور اجنبی کے پاس آکر بولا۔ صفات کرنا۔ میں پتھارا نام پوچھیں تو بھول ہی گئی تھی۔

بچے رفیق کہتے ہیں۔

—تو برفیق صاحب بچے مجھے دیکھے۔ لبرے لال میں لا رہا ہوں برفیق جو دکلا۔ پر میں جاؤں گا۔

—جاؤں گے، کرنا میں بہ کیا کہتے ہیں؟

—جائیں گے۔ برفیق نے سر جھٹکا لیا۔ بھتہ سے آواز ہوئی۔ فخر نے آکر لبرے لال لیا۔ پاروتی نے پوچھا۔ کھانا تو نہیں کھائیں گے۔

—پاروتی نے اس بات کو زور سے دہرایا۔ اے بھائی پوچھتی ہیں کھانا تو نہیں کھائیں گے۔ کاپٹا ہوا جواب لا۔ نہیں نہیں۔

—پوچھو دیکھو۔

—پوچھا دیکھا۔

—جواب دیا۔ جی بیا تو۔

—پوچھا دیکھا۔

—پوچھا دیکھا۔

—پوچھا دیکھا۔

—پوچھا دیکھا۔

—پوچھا دیکھا۔

—پوچھا دیکھا۔

—پوچھا دیکھا۔

—پوچھا دیکھا۔

—پوچھا دیکھا۔

تیرک تیک رہا ہے۔ اُسکی آرائشیں آرائشوں سے بھری ہیں۔ آن دکھا کر کے فنکار نے کہا—رفیق بھائی یہ رہا کھٹلا لہستہ۔ ایسے تم سے خوب ہوئیں۔ اب سوؤ۔ سویرے لاتات ہوگی۔ تب تک وداع جتنے نے ہنچہ اٹھایا اور چلا گیا۔ لیکن سویرے جب کمرے میں آیا تو کھٹلا رفیق نہیں ہو۔ سب سامان پہلے کی طرح آ رہا ہے۔ لہستہ آ رہی ہے سے لیتا ہے اور اُس کے اوپر ایک برقعہ پہن کیا ہوا ہے۔ جلدی سے نکال کر پڑھا رفیق نے لکھا تھا۔

..... سمجھ میں نہیں آتا یہ سب کیا ہوا۔ میں نے خواب دکھا تھا یا اس دنیا سے کہیں دور بھٹک گیا تھا۔ لات بھر سوچتا رہا ہے کہ کسی بیچے پر نہیں بیٹھ سکا۔ بہ حال آپ کا سانس کرنے کی ہمت اس وقت مجھ میں نہیں ہے۔ یہ سیری کمرزدی آ رہی ہے وہ آ رہی کبھی اس برقعہ یا سکا تو ایک دن آپ لوگوں کا خیال حاصل کرنے آوں گا۔ تب تک سے لے لواطت! اپنی اچھی ٹی کی کہ میرا سلام دینا۔ اپنے پیارے بیچے کو پیار۔ اور یہ پھلر آپ سے لے لے تھا آپ ہی رکھئے۔ جہین رکھئے ایک دن آوں گا.....

پڑ لیا تو شکر نے اسے کہی بار ۱۲ لٹا لٹا کھر ایک لمبے شائش سے کر کہا—سب دل کے غلام ہیں۔ آت سے سائے آئے کی جنت نہیں ہے، کیسے نہیں ہو؟ اب کیا چھو مارنے کی بات ہو؟ ہر حال! میں خود جناب کے سامنے جا کر کھڑا ہو جاؤں گا اور کونوں کا آداب عرض جناب رفیق صاحب۔ تب !!

نیا دنیا آج کیوں جولائی ۱۹۳۷ء

نیا دنیا آج کیوں جولائی ۱۹۳۷ء

نیا دنیا آج کیوں جولائی ۱۹۳۷ء

समाज और साम्राज

(जनानव अन्धुल हर्लम साहव अन्सारी, आर्टिस्ट, भोपाल)

कल्पना कीजिये कि दो चिराग सामने रक्खे हैं, बिलकुल आसने सामने—एक समाज का, एक साम्राज का। समाज का मुनहरो चिराग अगर समाज का खन नूस रहा है तो दुबले पतले समाज के भिड़ी के दीपक की बत्ती, मोटे ताजे साम्राज की चरबी बर्बि बर्बि कर पी रही है—जिसकी बजह से उसकी रोशनी मंदी पड़ती जा रही है तो इसकी बढ़ती जा रही है—वह बजान हो रहा है तो यह जालदार !

देखो तो सही ? जरा के जरा में वह कितनी फीकी फीकी और पीली पीली हो गई, उसकी भिलभिलाहट में उदासी और सुर्दनी है—इसकी मुसकराहट में जान है, शान है, जीवन है, प्रकाश है, यही बजह है कि साम्राज का चिराग टिमटिमा रहा है और समाज का दिया उसके सामने खड़ा मुसकरा रहा है. वह रो रहा है. यह हँस रहा है.

समाज के चिराग की मसली हुई बत्ती अन्दर ही अन्दर सुलगती रहती है और चुपके ही चुपके ताकत पाकर अपनी जल को तेज और तुलन्द करती जाती है. चूँकि उसकी लहरती जल में आकाशी मौज होती है इसी लिये यह अपनी भड़क से फिजा को गरमा कर और गुलामों को शरमा कर समाज के अन्दर आजादी और गुरहारी का जजबा पैदा करती है और बाबू भोके पर उसके

समाज और समाज

(रचना عبد الحلیم صاحب انصاری آرٹسٹ البھوپال)

सलियाँ खिंचे कर दो चिराग सामने रक्के हैं. अकल आँसे सलने—
 एक समाज का, एक समाज का. समाज का समाज का समाज का
 धुन घूस रहा हो तो लंबे सल समाज के सल के रिक की बत्ती,
 नुगे तारले समाज की चरबी कखिंचे खिंचे खिंचे खिंचे खिंचे खिंचे
 से अस की रोशनी मंदी पड़ती जा रही हो तो अस की बुरही जा रही हो—

वे सल समाज हो रहा हो तो सल जाण पार !

दखिणे त्रुसुमी ? डरा के डरा में वे कत्ती बहिकी बहिकी ओसली बिली

बुकी, अस की बहिलाहट में आसो ओसु मरुती हो—स की सुकुरी

में जाण हो, खान हो, जीवण हो, प्रकाश हो. यही डजे हो कर

समाज का समाज चिछा रहा हो ओ समाज का दिया अस के सलने कुरा

सुकरा रहा हो. वे डरो रहा हो. से शंसि रहा हो.

समाज के चिराग की मसली बत्ती अन्दर ही अन्दर सुलगती रहती

हो ओस चिछे ही चिछे ताकत पाकर अपनी जल को तेज और लुन्द करती

जाती हो. चूँकि अस की लहरती जल में आकाशी मौज होती हो इसी

लिये सलने कुरा से फज्जा को गरमा कर समाज के अन्दर आजादी

के अन्दर आजादी और गुरहारी का जजबा पैदा करती हो ओसु सलने सलने सलने

نیا ہند سماج اور سماج اور سماج جولائی سن ۱۹۰۷

نیا ہند سماج اور سماج اور سماج جولائی سن ۱۹۰۷

نیا ہند سماج اور سماج اور سماج جولائی سن ۱۹۰۷

نیا ہند سماج اور سماج اور سماج جولائی سن ۱۹۰۷

نیا ہند سماج اور سماج اور سماج جولائی سن ۱۹۰۷

نیا ہند سماج اور سماج اور سماج جولائی سن ۱۹۰۷

نیا ہند سماج اور سماج اور سماج جولائی سن ۱۹۰۷

نیا ہند سماج اور سماج اور سماج جولائی سن ۱۹۰۷

نیا ہند سماج اور سراج جولائی ۱۹۰۶

نیا ہند سماج اور سماج اور سراج جولائی ۱۹۰۶
جمہوریت اور جیسے کہ ایک باطنی اور ایک ظہنی اور اندرونی اور
سے سیرانج پر مخالفت ہوگا کا نتیجہ! اب اس کی زندگی کا چراغ بنے
میں بجھنا چاہتا ہے۔ سانس اکھڑ رہی ہے، دم گھٹ رہا ہے
آہنی اہلیان لے رہا ہے اور اشاروں ہی اشاروں میں گویا وہ
کہہ رہا ہے—

کوئی دم کا سماں ہوں اے اہل محفل

بجراغ سحر ہوں بجھا جاتا ہوں۔

دیکھو نہ! حق میں آئندہ گریب اللہ وہ چلا۔ اللہ سراج ہے

یعنی عزیز اور خود غور سراج، پورے بولنے سے زندگی کی گھنٹی

بگھنٹاں سے لڑتا آزادی کی روشنی میں داخل ہو رہا ہے۔

تو کہیں جس طرح ۹ سراج کو اس سے ظلم کا حرا بجھاتا چکھاتا ہے۔ خود

ظلم سے کھٹکاتا ہے۔

سحر = صبح



جولائی ۱۹۰۶

نیا ہند سماج اور سماج اور سراج جولائی ۱۹۰۶
جمہوریت اور جیسے کہ ایک باطنی اور ایک ظہنی اور اندرونی اور
سے سیرانج پر مخالفت ہوگا کا نتیجہ! اب اس کی زندگی کا چراغ بنے
میں بجھنا چاہتا ہے۔ سانس اکھڑ رہی ہے، دم گھٹ رہا ہے
آہنی اہلیان لے رہا ہے اور اشاروں ہی اشاروں میں گویا وہ
کہہ رہا ہے—

کوئی دم کا مہرماناں ہیں پھر آہلہ مہرکیناں

بجراغ سہار ہیں بھنا چاہتا ہیں۔

دیکھو نہ! تپ تپ آئیں گئے اور وہ بھ چلا— اور سماج؟

جانا ماریاں اور سھار سماج، پورے جوان سے بھیندگی کی کٹینا

بھائیوں تپ کرانا آجاادی کی روشنی میں بھینل ہوا رہا

ہے—لے کین کین ترہ؟

سماج کو اسکے جوان کا مہرا بھاتا بھاتا

اور— سھار، جوان سھ کر مسکرانا مسکرانا۔

سہار = سھار

(۱۲۸)

गीत

(श्री चिरंजीव, देहली)

पंखों से बांध दिये पत्थर !

यह जुर्म, कि मैं चाहूँ उड़कर

उठ जाऊँ मिट्टी से ऊपर

और वह अतंत की डाली पर, मैं निसि दिन गाऊँ गीत अमर !

पंखों से बांध दिये पत्थर !

जिस लिये पंख मैं था लाया,

वह काम न इनसे ले पाया,

इत पंखों का देने वाला, नाराज न होगा क्या मुझ पर !

पंखों से बांध दिये पत्थर !

नित नभ से आसंजन आते

अरमान तड़प कर रह जाते,

मेरा पथ तकने वाले को, कैसे बंदी की मिले छार !

पंखों से बांध दिये पत्थर !

तू काट गिरादे मेरे पर,

मैं पड़ा रहूँगा धीरज धर,

पर जब तक वेतल तन पर, मैं छोड़ नहीं सकता अंधार !

पंखों से बांध दिये पत्थर !

गीत

(शुभरी प्रेरित, दिल्ली)

पंखों से बांध दूँ पत्थर !

ये सपना, कि मैं जाँचूँ

अपने हाँस की डाली पर

एक चिह्न अन्त की डाली पर, मैं निसि दिन गाऊँ गीत अमर !

पंखों से बांध दूँ पत्थर !

जिस लिये पंख मैं था लाया,

वह काम न इनसे ले पाया,

इत पंखों का देने वाला, नाराज न होगा क्या मुझ पर !

पंखों से बांध दूँ पत्थर !

नित नभ से आसंजन आते

अरमान तड़प कर रह जाते,

मेरा पथ तकने वाले को, कैसे बंदी की मिले छार !

पंखों से बांध दूँ पत्थर !

तू काट गिरादे मेरे पर,

मैं पड़ा रहूँगा धीरज धर,

पर जब तक वेतल तन पर, मैं छोड़ नहीं सकता अंधार !

पंखों से बांध दूँ पत्थर !

हिंदुस्तानी कलचर और संगीत

न्यामत खाँ के बाद के वीनकार

(पं० गनेश प्रसाद द्विवेदी)

(५)

हम यह बता चुके हैं कि मिर्खासिंह के बाद उनके वंश में सबसे बड़े वीनकार न्यामत खाँ हुए. या यों भी कह सकते हैं कि तानसेत और भिखी सिंह के बाद इस मिले जुले खानदान में सबसे बड़े कलावंत गुर्ना न्यामत खाँ उर्फ शाह 'सदारंग' ही हुए. 'शाह' और 'सदारंग' की पदवी उन्हें मशहूर गुर्नी बादशाह मुहम्मद शाह 'रंगिले' ने दी थी. इन्होंने (सदारंग ने) तंत्रकार का दरजा गवैये से ऊँचा साधित कर दिया था. अकबर के बाद कला की कदर करने वाले सबसे बड़े मुगल बादशाह मुहम्मद शाह ही थे. यह अकबर से बड़ कर इस मानी में थे कि यह खुद भी इस फल में साहिर थे और एक ऊँचे दर्जे के कवि भी थे. अकबर सिर्फ सुनना समझना और गुर्नी का आदर करना ही जानते थे, खुद इस काम को नहीं करते थे. पर बादशाह 'रंगिले' तो सबसुख 'रंगिले' ही थे. गाने में वह अच्छे से अच्छे गवैये के साथ टकर ले सकते थे. नये-खयाल रचनेवालों में उनकी देन लगभग न्यामत खाँ के बराबर की ही है. राग में बंध हुए खयालों की रचना वहीं कर सकता है जो एक साथ ही कविता और रागसंगीत दोनों पर बराबर का दखल डरवाता हो. संस्कृत में इसको 'वाग्गेयकार'

हिंदुस्तानी कलचर और संगीत

नफ्त खाल के बाद के वीनकार

(पं० गनेश प्रसाद द्विवेदी)

हम यह बता चुके हैं कि मिर्खासिंह के बाद उनके वंश में सबसे बड़े वीनकार न्यामत खाँ हुए. या यों भी कह सकते हैं कि तानसेत और भिखी सिंह के बाद इस मिले जुले खानदान में सबसे बड़े कलावंत गुर्ना न्यामत खाँ उर्फ शाह 'सदारंग' ही हुए. 'शाह' और 'सदारंग' की पदवी उन्हें मशहूर गुर्नी बादशाह मुहम्मद शाह 'रंगिले' ने दी थी. इन्होंने (सदारंग ने) तंत्रकार का दरजा गवैये से ऊँचा साधित कर दिया था. अकबर के बाद कला की कदर करने वाले सबसे बड़े मुगल बादशाह मुहम्मद शाह ही थे. यह अकबर से बड़ कर इस मानी में थे कि यह खुद भी इस फल में साहिर थे और एक ऊँचे दर्जे के कवि भी थे. अकबर सिर्फ सुनना समझना और गुर्नी का आदर करना ही जानते थे, खुद इस काम को नहीं करते थे. पर बादशाह 'रंगिले' तो सबसुख 'रंगिले' ही थे. गाने में वह अच्छे से अच्छे गवैये के साथ टकर ले सकते थे. नये-खयाल रचनेवालों में उनकी देन लगभग न्यामत खाँ के बराबर की ही है. राग में बंध हुए खयालों की रचना वहीं कर सकता है जो एक साथ ही कविता और रागसंगीत दोनों पर बराबर का दखल डरवाता हो. संस्कृत में इसको 'वाग्गेयकार'

कहते हैं. अंग्रेजी में यह कंपोजर (Composer) कहलाते हैं और संगीत की दुनिया में सबसे ज्यादा इज्जत इन्हीं की होती है.

यारशाह रंगीले और उनके दरबारी गुनी न्यामत खाँ दोनों ही 'ऊँचे दर्जे के संगीत के माहिर ही नहीं बल्कि 'बामोपकार' या 'कंपोजर' थे. मौलिकता या नयापन लाने में तो न्यामत खाँ शायद तानसेन से भी आगे निकल गए. इनका 'सदारंग' का खिताब इसी बात को जाहिर करता है. किसी भी ललितकला (कनेलतीक) में जो कोई रोशनी और साया (Light and shade) के मधुर मिलन के जितने अन्तरेय मेल दिखा सके वह उतना ही पढ़ूँचा हुआ गुनी माना जाता है. चितरा आयालोक के जो मेल तरह तरह के हलके और गहरे रंगों की मिलावट से दिखाता है वही गवैया या तंत्रकार सुरों की कलापूर्ण मिलावट, सजावट और जगमगाहट से पैदा करता है. चित्र कला में रंगों का और संगीत में सुरों का उतार और चढ़ाव ही ललितकला की जान है. इस चाँच में न्यामत खाँ सबको पीछे छोड़ जाते हैं, और इस निगाह से 'सदारंग' की उनकी पदवी बेमानी नहीं है. हमारे हिंदुस्तानी संगीत की सबसे बड़ी खूबी यही है कि इस में कलाकर को अपनी निजी कलात्मक (कन्नी) सूक्त ब्रूम कल्पना और मौलिकता के मुताबिक नए रंग, नए फूल पत्ते आँकने की बड़ेबड़ा गुंजाइश है. मिसाल के लिये कोई भाँ राग ले लीजिये. जैसे भैरवी या ईसन. इस को गाते बजाते बक्त सभी कलाकार सुर तो वही धरते थे जो इनमें लगते हैं. इनसे बाहर कोई नहीं जा सकता, पर उन्हीं सात सुरों में कुछ को छिया कर

नया हिन्द जुलाई सन् '४७

कहते हैं. अंग्रेजी में यह कंपोजर (Composer) कहलाते हैं

और संगीत की दुनिया में सबसे ज्यादा इज्जत इन्हीं की होती है. यारशाह रंगीले और उनके दरबारी गुनी न्यामत खाँ दोनों ही 'ऊँचे दर्जे के संगीत के माहिर ही नहीं बल्कि 'बामोपकार' या 'कंपोजर' थे. मौलिकता या नयापन लाने में तो न्यामत खाँ शायद तानसेन से भी आगे निकल गए. इनका 'सदारंग' का खिताब इसी बात को जाहिर करता है. किसी भी ललितकला (कनेलतीक) में जो कोई रोशनी और साया (Light and shade) के मधुर मिलन के जितने अन्तरेय मेल दिखा सके वह उतना ही पढ़ूँचा हुआ गुनी माना जाता है. चितरा आयालोक के जो मेल तरह तरह के हलके और गहरे रंगों की मिलावट से दिखाता है वही गवैया या तंत्रकार सुरों की कलापूर्ण मिलावट, सजावट और जगमगाहट से पैदा करता है. चित्र कला में रंगों का और संगीत में सुरों का उतार और चढ़ाव ही ललितकला की जान है. इस चाँच में न्यामत खाँ सबको पीछे छोड़ जाते हैं, और इस निगाह से 'सदारंग' की उनकी पदवी बेमानी नहीं है. हमारे हिंदुस्तानी संगीत की सबसे बड़ी खूबी यही है कि इस में कलाकर को अपनी निजी कलात्मक (कन्नी) सूक्त ब्रूम कल्पना और मौलिकता के मुताबिक नए रंग, नए फूल पत्ते आँकने की बड़ेबड़ा गुंजाइश है. मिसाल के लिये कोई भाँ राग ले लीजिये. जैसे भैरवी या ईसन. इस को गाते बजाते बक्त सभी कलाकार सुर तो वही धरते थे जो इनमें लगते हैं. इनसे बाहर कोई नहीं जा सकता, पर उन्हीं सात सुरों में कुछ को छिया कर

نیا ہند ہندوستانی کالج اور سنگیت

کونڈہ کو بچاوا دیا پہلا کر گونی سیکڑوں ہزاروں قسم کے 'انٹار' بنا کر
 بچاوا ہے کہ ایک ایک سال پہلے جلتا ہو، جس
 چلتا ہے، جس میں دیکھنے، سننے، سمجھنے کے لئے کافی سال ہوتا ہو۔ یہی ہو کر
 ہوتا ہے۔ یہی ہے 'کرانچ'۔ جس میں سبھی سے یہ انٹار ایک کے بعد ایک سجا لے جائے ہیں
 یاد گوڑوں کی گونیا میں ترکیب کے نام سے مشہور ہو۔ گھڑوں میں
 اب بھی کسی راگ کے اجلاپ یا بڑھت میں ضرب طار ترکیبیں ملتی
 ہیں جو آگے میں کرناؤں کی شکل اختیار کرتی ہیں۔ یہ دیکھ اس بات کا
 ہو کہ یہ ترکیبیں آج تک گھسی نہ جا سکیں، گھرانے کے آستادوں
 کے زبان تک ہی رہ گئیں۔ پنڈت وشنو ناراین بھٹات کھنڈے نے
 قریب ۲۰۰۰ خیال ڈھول اور ڈھولوں کی بند بھولوں کی ترکیبیں دہری
 محنت سے آستادوں سے حاصل کر کے گھسی پر گا کی کی ترکیبیں اور
 محنت کے انکاروں کی طرف وہ دھیان نہ دے سکے۔ شاید کوئی
 دوسرا سنگیت کا اسکالر اس طرف دھیان دے سکے۔ سن یہ گیا ہو کہ
 محنت خالی کی سب چیزیں گھسی ہوئی اب بھی ان کے گھرانے میں موجود
 ہیں۔ یہ گھسی بھیا نا تو دور رہا وہ کسی کو دیکھنے کو بھی نہیں ملتیں۔
 یہ لوگ سماجی اولاد کے اور کسی کو اس لائق نہیں سمجھتے۔ ان کا دشمن
 ہو جو شاید ایک حد تک صحیح بھی ہو، کہ کوئی دوسرا ان چیزوں کی
 قید نہ کر سکے گا۔ محنت خالی نے بڑی محنت سے اس کو دیا کہ حاصل کیا گیا
 اتنی محنت شاید ہی کوئی دوسرا کر سکے۔ ان کی سارے جسم بھر کی کسائی
 ہی ہو۔ گونیا کی دھن دولت کو انھوں نے پہنچانے کی ساری بادشاہ
 سے ان کو بے انتہا دولت ملتی تھی۔ یہ سب دوستوں کی دعوتوں

نیا ہند ہندوستانی کالج اور سنگیت

کونڈہ کو بچاوا دیا پہلا کر گونی سیکڑوں ہزاروں قسم کے 'انٹار' بنا کر
 بچاوا ہے کہ ایک ایک سال پہلے جلتا ہو، جس
 چلتا ہے، جس میں دیکھنے، سننے، سمجھنے کے لئے کافی سال ہوتا ہو۔ یہی ہو کر
 ہوتا ہے۔ یہی ہے 'کرانچ'۔ جس میں سبھی سے یہ انٹار ایک کے بعد ایک سجا لے جائے ہیں
 یاد گوڑوں کی گونیا میں ترکیب کے نام سے مشہور ہو۔ گھڑوں میں
 اب بھی کسی راگ کے اجلاپ یا بڑھت میں ضرب طار ترکیبیں ملتی
 ہیں جو آگے میں کرناؤں کی شکل اختیار کرتی ہیں۔ یہ دیکھ اس بات کا
 ہو کہ یہ ترکیبیں آج تک گھسی نہ جا سکیں، گھرانے کے آستادوں
 کے زبان تک ہی رہ گئیں۔ پنڈت وشنو ناراین بھٹات کھنڈے نے
 قریب ۲۰۰۰ خیال ڈھول اور ڈھولوں کی بند بھولوں کی ترکیبیں دہری
 محنت سے آستادوں سے حاصل کر کے گھسی پر گا کی کی ترکیبیں اور
 محنت کے انکاروں کی طرف وہ دھیان نہ دے سکے۔ شاید کوئی
 دوسرا سنگیت کا اسکالر اس طرف دھیان دے سکے۔ سن یہ گیا ہو کہ
 محنت خالی کی سب چیزیں گھسی ہوئی اب بھی ان کے گھرانے میں موجود
 ہیں۔ یہ گھسی بھیا نا تو دور رہا وہ کسی کو دیکھنے کو بھی نہیں ملتیں۔
 یہ لوگ سماجی اولاد کے اور کسی کو اس لائق نہیں سمجھتے۔ ان کا دشمن
 ہو جو شاید ایک حد تک صحیح بھی ہو، کہ کوئی دوسرا ان چیزوں کی
 قید نہ کر سکے گا۔ محنت خالی نے بڑی محنت سے اس کو دیا کہ حاصل کیا گیا
 اتنی محنت شاید ہی کوئی دوسرا کر سکے۔ ان کی سارے جسم بھر کی کسائی
 ہی ہو۔ گونیا کی دھن دولت کو انھوں نے پہنچانے کی ساری بادشاہ
 سے ان کو بے انتہا دولت ملتی تھی۔ یہ سب دوستوں کی دعوتوں

نیا ہندوستانی کلاچر اور संगیت

جولائی سن ۱۹۶

اور شریہ دیکھوں کی خیرات میں صرف ہوتی تھی۔ یہ ہمیشہ محتاج ہی دکھائی پڑتے تھے۔ وہ ایک مثالیں دینا نامناسب نہ ہوگا۔

نصرت خاں کو رنگیلے بادشاہ سے گوارے کے طہ پر بہت بڑی رقم ملا کرتی تھی۔ اس پر بھی انھیں گھر خرچ کے لئے اکثر مہاجروں سے عرض لینا پڑتا تھا۔ اور مہاجن لوگ بنا کوئی چیز گروی رکھے عرض دینے نہیں۔ ان کے پاس کیا تھا سوائے لاٹوں کے۔ مہاجن لوگ ان کا کوئی خاص لاگ گروی رکھ کر روپیہ ادھار دیتے تھے۔ یعنی یہ کہ جب تک یہ عرض کی رقم واپس نہ کریں تب تک وہ لاگ دربار میں یا اٹھائیں گا بجا نہیں آسکتے تھے۔ دربار میں اس لاگ کی ضمانتیں ہونے پر یہ عرض کرتے کہ جہاں پناہ وہ لاگ تو گروی رکھا تھا اور فلاں مہاجن کے یہاں۔ اس پر ایک نمونہ لکھا اور پھر بادشاہ سلامت اس مہاجن کے روپیہ ادا کر ان کا لاگ بچھڑوائے۔

یہ ادویہ کہا جا چکا ہے کہ نصرت خاں اور رنگیلے بادشاہ کے رچے ہوئے زیادہ تر خیالوں کی مشر لیاں بھارت کھڑے کی کتابوں میں آگئی ہیں۔ یہ اُنھوں نے بہت سے ڈھریہ دھار کھی لیے جن کی مشر لیاں ابھی تک نہیں مل سکی ہو۔ بات یہ ہوتی ہے جو خیال انھوں نے رچے آتے تو انھوں نے باہری لوگوں کو یاد کرنے کی اور گانے کی اجازت دے دی پر ڈھریہ دھاروں کی قائم اپنے اولاد ہی تک رکھی۔ کسی باہری شخص کو اٹھلیں نہیں یاد کروا یا گت۔ اس گھرانے کی خاص ودیا تو ڈھریہ اور آٹھ لاپ جانتی کی ہی تھی۔ نصرت خاں نے اپنی اولاد کو بھی وہی دھار میں خیال

۲۸

راگ لڑھکاوتے۔

دھار شاہ سالامت اس مہاجن کے رچے آتے کر انکا راگ لڑھکاوتے۔

یہ زپر کھا جا چکا ہے کہ نیاامات خاں اور رنگیلے بادشاہ کے رچے ہر آتے رچاواتر رچاواتر کی سورا لیاں بھارت کھڑے کی کتابوں میں آگائی ہے، پر انھوں نے بہت سے ڈھریہ دھار بھی رچے جنکی سورا لیاں ابھی تک نہیں مل سکی ہے۔ بات یہ ہے کہ جو خیال انھوں نے رچے آتے تو انھوں نے باہری لوگوں کو یاد کرنے کی اور گانے کی اجازت دے دی پر ڈھریہ دھاروں کی تالیف اپنے آتے اور ہی تک رکھی۔ کسی باہری شخص کو انھوں نے یاد کروا یا گت۔ اس دھاروں کی خاص ودیا تو ڈھریہ اور آٹھ لاپ جانتی کی ہی تھی۔ نیاامات خاں نے اپنے آتے اور آتے کو کئی دھار میں لکھا

نیا ہند

ہندوستانی کلاچر اور संगیت

جولائی سن ۱۹۶

اور شریہ دیکھوں کی خیرات میں صرف ہوتی تھی۔ یہ ہمیشہ محتاج ہی دکھائی پڑتے تھے۔ وہ ایک مثالیں دینا نامناسب نہ ہوگا۔

نصرت خاں کو رنگیلے بادشاہ سے گوارے کے طہ پر بہت بڑی رقم ملا کرتی تھی۔ اس پر بھی انھیں گھر خرچ کے لئے اکثر مہاجروں سے عرض لینا پڑتا تھا۔ اور مہاجن لوگ بنا کوئی چیز گروی رکھے عرض دینے نہیں۔ ان کے پاس کیا تھا سوائے لاٹوں کے۔ مہاجن لوگ ان کا کوئی خاص لاگ گروی رکھ کر روپیہ ادھار دیتے تھے۔ یعنی یہ کہ جب تک یہ عرض کی رقم واپس نہ کریں تب تک وہ لاگ دربار میں یا اٹھائیں گا بجا نہیں آسکتے تھے۔ دربار میں اس لاگ کی ضمانتیں ہونے پر یہ عرض کرتے کہ جہاں پناہ وہ لاگ تو گروی رکھا تھا اور فلاں مہاجن کے یہاں۔ اس پر ایک نمونہ لکھا اور پھر بادشاہ سلامت اس مہاجن کے روپیہ ادا کر ان کا لاگ بچھڑوائے۔

یہ ادویہ کہا جا چکا ہے کہ نصرت خاں اور رنگیلے بادشاہ کے رچے ہوئے زیادہ تر خیالوں کی مشر لیاں بھارت کھڑے کی کتابوں میں آگئی ہیں۔ یہ اُنھوں نے بہت سے ڈھریہ دھار کھی لیے جن کی مشر لیاں ابھی تک نہیں مل سکی ہو۔ بات یہ ہوتی ہے جو خیال انھوں نے رچے آتے تو انھوں نے باہری لوگوں کو یاد کرنے کی اور گانے کی اجازت دے دی پر ڈھریہ دھاروں کی قائم اپنے اولاد ہی تک رکھی۔ کسی باہری شخص کو اٹھلیں نہیں یاد کروا یا گت۔ اس گھرانے کی خاص ودیا تو ڈھریہ اور آٹھ لاپ جانتی کی ہی تھی۔ نصرت خاں نے اپنی اولاد کو بھی وہی دھار میں خیال

(२५)

गाने को इनाजात नहीं दी. ऐसी हालत में हम इस बात का अन्याया कर सकते हैं कि जो धुरपद को इतनी बड़ी चीज समझता हो उसने बहुत से धुरपद पमार भी जरूर रचे होंगे. इनके वंस के मौजूदा गुनी मुहम्मद रबीर खाँ साहब का भी यही कहना है. इनके पास न्यामत खाँ के रचे हुए सैकड़ों धुरपद मौजूद हैं जिन में राग की पूरी तसवीर रक्खी हुई है और जिनमें यह गा कर सुना भी देते हैं पर हमें दुख इस बात का है कि उन्हें किताब की राकल में छापने की राय यह नहीं देते. इसकी जड़ में यही बात मालूम होती है कि इनको अदेशा है कि अगर इनके जुजुगों की चीजें किताबों में छप कर आम लोगों में फैल जायेंगी तो इनकी अपनी पूछ और कदर कम हो जायगी. हमारा ख्याल है कि इनका इस तरह सोचना गलत है. मिसाल मौजूद है. दो हजार ख्यालों को सुरलिपि छपी हुई हमारे सामने मौजूद है. पर इससे जिन घरानों से भातखंडे, विष्णुदिगंबर और राजा नवाब अली वराराने चीजें हासिल की कया उनकी कदर कम हो गई? मैं तो कहूँगा कि इसी वजह से इनकी फिर के पूछ हुई. नहीं तो दुनिया इन उस्तादों को भूल चली थी. जिन लोगों से पं० भातखंडे और राजा नवाब अली ने चीजें हासिल की हैं उनकी फेहरिस्त इन्होंने अपने किताब में दी है जिनमें से कुछ अभी हमारे भाग्य से खिंचा है, जैसे उस्ताद मुशताक हुसैन, फैयाज खाँ, कयाराब पंडित व राजा भैया पंडित वाले वराराने. इन किताबों के छपने के बाद और इन्होंने की वजह से इन लोगों को इज्जत और मांग रहा कदर बढ़ गई कि कोई म्यूजिक कानन स या संगीत का बड़ा

जुलानी

भारतस्थानी कलाकार

शारदा

खाने की आमत नही दी. ऐसी हालत में हम इस बात का अंदाज़ कर सकते हैं कि जो धुरपद पमार भी जरूर रचे होंगे. इनके वंस के मौजूदा गुनी मुहम्मद रबीर खाँ साहब का भी यही कहना है. इनके पास न्यामत खाँ के रचे हुए सैकड़ों धुरपद मौजूद हैं जिन में राग की पूरी तसवीर रक्खी हुई है और जिनमें यह गा कर सुना भी देते हैं पर हमें दुख इस बात का है कि उन्हें किताब की राकल में छापने की राय यह नहीं देते. इसकी जड़ में यही बात मालूम होती है कि इनको अदेशा है कि अगर इनके जुजुगों की चीजें किताबों में छप कर आम लोगों में फैल जायेंगी तो इनकी अपनी पूछ और कदर कम हो जायगी. हमारा ख्याल है कि इनका इस तरह सोचना गलत है. मिसाल मौजूद है. दो हजार ख्यालों को सुरलिपि छपी हुई हमारे सामने मौजूद है. पर इससे जिन घरानों से भातखंडे, विष्णुदिगंबर और राजा नवाब अली वराराने चीजें हासिल की कया उनकी कदर कम हो गई? मैं तो कहूँगा कि इसी वजह से इनकी फिर के पूछ हुई. नहीं तो दुनिया इन उस्तादों को भूल चली थी. जिन लोगों से पं० भातखंडे और राजा नवाब अली ने चीजें हासिल की हैं उनकी फेहरिस्त इन्होंने अपने किताब में दी है जिनमें से कुछ अभी हमारे भाग्य से खिंचा है, जैसे उस्ताद मुशताक हुसैन, फैयाज खाँ, कयाराब पंडित व राजा भैया पंडित वाले वराराने. इन किताबों के छपने के बाद और इन्होंने की वजह से इन लोगों को इज्जत और मांग रहा कदर बढ़ गई कि कोई म्यूजिक कानन स या संगीत का बड़ा

نیا ہند ہندستان کی کلچر اور سنگیت جولائی ۱۹۷۶

حیدرستانی کالچر اور संगीत जुलाई सन १९७६
जलमा इनकी मौजूदगी के बिना अयूरा समझा जाता है. मैं समझता हूँ कि अगर शाह सदरंग के रचे हुए धुरपद, धमार, और सदरों की सुरलिपियां अया ली जायं तो इस विद्या का बड़ा चपकार होगा और भारतवर्षे और राजा नवाब अली की तरह दर्बार खाँ साहब का नाम भी अमर हो जायगा.

शाह सदरंग के बाद वीनकारों की दुनिया में सबसे मशहूर उनके पंते जीवन शाह और इनके (जीवन शाहके) भतीजे निर्मल शाह हुए. इनके बाद मुहम्मद वजोर खाँ हिन्दुस्तान के मशहूर वीनकार हुए. इनको गुजर हुए अभी ज्यादा दिन नहीं हुए. मुहम्मद वजोर खाँ साहब को सुने हुए लोग अभी चिन्ता है. इन्हीं के पंते मुहम्मद वजोर खाँ साहब है जो अभी मौजूद है और कलकत्ते में 'सेना' संगीत विद्यालय के प्रिंसिपल है. इनके बारे में खास तौर से कुछ कहने के पहले हमें इनके और शाह सदरंग के बीच के मशहूर वीनकारों पर एक निगाह डाल लेनी चाहिये.

शाह सदरंग के दो बेटे थे—किरोज खाँ और भूपत खाँ. किरोज खाँ का जितनाय था 'अदरंग' और भूपत खाँ का 'मनरंग' (कोई इन्हें 'महारंग' भी कहते हैं). इनमें से किरोज खाँ थे श्रीलाद रहं. भूपत खाँ के दो लड़के थे जिनके नाम थे जीवन शाह और प्यार खाँ (उंगलीकट). यह दोनों ही बहुत पहुँचे हुए गुर्ना हुए. इन में से प्यार खाँ बचपन में एक बार सड़क पर

इन मिले जुले नामों पर जरा गौर करने की जरूरत है. हमें इन घरानों में बहुत से नाम ऐसे मिलते हैं जो हिन्दुओं के भी हो सकते हैं और मुसलमानों के भी.

नया हند ہندستان کی کلچر اور سنگیت جولائی ۱۹۷۶

حظاً ان کی موجودگی کے بنا اور پھر سمجھا جاتا ہو. میں سمجھتا ہوں کہ اگر شاہ سارانگ کے رچے ہوئے ڈھریہ ڈھارا اور سادھوں کی لہریاں پھیلا جائیں تو اس دنیا کا جڑا بیکار ہوگا اور بھارت کھٹے اور راجا و نائب علی کی طرح دبیر خاں صاحب کا نام بھی امر ہو جائے گا.

شاہ سارانگ کے بعد بن کاظم کی دنیا میں سب سے مشہور ان کے پوتے جنوں شاہ اور ان کے رچیوں شاہ کے بچتے نزل شاہ ہوئے. ان کے بعد محمد زبیر خاں ہندستان کے مشہور بن کاہ ہوئے. ان کو گزرتے ہوئے زیادہ دن نہیں ہوئے. محمد زبیر خاں صاحب کوٹھے ہوئے لوگ ابھی زندہ ہیں. انھیں کے پوتے محمد زبیر خاں صاحب ہیں جو ابھی لوہار ہیں اور گلے میں 'سینی' سنگیت دوپایہ کے پرنسپل ہیں. ان کے بارے میں خاص طور سے کچھ کہنے کے لیے ہمیں ان کے اور شاہ سارانگ کے بیچ کے مشہور بین کاروں پر ایک نگاہ ڈال لینا چاہیے.

شاہ سارانگ کے دو بیٹے تھے—خیروز خاں اور بھوپت خاں کا. من رنگ خاں خیروز خاں کا خطاب تھا. ادا رنگ اور بھوپت خاں کا. من رنگ کوئی اکھیں 'سارانگ' بھی کہتے ہیں. ان میں سے خیروز خاں با اولاد رہے. بھوپت خاں کے دو لڑکے تھے جن کے نام تھے جنوں شاہ اور پیار خاں (انگلی کٹ). یہ دونوں ہی بہت چلنے پونے لگے ہوئے. ان میں سے پیار خاں یکین میں ایک بار کھلے یہ

ان کے بچا ناموں پر ذرا غور کرنے کی ضرورت ہو. انہیں ان گھرانوں میں بہت سے نام ایسے ملتے ہیں جو ہندوؤں کے بھی ہو سکتے ہیں اور مسلمانوں کے بھی.

गोली खेल रहे थे जब कि इनके दाहने हाथ की पहली उंगली (जो तंत्रकार की खास उंगली होती है जिसमें भिन्नराव पहन कर वीन या सितार बजाया जाता है) पर से रथ का पहिया निकल गया और वह उंगली कुछ दिन बाद अलग हो गई. यह बड़े होने तक वीन की तालीम से महरूम रहे, सिर्फ गायकी (धुरपद धमार व आलापचारा) की शिक्षा पाते रहे. इनके देखते देखते इनके भाई वीन की तालीम में पूरे हो चले जिससे यह बड़े दुखी रहने लगे. गाने की तालीम इनकी पूरी हो चुकी थी पर वीन न बजा सकने का इनको इतना सदमा हुआ कि गाने का रियाज भी इन्होंने छोड़ दिया. यह उदास मन से इधर उधर घूमा करते या घर के एक कोने में चुप चाप बैठे रहते. इनके बाप मनरंग और अद्वारंग दोनों को बड़ी चिंता हुई. दोनों ने इन्हें बुला कर पूछा कि तुमको किस बात का दुख है. इन्होंने आँसू भर कर कहा कि 'इतनी उमर वीन गढ़े और वीन की तालीम न मिल सकी, अब खिन्दा रह कर क्या करूँगा.' इस पर इनके बालिवद और अद्वारंग दोनों ने इन्हें बहुत तारस दिया और कहा कि अफसोस मत करो, हिन्दुस्तान में कोई वीनकार तुम्हारा सानो नहीं हो सकेगा. इसके बाद काठ की एक नकली उंगली जिसमें लोहे की लंबी भिन्नराव बँटाई हुई थी, इनके लिये बनवा कर इन्हें पहनाई गई. फिर क्या था. रागों की तालीम इन्हें हो ही चुकी थी. माल भर में ही यह वीन बजाने में साहिर हो गये, यहाँ तक कि इनके बड़े भाई जीवन शाह भी इनके सामने वीन पर हाथ न रखते थे, इन्होंने अपना रियाज बहुत बढ़ा लिया था. दिल्ली

गोली खेल रहे थे जब कि इनके दाहने हाथ की पहली उंगली (जो तंत्रकार की खास उंगली होती है जिसमें भिन्नराव पहन कर वीन या सितार बजाया जाता है) पर से रथ का पहिया निकल गया और वह उंगली कुछ दिन बाद अलग हो गई. यह बड़े होने तक वीन की तालीम से महरूम रहे, सिर्फ गायकी (धुरपद धमार व आलापचारा) की शिक्षा पाते रहे. इनके देखते देखते इनके भाई वीन की तालीम में पूरे हो चले जिससे यह बड़े दुखी रहने लगे. गाने की तालीम इनकी पूरी हो चुकी थी पर वीन न बजा सकने का इनको इतना सदमा हुआ कि गाने का रियाज भी इन्होंने छोड़ दिया. यह उदास मन से इधर उधर घूमा करते या घर के एक कोने में चुप चाप बैठे रहते. इनके बाप मनरंग और अद्वारंग दोनों को बड़ी चिंता हुई. दोनों ने इन्हें बुला कर पूछा कि तुमको किस बात का दुख है. इन्होंने आँसू भर कर कहा कि 'इतनी उमर वीन गढ़े और वीन की तालीम न मिल सकी, अब खिन्दा रह कर क्या करूँगा.' इस पर इनके बालिवद और अद्वारंग दोनों ने इन्हें बहुत तारस दिया और कहा कि अफसोस मत करो, हिन्दुस्तान में कोई वीनकार तुम्हारा सानो नहीं हो सकेगा. इसके बाद काठ की एक नकली उंगली जिसमें लोहे की लंबी भिन्नराव बँटाई हुई थी, इनके लिये बनवा कर इन्हें पहनाई गई. फिर क्या था. रागों की तालीम इन्हें हो ही चुकी थी. माल भर में ही यह वीन बजाने में साहिर हो गये, यहाँ तक कि इनके बड़े भाई जीवन शाह भी इनके सामने वीन पर हाथ न रखते थे, इन्होंने अपना रियाज बहुत बढ़ा लिया था. दिल्ली

نیا سنہ
پہنہ ستالی کچھ اور سنگیت
جلائی علیہ

دربار کے خاص ہیں کار بھی ہوئے۔ پر یہ چالیس برس کی عمر میں
ایسی گنہ گئے۔ ان کی موت کے بعد بیون خاں درباری بن کار
ہوئے اللہ انھیں "شاہ" کی پیدی ملی۔

محمد شاہ دیکھنے کے بعد دلی دربار کی شان بہت تیزی سے
گھٹنے لگی یہاں تک کہ عالم گنہ پر بیٹھے بیٹھے سخی بادشاہت صرف نام کی
شاہ عالم کے تخت پر بیٹھے۔ حالانکہ درباری گنہی کا نام اور وازہ دیکھنے
وہ گنہی۔ ایسی حالت میں درباری گنہی کا نام اور وازہ دیکھنے
کی ضرورت محسوس ہونے لگی۔ حالانکہ ابھی تک کسی گنہی کو جو اب
نہیں دیا گیا تھا، پر ہر خود کسی دوسری ریاست میں جانا چاہتے تھے
تج ان کو روکا بھی نہیں جاتا تھا۔

شاہ عالم کے بیٹے تک دلی دربار میں تان سین کے ڈرھیلیا
خاندان کے بیٹھے خاں مرہائے اور ان کے دو بھائی گیان خاں
جمیوں خاں بہت مشہور تھے۔ یہ لوگ دھریہ کا ایک تھے بڑے
کی گنہی پر اس وقت اکلے کرٹ اللہ بھیر ان کے بڑے بھائی
جمیوں شاہ تھے۔ یہ بھی پھونچے ہوئے گنہی تھے۔ دلی دربار میں
ایک ساتھ ایسے گنہیوں کا جواز شاید پہلے کبھی نہیں ہوا تھا۔
پر یہ بچنے والے چراغ کی آخری کو تھی۔ دلی دربار کی دیکھی پر
سرسوتی نے لادلوں کی یہ آخری بھینٹ تھی۔
ان کے بعد گنہیوں کی منڈلی تیز تر ہوئی۔ کچھ لوگ

لاہور تانے کی طرف ہندو لوگوں کی حزن میں غلے گئے اور کچھ لوگ
بنارس اور گنہی کی طرف چلے گئے۔ تان سین نے فائدہ ان کے ساتھ لیا
ان کے بعد میں اپنی دھاک سے اپنے سے ہی جس

گنہی، دیند
ہندوستانی کلاہر اور संगीत जुलाई سن १७

دربار کے खास चीनकार यही हुए. पर यह ४० बरस की उमर
में ही गुजर गए. इनकी मौत के बाद जीवन खां दरबारी चीनकार
हुए और उन्हें 'शाह' की पदवी मिली.

मुहम्मद शाह 'रंगीले' के बाद दिल्ली दरबार की शान बहुत
तेजी से घटने लगी यहाँ तक कि आलमगीर दूसरे के मरने के बाद
और शाह आलम के तख्त पर बैठते बैठते मुगल बादशाहत सिक
नाम की रह गई. ऐसी हालत में दरबारी गुनी कलावांतां को
दूसरा दरवाजा देखने की जरूरत महसूस होने लगी. हालांकि
अभी तक किसी गुनी को जवाब नहीं दिया गया था पर जो
किसी दूसरी रियासत में जाना चाहत थे उनको रोका भी नहीं
जाता था.

शाह आलम के पहले तक दिल्ली दरबार में तानसेन के दरियाली
खानदान के छत्र खां रवाबिये और उनके दो भाई खान खां, जीवन
खां बहुत मशहूर थे. यह लोग धुरपद गायक थे. चीनकार की
गद्दी पर उस बक़्त उंगलीकट और फिर उनके बड़े भाई जीवन
शाह थे. यह सभी पहुँचे हुए गुनी थे. दिल्ली दरबार में एक
साथ इतने गुनियों का जमाव षायद पहले कभी नहीं हुआ था.
पर यह बुझने वाले चिराग की आखिरी लौ थी. दिल्ली दरबार की
वेदी पर सरस्वती के लाडलों की यह आखिरी भेंट थी.

इनके बाद गुनियों की मंडली नितर नितर हो चली.
कुछ लोग राजपूताने की तरफ हिंदू राजाओं की शरत में चले गए
और कुछ पूरब बनारस और गया की तरफ चले गए. तानसेन के
खानदान के सिनारियों ने जयपुर में अपनी धाक पहले से ही जमा

کئی تھی۔ آلا بیوں اٹیہ ڈھیر بیوں کی قدر اور سے پور دربار نے کی جہاں ان ادم بیوں کے کھرانے سے لوگ اب تک ہیں۔ ضیا نے کچھ گوالیار اور کچھ بریلوں دربار میں ہم گئے۔ رہا بیوں کو کاشی نریش نے خاص طور سے شرم دی۔ بین کار کو آگے چل کر رام پور دربار میں عزت ملی۔ تان سین کے خاندان کے لوگ آگے چل کر دو بھائیوں میں بہت گئے۔ جو بنارس آگیا، بیتیا، ابودھیا وغیرہ بیویوں سے عام طور سے پورے کھلائے اس نام سے یہ آج تک مشہور ہیں۔ جو لاہور آئے، رام پور، گوالیار وغیرہ ریاستوں میں ایک گئے وہ پچھائیں، کھلاتے ہیں۔

جیہوئے نبات خاں اور نرمل شاہ۔ ان میں سے نرمل شاہ کی تسلیم لہری ہوا اور بین میں اکیوں نے نام پیدا کیا۔ ان کے خاں رس ہیں۔ بڑے لالے تھے اور بیوں ہی آوازوں کی طرح ادم گھوٹا کرتے تھے۔ کسی نے ایک بار ان کو طعنہ دیا کہ تم نے کچھ علم حاصل نہیں کیا۔ خود اتنے بڑے خاندان کا نام چلویا۔ بات ان کو یہ آگے گھر آئے۔ دن بھر کھانا نہیں کھایا۔ بات نے پوچھا کھانا کیوں نہیں کھایا؟ کیا کھانا چاہتے ہو؟ ان کی عادت تھی اکثر کسی خاص چیز کے لئے چیل جایا کرتے تھے، اور جب تک وہ نہ لے تے تے تک کوئی دوسری چیز نہ کھاتے تھے۔ بات سے اکیوں نے کہ پہلے وہ کوئی کھانا دیئے اور یہ بھی وہ لے کر لکھانے سے منع نہ کریں گے کہ بتاؤں گا۔ بات نے وہ لے کر لکھانے سے منع نہ کریں گے کہ بتاؤں گا۔ بات نے وہ لے کر لکھانے سے منع نہ کریں گے کہ بتاؤں گا۔

نیا ہند ہیندوستانیوں کلاچر اور سنیات جولاہ سن ۱۸۶
 رخی थी. आलापियों और धुराधियों की कदर उदयपुर दरबार ने की जहाँ इन के घराने के लोग अब तक हैं. ख्यालिये कुछ भालियर और कुछ रीवां दरबार में जम गये. रवायियों को काशी नरेश ने खास तीर से शरत दी. चीनकारों को आगे चल कर रामपुर दरबार में इज्जत मिली. तानसेन के खानदान के लोग आगे चल कर दो भागों में बँट गए. जो बनारस, गया, बेलिया अयोध्या वगैरा पहुँचे वह आमतौर से पुरविये कहलाए. इस नाम से यह आज तक मशहूर हैं. जो राजपूताना रामपुर, भालियर, वगैरा रियासतों में टिक गये वह पछाहीं कहलाते हैं.

जीवन शाह के दो बेटों के नाम थे रसचीन. खाँ चर्क और नवाल खाँ और निमल शाह. इन में से निमल शाह की तालीम पूरी हुई और चीन में इन्होंने नाम पैदा किया. इन के भाई रसचीन बड़े लाडले थे और यों ही आचारों की तरह इधर उधर बेकार घूमा करते थे. किसी ने एक चार इनको ताला दिया कि तुमने कुछ इलम हासिल न किया और इतने बड़े खानदान का नाम डूबोया. बात इनको लगा गई. घर आप. दिन भर खाला नहीं थाया. बाप ने पूछा खाना क्यों नहीं थाया ? क्या खाना चाहते हो ? इनकी आदत थी अक्सर किसी खास चीज के लिये मचल जाया करते थे और जब तक वह न मिले तब तक कोई दूसरी चीज नहीं खाते थे. बाप से उन्होंने कहा पहले वादा करो कि संगवा दंगे और यह भी वादा करो कि खाने से मना नहीं करोगे, तब बतारंगा. बाप ने वादा कर दिया तब इन्होंने ने कहा कि मुझे संखिया मगावा दो, मैं अभी खा कर मरूंगा

سب لوگ بڑے چکرائے۔ ماں نے ہنس کر پوچھا کہ کس دکھ سے یہ سنکھیا کھانے کی سوجھی۔ انھوں نے کہا تم نے ہمیں بین کیوں نہیں سنکھائی؟ یا تو تمہیں پھر میں مجھے بین سکھانا یا سنکھیا سننا دو۔ باب سنب اور پھر سنجیدہ ہو کر بوسے اٹھا لیئے پھر میں ہی مختصی بین بیان آٹھائے گی، پر شرط یہ ہو کر صبری محنت اسکی جائے اتنی کرنا پڑے گی۔ انھوں نے ٹرت باپ کے یہ پھر پھر قسم کھائی کہ ایسا ہی کریں گے۔ پھر کیا تھا۔ یہ دیکھے تھے جسے انگریزوں میں پیدا لٹی جینیسیں، ماہر پودوں کی کہتے ہیں، کہا جاتا ہے کہ ان کی سمجھ اور دماغ سے خود جیون شاہ پریشان رہتے تھے۔ دیکھتے ہی دیکھتے انھوں نے اسے خانانہ کے نسبت لوگوں کو کچھے چھوڑ دیا۔ چھوٹے نبات خانہ کی پیدی ان کو کتنوں کے اسی خطے میں دی گئی جس میں ایک ماہر ان کو طعنہ دیا گیا تھا اور جس کی وجہ سے یہ سنکھیا کھانے پر آمادہ ہوئے تھے۔ یہ ایک سالانہ جلسہ ہوا کرتا تھا جس میں صرف کئی لوگ ہی بھاگ لیا کرتے تھے۔ ان کے بارے میں پینٹت شدہ شہادت اپنی مشہور کتاب میں لیں گئے ہیں۔

”میسری سنگھ جی (نبات خانہ) کے دنوں میں انت میں رس بین خانہ جی بھاری بین کار ہوئے۔ لوگ ان کو دوسرے نبات خانہ جی کہتے تھے یہ پرہیزگار (شروع میں) ایسے ہی پھل کرتے تھے۔ ایک دن ایک ساج میں نلاد (اسے صوفی) آکر سٹا سے کھانے کو سنکھیا مانگا۔ سٹا نے بہت سمجھایا، کہا کہ سنکھیا کھانے کی کوئی ضرورت نہیں، پر لیسٹرم (مخف) آ کر پھو میں تمہے بین بچا دیں گے۔ ایسا ہی کیا پھر تو یہ بتانے کے اور تیسری (انتی) استاد ہو گئے۔“

نظامِ دیندر • ہندوستانیوں کی کلاچر اور سرگیت

نیا سرند

نیرمال شاہ اور رسوون خانوں ہی بھوت بڑے گونہ بے .

ہم دن دنوں کو اس خانان کے آخیری بڑے گونہ کھ سکتے

ہے . دنوں بھاریوں میں کون بھاریا گونہ یا بھ کھنا کھین ہے . نیرمال

شاہ وین کے آخاری اور پندیت بے تو رسوون خانوں ایک مالیک

کلاکار . دن کے ہاٹھ میں بھ کھرتی میناس ہسی اور جو اس

خانان میں کھرتی کو نہیں مینا . کھ کر کھلتے بے . بھر

نیرمال شاہ کو بھاریوں واریوں پر کمال ہاسیل یا پر ہاٹھ

میں بھ رس نہیں یا جو بھوتے نوان خانوں میں یا . بھوتے نوان

خانوں کو تو لوگ مینا کھ کا بھارتا ہی کھرتے بے . مہارہر یا

کی کھس دین سے وین شاہ (دن کے بھارت) نے دنکی تالیس

شور کو اس دین سے مینا کھ کی کھ دنوں ورتا بھارتے بھ .

بھر نیرمال شاہ کے بھارت کے دنوں میں رس اور میناس کے

بھارتی رانوں کو مہاری جانکاری اور ہر دنوں کے ریاچر کا ہی

پتا بھارتا بھارتا یا . دن کے کھس میں تاکت اور دن کے ساٹھ

ہی دنکی بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا

بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا

بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا

بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا

بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا

بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا

بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا

بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا بھارتا

زل شاہ اور رسوون خانوں ہی بھوت بڑے گونہ کھ سکتے . ہم

ان دنوں کو اس خانان کے آخیری بڑے گونہ کھ سکتے ہیں . دنوں

بھاریوں میں کون زیادہ کھ سکتے ہیں . زل شاہ بن کے

آخاری اور بھارت کھ تو رسوون خانوں ایک مالیک کلاکار . ان کے

بھارت میں کھ قدرتی میناس ایسی ہی جو اس خانان میں کسی کو

نہیں ملی . کھ کر میناس کھتے . اور بھارت کو بھارتوں مانی پر کمال

سائل کھتا . پر بھارت میں وہ رس نہیں کھتا جو بھارتی بھارت خانوں

میں کھتا . بھارتی بھارت کو تو لوگ مہری سنگھ کا اوتار ہی کھتے

کھتے . مشہور کھتا کہ جس دن سے جھون شاہ ران کے والد نے ان

کی تعلیم شروع کی اس دن سے مہری سنگھ کی میناس ان میں اتر

نے آئی تھی . اور بھارتی شاہ کے لئے بھارت کے ڈھنگ میں رس

اور میناس کے بھارتی بھارت کی گہری بھارت کاری اور مہر درجے کے

بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی

بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی

بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی

بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی

بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی

بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی

بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی

بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی

بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی

بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی بھارتی

جیادہ عالیما دینے کا ماہرا ننامں یا۔ یاد ویادان نامں اذانہ نامں سب سے زیادہ فیاض تھے۔ سینی گھرانے میں یہ رواج طار آیا ہر کہ یہ اپنی اولاد کے سلا کسی بہر کسی کو اپنی خاندان ودیا نہیں سکھاتے اور سکھاتے بھی تھے تو ادھر ادھر کی چیزیں جیسے خیال ابا ستار ڈھیر پابین اور کسی کو نہیں سکھاتے تھے۔ نزل شاہ علیہ ام شاد تھے جھول سنے اپنے گھرانے سے باہر کے کچھ لوگوں کو بیٹھے دل سے اپنے گھری ودیا سکھائی۔ تجربہ یہ ہوا کہ ایسے گھرانے علی جو تان سین کی اولاد نہ ہوتے ہوئے بھی علم سے سینوں سے آئے نکل گئے۔ اس کا جس سب سے علی نزل شاہ کو ہی سے لے لے ان کے ادھر پوری گھرانے میں مشہور مشرف خاں کے بزرگ ہوسے۔ ان کے سب سے بڑے ڈھیر پوری اندر آئیے اولیے پور کے رہیندیے خاں اور ان کے بیٹے نصیر الدین خاں ہوسے۔ یہ دونوں کھنوں کی ۱۶۳۱ء والی آل انڈیا میوزک کانفرنس میں شریک ہوئے تھے اور رکا رکا ۱۲۰۰ چھ گھنٹے تک ان کا آلاب ہی ططا رہا۔ اس کانفرنس کو روپ دیا تھا لرام پور کے پرنس سعد علی خاں عرف چھین صاحب اینڈرسن بھارت کھنڈے اور اربا نواب علی صاحب نے ہر ایک ٹر کی سرتوں کا کام کھنوں نے دکھایا جو شاید اب کوئی بھی نہیں کر پاتا۔

ال رہندے صاحب کے بیٹے نصیر الدین خاں صاحب یہاں ال آباد کی دو تین شروع کی کانفرنسوں میں شریک ہو چکے ہیں۔ وہ سچو ڈاکٹر رنجیت سنگھ صاحب کے یہاں کھولے تھے جو ان کے خاص دوست تھے۔ انھوں نے کئی رات کے ۱۱ بجے سے صبح ۶ بجے تک ایک ایک آسن سے میوزک لایج کے وجے بحرم ہال میں آلاب سنایا اور جسے سننے کا

نیا ہند ۲۷
 ہندوستان کے لکھنے والے کو بھی ہوا ہے۔ یہ سب صاحب
 نے ان کو سنگیت رتن کی پردی دی تھی جس کو یہ فتح کے ساتھ اپنے
 نام کے ساتھ جوڑتے تھے۔ ان کا بیٹا داؤد ان کی پردی دھیرے
 باہن کی راہجوئوں کی طرح ہوتی تھی اور راہجوئوں کی طرح یہ راہجوئی جھاکر
 اندر آتے تھے۔ یہ سب صاحب کے بچے پر صبح جا گھنٹے روز
 وقت نیم گھنٹے سے راتوں کرتے تھے۔ یہ آری سنگیت سمی کے لیے
 برابر کی طرف ڈاکٹر تارا چند صاحب ڈیجیٹر صاحب کی کوشش سے
 اسی ڈاکٹر ڈوی۔ آر۔ کھنجا صاحب کی دیکھ دیکھ میں یونیورسٹی میوزک
 ایسوسی ایشن اور اسی یونیورسٹی میوزک کالگریس کی کھایا ہوئی جس
 میں نصیر الدین صاحب شریک تھے۔ اس صوبے میں اور خاص کر آل
 انڈیا میں سنگیت کے پرچار کی شروعات یہ سب صاحب سے ہی ہوئی۔
 جس میں ڈاکٹر تارا چند صاحب اور ڈاکٹر ڈوی۔ آر۔ کھنجا صاحب نے
 خاص طور سے ہاتھ بٹایا۔ اگر بندے خاں صاحب کے کھبے کی
 ڈاکٹر الدین خاں صاحب تھے۔ یہ دونوں عام طور سے ساتھ ساتھ
 بیٹھ کر کرتے تھے۔ دونوں میں کون بڑھ کر کھاتے کھاتے کہنا مکن نہیں۔
 مشہور خیالے شکل کھن خاں نزل شاہ کے شاگرد تھے۔ پچھلی صدی
 کے سب سے بڑے بین کار بندے علی خاں ان کے خیالی ششہ پر ہم پر
 (پچھلوں کی نسل) میں پیدا ہوئے تھے۔ مراد خاں سرود نے بھی اسی پر ہم پر
 میں تھے جن کے گھرانے کے سرود لازم حفظ علی خاں صاحب آج
 ہندستان کے سب سے بڑے سرود نے ہیں۔ ہندوستان کے سب سے
 بڑے ستارے بھی اسپاد ایلاد خاں صاحب بھی اسی پر ہم پر
 نے ہوئے تھے۔ ان کے بیٹے منایت خاں اسی پر ہم پر

نیا ہند ۲۷
 ہندوستان کی کچھ اصلاحات
 ۲۷

نیا ہند ۲۷
 ہندوستان کے لکھنے والے کو بھی ہوا ہے۔ یہ سب صاحب
 نے ان کو سنگیت رتن کی پردی دی تھی جس کو یہ فتح کے ساتھ اپنے
 نام کے ساتھ جوڑتے تھے۔ ان کا بیٹا داؤد ان کی پردی دھیرے
 باہن کی راہجوئوں کی طرح ہوتی تھی اور راہجوئوں کی طرح یہ راہجوئی جھاکر
 اندر آتے تھے۔ یہ سب صاحب کے بچے پر صبح جا گھنٹے روز
 وقت نیم گھنٹے سے راتوں کرتے تھے۔ یہ آری سنگیت سمی کے لیے
 برابر کی طرف ڈاکٹر تارا چند صاحب ڈیجیٹر صاحب کی کوشش سے
 اسی ڈاکٹر ڈوی۔ آر۔ کھنجا صاحب کی دیکھ دیکھ میں یونیورسٹی میوزک
 ایسوسی ایشن اور اسی یونیورسٹی میوزک کالگریس کی کھایا ہوئی جس
 میں نصیر الدین صاحب شریک تھے۔ اس صوبے میں اور خاص کر آل
 انڈیا میں سنگیت کے پرچار کی شروعات یہ سب صاحب سے ہی ہوئی۔
 جس میں ڈاکٹر تارا چند صاحب اور ڈاکٹر ڈوی۔ آر۔ کھنجا صاحب نے
 خاص طور سے ہاتھ بٹایا۔ اگر بندے خاں صاحب کے کھبے کی
 ڈاکٹر الدین خاں صاحب تھے۔ یہ دونوں عام طور سے ساتھ ساتھ
 بیٹھ کر کرتے تھے۔ دونوں میں کون بڑھ کر کھاتے کھاتے کہنا مکن نہیں۔
 مشہور خیالے شکل کھن خاں نزل شاہ کے شاگرد تھے۔ پچھلی صدی
 کے سب سے بڑے بین کار بندے علی خاں ان کے خیالی ششہ پر ہم پر
 (پچھلوں کی نسل) میں پیدا ہوئے تھے۔ مراد خاں سرود نے بھی اسی پر ہم پر
 میں تھے جن کے گھرانے کے سرود لازم حفظ علی خاں صاحب آج
 ہندستان کے سب سے بڑے سرود نے ہیں۔ ہندوستان کے سب سے
 بڑے ستارے بھی اسپاد ایلاد خاں صاحب بھی اسی پر ہم پر
 نے ہوئے تھے۔ ان کے بیٹے منایت خاں اسی پر ہم پر

نظاما ہندو ہندوستانی کلاچر اور संगीत जुलाहे सन '४७

उमराव खां के दो बेटे थे अमीर खां और रहीम खां इनमें से अमीर खां ज्यादा मशहूर हुए. इन्होंने भी कई अच्छे शागिर्द तय्यार किये जिनमें से बलारस के मिठाईलाल और मिर्जापुर के पं० जोखुराम का नाम खास तौर से लिया जा सकता है.

अमीर खां साहब से ज्यादा मशहूर हुए इनके लड़के और उमराव खां के पोते बजीर खां साहब जो नवाब रामपुर के गुरु थे. रामपुर में पहले इनके बालिद अमीर खां गये. उस वक्त नवाब कल्पे अली खां के गुरु बहादुर सेन वहाँ पहले से मौजूद थे और उनके ईस्लाद भी थे. बहादुर सेन धुरपदी और रवाबी थे और हिन्दुस्तान में उस वक्त वह सब के ऊपर माने जाते थे. यह तानसेन के पुत्र बंस में थे. नवाब रामपुर की दिली मनशा थी कि दिल्ली दरबार की तरह उनके दरबार में देश के सबसे बड़े बड़े गुनी मौजूद हों. एक हद तक उनकी यह मनशा पूरी भी हुई. अमीर खां चीनकार और बहादुर सेन धुरपदी व रवाबी के सिवा उनके दरबार में बासर-अली खां ख्यालिये भी थे.

अमीर खां के इतकाल के वक्त हैदर अली खां साहब रामपुर के नवाब थे. अमीर खां ने नौजवान बजीर खां को इन्हीं के हाथ सौंपा.

बजीर खां इस जुग की एक बहुत बड़ी हस्ती थे. स्वर्गीय पंडित भातखंडे और राजा नवाब अली के यह गुरु थे. इनके बारे में हम अगले नम्वर में कुछ बतायेंगे.

جلالی علی

ہندستان کی اور سنگیت

نیا ہند

امراؤ خاں کے دو بیٹے تھے امیر خاں اور رحیم خاں ان میں سے امیر خاں زیادہ مشہور ہوئے. انہوں نے بھی کئی اچھے شاگرد تیار کئے جن میں سے بنارس کے جلالی لال اور مرزا پور کے پندت جو کھولرام کا نام خاص طور سے لیا جا سکتا ہے.

امیر خاں صاحب سے زیادہ مشہور ہوئے ان کے لڑکے اور امراؤ علی کے پوتے وزیر خاں صاحب جو نواب لامپور کے گرو تھے۔ لامپور میں پہلے ان کے والد امیر خاں گئے. اس وقت نواب گلپ علی خاں کے گرو بہادر سین وہاں پہلے سے موجود تھے اور ان کے اُستاد بھی تھے. بہادر سین دھرمپوری اور ربابی تھے اور ہندستان میں اس وقت وہ سب کے اوپر مانے جاتے تھے. یہ تان سین کے پتر نہیں میں تھے. نواب لامپور کی دلی نشا گنجی کر دلی دربار کی طرح ان کے دربار میں دلش سے سب سے بڑے بڑے گنجی موجود ہوں. ایک حد تک ان کی یہ نشا گنجی بھی ہوئی. امیر خاں بن کار اور جھان سین دھرمپوری و ربابی کے سزا آن کے دہیار میں باصر علی خاں خیالے بھی تھے.

امیر خاں کے انتقال کے وقت حید علی خاں صاحب لامپور کے نواب تھے. امیر خاں نے نوحوان وزیر خاں کو انہیں کے اُستاد سونپا. وزیر خاں اس جگہ کی ایک بہت بڑی آستی تھے۔ مورگہ پندت بھات کھنڈے اور راجا نواب علی کے شاگرد تھے. ان کے بابے میں ہم اگلے نمبر میں کچھ بتائیں گے.

آج کی دنیا

(آئی . پبلیکیشنز)

♣️ ماونڈنڈنڈن کے کیمبلے کو نوتاآؤں کا منامانے آخیتیار
 سے مان لےنا آؤر گونروں کا نام پر آملل کرانا

♣️ نیتیشا ہندیا کی ہکمبوں سے آجیاد مگر
 ورتنیا کے آرمین

♣️ سونوں کے بڈوارے میں ڈرمبوں کے آؤن

♣️ ہادسراہ کے کیمبلے سے سونو برونو لڈاڈ کا ہونا

♣️ ہراماونڈسی (آلالا-آخیتیار) کے باپسی کے آملل

♣️ ڈیڈ رنے میں آؤنروں کی چال

♣️ ماونڈنڈن کا کیمبلے

لادڈ ماونڈنڈن نے ۷ جن کو بڈوٹ سی آؤر باتوں کے ساہ
 یڈ بھی کڈا— سونمبلن ڈے ڈے ہمکو ناہ پر ڈیڈا کر سمبلنڈر
 میں ڈکا ڈے دیا ڈاڈ۔ آؤنروں آکسوں کے لڈال میں ہند
 ڈیڈوں کا یڈی ماتلہہ ڈے۔ جناب ہادسراہ نے ڈس تانے
 سے آؤ ہمار ڈاہ پر نامک ڈیڈکا ڈے ڈس کے ہم کڈوں تک
 ہڈنڈر ڈے ڈس ڈال کی آؤن ہم نونے لیلڈی ڈیڈ باتوں پر ڈیڈار
 کر کے کڈوں— (۷) رانڈکارڈ (۲) ماری (۳) کڈی (۷)
 ہندسٹان کے رانڈ مڈر رانڈ آؤر ہندسٹان کا ڈر سونوں
 سے ناہیڈ

آج کی دنیا

(آئی . پبلیکیشنز)

♣️ لادڈ مڈنڈنڈن کے کیمبلے کو نوتاآؤں کا منامانے آخیتیار
 سے مان لےنا آؤر گونروں کا نام پر آملل کرانا

♣️ نیتیشا ہندیا کی ہکمبوں سے آجیاد مگر
 ورتنیا کے آرمین

♣️ سونوں کے بڈوارے میں ڈرمبوں کے آؤن

♣️ ہادسراہ کے کیمبلے سے سونو برونو لڈاڈ کا ہونا

♣️ ہراماونڈسی (آلالا-آخیتیار) کے باپسی کے آملل

♣️ ڈیڈ رنے میں آؤنروں کی چال

♣️ ماونڈنڈن کا کیمبلے

لادڈ ماونڈنڈن نے ۷ جن کو بڈوٹ سی آؤر باتوں کے ساہ
 یڈ بھی کڈا— سونمبلن ڈے ڈے ہمکو ناہ پر ڈیڈا کر سمبلنڈر
 میں ڈکا ڈے دیا ڈاڈ۔ آؤنروں آکسوں کے لڈال میں ہند
 ڈیڈوں کا یڈی ماتلہہ ڈے۔ جناب ہادسراہ نے ڈس تانے
 سے آؤ ہمار ڈاہ پر نامک ڈیڈکا ڈے ڈس کے ہم کڈوں تک
 ہڈنڈر ڈے ڈس ڈال کی آؤن ہم نونے لیلڈی ڈیڈ باتوں پر ڈیڈار
 کر کے کڈوں— (۷) رانڈکارڈ (۲) ماری (۳) کڈی (۷)
 ہندسٹان کے رانڈ مڈر رانڈ آؤر ہندسٹان کا ڈر سونوں
 سے ناہیڈ

انگریزی سامراجی تعمیریوں پر ایک نظر

بھارت کو آگے بڑھانے کے لیے انگریزی سامراج کے ہندوستانی مددگاروں کو گھبراہٹ اور ایک کی بے شکلی حالتوں کو سمجھنا مشکل ہے۔ ظاہر میں مسلم لیگ نے تو ایمان طاری سے ہندوستان کے لیے کام کیا ہے۔

پر اس سے جو فطرت پیدا ہو گئی ہے اسے بہت کم لوگ سمجھتے ہیں۔

دوسری طرف کانگریس کے لیڈروں نے آل انڈیا کانگریس کمیٹی کی اجازت بنا اور بھارت کی رائے کو بوجھ نہیں دیا اس کو مان لیا اور اب کہتے ہیں کہ اس سے آزادی حاصل ہوگی اور ہندوستان آگے بڑھتا ہوگا! یہ عجیب بات ہے۔

پچھلی فروری کے ہڈس آف لارڈس کے ایک خطے میں ابڑاٹھ کے سرکار کے بیان میں ہندوستان کے لئے منفرد 'آزادی' (آزادی) خطے کے استعمال پر کئی ترقی دہائیوں کی طرف سے اس کے استعمال کی طرف میں گہری بحث کی طرف سے یہ کہا گیا تھا کہ 'فریڈم' لفظ کا استعمال جواب دہانہ نہیں ہے۔ (فریڈم) کی جگہ زیادہ کھینک سمجھا گیا اور لفظ 'ہندوستان' کو بہت حد تک آزادی دینی ہے۔

یہ کہ بادشاہ کی سرکار ہندوستان کو بہت حد تک آزادی دینی ہے۔ اس کا مطلب صاف ہے۔ ایک نئے کو 'جو ایک چھوٹی سی زمین میں بندھا ہے' نہ تو آزادی ہی حاصل ہوتی ہے اور نہ خود مختاری۔ یہ جس کے بارے میں یہ کہا جاسکتا ہے اس سے باندھ دیا گیا ہو اس کے بارے میں یہ کہا جاسکتا ہے کہ اس کو بڑی حد تک آزادی حاصل ہے، مگر یہ نہیں

انگریزی سامراجی تعمیریوں پر، جو سچے سچ ہمارے خیالات ہیں، بھروسہ کرنا آسان ہے۔ ہندوستانی سامراج کے ہندوستانی مددگاروں (کانگریس اور لیگ) کی بے شکلی حالتوں کو سمجھنا مشکل ہے۔ ظاہر میں مسلم لیگ نے تو ایمان طاری سے ہندوستان کے لیے کام کیا ہے۔

پر اس سے جو فطرت پیدا ہو گئی ہے اسے بہت کم لوگ سمجھتے ہیں۔

دوسری طرف کانگریس کے لیڈروں نے آل انڈیا کانگریس کمیٹی کی اجازت بنا اور بھارت کی رائے کو بوجھ نہیں دیا اس کو مان لیا اور اب کہتے ہیں کہ اس سے آزادی حاصل ہوگی اور ہندوستان آگے بڑھتا ہوگا! یہ عجیب بات ہے۔

پچھلی فروری کے ہڈس آف لارڈس کے ایک خطے میں، بادشاہ کی سرکار کے بیان میں ہندوستان کے لیے 'پریڈم' (آزادی) لفظ کے استعمال پر کئی ترقی دہائیوں کی طرف سے اس کے استعمال کی طرف میں گہری بحث کی طرف سے یہ کہا گیا تھا کہ 'فریڈم' لفظ کا استعمال جواب دہانہ نہیں ہے۔ (فریڈم) کی جگہ زیادہ کھینک سمجھا گیا اور لفظ 'ہندوستان' کو بہت حد تک آزادی دینی ہے۔

یہ کہ بادشاہ کی سرکار ہندوستان کو بہت حد تک آزادی دینی ہے۔ اس کا مطلب صاف ہے۔ ایک نئے کو 'جو ایک چھوٹی سی زمین میں بندھا ہے' نہ تو آزادی ہی حاصل ہوتی ہے اور نہ خود مختاری۔ یہ جس کے بارے میں یہ کہا جاسکتا ہے اس سے باندھ دیا گیا ہو اس کے بارے میں یہ کہا جاسکتا ہے کہ اس کو بڑی حد تک آزادی حاصل ہے، مگر یہ نہیں

کہا جا سکتا ہے کہ وہ خود مختار ہو۔ بادشاہ کی سرکار نے اب ہند کا جوا کر دیا ہے اور دونوں حصوں کو دو پٹنیں اسٹیٹس کی شکل میں کافی آزادی دے دی ہے اور اگر دائرہ ریڈیشن کسی کو نہیں دی ہے۔ اس بات پر زور دینے کے بعد لارڈ ماونٹ بیٹن کے فیصلے سے ہندوستان کو انڈیپنڈنٹس راجد مختاری حاصل ہوئی ہے اور اس سے ایسا بھی ہو سکتا ہے، لاگتوں سے پیدا شدہ خرچہ تو بردے کے لئے آئے ہیں اور گاندھی جی کو آگے کر دیا ہے۔ اس وقت تو گاندھی جی ہی انگریزوں اور کانگریسی نیشنل ڈولوں کی حمایت کر رہے ہیں۔ وہی ہندوں کو ہندوستان کے جوا کے لئے راضی کرنے کی کوشش کرتے ہیں، ہنگام اور نجات کے لئے ہندو اور کچھ حصوں کو راضی رکھنا چاہئے ہیں جنھوں نے پہلے تو کانگریس ہدایت سے معمولوں کے جوا کے اصول کو ماننا نہیں کیا اب وہ پاکستان کو مالدار اور مضبوط بنانے کے لئے

کوشش میں ہیں اور کئی شامل کے خارجے ہیں۔
پہلے کانگریسیوں سے متویا جانا۔
سرحد کو سرحد نری ہیں نے ہاؤس آف کامنڈ میں پوجھا
کہ اگر ہندوستان کی پارٹیاں آئیں تو اس سے پیدا ہونے والی
حالات کے لئے زیادہ میل ہو گیا تو اس سے پرکھتے ہوئے
ایسی نے جواب دیا کہ سیکریٹ جیال میں یہ سوچنا بہت خطر
کی بات ہوگی۔ ہاؤس آف کامنڈ میں شہدوں کی سوال پوچھنے والے کا مطلب

پاکستان کا سبھیوں سے مننا جانا۔

ہندوستان کا سبھیوں سے مننا جانا۔
ہندوستان کا سبھیوں سے مننا جانا۔
ہندوستان کا سبھیوں سے مننا جانا۔

کھانا جا سکتا ہے کہ وہ خود مختار ہے۔ بادشاہ کی سرکار نے اب ہند کا جوا کر دیا ہے اور دونوں حصوں کو دو پٹنیں اسٹیٹس کی شکل میں کافی آزادی دے دی ہے اور اگر دائرہ ریڈیشن کسی کو نہیں دی ہے۔ اس بات پر زور دینے کے بعد لارڈ ماونٹ بیٹن کے فیصلے سے ہندوستان کو انڈیپنڈنٹس راجد مختاری حاصل ہوئی ہے اور اس سے ایسا بھی ہو سکتا ہے، لاگتوں سے پیدا شدہ خرچہ تو بردے کے لئے آئے ہیں اور گاندھی جی کو آگے کر دیا ہے۔ اس وقت تو گاندھی جی ہی انگریزوں اور کانگریسی نیشنل ڈولوں کی حمایت کر رہے ہیں۔ وہی ہندوں کو ہندوستان کے جوا کے لئے راضی کرنے کی کوشش کرتے ہیں، ہنگام اور نجات کے لئے ہندو اور کچھ حصوں کو راضی رکھنا چاہئے ہیں جنھوں نے پہلے تو کانگریس ہدایت سے معمولوں کے جوا کے اصول کو ماننا نہیں کیا اب وہ پاکستان کو مالدار اور مضبوط بنانے کے لئے

یہ تھا کہ اگر ہندوستانی پارٹیاں انگریزی سامراج کے خلاف
 لی جائیں تو ان کے لئے کامیاب انتظام کیا گیا ہو۔ دلی کے بیان
 کے مطابق، انڈیا میں کے فیصل سے ہندوستانیوں کا ایک ناکہ اور
 کیا اس صورت کے کہ جب وہاں کوئی انقلاب ہو جائے۔ کانگریس اور
 ایک کہ ہندوستان کے بچاؤ کے ذریعے طاقت میں تھوڑا سا حصہ
 دینا، جان بوجھ کر آزادی کے بہانے، جنتا کے دل میں انگریزی سامراج
 کی جڑ مضبوط کرنا اور

پنڈت نہرو، سردار پٹیل اور آجیا رے کرپالی نے والیس رائے کا فیصلہ
 بنائے انڈیا کانگریس کمیٹی کی اجازت کے مان لیا۔ اس کے بعد
 جون کو آل انڈیا کانگریس کمیٹی سے اس فیصلے کی منظوری
 لینا یہ ظاہر کرتا ہے کہ آل انڈیا کانگریس کمیٹی جنتا نیشنل
 کی اعلیٰ پر توجہ رہی۔ اگر آل انڈیا کانگریس کمیٹی اپنے مانے ہوئے
 اصول پر ہی قائم رہتی اور نہرو، پٹیل اور کرپالی کے خلاف بھی
 ہوجاتی تب بھی کوئی فائدہ نہ ہوتا۔ کیونکہ نیشنل نے اور برٹش
 گورنمنٹ نے، جس کے فائدے کے لئے یہ کارروائی کی گئی، اس کے
 انڈیا میں کے فیصلے کی کامیابی میں کسی قسم کے درود کو سختی سے
 دبانے کا ارادہ کر لیا تھا۔

یونین کانگریس جمیٹیشن ڈیٹا فلک اور پریزنٹیشن کانگریس
 کمیٹی کے ایک بے محلے محلے میں، جو نئی دہلی میں
 اور جون کو ہوا تھا، یہ طے ہوا کہ صوبائی گورنمنٹ کو یہ
 اختیار دیا جائے کہ برٹش کے بھیتر ہونے والے ایسے بلوں کو

یہ تھا کہ اگر ہندوستانی پارٹیاں انگریزی سامراج کے خلاف
 لی جائیں تو ان کے لئے کامیاب انتظام کیا گیا ہو۔ دلی کے بیان
 کے مطابق، انڈیا میں کے فیصلے سے ہندوستانیوں کا ایک ناکہ اور
 کیا اس صورت کے کہ جب وہاں کوئی انقلاب ہو جائے۔ کانگریس اور
 ایک کہ ہندوستان کے بچاؤ کے ذریعے طاقت میں تھوڑا سا حصہ
 دینا، جان بوجھ کر آزادی کے بہانے، جنتا کے دل میں انگریزی سامراج
 کی جڑ مضبوط کرنا اور

پنڈت نہرو، سردار پٹیل اور آجیا رے کرپالی نے والیس رائے کا فیصلہ
 بنائے انڈیا کانگریس کمیٹی کی اجازت کے مان لیا۔ اس کے بعد
 جون کو آل انڈیا کانگریس کمیٹی سے اس فیصلے کی منظوری
 لینا یہ ظاہر کرتا ہے کہ آل انڈیا کانگریس کمیٹی جنتا نیشنل
 کی اعلیٰ پر توجہ رہی۔ اگر آل انڈیا کانگریس کمیٹی اپنے مانے ہوئے
 اصول پر ہی قائم رہتی اور نہرو، پٹیل اور کرپالی کے خلاف بھی
 ہوجاتی تب بھی کوئی فائدہ نہ ہوتا۔ کیونکہ نیشنل نے اور برٹش
 گورنمنٹ نے، جس کے فائدے کے لئے یہ کارروائی کی گئی، اس کے
 انڈیا میں کے فیصلے کی کامیابی میں کسی قسم کے درود کو سختی سے
 دبانے کا ارادہ کر لیا تھا۔

یونین کانگریس جمیٹیشن ڈیٹا فلک اور پریزنٹیشن کانگریس
 کمیٹی کے ایک بے محلے محلے میں، جو نئی دہلی میں
 اور جون کو ہوا تھا، یہ طے ہوا کہ صوبائی گورنمنٹ کو یہ
 اختیار دیا جائے کہ برٹش کے بھیتر ہونے والے ایسے بلوں کو

ہونے کے لئے مناسب کارروائی کریں جن سے ان کے اپنے صوبے کے
 کاظمی یونٹس کے ٹوٹ جانے کا ڈر ہو۔ صوبائی گورنرمنٹ کو یہ اختیار
 لارڈ ماؤنٹ بیٹن کے فیصلے پر عمل کرانے کے لئے ہو۔ ان خاص
 اختیارات سے کام لینے کے لئے صوبائی گورنر سیدھے منسٹرل
 پریسیڈنٹ کے ہی ماتحت ہوں گے۔ اس مسئلے میں صوبائی وزیروں
 کی کون کئے، ہندستان یا پاکستان کے بڑے وزیروں تک کا کوئی
 اختیار نہ ہوگا۔ کیسی اچھی آزادی ہندستان میں کی گون پر لادی جا رہی ہے
 منبر، چیل اور گران کو آل انڈیا کانگریس کمیٹی سے کسی ایسے
 فیصلے کو مان لینے کا کوئی اختیار نہیں ملا تھا جس سے ہندستان کے
 بکھڑے ہوتے ہوں۔ یہ ان نیتوں کے اس فیصلے کو مانتے ہی اور
 آل انڈیا کانگریس کمیٹی کی منظوری سے جتنے ہی فیصلے پر تیزی سے
 عمل شروع ہو گیا۔ ۱۵ اگست تک تمام کارروائی پوری ہو جانے کی
 تاریخ مقرر کر دی گئی، اب ریفرنڈم سے ایسا معلوم ہوتا ہے کہ ۱۵ اگست
 تک ہندستان اور پاکستان کو دو مینٹین اسٹیٹس نہ ملے گا بلکہ
 اس کے بعد کہیں اس وقت ملے گا جب بادشاہ کی سرکار ہندستان
 فوٹوں کے بارے میں اپنی پالیسی طے کرے گی۔

اس وقت تو بادشاہ کی سرکار کی منشا ایسی معلوم ہوتی ہے کہ
 تمام فوجیں تو پاکستان کو دے دی جائیں اور برطانوی کا تمام
 سامان ہندستان کو دے دیا جائے اور اگر کانگریس اس
 بات پر راضی نہ ہو تو دو مینٹین اسٹیٹس نہ دے کر ساری فوج
 انگریزوں کے ماتحت میں رکھی جائے۔ اس سب کا نتیجہ یہ ہوگا کہ

نیاں ہند
 آج کی دنیا
 جلال علی

ہونے کے لئے مناسب کارروائی کریں جن سے ان کے اپنے صوبے کے
 کاظمی یونٹس کے ٹوٹ جانے کا ڈر ہو۔ صوبائی گورنرمنٹ کو یہ اختیار
 لارڈ ماؤنٹ بیٹن کے فیصلے پر عمل کرانے کے لئے ہو۔ ان خاص
 اختیارات سے کام لینے کے لئے صوبائی گورنر سیدھے منسٹرل
 پریسیڈنٹ کے ہی ماتحت ہوں گے۔ اس مسئلے میں صوبائی وزیروں
 کی کون کئے، ہندستان یا پاکستان کے بڑے وزیروں تک کا کوئی
 اختیار نہ ہوگا۔ کیسی اچھی آزادی ہندستان میں کی گون پر لادی جا رہی ہے
 منبر، چیل اور گران کو آل انڈیا کانگریس کمیٹی سے کسی ایسے
 فیصلے کو مان لینے کا کوئی اختیار نہیں ملا تھا جس سے ہندستان کے
 بکھڑے ہوتے ہوں۔ یہ ان نیتوں کے اس فیصلے کو مانتے ہی اور
 آل انڈیا کانگریس کمیٹی کی منظوری سے جتنے ہی فیصلے پر تیزی سے
 عمل شروع ہو گیا۔ ۱۵ اگست تک تمام کارروائی پوری ہو جانے کی
 تاریخ مقرر کر دی گئی، اب ریفرنڈم سے ایسا معلوم ہوتا ہے کہ ۱۵ اگست
 تک ہندستان اور پاکستان کو دو مینٹین اسٹیٹس نہ ملے گا بلکہ
 اس کے بعد کہیں اس وقت ملے گا جب بادشاہ کی سرکار ہندستان
 فوٹوں کے بارے میں اپنی پالیسی طے کرے گی۔

اس وقت تو بادشاہ کی سرکار کی منشا ایسی معلوم ہوتی ہے کہ
 تمام فوجیں تو پاکستان کو دے دی جائیں اور برطانوی کا تمام
 سامان ہندستان کو دے دیا جائے اور اگر کانگریس اس
 بات پر راضی نہ ہو تو دو مینٹین اسٹیٹس نہ دے کر ساری فوج
 انگریزوں کے ماتحت میں رکھی جائے۔ اس سب کا نتیجہ یہ ہوگا کہ

نیاں ہند
 آج کی دنیا
 جلال علی

باد میں مائلانا بھول کلام آجناد نے کہا کہ کچھ دنوں پر توں رہویشن ایک دوسرے کے خلاف نہیں ہیں۔ اگر ان میں کچھ درد بھی مانا جائے تو جو تجویز ایڈیل میں پاس ہوئی ہو اس کے مقابلے جولائی والی تجویز کی پابندی ضروری ہوگی۔ جولائی کے مطالبے جولائی والی تجویز میں صاف طور سے بھڑارے کے سوال پر پھر سے دہرایا تجویز میں اور کانگریس والوں کے لئے اصول طے کر دئے گئے ہیں۔ ایسی حالت میں نہرو، پٹیل اور کرپانی نے صاف طور پر مانوسٹ میں کے فیصلے کو مان کر کانگریس کے اصولوں کے خلاف کیا ہے۔ لیکن ظاہر ہے کہ کانگریس کمیٹی کا ان کے کام کو منظور کر لینا اور بھی زیادہ اس لئے قائلہ ہے۔ اب انگریزی سامراج کی سبوتا کے لئے کانگریس کی سرکشی بالکل ظاہر ہے۔

9

میسٹر مکنڈ دےسائی نے، جو پہلے بھدے کانگریس بولتین کے پڑھتے تھے، پریس کو بھان دتے تھے۔ کہا—'کانگریس کانسٹیٹیوشن کی بھیکا میں پورے دےش کے لیتے پورا آجادی حاصل کرنے کو ہی کانگریس کا असूल बताया गया है. کانگریس کے بڑے नेताओं जैसे गांधी जी, पंडित जी या सरदार पटेल ने ब्रिटिश सरकार की मौजूदा चाल को बिना कांग्रेस के खुले इजलास की मंजूरी के मान कर कांग्रेस को धोका दिया है.'

میسٹر دےسائی آجادی کہتے ہیں کہ—'اس تدارک کو مانکر ہم پٹیشن میں آجاتے ہیں اور سرحدی صوبے کی مسائل میں اور پورب کی طرف براہیں انگریزی سامراج کے سیرھا

بعد میں مولانا ابوالکلام آزاد نے کہا کہ اوپر کے ہرے دونوں برزڈ لیبوشن ایک دوسرے کے خلاف نہیں ہیں۔ اگر ان میں کچھ درد بھی مانا جائے تو جو تجویز ایڈیل میں پاس ہوئی ہو اس کے مقابلے جولائی والی تجویز کی پابندی ضروری ہوگی۔ جولائی کے مطالبے جولائی والی تجویز میں صاف طور سے بھڑارے کے سوال پر پھر سے دہرایا تجویز میں اور کانگریس والوں کے لئے اصول طے کر دئے گئے ہیں۔ ایسی حالت میں نہرو، پٹیل اور کرپانی نے صاف طور پر مانوسٹ میں کے فیصلے کو مان کر کانگریس کے اصولوں کے خلاف کیا ہے۔ لیکن ظاہر ہے کہ کانگریس کمیٹی کا ان کے کام کو منظور کر لینا اور بھی زیادہ اس لئے قائلہ ہے۔ اب انگریزی سامراج کی سبوتا کے لئے کانگریس کی سرکشی بالکل ظاہر ہے۔

میسٹر دےسائی آجادی کہتے ہیں کہ—'اس تدارک کو مانکر ہم پٹیشن میں آجاتے ہیں اور سرحدی صوبے کی مسائل میں اور پورب کی طرف براہیں انگریزی سامراج کے سیرھا

دی کے اور بین کے صوبے یون کی جنتا کے سو ضلع
نیا گہند کو دھکا یعنی میں گئے۔

فیصلے کا پولیٹیکل پیپلو۔

اب تک ہم نے اس مسئلے کے حکم پہلو پر روشنی ڈالی ہو
مگر جہاں تک آؤٹ بین فیصلے کے پولیٹیکل پہلو کا تعلق ہے اس
سے اہم بات یہ ہے کہ اصل میں یہ فیصلہ ۱۹۳۱ء کی پلان
کے مطالبے میں کوئی نئی چیز نہیں ہے۔ کانگریس والے کہتے ہیں کہ
یہ فیصلہ ۱۹۲۱ء کی پلان سے بالکل الگ ہے۔ یہ بات ٹھیک
نہیں ہے۔ اس فیصلے کو ہوشیاری کے ساتھ دیکھنے سے اور خاطر
میں ایک سے ۳ تک و پیرا ۱۸ پر دو حیاں دینے سے یہ صاف
پتہ چلتا ہے جو جاتا ہے کہ یہ صرف ۱۹۲۱ء کے پلان کی اجس کا شہکار
ہے۔ ۲۰ فروری کے بیانوں سے ہونیکا ہے ایک

پولیٹیکل صورت ہے۔
پہلے پیرا میں بادشاہ کی سرکار نے یہ کہا ہے کہ شروع کا فیصلہ
برقی انتظام کی سب پارٹیوں کو منظور نہ تھا۔ دوسرے پیرا میں
ہی گئی ہے کہ شروع والی پلان کو کانگریس نے منظور کیا تھا لیکن
مسلم لیگ نے منظور نہیں کیا تھا۔ تیسرے پیرا میں بتایا گیا ہے کہ
ہندوستانی پارٹیوں میں آپس میں راضی نامہ کرانے کے لئے ہی ہے
فیصلہ دیا گیا ہے جس سے کہ مسلم لیگ بھی پلے والی پلان کو مان لے لے
کانگریس اور ایک ایک لائے جو بائیں۔ پیرا آؤٹ جاتا ہے جو بالکل
صاف ہے کہ گئی ہو کہ ہر باوجود اس سرکار کو اطمینان ہو گیا ہے کہ

ہنگے اور چون کے سب سے یونان کی جناتا کے سوشلسٹ لیگالوں
کو بھکا پھینچانے۔

کریملے کا پولیٹیکل پہلو۔

اب تک ہم نے اس مسئلے کے آغام پہلو پر روشنی ڈالی ہے۔
مگر جہاں تک آؤٹ بین فیصلے کے پولیٹیکل پہلو کا تعلق ہے اس
سے اہم بات یہ ہے کہ اصل میں یہ فیصلہ ۱۹۳۱ء کی پلان
کے مطالبے میں کوئی نئی چیز نہیں ہے۔ کانگریس والے کہتے ہیں کہ
یہ فیصلہ ۱۹۲۱ء کی پلان سے بالکل الگ ہے۔ یہ بات ٹھیک
نہیں ہے۔ اس فیصلے کو ہوشیاری کے ساتھ دیکھنے سے اور خاطر
میں ایک سے ۳ تک و پیرا ۱۸ پر دو حیاں دینے سے یہ صاف
پتہ چلتا ہے جو جاتا ہے کہ یہ صرف ۱۹۲۱ء کے پلان کی اجس کا شہکار
ہے۔ ۲۰ فروری کے بیانوں سے ہونیکا ہے ایک

پہلے پیرا میں بادشاہ کی سرکار نے یہ کہا ہے کہ شروع کا فیصلہ
برقی انتظام کی سب پارٹیوں کو منظور نہ تھا۔ دوسرے پیرا میں
ہی گئی ہے کہ شروع والی پلان کو کانگریس نے منظور کیا تھا لیکن
مسلم لیگ نے منظور نہیں کیا تھا۔ تیسرے پیرا میں بتایا گیا ہے کہ
ہندوستانی پارٹیوں میں آپس میں راضی نامہ کرانے کے لئے ہی ہے
فیصلہ دیا گیا ہے جس سے کہ مسلم لیگ بھی پلے والی پلان کو مان لے لے
کانگریس اور ایک ایک لائے جو بائیں۔ پیرا آؤٹ جاتا ہے جو بالکل
صاف ہے کہ گئی ہو کہ ہر باوجود اس سرکار کو اطمینان ہو گیا ہے کہ

یہ جاننے کے لیے کہ جتنا ہندستان میں شامل ہونا چاہتی ہے پاکستان میں، نیچے دیکھا دیکھا ساریکا ہی سب سے بڑا ہے۔ اس طرح کے لیے یہ بات بالکل صاف ہو جاتی ہے کہ اس فیصلے میں سب سے اچھا علی طریقہ بیان کی گیا ہے جو جس سے کہ مسلم ایک اور کا کر سکیں دونوں کیلئے فیصلے کو منظور کریں۔ اس نئے فیصلے میں کوئی اصولی سدھار نہیں کیا گیا ہے، صرف شہرہ کے فیصلے کو عمل میں لانے کی غرض سے ایک نیا راستہ بتایا گیا ہے۔ اگلا یہی پیرے میں بادشاہ کی سرکار نے کہا ہے کہ دینی ریاستوں کا معاملہ پہلے ہی فیصلے کے انضمام کے ہو گا۔ اصول کے سمجھنے میں یہ کہل فرق ہے۔ اس کے عمل میں لانے کے طریقے ہیں۔ اس سے یہ صاف پتہ چلتا ہے کہ شروع کے فیصلے اور اس نئے فیصلے میں کا کھریں اسے بالکل ایک بات پر کیوں زور دینے ہیں کہ حال والا فیصلہ ہے فیصلے سے بالکل ایک ہے۔ اس کا سبب یہ معلوم ہوتا ہے کہ جو وہ فیصلے کی تین نقصان پہنچانے والی شرطوں کو غلط بیان کرنا چاہتے ہیں یہ شرط ہے جو۔

۱۔ یہ کہ برٹش انڈیا کی ہندستان اور پاکستان سرکاری ایک دھڑے سے آزاد ہیں لیکن بادشاہ کی سرکار سے دونوں میں سے کوئی آزاد نہیں ہو (دیکھو صفحہ ۱۹ و ۲۰)۔

۲۔ یہ کہ ہندستان اور پاکستان دونوں کو خالصتاً مال اور آئے جانے کے اصول کے تحت اور ان سب محکموں کے لئے جن کا سمجھنا

یہ جاننے کے لیے کہ جتنا ہندستان میں شامل ہونا چاہتی ہے پاکستان میں، نیچے دیکھا دیکھا ساریکا ہی سب سے بڑا ہے۔ اس طرح کے لیے یہ بات بالکل صاف ہو جاتی ہے کہ اس فیصلے میں سب سے اچھا علی طریقہ بیان کی گیا ہے جو جس سے کہ مسلم ایک اور کا کر سکیں دونوں کیلئے فیصلے کو منظور کریں۔ اس نئے فیصلے میں کوئی اصولی سدھار نہیں کیا گیا ہے، صرف شہرہ کے فیصلے کو عمل میں لانے کی غرض سے ایک نیا راستہ بتایا گیا ہے۔ اگلا یہی پیرے میں بادشاہ کی سرکار نے کہا ہے کہ دینی ریاستوں کا معاملہ پہلے ہی فیصلے کے انضمام کے ہو گا۔ اصول کے سمجھنے میں یہ کہل فرق ہے۔ اس کے عمل میں لانے کے طریقے ہیں۔ اس سے یہ صاف پتہ چلتا ہے کہ شروع کے فیصلے اور اس نئے فیصلے میں کا کھریں اسے بالکل ایک بات پر کیوں زور دینے ہیں کہ حال والا فیصلہ ہے فیصلے سے بالکل ایک ہے۔ اس کا سبب یہ معلوم ہوتا ہے کہ جو وہ فیصلے کی تین نقصان پہنچانے والی شرطوں کو غلط بیان کرنا چاہتے ہیں یہ شرط ہے جو۔

۱۔ یہ کہ برٹش انڈیا کی ہندستان اور پاکستان سرکاری ایک دھڑے سے آزاد ہیں لیکن بادشاہ کی سرکار سے دونوں میں سے کوئی آزاد نہیں ہو (دیکھو صفحہ ۱۹ و ۲۰)۔

۲۔ یہ کہ ہندستان اور پاکستان دونوں کو خالصتاً مال اور آئے جانے کے اصول کے تحت اور ان سب محکموں کے لئے جن کا سمجھنا

نیا ہند
آج کی دنیا
جولائی ۱۹۷۱

نیا ہند
آج کی دنیا
جولائی ۱۹۷۱

۲۰
اس سے منسلک گورنمنٹ سے جو بادشاہ کی سرکار سے اپنی بی بی علی
پرورداری کی بات چیت کرنا چاہئے اور اس کا مطلب یہ
ہو کہ پہلے تو ہندستان اور پاکستان کو آزاد ہونے کا اعلان کر دیا گیا
لیکن جو پہلے اس وقت منسلک گورنمنٹ کے ہاتھ میں ہیں وہ دونوں میں
سے کسی کو نہیں رہنے گئے اور دوسرے پر کر یہ منسلک تھے دونوں
سرکاروں کی طرف سے بادشاہ کی سرکار کے ہاتھ میں رہیں گے کیونکہ
دونوں سرکاریں ایک الگ آزاد ہونے کی وجہ سے ایک منسلک میں
رہ سکتی تھیں۔

۳۔ دہلی رہائشی رہائشی ہندستان اور پاکستان دونوں سے آزاد
ہو رہیں گی۔ اگر وہ چاہیں تو ان میں سے کسی ایک سے اپنی اپنی
شرطوں پر صلح کی بات چیت کر سکتی ہیں یا ان میں سے کسی ایک میں
شامل ہو سکتی ہیں۔ (۱۸)

سورجوں کا بڑھنا

۳۔ دہلی رہائشی رہائشی ہندستان اور پاکستان دونوں سے
آزاد رہیں گی۔ اگر وہ چاہیں تو ان میں سے کسی ایک سے اپنی اپنی
شرطوں پر صلح کی بات چیت کر سکتی ہیں یا ان میں سے کسی ایک میں
شامل ہو سکتی ہیں۔ (۱۸)

۳۔ دہلی رہائشی رہائشی ہندستان اور پاکستان دونوں سے
آزاد رہیں گی۔ اگر وہ چاہیں تو ان میں سے کسی ایک سے اپنی اپنی
شرطوں پر صلح کی بات چیت کر سکتی ہیں یا ان میں سے کسی ایک میں
شامل ہو سکتی ہیں۔ (۱۸)

۳۔ دہلی رہائشی رہائشی ہندستان اور پاکستان دونوں سے آزاد
ہو رہیں گی۔ اگر وہ چاہیں تو ان میں سے کسی ایک سے اپنی اپنی
شرطوں پر صلح کی بات چیت کر سکتی ہیں یا ان میں سے کسی ایک میں
شامل ہو سکتی ہیں۔ (۱۸)

۳۔ دہلی رہائشی رہائشی ہندستان اور پاکستان دونوں سے آزاد
ہو رہیں گی۔ اگر وہ چاہیں تو ان میں سے کسی ایک سے اپنی اپنی
شرطوں پر صلح کی بات چیت کر سکتی ہیں یا ان میں سے کسی ایک میں
شامل ہو سکتی ہیں۔ (۱۸)

ہی کَونرس کا ساہس سہارا ہے۔ اس لیتے ہنسا نہ ہوتے پر کَونرس اہمنی آہانکول کی ہالول سے بھول کومآور ہو آاتہ۔

اس تارہ پر سؤوں کے بڈبارے کی رارآ ہہ اس نلٹش کسولے کی کامآواہی کی دُنیاوار ہے آور بڈبارے کی رارآ نلٹکول آہانآواہی کی ساہان کے کامآورے کے لیتے ہے۔ اسسے پاکلسان آارہ کڈ کر آوٹا ہہ ہو گیا ہو پر کورن کراہم ہو گیا ہے آور کَونرس کا پورآشال ہلندؤآوں کے سامنے کومآور ہو गई ہے۔ ساہ ہہ اسکے آونکے پاکلسان کڈ کر آوٹا ہو گیا ہے اسللیتے لہان کی ساکول آہ سولساالوں کے سامنے کومآور ہو गई ہے۔ لولکن دسری تارک آہانرسوا ساہان کو پورآشال آور آہ مآول آور کراہم ہو गई ہے اسکے اسللیتے نہرآ ک کَونرس آور لہان دَولوں کی ساکول کوم ہو गई ہے ولکن اسللیتے ک ساکول کو باہانآور آور تہام دُنیاوار کسولے آہانرسوں کے رارآوں، مالہی آور کَونآ لیتے ہلندؤسلان آور پاکلسان مے رارآواہوں، مالہی آور کَونآوں کی دُنیاوار پڈ गई ہے۔ ہلندؤسلان آور پاکلسان کے آہاس کے مہانڈوں کا کسولا کرنے والہی آہ بادرارہ کی سارکار دُآوا کورگا۔ ہلندؤسلان مے آہانرسوا ساہان کی بھ کولہبندوا مہانڈوں کسولے کی رارآوں سے ہہ پورا ہڈ ہے۔

سؤوں کے بڈبارے کا تارآکا آہانرس ہے۔ ماآنڈبڈلن کسولے کے ساالوں پورا مے ساک ساک کراہا گیا ہے ک ک سبسے پھلے پکی تارہ بھ تہ ہو آاتا آارہلے ک کورہ سؤوا آہانر آہنلا بڈبارا نہ کرالنا آارہ تو اس پورے سؤوں کو یا تو ہلندؤسلان مے رارآنا ہونگا یا پاکلسان مے۔ بھ ہلندؤآوں کے لیتے اک سارناک رارآ

ہی کَونرس کا ساہس سہارا ہے۔ اس لیتے ہنسا نہ ہوتے پر کَونرس اہمنی آہانکول کی ہالول سے بھول کومآور ہو آاتہ۔

اس تارہ پر سؤوں کے بڈبارے کی رارآ ہہ اس نلٹش کسولے کی کامآواہی کی دُنیاوار ہے آور بڈبارے کی رارآ نلٹکول آہانآواہی کی ساہان کے کامآورے کے لیتے ہے۔ اسسے پاکلسان آارہ کڈ کر آوٹا ہہ ہو گیا ہو پر کورن کراہم ہو گیا ہے آور کَونرس کا پورآشال ہلندؤآوں کے سامنے کومآور ہو गई ہے۔ ساہ ہہ اسکے آونکے پاکلسان کڈ کر آوٹا ہو گیا ہے اسللیتے لہان کی ساکول آہ سولساالوں کے سامنے کومآور ہو गई ہے۔ لولکن دسری تارک آہانرسوا ساہان کو پورآشال آور آہ مآول آور کراہم ہو गई ہے اسکے اسللیتے نہرآ ک کَونرس آور لہان دَولوں کی ساکول کوم ہو गई ہے ولکن اسللیتے ک ساکول کو باہانآور آور تہام دُنیاوار کسولے آہانرسوں کے رارآوں، مالہی آور کَونآ لیتے ہلندؤسلان آور پاکلسان مے رارآواہوں، مالہی آور کَونآوں کی دُنیاوار پڈ गई ہے۔ ہلندؤسلان آور پاکلسان کے آہاس کے مہانڈوں کا کسولا کرنے والہی آہ بادرارہ کی سارکار دُآوا کورگا۔ ہلندؤسلان مے آہانرسوا ساہان کی بھ کولہبندوا مہانڈوں کسولے کی رارآوں سے ہہ پورا ہڈ ہے۔

سؤوں کے بڈبارے کا تارآکا آہانرس ہے۔ ماآنڈبڈلن کسولے کے ساالوں پورا مے ساک ساک کراہا گیا ہے ک ک سبسے پھلے پکی تارہ بھ تہ ہو آاتا آارہلے ک کورہ سؤوا آہانر آہنلا بڈبارا نہ کرالنا آارہ تو اس پورے سؤوں کو یا تو ہلندؤسلان مے رارآنا ہونگا یا پاکلسان مے۔ بھ ہلندؤآوں کے لیتے اک سارناک رارآ

ہے، کیونکہ ایسا مسلمین ہے کہ بڑے بڑے لیتے آئے یا بھرے ہوئے
 اور دیکھ کر سے ہائیل کر لیتے آئے، یہاں مسلمین ہے کہ مچا
 ایسے ہی لیتے کے مینار پہلے یہ کہہ کر آغا جی بنگال اور
 پنجاب کا بڑا بڑا نہ ہو تو بنگال اور پنجاب دونوں پورے کے پورے
 پاکستان میں شامل کیے جائیں، ہندو، سیکھ اور مسلمان
 سب اس کسٹلے پر راجا ہو جائیں کیونکہ ایسا ہو جانے پر ہندو
 اور سیکھ بڑے بڑے بڑے کو راجہ کرنے کا پکا ارادہ کر لیں گے۔

اس کے بعد کہ بنگال یا پنجاب پورے پورے ہندوستان میں
 شامل ہوں یا پاکستان میں، فیصلے کے مطابق، جو وہ کچھ دنوں کے لئے
 کے لئے ہو جائیں گے، اس کے بعد بھارت اور پاکستان کے ممبروں
 سے گورنر جنرل صدر ہندی کمیشن کے اختیارات کو لینے کے سبب
 اس لئے لیں گے، یہ کمیشن وائسرائے کسی پارٹی سے صلاح لئے
 ہی مقرر کریں گے اور یہی کمیشن آخر میں جو وہ طے کرے گا (پیرا ۵)
 (۹) یہ ہندی کمیشن والد باؤں کا بھی لحاظ رکھے گا، جس کا کوئی ذکر
 اس فیصلے میں نہیں ہے۔

اب اگر اس طرح کا ہندی کمیشن کوئی ایسی حد سے کر دے گا جو
 ہندوؤں اور سکھوں کے لئے انصاف کے خلاف ہو تو ان کے لئے کوئی
 چارہ باقی نہ رہے گا سوائے اس کے کہ کل پنجاب اور بنگال پاکستان
 میں شامل کر دیا جائے (پیرا ۱۰)۔
 اس کے لئے کوئی اور چارہ باقی نہ رہے گا سوائے اس کے (پیرا ۱۱)۔

بادشاہ کی سرکار کے اختیار پر—
 اسل میں اس فیصلے نے صوبہ سرحد، سندھ اور بلوچستان

جولائی سنہ

آغا جی دینیا

شاہد

ہو کہیں نہ کہ ایسا ممکن ہو کر وہ بڑے خرید لئے ہو جائیں یا زبردستی اور
 دھوکے سے حاصل کر لئے جائیں، یہ ممکن ہو کر صوبائی اسمبلیوں کے
 ممبروں کے لئے یہ طے کریں کہ اگر بنگال اور پنجاب کا جو وہ نہ ہو، تو
 بنگال اور پنجاب دونوں پورے کے پورے پاکستان میں شامل کر
 جائیں، ہندو، سیکھ اور مسلمان سب اس فیصلے پر راضی ہو جائیں گے
 کیونکہ ایسا ہو جانے پر ہندو اور سیکھ بڑے بڑے کو راجہ کرنے کا
 ارادہ کر لیں گے۔

اس کے بعد کہ بنگال یا پنجاب پورے پورے ہندوستان میں شامل
 ہوں یا پاکستان میں، فیصلے کے مطابق، جو وہ کچھ دنوں کے لئے
 کے لئے ہو جائیں گے، اس کے بعد بھارت اور پاکستان کے ممبروں
 سے گورنر جنرل صدر ہندی کمیشن کے اختیارات کو لینے کے سبب
 اس لئے لیں گے، یہ کمیشن وائسرائے کسی پارٹی سے صلاح لئے
 ہی مقرر کریں گے اور یہی کمیشن آخر میں جو وہ طے کرے گا (پیرا ۵)
 (۹) یہ ہندی کمیشن والد باؤں کا بھی لحاظ رکھے گا، جس کا کوئی ذکر
 اس فیصلے میں نہیں ہے۔

اب اگر اس طرح کا ہندی کمیشن کوئی ایسی حد سے کر دے گا جو
 ہندوؤں اور سکھوں کے لئے انصاف کے خلاف ہو تو ان کے لئے کوئی
 چارہ باقی نہ رہے گا سوائے اس کے کہ کل پنجاب اور بنگال پاکستان
 میں شامل کر دیا جائے (پیرا ۱۰)۔
 اس کے لئے کوئی اور چارہ باقی نہ رہے گا سوائے اس کے (پیرا ۱۱)۔

کو سینیٹیا کا کٹاؤ میں سوائپ دیا ہے کہ وہ ان کو فیصلہ پاکستان میں شامل کر لیں کیونکہ پاکستان کے ڈیکریٹ کے ذریعہ سے بڑی اتریں بھی ہندستان کی بنی گئی ہیں۔ بڑی کونسل کے پیراگراف ۱۷ کے अनुसार اتریں بھی سرحد کے آزاد علاقوں سے صلح کرانوں سے ملنا ہی کی بات نہیں کریں گے اور ان کو پاکستان کے لئے حاصل کر لیں گے۔ پاکستان میں بھارت کے سب سے زیادہ ایجاڈ پلانٹ شامل ہوں گے۔ سندھ کو پاکستان میں بے انصافی سے شامل کیا جائے گا اور کیونکہ اس صوبے کی آبادی ۱۰ فیصدی ہے۔ اتریں بھی شامل ہو اور فیصلہ کی بنیاد ہی ملے گی۔ اتریں بھارت کی بھارتی اتریں بھی شامل ہیں۔ یہاں پر پاکستان کی بھارتی اتریں بھی شامل ہیں۔ اتریں بھارت کی بھارتی اتریں بھی شامل ہیں۔ اتریں بھارت کی بھارتی اتریں بھی شامل ہیں۔

یہ سب باتیں ہیں جو انگریزی سامراج کے لئے بڑے فوری کام کے ہیں، جیسے اتریں بھی شامل ہیں جن سے صلح نامے ہیں۔ کہا توں کہ ان علاقوں کے بارے میں مسٹر جناح نے پریس کنفرنس میں ایک شخصہ لائی تھی جو لاڈلہ ماؤنٹ بیٹن کے ذریعے سے ہوا ہے۔ "اٹری پریس" کی لندن کی ایک خبر ہے کہ — نہایت خاصہ ذریعے سے معلوم ہوا کہ لاڈلہ ماؤنٹ بیٹن نے اپنے لستہ بیان سے پہلے مسٹر جناح سے کھٹا ہوا ایک بیان لے لیا تھا۔ مگر مسٹر جناح کا کہنا ہے کہ انھوں نے ایسا کوئی کھٹا ہوا بیان نہیں دیا۔

یہ سب باتیں ہیں جو انگریزی سامراج کے لئے بڑے فوری کام کے ہیں، جیسے اتریں بھی شامل ہیں جن سے صلح نامے ہیں۔ کہا توں کہ ان علاقوں کے بارے میں مسٹر جناح نے پریس کنفرنس میں ایک شخصہ لائی تھی جو لاڈلہ ماؤنٹ بیٹن کے ذریعے سے ہوا ہے۔ "اٹری پریس" کی لندن کی ایک خبر ہے کہ — نہایت خاصہ ذریعے سے معلوم ہوا کہ لاڈلہ ماؤنٹ بیٹن نے اپنے لستہ بیان سے پہلے مسٹر جناح سے کھٹا ہوا ایک بیان لے لیا تھا۔ مگر مسٹر جناح کا کہنا ہے کہ انھوں نے ایسا کوئی کھٹا ہوا بیان نہیں دیا۔

یہ سب باتیں ہیں جو انگریزی سامراج کے لئے بڑے فوری کام کے ہیں، جیسے اتریں بھی شامل ہیں جن سے صلح نامے ہیں۔ کہا توں کہ ان علاقوں کے بارے میں مسٹر جناح نے پریس کنفرنس میں ایک شخصہ لائی تھی جو لاڈلہ ماؤنٹ بیٹن کے ذریعے سے ہوا ہے۔ "اٹری پریس" کی لندن کی ایک خبر ہے کہ — نہایت خاصہ ذریعے سے معلوم ہوا کہ لاڈلہ ماؤنٹ بیٹن نے اپنے لستہ بیان سے پہلے مسٹر جناح سے کھٹا ہوا ایک بیان لے لیا تھا۔ مگر مسٹر جناح کا کہنا ہے کہ انھوں نے ایسا کوئی کھٹا ہوا بیان نہیں دیا۔

نیا ہند
آج کی دنیا
جولائی ۱۹۷۰

سب سے پہلے ہوا یا نہ ہوا ہے۔ اس فیصلے کے آخری لفظوں سے برٹش سامراجی ٹائٹلس کو سنبھالنے سے زیادہ سنبھال کر لیا گیا ہے۔ یہ برٹش سامراجی ٹائٹلس گورنر جنرل آگے بڑھ کر وقت سے پہلے اس طرح آگے بڑھ گیا۔ "ہر آئین کی ضرورت" اسی لفظ کی مدد سے اور بھی اعلان کرتے رہیں گے جن کی ضرورت اسی لفظ کی مدد سے ہوئی ہے۔ اور یہ لفظ اس کے کارروائی یا کسی دوسرے معاملے کے سنبھالنے میں آگے بڑھے ہوئے ہے۔ گورنر جنرل کے عمل میں لانے کے لئے پڑھے گی۔ اس سے گورنر جنرل کے عمل میں بھی کام کے کرنے کا پورا اختیار مل جاتا ہے۔ آستان اور ہندوستان یا دیسی ریاستوں کے سنبھالنے میں وہ بھی کرنا چاہیں اپنے اختیار سے کر سکتے ہیں۔ اس اختیار سے کام میں لانے کے لئے

نیا ہند
آج کی دنیا
جولائی ۱۹۷۰

نیا ہند
آج کی دنیا
جولائی ۱۹۷۰

نیا ہند
آج کی دنیا
جولائی ۱۹۷۰

کے ماہ کوئی مالی رعایت کسی پولیٹیکل فائلڈے کے عوض میں نہ کرے گا۔ ہینڈیا آفیس کے لیے تو یہ ممکن تھا کہ وہ کسی پولیٹیکل فائلڈے کو بڑے میں یا ڈونڈے یا ڈونڈے کے سمبندھ میں کوئی رعایت منظور کرے کیونکہ انگلیا آفس کو تو پولیٹیکل معاملوں سے واسطہ رہتا ہے۔ جیسے کہ موجودہ فیصلے سے ہے لیکن جہاں تک ہندستان کے اسٹریٹک سٹریٹجی کے سمبندھ میں اس میں برٹین کی طرف سے کوئی رعایت نہ ہوگی۔

اس کے سوائے ہندستان کے جوارے کی دھ سے یا ڈونڈے یا ڈونڈے کے جوارے میں بہت سمبندھ اور لمبھیں پیدا ہوگی۔ ایسا کہ جانتا ہے کہ جب برٹین گورنری ایک مرتبہ یا ڈونڈے یا ڈونڈے کا فیصلہ کرے گی تب یہ کام ہندستان اور آکستان سرکاروں کا ہوگا کہ وہ اپنے آپ میں بیٹے کر لیں کہ کس کو کتنی رقم ملنا چاہیے۔ اس کا یہ نتیجہ ضرور ہوگا کہ ہندستان اور آکستان میں مالی سمبندھ پیدا ہو جائیں۔

آراج کی دنیا

یہ بات دھیان دینے کے قابل ہے کہ ماڈرن ٹیکنالوجی کے نفاذ میں کسی خاص مطلب سے، فوج کے جوارے کے سمبندھ میں کوئی ذکر نہیں آیا ہے۔ پیرا ۱۲ الف میں کہا گیا ہے کہ ان تمام حکموں کے سبب میں جو اس وقت سنٹر سے سمبندھ رکھتے ہیں وہ نئی سرکاروں کے بیچ بات چیت شروع ہوگی۔ ان میں حفاظت خزانہ اور آگے جانے کے واسطوں کے لیے شامل ہیں۔ اگر ہندستان اور آکستان کی سرکاروں میں آپس میں بات چیت

نیاں: ہینڈ
 آراج کی دنیا
 جولائی ۱۹۷۰

یہ بات دھیان دینے کے قابل ہے کہ ماڈرن ٹیکنالوجی کے نفاذ میں کسی خاص مطلب سے، فوج کے جوارے کے سمبندھ میں کوئی ذکر نہیں آیا ہے۔ پیرا ۱۲ الف میں کہا گیا ہے کہ ان تمام حکموں کے سبب میں جو اس وقت سنٹر سے سمبندھ رکھتے ہیں وہ نئی سرکاروں کے بیچ بات چیت شروع ہوگی۔ ان میں حفاظت خزانہ اور آگے جانے کے واسطوں کے لیے شامل ہیں۔ اگر ہندستان اور آکستان کی سرکاروں میں آپس میں بات چیت

نیا دنیا
آج کی دنیا
ہونے پر کوئی انتظام یا فوجی سائنسوں کا ہوشیار کی سرکار کے ماتحت
بھاؤ کے نکلنے کے سبب یہ میں نے ابھی دیکھا ہے کہ ہوشیار کی سرکار کے ماتحت
دوسری جگہ ہیں۔ یا تو فوجوں کا پوراہا رشتہ مندی سے کر لیا جاوے یا پھر
اس فیصلے کے فقرہ ۱۱۱ ب کے احوال بارشاہ کی سرکار پھر اپنا فیصلہ دے۔
کے کی حفاظت کے معاملے کی ذمہ داری دہلی میں آج کل شمال
گورنمنٹ کے لئے شامل ہیں) اس پر سچا یہ ایک میٹھی تھی۔
لیکن آخری فیصلہ تو بارشاہ کی سرکار کے ہاتھ میں ہی رہی ہے۔ ایسی
حالت میں یہ کہنا مشکل ہو کر فوجوں کا پوراہا ہوگا بھی یا نہیں
اور اگر پوراہا ہوا تو کس اصول پر۔ معاملہ بالکل بارشاہ کی سرکار
کے ہاتھ میں ہے۔ مان لو کہ فوجوں کا پوراہا ہوگا۔ مگر اس بات کا
خیال رہے کہ دو آزاد حکومتوں، ہندستان اور پاکستان کے سیکڑ
ایسی ہندستانی ریاستیں بھی ہیں جن سے بارشاہ کی سرکار کے
صلح نامے ہیں۔ اس طرح سے ہندستان میں ۳۲ ایک ایک ہندستان
فوجیں شامل ہیں جو ایک ایک ریاستوں کے ماتحت ہوں گی۔
اگر فوج نہ رہی تو آج کل کی طرح وہ بالکل انگریزوں
کے ماتحت ہوگی۔ اگر فوج کا پوراہا ہوگا تو
ہندستان میں گھریلو مطالبوں کا اندیشہ ہوگا۔ اس لئے میں
ہاؤس آف لارڈس میں جو بحث فروری کے مہینے میں ہوئی تھی
اس کی یاد دلانا ضروری ہے۔ لہذا یہی گورنمنٹ پالیسی کے فیصلوں نے
کی تھی کہ ہندستان کی وہ ایک دوسرے کے حالات سرکاروں کو حکومت
کا اختیار دے کے جانے پر سولہ طرہوں سے لاد اور یہ

نیا دنیا
آج کی دنیا
ہونے پر کوئی انتظام یا فوجی سائنسوں کا ہوشیار کی سرکار کے ماتحت
بھاؤ کے نکلنے کے سبب یہ میں نے ابھی دیکھا ہے کہ ہوشیار کی سرکار کے ماتحت
دوسری جگہ ہیں۔ یا تو فوجوں کا پوراہا رشتہ مندی سے کر لیا جاوے یا پھر
اس فیصلے کے فقرہ ۱۱۱ ب کے احوال بارشاہ کی سرکار پھر اپنا فیصلہ دے۔
کے کی حفاظت کے معاملے کی ذمہ داری دہلی میں آج کل شمال
گورنمنٹ کے لئے شامل ہیں) اس پر سچا یہ ایک میٹھی تھی۔
لیکن آخری فیصلہ تو بارشاہ کی سرکار کے ہاتھ میں ہی رہی ہے۔ ایسی
حالت میں یہ کہنا مشکل ہو کر فوجوں کا پوراہا ہوگا بھی یا نہیں
اور اگر پوراہا ہوا تو کس اصول پر۔ معاملہ بالکل بارشاہ کی سرکار
کے ہاتھ میں ہے۔ مان لو کہ فوجوں کا پوراہا ہوگا۔ مگر اس بات کا
خیال رہے کہ دو آزاد حکومتوں، ہندستان اور پاکستان کے سیکڑ
ایسی ہندستانی ریاستیں بھی ہیں جن سے بارشاہ کی سرکار کے
صلح نامے ہیں۔ اس طرح سے ہندستان میں ۳۲ ایک ایک ہندستان
فوجیں شامل ہیں جو ایک ایک ریاستوں کے ماتحت ہوں گی۔
اگر فوج نہ رہی تو آج کل کی طرح وہ بالکل انگریزوں
کے ماتحت ہوگی۔ اگر فوج کا پوراہا ہوگا تو
ہندستان میں گھریلو مطالبوں کا اندیشہ ہوگا۔ اس لئے میں
ہاؤس آف لارڈس میں جو بحث فروری کے مہینے میں ہوئی تھی
اس کی یاد دلانا ضروری ہے۔ لہذا یہی گورنمنٹ پالیسی کے فیصلوں نے
کی تھی کہ ہندستان کی وہ ایک دوسرے کے حالات سرکاروں کو حکومت
کا اختیار دے کے جانے پر سولہ طرہوں سے لاد اور یہ

نیا دنیا
آج کی دنیا
ہونے پر کوئی انتظام یا فوجی سائنسوں کا ہوشیار کی سرکار کے ماتحت
بھاؤ کے نکلنے کے سبب یہ میں نے ابھی دیکھا ہے کہ ہوشیار کی سرکار کے ماتحت
دوسری جگہ ہیں۔ یا تو فوجوں کا پوراہا رشتہ مندی سے کر لیا جاوے یا پھر
اس فیصلے کے فقرہ ۱۱۱ ب کے احوال بارشاہ کی سرکار پھر اپنا فیصلہ دے۔
کے کی حفاظت کے معاملے کی ذمہ داری دہلی میں آج کل شمال
گورنمنٹ کے لئے شامل ہیں) اس پر سچا یہ ایک میٹھی تھی۔
لیکن آخری فیصلہ تو بارشاہ کی سرکار کے ہاتھ میں ہی رہی ہے۔ ایسی
حالت میں یہ کہنا مشکل ہو کر فوجوں کا پوراہا ہوگا بھی یا نہیں
اور اگر پوراہا ہوا تو کس اصول پر۔ معاملہ بالکل بارشاہ کی سرکار
کے ہاتھ میں ہے۔ مان لو کہ فوجوں کا پوراہا ہوگا۔ مگر اس بات کا
خیال رہے کہ دو آزاد حکومتوں، ہندستان اور پاکستان کے سیکڑ
ایسی ہندستانی ریاستیں بھی ہیں جن سے بارشاہ کی سرکار کے
صلح نامے ہیں۔ اس طرح سے ہندستان میں ۳۲ ایک ایک ہندستان
فوجیں شامل ہیں جو ایک ایک ریاستوں کے ماتحت ہوں گی۔
اگر فوج نہ رہی تو آج کل کی طرح وہ بالکل انگریزوں
کے ماتحت ہوگی۔ اگر فوج کا پوراہا ہوگا تو
ہندستان میں گھریلو مطالبوں کا اندیشہ ہوگا۔ اس لئے میں
ہاؤس آف لارڈس میں جو بحث فروری کے مہینے میں ہوئی تھی
اس کی یاد دلانا ضروری ہے۔ لہذا یہی گورنمنٹ پالیسی کے فیصلوں نے
کی تھی کہ ہندستان کی وہ ایک دوسرے کے حالات سرکاروں کو حکومت
کا اختیار دے کے جانے پر سولہ طرہوں سے لاد اور یہ

نیا دنیا
آج کی دنیا
ہونے پر کوئی انتظام یا فوجی سائنسوں کا ہوشیار کی سرکار کے ماتحت
بھاؤ کے نکلنے کے سبب یہ میں نے ابھی دیکھا ہے کہ ہوشیار کی سرکار کے ماتحت
دوسری جگہ ہیں۔ یا تو فوجوں کا پوراہا رشتہ مندی سے کر لیا جاوے یا پھر
اس فیصلے کے فقرہ ۱۱۱ ب کے احوال بارشاہ کی سرکار پھر اپنا فیصلہ دے۔
کے کی حفاظت کے معاملے کی ذمہ داری دہلی میں آج کل شمال
گورنمنٹ کے لئے شامل ہیں) اس پر سچا یہ ایک میٹھی تھی۔
لیکن آخری فیصلہ تو بارشاہ کی سرکار کے ہاتھ میں ہی رہی ہے۔ ایسی
حالت میں یہ کہنا مشکل ہو کر فوجوں کا پوراہا ہوگا بھی یا نہیں
اور اگر پوراہا ہوا تو کس اصول پر۔ معاملہ بالکل بارشاہ کی سرکار
کے ہاتھ میں ہے۔ مان لو کہ فوجوں کا پوراہا ہوگا۔ مگر اس بات کا
خیال رہے کہ دو آزاد حکومتوں، ہندستان اور پاکستان کے سیکڑ
ایسی ہندستانی ریاستیں بھی ہیں جن سے بارشاہ کی سرکار کے
صلح نامے ہیں۔ اس طرح سے ہندستان میں ۳۲ ایک ایک ہندستان
فوجیں شامل ہیں جو ایک ایک ریاستوں کے ماتحت ہوں گی۔
اگر فوج نہ رہی تو آج کل کی طرح وہ بالکل انگریزوں
کے ماتحت ہوگی۔ اگر فوج کا پوراہا ہوگا تو
ہندستان میں گھریلو مطالبوں کا اندیشہ ہوگا۔ اس لئے میں
ہاؤس آف لارڈس میں جو بحث فروری کے مہینے میں ہوئی تھی
اس کی یاد دلانا ضروری ہے۔ لہذا یہی گورنمنٹ پالیسی کے فیصلوں نے
کی تھی کہ ہندستان کی وہ ایک دوسرے کے حالات سرکاروں کو حکومت
کا اختیار دے کے جانے پر سولہ طرہوں سے لاد اور یہ

مہی ڈر ہے کہیں انگریزوں کا اور انگریزوں کی سرکاری ایک دوسرے کے لیلالاک شریک نہ ہو جائیں۔ ان دونوں کو جواب دینے ہوئے لارڈ بیکن لارڈس نے حکومت کی طرف سے سرگرمیوں کیلئے کا حوالہ دیتے ہوئے کہا ہے۔ اس میں شک نہیں کہ گھریلو لڑائی کا اندیشہ ہو۔ گھریلو سب کو معلوم ہو کہ انگریزی فوج وہاں سے کسی کو نہیں مل سکتی۔

اس لئے یہ خطہ بہت چھوٹا ہے اور ہوجاتا ہے۔ بادشاہ کی سرکار نے ان لیا ہو کر اس حالت میں گھریلو لڑائی کے بیچ موجود ہیں۔ تین ان کا جواب یہ ہے کہ انگریزی سامراج کے لئے خطہ اس وجہ سے کم ہوجاتا ہے کہ ایسی گھریلو لڑائی میں انگریزوں نے برکھائی کر فوجی کا الزام نہیں لگا سکتا۔ لارڈ بیکن لارڈس نے کہا کہ اس قسم کی گھریلو لڑائی سے سامراج کھینچنے کے بجائے ہمارے اور ہندستان کے بیچ بیٹے سے زیادہ محبت اور دوستی رہے گی اور دونوں کا فائدہ اسی میں ہے۔ اس سے یہ بھی ظاہر ہوتا ہے کہ بادشاہ کی سرکار کو پہلا بھروسہ ہے کہ اس بھروسے اور دو خلاف یادگیوں اور سیاستوں کے قائم ہوجانے سے ہر ایک بیٹے سے بھی زیادہ انگریزوں کے آدھتوں سبکیں۔ صرف انگریزی سامراج بیٹے سے زیادہ محفوظ ہو گیا۔ اس کے ساتھ ہی امریکا کے دہلی دینے کا خطہ بھی کم ہوجاتا ہے۔

سرکار کی فوجی پالیسی

سر جان مالکس نے ۱۹۳۲ء میں جب وہ بمبئی کے گورنر کے طور پر تھے، انگریزوں نے ۱۹۳۲ء میں جب وہ بمبئی کے گورنر تھے، انگریزوں کا حال عدان پورے مسئلہ میں موجود ہے۔ "پہلے میں پہلا سامراج حوالہ کے زور سے قائم کیا گیا تھا اور اسے حوالہ کے زور سے ہی قائم رکھا جاتا ہے۔"

مہی ڈر ہے کہیں انگریزوں کا اور انگریزوں کی سرکاری ایک دوسرے کے لیلالاک شریک نہ ہو جائیں۔ ان دونوں کو جواب دینے ہوئے لارڈ بیکن لارڈس نے حکومت کی طرف سے سرگرمیوں کیلئے کا حوالہ دیتے ہوئے کہا ہے۔ اس میں شک نہیں کہ گھریلو لڑائی کا اندیشہ ہو۔ گھریلو سب کو معلوم ہو کہ انگریزی فوج وہاں سے کسی کو نہیں مل سکتی۔

اس لئے یہ خطہ بہت چھوٹا ہے اور ہوجاتا ہے۔ بادشاہ کی سرکار نے ان لیا ہو کر اس حالت میں گھریلو لڑائی کے بیچ موجود ہیں۔ تین ان کا جواب یہ ہے کہ انگریزی سامراج کے لئے خطہ اس وجہ سے کم ہوجاتا ہے کہ ایسی گھریلو لڑائی میں انگریزوں نے برکھائی کر فوجی کا الزام نہیں لگا سکتا۔ لارڈ بیکن لارڈس نے کہا کہ اس قسم کی گھریلو لڑائی سے سامراج کھینچنے کے بجائے ہمارے اور ہندستان کے بیچ بیٹے سے زیادہ محبت اور دوستی رہے گی اور دونوں کا فائدہ اسی میں ہے۔ اس سے یہ بھی ظاہر ہوتا ہے کہ بادشاہ کی سرکار کو پہلا بھروسہ ہے کہ اس بھروسے اور دو خلاف یادگیوں اور سیاستوں کے قائم ہوجانے سے ہر ایک بیٹے سے بھی زیادہ انگریزوں کے آدھتوں سبکیں۔ صرف انگریزی سامراج بیٹے سے زیادہ محفوظ ہو گیا۔ اس کے ساتھ ہی امریکا کے دہلی دینے کا خطہ بھی کم ہوجاتا ہے۔

سرکار کی فوجی پالیسی

سر جان مالکس نے ۱۹۳۲ء میں جب وہ بمبئی کے گورنر کے طور پر تھے، انگریزوں نے ۱۹۳۲ء میں جب وہ بمبئی کے گورنر تھے، انگریزوں کا حال عدان پورے مسئلہ میں موجود ہے۔ "پہلے میں پہلا سامراج حوالہ کے زور سے قائم کیا گیا تھا اور اسے حوالہ کے زور سے ہی قائم رکھا جاتا ہے۔"

نیا ہند۔ ہمارے سامراج کی کوئی بنیاد نہیں ہے اور نہ کوئی ایسی بنیاد اس کی ہو سکتی ہے جو ہمارے سامراج کی اس خاصیت کو مٹا سکے۔ اگر ہندوستان کی فوج ان خاص کر دیسی فوج، ایسی حالت میں رکھی نہ گئی کہ ایک طرف تو وہ اچھی طرح سے ہتھیار بند ہو اور ساتھ ہی اس کے دیسی دفاعی بھی رہے تو کوئی تجارتی، مالی یا عدالتی طریقہ جس کو آہم بنائی کریں، ہمارے لئے ہمیشہ فائدہ پہنچانے والا نہیں ہو سکتا۔ یہ سچی انگریزوں کی فوجی پالیسی امداد بھی اسی پالیسی پر کام ہوتا ہے۔

۱۹۵۷ء سے حکومت۔ اس نتیجے کے لئے جو طریقہ کام میں لایا جا رہا ہے۔ اس انگریزی فیصلے کی وجہ سے صرف کھوڑا سا بھلائی ہو۔

۱۹۵۷ء کے بعد جامع کرنے پر مملوک ہوا نکلا کہ اس وقت کی فوج سب کو ملا کر بنائی گئی تھی۔ اس لئے انگریزوں کے خلاف سب قومیوں نے سب قومیوں کے لوگوں کو ساتھ ہی ساتھ کھینچنے میں جمع کر دیا تھا۔ لیکن (سندھی فوج کے کرم جاری کی تفاوت میں بھی یہی ہوا کیونکہ سندھی فوج میں جات یا ت کا کوئی فرق نہیں لکھا گیا تھا۔ جنرل سر جی ایس نیپیر نے لکھا ہے کہ۔۔۔ جس وقت ان ممالک اور مالی دہلی سے بیہوش کو معلوم ہو گا کہ آج ایس میں کس طرح ملک چلنے لگے، ہم پر ایک ساتھ دھوا کر دیں گے اور ہمارا کھیل ختم ہو جائے گا۔

نیا ہند۔ ہمارے سامراج کی کوئی بنیاد نہیں ہے اور نہ کوئی ایسی بنیاد اس کی ہو سکتی ہے جو ہمارے سامراج کی اس خاصیت کو مٹا سکے۔ اگر ہندوستان کی فوج ان خاص کر دیسی فوج، ایسی حالت میں رکھی نہ گئی کہ ایک طرف تو وہ اچھی طرح سے ہتھیار بند ہو اور ساتھ ہی اس کے دیسی دفاعی بھی رہے تو کوئی تجارتی، مالی یا عدالتی طریقہ جس کو آہم بنائی کریں، ہمارے لئے ہمیشہ فائدہ پہنچانے والا نہیں ہو سکتا۔ یہ سچی انگریزوں کی فوجی پالیسی امداد بھی اسی پالیسی پر کام ہوتا ہے۔

۱۹۵۷ء سے حکومت۔ اس نتیجے کے لئے جو طریقہ کام میں لایا جا رہا ہے۔ اس انگریزی فیصلے کی وجہ سے صرف کھوڑا سا بھلائی ہو۔

۱۹۵۷ء کے بعد جامع کرنے پر مملوک ہوا نکلا کہ اس وقت کی فوج سب کو ملا کر بنائی گئی تھی۔ اس لئے انگریزوں کے خلاف سب قومیوں نے سب قومیوں کے لوگوں کو ساتھ ہی ساتھ کھینچنے میں جمع کر دیا تھا۔ لیکن (سندھی فوج کے کرم جاری کی تفاوت میں بھی یہی ہوا کیونکہ سندھی فوج میں جات یا ت کا کوئی فرق نہیں لکھا گیا تھا۔ جنرل سر جی ایس نیپیر نے لکھا ہے کہ۔۔۔ جس وقت ان ممالک اور مالی دہلی سے بیہوش کو معلوم ہو گا کہ آج ایس میں کس طرح ملک چلنے لگے، ہم پر ایک ساتھ دھوا کر دیں گے اور ہمارا کھیل ختم ہو جائے گا۔

ہندوستان اور پاکستان اور دبئی میں صرف چھ ماہ کی دشمنی ہے نہ ہوگی اور نہ یہ صرف بوطیکل ہی ہوگی بلکہ مالی بھی ہوگی۔ پاکستان اپنا مٹکی اور مال پھیلاؤ سب سے پہلے ہندستان کے خلاف چاہے گا۔ اور ہندستان پہلے ریاستوں کے خلاف کارروائی کرے گا جیسا کہ لاٹویسی لیٹونوں کی آن پہنچوں سے ظاہر ہوتا ہے جو اگلی نے آمل اٹلیا کا کرلیں کہیں کے جون فالے چلیں میں دی تھیں کہ ہندستان دکھنی لبرٹی ایشیا کی خاص حکومت ہوگی۔ ریاستیں اصول سے ہی ہندستان اور پاکستان دونوں کے خلاف ہیں۔ کیونکہ یہ دونوں اپنی اپنی حکومت کے خلاف بھی برقی ہیں جس کا اثر اس وقت پر پڑے پائندہ رہے گا۔

دبئی ریاستوں اور دبئی

۱۹۶۷ء میں دبئی کے حالات ہندوستانی ریاستوں سے اور دبئی کے حالات سے بڑی حکومت سے بیان کر دے گا۔ حال دبئی کے ذکر کر دیا گیا ہے۔ سب سے پہلے ضروری مسئلہ اعلیٰ اختیار اور دبئی کی طرح سے حاصل ہونے کے ساتھ ساتھ برطانیہ کو چھوڑوں کی سلطنت سے لاکھا یعنی برطانیہ نے مٹکی بادشاہوں سے وراثت میں پایا ہے۔ اعلیٰ اختیار کی وراثت کے سمبندھ میں تین لائیں ہیں۔ یہ تینوں ایک دوسرے کے خلاف ہیں لیکن تینوں ہی قانونی طور پر جائز ہیں۔

ہندوستان، پاکستان اور دبئی ریاستوں میں سیکرٹ جرنیلوں کی دھرمناہی ہو نہ ہوگی اور نہ یہ سیکرٹ پولیٹیکل ہی ہوگا بلکہ مالی بھی ہوگی۔ پہلے ہندوستان کے خلیا کا چاہے گا۔ اور ہندوستان پہلے ریاستوں کے خلاف کارروائی کرے گا۔ ان مٹیوں سے چاہے رہتا ہے جو انہوں نے آمل اٹلیا کا کرلیں کہیں کے جون فالے چلیں میں دی تھیں کہیں کے ہندوستان اور پاکستان دونوں کے خلاف ہیں۔ کیونکہ یہ دونوں اپنی اپنی حکومت کے خلاف بھی برقی ہیں جس کا اثر اس وقت پر پڑے پائندہ رہے گا۔

دبئی ریاستوں اور دبئی

۱۹۶۷ء میں دبئی کے حالات ہندوستانی ریاستوں سے اور دبئی کے حالات سے بڑی حکومت سے بیان کر دے گا۔ حال دبئی کے ذکر کر دیا گیا ہے۔ سب سے پہلے ضروری مسئلہ اعلیٰ اختیار اور دبئی کی طرح سے حاصل ہونے کے ساتھ ساتھ برطانیہ کو چھوڑوں کی سلطنت سے لاکھا یعنی برطانیہ نے مٹکی بادشاہوں سے وراثت میں پایا ہے۔ اعلیٰ اختیار کی وراثت کے سمبندھ میں تین لائیں ہیں۔ یہ تینوں ایک دوسرے کے خلاف ہیں لیکن تینوں ہی قانونی طور پر جائز ہیں۔

نیا ہند
 ایک لائے یہ ہو۔ جو بادشاہ کی سرکار کی بھی ہو، اگر برطانیہ
 مشن لاج کی طرہ ہو۔ اب چونکہ برطانیہ کی ولایت کسی خاص شخص
 کو نہیں مل رہی ہو اس لئے حالت اس وقت کی طرح ہوجاتی ہے کہ
 کہ محض لاج برہاد ہو رہا تھا اور جب برطانیہ نے اس کی جگہ لی تھی۔
 اس لئے اعلیٰ اختیار ختم ہونا چاہئے۔ ریاستیں آپس میں ایک
 دوسرے سے بات چیت کر کے اپنے سمبندھ طے کر لیں۔ دوسری لائے
 یہ ہوئے۔ ہندستان اور پاکستان نے برطانیہ سے ولایت پائی ہو گی
 لئے ان دونوں کو ہی اعلیٰ اختیار حاصل ہونا چاہئے۔ ایک تیسری لائے
 یہ ہو کر ہندستان کو برطانیہ کی ولایت حاصل ہوئی ہو اس لئے
 اعلیٰ اختیار صرف ہندستان کو ہی حاصل ہونا چاہئے۔

نیا ہند
 ایک لائے یہ ہو۔ جو بادشاہ کی سرکار کی بھی ہے، کہ
 برتانیوں نے اپنی لاج کی واریم ہے۔ اور چونکہ برتانیوں
 کی وراثت کسی خاص شخص کو نہیں مل رہی ہے اس لئے
 اس وقت کی طرح ہوجاتی ہے کہ محض لاج برہاد ہو رہا
 تھا اور جب برطانیہ نے اس کی جگہ لی تھی۔ اس لئے اعلیٰ
 اختیار ختم ہونا چاہئے۔ ریاستیں آپس میں ایک دوسرے
 سے بات چیت کر کے اپنے سمبندھ طے کر لیں۔ دوسری
 لائے یہ ہوئے۔ ہندستان اور پاکستان نے برطانیہ سے
 ولایت پائی ہو گی لئے ان دونوں کو ہی اعلیٰ اختیار حاصل
 ہونا چاہئے۔ ایک تیسری لائے یہ ہو کر ہندستان کو
 برطانیہ کی ولایت حاصل ہوئی ہو اس لئے اعلیٰ اختیار
 صرف ہندستان کو ہی حاصل ہونا چاہئے۔

نیا ہند
 ایک لائے یہ ہو۔ جو بادشاہ کی سرکار کی بھی ہے، کہ
 برتانیوں نے اپنی لاج کی واریم ہے۔ اور چونکہ برتانیوں
 کی وراثت کسی خاص شخص کو نہیں مل رہی ہے اس لئے
 اس وقت کی طرح ہوجاتی ہے کہ محض لاج برہاد ہو رہا
 تھا اور جب برطانیہ نے اس کی جگہ لی تھی۔ اس لئے اعلیٰ
 اختیار ختم ہونا چاہئے۔ ریاستیں آپس میں ایک دوسرے
 سے بات چیت کر کے اپنے سمبندھ طے کر لیں۔ دوسری
 لائے یہ ہوئے۔ ہندستان اور پاکستان نے برطانیہ سے
 ولایت پائی ہو گی لئے ان دونوں کو ہی اعلیٰ اختیار حاصل
 ہونا چاہئے۔ ایک تیسری لائے یہ ہو کر ہندستان کو
 برطانیہ کی ولایت حاصل ہوئی ہو اس لئے اعلیٰ اختیار
 صرف ہندستان کو ہی حاصل ہونا چاہئے۔

نیا ہند
 آزاد کی دُنیا
 جولائی سن ۱۹۷۷

کے سلسلے میں بھارت کے تینوں اصولوں میں سے کوئی بھی شامل نہیں ہے۔ اس طرح پر ایسی باقی ریاست کو سلطنت سے باہر جانے کی اجازت نہیں ہوگی۔

اگر کسی وقت پاکستان یا آکستان میں سے کوئی یا دونوں کے مطالبے کیونکہ فیصلے میں اعلیٰ اختیار کی وراثت کے بارے میں کوئی ذکر نہیں ہو۔ اگر ہندوستان سلطنت سے الگ ہونا چاہے گا تو بادشاہ کی سرکار پاکستان کو اعلیٰ اختیار دے سکتی ہے اور اگر پاکستان سلطنت سے باہر ہونا چاہے گا تو وہ ہندوستان کو وراثت قرار دے سکتی ہے۔ اگر ہندوستان اعلیٰ اختیار دے تو اس سلطنت سے الگ ہونا چاہیں تو بادشاہ کی سرکار کہہ سکتی ہے کہ اعلیٰ اختیار صرف ریاستوں کے لئے چھوڑ دیا گیا ہے اور اس پر اس کی سرکار وراثت سے الگ ہونا چاہیں تو اس سے قطعاً نہیں ہو سکتی۔

یہ فیصلے قانون کے مطابق ہونے سے قطعاً باہر سے کوئی بھی چاہے گا۔ بادشاہ کی سرکار وراثت کے ذریعہ اس پر عمل کرے گی اور اس میں امریکا اس کو مدد دے گا۔



कुछ किताबें

(१) कल्पना कानन—लिखने वाले श्री त्रिजलाल वियाणी।
संके ८०, लियावट नागरी, कीमत दो रुपये, पता—हिन्द प्रकाशन,
राजस्थान भवन, अकोला (वराणसी)।

इस किताब के लिखने वाले श्री त्रिजलाल वियाणी वराण के
मशहूर देश भक्त हैं। किताब से मालूम होता है कि देश भक्त
होने के साथ साथ वह अन्धे लिखने वाले भी हैं। सन् १९४३ में
त्रिजलाल जी वेलोर जेल में कैद थे, वहीं उन्होंने यह छोटे
छोटे तेरह मधुमूल लिखे जो इस किताब के रूप में शायद कर दिये
गए हैं। मधुमूलों में भाषा की सुन्दरता है, नायुक और ऊँचे विचार
हैं। खयालों का खास उड़ान है। छोटी छोटी बातों से चिन्तनी
के लिये काफी सबक भी है। मालूम होता है कि सच्चमुच जेल के
अकेलेपन में एक मस्त और विचारवान इन्सान का दिल और दिमाग
कितनी अच्छी तरह काम कर सकता है। किताब की जवान
हिन्दुस्तानी नहीं, वरा मुश्किल हिन्दी है। हमें यकीन है कि
अंगार वियाणी जी उर्दू अदब से थोड़ी जानकारी हासिल कर लें
तो उनके शब्दों और मुहावरों का खजाना और भी मालामाल
हो जाय और वह कौर्मा जवान हिन्दुस्तानी के फलने फूलने में
बहुत बड़ी मदद दे सकें। फिर भी हम चाहते हैं कि जो लोग
अजकल के ऐसे हिन्दी साहित्य को पढ़ना चाहें जो आर्ट यानी
कला या अदब की निगाह से ऊँचे दर्जे की कही जा सके, वह
इस किताब को जरूर पढ़ें।

कृष्ण कस्ता भैंस

(१) कल्पना कानन—लिखने वाले श्री ब्रज लाल बिहारी, संके ६०,
कलावा, नागरी, वी. वी. प्रकाशन, राजस्थान भवन

अकोला (वराणसी)

इस किताब के लिखने वाले श्री ब्रज लाल बिहारी के
दिल्ली बिकेत हैं। किताब से मालूम होता है कि देश भक्त
होने के साथ साथ वह अन्धे लिखने वाले भी हैं। सन् १९४३ में
त्रिजलाल जी वेलोर जेल में कैद थे, वहीं उन्होंने यह छोटे
छोटे तेरह मधुमूल लिखे जो इस किताब के रूप में शायद कर दिये
गए हैं। मधुमूलों में भाषा की सुन्दरता है, नायुक और ऊँचे विचार
हैं। खयालों का खास उड़ान है। छोटी छोटी बातों से चिन्तनी
के लिये काफी सबक भी है। मालूम होता है कि सच्चमुच जेल के
अकेलेपन में एक मस्त और विचारवान इन्सान का दिल और दिमाग
कितनी अच्छी तरह काम कर सकता है। किताब की जवान
हिन्दुस्तानी नहीं, वरा मुश्किल हिन्दी है। हमें यकीन है कि
अंगार वियाणी जी उर्दू अदब से थोड़ी जानकारी हासिल कर लें
तो उनके शब्दों और मुहावरों का खजाना और भी मालामाल
हो जाय और वह कौर्मा जवान हिन्दुस्तानी के फलने फूलने में
बहुत बड़ी मदद दे सकें। फिर भी हम चाहते हैं कि जो लोग
अजकल के ऐसे हिन्दी साहित्य को पढ़ना चाहें जो आर्ट यानी
कला या अदब की निगाह से ऊँचे दर्जे की कही जा सके, वह
इस किताब को जरूर पढ़ें।

نیا سہند
کچھ مسائل ہیں
جولائی ۱۹۵۷ء

(۲) **اینسان**— لیتھنے والے شری کاशीराम चावला, सके २५६, कीमत एक रुपया चार आने, लिखावट बरद, पता—रीगल पबलिशिंग कम्पनी, कपुरथला.

इस किताब में लेखक ने यह बताया है कि सच्चे इनसान के क्या गुन होते हैं जिनको हासिल करके वह दुनिया के सच्चे को बदल देते हैं और खुद सच्चाई के रास्ते से जा लगते हैं. किताब १२ अध्यायों में बटी है. 'इनसानियत क्या है' में लेखक का एक शेर—

दर दिल पास बका बजबए ईमां होना
आदर्मीयत है यहाँ और यही इनसां होना

अच्छा असर पैदा करता है. 'इनसान और उसका खालिक' में ज्याको ठीक ठीक समझने पर खास जोर दिया गया है. 'इनसान और उसका दिल' में लेखक का एक शेर है—

जहाँ नापाक है तो उसमें है हर शय नापाक
दिल नहीं साफ तो क्या खाक इबादत होगा

और इसी पर कबीर का एक दोहा है—

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत.

'इनसान और उसके खयालात' में लेखक ने कुछ तरकीबें बताई हैं जिन पर अमल करने से बिचार उंच उठ सकते हैं.

इनसान और उसकी खुशी' में कुछ मशहूर पंक्तिजमी किलासकरी की रायें दी हुई हैं. लेखक का कहना है कि इनसान को, तक्रौर पर

(۲) انسان — گفته فانی شری کا شی نام چاولا صفحہ ۲۵۶ قیمت

ایک روپیہ چار آنے، لکھاوت اردو ہیئت۔ پبلشنگ کمپنی کپور تھلا۔
اس کتاب میں لیکھک نے یہ بتایا ہے کہ سچے انسان کے کیا گون ہوتے ہیں جن کو حاصل کر کے وہ دنیا کے سچے کو بدل دیتے ہیں اور خود سچائی کے راستے سے جا لگتے ہیں۔ کتاب ۱۲ ادھیوں میں لکھی گئی ہے۔

درد دل پاسی وفا سب ذریعہ ایصال ہونا
آدمیت ہو یہی اور یعنی انسان ہونا

اچھا اثر پیدا کرتا ہو۔ انسان اور اُس کا خالق ا میں خزا
ہر گز ٹھیک ٹھیک سمجھنے پر خاص زور دیا گیا ہو۔ انسان اور

ظرف ناپاک ہو تو اُس میں ہو ہر قسم ناپاک
دل نہیں صاف تو کہا خاک حیات ہوگی
اور اسی پر تمبیر لا ایک دوہا ہوگی—

من کے ہارے ہار ہو، من کے جیتے جیت.

انسان اور اُس کے خیالات، میں لیکھک نے کچھ ترکیبیں

بتائی ہیں جن پر عمل کرنے سے بخار اور بے امنی کے
انسان اور اُس کی خوشی، میں کچھ مشہور پجھسی ظالموں کی راہیں

دی ہوئی ہیں. لیکھک کا کہنا ہے کہ انسان کو لکھنے پر

ہی ہیرو کر کے اپنی طرف سے محنت کرنے میں کوئی کمی نہ کرنا چاہئے۔ وہ سیدھی سادی اور خدایتہ زندگی کو اچھا بتاتے ہیں۔ کتاب آج کل بہت کام کی ہو۔ اگر اسے خود سے پڑھ کر اس کی بتائی ہوئی باتوں پر عمل کیا جائے تو انسان بہت اونچا اٹھ سکتا ہو۔ کسی صورت لافنی ہو کر یہ کتاب ایسی آسان بولی میں نہیں لکھی گئی ہے۔ گھر گھر میں بولی جاتی ہو اور اللہ جسے چاہتے ہیں۔ یہ کسی کھلتی ہو۔

گھنٹے

گھنٹے لکھنے والے شری سندھو سن ۱۹۰۶ء اکھاڑت گئی تھی۔ میں روپیے ۱ پتے۔ لہذا انگریزی کی پیشکش لکھتے ہوئے ۳ مارچ ۱۹۰۶ء بلوچستان، کالاباغ، روڈ، بمبئی ۲۔

سندھو ہی ایک مشہور کہانی ہے۔ اس کتاب میں ان کی کہانیاں شایع ہوئی ہیں کہانیاں بھی اچھی ہیں کچھ کہانیاں تو بہت ہی اونچے نازک و پیارے اور عمدہ تصویروں سے بھری ہوئی ہیں۔ "کوئی کا جیسا کہ" نام کی کہانی میں پچھے گئی کی صفت پر روشنی ڈالی گئی ہے۔ "گھنٹے" نام کی کہانی میں نازک خیالی اونچے درجے کی ہے۔ "کچھ ہیں" اور "کتاب" ہے "۱۱ میں ہندوستانی اور ملائی تہذیبوں کی اچھی تصویریں ہیں جن میں ہندوستانی سمجھتی ہے جیت ہوئی ہے۔ "واسطو اور ایرانی رہتی ہے" ایک سنجیدہ سبق سے بھری ہوئی کہانی ہے۔ "کیڑے کا نا" مذاق اللہ تصویف سے بھری ہے۔ اس میں یہ دکھایا گیا ہے کہ آسان بھلائی کا راستہ

ہی ہیرو کر کے اپنی طرف سے محنت کرنے میں کوئی کمی نہ کرنا چاہئے۔ وہ سیدھی سادی اور خدایتہ زندگی کو اچھا بتاتے ہیں۔ کتاب آج کل بہت کام کی ہو۔ اگر اسے خود سے پڑھ کر اس کی بتائی ہوئی باتوں پر عمل کیا جائے تو انسان بہت اونچا اٹھ سکتا ہے۔ کسی صورت لافنی ہو کر یہ کتاب ایسی آسان بولی میں نہیں لکھی گئی ہے۔ گھر گھر میں بولی جاتی ہو اور اللہ جسے چاہتے ہیں۔ یہ کسی کھلتی ہو۔

—گنیش پراساد

نہایت — لکھنے والے شری سندھو سن، سہ ۲۰۰۶، لکھاوت ناگاری کرمات تین رپے، پتا — پورا پورہ کمپنی پبلیشرز لمیٹڈ، ۳ راڈ ویلڈنگ، کالاباغ، بمبئی ۲۔

سندھو نامی ایک مشہور کہانی ہے۔ اس کتاب میں ان کی کہانیاں شایع ہوئی ہیں کہانیاں بھی اچھی ہیں کچھ کہانیاں تو بہت ہی اونچے نازک و پیارے اور عمدہ تصویروں سے بھری ہوئی ہیں۔ "کوئی کا جیسا کہ" نام کی کہانی میں نازک خیالی اونچے درجے کی ہے۔ "کچھ ہیں" اور "کتاب" ہے "۱۱ میں ہندوستانی سمجھتی ہے جیت ہوئی ہے۔ "واسطو اور ایرانی رہتی ہے" ایک سنجیدہ سبق سے بھری ہوئی کہانی ہے۔ "کیڑے کا نا" مذاق اللہ تصویف سے بھری ہے۔ اس میں یہ دکھایا گیا ہے کہ آسان بھلائی کا راستہ

کی کسانوں ہے نہ کہ کسی اور کسی کے چھ میں ہی نہ آئے۔ "پہلی نگر کے طار پیکار نام کی کہانی سچ سچ بہت اچھی ہے۔ "چار پیکاروں کی آواز کے پڑنے لار کی بات لکھ ڈالی ہے۔ کہانی خود سے بڑھنے لائق ہے۔ "منش کی کہوٹی" اچھی و اچھا کی طرف سے ہیں ایک بولی ہمیں کہانی ہے۔ "پاپ کے پتھر یہ نام کی کہانی آخر تک اور بہت اچھی ہے کہ طبیعت کو باقی ہو گی اس کا آخر کہتا ہے۔

نیا ہند: بھارت میں جولائی سن ۸۶

کی کہانی بھارت کے کسی اور کسی کے چھ میں ہی نہ آئے۔ "پہلی نگر کے طار پیکار نام کی کہانی سچ سچ بہت اچھی ہے۔ "چار پیکاروں کی آواز کے پڑنے لار کی بات لکھ ڈالی ہے۔ کہانی خود سے بڑھنے لائق ہے۔ "منش کی کہوٹی" اچھی و اچھا کی طرف سے ہیں ایک بولی ہمیں کہانی ہے۔ "پاپ کے پتھر یہ نام کی کہانی آخر تک اور بہت اچھی ہے کہ طبیعت کو باقی ہو گی اس کا آخر کہتا ہے۔

سے اُس میں ٹوٹ سکتا ہے۔ رہاں آسمان ہندی ہے کہیں کہیں بر گنیش پر شاہ

ہماری راے

بھارت کی نئی حکومت

انہی کے بجائے کی بات کاٹھریں اور ایک دو طرف نے ان کی اور بر خرابی دونوں میں سے کسی کے چھ پر نہیں ہو۔ دونوں میں سے کسی کو چھ نہیں ہو۔ دونوں کے دل بھی صاف نہیں ہوئے معلوم ہوتے۔ خودی، سستی اور صفائی ہو بھی نہیں سکتی۔ ابھی تک دونوں محلی ہندستان کی مالک تھیں، کچھ قوتی سرکار میں دونوں بھٹی راج کر رہی تھیں، اصلی نہ سستی تھی ہی سستی، نقلی اصلی بھی ہو جاتا ہے اب ہمیں اب دونوں اطراف کے حکومتوں کی لائی رہ جائیں گی۔ ایک رہ جائے گی ایک

نیا ہند ہمارا ریاست

کی کسانوں ہے نہ کہ کسی اور کسی کے چھ میں ہی نہ آئے۔ "پہلی نگر کے طار پیکار نام کی کہانی سچ سچ بہت اچھی ہے۔ "چار پیکاروں کی آواز کے پڑنے لار کی بات لکھ ڈالی ہے۔ کہانی خود سے بڑھنے لائق ہے۔ "منش کی کہوٹی" اچھی و اچھا کی طرف سے ہیں ایک بولی ہمیں کہانی ہے۔ "پاپ کے پتھر یہ نام کی کہانی آخر تک اور بہت اچھی ہے کہ طبیعت کو باقی ہو گی اس کا آخر کہتا ہے۔

سے اُس میں ٹوٹ سکتا ہے۔ رہاں آسمان ہندی ہے کہیں کہیں بر گنیش پر شاہ

ہماری راے

بھارت کی نئی حکومت

انہی کے بجائے کی بات کاٹھریں اور ایک دو طرف نے ان کی اور بر خرابی دونوں میں سے کسی کے چھ پر نہیں ہو۔ دونوں میں سے کسی کو چھ نہیں ہو۔ دونوں کے دل بھی صاف نہیں ہوئے معلوم ہوتے۔ خودی، سستی اور صفائی ہو بھی نہیں سکتی۔ ابھی تک دونوں محلی ہندستان کی مالک تھیں، کچھ قوتی سرکار میں دونوں بھٹی راج کر رہی تھیں، اصلی نہ سستی تھی ہی سستی، نقلی اصلی بھی ہو جاتا ہے اب ہمیں اب دونوں اطراف کے حکومتوں کی لائی رہ جائیں گی۔ ایک رہ جائے گی ایک

—گاندھ پراسار

ہماری ریاست

بھارت کی نئی حکومت

انہی کے بجائے کی بات کاٹھریں اور ایک دو طرف نے ان کی اور بر خرابی دونوں میں سے کسی کے چھ پر نہیں ہو۔ دونوں میں سے کسی کو چھ نہیں ہو۔ دونوں کے دل بھی صاف نہیں ہوئے معلوم ہوتے۔ خودی، سستی اور صفائی ہو بھی نہیں سکتی۔ ابھی تک دونوں محلی ہندستان کی مالک تھیں، کچھ قوتی سرکار میں دونوں بھٹی راج کر رہی تھیں، اصلی نہ سستی تھی ہی سستی، نقلی اصلی بھی ہو جاتا ہے اب ہمیں اب دونوں اطراف کے حکومتوں کی لائی رہ جائیں گی۔ ایک رہ جائے گی ایک

کرائرس کہلاتی تھی ہینڈسٹان! 'ہندستان نیشنل کرائرس' پر
لگا کر ڈی مائیڈ اور یہی کیا 'بالا ہندیا مسلم لیگ'
نے اور ڈی مائیڈ کیس نے؟ جس کی سٹی میں بالاجی ہندیا
ہے، اسی نے۔

لیگیوں کا یہ تھا یا کہ ہندومت وہ اچھی کر سکتے تھے
کہیں کہ ان کی حکومت کا کام چھوڑے ابھی سو برس پہلے ہوئے۔ اسی
کا لاکھوں کی تھی کہ لاکھوں اچھی حکومت کر سکتے تھے کہ حکومت
نے کا دن ان ہی کی محنت اور قربانی سے پاس آیا تھا۔
لاکھوں اگر خالص ہندو جماعت ہوئی تھی تو اس میں اپنی نظردار کی وجہ
سے انڈیا کی ایک قوم اس کے ہاتھ میں آئی اور اب وہ ہندو
ہو کر اسے لاکھوں کی تھی اور تب کسی حکومت کی گھڑی کی ایک
تھی کہ آئی تھی جھک نہ رہ جائے۔ لاکھوں کا یہ بھی کہنا ہے کہ وہ ایک
سے عرصے پہلے ہی بڑی ہوئی۔ اب ایک کو بیٹھے۔ ایک ہو خالص سامانی
جماعت، پر اس سے کیا ہے اس نے کچھ دلوں میں ہی یہ ثابت
کر دکھایا ہے کہ وہ لاکھوں سے کہیں زیادہ گھوس ہو اور اسی
پر حکومت کرنے میں لاکھوں سے کہیں زیادہ قابل ہو۔ اس کی دلیل
ہی حکومت کرنے کے معاملے میں گنتی کی بنیاد پر فیصلہ نہیں ہونا
چاہئے، کیونکہ گنتی میں کم مسلمان پہلے اٹھایا جوتا اپنی رائٹ میں
راج کر چکے ہیں۔ سینکڑوں برس کر چکے ہیں۔ اور اچھے اچھے
سے کر چکے ہیں۔ جن پر آج کا لاج تھا ان کی نشا ابھی
پا چکے ہیں۔ اور آج بھی تو گنتی میں بہت کم انگریز
اٹھایا ہے حکومت کر رہے ہیں۔ حکومت کرنے میں گنتی کا کیا

جولائی ۱۹۷۷
ہندی راج

لاکھوں کی ہندستانی اور انڈین نیشنل لاکھوں کا لاکھوں کی
اور یہی کیا ہے۔ انڈیا مسلم لیگ ہے۔ اور ۱۲ مئی ۱۹۷۷ء کو
کی گنتی میں آج سارا اٹھایا ہے، اس نے۔

تھیوں کا یہ دعوی تھا کہ حکومت وہ اچھی کر سکتے تھے کہ

ان کی حکومت کا کام چھوڑے ابھی سو برس پہلے ہوئے۔ اسی

لاکھوں کی تھی کہ لاکھوں اچھی حکومت کر سکتے تھے کہ حکومت

نے کا دن ان ہی کی محنت اور قربانی سے پاس آیا تھا۔

لاکھوں اگر خالص ہندو جماعت ہوئی تھی تو اس میں اپنی نظردار کی وجہ

سے انڈیا کی ایک قوم اس کے ہاتھ میں آئی اور اب وہ ہندو

ہو کر اسے لاکھوں کی تھی اور تب کسی حکومت کی گھڑی کی ایک

تھی کہ آئی تھی جھک نہ رہ جائے۔ لاکھوں کا یہ بھی کہنا ہے کہ وہ ایک

سے عرصے پہلے ہی بڑی ہوئی۔ اب ایک کو بیٹھے۔ ایک ہو خالص سامانی

جماعت، پر اس سے کیا ہے اس نے کچھ دلوں میں ہی یہ ثابت

کر دکھایا ہے کہ وہ لاکھوں سے کہیں زیادہ گھوس ہو اور اسی
پر حکومت کرنے میں لاکھوں سے کہیں زیادہ قابل ہو۔ اس کی دلیل
ہی حکومت کرنے کے معاملے میں گنتی کی بنیاد پر فیصلہ نہیں ہونا
چاہئے، کیونکہ گنتی میں کم مسلمان پہلے اٹھایا جوتا اپنی رائٹ میں
راج کر چکے ہیں۔ سینکڑوں برس کر چکے ہیں۔ اور اچھے اچھے
سے کر چکے ہیں۔ جن پر آج کا لاج تھا ان کی نشا ابھی
پا چکے ہیں۔ اور آج بھی تو گنتی میں بہت کم انگریز
اٹھایا ہے حکومت کر رہے ہیں۔ حکومت کرنے میں گنتی کا کیا

سب کچھ ہی سب کچھ ہو اور کانگریس اسی پر اوری ہوئی ہو تب اہلیا کے دو حصے کر دئے جائیں۔ جس میں مسلمان زیادہ ہوں وہاں تک حکومت کرنے اور باقی بر کانگریس کا کریں گے۔ ایک کو ایک سے لفظوں میں ہی بھلائی لیا اور بول، ٹھیک ا مگر حکومت کے لئے جائیں اور حکومتوں کے مکتوبے بھی گئے جائیں یہاں تک کہ خاص مسائل کا مکتوبہ رہ جائے یا حکومتوں کے مکتوبے رہ جائیں !

تک اس دلیل اور انصاف سے تویب کر رہ گئی اور تاک میں بیٹھے

انگریزوں نے اس کی ترمیم کرنے کے بہانے تھپتھپایا اور تھپتھپا

کا نتیجہ ہو آج انڈیا کا مکتوبہ ہو جانا۔

تو بہت نفع میں رہتی اور بہت جلدی جمہورستان کے منہ لوں

کے دل کی مالک بن بیٹھی۔ سندھ میں گئے لے کر آکر اس نے

مذہبی خیال کو چھیڑ کر قومی یعنی انگریز خیال سے کام لیا ہوتا تو

وہ ہندوؤں اور کانگریسوں دونوں پر چھائی ہوئی ہوتی۔ لیکن نے

سینہ آگیاں سے سخت بیویوں نہ لیا ! بیچ بیچ تک حکومت کر دکھانا

چاہتی تھی اور انڈیا کو بھیلانا چاہتی تھی۔ اسلام تو آج تک چلتا آیا

یا کہستان کا بے مطلب کا شخصہ یا تا ہی تاک میں گئے انگریزوں نے

خالاک کانگریسوں اس پر ٹوٹ پڑی۔ پاکستان کو بیڑا انگریزوں نے

اور پیچھے اسی سے چھل گئی کانگریس۔ یہ تو صرف یہ کہ کس لہجہ

تک کے منہ سے پاکستان کے کو رہیں گے۔ اگر یہ آواز کانگریس

کی طرف سے اٹھتی کہ مسلمانوں یا کانگریسوں کو الگ

بسا کر

بسا کر

بسا کر

بسا کر

بسا کر

بسا کر

بسا کر

بسا کر

بسا کر

بسا کر

بسا کر

بسا کر

سب کچھ ہی سب کچھ ہو اور کانگریس اسی پر اوری ہوئی ہو تب اہلیا کے دو حصے کر دئے جائیں۔ جس میں مسلمان زیادہ ہوں وہاں تک حکومت کرنے اور باقی بر کانگریس کا کریں گے۔ ایک کو ایک سے لفظوں میں ہی بھلائی لیا اور بول، ٹھیک ا مگر حکومت کے لئے جائیں اور حکومتوں کے مکتوبے بھی گئے جائیں یہاں تک کہ خاص مسائل کا مکتوبہ رہ جائے یا حکومتوں کے مکتوبے رہ جائیں !

تک اس دلیل اور انصاف سے تویب کر رہ گئی اور تاک میں بیٹھے

انگریزوں نے اس کی ترمیم کرنے کے بہانے تھپتھپایا اور تھپتھپا

کا نتیجہ ہو آج انڈیا کا مکتوبہ ہو جانا۔

تو بہت نفع میں رہتی اور بہت جلدی جمہورستان کے منہ لوں

کے دل کی مالک بن بیٹھی۔ سندھ میں گئے لے کر آکر اس نے

مذہبی خیال کو چھیڑ کر قومی یعنی انگریز خیال سے کام لیا ہوتا تو

وہ ہندوؤں اور کانگریسوں دونوں پر چھائی ہوئی ہوتی۔ لیکن نے

سینہ آگیاں سے سخت بیویوں نہ لیا ! بیچ بیچ تک حکومت کر دکھانا

چاہتی تھی اور انڈیا کو بھیلانا چاہتی تھی۔ اسلام تو آج تک چلتا آیا

یا کہستان کا بے مطلب کا شخصہ یا تا ہی تاک میں گئے انگریزوں نے

خالاک کانگریسوں اس پر ٹوٹ پڑی۔ پاکستان کو بیڑا انگریزوں نے

اور پیچھے اسی سے چھل گئی کانگریس۔ یہ تو صرف یہ کہ کس لہجہ

تک کے منہ سے پاکستان کے کو رہیں گے۔ اگر یہ آواز کانگریس

کی طرف سے اٹھتی کہ مسلمانوں یا کانگریسوں کو الگ

بسا کر

بسا کر

بسا کر

بسا کر

بسا کر

بسا کر

بسا کر

بسا کر

بسا کر

بسا کر

بسا کر

بسا کر

رہیں گے تو نقشہ کچھ اور ہی ہوتا اور ایک اطمینان کے کوئے کوئے میں پھیل گئی ہوتی اور بہت طاقتور ہوتی۔ تب انگریز کیا حال چلتا، یہ بتانا جاسکتا ہے، پر بیکار۔

ایک ہندوؤں لہور لاہور لیسٹیوں پر کیسے چھا جاتی؟ اس کی وجہ یہ ہے کہ وہ ہے ہماری اپنی اور کسی کی بھی ہو سکتی ہے۔ وجہ یہ ہے کہ سرخ اسلامی جماعت ہے اور مسالوں میں زیادہ آدمی صاف دل، کھلی کیفیت، اور جو کھم اٹھانے کو تیار آتے ہیں۔ ہندوؤں میں یہ صفت کم نہیں پائی جاتی ہے۔ مسالوں کی یہ صفت کچھ بغیر نہ ہوتی اور جلی ہی وہ سب کے پیارے بن جائے اور چھا ہی جائے۔

انگریزوں نے سارا مرزا کر کے رکھ دیا۔ انگریز کھتا ہے اور خود سمجھتا ہے کہ حکومت غیر دل پر ہی ہوا کرتی ہے، اینٹوں کی تو خدمت ہوا کرتی ہے۔ اینٹوں کی حکومت کا آنت ہی نہیں آتا۔ اب آستان کو کاٹنے میں اپنی جالی سے ایک پاکستان بنا کر ایک نئی حکومت کی مٹھالی میں کر دیا۔ جراتا ڈال دیا اور سب مرزہ بگاڑ دیا۔ اگر ہماری اس رائے پر لاگو کریں اور ایک دونوں ہم پر عمل پیریں اور کہیں ہندوؤں کی حکومت کو ختم کرنا ہی آتے ہیں، تب جسٹس نہیں، ہم حکومت کو خدمت بخیر دل کی ہوا کرتی ہے، اینٹوں جواب یہ ہوگا، جناب! خدمت غیر دل کی ہوا کرتی ہے، اینٹوں کی خدمت سے کام ہو سکتا ہے نام نہیں اور نام کس کو نہیں چاہئے؟ یوں ایک اور لاگو کریں دونوں کو، انگریزوں نے، ایک خدمت کا رکھا اور نہ حکومت کا! انڈیا کی ملی جلی ایک مسرکار میں حکومت کا بھی جزہ ملتا اور خدمت کا بھی

نیا ہند اور ایک اطمینان کے کوئے کوئے میں پھیل گئی ہوتی اور بہت طاقتور ہوتی۔ تب انگریز کیا حال چلتا، یہ بتانا جاسکتا ہے، پر بیکار۔

ایک ہندوؤں لہور لاہور لیسٹیوں پر کیسے چھا جاتی؟ اس کی وجہ یہ ہے کہ وہ ہے ہماری اپنی اور کسی کی بھی ہو سکتی ہے۔ وجہ یہ ہے کہ سرخ اسلامی جماعت ہے اور مسالوں میں زیادہ آدمی صاف دل، کھلی کیفیت، اور جو کھم اٹھانے کو تیار آتے ہیں۔ ہندوؤں میں یہ صفت کم نہیں پائی جاتی ہے۔ مسالوں کی یہ صفت کچھ بغیر نہ ہوتی اور جلی ہی وہ سب کے پیارے بن جائے اور چھا ہی جائے۔

انگریزوں نے سارا مرزا کر کے رکھ دیا۔ انگریز کھتا ہے اور خود سمجھتا ہے کہ حکومت غیر دل پر ہی ہوا کرتی ہے، اینٹوں کی تو خدمت ہوا کرتی ہے۔ اینٹوں کی حکومت کا آنت ہی نہیں آتا۔ اب آستان کو کاٹنے میں اپنی جالی سے ایک پاکستان بنا کر ایک نئی حکومت کی مٹھالی میں کر دیا۔ جراتا ڈال دیا اور سب مرزہ بگاڑ دیا۔ اگر ہماری اس رائے پر لاگو کریں اور ایک دونوں ہم پر عمل پیریں اور کہیں ہندوؤں کی حکومت کو ختم کرنا ہی آتے ہیں، تب جسٹس نہیں، ہم حکومت کو خدمت بخیر دل کی ہوا کرتی ہے، اینٹوں جواب یہ ہوگا، جناب! خدمت غیر دل کی ہوا کرتی ہے، اینٹوں کی خدمت سے کام ہو سکتا ہے نام نہیں اور نام کس کو نہیں چاہئے؟ یوں ایک اور لاگو کریں دونوں کو، انگریزوں نے، ایک خدمت کا رکھا اور نہ حکومت کا! انڈیا کی ملی جلی ایک مسرکار میں حکومت کا بھی جزہ ملتا اور خدمت کا بھی

नया हिन्द 'हमारी राग जुलाई मन् '४७

और फिर दोनों की जिम्मेदारी मिली जुली होने में इंडिया खिल उठती और चमक उठती मगर तब तो किसी की आँख में काँटा बल कर खटकती।

खेर, अभी कुछ नहीं बिगड़ा, बंटवारा करते करते एके पर पहुंचा जा सकता है और नजर लगाये बैठी दुनिया को हैरत में डाला जा सकता है.

—भगवानदीन
६ जून '४७

'हिन्दू मुस्लिम एकता'

पंडित सुन्दर लाल के

चार लेखों को उन्होंने

सेन्दल कन्सोलियेटरी बोर्ड ग्वालियर

की दावत पर ग्वालियर में दिये.

सौ सके की किताब की कीमत सिर्फ चारह आने

मेंनेजर 'नया हिन्द'

३३ चाई का बाग, इलाहाबाद

जुलाई १९४७

नया हिन्द

नया हिन्द

اور پھر دونوں کی ذمہ داری ملی جلی ہونے میں ایشیا کھل اٹھی اور ایک اٹھی گرت گرت کسی کی آنکھ میں کانٹا بن کر کھپتی جیڑا ابھی کچھ نہیں بڑھا، بڑاہ کرتے کرتے ایسے برہنہ جا سکتا ہے اور اند نظر رکھنے بیٹھی دنیا کو حیرت میں ڈالا جا سکتا ہے۔

—بھگوان دین
۹ جون ۱۹۴۷ء

ہندو مت اور ایکتا

پندت سندر لال

چار لکچر جو انھوں نے سندھیل کونسل میں لبرٹوگوالیا کی دعوت پر لگائے تھے ان میں سے دو صفحے کی کتاب کی قیمت صرف بارہ آنے

میںنےجز "نیا ہند"

۳۳ بابائی کا باغ۔ الہ آباد

”نیا ہند“ کے بارے میں ایک جلتلہ بھائی

نکلل جلتلہ جی سہماویک ’بھارت‘ کے نام ۱۶ جولائی کو بھجا گیا ہے۔

شہی ماٲن سہماویک جی ’بھارت‘ ہلاہلاواؤ.

آشااا ہے اس ٱٲر کو جلتلی ہی ’بھارت‘ میں ٹیک جاتہا اےکر سہیہ کرسکرے.

- () ہلاہلاواؤ باٱس آشااا او ماٲم ہواا کي ’بھارت‘ کے کيسی آٲک میں ’نیا ہند‘ کی باوات کوہے آاس آٲٲر آٲی ہے. ۱۰ کو ساٲرے اء آرسری کام سے سہیہ کير ایللی کے لیرے آلا اناا ٱاا. اهاں ۱۱ کو سہیہ ’بھارت‘ کا اہا آٲک ٱاااے کو مالاا ايسمیں نہہے ایللی سے ۲۶ آاا کو بھجی ہوتی ہے. ’بھارت‘ (آاس اومااااا) کی

کھٲ ماٲک کی آٲٲر ’ہندوستان میں لیاا کٲٲر‘ (لیاا کی سااااا) اٲیٲک (سٲٲی) سے آٲی ہے. آسی آٲٲر کے آٲٲار ٱر سہماویک کے نااا اٲی سٲواوہ کٲماٲر ااا۰ اا۰ آا آناٲر اس سے بھجاا ہوا ٱٲر بھی ’بھارت‘ کے اءک باؤ کے آٲک میں ٱاااے کو مالاا. میں اهاں سیک آٲٲر کے ٱرٲیٲیٲیہ کی بھجی ہوتی ہے. ااس ماٲل (آاسال) آٲٲر کی ہی باوا کرانا آاہتا ہے. ااسمیں ساٲرے اٲی باوا ايس ٱر ساٲی ہماٲر آٲی کی نہہے ہے. اہا ہے کي۔

”نیا ہندی“ کے بارے میں ایک غلط بھائی -

نکلل آٲٲ جی سہماویک ’بھارت‘ کے نام ۱۵ آولائی کو بھجا گیا ہے۔

شہیہ ماٲن سہماویک اچھي ”بھارت“ الہ آٲاا۔

آٲاا ہے اس ٱٲر کو جلتلی ہی ’بھارت‘ میں ٹیک جلتے اےکر سہیہ کرسکرے۔

- () لک ایلک سااا ہنڈے باٲر (ہلے کے بہہ ۹ آولائی کو سہیہ الہ آٲاا ايس آٲا تو معلوم ہوا کہ ’بھارت‘ کے کسی انک میں ’نیاہند‘ کی باوات کوٲی آٲٲر آٲٲر کے لکے آااااا ہوا یہاں ۱۱ کو سہیہ ’بھارت‘ کام سے سہیہ ٱٲر ۵۱ کو سہیہ آٲٲر کو ۱۵ آولائی کو

بھجی ہوتی ہے. ’بھارت‘ (آاس اومااااا) کی کٲٲہ سہیہ کی آٲٲر ’طٲااااااا سہیہ ’لکے کٲٲر‘ (لکے کی ساٲی شہیٲرک (سرخ) سے بھجی ہے۔ اسی آٲٲر کے آاااااا سہماویک کے نام شہیہ سو بوااااا کماٲر ااا۔ اے کا ٱلاٲر سے بھجی ہوا ٱٲر بھی ’بھارت‘ کے ایلک باؤ کے ایلک سہیہ ٱرٲے کو ۱۵۔ سہیہ یہاں صٲرٲ آٲ کے ٱرٲیٲیٲیہ کی بھجی ہوتی ہے ااس سٲل (اصل) آٲٲر کی ہی باوا کرنا آاہتا ہوں۔ ااس سہیہ سب سے ٱرٲی باوا ايس ٱر ساٲی عداٲر کٲی کی کٲی ہے

نیا ہند
۱۰۱

نیا ہند
۱۰۱

نیا ہند
۱۰۱

نیا ہند
۱۰۱

نیا ہند
۱۰۱

نیا ہند
۱۰۱

نیا ہند
۱۰۱

نیا ہند
۱۰۱

نیا ہند
۱۰۱

نیا ہند
۱۰۱

نیا ہند
۱۰۱

نیا ہند
۱۰۱

رہنے والوں کو ملتی جلتی کامیابیوں میں لایا گیا ہے۔ اس کے لیے سب سے پہلی پالیسی

رہی۔ نیا ہند کے لیے ایک نئی پالیسی تیار کی گئی ہے۔ اس میں تمام قوموں کو یکساں مواقع فراہم کیے گئے ہیں۔ نیا ہند کے لیے ایک نیا دور ہے۔ اس میں تمام قومیں برابر کھڑی ہیں۔ نیا ہند کے لیے ایک نیا مستقبل ہے۔ اس میں تمام قومیں برابر کھڑی ہیں۔

ہو گا۔ نیا ہند کے لیے ایک نیا دور ہے۔ اس میں تمام قومیں برابر کھڑی ہیں۔ نیا ہند کے لیے ایک نیا مستقبل ہے۔ اس میں تمام قومیں برابر کھڑی ہیں۔ نیا ہند کے لیے ایک نیا دور ہے۔ اس میں تمام قومیں برابر کھڑی ہیں۔

ہو گا۔ نیا ہند کے لیے ایک نیا دور ہے۔ اس میں تمام قومیں برابر کھڑی ہیں۔ نیا ہند کے لیے ایک نیا مستقبل ہے۔ اس میں تمام قومیں برابر کھڑی ہیں۔

نیا ہند کے لیے ایک نیا دور ہے۔ اس میں تمام قومیں برابر کھڑی ہیں۔ نیا ہند کے لیے ایک نیا مستقبل ہے۔ اس میں تمام قومیں برابر کھڑی ہیں۔

نیا ہند کے لیے ایک نیا دور ہے۔ اس میں تمام قومیں برابر کھڑی ہیں۔ نیا ہند کے لیے ایک نیا مستقبل ہے۔ اس میں تمام قومیں برابر کھڑی ہیں۔

نیا دیند

۲۱۰

۲۱۰

۲۱۰

۲۱۰

۲۱۰

میں نے ان باتوں پر اس سے زیادہ بحث نہیں کرنا چاہتا۔
کوئی بھی صحیح سچائی کے لئے لڑتا ہے اور اس کی

کے لئے وہ کوششیں کرتا ہے۔
میں یہ خطا دیکھتی تھی کہ وہ اس کی

کالماں خلیے ہوتے ہیں۔
میں یہ کہتا ہوں کہ اس کی

کے لئے وہ کوششیں کرتا ہے۔
میں یہ کہتا ہوں کہ اس کی

۲۱۰

۲۱۰

۲۱۰

۲۱۰

۲۱۰

“गीता और कुरान”

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से इंचाले दे देकर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों को बयान किया गया है.

उसके बाद गीता के लिले ज्ञान के वक्त को इस देश की हालत, गीता के पढ़पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आखिर में कुरान से पहले की अरब की हानन, कुरान के बड़पन और एक एक बात पर कुरान की तालीम को बयान किया गया है. इस में कुरान का पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ़्फ़ी तरजुमा दिया गया है. यह भा बतलाया गया है कि कुरान में जेहाद, आक्रोश, आखेरत, जन्नत, नरदन, काहिर बर्गैर किर कुरा गया है.

जो लोग सब धर्मों को एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इतनाम दोनों को इन दो अमर पुस्तकों को सचचा जानकारा हामिन करना चाहें उन्हें इस किताब को जरूर पढ़ना चाहिये.

किताब आसान हिन्दुस्तानी बयान में, नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिन सकता है. पीनेलोन सौ सके की सुन्दर जिनद बंधो किताब की कोमत सिर्फ़ डारै रुपय. डाक खर्च अलग.

मैनेजर “नया हिन्दू”

३३ बाई का बाग, इलाहाबाद

“किताब और कुरान”

लिखक - पंडित सुन्दर लाल

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکٹا کو دکھایا گیا ہے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ہے. اسکے بعد کیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیش کی حالت کیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر کیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ہے.

آخر میں کورآن سے پہلے عرب کی حالت کورآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر کورآن کی قائم کو بیان کیا گیا ہے. اس میں کورآن کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ہے. یہ بھی بتایا گیا ہے کہ کورآن میں جہاد عاقبت آخرت کجنت جہنم کا فر و غیرہ کسے کہا گیا ہے.

جو لوگ سب دھرموں کی ایکٹا کو سمجھنا چاہیں یا ہندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امو دستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاہیں انہیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاہئے.

کتاب آسان ہندوستانی زبان میں لکھی اور اردو دونوں لکھاوتوں میں الگ الگ مل سکتی ہے. پورے تین سو صفحے کی سندھ جاد بدھی کتاب کی قیمت صرف دوپائی روپیہ - ۵۰۰ - ۵۰۰ ڈاک خرچ الگ.

منیجر “نیا ہندو”

۳۳ - بائی کا باغ، الہ آباد

Printer—Bishambhar Nath, Vishwawani Press, South Malaka, Allahabad.

Publisher—Bishambhar Nath for Hindustani Culture Society, 33 Bai ka Bagh, Allahabad.

ہندوستانی کلچر سوسائٹی

مقصد —

- (۱) ایک ایسی ہندوستانی کلچر کا پرمیٹا اور پروجیکٹ کرنا جس میں سب ہندوستانی شامل ہوں۔
- (۲) ایکٹا پمیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا۔
- (۳) پرمیٹا کی تحریروں، کتاب، تحریروں، سیمیناروں کا تقاریر سنوں لکھنے سے سب دلچسپوں، چاتوں، پروگراموں اور فرقوں میں ایسے کا میل پرمیٹا۔

—:0:—

سوسائٹی کے پرمیٹاقت — سر قریح بہادر سپرو، وائس پرمیٹاقت — ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالمق، گورنمنٹ ہائی کے پرمیٹاقت — ڈاکٹر بھگوان داس، سکریٹری — ہندھ سنگھ لال، خزانچی — ڈاکٹر تارا چند۔

گورنمنٹ ہائی کے اور ممبر — ڈاکٹر سید سعید، مسٹر عبدالحمید خواجہ، سواری سید سلیمان لدھی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی جی کپور، مسٹر ایس کے رودرا، پمیلقت پرمیٹاقت ڈاٹیم۔

—:0:—

سوسائٹی کی پمیلٹی شام کا دفتر — جہانگیر واہیا پلاننگ، او سہاقت کلاسی روٹ، فورٹ پمیلٹی۔

پمیلٹی شام کی ممبرینک کمیٹی کے ممبر — شری بی — جی — پمیلٹی، شریہتی صوفیادواواہیا، پرنسپل اے — اے فیضی، شری بی — بیج — پمیلٹی، شریہتی ہنسا پمیلٹی، سید عبداللہ پرمیلٹی، مسٹر کے — وی — شام۔

سوسائٹی کے قاعدوں کے لئے لکھیے۔

سندھ لال

سکریٹری ہندوستانی کلچر سوسائٹی، ۲۲ ہائی کا پمیلٹی، الہ آباد۔

نوٹ — سوسائٹی کے ممبروں کی "نیا ہند" اور سوسائٹی کی سب کتابیں وغیرہ پرمیلٹی میں۔

ہندوستانی کلچر سوسائٹی

مکملہ —

- (۱) ایک ایسی ہندوستانی کلچر کا پرمیٹا، کھیلانا اور پمیلقت کرنا جس میں سب ہندوستانی شامل ہوں۔
- (۲) ایکٹا کھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا۔
- (۳) پمیلقتی پمیلٹی، کتابوں، کانفرنسوں، سیمیناروں سے سب دلچسپوں، چاتوں، پروگراموں اور فرقوں میں ایسے کا میل پرمیٹا۔

—:0:—

سوسائٹی کے پرمیٹاقت — سر تاج بھادور سمر؛ واہس پرمیٹاقت — ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر بھگوان داس، گورنمنٹ ہائی کے پرمیٹاقت — ڈاکٹر بھگوان داس، سکریٹری — ہندھ سنگھ لال، خزانچی — ڈاکٹر تارا چند۔

گورنمنٹ ہائی کے اور ممبر — ڈاکٹر سید سعید، مسٹر عبدالحمید خواجہ، سواری سید سلیمان لدھی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی جی کپور، مسٹر ایس کے رودرا، پمیلقت پرمیٹاقت ڈاٹیم۔

—:0:—

سوسائٹی کی پمیلٹی شام کا دفتر — جہانگیر واہیا پلاننگ، او سہاقت کلاسی روٹ، فورٹ پمیلٹی۔

پمیلٹی شام کی ممبرینک کمیٹی کے ممبر — شری بی — جی — پمیلٹی، شریہتی صوفیادواواہیا، پرنسپل اے — اے فیضی، شری بی — بیج — پمیلٹی، شریہتی ہنسا پمیلٹی، سید عبداللہ پرمیلٹی، مسٹر کے — وی — شام۔

سوسائٹی کے قاعدوں کے لئے لکھیے۔

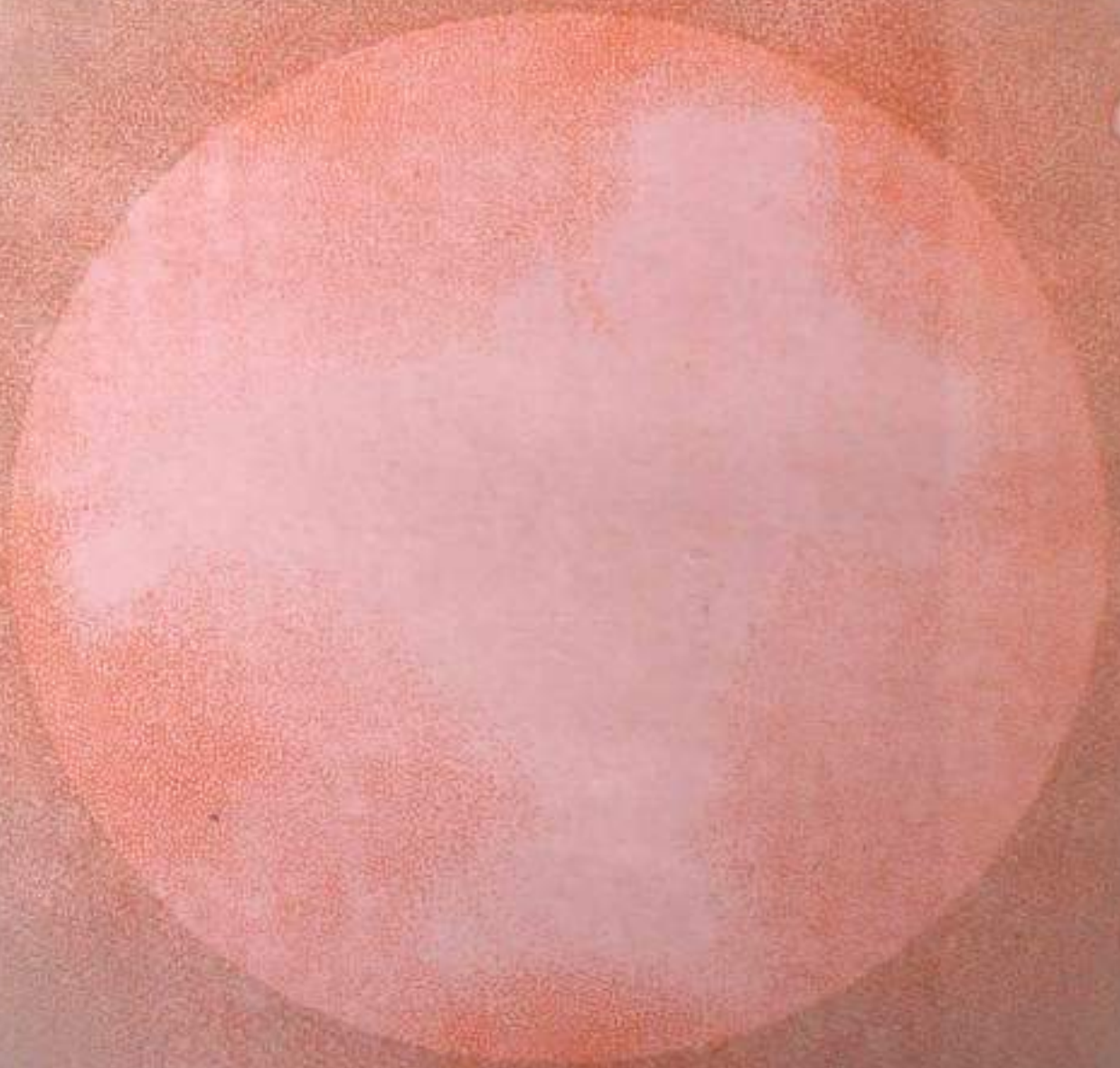
سندھ لال

سکریٹری ہندوستانی کلچر سوسائٹی، ۲۲ ہائی کا پمیلٹی، الہ آباد۔

نوٹ — سوسائٹی کے ممبروں کی "نیا ہند" اور سوسائٹی کی سب کتابیں وغیرہ پرمیلٹی میں۔

مكتبة
جامعة
البحرين

البحرين



البحرين

مكتبة
جامعة
البحرين

ہندوستانی کولچر سوسائٹی کا پرچا

پبلیشر—

نارائن چند، بنگالوور، سوبھاش چندر، بنگالوور، سوبھاش چند

آگست ۱۹۲۷

کتابوں کی فہرست

کتاب کا نام	مصنف	صفحہ	قیمت
۱—گیتا—ہندو دھرم پرچا
۲—گیتا پرچا—ہندو دھرم پرچا
۳—گیتا پرچا—ہندو دھرم پرچا
۴—گیتا پرچا—ہندو دھرم پرچا
۵—گیتا پرچا—ہندو دھرم پرچا
۶—گیتا پرچا—ہندو دھرم پرچا
۷—گیتا پرچا—ہندو دھرم پرچا
۸—گیتا پرچا—ہندو دھرم پرچا
۹—گیتا پرچا—ہندو دھرم پرچا
۱۰—گیتا پرچا—ہندو دھرم پرچا
۱۱—گیتا پرچا—ہندو دھرم پرچا
۱۲—گیتا پرچا—ہندو دھرم پرچا

گیتا پرچا—ہندو دھرم پرچا

پاکستان دس سال

۱۹۴۷ء کا سال، دہلی، پاکستان

ہندوستانی کولچر سوسائٹی کا پرچا

پبلیشر—

نارائن چند، بنگالوور، سوبھاش چندر، بنگالوور، سوبھاش چند

آگست ۱۹۲۷

کتاب کا نام	مصنف	صفحہ	قیمت
۱—گیتا پرچا—ہندو دھرم پرچا
۲—گیتا پرچا—ہندو دھرم پرچا
۳—گیتا پرچا—ہندو دھرم پرچا
۴—گیتا پرچا—ہندو دھرم پرچا
۵—گیتا پرچا—ہندو دھرم پرچا
۶—گیتا پرچا—ہندو دھرم پرچا
۷—گیتا پرچا—ہندو دھرم پرچا
۸—گیتا پرچا—ہندو دھرم پرچا
۹—گیتا پرچا—ہندو دھرم پرچا
۱۰—گیتا پرچا—ہندو دھرم پرچا
۱۱—گیتا پرچا—ہندو دھرم پرچا
۱۲—گیتا پرچا—ہندو دھرم پرچا

گیتا پرچا—ہندو دھرم پرچا

پاکستان دس سال

۱۹۴۷ء کا سال، دہلی، پاکستان

نیا ہند

جلد ۳

آگست ۱۹۷۷

نمبر ۲

نمبر

آگست ۱۹۷۷

نمبر

جات آبادی، پریم دھرم ہے، ہیندوستانی بولتی،
'نیا ہیند' پھونےگا پر پر لیتے پریم کی مولا۔

جات آدی، پریم دھرم آئی، ہندستانی بولی،
دینا ہست، پیئے گاہے گھر گھر لے پریم کی جھولی۔

گیت

(ہندرات پرناک جاکری)

دنییا ارنھی، دنییا کرےوی پریم پھائی کی ریت، نہئی
کامی، وچل، پاپی، نیاگری پریت نہئی ہے پریت نہئی۔

جیوان بھی اک खेल ہے، ساजन, हार जहाँ है जीत नहीं
दुनिया में मैं देख चुका हूँ, कोई किसी का मीत नहीं।

खेड़ते क्यों हो सुख का गाला टूट गया जब मन का तार
दिल है विरोगी, आँखें भरना, यह कोई अच्छा गीत नहीं।

گیت

(مہرت پرناک جھولی)

دنییا اندھی، دنییا فریبی، پریم پھالی کی ریت، نہیں
کامی، پھیل، پاپی، نیاگری، پریم نہیں، پریم نہیں
جیوان بھی اک کھیل ہے، ساजन, हार जहाँ है जीत नहीं
दुनिया में मैं देख चुका हूँ, कोई किसी का मीत नहीं।

धर्म क्या है

(हजरत मोलाना अबुसईद साहब भुमकाधी, चम्पारन.)
धर्म क्या है ? इस सवाल का जवाब देने से पहले कुछ बातें

व्यान करना जरूरी है.

(१) यूरोप और अमरीका में जब से साइन्स, नई तहजीब और नए रंग की राजनीति के साथ साथ अधर्म की आँधी खोर शोर से उठी और खास कर पूरबी रुस के आकाश में खूब चली और ऐसी बड़ी कि धर्म की सारी इमारतों को एक एक इंट को अपने वहाव में बहा कर ले गई तो हमारा एशिया भी, जिसकी तहजीब, कलचर और राजनीति धर्म के सहारे थी इसके असर से न बच सका.

(२) सारी दुनिया में सनातन धर्म, आर्य समाज, पारसी, जैन, बौद्ध, कनयूशियस, यहूदी, ईसाई, इस्लाम, सिक्ख और ब्रह्म समाज बरोरा इन्हीं धर्मों का बोल बाला था. एशिया के नौनि-हाल सभूतों ने जब यूरोप और अमरीका के नए इल्म और कल और नए कलसके और साइन्स को पढ़ा, कौमों और हुकूमतों को लड़ाइयां को, पढ़ा तो उनको मालूम हुआ कि इन लड़ाइयां का बहुत बड़ा हिससा धार्मिक लड़ाइयां ही है. और एक इन्सान की नसल में अलग अलगों और जमातें बनना भी अलग अलग धर्मों का नतीजा है और धर्मों का नांव एक ऐसी निराकार जात पर है, जिसका जानना और जिसकी बातों को समझना

धर्म क्या है

(हजरत मोलाना अबुसईद साहब भुमकाधी, चम्पारन.)

धर्म क्या है ? इस سوال کا جواب دینے سے پہلے کچھ باتیں بیان کرنا ضروری ہیں.

(۱) یورپ اور امریکا میں جب سے سائنس، نئی تہذیب اور نئے رنگ کی رابہیت کے ساتھ ساتھ ادھم کی آنوھی زود شے سے اچھی اور خاص کر پوربی روس کے آکاش میں خوب چلی اور ایسی ہی کہ ادھم کی ساری عمارتوں کی ایک ایک اینٹ کو اپنے ہاڈ میں بنا کر لے لی اور ایشیا بھی جس کی تہذیب، کلمچ اور رابہیت ادھم کے سہارے تھیں اس کے افرستے. نوع انسان.

(۲) ساری دنیا میں سناتن دھرم آریہ سماج، یاری، عین الودھ، کونفویشیس، آندوی، عیسائی، اسلام، بسکھ اور برھم سماج وغیرہ اچھیں دھرموں کا بول بالا تھا. ایشیا کے کونناں بیوتوں نے جب یورپ اور امریکا کے نئے علم اور فن اور نئے فلسفے اور سائنس کو پڑھا تو ان کو دھرموں کی پڑھائیوں کو پڑھا تو ان کو معلوم ہوا کہ ان پڑھائیوں کا بہت بڑا حصہ دھارک اور پڑائیاں ہی ہیں. اور ایک انسان کی نسل میں الگ الگ قومیں اور جماعتیں بننا بھی ایک الگ دھرموں کا نتیجہ ہے اور دھرموں کی نیو ایک ایسی ناکار ذات ہے جو جس کا جاننا اور جس کی باتوں کو سمجھنا

इन्सान की शक्ति से बाहर है. जब नए कलम के और साइन्स में यह पढ़ा कि जो चीज हमारे हवास यानी इन्द्रियों के नहीं आ सकती उसको मानना हमारे लिये जरूरी नहीं है तो इन धर्मों के मानने वालों के लिये जिनका जन्म कर्म और धर्म के गढ़वारों में हुआ था, नई तालीम पाने के बाद धर्म का बन्धन ढीला पड़ गया.

(२) हमारे जमाने के आलिम और पंडित, सच पूछो तो, न विद्वान हैं और न सच्चे पंडित. इन्होंने धर्म को रद्द और उसके शरीर किसी को ठीक नहीं समझा. उन्होंने धर्म के ताप तोल के बाद सिकं लिखी हुई पुस्तक पाथियों को ही बना रक्खा है और उस पर सितम यह है कि जो कुछ उनकी पुस्तक पाथियों में लिखा हुआ है वही सच है और दूसरों की पुस्तक पाथियों का लिखा भूट है. इसी वजह से दुनिया में एक इन्सानी क्रौम के अन्दर अलग अलग धर्म पाये जाते हैं.

जब नए इल्म और साइन्स के पढ़ने वालों ने एक इन्सानी क्रौम के लिये अलग अलग और रंग बिरंगे धर्म देखे और देखा कि हर धर्म वाला अपने धर्म को सच्चा और दूसरे धर्म को भूटा बनाता है और इस सबे और भूटे की जांच के लिये अपनी ही पुस्तक, अपनी ही सोसाइटी और अपने ही बाप दादा के रीति रिवाज और रहन सहन को ठीक माने हुए है और उस निराकार का नाम लेकर अपने रीति रिवाज का प्रचार करता है जिसका ठीक ठीक जानना मनुष्य की शक्तियों से बाहर है तो नए ज्ञानियों, विज्ञानियों के दिल में धर्म के लिये कोई जगह न रही.

अगस्त १९४७

धर्म क्या है

इन्सान की शक्ति से बाहर. जब नए कलम के और साइन्स में यह पढ़ा कि जो चीज हमारे हवास यानी इन्द्रियों के नहीं आ सकती उसको मानना हमारे लिये जरूरी नहीं है तो इन धर्मों के मानने वालों के लिये जिनका जन्म कर्म और धर्म के गढ़वारों में हुआ था, नई तालीम पाने के बाद धर्म का बन्धन ढीला पड़ गया.

(२) हमारे जमाने के आलिम और पंडित, सच पूछो तो, न विद्वान हैं और न सच्चे पंडित. इन्होंने धर्म को रद्द और उसके शरीर किसी को ठीक नहीं समझा. उन्होंने धर्म के ताप तोल के बाद सिकं लिखी हुई पुस्तक पाथियों को ही बना रक्खा है और उस पर सितम यह है कि जो कुछ उनकी पुस्तक पाथियों में लिखा हुआ है वही सच है और दूसरों की पुस्तक पाथियों का लिखा भूट है. इसी वजह से दुनिया में एक इन्सानी क्रौम के अन्दर अलग अलग धर्म पाये जाते हैं.

जब नए इल्म और साइन्स के पढ़ने वालों ने एक इन्सानी क्रौम के लिये अलग अलग और रंग बिरंगे धर्म देखे और देखा कि हर धर्म वाला अपने धर्म को सच्चा और दूसरे धर्म को भूटा बनाता है और इस सबे और भूटे की जांच के लिये अपनी ही पुस्तक, अपनी ही सोसाइटी और अपने ही बाप दादा के रीति रिवाज और रहन सहन को ठीक माने हुए है और उस निराकार का नाम लेकर अपने रीति रिवाज का प्रचार करता है जिसका ठीक ठीक जानना मनुष्य की शक्तियों से बाहर है तो नए ज्ञानियों, विज्ञानियों के दिल में धर्म के लिये कोई जगह न रही.

(۲) مینے سن ۱۹۱۰ مے کسی آزلنار مے پڑا یا کی راس کے آندر وارک مے عک کانکرےس دھڑے. उसमें दुनिया के हर धर्म के बड़े बड़े प्रचारक जुलाए गए. उन्होंने अपने अपने धर्म को पेश किया. इन अलग अलग धर्मों की अनगिनत बातें एक दूसरे से ऐसी जुदा जुदा थीं कि उनका एक करना और उनके खरे खोटे को समझना बड़ा मुश्किल था. इस लिये रاس का चार धर्म को छोड़ कर अधर्म की राह पर चल पड़ा. चार की देखा देखी बहाँ की नौकरशाही, सारे पढ़े लिखे धन दौलत वाले और उनकी देखा देखी साधारण अनपढ़ लोगों ने भी अपने मन से धर्म को त्याग कर अपने अपने मनकी राह पकड़ ली.

मेरी आँखें ३७ साल से इसके दूढ़ने में लगी हुई हैं कि हिंदुस्तान में एकता, आपस में प्रेम और शान्ति कायम करने के लिये कोई ऐसे नेकदिल समझदार लोगों की सोसाइटी कमर बाँध कर खड़ी हो जो कम से कम भारत के तमाम धर्मों को सामने रख कर सब धर्मों की उन बातों को एक जगह इकट्ठा करने की कोशिश करे जो सब में पाई जाती हों.

(۳) हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी इलाहाबाद का ध्या "नया हिनद" का इशतहार मेरी नजर से गुजगा जिसमें मजमून लिखने वालों की जानकारी के लिये सात नम्बर्गों में ग्रह बलाया गया है कि इन्हें ध्यान में रख कर मजमून लिखे कि जिससे एक हिन्दुस्तानी कलचर और मेल मिलाप की खिन्दगी सारे भारत में फैले.

(۳۱) میں نے سن ۱۹۱۰ء میں کسی اخبار میں پڑھا تھا کہ راس کے اندر باکو میں ایک کانفرنس ہوئی۔ اس میں دنیا کے ہر دھرم کے بڑے بڑے پرجھاڑکے باپے گئے۔ انھوں نے اپنے اپنے دھرم کو پیش کیا۔ ان الگ الگ دھرموں کی آن کرت باتیں ایک دھرم سے لے کر دوسری تک سنا کر ان کا ایک کرنا اور ان کے دھرم کے کوٹے کو بچھنا بڑا مشکل تھا۔ اس لئے راس کا ارادہ یہ ہو گیا کہ وہ دھرم کی راہ پر چل پڑا۔ چار کی دیکھا دیکھی دہان کی دیکھا دیکھا سارے پڑھے لکھے دھن دولت والے اور ان کی دیکھا دیکھی سادھان ان پڑھ لوگوں نے بھی اپنے من سے دھرم کو تیار کر لیا ہے اپنے من کی راہ پر چلے۔

میری آنکھیں ۳۷ سال سے اس کے ڈھونڈنے میں لگی ہوئی ہیں کہ ہندستان میں ایکتا آپس میں پریم اور شانتی قائم کرنے کے لئے کوئی ایسے نیک دل سمجھدار لوگوں کی سوچا جی کر باہم کر کھڑی ہو سکے جو کم سے کم تجارت کے تمام دھرموں کو سامنے رکھ کر سب دھرموں کی ان باتوں کو ایک جگہ اکٹھا کرنے کی کوشش کرے جو سب میں پائی جاتی ہوں۔

(۳۲) ہندستان کی کلچر سوسائٹی الہ آباد کا چھپا "نیا ہند" کا اشتہار میری نظر سے گزرا جس میں مسنونہ لفظوں والوں کی جان کاری کے لئے سات نمبروں میں یہ بتایا گیا ہو کہ انھیں دھیان میں رکھ کر مسنونہ لکھے مگر جس سے ایک ہندستانی کلچر اور میل ملاپ کی زندگی سانس بھارت میں پھیلتے۔

جہاں میں "نیا ہند" کا یہ شہریت پڑا تو میری خواہی
 کی کوئی حد نہ رہی اور اس سے بھی زیادہ خوشی اس بات پر ہوئی
 کہ اس سو سائٹی کا بنیادی پیچھے ایک ایسے پریم دھاری انسان کے
 ہاتھوں سے رکھا گیا اور میں کا نام سندھ لال اور اللہ بر کسی کی طرف سے
 رکھنے میں ہندستان میں بے مثال ہو۔
 مجھ کو یوری آشا اور کہ ہندو، ساتنی آریہ، اہین، اولہ، پھیلا

میں کو پوری آراہا ہے کہ ہندو، سنااتنی، آریہ، آین، بویہ،
 یھودی، ایسارڈ، مسلمانان، سکھ اور براہمنماجو بریہ
 برمی کے آلالیم آریہ اور برمی سے برمی رکنے والے برمی
 رکنے برمی کی رکنے، کرم کی رکنے، کالہر، تھوریہ،
 آریہ، رکنے و ریکارن کی رکنے کرایم رکنے میں ہندوستانی
 کالہر سو سارڈی کی برمی رکنے اور ہند نیک کام میں
 نہ رکنے۔

(۶) میں سنسکرت اور اسکا رکنے نہیں جانتا،
 مگر یہ جانتا ہوں کہ برمی رکنے پورانہ ہے کہ اسکا
 پندرہوا کا برمی رکنے نہیں جانتا جاسکتا۔ یہ برمی نہیں
 کہا جاسکتا کہ سنسکرت زبان کا جنم کس اور کس
 زمانے میں ہوا اور دھرم کا جنم کس اور کس زمانے
 میں ہوا۔ اصل زبان کے بعد دھرم اور دھرم کی اصل زبان
 سے بنتا ہے۔ اسی وقت بنتا ہے اور اصل زبان اپنی
 پہلی برمی سے نکلی کر ایسے رکنوں میں جاتی ہے کہ جہاں سے
 پہلی برمی زبان بولتے ہوں۔ دیکھو۔ پہلے کی اصل و
 پہلی برمی اور کہ وہ ان کو دیکھو، دیکھو بولنے والا دیکھو۔

جہاں میں نے دنیا ہند، ا کا یہ اشتہار پڑھا تو میری خوشی
 کی کوئی حد نہ رہی اور اس سے بھی زیادہ خوشی اس بات پر ہوئی
 کہ اس سو سائٹی کا بنیادی پیچھے ایک ایسے پریم دھاری انسان کے
 ہاتھوں سے رکھا گیا اور میں کا نام سندھ لال اور اللہ بر کسی کی طرف سے
 رکھنے میں ہندستان میں بے مثال ہو۔
 مجھ کو یوری آشا اور کہ ہندو، ساتنی آریہ، اہین، اولہ، پھیلا

میں کو پوری آراہا ہے کہ ہندو، سنااتنی، آریہ، آین، بویہ،
 یھودی، ایسارڈ، مسلمانان، سکھ اور براہمنماجو بریہ
 برمی کے آلالیم آریہ اور برمی سے برمی رکنے والے برمی
 رکنے برمی کی رکنے، کرم کی رکنے، کالہر، تھوریہ،
 آریہ، رکنے و ریکارن کی رکنے کرایم رکنے میں ہندوستانی
 کالہر سو سارڈی کی برمی رکنے اور ہند نیک کام میں
 نہ رکنے۔

(۶) میں سنسکرت اور اسکا رکنے نہیں جانتا،
 مگر یہ جانتا ہوں کہ برمی رکنے پورانہ ہے کہ اسکا
 پندرہوا کا برمی رکنے نہیں جانتا جاسکتا۔ یہ برمی نہیں
 کہا جاسکتا کہ سنسکرت زبان کا جنم کس اور کس زمانے
 میں ہوا اور دھرم کا جنم کس اور کس زمانے
 میں ہوا۔ اصل زبان کے بعد دھرم اور دھرم کی اصل زبان
 سے بنتا ہے۔ اسی وقت بنتا ہے اور اصل زبان اپنی
 پہلی برمی سے نکلی کر ایسے رکنوں میں جاتی ہے کہ جہاں سے
 پہلی برمی زبان بولتے ہوں۔ دیکھو۔ پہلے کی اصل و
 پہلی برمی اور کہ وہ ان کو دیکھو، دیکھو بولنے والا دیکھو۔

में जो कुछ भी धर्म शब्द के बारे में कहेंगा हां सकता है कि संस्कृत और अरबी व्याकरण मेरा साथ न दें. मेरे व्याख्यान में कुछ फर्क हो तो विद्वान लोग यह कह कर कि व्याकरण में ऐसा नहीं है टाल न दें. यत्कि शब्दों और उनके अर्थों की गहराई में जाकर जो मनलगाती बात हो उसीको आपनाने.

धर्म शब्द—

धर्म का शब्द ध, र, म, से बना है. अत्र सवाल यह है कि धर्म चार अक्षर वाला शब्द है या तीन अक्षर वाला और अगर तीन अक्षर वाला है तो कौन कौन हरक अस्त्र है. यह तो सबको मालूम है कि धर्म तीन अक्षर वाला है और अस्त्र धातु 'धृ' है और उसका 'म' अलहदा है और धृ + म से मिल कर धर्म बना है.

संस्कृत की 'धृ' धातु की जगह अरबी जवान में दहरून शब्द मौजूद है और 'म' की जगह 'जमुन' पाया जाता है. इन दोनों शब्दों को जब मिलाया जाय तो संस्कृत में 'धर्म' और अरबी में 'दहरउम' या 'दहरूलउम' बन जाता है.

संस्कृत में 'धृ' के अर्थ जहाँ बहुत से हैं वहाँ चाल चलन और प्रणाली के भी हैं. अरबी में भी 'दहर' के माने बहुत हैं. इन मालों में जमाना और उसकी गर्दश, आदत यानी चाल चलन और इरादा भी है.

संस्कृत धर्म का 'म' शायद आप् का मुखफक यानी हलका किया हुआ है. जयादा बोलने से ऐसा अकसर हुआ करता है.

हैं जो कच्चे भी दहरूम शब्द के बारे में कोस का सकता है. संस्करत और عربی ویا کون میا سا کله نه دیں. میرے بیان میں کچھ فرق ہو تو وہ طمان لوں یہ کہہ کر کہ دیا کون میں ایسا نہیں اور حال نہ دیں بلکہ شہدوں اور ان کے اکتھوں کی گہرائی میں جا کر مدغم ہوتے ہیں۔ بات ہو ایسی کہ ایسا ہیں۔

دھرूम شہید—

دھرूम کا شہید د ا ل ا س ا م سے بنا ہوا ہے۔ اب سوال یہ ہے کہ دھرूम کا اکثر والا شہید اور یا تین اکثر والا اور اکثر میں اکثر والا ہے کہ کون کون حرفت اصل ہیں۔ یہ تو سب کو معلوم ہے کہ دھرूम سے اصل دھواو دھوی ہے اور اس کا دھریم یا دھیرہ ہے اور دھیری + م سے مل کر دھریم بنا ہے۔

سنسکرت کی 'دھری' دھواو کی جگہ عربی زبان میں 'دھریم' شہد موجود ہے اور 'م' کی جگہ 'ا' پایا جاتا ہے۔ ان دونوں شہدوں کو جب ملایا جائے تو سنسکرت میں 'دھریم' اور عربی میں 'دھریم' یا 'دھر الام' بن جاتا ہے۔

سنسکرت میں 'دھری' کے اکتھ جہاں بہت سے ہیں وہاں چال چلن اور پرزائی کے بھی ہیں۔ عربی میں بھی 'دھریم' کے معنی بہت ہیں۔ ان معنیوں میں زمانہ اور اس کی گردش، عادت یعنی چال چلن اور ارادہ بھی ہیں۔

سنسکرت دھریم کا 'م' شاید 'ام' کا مخفف یعنی ہلکا کیا ہوا ہے۔ زیادہ بولنے سے ایسا اکثر ہوا کرتا ہے۔

संस्कृत का ओम् इवरी (यहूदी) जवान का 'एम' और अरबी जवान का 'उम्मुत' एक ही धैले के चट्टे चट्टे हैं. अरबी जवान में 'उम्मुत' के माने 'अस्तुलशरी' यानी हर चीज की जड़ के हैं. माँ बाप को भी 'उम्' कहा जाता है क्योंकि वह अपनी औलाद को अस्त या जड़ होते हैं. 'उम्' उसको भी कहते हैं जिस पर चीजों का सहारा हो. संस्कृत में ओम् और इवरी में 'एम' उस निराकार और 'लैस मसलही शैउन' जात को कहा जाता है जो सारे संसार और कुल कायनात (सृष्टि) की जड़ है. संसार की सारी चीजों अपनी जात और अपने गुणों के साथ उसो ओम् और एम के सहारे खड़ी हैं. दूसरे शब्दों में सारा संसार अगर एक अथाह और वे कितार शरीर है तो उसका आत्मा ओम् और एम है जिसको फारसी में खुदा और अरबी में अल्लाह कहते हैं.

अब संस्कृत के धर्म और अरबी के दहरलउम के माने खुदा का दरार. खुदा का चलन और खुदा का जानन होते हैं. इस्लाम में धर्म को दीन के शब्द से बयान किया है जिसके मानी बदला, आदत, हुकम कैसला, परहेजगारी, इयादत और वह सारी चीजें हैं जिनके धारिये भगवान, खुदा की भक्ति की जाय. चूंकि धर्म के ही धारिये से भगवान की भक्ति की जाती है इसलिये इसको दीन कहा है.

धर्म को 'इस्लाम' भी कहा जाता है. 'सिलमुन' के माने मेल मिलाप और मुलह के हैं. 'सिलमुन' से इस्लाम बना तो इसके माने मुलह में दालिल होने के हैं. चूंकि अरब देश में नास्तिक बराहमिया,

अस्तुलशरी

धर्म की ओ

न्यास

संस्कृत का ओम् इवरी का 'एम' और अरबी जवान का 'उम्मुत' एक ही धैले के चट्टे चट्टे हैं. अरबी जवान में 'उम्मुत' के माने 'अस्तुलशरी' यानी हर चीज की जड़ के हैं. माँ बाप को भी 'उम्' कहा जाता है क्योंकि वह अपनी औलाद को अस्त या जड़ होते हैं. 'उम्' उसको भी कहते हैं जिस पर चीजों का सहारा हो. संस्कृत में ओम् और इवरी में 'एम' उस निराकार और 'लैस मसलही शैउन' जात को कहा जाता है जो सारे संसार और कुल कायनात (सृष्टि) की जड़ है. संसार की सारी चीजों अपनी जात और अपने गुणों के साथ उसो ओम् और एम के सहारे खड़ी हैं. दूसरे शब्दों में सारा संसार अगर एक अथाह और वे कितार शरीर है तो उसका आत्मा ओम् और एम है जिसको फारसी में खुदा और अरबी में अल्लाह कहते हैं.

अब संस्कृत के धर्म और अरबी के दहरलउम के माने खुदा का दरार. खुदा का चलन और खुदा का जानन होते हैं. इस्लाम में धर्म को दीन के शब्द से बयान किया है जिसके मानी बदला, आदत, हुकम कैसला, परहेजगारी, इयादत और वह सारी चीजें हैं जिनके धारिये भगवान, खुदा की भक्ति की जाय. चूंकि धर्म के ही धारिये से भगवान की भक्ति की जाती है इसलिये इसको दीन कहा है.

इन्वार्डिमी सावई, मजूम, यहूद, ईसाई मिल मिल कर सात धर्म के लोग थे जो एक दूसरे के 'धर्म ग्रन्थों' भ्रष्टा मुनि और अवतारों को बुरा भला कहते और दुरमनी करते थे. कुरान मजीद ने अपने मानने वालों को इस बात से सख्ती के साथ रोका और सब धर्मों से सुलह का हाथ बढ़ाया. चूंकि अरब के इस धर्म ने सुलह का ऐलान किया इसलिये जो राखस इस जमान में मिलता उसको सुस्लम और इस सुलह चाहने वाली समाज को इसलाम कहा जाने लगा.

इसलाम में धर्म को शरअ और शरीयत भी कहा गया है जिसके मानी उस साक सुथरे और चौड़े रास्ते के हैं जिस पर चल कर इन्सान ईश्वर तक पहुँच सकता है. इसी को मजहब भी कहते हैं क्योंकि अरबी में मजहब के माने रास्ते के हैं. कुरान ने इसी धर्म को "सिरते मुस्लमीम" भी कहा है—जिसके माने "सीधे रास्ते" के हैं. कहीं इसको "सिरते हर्माद" भी कहा गया है जिसके माने सुन्दर रास्ते के हैं. कुरान मजीद में धर्म को "कितारतुल्ला" भी कहा गया है जिसके माने सुधा के उस दस्तूर और कानून के हैं जिसकी पाबन्दी करने से इस दुनिया में और मौत के बाद की दुनिया में आदमी को सुधीवर्ती से मुक्ति (निजात) मिलती है. इसी को 'सबीलिरब्ब' कहा गया है जिसके माने पालनहार की उस राह उसके उस कानून के हैं जिसके जरिये से वह निराकार ओम् मनुष्य के शरीर और आत्मा दोनों का पालन करता है.

धर्म के प्रमान (सुबूत) के लिये हम किसी खास धार्मिक

अस्त

दुहरम क्या हो

न्यास

अप्राप्यै صابئاً بحس، یهود، عیسائی مل لاکر سات دهرم کے لوگ تھے جو ایک دوسرے کے دهرم گرنتھوں، ریشی منی اور اولادوں کو برا بھلا کہتے اور دشمنی کرتے تھے. قران مجید نے اپنے ماننے والوں کو اس بات سے سختی کے ساتھ روکا اور سب دهرموں سے صلح کا ہاتھ بڑھایا. چونکہ عرب کے اس دهرم نے صلح کا اعلان کیا اس لئے جو شخص اس جماعت میں ملتا اس کو مسلم اور اس صلح چاہنے والی سماج کو اسلام کہا جانے لگا.

اسلام میں دهرم کو شریع اور شریعت بھی کہا گیا اور جس کے معنی اس صاف شہدے اور چھوٹے راستے کے ہیں جس پر چل کر انسان ایشوریک پہنچ سکتا ہو. اسی کو مذہب بھی کہتے ہیں کیونکہ عربی میں مذہب کے معنی راستے کے ہیں. قران مجید میں نے اسی دهرم کو "شرط مستقیم" بھی کہا ہے—جس کے معنی "موسمے لاکے" کے ہیں. کہیں اس کو "شرط حمید" بھی کہا گیا ہے جس کے معنی "شرط اللہ" بھی کہا گیا ہے جس کے معنی "شرط اللہ اور قانون" کے ہیں جس کی پابندی کرنے سے اس دہنی میں اور موت کے بعد کی دنیا میں آدمی کو "مسیبتوں" سے سختی و نجات ملتی ہے۔ اسی کو "سبیل رب" کہا گیا ہے جس کے معنی پالنہاری اور اس راہ کے اس قانون کے ہیں جس سے نہی سے وہ کارنامہ نفس کے شریر اور آقا صوفیوں کا پالنہ کرتا ہو۔ دهرم کے پرمان (شہوت) کے لئے ہم کسی خاص دھار کے

سماج کی بے نیکیوں اور کالیوں کو پیش کرنا اس لئے مناسب خیال نہیں کرتے کہ دوسری دھماکے سماج میں اور خاص کم کا بچوں پر جو دھمکیوں کے لئے ہے لکھ برائی سائنس کی تعلیم کے لئے ہوئے ہیں اور جو بڑے سے دھرم کہہ رہے ہیں کہ ابی نہیں مانتے کسی خاص دھماکے سماج کی بے نیکیوں پر کیے ہیں لکھ سکتے ہیں اس لئے کہ مناسب ہو کہ ہم خود اس اہم کے ہاتھ کی اس بنائی ہوئی کتاب اس لئے کہ اس سے دھرم کے ہونے اور اس کے سچے ہونے کے ثبوت پیش کریں جس پر سب کا اتفاق ہو کہ یہ کتاب ناظر خداز اور محض ایک ایسے شخص کی کتاب ہو۔ اب یہ سوال پیدا ہوتا ہو کہ ایسے کون ایسے شخص ہوں گے جس پر سب سے دھماکے سماجوں اور خاص کر دھرم کے لئے ماننے والے عالموں کا اتفاق ہو کہ یہ ایسے شخص کے ہاتھ کی بنائی ہوئی کتاب ہوگی اس سوال کا جواب ہو کہ وہ کتاب یہ عالم کو اچھا لے سکتے ہیں۔

عالم شہید

عالم شہید عجمی زبان کا شہید ہو جس کی دھماکہ عالم کو جس کے لئے عظیم شہادت انتہائی یعنی چھٹے کے ہیں۔ عالم ایسی چیز کو کہا جاتا ہو جو کسی نے نشان یعنی تراکار کے لئے بیٹھا اور نشان کا کام دے۔ سارا نشان اس تراکار کے لئے ہے یعنی خدا پر مشتمل کا نشان نشان اور چھٹے ہو۔ اس لئے پورے عالم کو عالم کہتے ہیں۔ یہ بھی ہو سکتا ہو کہ عالم کو دھماکہ عالم ہو جس کے لئے گمان یا جاننے کے ہیں۔ تو عالم وہ آواز یعنی جھنڈ اور ہوا جس کے ذریعے سے آن کوکھی اور جھنڈی آن لگتی اور

(۲۲۲)

آلاتم شہد

آلاتم شہدی جہان کا شہد ہے جسکو یا تو آلاتم ہے جسکے مانے "آلاتمات" نشان یا تو چہند کے ہیں۔ آلاتم ایسی چیز کو کہا جاتا ہے جو کسی کو نشان یا تو نیاکار کے لئے چہند اور نشان کا کام دے۔ سارا سنسار اس نیاکار کے لئے ہے۔ اس لئے پورے عالم کو (آلاتم) آلاتم کہتے ہیں۔

یہ مانے ہو سکتا ہے کہ آلاتم کو یا تو آلاتم ہے جسکے مانے جہان یا جاننے کے ہیں۔ تو آلاتم چہند آلاتم یا تو جہان یا تو جسکے چہند سے آواز یعنی، آواز یعنی، آواز یعنی اور

نیا دنیا
ذہم کیمیا ہے
انجانانی चीज जानी जाय. ओम् और उसका तमाम काम हमारे तमाम चाहिरी इदराकात यानी मनुष्य की सारी इन्द्रियों के ज्ञान से बाहर है और इस जहान से उस निराकार सर्व शक्तिमान की जात और उसके गुणों का ज्ञान होता है तो इन सब मौजूदात को आलम कहते हैं जिसका बहुवचन (जमा) आलमीन, आलमून और आवालम होता है.

जो आदमी इस संसार की हस्ती से उस अविनाशी हस्ती का और इस संसार की अनगिनत चीजों के गुणों से उस सर्व शक्तिमान की एक एक शक्ति का इल्म हासिल करता है उसे आलमि कहा जाता है.

ब्रह्मानन्द शब्द —

मेरे नबदीक ब्रह्म शब्द भी दो शब्दों से मिलकर बना है. एक 'ब्रह्' और दूसरा 'म'. ब्रह् शब्द की जगह अरबी जवान में बरहनुन है जिसके माने दलील, सुबूत, बुरहान, वयान या प्रमान है. दूसरा शब्द 'म' है जिसका मतलब मैं ऊपर वयान कर चुका हूँ. मेरे नबदीक कर्म और जन्म का 'म' भी इन्हीं मानों में आया है. अब संस्कृत का 'ब्रह्म' और अरबी का 'बरहनुन' एक ही शब्द हो गया जिसके माने ईश्वर का प्रमान, खुदा का सबूत हुए. सारा संसार और उसकी एक एक चीज उस निराकार के होने का प्रमान है. उस सर्व शक्तिमान की एक एक शक्ति और एक एक गुण का हर एक चीज अपने अनगिनत गुणों से साफ सुबूत दे रही है. इसलिये इस पूरे संसार को ब्रह्म कहा जाता है और चूँकि साइन्स के आचार्यों के खयाल से ब्रह्म गोल मोल है इसलिये उसको ब्रह्मानन्द कहा जाता है. जो विद्वान

انگنت علم

ذہم کیمیا ہو

نیا دنیا

ان جانی چیز جانی جائے. اوم اور اُس کا تمام کام ہمارے تمام ظاہری ادھارات یعنی نقش کی ساری اہندلیوں کے اکیان سے باہر ہو اور اس جہان سے اُسے ڈاکار سزو. فطرتی ان کی ذات اور اُس کے کئیوں کا بیان ہوتا ہے اور ان سے سب موجودات کو عالم کہتے ہیں جس کا بہو کچین رجح (عالمین) عالموں اور محالم ہوتا ہے.

برہمانند شہد

جو آدمی اس سنسار کی سمیج سے اُسے اپنا نئی سچی اور اسی علم کی آگنت چیزوں کے گہوئی سے اُسے سرب سچی ان کی ایک ایک فطرتی کا علم حاصل کرتا ہے اُسے عالم کہا جاتا ہے.

ब्रह्म या ब्रह्मानन्द की एक एक चीज और उसके गुणों का पूरा इत्थम रखते हैं और इसके भेद को समझ भूक्त कर उस निराकार को जान और उस सर्व शक्तिमान को एक एक शक्ति को ब्रह्मानन्द से उड़ उड़ कर उसका प्रचार करते हैं वही सच्चे ब्राह्मण हैं.

(१२२)

हमारी जमीन चौबीस हजार मील का एक गोल कुर्या या गेंद है जिसका कुतुर (व्यास) आठ हजार मील का है. कहा जाता है कि इसके अंदर बीच में चार हजार मील कुतुर का एक गोल शीशे का गर्म और खोलता हुआ कुर्या है और इसके ऊपर एक हजार मील मोटा सब तरफ धातों का खोल है. फिर इस खोल पर एक हजार मील मोटा सब तरफ पत्थरों का खोल है और फिर उस पर कसीब तीस मील मोटा यह खाकी खोल है जिसको जमीन का खिलका और कशारे अर्ज कहते हैं. इस जमीन के दो विहाई खिलके पर लहरें मारते हुए समन्दर, बहते हुए नदी नाले, दरिया, जमे हुए पहाड़, खड़े हुए गाछ (दरखत) और फल, फेला हुई छोटो बड़ी लताएं और बेलें और हजारां रंग के जमीन पर रंगते और चलते फिरते और पानी में तैरते और हवा में उड़ते हुए जानवर हैं. फिर सासी जमीन पर हर तरफ मीलों मोटा हवा का दल है जिसमें कोहा बादल बिजली और डाई लाख मील दूर पर चमकता हुआ चाँद है. यह सारी चीजें एक दूसरे को खांचने वाली शक्तियां से बंधी हुई जमीन के निर्दा निर्द घूमती हैं. सब पूछो तो जमीन एक मेहा, मेख या खंडा है और यह सारी चीजें इसके निर्द घूमती फिरती हैं. हमें इन्हीं सारी चीजों को मिला कर विज्ञानमें अर्थात् या विरय कहते हैं, जो लाखों मील में फैला हुआ है.

अगस्त सन्

दसम का दिन

नया सन्

जिनका ब्रह्मण्ड की एक एक चीज और उसके गुणों का पूरा इत्थम रखते हैं और इसके भेद को समझ भूक्त कर उस निराकार को जान और उस सर्व शक्तिमान को एक एक शक्ति को ब्रह्मानन्द से उड़ उड़ कर उसका प्रचार करते हैं वही सच्चे ब्राह्मण हैं.

हमारी जमीन चौबीस हजार मील का एक गोल कुर्या या गेंद है जिसका कुतुर (व्यास) आठ हजार मील का है. कहा जाता है कि इसके अंदर बीच में चार हजार मील कुतुर का एक गोल शीशे का गर्म और खोलता हुआ कुर्या है और इसके ऊपर एक हजार मील मोटा सब तरफ धातों का खोल है. फिर इस खोल पर एक हजार मील मोटा सब तरफ पत्थरों का खोल है और फिर उस पर कसीब तीस मील मोटा यह खाकी खोल है जिसको जमीन का खिलका और कशारे अर्ज कहते हैं. इस जमीन के दो विहाई खिलके पर लहरें मारते हुए समन्दर, बहते हुए नदी नाले, दरिया, जमे हुए पहाड़, खड़े हुए गाछ (दरखत) और फल, फेला हुई छोटो बड़ी लताएं और बेलें और हजारां रंग के जमीन पर रंगते और चलते फिरते और पानी में तैरते और हवा में उड़ते हुए जानवर हैं. फिर सासी जमीन पर हर तरफ मीलों मोटा हवा का दल है जिसमें कोहा बादल बिजली और डाई लाख मील दूर पर चमकता हुआ चाँद है. यह सारी चीजें एक दूसरे को खांचने वाली शक्तियां से बंधी हुई जमीन के निर्दा निर्द घूमती हैं. सब पूछो तो जमीन एक मेहा, मेख या खंडा है और यह सारी चीजें इसके निर्द घूमती फिरती हैं. हमें इन्हीं सारी चीजों को मिला कर विज्ञानमें अर्थात् या विरय कहते हैं, जो लाखों मील में फैला हुआ है.

हमारी जमीन और उसके आस पास अतारद (बुध), जोहरा (शुक्र), मिर्रील (मंगल), मुहररी (ब्रहस्पति), जुहल (सनीचर), यूरिनस, नेपच्यूर वगैरा बड़े बड़े सैन्धार हैं और इनके अलावा करीब दो सौ के और छोटे छोटे सैन्धार हैं जो हमारे सूरज के निर्दा निर्द आकाश के अरवां मौलों में घूमते फिरते हैं.

अरवां जवान में सूरज को मिराज कहते हैं. इन दोनों शब्दों की एक धातु यानी स, र, ज है जिसके माने रोशनी चिराग के हैं. कहा जाता है कि हमारी जमीन से सूरज तेरह लाख गुना बड़ा है. इसके ऊपर का खोल आग के मसालों का है जो हर वक़्त जलता और रोशन रहा करता है. इसकी लपटें चार चार लाख मील तक दौड़ती हैं. सब के सब सन्धार सूरज से टपक कर गिरे हैं और गिरने के बाद भी वह सूरज की उन गैसों से पलते बढ़ते हैं जो इसके शीलों से बाहर होकर आकाश में फैलती हैं. इन बातों को ध्यान में रखते हुए कहा जा सकता है कि सूरज के जगत में जो दो सौ सैन्धार सूरज से बड़े हुए हैं यह उसकी औलाद और सूरज उनके बाप के मानिन्द हैं. इसी वास्ते अरवां जवान में सूरज को शम्स भी कहा जाता है जिसके माने बाप के हैं और पानी के उस चशमें यानी सोते के भी हैं जिससे बाग वगीचे और खेतियां सीची जाती हैं.

यह अरवां मील आकाश में जो सूरज और उसका पूरा कुनवा कर्वाला कैला पड़ा है इनमें एक दूसरे से रूठ रुठनल नहीं, एक दूसरे में नीच खसोट नहीं बल्कि हर एक में रवादायी हैं और वह सब एक दूसरे को बाकायदा कायदा पहुँचाने और कायदा हासिल करने में लगे हुए हैं. इन सब को मिला कर जो सूरज पैदा होती है उसके

अस्त

दूसरे का जो

नियत

बारी زمین اند اس کے اس خط و مدار زمین و آسمان کے مدار
مستوی و موازی ہوتے ہیں اور ان کے مدار
کریب دوسرو کے اند چھوٹے چھوٹے سہارے ہیں جو ہر سال سورج
کے گرداگرد آکاش کے اریوں کیوں میں گھومتے پھرتے ہیں.

خولی زبان میں سورج کو سراج کہتے ہیں. ان دونوں شہدوں کی ایک دھما آتی یعنی س آراج جو جس کے سمتی روشن جہاز کے ہیں کہا جاتا ہے کہ ہادی زمین سے سورج تیرہ لاکھ میل چلا آو. اس سے اوپر کا خول آک کے مسالوں کا جو ہر وقت جلتا اور روشن رہا کرتا ہے. اس کی لپیٹ میں جہاز لاکھ میل تک دوشلی ہیں. سب کے سب سب سب سب سورج سے ٹکے کر گئے ہیں اور گرنے کے بعد بھی سورج کی آن کیسیوں سے نیلے بڑھتے ہیں جو اس کے خٹلوں سے باہر ہو کر آکاش میں پھلتی ہیں. ان باتوں کو دھیان میں رکھتے ہوئے کہا جاسکتا ہے کہ سورج کے جگت میں جو دو ستارے سورج سے بنائے ہوئے ہیں یہ اس کی اولاد اور سورج ان کے باپ کے مانند ہو رہے ہیں اور اس واسطے خولی زبان میں سورج کو شمس بھی کہا جاتا ہے جو جس کے سمتے باپ کے ہیں اور پانی کے اس چھتے یعنی سوتے کے بھی ہیں جس سے سورج کی اولاد پیدا ہوتی ہے. یہ اریوں کی آکاش میں جو سورج اور اس کا پوتا گنبد پیدا چھایا پڑا ہے ان میں ایک دوسرے سے وہ خط و مدار نہیں ایک دوسرے میں سورج کیسوت نہیں. بلکہ ہر ایک میں مطالبی اور اور یہ سب ایک دوسرے کے باقاعدہ دائرہ ہوتے ہیں اور دائرہ حاصل کرنے میں گھومتے ہوئے ہیں. ان سب کو لاکر جو صورت پیدا ہوتی ہے اس کو

ہم نظام شمسی اور اسی کو سورج ہمارے چمکتے ہیں۔

ہم کھانسی اور اسی کو سورج ہمارے چمکتے ہیں۔

کھانسی میں جو چمکتے ہیں اور پھیل کر آتے ہیں ان گنت تاروں کے

کھانسی میں ہیں، کہا جاتا ہے کہ یہ ہمارے سورج کے لہریں کے

چھوٹے بڑے چار ارب سے زیادہ روشن سورج ہیں جو آکاش

میں ماسکھوں میں ہیں تو ان کی طرح بکھرے پڑے ہیں۔ مگر یہ

تاریوں سورج آپس میں ایک دوسرے سے بے لگاؤ نہیں ہیں جس طرح

ایک خوبصورت گھنٹے درخت کے پتے ڈالیاں اور موٹے ڈھالے لیے جلتے ہیں

کے سب ایک جڑ سے جاملے ہیں ٹھیک اسی طرح یہ سب سورج آپس

میں کھنکھارے بندھے ہوئے ہیں اور ان اربوں چھوٹے بڑے سورجوں

کا مسئلہ کسی ایک ماسورج پر منتج کرنا ہوتا ہے۔ اس ماسورج

کو عربی میں شمس الشمس یعنی سورجوں کا مجموعہ کہتے ہیں اور قرآن مجید

میں اس کا نام عرش بتایا گیا ہے۔ یہی عرش اربوں سورجوں کا مرکز اور

سے جس کے گرد گردہ سالمے سورج چکر لگا رہتے ہیں۔ اس

عرش عظیم کے ماسکھوں میں کھیلے ہوئے چمکتے ہیں جہاں یہ چمکتے

ختم ہوتی ہیں اس مسئلہ کو قرآن مجید نے کوئی کہا ہے۔ عرض ہے کہ

عرش عظیم اور اس کی لمبی اللہ چھوٹی کریم کے اندر جو اربوں سورجوں

کی چھتر شاخوں کے ہر شاخہ گھومتے پھرتے اور اللہ کی عرش کے نظریے

آئی ہے یہ سب بلکل کر برہانوں کا سروپ ہے۔

یہاں یہ بات بھی ظاہر ہے کہ اس اچھا آکاش میں اللہ سے اس

برہانوں کی طرح ان حرکت برہانوں میں جو رب العالمین اور رب العرش العظیم

وہ کہہ کے ہے یا یاں بھنڈا ہمارے نظامی حال کر کے پرورش پاسے ہیں

ہم نظام شمسی اور اسی کو سورج ہمارے چمکتے ہیں۔

ہم کھانسی اور اسی کو سورج ہمارے چمکتے ہیں۔

کھانسی میں جو چمکتے ہیں اور پھیل کر آتے ہیں ان گنت تاروں کے

کھانسی میں ہیں، کہا جاتا ہے کہ یہ ہمارے سورج کے لہریں کے

چھوٹے بڑے چار ارب سے زیادہ روشن سورج ہیں جو آکاش

میں ماسکھوں میں ہیں تو ان کی طرح بکھرے پڑے ہیں۔ مگر یہ

تاریوں سورج آپس میں ایک دوسرے سے بے لگاؤ نہیں ہیں جس طرح

ایک خوبصورت گھنٹے درخت کے پتے ڈالیاں اور موٹے ڈھالے لیے جلتے ہیں

کے سب ایک جڑ سے جاملے ہیں ٹھیک اسی طرح یہ سب سورج آپس

میں کھنکھارے بندھے ہوئے ہیں اور ان اربوں چھوٹے بڑے سورجوں

کا مسئلہ کسی ایک ماسورج پر منتج کرنا ہوتا ہے۔ اس ماسورج

کو عربی میں شمس الشمس یعنی سورجوں کا مجموعہ کہتے ہیں اور قرآن مجید

میں اس کا نام عرش بتایا گیا ہے۔ یہی عرش اربوں سورجوں کا مرکز اور

سے جس کے گرد گردہ سالمے سورج چکر لگا رہتے ہیں۔ اس

عرش عظیم کے ماسکھوں میں کھیلے ہوئے چمکتے ہیں جہاں یہ چمکتے

ختم ہوتی ہیں اس مسئلہ کو قرآن مجید نے کوئی کہا ہے۔ عرض ہے کہ

عرش عظیم اور اس کی لمبی اللہ چھوٹی کریم کے اندر جو اربوں سورجوں

کی چھتر شاخوں کے ہر شاخہ گھومتے پھرتے اور اللہ کی عرش کے نظریے

آئی ہے یہ سب بلکل کر برہانوں کا سروپ ہے۔

یہاں یہ بات بھی ظاہر ہے کہ اس اچھا آکاش میں اللہ سے اس

برہانوں کی طرح ان حرکت برہانوں میں جو رب العالمین اور رب العرش العظیم

وہ کہہ کے ہے یا یاں بھنڈا ہمارے نظامی حال کر کے پرورش پاسے ہیں

ہم نظام شمسی اور اسی کو سورج ہمارے چمکتے ہیں۔

ہم کھانسی اور اسی کو سورج ہمارے چمکتے ہیں۔

کھانسی میں جو چمکتے ہیں اور پھیل کر آتے ہیں ان گنت تاروں کے

کھانسی میں ہیں، کہا جاتا ہے کہ یہ ہمارے سورج کے لہریں کے

چھوٹے بڑے چار ارب سے زیادہ روشن سورج ہیں جو آکاش

میں ماسکھوں میں ہیں تو ان کی طرح بکھرے پڑے ہیں۔ مگر یہ

تاریوں سورج آپس میں ایک دوسرے سے بے لگاؤ نہیں ہیں جس طرح

ایک خوبصورت گھنٹے درخت کے پتے ڈالیاں اور موٹے ڈھالے لیے جلتے ہیں

کے سب ایک جڑ سے جاملے ہیں ٹھیک اسی طرح یہ سب سورج آپس

میں کھنکھارے بندھے ہوئے ہیں اور ان اربوں چھوٹے بڑے سورجوں

کا مسئلہ کسی ایک ماسورج پر منتج کرنا ہوتا ہے۔ اس ماسورج

کو عربی میں شمس الشمس یعنی سورجوں کا مجموعہ کہتے ہیں اور قرآن مجید

میں اس کا نام عرش بتایا گیا ہے۔ یہی عرش اربوں سورجوں کا مرکز اور

سے جس کے گرد گردہ سالمے سورج چکر لگا رہتے ہیں۔ اس

عرش عظیم کے ماسکھوں میں کھیلے ہوئے چمکتے ہیں جہاں یہ چمکتے

ختم ہوتی ہیں اس مسئلہ کو قرآن مجید نے کوئی کہا ہے۔ عرض ہے کہ

عرش عظیم اور اس کی لمبی اللہ چھوٹی کریم کے اندر جو اربوں سورجوں

کی چھتر شاخوں کے ہر شاخہ گھومتے پھرتے اور اللہ کی عرش کے نظریے

آئی ہے یہ سب بلکل کر برہانوں کا سروپ ہے۔

یہاں یہ بات بھی ظاہر ہے کہ اس اچھا آکاش میں اللہ سے اس

برہانوں کی طرح ان حرکت برہانوں میں جو رب العالمین اور رب العرش العظیم

وہ کہہ کے ہے یا یاں بھنڈا ہمارے نظامی حال کر کے پرورش پاسے ہیں

پرسا چہرے نہرے जिस पर इनका कब्जा न हो. सब पूछो तो पूरे ब्रह्मान्ड की एक एक चीज के बनाने विगाड़ने, चलत, फिरत, उतार चढ़ाव चल्कि इनकी मौत ह्यात में इन्हों का हाथ काम कर रहा है.

ब्रह्मान्ड में या चेतन जगत में वैशुभार ताकतें, वेदन्तहा रहें हैं. मगर आसानी के लिये इनको चार हिस्सों में बाँटा जा सकता है.

(१) वह शक्तियाँ जो ब्रह्मान्ड की एक एक चीज के बनाने, बढ़ाने और इकट्ठा करने में लगी हुई हैं. इन शक्तियों का सिलसिला एक बड़ी शक्ति पर खत्म होता है जिसे इस्लाम में मैकहल करिश्ता कहा गया है. हिन्दू धर्म में उर्षी का नाम ब्रह्मा है.

(२) वह शक्तियाँ जो ब्रह्मान्ड की एक एक चीज के घटाने, विगाड़ने और आखीर दर्जे उसको मौत के घाट उतारने पर कारबन्द हैं. इनका सिलसिला उस बड़ी शक्ति पर खत्म होता है जिसे इस्लाम में इजराहल करिश्ता कहा गया है और हिन्दू धर्म में इसे यमराज नाम दिया गया है.

(३) वह शक्तियाँ जो ब्रह्मान्ड की एक एक चीज का दूसरी चीजों के साथ इस तरह मिलाप पैदा करती हैं जिसके चरिये वह दूसरों से कायदा हासिल करने और दूसरों को कायदा पहुँचाने और खुद नाजायज नुकसान न उठाने और न दूसरों को नाजायज नुकसान पहुँचाने में लगी हैं. इन्हों शक्तियों से समाजों और संगठन कायम होते हैं. इसी जच्चे मेल मिलाप से पूरे ब्रह्मान्ड का संगठन कायम है और एक चर्रे से लेकर अर्शों अर्शीम तक ब्रह्मान्ड का पूरा शरीर अपने खास रूप में नजर आता है. इन शक्तियों को सिलसिला जिस बड़ी शक्ति पर खत्म होता है इस्लाम

است

دھرم کیا ہے

نیا دین

ایسا دور نہیں جس پر ان کا فرض نہ ہو. سچ پوچھو تو پورے برہمانڈ کی ایک ایک چیز کے بنانے، بگاڑنے، چلنے، پھرتے، اُتار چڑھاؤ، بگڑنے اور ان کی موت حیات میں ان ہی کا اہم کام کر رہا ہے.

برہمانڈ میں یا چہیت جگت میں بیشمار طاقتوں نے اپنا وہاں یہی کرنا سنانے کے لئے ان کو چار حصوں میں بانٹا جا سکتا ہے.

(۱) وہ شکلیاں جو برہمانڈ کی ایک ایک چیز کے بنانے، بڑھانے اور اکٹھا کرنے میں لگی ہوئی ہیں۔ ان طاقتوں کا سلسلہ ایک بڑی شکتی پر ختم ہوتا ہے جسے اسلام میں میکھل فرشتہ کہا گیا ہے۔ مہند دھرم میں اسی کا نام برہما ہے.

(۲) وہ شکلیاں جو برہمانڈ کی ایک ایک چیز کے گھٹانے، بگاڑنے اور آخر درجے کی موت کے گھاٹ اتارنے پر کار بند ہیں۔ ان کا سلسلہ اسی بڑی شکتی پر ختم ہوتا ہے جسے اسلام میں میکھل فرشتہ کہا گیا ہے اور مہند دھرم میں ایسے پیراج نام دیا گیا ہے.

(۳) وہ شکلیاں جو برہمانڈ کی ایک ایک چیز کا دوسری چیزوں کے ساتھ اس طرح میل ملاپ پیدا کرتی ہیں جس کے ذریعہ وہ دوسروں سے ٹالہ حاصل کرتے اور دوسروں کو ٹالہ پہنچانے اور خود ناجائز نقصان نہ اٹھانے اور نہ دوسروں کو ناجائز نقصان پہنچانے میں لگی ہیں۔ انہیں طاقتوں سے کامیں اور شکتیوں قائم ہوتے ہیں۔ اسی جذبہ میل ملاپ سے پورے برہمانڈ کا شکتی قائم ہو اور ایک قدرے سے لے کر عرشِ عظیم تک برہمانڈ کا پورا مشیر اپنے خاص روپ میں نظر آتا ہے۔ ان شکلیوں کا سلسلہ جس بڑی شکتی پر ختم ہوتا ہے اسلام

میں سے جینا کیل کریشانا کہا گیا ہے۔ شاکھ سنااتن धर्म में उसी को विष्णु कहते हैं. अबतारों, रसूलों और नवियों का साक रोशन और पवित्र दिल इसी शक्ति का रेडियो बक्स होता है.

(४) वह शक्तियाँ जो नभ्वर ३ के विलकुल मुकाबिल हैं जो एक दूसरे को अलहदा और एक दूसरे को पुरचे पुरचे कर देती हैं. पूरे ब्रह्मान्ड की क्रिया, लय और महाप्रलय इन्हीं के हाथों होता है. इन शक्तियों का सिलसिला जिस बड़ी शक्ति पर खत्म होता है इस्लाम में उसे इसराकील कहा गया है. हिन्दू धर्म में उसे शिव या महादेव कहा जाता है.

यह पूरा आत्ममे अभ्न यानी चेतन जागत पूरे ब्रह्मान्ड के माही आत्म याने आत्ममे खलक पर झपा हुआ है और इसी आत्ममे अभ्न के बल बूते पर पूरा ब्रह्मान्ड और उसका एक एक जरा नाच रहा है. इसका रूप और बज्रद किसी माही आत्म का मोहताज नहीं. इसके तन्व यानी अनामिर उस ओम के अनगिनत जलाली और जमाली गुणों का फल है जो अपनी यात से निराकार है लेकिन यह अनगिनत गुण भी कसरत से किल्लत और किल्लत से कसरत यानी एक से बहुत और बहुत से एक के सिलसिले में जकड़े हुए हैं. जहाँ यह सिलसिला खत्म होता है उसी मुकाम से उस निराकार का भेद मालूम होने लगता है.

इन शक्तियों और आत्मामों का ब्रह्मान्ड जो सेव्यारों, सितारों, चाँद सूरज और अर्था कुर्मी के ब्रह्मान्ड को चला रहा है उसकी कोई चीज भी मुंह छुट और बेलगाम नहीं. इनमें कहीं भी बेअसूली या बेकायदगी नहीं और न बेचावतगी

آگت سطر

دھرم کیا ہے

نیا ہند

یہ اسے جبریل فرشتہ کہا گیا ہے۔ شاید سنااتن دھرم میں اسی کو دیکھتے کہتے ہیں۔ آتاروں اور رسولوں کا صفت اور شش اور پتھر دل اسی شکتی کا ریڈیو بکس ہوتا ہے.

(۴) وہ شکتیاں جو نبرہر ۳ کے بالکل مقابل ہیں جو ایک دوسرے کو طحلوہ ادا ایک دوسرے کو پڑنے پڑنے کر دیتی ہیں. پھر سے برصحا کی نشانیوں اور دہانے ان ہی کے ہاتھوں ہوتا ہے. ان شکتیوں کا سلسلہ جس بڑی شکتی پر ختم ہوتا ہے اسلام میں اسے اسراکیل کہا گیا ہے. ہندو دھرم میں اسے شیبہ یا مہادیو کہا جاتا ہے.

یہ پورا عالم اگر یعنی جیتن گت پورے برصحا پورے کے ہادی عالم یعنی عالم خلق پر بچھایا ہوا ہے اور اسی عالم امر کے بل بوتے پر پورا برصحا پورے اور اس کا ایک ایک ذبہ تابع رہا ہے. اس کا روپ اور وجود کسی ہادی عالم کا محتاج نہیں. اس کے سوا یعنی عناصر اس اوم سے ان گنت جلالی اور مجالی شکتوں کا پھیل ہیں جو اپنی ذات سے زاکاد ہے۔ لیکن یہ ان گنت شکتوں بھی کثرت سے ظلت اور ظلت سے کثرت یعنی ایک سے بہت اور بہت سے ایک کے سلسلے میں پکڑے ہوئے ہیں. جہاں یہ سلسلہ ختم ہوتا ہے اسی مقام سے اس کا لاپرواہ کھید سلام ہونے لگتا ہے.

ان شکتیوں اور شکتوں کا برصحا پورے جو ستاروں، ستاروں، چاند سوریج اور شش کرسی کے برصحا پورے کے ہادی عالم اس کی کوئی چیز بھی شہ چھوٹ اور بے لگام نہیں. ان میں کہیں بھی بے اصولی یا بے کاہدگی نہیں اور نہ بے چارگی

یا آبنیای ہے، بلیک بھ سارا کارلانا ٹیک ٹیک کیرسی کرائن کے ماتھت चलता दिवार्ह देता है. मालूम होता है कि इस कारखाने का एक चर्रा अपने उसूल और अपने क्राउन, अपने दस्तूर और अपने कायदे के मुताबिक काम कर रहा है. जब तक वह उसूल से और कायदे से काम करता है, उससे काम लिया जाता है और जब वह वेउसूली और वेकायदगी करता है और सुधार के लायक भी नहीं रहता तो उसको अलहदा करके जहनुम की भट्टी में गिरा दिया जाता है. यह क्राउन और चलन का सिलसिला भी इसी तरह बढ़ता रहता है यहाँ तक कि इसकी आखिरी कड़ी उस निराकार आभ तक जा पहुँचती है. इसी सिलसिले और क्राउन का नाम धर्म है जो पूरे ब्रह्माण्ड में जारी और सारी जगहों पर फैला हुआ है.

मनुष्य--

मनुष्य को मनुष्य या मानस भी कहते हैं. अरबों में उसकी जगह मनुस लफ्ज है जिसकी धातु उन्स है. इन्सान लफ्ज भी इसी धातु से बना है. उन्स के माने मेल सुहज्वत के हैं. अब मनुष्य के माने में नजदीक मेल सुहज्वत करने वाले के हुए. खुदा ने आदमी की सृष्टि में मेल सुहज्वत इसी वास्ते रक्खा है कि इन्सान अपने शरीर और आत्मा के पालन करने में एक दूसरे का मोहताज रहे और जब तक आपस में मेल मोहज्वत न रक्खेगा उस वक़्त तक वह न दूसरों से कायदा उठा सकता है और न दूसरों को कायदा पहुँचा सकता है.

आदमी का टाँचा -

देखने में आदमी का टाँचा, सर, गँठ, दो हाथ, सीना, पीठ षेट और दो दाँगे नजर आती हैं. यह टाँचा चमड़ा, गोशत और

یا ہیندھن دھرم بچیا ہے بھگاسن سمن ۱۸۹

یا انیائے ہے۔ بلیک بھ سارا کارلانا ٹیک ٹیک کیرسی کرائن کے ماتھت चलता दिवार्ह देता है. मालूम होता है कि इस कारखाने का एक चर्रा अपने उसूल और अपने क्राउन, अपने दस्तूर और अपने कायदे के मुताबिक काम कर रहा है. जब तक वह उसूल से और कायदे से काम करता है, उससे काम लिया जाता है और जब वह वेउसूली और वेकायदगी करता है और सुधार के लायक भी नहीं रहता तो उसको अलहदा करके जहनुम की भट्टी में गिरा दिया जाता है. यह क्राउन और चलन का सिलसिला भी इसी तरह बढ़ता रहता है यहाँ तक कि इसकी आखिरी कड़ी उस निराकार आभ तक जा पहुँचती है. इसी सिलसिले और क्राउन का नाम धर्म है जो पूरे ब्रह्माण्ड में जारी और सारी जगहों पर फैला हुआ है.

मनुष्य--

मनुष्य को मनुष्य या मानस भी कहते हैं. अरबों में उसकी जगह मनुस लफ्ज है जिसकी धातु उन्स है. इन्सान लफ्ज भी इसी धातु से बना है. उन्स के माने मेल सुहज्वत के हैं. अब मनुष्य के माने में नजदीक मेल सुहज्वत करने वाले के हुए. खुदा ने आदमी की सृष्टि में मेल सुहज्वत इसी वास्ते रक्खा है कि इन्सान अपने शरीर और आत्मा के पालन करने में एक दूसरे का मोहताज रहे और जब आपस में मेल मोहज्वत न रक्खेगा उस वक़्त तक वह न दूसरों से कायदा उठा सकता है और न दूसरों को कायदा पहुँचा सकता है.

आदमी का टाँचा -

देखने में आदमी का टाँचा, सर, गँठ, दो हाथ, सीना, पीठ षेट और दो दाँगे नजर आती हैं. यह टाँचा चमड़ा, गोशत और

हृदियों से बना हुआ है, इसमें छोटी बड़ी पहाड़ों की तरह की दो सौ अड़तालीस हृदियाँ हैं, इनको बाँधने के लिये साढ़े सात सौ रस्मियाँ हैं यानी पट्टे हैं, तीन सौ साठ बारीक बारीक नालियाँ और तीन सौ नल्ये नहरें, सर के अन्दर खानों में भेजा, आँख, कान, नाक, जवान, सीने में फेफड़े, पेट में जिगर, तिल्ली, पित्त, आँतें, मेदा, गुद्रे और मसाने हैं, ऊपर से चमड़ा और उस पर बाल और रुआँ मौजूद है, यह सारी चीजें एक दूसरे से मिलती जुलती सब की सब उस गोशत के लोथड़े पर पहुँचती हैं जो सीने के बाँधों तरफ उलटा लटका हुआ कमल की तरह धक धक करता है, गोया बाल और चमड़ा आदमी के शरीर की कुरसी और यह धक धक करने वाला दिल इस शरीर का अर्धा है, यह ही आदमी का वह ढाँचा है जिसका लगाव आलमे खल्क यानी माही दुनिया से है.

भार आदमी के हाथ पैर की उँगलियों से लेकर सर की चूँदिया तक अन्दर से बाहर तक हड्डी के एक एक करे और गोशत पोतत की एक एक रग और उसके रेशे रेशे पर अलग अलग अलग अलग शक्तियों का जाल फैला हुआ है और हर शक्ति अपने काम में लगी हुई है.

आदमी की इन सारी शक्तियों को हम दो भागों में बाँट सकते हैं, एक वह शक्तियाँ जो आदमी की खबाहिश और इरादे के बाँधों से जगते होश और बेहोशी में हर वक़्त अपने काम में लगी हुई हैं जैसे खाना खाने के बाद उसे मेदे में पकाना और हजम करना, खून, पित्त, सौदा, बलगाम, बरौरा को बना कर अलग अलग करना, खून को साक करके दिल तक पहुँचाना और फिर दिल से तमाम नहरों और नालियों के जरिये अन्दर और बाहर

कौतिल से बना हुआ हो. उस में ज़होती बड़ी बिगड़ों की तरह की दो सौ अड़तालीस बिगड़ियाँ हैं. उन को बाँधने के लिये साढ़े सात सौ रस्मियाँ हैं यानी पट्टे हैं, तीन सौ साठ बारीक बारीक नालियाँ और तीन सौ नल्ये नहरें, सर के अन्दर खानों में भेजा, आँख, कान, नाक, जवान, सीने में फेफड़े, पेट में जिगर, तिल्ली, पित्त, आँतें, मेदा, गुद्रे और मसाने हैं, ऊपर से चमड़ा और उस पर बाल और रुआँ मौजूद है, यह सारी चीजें एक दूसरे से मिलती जुलती सब की सब उस गोशत के लोथड़े पर पहुँचती हैं जो सीने के बाँधों तरफ उलटा लटका हुआ है, यह ही आदमी का वह ढाँचा है जिसका लगाव आलमे खल्क यानी माही दुनिया से है.

भार आदमी के हाथ पैर की उँगलियों से लेकर सर की चूँदिया तक अन्दर से बाहर तक हड्डी के एक एक करे और गोशत पोतत की एक एक रग और उसके रेशे रेशे पर अलग अलग अलग अलग शक्तियों का जाल फैला हुआ है और हर शक्ति अपने काम में लगी हुई है.

आदमी की इन सारी शक्तियों को हम दो भागों में बाँट सकते हैं, एक वह शक्तियाँ जो आदमी की खबाहिश और इरादे के बाँधों से जगते होश और बेहोशी में हर वक़्त अपने काम में लगी हुई हैं जैसे खाना खाने के बाद उसे मेदे में पकाना और हजम करना, खून, पित्त, सौदा, बलगाम, बरौरा को बना कर अलग अलग करना, खून को साक करके दिल तक पहुँचाना और फिर दिल से तमाम नहरों और नालियों के जरिये अन्दर और बाहर

کے سارے انگ اعضاء تک پہنچانا، پختہ ہونے میں، سوسائٹی کے تعلق میں اور ہضم کو سرپر لے جانا۔ پھر توقع سے اُن کو خارج کر دینا۔ ان کاموں میں آدمی کے اعضاء اور الارے کے دخل نہیں ہوتے۔

دوسری شکلیوں سے بحث کرنے کی ضرورت نہیں۔

دوسری شکلیوں سے دیکھنا، کان سے سنانا، آنک سے سونگھنا، لانا، ہوا، مثلاً آنکھ سے دیکھنا، کان سے سنانا، آنک سے سونگھنا، کتے اور زبان سے کھانا، پینا، کھینا اور بولنا، آنکھ سے کام لینا۔ یہ وہ شکلیاں ہیں جن سے منہ اپنی خواہش سے خود دوسروں سے جائز یا ناجائز فائدہ اٹھاتا ہے اور دوسروں کو جائز یا ناجائز فائدہ یا نقصان پہنچاتا ہے۔

آدمی پیدا ہونے سے لے کر جب تک کہ اُس میں جسم بوجھ نہیں آجاتی اپنی ان ارادی اور اختیاری شکلیوں کو صرف اپنی نفس کی خواہش، اپنے جسمی سوارتھ کے لئے چلاتا ہے۔ اور چونکہ یہ خواہش انسانی اور بے سمجھ اور بے شعور کے لئے ایشیو ہے اس لئے فائدہ یا نقصان سے بے خبر ہوتی ہے اور اس لئے ایشیو اس کو سوجھ بوجھ یعنی عقل اور فکر کی شکلیوں کے نیچے رکھتا ہے اور اس کو سوجھ بوجھ پیدا کرتے ہیں اور دھیرے دھیرے

میں برہمنی ہیں اس لئے خواہش آدمی کے قابو میں جلدی نہیں آتی اور چونکہ خواہش بے اصولی ہوتی ہے اس لئے بھگوان نے سب کو ان اصولوں کا پابند بنایا ہے کہ جو نفس کو جائز فائدہ اٹھانے اور دوسروں کو جائز فائدہ پہنچانے اور خود کو نقصان سے بچنے اور دوسروں کو

کے سارے انگ اعضاء تک پہنچانا، پختہ ہونے میں، سوسائٹی کے تعلق میں اور ہضم کو سرپر لے جانا۔ پھر توقع سے اُن کو خارج کر دینا۔ ان کاموں میں آدمی کے اعضاء اور الارے کے دخل نہیں ہوتے۔

دوسری شکلیوں سے بحث کرنے کی ضرورت نہیں۔

دوسری شکلیوں سے دیکھنا، کان سے سنانا، آنک سے سونگھنا، لانا، ہوا، مثلاً آنکھ سے دیکھنا، کان سے سنانا، آنک سے سونگھنا، کتے اور زبان سے کھانا، پینا، کھینا اور بولنا، آنکھ سے کام لینا۔ یہ وہ شکلیاں ہیں جن سے منہ اپنی خواہش سے خود دوسروں سے جائز یا ناجائز فائدہ اٹھاتا ہے اور دوسروں کو جائز یا ناجائز فائدہ یا نقصان پہنچاتا ہے۔

آدمی پیدا ہونے سے لے کر جب تک کہ اُس میں جسم بوجھ نہیں آجاتی اپنی ان ارادی اور اختیاری شکلیوں کو صرف اپنی نفس کی خواہش، اپنے جسمی سوارتھ کے لئے چلاتا ہے۔ اور چونکہ یہ خواہش انسانی اور بے سمجھ اور بے شعور کے لئے ایشیو ہے اس لئے فائدہ یا نقصان سے بے خبر ہوتی ہے اور اس لئے ایشیو اس کو سوجھ بوجھ یعنی عقل اور فکر کی شکلیوں کے نیچے رکھتا ہے اور اس کو سوجھ بوجھ پیدا کرتے ہیں اور دھیرے دھیرے

میں برہمنی ہیں اس لئے خواہش آدمی کے قابو میں جلدی نہیں آتی اور چونکہ خواہش بے اصولی ہوتی ہے اس لئے بھگوان نے سب کو ان اصولوں کا پابند بنایا ہے کہ جو نفس کو جائز فائدہ اٹھانے اور دوسروں کو جائز فائدہ پہنچانے اور خود کو نقصان سے بچنے اور دوسروں کو

کے سارے انگ اعضاء تک پہنچانا، پختہ ہونے میں، سوسائٹی کے تعلق میں اور ہضم کو سرپر لے جانا۔ پھر توقع سے اُن کو خارج کر دینا۔ ان کاموں میں آدمی کے اعضاء اور الارے کے دخل نہیں ہوتے۔

دوسری شکلیوں سے بحث کرنے کی ضرورت نہیں۔

دوسری شکلیوں سے دیکھنا، کان سے سنانا، آنک سے سونگھنا، لانا، ہوا، مثلاً آنکھ سے دیکھنا، کان سے سنانا، آنک سے سونگھنا، کتے اور زبان سے کھانا، پینا، کھینا اور بولنا، آنکھ سے کام لینا۔ یہ وہ شکلیاں ہیں جن سے منہ اپنی خواہش سے خود دوسروں سے جائز یا ناجائز فائدہ اٹھاتا ہے اور دوسروں کو جائز یا ناجائز فائدہ یا نقصان پہنچاتا ہے۔

آدمی پیدا ہونے سے لے کر جب تک کہ اُس میں جسم بوجھ نہیں آجاتی اپنی ان ارادی اور اختیاری شکلیوں کو صرف اپنی نفس کی خواہش، اپنے جسمی سوارتھ کے لئے چلاتا ہے۔ اور چونکہ یہ خواہش انسانی اور بے سمجھ اور بے شعور کے لئے ایشیو ہے اس لئے فائدہ یا نقصان سے بے خبر ہوتی ہے اور اس لئے ایشیو اس کو سوجھ بوجھ یعنی عقل اور فکر کی شکلیوں کے نیچے رکھتا ہے اور اس کو سوجھ بوجھ پیدا کرتے ہیں اور دھیرے دھیرے

میں برہمنی ہیں اس لئے خواہش آدمی کے قابو میں جلدی نہیں آتی اور چونکہ خواہش بے اصولی ہوتی ہے اس لئے بھگوان نے سب کو ان اصولوں کا پابند بنایا ہے کہ جو نفس کو جائز فائدہ اٹھانے اور دوسروں کو جائز فائدہ پہنچانے اور خود کو نقصان سے بچنے اور دوسروں کو

नया हिनद

धर्म क्या है

अगस्त सन् ४७

नाजायज नुक़सान न पहुँचाने में मदद दें. इन्हीं उमूनों, कायदाओं और इसी दररूर का नाम जो ख्याहिशा को यात्रसूल चलाता है, धर्म है.

आखीर में एक बात और. यह यह है कि माया और प्रेत में कर्मा और ज्यादती, मौका वे मौका और वक्त वे वक्त होती रहती है. इनका यह गुन और काम और इनसे खतरा ऐसा आम है कि हर बुद्धिमान पर पूरी तरह जाहिर है. इसीलिये यह दोनों चीजें धर्म के तावे की गई हैं और धर्म इन सबसे ऊँचा है. निचोड़ यह कि धर्म सिके उत इन्साफ वाले नियम और कायदाओं का नाम है जो मनुष्य की सारी इरादा और अख्तियारी शक्तियों पर राज करने के लिये खुदा ने मुकर्रर किये हैं. इनका राज इतना लम्बा चौड़ा है कि ब्रह्माण्ड के एक एक ज़र्रे से लेकर सारे आलम तक और अवतार, रसूल, ऋषि, मुनि, नबी, बली से लेकर छोटे से छोटे आदमी तक कोई भी बाहर नहीं हो सकता है. यह नियम कायदा और कानून जैसा हम दिखा चुके हैं, मुहब्बत और रवादायी और एक दूसरे को कायदा पहुँचाने का कानून है. इसी में सबका भला है.

अगस्त १९४७

दुश्मन का नाम

नया सन्

नाजायज नुक़सान न पहुँचाने में मदद दें. इन्हीं उमूनों, कायदाओं और इसी दररूर का नाम जो ख्याहिशा को यात्रसूल चलाता है, धर्म है. आखीर में एक बात और. यह यह है कि माया और प्रेत में कर्मा और ज्यादती, मौका वे मौका और वक्त वे वक्त होती रहती है. इनका यह गुन और काम और इनसे खतरा ऐसा आम है कि हर बुद्धिमान पर पूरी तरह जाहिर है. इसीलिये यह दोनों चीजें धर्म के तावे की गई हैं और धर्म इन सबसे ऊँचा है. निचोड़ यह कि धर्म सिके उत इन्साफ वाले नियम और कायदाओं का नाम है जो मनुष्य की सारी इरादा और अख्तियारी शक्तियों पर राज करने के लिये खुदा ने मुकर्रर किये हैं. इनका राज इतना लम्बा चौड़ा है कि ब्रह्माण्ड के एक एक ज़र्रे से लेकर सारे आलम तक और अवतार, रसूल, ऋषि, मुनि, नबी, बली से लेकर छोटे से छोटे आदमी तक कोई भी बाहर नहीं हो सकता है. यह नियम कायदा और कानून जैसा हम दिखा चुके हैं, मुहब्बत और रवादायी और एक दूसरे को कायदा पहुँचाने का कानून है. इसी में सबका भला है.

میت گیت

در بندہ طاعتی خاکر (۱)

(۱۱) سے فائدہ

زندگی میں محبت کا بیٹ لے لئے نیت تیرا سویرے سویرے آسمان
 کو گالوں سے کھر دینا، ساروں کی مالا کو گھٹنا، کھولوں کا بستر کچھا نا
 کھنی ہوا کا گالوں میں آکر کھید کہنا یہ سب بے فائدہ ہو۔۔۔
 زندگی میں محبت لے لئے بغیر تیرے آسمان کا میری طرف
 نہ آنا، میرے دل کا بیل بلی پاگل ہو کہ اس محمد میں کشتی
 چلانا جس کا وہ کنارہ نہیں جانتا۔۔۔ یہ سب بے فائدہ ہو۔۔۔
 (گیت مالا سے)

(۱۲)

مکھ درد کا پھل

پیرے سب کا نٹوں کو برکت لے کر ایک دن پھل کھوئے گا ہی۔
 میرا سب درد نکلیں ہو کر گلاب کی طرح کھلے گا ہی۔ میرا است
 دونوں تک آسمان کی طرف تن کھیل لائے گا ہی۔ کھنی ہوا
 ڈھوڑی آئے گی اور میرے دل کو بے چین کر کے خوشبو کی
 دولت سب جگہ کھیر دے گی۔

تین گیت

(روائت ناٹھ ڈاکٹر)

(۱)

بے کراپدا

خیندگی میں موہنچل کا پوٹ دینے بگیر تیرا سب سے سب سے آسماں
 کو گالوں سے بھر دینا، تاروں کی مالا گونچنا، کھولوں کا بستر کچھا نا،
 دھنچنی ہوا کا گالوں میں آکر بھد کہنا یہ سب بے کراپدا ہے۔۔۔
 خیندگی میں موہنچل دینے بگیر تیرے آسماں کا میری طرف
 تارکنا، میرے دل کا پل-پل پاگل ہو کر اس سمندر میں کیرتی
 چلانا جس کا بھ کینارا نہیں جانتا۔۔۔ یہ سب بے کراپدا ہے۔۔۔
 (گیت مالا سے)

(۲)

دو سب درد کا پل

میرے سب کھٹوں کو بھرکھٹ دیکر ایک دن پھل کھوئے گا ہی۔ میرا
 سب درد رنگین ہو کر گلاب کی طرح کھیلے گا ہی۔ میرا
 دینوں تک آسماں کی طرف تن کھل لایا گا ہی۔ دھنچنی
 ہوا دھنچنی آسماں کی طرف میرے دل کو بے چین کر کے
 دولت سب جگہ کھیر دے گی۔

میری سب شرم دور ہو جائے گی جب میرے پاس اوروں کے
دینے کے لائق دولت ہوئی۔

جب میری زندگی یوں کی شکل اختیار کرے گی۔

جب رات کے ختم ہونے کے وقت میرا دوست مجھے
آکر چھوئے گا اور میرے پھول کی سب پتھریاں اُس کے پاس
میں چھپو جائیں گی۔

(گیت مالا سے)

(۳)

جو کبھی ختم نہیں ہوتا

میں جانتا ہوں زندگی میں طبعی بار میں لڑھا لڑی طرح سے
نہیں کر سکا وہ بالکل بے سود نہیں گئی جو پھول پھلنے سے پہلے ہی
چھڑ کر زمین پر گر پڑا اور جس ندی کا بہنا ریگستان میں
میں باند ہو گیا اور میں جانتا ہوں وہ بھی بے سود نہیں۔

آج بھی جو زندگی میں تیجھے رسے ہوئے ہیں میں جانتا
ہوں وہ بھی بے سود نہیں ہیں۔

اپنی بنیائے جو آگ میں نہیں نکال سکا وہ تیری بنیائے کے
تار پر بیج رہے ہیں! سو میں جانتا ہوں وہ بھی بے سود نہیں ہیں۔

(گیت مالا سے)

نیا دھند
تین گیت
آگست سن ۱۸۹

میری سب شرم دور ہو جائے گی جب میرے پاس اوروں کے
دینے کے لائق دولت ہوئی۔
جب میری زندگی یوں کی شکل اختیار کرے گی۔
جب رات کے ختم ہونے کے وقت میرا دوست مجھے
آکر چھوئے گا اور میرے پھول کی سب پتھریاں اُس کے پاس
میں چھپو جائیں گی۔
(گیت مالا سے)

جو کبھی ختم نہیں ہوتا

میں جانتا ہوں زندگی میں طبعی بار میں لڑھا لڑی طرح سے
نہیں کر سکا وہ بالکل بے سود نہیں گئی جو پھول پھلنے سے پہلے ہی
چھڑ کر زمین پر گر پڑا اور جس ندی کا بہنا ریگستان میں
میں باند ہو گیا اور میں جانتا ہوں وہ بھی بے سود نہیں۔
آج بھی جو زندگی میں تیجھے رسے ہوئے ہیں میں جانتا
ہوں وہ بھی بے سود نہیں ہیں۔
اپنی بنیائے جو آگ میں نہیں نکال سکا وہ تیری بنیائے کے
تار پر بیج رہے ہیں! سو میں جانتا ہوں وہ بھی بے سود نہیں ہیں۔

नया हिन्द की साल गिरह

(अबदुल हलीम साहब अन्सारी, आर्टिस्ट, भोपाल)

नया हिन्द ने पहली जुलाई की सुहानी सुबह को ५ बज कर १८ मिनट पर गंगा जमना के संगम पर जन्म लिया है—एक सुन्दर और उत्तम संगम पर गजरदम उसका जन्म विशाल वर्ष के ऊपर गोया नया हिन्द का एक उज्वल दर्शन है—सोमवार उसका जन्म दिन और प्रयाग उसका वतन !

जैसे ही उसने जन्म लिया गोया गंगा जमना के पवित्र जल से उजल कर वह दुनिया के सामने आया. यानी 'विष्णु' के पांव के धोवन से स्नान लेकर या 'शंकर' के सर के सोतों से नहा धोकर.

चाहे गंगा जल 'विष्णु' के पांव का धोवन हो, चाहे 'शंकर' के बालों का निचोड़—पर इस पर श्रद्धा (अक्रीदत) रखने वालों के लिये यह जल अल्ल में "आस्मानी गंगा जल" है. इसी लिए यह पाक और पवित्र है.

इतने से विद्वान का ध्यान देखो और उसकी सूझ वूझ कि उसने जन्म घाट पर आते ही और होश की आंख खोलते ही गंगा जमना के मेल मिलाप से हस्तहृद का सबक सीखा, एकता की शिक्षा ली और अब एकता की शिक्षा दे रहा है. वह एकता और समता दोनों का मतवाला है.

अगर कोई सुनसे पूछे—'नया हिन्द' का धर्म क्या है ? मैं वे भिन्नक और वे तकान कह सकता हूँ कि प्रेम उसका धर्म है और प्रेम ही उसका 'कर्म कान्ड' (शरियत).

वह अपनी छोटी सी बित पर लेकिन अपनी हिम्मत

नया हिन्द की साल गिरह

عبدالمصطفیٰ صاحب القضاة آریطش اچھو پال

نیا ہند نے پہلی جولائی کی شہانی صبح کو ۵ بج کر ۱۸ منٹ پر گنگا جمنے کے سنگم پر جنم لیا ہے۔ ایک مستند اور عظیم سنگم پر جنم لیا ہے۔ سووار اس کا جنم دن اور پیر ایک اس کا وطن !

جیسے ہی اس نے جنم لیا گنگا جمنے کے پورے محل سے اپیل کر وہ دنیا کے سامنے آیا۔ یعنی 'رضو' کے پاؤں کے دھوون سے ارضان لے کر یا 'شکر' کے سر کے سوٹوں سے نیا دھوون کے چاہے گنگا جمنے کا دھوون ہو، چاہے 'شکر' کے پاؤں کا پچھڑ۔ پیر اس پر شرمشا (عقیدت) رکھنے والوں کے لئے یہ محل اصل میں 'آسمانی گنگا جمنے' ہی ہے۔ یہ ایک

اور پورے اور

انے سے ودوان کا دھیان دیکھو اور اس کی سمجھ بوجھ کہ اس نے جنم لیا ہے پیر آئے ہی اللہ ہوئی کی آکھ کھولنے ہی گنگا جمنے کے محل لایا ہے۔ اچھا کہ سب سے کھا، ایکتا کی شکشا لی اور اب ایکتا کی شکشا دے رہا ہے۔ وہ ایکتا اور سماتا دونوں کا مٹوالا ہے۔

پیر کی کوئی مجھ سے پوچھے۔ نیا ہند، کا دھرم کیا ہے؟ میں بے جھجک اللہ بے شکان کہہ سکتا ہوں کہ پریم اس کا دھرم ہے اور پریم ہی اس کا 'کرم کمانڈ' (شرعیات)۔ اپنی چھوٹی سی بست پر بسکے اپنی ہمت

प्यार से उसे पाल पोसकर परवान चढ़ाया है. इसकी जवान में मिठास है और इसके स्वभाव में लुभावपन! सदाचार से उसको संभारा है, उदारता की उसको तालीम दी है यानी रवायारी उसमें कूट कूट कर भरी है—'नया हिन्द' प्रेम के हारे को गांठ में बधाँ कर आगे को बढ़ा चला जा रहा है. और उसकी रोशनी से वह 'सार भारत वर्ष' में प्रेम का उजाला फैला रहा है.—जिससे प्रेमियों की आँसुओं को ठंडक पहुंच रही है. दिल को तस्कीन मिल रही है और आत्मा को संतोष!

'नया हिन्द'! चूंकि प्रेम की गोद में पला है इसलिए प्रेम उसकी घुड़ी में है और प्रेम उसका मन की बस्ती में है. वह प्रेम का प्यासा भी और पिलाने वाला भी—यानी प्यासों की प्यास बुझाने वाला भी और शान्ति की खोज लगाने वाला भी!

वेशक नेकी का वह नेता है और भारत माता का वह नेक वेटा है. इसी कारन चिन्दगी का वह सुधारक है और इन्सानियत का खादिम! सब जानते हैं कि 'श्री कृष्ण' जी ने जमना जी में कूदकर और हुक्मी लगाकर गंद निकाली थी जो खेलते खेलते 'वलरामजी' के हाथ से जमना जी को गोद में जा पड़ी थी. इसी तरह 'नया हिन्द' भी 'एकता और मुक्ति का मोती' निकालने की धुन में 'प्रेम की गंगा' में डूबा हुआ है. चाहे वह किसी के भी हाथ से गिरकर गुम हो गया हो पर वह उसे संगम पर रखकर दुनिया की निगाह में लाना ही चाहता है—यही उसके जन्म और जीवन का पहला और आखिरी मकसद है.

प्यार से उसे पाल पोसकर परवान चढ़ाया है. इसकी जवान में मिठास है और इसके स्वभाव में लुभावपन! सदाचार से उसको संभारा है, उदारता की उसको तालीम दी है यानी रवायारी उसमें कूट कूट कर भरी है—'नया हिन्द' प्रेम के हारे को गांठ में बधाँ कर आगे को बढ़ा चला जा रहा है. और उसकी रोशनी से वह 'सार भारत वर्ष' में प्रेम का उजाला फैला रहा है.—जिससे प्रेमियों की आँसुओं को ठंडक पहुंच रही है. दिल को तस्कीन मिल रही है और आत्मा को संतोष!

'नया हिन्द'! चूंकि प्रेम की गोद में पला है इसलिए प्रेम उसकी घुड़ी में है और प्रेम उसका मन की बस्ती में है. वह प्रेम का प्यासा भी और पिलाने वाला भी—यानी प्यासों की प्यास बुझाने वाला भी और शान्ति की खोज लगाने वाला भी!

वेशक नेकी का वह नेता है और भारत माता का वह नेक वेटा है. इसी कारन चिन्दगी का वह सुधारक है और इन्सानियत का खादिम! सब जानते हैं कि 'श्री कृष्ण' जी ने जमना जी में कूदकर और हुक्मी लगाकर गंद निकाली थी जो खेलते खेलते 'वलरामजी' के हाथ से जमना जी को गोद में जा पड़ी थी. इसी तरह 'नया हिन्द' भी 'एकता और मुक्ति का मोती' निकालने की धुन में 'प्रेम की गंगा' में डूबा हुआ है. चाहे वह किसी के भी हाथ से गिरकर गुम हो गया हो पर वह उसे संगम पर रखकर दुनिया की निगाह में लाना ही चाहता है—यही उसके जन्म और जीवन का पहला और आखिरी मकसद है.

उर्दू شायरी کا مर्म

(श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीच)

कवि या लेखक जो कुछ लिखता है, उसे हर जगह उसका अपना विचार या आपबीती ही समझ लेता बड़ी भूल है, लेखक या कवि अपने चारों तरफ जो कुछ देखता है, सुनता है, अनुभव करता है या चरकरत महसूस करता है, उसे अपने रंग में रंग देता है, अगर ऐसी हर तसवीर को कलाकार की तसवीर समझ लिया जाय तो इससे ज्यादा कलाकार का अपमान और क्या होगा ?

इसी तरह की समझ से तंग आकर मराठूर हास्य-लेखक मिर्जा अजीम बेग चयाताई ने उर्दू साहित्य के आलोचक डा० अन्दलीब शादाती एम० ए., पी एच० डी० को ६ अक्टूबर १९४० के खत में लिखा था—

“मैं अकसले (कहासियाँ) लिखता हूँ, कोई गुबारा हुआ वाक्यांशों से देखा या सुना, उठाकर लिख दिया, ख्याल (चाहे) वह अपनी मरजी के सख्त खिलाफ ही क्यों न हो, मसलत में नाविल 'कोलतार' के बाव 'आल्' के सुरते' की हीरोइन, मैं ऐसी गर्भा औरत को पांच जूते मारते लायक समझता हूँ, और हजरत नक्क़ार (आचोलक) कारमाते हैं कि मैं तालीम देता हूँ कि औरत ऐसी ही हो, हालां कि बस चले तो तालीम दूं कि मार पांच जूते, ख्याला

उर्दू शायरी पर लेखक की अपने वाली किताब का एक हिस्सा

—पहिले

اردو شاعری کا مرم

(شری ايوڊيا پراساد گوليا)

کوی یا لیکھک جو کچھ لکھتا ہے، اسے ہر جگہ اس کا اپنا دیکھ یا آپ بیتی ہی سمجھ لینا بڑی بھول ہے، لیکھک یا کوی اپنے خاندان طرف جو کچھ دیکھتا ہے، سنتا ہے، اذبحو کرتا ہے یا مزورت محسوس کرتا ہے، اسے اپنے رنگ میں رنگ دیتا ہے، اگر ایسی ہی تصویروں کو کلاکار کی تصویر سمجھ لیا جائے تو اس سے زیادہ کلاکار کا ایمان اللہ کی ہوگا؟

ایسی طرح کی سمجھ سے تنگ آکر مشہور اسیہ لیکھک مرزا عظیم بیگ نے اردو ساہتیہ کے ایک ڈاکٹر عندلیب شادانی اکرم سے اپنی ایک خط کو ۹ اکتوبر ۱۹۴۰ء کے خط میں لکھا تھا:—

”میں انسانیے (کہانیاں) لکھتا ہوں۔ کوئی گزرا ہوا واقعہ انھوں سے دیکھا یا سنا، اچھا کر لکھ دیا، خواہ (چاہئے) وہ اپنی مرضی کے سخت خلاف ہی کیوں نہ ہو، مثلاً میرے ناول کو تار کے باب آلو کے پختے کی ہیروئن، میں ایسا لکھی عورت کو پانچ جوتے مارنے لائق سمجھتا ہوں، اور حضرت نقاد (آلوچک) فرماتے ہیں کہ میں تصیم دیتا ہوں کہ عورت ایسی ہی ہو، حالانکہ میں چلے تو عظیم دلوں کو مار پانچ جوتے، خواہ

اردو شاعری پر لیکھک کی آواز، والی کتاب کا ایک حصہ

—پہلی

نیا دنیا ہند
اللہ شاہوی کا مرم
اگر سیکھو

نیا دنیا ہند
وہو شاعر کا مرم
اگر سیکھو
حسن نظامی اس کول تارا کے باب "انجام لغزت" کو پڑھ کر
انبار میں تنقید (معاوضا) کرتے ہیں کہ عظیم بکت نے کیفیت
دی ہو کہ محمد میں اکیلی سفر نہ کریں۔ حالانکہ میرا حکم و عمل ہے کہ
کہ میں جوان لڑکی کو تنہا (دلیلی) علی اللہ سے جو بھیہو پڑانا اور کھینچنا چاہتا
اللہ سخت ہایت کرتا ہوں کہ ایسا ہی کرو۔ نصیحت یا آنت آئیگی
وہ آئے نہ۔

جب تمہاری رائے کے رکھتے تھے انت بھی خرچ تھا لڑکوں کا
اب جو نظیر ہوئے پھرتے ہیں "میرا" انہیں کی بدولت ہو
سلام نہیں آپ اس مشکو میر کے حسب حال راینا حال آکھوں
کھتے ہیں اس میں آپ کو وہ لغت کیوں نہیں دکھائی دیتی جو
تو شاعر سیلاب پر بھیج نہا ہو۔ بالکل اسی طرح شوکت کھانا لڑکی
نے کھینچنے کے جھوٹوں کے غلاموں پر جوٹ کی، جو ایک صاحب نے
اس کو شوکت کے حسب حال کہہ دیا۔ آپ لکھتے ہیں، شوکت اپنی
بیگم کی جوڑیاں کھاتے رہے ہیں۔

اللہ شاہوی کا مرم
اگر سیکھو
حسن نظامی اس کول تارا کے باب "انجام لغزت" کو پڑھ کر
انبار میں تنقید (معاوضا) کرتے ہیں کہ عظیم بکت نے کیفیت
دی ہو کہ محمد میں اکیلی سفر نہ کریں۔ حالانکہ میرا حکم و عمل ہے کہ
کہ میں جوان لڑکی کو تنہا (دلیلی) علی اللہ سے جو بھیہو پڑانا اور کھینچنا چاہتا
اللہ سخت ہایت کرتا ہوں کہ ایسا ہی کرو۔ نصیحت یا آنت آئیگی
وہ آئے نہ۔

نیا دنیا ہند
وہو شاعر کا مرم
اگر سیکھو
حسن نظامی اس کول تارا کے باب "انجام لغزت" کو پڑھ کر
انبار میں تنقید (معاوضا) کرتے ہیں کہ عظیم بکت نے کیفیت
دی ہو کہ محمد میں اکیلی سفر نہ کریں۔ حالانکہ میرا حکم و عمل ہے کہ
کہ میں جوان لڑکی کو تنہا (دلیلی) علی اللہ سے جو بھیہو پڑانا اور کھینچنا چاہتا
اللہ سخت ہایت کرتا ہوں کہ ایسا ہی کرو۔ نصیحت یا آنت آئیگی
وہ آئے نہ۔

'شاعر' ماہ ۱۹۸۸ء کا ۳۲-۳۳

نیا دنیا ہند
اللہ شاہوی کا مرم
اگر سیکھو
حسن نظامی اس کول تارا کے باب "انجام لغزت" کو پڑھ کر
انبار میں تنقید (معاوضا) کرتے ہیں کہ عظیم بکت نے کیفیت
دی ہو کہ محمد میں اکیلی سفر نہ کریں۔ حالانکہ میرا حکم و عمل ہے کہ
کہ میں جوان لڑکی کو تنہا (دلیلی) علی اللہ سے جو بھیہو پڑانا اور کھینچنا چاہتا
اللہ سخت ہایت کرتا ہوں کہ ایسا ہی کرو۔ نصیحت یا آنت آئیگی
وہ آئے نہ۔

نیا دنیا ہند
وہو شاعر کا مرم
اگر سیکھو
حسن نظامی اس کول تارا کے باب "انجام لغزت" کو پڑھ کر
انبار میں تنقید (معاوضا) کرتے ہیں کہ عظیم بکت نے کیفیت
دی ہو کہ محمد میں اکیلی سفر نہ کریں۔ حالانکہ میرا حکم و عمل ہے کہ
کہ میں جوان لڑکی کو تنہا (دلیلی) علی اللہ سے جو بھیہو پڑانا اور کھینچنا چاہتا
اللہ سخت ہایت کرتا ہوں کہ ایسا ہی کرو۔ نصیحت یا آنت آئیگی
وہ آئے نہ۔

نہاں، 'بہارِ ہنکے کلام کو دیکھ کر کسی کو یقین نہیں ہوتا کہ یہ اچھے کیے ہوئے ہوں گے۔ انھوں نے خود اپنے چیموں میں یہ عجیب کسی کو بنایا۔ ظاہر وہ جانتے تھے کہ کسی کو یقین نہ آئے گا۔ اصفیٰ مولوی جیسے ایک آدمی جن کے سالیے میں اگر مشہدہ رند "بگیا" مراد آبادی بھی تو بہ کر لیتے تھے جسٹن و محقق، ساتھی و شراب پر عمر بھر کھتے رہے کیونکہ غزل کا میلان ہی ایسا ہے، کوئی کتنا ہی خیال کی اطران لے، آخر میں آ سے اترتا ہی جگہ ہوگا۔ بقول غالب —

بیت نہیں ہو بارہ و ساغر کے اخیر

اردو شاعری میں کچھ اصطلاحیں کچھ شبہ ایسے ہیں جو بار بار آتی ہیں آتے ہیں اور جن کو سمجھنا یا ظاہری کا اصلی مطلب یا مراد سمجھنا نہیں آتا۔ انہیں شبہوں کا سہارا لے کر اردو شاعروں نے حرف میں سب کچھ کہہ جاتے ہیں۔ اس لئے پہلے ان کو جان لینا ضروری ہے۔ آسان ہے کہ ہم نے ایسے شبہوں کو چارہ — (۱) گلشن (۲) بخارہ (۳) عشقِ ابد (۴) محرماتوں میں بانٹ دیا ہے۔ ان میں بہت کم ہم نے ان شاعروں کا کلام دیا ہے جن کو اس شاعروں کی قید کی وجہ سے ہم کیسک میں نہیں دے سکے۔ حالانکہ اس آئینہء شاعری کی پائوں، سائیل، کینچ، آغا شاعر، کینچ، سار، مائل، طیل، اوزید، اصفیٰ، نور علی، فتح، کرند، اول، حسن جیسے اہمال استاد اور سبیل، الہ آبادی، بہزاد، گھنوی، بیگم، ہری چند، اختر، ترلوک چند، محمد جیسے سب کو پیار سے کلام کاروں کا لیسک میں ذکر ہے

بارہ و ساغر = شرابِ ابد پیار۔

نہاں، 'بہارِ ہنکے کلام کو دیکھ کر کسی کو یقین نہیں ہوتا کہ یہ اچھے کیے ہوئے ہوں گے۔ انھوں نے خود اپنے چیموں میں یہ عجیب کسی کو بنایا۔ ظاہر وہ جانتے تھے کہ کسی کو یقین نہ آئے گا۔ اصفیٰ مولوی جیسے ایک آدمی جن کے سالیے میں اگر مشہدہ رند "بگیا" مراد آبادی بھی تو بہ کر لیتے تھے جسٹن و محقق، ساتھی و شراب پر عمر بھر کھتے رہے کیونکہ غزل کا میلان ہی ایسا ہے، کوئی کتنا ہی خیال کی اطران لے، آخر میں آ سے اترتا ہی جگہ ہوگا۔ بقول غالب —

بیت نہیں ہو بارہ و ساغر کے اخیر

نہاں، 'بہارِ ہنکے کلام کو دیکھ کر کسی کو یقین نہیں ہوتا کہ یہ اچھے کیے ہوئے ہوں گے۔ انھوں نے خود اپنے چیموں میں یہ عجیب کسی کو بنایا۔ ظاہر وہ جانتے تھے کہ کسی کو یقین نہ آئے گا۔ اصفیٰ مولوی جیسے ایک آدمی جن کے سالیے میں اگر مشہدہ رند "بگیا" مراد آبادی بھی تو بہ کر لیتے تھے جسٹن و محقق، ساتھی و شراب پر عمر بھر کھتے رہے کیونکہ غزل کا میلان ہی ایسا ہے، کوئی کتنا ہی خیال کی اطران لے، آخر میں آ سے اترتا ہی جگہ ہوگا۔ بقول غالب —

بارہ و ساغر = شرابِ ابد پیار۔

ن کرنا بڑی بھاری گستاخی ہو، ہم ان میں سے کتنے ہی شاعروں کو شاعریوں میں ہمارے ہر شعر کوئی تو نہ آدہ اور کھنی ہی تھی۔ اس لئے اچھا ہونے ہوئے بھی بہت سا پڑنا ہوا تھا۔ ان حصوں میں ان شاعروں کے ایک ایک دو دو شعر مینے کا لکھ نہیں جیت سکے۔ اس لئے یہ حصہ ذرا لمبا ہو گیا۔

—گولشہن = چمن، باغ—

گول = گول، بولبول کا شہم پاتر

بولبول = مٹا بولنے والا مستند پنچھی، گل پر عاشق

آتشیاں = گھونٹا

ککرس = پتھر

باغیاں = باغ کا رکشک، ماری

گلشہن = گول توڑنے والا

سویاد = آہری، شیکاری

ہم گولشہن کی آواز میں اردو شاعروں نے بڑے بڑے شاعر کے

چلنا ہے۔ اور اس سے کہ ہزاروں کا خون ہو جائے، پر

پر شہنشاہی اور اس غولی سے کہ ہزاروں اور سرگرمیوں کے ڈر سے

کے ڈر سے سبھی بات کہنا، مظلوموں کو ان کا فرض جانا جب آگیا ہو

ناگوار کیا ہے جاتا ہے۔ تب شاعر ایسی بھاشا میں اپنے دل کے پھیلنے کی

فکرتوں کو دیتا ہے، کہ اسکا मतलब بھی پورا ہو جائے اور ظالم کو اور زیادہ ظلم کا سہارا

کو دیتا ہے۔ اور اسکا मतलब بھی پورا ہو جائے اور ظالم کو اور زیادہ ظلم کا سہارا

ہمیں دینے کو دیتے ہیں۔ دراصل گلشہن میں اسی طرح کے لاج نیک داد دینے

چمن = وطن، دلچسپ

ن کرنا بڑی بھاری گستاخی ہو، ہم ان میں سے کتنے ہی شاعروں کو شاعریوں میں ہمارے ہر شعر کوئی تو نہ آدہ اور کھنی ہی تھی۔ اس لئے اچھا ہونے ہوئے بھی بہت سا پڑنا ہوا تھا۔ ان حصوں میں ان شاعروں کے ایک ایک دو دو شعر مینے کا لکھ نہیں جیت سکے۔ اس لئے یہ حصہ ذرا لمبا ہو گیا۔

—گلشہن = چمن، باغ—

گلی = گھول، بلب کا پریم ہونے والا

بلیں = بیٹھا بولنے والا مستند پنچھی، گل پر عاشق

آتشیاں = گھونٹا

تفیس = پتھر

باغیاں = باغ کا رکشک، ماری

گلشہن = گول توڑنے والا

سویاد = آہری، شیکاری

ہم گولشہن کی آواز میں اردو شاعروں نے بڑے بڑے شاعر کے

چلنا ہے۔ اور اس سے کہ ہزاروں کا خون ہو جائے، پر

پر شہنشاہی اور اس غولی سے کہ ہزاروں اور سرگرمیوں کے ڈر سے

کے ڈر سے سبھی بات کہنا، مظلوموں کو ان کا فرض جانا جب آگیا ہو

ناگوار کیا ہے جاتا ہے۔ تب شاعر ایسی بھاشا میں اپنے دل کے پھیلنے کی

فکرتوں کو دیتا ہے، کہ اسکا मतलब بھی پورا ہو جائے اور ظالم کو اور زیادہ ظلم کا سہارا

کو دیتا ہے۔ اور اسکا मतलब بھی پورا ہو جائے اور ظالم کو اور زیادہ ظلم کا سہارا

ہمیں دینے کو دیتے ہیں۔ دراصل گلشہن میں اسی طرح کے لاج نیک داد دینے

چمن = وطن، دلچسپ

اگست ۱۹۰۷ء

اردو شاہی کالم

نیا ہفتہ

مگلی = غلام آدمی کا پریم یا ترا دیش، دھن، آبرو وغیرہ۔

آرٹھیاں = غلام کا پتھر

تھنس = جیل خانہ

باغیاں = دیش بھکت، نیتا

مٹھیوں = الٹی مٹی، دیش کا دشمن

مستیاں = غلام بنانے والا، دیشی حاکم

اسی نگاہ سے نگلش کی سیر تھیجے۔

چپن = جو لوگ اپنی آزادی سے دلوں کو بالکل بھول گئے اور

غلامی ہی میں مست ہیں انھیں سامنے بٹھکر کہا اور۔۔۔

بوئے خزاں سے مست ہیں، یاد نہیں بھلا گیا

ہم تو چین پرست ہیں، پھول کہاں سے، خار کیا

فانی بہاؤی

جو لوگ اس دنیا کے باغ میں کھلے ہو کر کبھی غلام ہیں ان

بد جیل خانے سے جیدی بھی ترس کھاتے ہیں۔۔۔

نہیں صلح کس حالت میں ہوں میں باغ عالم میں

تھنس واسے بھی مجھ کو دیکھ کر فریاد کرتے ہیں

— شائق کھنوی

پھر ان لوگوں کا ذکر ہو تو اپنی آن اور آزادی کو بالکل بھول کر

خیر دل کی غلامی میں ہی خوش ہوں۔۔۔

خود فراموش تھنس میں ہیں چین پادشہی خیر کے ہو گئے ایسے کہ چین پادشہی

— شائق کھنوی

دنیا کے عیش آرام میں پڑ کر آدمی ایسے اصلی فرس

نیا ہینڈ ۱۰۷ شاعر کا مہم آگست ۱۹۰۷

گول = گولام آزادگی کا پریم پانچ، دیش، دلت، آدابک واپس

آشیریا = گولام کا دہر

کوکس = جیل خانہ

باغیاں = دیش بھکت نیتا

گولرچی = لالچی لوترا، دیش کا دشمن

سینا = گولام بنانے والا، دیشی حاکم

اسی نگاہ سے گولرچن کی سیر کیجیو۔

چمن = جو لوگ اپنے آباؤاؤی کے دینوں کو بھول بھول گئے

اور گولامی ہی میں مست ہیں انھیں سامنے رکھ کر کہا ہے۔۔۔

بڑے خیریاں سے مست ہیں، یاد ہمیں بھلا گیا

ہم تو چین پرست ہیں، کول کہاں سے، خار کیا

— فانی بہاؤی

جو لوگ اس دنیا کے باغ میں بھولے رہ کر بھی گولام ہیں ان

پر جیل خانوں کے کیری بھی ترس کھاتے ہیں۔۔۔

نہیں صلح کس حالت میں ہیں میں باغ عالم میں

کوکس واسے بھی تم کو دیکھ کر فریاد کرتے ہیں

— شائق کھنوی

پھر ان لوگوں کا ذکر ہو تو اپنی آن اور آزادی کو بالکل بھول کر

خیر دل کی غلامی میں ہی خوش ہوں۔۔۔

خود فراموش تھنس میں ہیں چین پادشہی خیر کے ہو گئے ایسے کہ چین پادشہی

سیر کے ہو گئے ایسے کہ چین پادشہی خیر کے ہو گئے ایسے کہ چین پادشہی

— شائق کھنوی

دنیا کے عیش آرام میں پڑ کر آدمی ایسے اصلی فرس

سیرت میں سے دل نہ لگاؤ چلے چلو
فصلی بہار پاؤں کی زنجیر ہو نہ جائے
—یاس کھنڈوی

دنیا کی چند روزہ زندگی اور اس کے دکھوں کو بیان کرتے
مقام برہمنش آہ و نالہ آکر سے بچیں
د سیرت کجبول کے لئے ہو نہ آسٹیاں سے لئے

—یاس کھنڈوی

مقام برہمنش آہ و نالہ آکر سے بچیں
د سیرت کجبول کے لئے ہو نہ آسٹیاں سے لئے

اقبال
—سیرت کجبول کے لئے

دنیا میں اصل آنکھوں والے یونہی کسی چیز کی
سے لیں کہا گیا ہو۔
بڑا دوس سال کرس اپنی بے نظری سے روٹی ہو
بڑی مشکل سے ہوتا ہو بچن میں دیکھ وہ پھیلا

—اقبال
سازنی عمر غلام، سہ سبتوں میں بڑی ہوئی یا ناکام زندگی کہ لیاں
بیان کیا گیا ہو۔
کوئی ان کجبول کی قسمت دیکھنا
زندگی کا شوق، میں لپ کر رہ گئی

—عربی کجبولی

—عربی کجبولی

—عربی کجبولی

اور لکھے

کرو نہ کجبول جائے۔
مقام برہمنش آہ و نالہ آکر سے بچیں
د سیرت کجبول کے لئے ہو نہ آسٹیاں سے لئے
—یاس کھنڈوی

سیرت میں سے دل نہ لگاؤ چلے چلو
فصلی بہار پاؤں کی زنجیر ہو نہ جائے
—یاس کھنڈوی

دنیا کی چند روزہ زندگی اور اس کے دکھوں کو بیان کرتے
مقام برہمنش آہ و نالہ آکر سے بچیں
د سیرت کجبول کے لئے ہو نہ آسٹیاں سے لئے

—یاس کھنڈوی

مقام برہمنش آہ و نالہ آکر سے بچیں
د سیرت کجبول کے لئے ہو نہ آسٹیاں سے لئے

اقبال
—سیرت کجبول کے لئے

دنیا میں اصل آنکھوں والے یونہی کسی چیز کی
سے لیں کہا گیا ہو۔
بڑا دوس سال کرس اپنی بے نظری سے روٹی ہو
بڑی مشکل سے ہوتا ہو بچن میں دیکھ وہ پھیلا

—اقبال
سازنی عمر غلام، سہ سبتوں میں بڑی ہوئی یا ناکام زندگی کہ لیاں
بیان کیا گیا ہو۔
کوئی ان کجبول کی قسمت دیکھنا
زندگی کا شوق، میں لپ کر رہ گئی

—عربی کجبولی

—عربی کجبولی

—عربی کجبولی

اور لکھے

کرو نہ کجبول جائے۔
مقام برہمنش آہ و نالہ آکر سے بچیں
د سیرت کجبول کے لئے ہو نہ آسٹیاں سے لئے
—یاس کھنڈوی

سیرت میں سے دل نہ لگاؤ چلے چلو
فصلی بہار پاؤں کی زنجیر ہو نہ جائے
—یاس کھنڈوی

دنیا کی چند روزہ زندگی اور اس کے دکھوں کو بیان کرتے
مقام برہمنش آہ و نالہ آکر سے بچیں
د سیرت کجبول کے لئے ہو نہ آسٹیاں سے لئے

—یاس کھنڈوی

مقام برہمنش آہ و نالہ آکر سے بچیں
د سیرت کجبول کے لئے ہو نہ آسٹیاں سے لئے

اقبال
—سیرت کجبول کے لئے

دنیا میں اصل آنکھوں والے یونہی کسی چیز کی
سے لیں کہا گیا ہو۔
بڑا دوس سال کرس اپنی بے نظری سے روٹی ہو
بڑی مشکل سے ہوتا ہو بچن میں دیکھ وہ پھیلا

—اقبال
سازنی عمر غلام، سہ سبتوں میں بڑی ہوئی یا ناکام زندگی کہ لیاں
بیان کیا گیا ہو۔
کوئی ان کجبول کی قسمت دیکھنا
زندگی کا شوق، میں لپ کر رہ گئی

—عربی کجبولی

—عربی کجبولی

—عربی کجبولی

اور لکھے

کرو نہ کجبول جائے۔
مقام برہمنش آہ و نالہ آکر سے بچیں
د سیرت کجبول کے لئے ہو نہ آسٹیاں سے لئے
—یاس کھنڈوی

سیرت میں سے دل نہ لگاؤ چلے چلو
فصلی بہار پاؤں کی زنجیر ہو نہ جائے
—یاس کھنڈوی

دنیا کی چند روزہ زندگی اور اس کے دکھوں کو بیان کرتے
مقام برہمنش آہ و نالہ آکر سے بچیں
د سیرت کجبول کے لئے ہو نہ آسٹیاں سے لئے

—یاس کھنڈوی

مقام برہمنش آہ و نالہ آکر سے بچیں
د سیرت کجبول کے لئے ہو نہ آسٹیاں سے لئے

اقبال
—سیرت کجبول کے لئے

دنیا میں اصل آنکھوں والے یونہی کسی چیز کی
سے لیں کہا گیا ہو۔
بڑا دوس سال کرس اپنی بے نظری سے روٹی ہو
بڑی مشکل سے ہوتا ہو بچن میں دیکھ وہ پھیلا

—اقبال
سازنی عمر غلام، سہ سبتوں میں بڑی ہوئی یا ناکام زندگی کہ لیاں
بیان کیا گیا ہو۔
کوئی ان کجبول کی قسمت دیکھنا
زندگی کا شوق، میں لپ کر رہ گئی

—عربی کجبولی

—عربی کجبولی

—عربی کجبولی

اور لکھے

کرو نہ کجبول جائے۔
مقام برہمنش آہ و نالہ آکر سے بچیں
د سیرت کجبول کے لئے ہو نہ آسٹیاں سے لئے
—یاس کھنڈوی

गुब्बों के मुक्कसने में कहते हैं हैंस के फूल ।

अपना करो खयाल हमारी तो कट गई ॥

—शाद अचीमाबादी

कुछ और नीजुक खयाल—

शाखों से बर्गेगुल नहीं भड़ते हैं बारा में ।

जेवर उतर रहा है उरुसे बहार का ॥

—अमीर मीनार्द

सुवह को राचे गुलो शबनम तुला ।

हँसने वाले रात भर रोते रहे ॥

—साकिय खयनवी

रकीबों से रकीब अच्छे जो जल कर नाम लेते हैं ।

गुलों से खार बेहतर हैं जो दामन थाम लेते हैं ॥

—गुमनाम

धमन्ड के रूपर सुनिये—

किया गहर गुल ने जब रंग-ओ-रूप औ वृ का ।

मार हवा ने भोंके शबनम ने मुँह पे थुका ॥

—गुमनाम

तुलतुल—

इसे गुलदम और अन्दर्लाब भी कहते हैं— तुलतुल और

नर्गिस = एक फूल जो आख से मिलता है, बेनूरी = रोशनी

का न होना, दीवाबर = आखों वाला, गुँचा = कलियाँ, बर्गेगुल = फूल

की पंखड़ियाँ, जेवर = गहना, उरुसे बहार = बहार की तुलहिन,

खार = रहस्य, रकीब = दोस्त, रकीब = प्रतिस्पर्धी.

अस्त

आदु शादुरी का मर्म

याहन्द

पंखों के मुक्कसने में कहते हैंस के फूल

अपना करो खयाल हमारी तो कट गई ॥

—शाद अचीमाबादी

कुछ और नीजुक खयाल—

शाखों से बर्गेगुल नहीं भड़ते हैं बारा में ।

जेवर उतर रहा है उरुसे बहार का ॥

—अमीर मीनार्द

सुवह को राचे गुलो शबनम तुला ।

हँसने वाले रात भर रोते रहे ॥

—साकिय खयनवी

रकीबों से रकीब अच्छे जो जल कर नाम लेते हैं ।

गुलों से खार बेहतर हैं जो दामन थाम लेते हैं ॥

—गुमनाम

धमन्ड के रूपर सुनिये—

किया गहर गुल ने जब रंग-ओ-रूप औ वृ का ।

मार हवा ने भोंके शबनम ने मुँह पे थुका ॥

—गुमनाम

तुलतुल—

इसे गुलदम और अन्दर्लाब भी कहते हैं— तुलतुल और

नर्गिस = एक फूल जो आख से मिलता है, बेनूरी = रोशनी

का न होना, दीवाबर = आखों वाला, गुँचा = कलियाँ, बर्गेगुल = फूल

की पंखड़ियाँ, जेवर = गहना, उरुसे बहार = बहार की तुलहिन,

खार = रहस्य, रकीब = दोस्त, रकीब = प्रतिस्पर्धी.

गुल के प्रेम को कैसे अल्छी तरह बयान किया गया है—

भाइनी है कौन से गुल की नजर ।

बुलबुलें फिरती हैं क्यों तिनके लिये ॥

और देखिये—

फट पड़ा एक आत्मा, बुलबुल के दिल पर रात को ।

रख दिया फूलों पे मुँह शबनम ने जिस दम प्यार से ॥

—साकिब लखनवी

बुलबुल के गुल से प्रेम और अपने किसी प्रीतम से प्रेम की

बकरंगी बयान करते हुए "रिन्द" साहब कर्माते हैं—

आ अन्दलीब ! मिल के करे आहोबारियाँ ।

तू पुकारे हाय गुल ! मैं पुकारूँ हाय दिल !

आशियाना—

मुल्क की हालत इतनी दर्दनाक हो रही है कि—

दिल बुट रहा है आप से आप आशियाने में ।

अल्छी नहीं चमन की हवा इस जमाने में ॥

—साकिब लखनवी

चार दिन के सुख में भी आगों का खतरा दिखाई देता था.

क्या फवती हुई बात कही है—

चार दिन की इस बुलन्दी में भी थी पस्ती निहाँ ।

आशियाने से नजर आता था पर सैयाद का ॥

—साकिब लखनवी

शबनम = ओस, आहोबारि = रोना चिखाना.

बुलन्दी = चढ़ाई, पस्ती = गिरावट, निहाँ = छिपी हुई.

اگرست

اردو شاعری کا مرم

نیاست

مخلی کے پریم کو کسی ایسی طرح بیان کیا گیا ہے۔ جس کے لئے
جاملی اور کین کے عمل کی نظر بلیں پھرتی ہیں کیں جس کے لئے

اور دیکھئے—

بھٹ پڑا ایک آسمان اُٹھیل کے دل پر رات کو

رنگ دیا پھولوں پہ مُتہ ظہنم نے جس دم بیار سے

—تاج کھنوی

بیل کے گلی سے پریم اور اپنے کسی پریم سے پریم کی بھرتی

بیان کرتے ہوئے "رند صاحب فرماتے ہیں—

مغز لیب اہل کے کریں آہ نازیاں تو پیکار سے اے گلی میں لپکا دل

—آرشد شاہ

کرت آئی حالت اتنی دردناک ہوئی ہے کہ—

دل گھٹ رہا ہے آپ سے آپ آشیانے میں

ایسی نہیں ہیں کی ہا اس زمانے میں

—تاج کھنوی

چار دن کے سکھ میں بھی آگے کا خطرہ دکھائی دیتا تھا۔ کس

پھرتی ہوئی بات کی ہے

چار دن کی اس بلندی میں بھی اتنی جستی نہال

آشیانے سے نظر آتا تھا صحتیا د کا

—تاج کھنوی

—ظہنم = اسی آہ و زاری = رونا چلانا

بلندی = چڑھاؤ، لیب = گڑھاؤ، لیب سے = چھپی ہوئی

نیا ہیند ۱۸۹
وہ شایری کا مہم
آغا اس سہ ۱۸۹

گولامی کے ہنہرے کدھرے سے آقا بادی کا پاس کس کا
مہو پڑا کیتنا اچھا ہے۔
کراس کی تیلیاں اچھی ہیں تیکوں سے نشیں کے
یہ سب کچھ ہے، مگر سہ یاد! دیتل پر کھا دھارا ہے ۱۱
کراس اور آدھیوں کا کراس، پے سہ یاد! سوت سوت سے ۱
یہ تہری دستکاری ہے، اسے مہنے بنا یا ہے ۱۱

—ساکینہ لکھنوی

پراپ کڑوے میں آقا جانے سے پھر کا جلا جانا اچھا۔

جب میں نہیں وہ باغ میں اس کا مقام کیوں؟

اچھا ہوا کہ آگ لگی آگ آسٹیا نے میں

—ساکینہ لکھنوی

ہمارے زور اور جیادرا سیتام ن لاپ جانے کی وجہ دھرا من

کی دیا نہیں، بلیک۔

میری ن بک کھڑ اس سٹوک سے، مہرے ہوتے ۱

تھپ کے آغا بھارت ن آدھیوں کی ۱۱

—کافی بھارتی

جہل خانے میں آجڑے ہونے گھر کی یاد۔

گولڈن سے آٹ کے مہرا مہرا دیتل میں آقا گیا ۱

اک دیا بن گیا ہے، نریمان جلا دھرا ۱۱

—ساکینہ لکھنوی

چار دیتل کے آغا میں آدھی اوسلی ن کے سوتل کو مہل

جانا ہے۔

نریمان = پوسلا یا پھر، بک = بلیک۔

نیا ہیند ۱۸۹
اردو شاعری کا مہم

نیا ہیند ۱۸۹
اردو شاعری کا مہم
نیا ہیند ۱۸۹
اردو شاعری کا مہم

نیا ہیند ۱۸۹
اردو شاعری کا مہم

نیا ہیند ۱۸۹
اردو شاعری کا مہم

نیا ہیند ۱۸۹
اردو شاعری کا مہم

نیا ہیند ۱۸۹
اردو شاعری کا مہم

نیا ہیند ۱۸۹
اردو شاعری کا مہم

نیا ہیند ۱۸۹
اردو شاعری کا مہم

نیا ہیند ۱۸۹
اردو شاعری کا مہم

نیا ہیند ۱۸۹
اردو شاعری کا مہم

بھارتوں میں بھڑک رہا ہے کبھی بھڑک رہا یا!
کی جلتی ہے کیا شہ، کھڑے آفریقا ہے

—مادھوشا مہالیکاری

اسی طرح—

وہ سال فصل کھل میں اچھا تھا جنتے جنتے
رہتا تو آفریقا کو اب ایک سال ہوتا کھنڈی

—آسی لکھنوی

اور سونپے—

تاریخ آفریقا سے میں نے یہ لازمی
اہل قبا کے حق میں بجلی سے آفریقا

—اسد علی

فرس—

ہے جلالیم شکاری! ہم آفریقا اپنی گولامی کو آفریقا
خاتم نہیں کر پاؤ تو اس سے آفریقا مت، آفریقا ہم میں سبھی
کی کمی ہے، تڑپ ہے تو کھڑے گولامی نہیں ڈھل سکتی، آفریقا
اور سب کر—

دے فرس نہ خولنا، کھڑے سب کر سے یاد!

تڑپتے ہم تو پھاڑوں میں راستہ کرتے

کھڑے خانہ میں بھر کی جاتی گولامی میں آفریقا کی یاد نہیں جاتی—

ہو گئے بھڑکوں کی آفریقا کی یاد نہیں جاتی

جب کوئی بھڑکا آفریقا، کھڑے آفریقا سے یاد آئے

شہ = جنت، دے فرس = جنت کے آفریقا، کھڑے = آفریقا،

آفریقا = آفریقا

آفریقا
اردو شاعری کا مہم
آغا اسد علی صاحب

اسی طرح—
وہ سال فصل کھل میں اچھا تھا جنتے جنتے
رہتا تو آفریقا کو اب ایک سال ہوتا کھنڈی

اور سونپے—
تاریخ آفریقا سے میں نے یہ لازمی
اہل قبا کے حق میں بجلی سے آفریقا

فرس—
ہے جلالیم شکاری! ہم آفریقا اپنی گولامی کو آفریقا
خاتم نہیں کر پاؤ تو اس سے آفریقا مت، آفریقا ہم میں سبھی
کی کمی ہے، تڑپ ہے تو کھڑے گولامی نہیں ڈھل سکتی، آفریقا
اور سب کر—
دے فرس نہ خولنا، کھڑے سب کر سے یاد!
تڑپتے ہم تو پھاڑوں میں راستہ کرتے
کھڑے خانہ میں بھر کی جاتی گولامی میں آفریقا کی یاد نہیں جاتی—
ہو گئے بھڑکوں کی آفریقا کی یاد نہیں جاتی
جب کوئی بھڑکا آفریقا، کھڑے آفریقا سے یاد آئے

شہ = جنت، دے فرس = جنت کے آفریقا، کھڑے = آفریقا،
آفریقا = آفریقا

نیا دیند بڈے شاپری کا سہم آگست سن 1870

بچان کے لیتے جیل جاؤں اور اپنے ہی لوگ ہوں گے۔
ہماری گولامی دوسروں کے لئے تاشا ہو۔

کندھام بھی دیکھ لگتی ہے، دوسرے بچوں کے لیتے
آئندہ لیب آکا کر فرانس میں رکھ تاشا ہو گا۔

کھڑے اور نپوتے—

گولامان بھارے پر یا نریمان بچا لیتا
میں کچھ ہوا آسیر، میرا کچھ کھڑے یا

نہی کے شہر میں کینا دوسرے ہے—

میری کندھ کچھ دیکھ لگتی تاشا یا
بھارے آڈے ہی، آسیریاں بچا بچا یا

—ساکھ لکھنوی

ہمیں تاشا کیکے رستم بچان بے پے کھڑے بچوں
کھلک سے آڈے لے لیتے تو کیکے آسیریاں کرتے
آڈے ہی کچھ ہے لکھنے بچوں نے میرے پاس
رکھ دیتی ہے سو بھ کیکے دین کی آسیر ہے

—آسیر لکھنوی

بچا بچا—

بچا بچا رکھنا کرنے والے اور بچوں کو سیکھنے والا ہے
بچا بچا رکھنا بچا بچا ہے۔ پر بچا کچھ دوسرے بچوں سے
بچا بچا رکھنا بچا بچا ہے تو بچوں سے بچا بچا

آسیر = کندھ، دیکھ لگتی تاشا بچا بچا
رستم بچان = بچان کے بچا بچا، آڈے = بچا بچا

آگست سن 1870 اردو ظاہری کا مرم

بچا بچا کے لئے بچا بچا اور اپنے ہی لوگ ہوں گے۔

بچا بچا بچا بچا کے لئے تاشا ہو۔
بچا بچا بچا بچا کے لئے تاشا ہو۔

کچھ اور بچوں—

بچا بچا بچا بچا میں کچھ ہوا آسیر
بچا بچا بچا بچا میں کچھ ہوا آسیر

—ساکھ لکھنوی

بچا بچا بچا بچا کے لئے تاشا ہو۔
بچا بچا بچا بچا کے لئے تاشا ہو۔

—ساکھ لکھنوی

بچا بچا بچا بچا کے لئے تاشا ہو۔
بچا بچا بچا بچا کے لئے تاشا ہو۔

بچا بچا بچا بچا کے لئے تاشا ہو۔
بچا بچا بچا بچا کے لئے تاشا ہو۔

بچا بچا بچا بچا کے لئے تاشا ہو۔
بچا بچا بچا بچا کے لئے تاشا ہو۔

निराने बरंगुल तक भी, न छोड़इ इस बाग में गुलर्ची ।
तेरी किसमत से रज्ज आराइयाँ हैं बागवानों में ॥

—इकबाल

सैयाद तो है ही जालिम, पर जब बागवाँ भी चुल्म करने लगता है तब बुलबुल के रंज की कोई हद नहीं रहती. रत्नक ही भक्तक बन जाय, अपने ही पराये हो जाँय, तब दिलों पर क्या गुजरती है, सुलाहिजा करमाइये—

बागवाँ ने आग दी जब आशियाने को भेरे ।
जिन पे तकिया था, वहीं पत्ते हवा देने लगे ॥

—साकिय लखनवी

(५६)
[बुलबुल कहती है:—बाग के माली ने ही जब भेरे घोंसले को आग लगाई तब औरों के बुलमोसितम को क्या कहूँ, जिन पत्तों पर मेरा तकिया था वह पत्ते भी उड़ उड़ कर आग को भड़काने में मदद देने लगे.]

जब मुसीबत आती है, तब अपने भी पराण हो जाते हैं, जिनसे बहुत कुछ आशाएँ थीं वह भी सताने पर उतार हो जाते हैं. कुछ शेर देखिये—

बहुत उर्मीद थी जिनसे, हुए वह मेहरवाँ कातिल ।
हमारे कल्ल करने को, बने खुद पासवाँ कातिल ॥

—गुमनाम

बरंगुल = फूल की पंखड़ी, गुलर्ची = फूल तोड़ने वाला, रज्ज आराइयाँ = लड़ाई की तय्यारियाँ,

पासवाँ = रत्नक,

است
اردو شاعری علامہ
نشان بڑی دلگی تک بھی نہ چھوڑیں اس بات میں لگیں
ہری قسمت سے رزم آرائیاں ہیں افسانوں میں
اقبال

صیاد تو ہو ہی ظالم پر جب باغیان بھی ظلم کر لے گستاخو تیرے
بیل کے سچ کی کوئی حد نہیں رہی. کشتک ہی بھٹک بن جائے
اپنے ہی پرانے ہو جائیں، تب دلوں پر کی گزرتی ہو. لحاظ نہ لائیے۔
باغیان سے آگ دی جب آغشیانے کو مرے
جون پہ تکسہ چھائی وہی پتے ہوا دینے کے
خاتی کھنوی

بیل کہتی کہتی ہو:—باغ کے مال نے ہی جب میرے گھونسے
کو مرے لگاؤں تک امداد کے ظلم دیکھ کر کیا کموں آجی بچوں پر
میرا تکسہ چھائی وہ پتے بھی آؤ آؤ کر گل کو بھڑکانے میں مدد دینے
کے۔]

جب مصیبت آئی ہو تب اپنے بھی پرانے ہو جائے آپ جن
سے بہت کچھ آغشیانے تھیں وہ بھی ستائے پر اتار ہو جائے یہی
کچھ شعر دیکھیے—

بہت امید تھی جن سے ہوئے وہ ہمراہ قاتل
ہمارے قتل کرنے کو، بنے خود پاسیاں قاتل
گناہم

بڑی گل = بھول کی بکھڑی، لگیں = بھول کر گئی
لڑائی کی تیاریاں، کشتک = کشتک
= رزم آرائیاں

होता नहीं है कोई, बुरे वक्त में शरीक ।
पत्ते भी भागते हैं, खिजाँ में राजर से दूर ॥

—गुमनाम

सियह बरूती में कब कोई, किसी का साथ देता है ।
कि नारीकी में साया भी, जुदा होता है इन्साँ से ॥

—गुमनाम

कौन होता है बुरे वक्त की हालत का शरीक ।
मरते दम आँख को देखा है कि फिर जाती है ॥

—गुमनाम

दोस्तों से हमने वह सदमें उठाए जान पर
दिल से दुश्मन की अदावत का गिला जाता रहा ॥

—हाली

यह राम नहीं है वह, जिसे कोई बँटा सके ।
रामख्तारी अपनी रहने दे, ऐ रामगुसार, बस ॥

दें और दुश्मनी का हमारी खयाल छोड़ ।

याँ दुश्मनी के वास्ते काकी हैं पार, बस ॥

—हाली

शुलची—

फूल तोड़ने वाला. यह बुलबुल को कतई पसन्द नहीं, उसके दर्द को देखिये—

खिजाँ = पतभड़, राजर = पेड़, सियहबरूती = बदकिस्मती, अदावत = दुश्मनी, गिला = शिकायत, रामख्तारी = हमदर्दी, रामगुसार = हमदर्द.

اگست ۱۹۱۷ء

اردو شاعری کا مرم

نیا سہند

ہوتا نہیں ہو کوئی بڑے وقت میں شریک
پتے بھی بجاتے ہیں خزاں میں بجر سے دور ۱۹۱۷ء

سے بنتی میں کب کوئی کسی کا ساتھ دیتا ہو
بر آریکی میں ساتھ بھی، جھپٹا رہتا ہوا انسان سے ۱۹۱۷ء

کون ہوتا ہو بڑے وقت کی حالت کا شریک
مرے دم آنگھ کو دیکھا ہو کہ پھر جاتی ہو ۱۹۱۷ء

دوستوں سے ہم نے وہ صدے اٹھائے جان پر
دل سے دشمن کسی عداوت کا گلا جاتا رہا ۱۹۱۷ء

یہ ہم نہیں ہو وہ جبے کوئی بنائے غم خواہی اپنی رہنے سے اٹھ گیا
دلی غیر دشمنی کا ہماری خیال چھوٹے غم دشمنی کے واسطے کافی ہیں یا نہیں ۱۹۱۷ء

خزاں = پتے جھڑا شجر = پیڑ ۱۹۱۷ء سے بخوبی = بد قسمتی ۱۹۱۷ء عداوت = دشمنی ۱۹۱۷ء
ظلمات = غم ۱۹۱۷ء خزاں = آہ سردی ۱۹۱۷ء غم گسار = ہم درد ۱۹۱۷ء

خیزیں
سرخیاں
کو دیکھئے

वाए क्रिश्मत ! कि चमन में हूँ, मगर शाद नहीं ।
जौर गुलर्चा मुझे क्या कम है, जो सैयाद नहीं ॥

—रहमत

सैयाद—

शिकारी जो बुलबुल को उसके घोंसले से छुड़ाकर पिंजरे में
बन्द कर देता है, बुलबुल को सताना उसका काम है. यह गुलशन
उजाड़ता है, आशियाने को आग लगाता है, पिंजरे में बन्द बुलबुल
गुलामी से प्यारकर सैयाद के आगे गिड़गिड़ाते हुए
कहता है:—

आजाद सुभको करदे ओ क़ैद करने वाले ।
मैं बेजवाँ हूँ क़ैरी, तू छोड़ कर हुआ ते ॥

—इकबाल

जिसकी आत्मा, जिसका दिल और दिमाग आजाद है, वह
पिंजरे के अन्दर भी अपना चमन किस तरह बना लेता है—

बना लेता है मौजे खने दिल से इक चमन अपना ।
वह पावन्दे क्रकस जो क़ितरतन आजाद होता है ॥

—असगर गोण्डवी

जो क़ैरी सैयाद ही के शिकवे शिकायत करते में लगे हुए है
वह उड़ने के मजे को नहीं जानते—

क़ए = हाथ । शाद = सुश. जौर = जुल्म.

मौजे खने दिल = दिल के खन की लहर. पावन्द = क़ैरी.

क़ितरतन = अपनी तबीयत से.

हस्त
قسمت! क़ैरी, मुझे शाद नहीं
लक्ष्मी क़ैरी, जो सैयाद नहीं
—रहमत

सैयाद—

शिकारी जो बुलबुल को उसके घोंसले से छुड़ाकर पिंजरे में
बन्द कर देता है, बुलबुल को सताना उसका काम है. यह गुलशन
उजाड़ता है, आशियाने को आग लगाता है, पिंजरे में बन्द बुलबुल
गुलामी से प्यारकर सैयाद के आगे गिड़गिड़ाते हुए
कहता है:—

आजाद सुभको करदे ओ क़ैद करने वाले ।
मैं बेजवाँ हूँ क़ैरी, तू छोड़ कर हुआ ते ॥

—इकबाल

जिसकी आत्मा, जिसका दिल और दिमाग आजाद है, वह
पिंजरे के अन्दर भी अपना चमन किस तरह बना लेता है—

बना लेता है मौजे खने दिल से इक चमन अपना ।
वह पावन्दे क्रकस जो क़ितरतन आजाद होता है ॥

—असगर गोण्डवी

जो क़ैरी सैयाद ही के शिकवे शिकायत करते में लगे हुए है
वह उड़ने के मजे को नहीं जानते—

क़ए = हाथ । शाद = सुश. जौर = जुल्म.
मौजे खने दिल = दिल के खन की लहर. पावन्द = क़ैरी.
क़ितरतन = अपनी तबीयत से.

यह सब ना-आरनाए, लज्जते परवाज है शायद ।
असीरों में अर्था तक शिकवये सैयाद होता है ॥

—असभार गोण्डवरी

परवस पंथी अत्याचार सहते सहते जब संग आ जाता है,
तब उसका मन होता है कि अत्याचारी पर चिजली ही पड़ जाय
तो अच्छा—

वकं गिरने को गिरी लेकिन जरा बचकर गिरी ।
आँच तक आते न पाई खानए सैयाद पर ॥

—वकं

जब अपने दो दुशमन आपसी लड़ाई में लग जाँ तो सतार
दुष्टों या गुलामों को आचाद होने का मौका मिल जाता है—

सुनते हैं गुलर्चा से भगाड़ा हो गया सैयाद का ।
हम सक्तीरो आज मौका है सुवारिकवाद का ॥

—दाग

कुछ और देखिये—

चमन सैयाद ने सींचा यहाँ तक खने बुलबुल से ।
कि आखिर रंग बन कर फूट निकला आरिजे गुल से ॥

—गुमानाम

ना आशना = न जानते बाले. परवाज = उड़ना, असीरों = कैदियों.

वकं = चिजली, खानए सय्याद = सय्याद का घर.

हम सक्तीरो = एक ही तरह की बोली बोलने वाले. आरिजे

गुल = फूलों के कल्लों.

اگست سلسله
اوردو شاعری کا مرم
نیا سہند

یہ سب نا آشنائے. لڑتے پر واد ہیں شاید
اسیروں میں ابھی تک ظلمتہ صیاد ہوتا ہے

اصغر گنڈوی

بد بس نیچی اتیا چار ستنے ستنے جب رنگ آجاتا ہے اس
کامن آتا ہے کہ اتیا چاری بد بلی ہی پڑ جائے تو اچھا—

برق گرے کو گری میں ذرا بچ کر گری
آسٹیک تک آنے نہ پائی خانزاد صیاد پر

برق —

جب اپنے دو دشمن ایسی لڑائی میں لگ جائیں تو سوائے اس
کے باغیوں کو آزاد ہونے کا موقع ہی جاتا ہے—

میں صغیر و آج موقع ہے مبارک بار کا
سننے میں لگی ہیں سے جھگڑا ہو گیا ستار کا

داغ —

کچھ اور دیکھیے—

چون صیاد نے سینیا سیال تک خونِ بلی سے
کر آرزو رنگ بن کر چھوٹ نکلا عارضی گل سے

گلِ مسموم

نا آشنائے = دو جانتے والے. پر واد = اڑنا. اسیروں = قیدیوں

بلی = بلی. خانزاد صیاد = ستار کا گھر

میں صغیر و = ایک ہی طرح کی بلی بولنے والے. عارضی گل =

پھولوں کے گلوں.

न तड़पने की इजाजत है न फरियाद की है ।
बुट के मर जाऊँ यह मर्जाँ में संयाद की है ॥

—याद

गले पे छुरी क्यों नहीं फेर देते ।
असरीरों को वे बालोपर करने वाले ॥

—यगाना चंगेची

यहाँ कोलाहिये चौक्रे अमल है खुद गिरमतारो ।
जहाँ बाबू सिमटते हैं वहीं सैयाद होता है ॥

—असगर गोरडवी

कल बहुत नाखाँ उरुजे बरलत पर सैयाद था ।
बात इतली थी कि मैं था कैद, वह आजाद था ॥

—साकिब लखनवी

मैं तो था मजदूर रहने पर कि था पाबन्दे इरक ।
केई पूछे बाग में क्या काम था सैयाद का ॥

—साकिब लखनवी

वे बालो पर = परकटे, कलाहिये चौक्रे अमल = काम करने के शौक
की कमी, नाखाँ = धमएड करने वाला, उरुजे बरलत = ऊँचाँ किसमत.

मदरुपीये की अजात हो न खरयाद की ओर
रिवाजों के रमणों ये मरुत बिरह वियाद की ओर

गैः पे छिपे लाकियों नहीं पछिर रीये

सिरोपों को बाल वीधे करने वाले
— बहार चंगेची

येहाँ कोलाहिये डुडुकी मरुत अरुद गुरुफतारो
जहाँ बाबू सिमटते हैं वहीं सैयाद होता है

— असगर गोरडवी

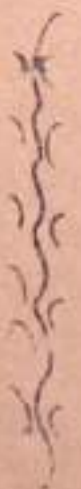
कल बहुत नाखाँ उरुजे बरलत पर सैयाद था
बात इतली थी कि मैं था कैद, वह आजाद था

— साकिब लखनवी

मैं तो था मजदूर रहने पर कि था पाबन्दे इरक ।
केई पूछे बाग में क्या काम था सैयाद का

— साकिब लखनवी

वे बालो पर = परकटे, कलाहिये चौक्रे अमल = काम करने के शौक
की कमी, नाखाँ = धमएड करने वाला, उरुजे बरलत = ऊँचाँ किसमत.



جلیان والا باغ کی کچھ یادگاریں

(شری لالہ رام جی داس)

آج سے اٹھائیس سال پہلے جلیان والا باغ کے قتل عام کے بعد کانگریس نے جو کئی پنجاب کے نظموں کی تحقیقات کرتے اور لوگوں کو لسنی دینے کے لئے مقرر کی تھی اس میں پنڈت موتی لال بی کے ساتھ شری لالہ جی داس بھی گئے تھے۔ وہاں جو کچھ انھوں نے دیکھا اور محسوس کیا ان کی طائری میں موجود اور اس میں سے کچھ کچھ باتیں انھوں نے انہیں لکھ بھیجی ہیں۔ ہم انھیں کھوٹری کھوٹری کر کے دینا ہے، کے بڑھنے والوں کے سامنے رکھیں گے۔
— ایڈیٹر [

(۱۱)

خون میں رنگے کپڑے

جلیان والا باغ کے قتل عام کے بعد کئی پنجاب میں ناظرین لاچار ہو گئے تھے۔ اس جگہ جلیان والا کے خون ہونے کے ۶ مہینے بعد بھی پنجاب جگے کا موقع ملتا تھا۔ تب میں سوکھ کر پنڈت موتی لال جی داس کے چائے ہوئے وہاں پنڈت لالہ جی داس نے سب ایڈیٹرز کو اکٹھا کیا۔ کانگریس نے موتی لال جی داس کی رائے سے پنجاب کی مختلف ڈسٹرکٹس کے لئے ایک صحیح تاریخ کی۔ اسی تاریخ کے سلسلے میں مجھے بھی پنڈت جی داس سے ملنا پڑا تھا۔
انہوں نے سائیکھوں میں پنڈت جی داس لالہ جی داس کے بارے میں

جالিয়ان والا باغ کی کھلی یادگاریں

(شری لالہ رام جی داس)

[آج سے اٹھائیس سال پہلے جالیان والا باغ کے قتل عام کے بعد کانگریس نے جو کمیٹی پنجاب کے جیلوں کی تھوڑی سی کرنے اور لوگوں کو تھوڑی دینے کے لیے مقرر کی تھی اس میں پنڈت موتی لال جی کے ساتھ شری لالہ جی داس بھی گئے تھے۔ وہاں جو کچھ انھوں نے دیکھا اور محسوس کیا ان کی طائری میں موجود اور اس میں سے کچھ کچھ باتیں انھوں نے انہیں لکھ بھیجی ہیں۔ ہم انھیں کھوٹری کھوٹری کر کے دینا ہے، کے بڑھنے والوں کے سامنے رکھیں گے۔
— ایڈیٹر]

(۲)

خون میں رنگے کپڑے

جالیان والا باغ کے قتل عام کے بعد کئی پنجاب میں جالیان والا باغ کے قتل عام کے بارے میں ناظرین لاچار ہو گئے تھے۔ اس جگہ جلیان والا کے خون ہونے کے ۶ مہینے بعد بھی پنجاب جگے کا موقع ملتا تھا۔ تب میں سوکھ کر پنڈت موتی لال جی داس کے چائے ہوئے وہاں پنڈت لالہ جی داس نے سب ایڈیٹرز کو اکٹھا کیا۔ کانگریس نے موتی لال جی داس کی رائے سے پنجاب کی مختلف ڈسٹرکٹس کے لئے ایک صحیح تاریخ کی۔ اسی تاریخ کے سلسلے میں مجھے بھی پنڈت جی داس سے ملنا پڑا تھا۔
انہوں نے سائیکھوں میں پنڈت جی داس لالہ جی داس کے بارے میں

ہمارے سائیکھوں میں پنڈت جی داس لالہ جی داس کے بارے میں

नया हिन्दू जलियान वाला याग की यादगारें अगस्त सन् '४७

बंगले में टिके थे. हमारे बंगले के चारों तरफ खुशिया पुलिस दिन रात चकर लगाती—मगर छिप कर.

अपने काम के सिलसिले में हमारी पार्टी ने पंजाब के बहुत से शहरों का दौरा किया.

एक दिन मैं अकेला अमृतसर की एक सड़क पर जा रहा था. उस जमाने में मेरी उमर करीब २३ के होगी. मैं अचकन पाजामा और पेशावरी टोपी पहने था.

एकाएक किसी ने बड़ी नरमी और शरारत से मेरे पास आकर कहा "आदाब अर्ज है साहबजादे"!

डूम कर देखा तो एक मुसलमान बुजुर्ग के दर्शन हुए. वह बाकई दर्शन के लायक थे. उमर करीब ७० के होगी. सफेद लम्बी खूबसूरत दाढ़ी, सुडौल नकशा, कपड़ों से जर्ईकी व गरीबी साक दिखती थी, मगर उससे ज्यादा साक उनकी तहजीब के चिन्ह थे. उनके चेहरे का बनावट उन मुगल बादशाहों से मिलती जुलती थी जिनकी तसवीरों से मुगल जमाने की तारीख के पढ़ने वाले बाकिरक हैं.

"खुदाबन्द वाला तुम्हारा भला करे" ! उन बुजुर्ग ने मुझे दुआ दी. "पंडित जी का पढ़सान हम कभी नहीं भूल सकते. जब खुदा भी हमें भूल गया था तब पंडितजी हमारी मदद को आए!"

मैं कुछ सवाल करना चाहता था कि उस बुद्ध ने फिर कहा— "मेरी भी कुछ अर्ज है".

मैंने पूछा "करमाइये". उनकी शरारत व परेशानी का मैं कायल हो गया था. इतना

जमाने का आबाद की कि यादगारें अगस्त १९४७

जगह में टिके थे. भारत के चारों तरफ खुशिया पुलिस

दिन रात चकर लगाती—मगर छिप कर. अपने काम के सिलसिले में हमारी पार्टी ने पंजाब के बहुत से शहरों का दौरा किया.

एक दिन मैं अकेला अमृतसर की एक सड़क पर जा रहा था. उस जमाने में मेरी उमर करीब २३ के होगी. मैं अचकन पाजामा और पेशावरी टोपी पहने था.

एकाएक किसी ने बड़ी नरमी और शरारत से मेरे पास आकर कहा "आदाब अर्ज है साहबजादे"!

डूम कर देखा तो एक मुसलमान बुजुर्ग के दर्शन हुए. वह बाकई दर्शन के लायक थे. उमर करीब ७० के होगी. सफेद लम्बी खूबसूरत दाढ़ी, सुडौल नकशा, कपड़ों से जर्ईकी व गरीबी साक दिखती थी, मगर उससे ज्यादा साक उनकी तहजीब के चिन्ह थे. उनके चेहरे का बनावट उन मुगल बादशाहों से मिलती जुलती थी जिनकी तसवीरों से मुगल जमाने की तारीख के पढ़ने वाले बाकिरक हैं.

"खुदाबन्द वाला तुम्हारा भला करे" ! उन बुजुर्ग ने मुझे दुआ दी. "पंडित जी का पढ़सान हम कभी नहीं भूल सकते. जब खुदा भी हमें भूल गया था तब पंडितजी हमारी मदद को आए!"

मैं कुछ सवाल करना चाहता था कि उस बुद्ध ने फिर कहा— "मेरी भी कुछ अर्ज है".

मैंने पूछा "करमाइये". उनकी शरारत व परेशानी का मैं कायल हो गया था. इतना

نیا ہند ۱۸۷

نیا ہند

نیا ہند جلیان والاباغ کی کچھ یادگاریں

نیا ہند جلیان والاباغ کی کچھ یادگاریں

نیا ہند جلیان والاباغ کی کچھ یادگاریں

نیا ہند جلیان والاباغ کی کچھ یادگاریں

میں ساہج گلی میں بڑھا۔

نیا ہند جلیان والاباغ کی کچھ یادگاریں

نیا ہند جلیان والاباغ کی کچھ یادگاریں

نیا ہند جلیان والاباغ کی کچھ یادگاریں

نیا ہند جلیان والاباغ کی کچھ یادگاریں

نیا ہند جلیان والاباغ کی کچھ یادگاریں

نیا ہند جلیان والاباغ کی کچھ یادگاریں

نیا ہند جلیان والاباغ کی کچھ یادگاریں

نیا ہند جلیان والاباغ کی کچھ یادگاریں

نیا ہند جلیان والاباغ کی کچھ یادگاریں

نیا ہند جلیان والاباغ کی کچھ یادگاریں

نیا ہند جلیان والاباغ کی کچھ یادگاریں

نیا ہند جلیان والاباغ کی کچھ یادگاریں

نیا ہند جلیان والاباغ کی کچھ یادگاریں

میں پنجاب آیا کیوں تھا۔ مظلوموں کے بارے میں اصلی حالت معلوم کرنے کے لیے دورِ عمل کر ہم ایک اور جنگِ اعلیٰ میں لڑے۔ یہ ایسے شہریت بڑھے کا سلطان تھا۔ بہت چھوٹا سا سلطان جیسا عربوں کی تقدیر میں تھا اور

ہم اندر تھے۔ مشکل سے دو گز کا آسٹن ہوگا۔

پڑھنے سے آواز دی۔ کچھ نام لے کر لگایا۔ دو پتہ منہ پر ڈال

آئے فینچ کر ایک حکمِ عمرِ وحدت آدھی سیرِ مصیبت پر آئی۔
 بڑھے نے ابھیہر آواز میں اس سے کہا "بیٹی لا تو رہی"

پوٹلی

ڈالا سی دیر میں اس وحدت نے ایک گنتی کیڑے کی

پوٹلی ہمارے سامنے ڈال دی اور خود گھولنے کے کھڑی رہی۔

بڑھے نے پوٹلی کھولی۔ اس کے اٹھ کا نیب رہے تھے۔

میں کبھی سانس دوسے حیران ہو اس کے اٹھوں کو دیکھ رہا تھا۔

انے میں دو گندے گورے پیارے مضموم بچے بھی سیرت اس

ہم کھڑے ہو گئے۔ پوٹلی کھول کر بڑھے نے ایک اٹھوں اور ایک

باجار جو خشک خان میں لبا ہوا تھا اٹھا کر مجھے دکھایا اللہ کہا—

یہ ہیں سیرت پیارے بچے کے خونی کیڑے..... "پوٹھے کی آواز

میں ایک ڈٹاؤنا اور پڑھتی اور تھا۔ میں کھڑی دیر کئے کی حالت میں

کھڑا رہا کچھ کہتے نہ بنا۔ کچھ کچھ میں نہیں آیا۔

پھر میں بول اٹھا "یہ آیت ہے تمہارے کیڑوں کے چھوڑتے ہیں....."

ان کو چھینک دیجئے..... یہ آپ خود بول رہے تھوٹ دیں گے....."

بڑھے نے لاپٹے اوٹے کر دیکھ کر میں جواب دیا "یہ"

نیا دیند جلیان والاباغ بارا کی یادگارے آگاسٹ سن ۱۹۱۹

میں پنجاب گیا کتھو یا۔ مزلوں کے بارے میں آسلی ہالان مالس کرنے۔

کھڑے چل کر ہم ایک آریر تگن گلی میں رکھے۔ یہ ہم

شرفک بڑھ کا مکان یا۔ بڑھن آویٹا سا مکان جیسا گریوں کو تکریر میں بندا ہے۔

ہم آندر بوسے۔ مشاکیل سے دو گز کا آگاسٹ ہنگا۔

بڑھے نے آباواج دی۔ کھڑا نام لیکر چکارا۔ توپڑا مٹھ پر

جرا آگاسٹ بچ کر ایک کم آسٹ آریرٹ آباوی سٹیڈیوں پر آری۔

بڑھے نے گامبیر آباواج میں آسے کہا "بندی لا تو

بھ پوٹلی۔"

جرا سی دیر میں آس آریرٹ نے ایک گندی کپڑے کی پوٹلی

ہمارے سامنے ڈال دی آریرٹ بڑھ پوٹ کر لہی رہی۔

بڑھے نے پوٹلی خولی۔ آسکے ہاپ کا پ رہے یے۔ میں بھی

ساںس ریکے ہیران ہو آسکے ہاپوں کو دیکھ رہا یا۔ ہننے میں دو گز

گورے آریرٹ ماسٹم بچھے میں پاس آکا کر لہی ہو گا۔ پوٹلی خول

کر بڑھے نے ایک آچکن آریرٹ ایک پاچا سا جو کھڑک کھن میں بسا

ہوا یا آٹا کر مٹھ دیکھا یا آریرٹ کہا—"یہ ہے ہیرے آریرٹ بے

کے کھنی کپڑے....."۔ بڑھے کی آباواج میں ایک ڈٹاؤنا آریرٹ پورمانی

آسٹر یا۔ میں آویٹا دیر آسکے کی ہالان میں لہا رہا۔ کھڑا کہنے ن

بنا۔ کھڑا سمم میں نہی آیا۔

پیر میں بول آٹا—"یہ آباوے کتھوں رل آویٹے ہے..... ہنکو

کے دیجیے..... یہ آباوے کتھوں رل آویٹے ہے....."

بڑھے نے کا پتے ہو مگر دواں ستر میں آباواج دیکھا—"یہ

میں نے جان کے رکھنے ہیں۔" फिर जन दो धारे बच्चों की तरफ इशारा करके बोला—“यह मेरे पोते हैं... मेरे बेटे की याद है... जब यह बड़े होंगे तो मैं इन्हें यह कपड़े दिखाऊंगा जिससे इन्हें मालूम हो कि इनके बाप की मौत का कौन जिम्मेवार है.....” बुद्धे का गला भर आया, उसने एक सर्द सांस रखाच कर “आह!” कहा.

मेरी आंखें भी तर हो गईं.
मेरे पास कोई जबाब न था.

मैंने बच्चों को चूमा और रोता हुआ रलसत हुआ.
चलते वक़्त मैंने उस बुजुर्ग से कहा—“आप बहादुर हैं. मैं आपका किस्सा पंडित जी के कानों तक पहुँचा दूंगा.”
बुद्धे ने हुआ दी “अल्लाह तुम्हें बड़ी उमर दे!”

(२)

एक दर्दनाक नज़ारा

नासुभकिन था कि हिन्दुस्तान का एक बड़ा हिस्सा घायल होकर तड़प रहा हो और मालवीय जी उसके जख्मों पर मरहम पट्टी लगाने न जाएं.
थोड़े ही दिनों बाद मालवीय जी भी पंजाब आ गए, उन्हींने भी लोगों से मिलना और उनके बयान लेना शुरू कर दिया.

मालवीय जी के पास भी लोग अपनी अपनी दुख की गठरियां लेकर आने लगे. और मालवीय जी बड़े ध्यान और हमदर्दी से एक-एक मर्द व औरत का रोना सुनते. हमारा काम इन बयानों को कारांज पर दर्ज करना था. आखिर में बयान देने वालों के आंगूठों के छाप या दस्तखत करवाए जाने थे.

میں نے جان کے رکھے ہیں۔“ پھر اُن دو پیارے بچوں کی طرف اشارہ کر کے بولا—“میرے پوتے ہیں..... میرے بچے کی یاد ہیں..... جب یہ بڑے ہوں گے تو میں انھیں یہ کپڑے دکھاؤں گا جس سے انھیں معلوم ہو کہ ان کے باپ کی موت کا کون ذمہ دار ہے.....”
بڑھے کا گلا بھر آیا، اس نے ایک سرد سانس کھینچ کر آہ “آہ” کہا.

میری آنکھیں بھی تر ہو گئیں.
میرے پاس کوئی جواب نہ تھا.

میں نے بچوں کو چُما لیا اور رلست ہوا.
چلتے وقت میں نے اُس بزرگ سے کہا—“آپ بھادری ہیں. میں آپ کا قصہ بندشت جی کے کانوں تک پہنچا دوں گا.”
بڑھے نے دھادی “اللہ تمھیں بڑی عمر دے!”

(۳)

ایک دردناک نظارہ

ہاکن گھنا کہ ہندستان کا ایک بڑا حصہ گھائل ہو کر بھوپ برام ہو گیا.
اوی جی اس کے زخموں پر مرہم پہنچانے نہ جائیں.
تھوڑے ہی دنوں بعد مالوی جی بھی پنجاب آ گئے.. انھوں نے بھی لوگوں سے سنا اور اُن کے بیان لینا شروع کر دیا.

مالوی جی کے پاس بھی لوگ اپنی اپنی دکھ کی گھڑیاں لے کر آئے گے.
اور مالوی جی بچے دھیان اند احمد دی سے ایک ایک مرد و عورت کا لافا لیتے. ہالا کام این سیالوں کو کا قند پر درج کرنا تھا. آخر میں بیان دینے والوں کے آنکھوں کی پھیپھوں کی آرتھنڈ کرنا نے جائے تھے

एक दिन की बात है. मालवीय जी के पास एक पंजाबी औरत आई. रंग साफ, उमर में ५० से ज्यादा न होगी मगर बक्त्त से पहले बुढ़ापे ने उसके बदन में भुर्रियां डाल दी थीं. आंखें चुं दियाई हुई. पैरों से चर्मोन टटोलते हुए उसने आकर मालवीय जी के पैरों पर अपना माथा टेक दिया और जोर जोर से रोने लगी.

मालवीय जी ने बड़े प्रेम से कहा—“माता ! धीरज रक्वो, भगवान पर भरोसा करो.”

वह औरत फिर सीधी होकर बैठी और पंजाबी बोली में रो रोकर कहने लगी—“मालवीय जी महाराज, आप हमारे पिता हो. आप ही हमारे भगवान हो.... मेरा बेटा मुझे दिला दो.....”

इस औरत के बेटे को काले पानी की सजा दी गई थी. “माता..... धीरज धरो मैं तुम्हारे बेटे के छूटने के लिये खूद कोशिश करूँगा.” मालवीय जी ने उसे दिलासा दिलाने की कोशिश की. फिर उन्होंने पूछा—“तुम्हारी आंखें कैसे लराव हुईं ?”

उसने सिसक सिसक कर जवाब दिया—“महाराज मेरी आंखें बिलकुल चंगी थीं..... बेटे के अलग होने के राम में रोते रोते मेरी आंखों की रोशनी चली गई है”. फिर उस औरत ने अपना सिर मालवीय जी के पैरों के पास रख कर कहा—

“मुझे आप मेरा बेटा दिला दिये..... मुझे पूरा यकीन है कि उसे देख कर मेरी आंखों की रोशनी फिर वापस आजायगी.....”

वह औरत फूट फूट कर और रोई.

मैं भी बड़ी दूर से अपने कलेजे को धामें सब देख रहा था. अब मुझसे भी आंसू रोकें न गए. उस जगह और लोग भी थे. शायद

एक दिन की बात हो माली जी के पास एक पंजाबी औरत आई. रंग साफ, उमर में ५० से ज्यादा न होगी मगर बक्त्त से पहले बुढ़ापे ने उसके बदन में भुर्रियां डाल दी थीं. आंखें चुं दियाई हुई. पैरों से चर्मोन टटोलते हुए उसने आकर मालवीय जी के पैरों पर अपना माथा टेक दिया और जोर जोर से रोने लगी.

मालवीय जी ने बड़े प्रेम से कहा—“माता ! धीरज रक्वो, भगवान पर भरोसा करो.”

वह औरत फिर सीधी होकर बैठी और पंजाबी बोली में रो रोकर कहने लगी—“मालवीय जी महाराज, आप हमारे पिता हो. आप ही हमारे भगवान हो.... मेरा बेटा मुझे दिला दो.....”

इस औरत के बेटे को काले पानी की सजा दी गई थी. “माता..... धीरज धरो मैं तुम्हारे बेटे के छूटने के लिये खूद कोशिश करूँगा.” मालवीय जी ने उसे दिलासा दिलाने की कोशिश की. फिर उन्होंने पूछा—“तुम्हारी आंखें कैसे लराव हुईं ?”

उसने सिसक सिसक कर जवाब दिया—“महाराज मेरी आंखें बिलकुल चंगी थीं..... बेटे के अलग होने के राम में रोते रोते मेरी आंखों की रोशनी चली गई है”. फिर उस औरत ने अपना सिर मालवीय जी के पैरों के पास रख कर कहा—

“मुझे आप मेरा बेटा दिला दिये..... मुझे पूरा यकीन है कि उसे देख कर मेरी आंखों की रोशनी फिर वापस आजायगी.....”

نیا ہند
ہلیان والا باغ کی یادگار ہیں
آگت علیہ

دل بھر آئے تھے وہ دہشتہ ہی ایسا اٹھتا۔
نکلت ہی بھی تھے ان کی بھی آنکھیں نم ہو چکی تھیں۔ سب ہی کے

نکرتی لایہ جی سارا ج ایک پتھر کی موت کی طرح بنا ایک آواز
پھانکے گمبھیر آواز سے اس عورت سے برابر لگتے۔ "دمیرج صوف
ہاں... بچکان تھیں بہت جلد مختار سے بیٹے سے

تھکے برا جب ہوا کھٹا کہ مایہ جی جیسے کول دل کی آگ سے
آگتوں کو نہیں نکلتے۔

مجھ سے نہ رہا گیا، میں نے بڑی سا آگ سے پوچھا۔ "کیوں
مطالع آپ لڑنے کیوں نہیں ملیں... آپ کے دل میں اتنا

تھک لیا ہوں گے لے بھرا اور پھر آنکھوں سے آنسو کیوں نہیں
نکلتے؟"

مایہ جی اور گمبھیر ہونگے اور انگریزی میں ایک ایک شاہ کو
دیسے دھیسے مگر زندہ لے کر آکا۔ "لام جی میرا دل خون کے آئینہ

کا سا ہوا... اگر میں آنکھوں سے آنسو نکلتے تو میں کب
کی خدمت نہیں کر سکتا... میرے ہاتھ پیر پھول جا لیں گے

میں... میں بے کار ہو جاؤں گا!"



نیا ہیند
زلیخان بالاجا باغا کی یادگار

تھنکرتی بھی تھے، انکرتی بھی آٹھوں نام ہو چلتی تھی، سب ہی کے دل
بھر آٹھ تھے، بھڑ بھڑ ہی ایسا تھا۔

مگار مالکویج جی مہاراجا جی ایک پتھر کی مورت کی तरह
بیلنا ایک آٹھوں تھکاٹھ گمبھیر آٹھوں سے उस औरत से बराबर कहते—
"धीरज धरो माता... भगवान तुम्हें बहुत जल्द तुम्हारे बेटे से
मिला दंगे."

मुझे बड़ा ताजुब हो रहा था कि मालवीय जी जैसे कोमल दिल
की आंख से आंसू क्यों नहीं निकलते.

मुझसे न रहा गया. मैंने बड़ी सादगी से पूछा— "क्यों महाराज,
आप रोते क्यों नहीं हैं... आप के दिल में इतना दर्द औरों के
दिले भरा है फिर आंखों से आंसू क्यों नहीं निकलते?"

मालवीय जी और गमभीर हो गए और अंगरेजी में एक एक शब्द
को धीमे धीमे मगर जोर देकर कहा— "रामजी! मेरा दिल खून के
आंसू बहा रहा है... अगर मैं आंखों से आंसू निकलने दू तो मैं
मुल्क की खिदमत नहीं कर सकता... मेरे हाथ पर फूल जायेंगे
... मैं बेकार हो जाऊंगा."



کیا دیکھا ہے؟

دہلی علیہم صاحب انصاف اور پٹ، بھویال

میں نے اکتوبر کے دہا ہند میں لکھا تھا کہ دنیا سب کی جہ تیری
 پتہ دینی اور یہی گن اور خیال سے دلش غلامی کے حال سے
 نظریہ اور نیا سال کا سندیش ان شہدوں میں دیا تھا — غلامی کا
 ۲۰۰ اور ہالا راج (راول) دلش کا بھاگ جائے گا اس کا دشمن
 بھاگے۔ آج آپ دیکھ رہے ہیں کہ دلش کا بھاگ جائے نظر
 آ رہا ہو۔ اور دشمن بھاگ دکھائی دے رہا ہو اور وہ خود بھی دیکھ
 رہا ہو۔ اس کے علاوہ مختصر طرز پر ہم یہ بھی دکھلا دیتا جانتے ہیں
 کہ اس نے اپنی ایک سال کی عمر میں بھارت میں کیا دیکھا ہے
 اس نے ہندو مسلم توبہ دیکھے، ہندو مسلم فساد دیکھے دیکھے،
 بہر عیب دیکھے، شادی دیکھی، قرآنی دیکھی، دوسرہ دیکھا، عاشقہ دیکھا، دیوان
 کی اور ششیاں دیکھیں، بولی کی، رنگ ریلیاں دیکھیں، بڑا دن دیکھے
 نیا دن دیکھا، رام نومی دیکھی، بسنت پجی دیکھی، جنم اشٹی دیکھی۔
 ناقول کا بھوت کال دیکھا، مال کا بیٹا مال دیکھا، انٹ لڑن کا شکار
 دیکھا، لاجوں کا انبار دیکھا، پتوں کو گاجر مولی کی طرح لگتے
 دیکھا، اور سڑکوں پر گھوڑوں کی طرح رتے دیکھا — دن دہاکے
 من بچے دیکھے، انٹاؤں کے سینوں میں بچے دیکھے۔
 سب اور کا گڑبگڑ کی تو نہیں میں تھی، انتاؤں کی

۱۷ محرم ۱۳۵۲ھ

ک्या دےگا؟

(अथदुल हलीम साहच अंसारी, आर्टिस्ट, भोपाल)

मैंने अकनूचर के 'नया हिन्द' में लिखा था कि 'नया हिन्द'
 की जन्मपथी पता देनी है कि इसी लगन और चाल से देश
 गलामी के जाल से निकलेगा और नया साल का संदेश इन शब्दों
 में दिया था—गुलामी का नाश और हमारा राज (और) देश का
 भाग जागे, उसका दुश्मन भागे आज आप देख रहे हैं कि देश
 का भाग जागता नजर आ रहा है, और दुश्मन भागता दिखाई
 दे रहा है और वह खुद भी देख रहा है, इसके अलावा मुहल्लतसर
 तौर पर हम यह भी दिखला देना चाहते हैं कि हमने अपनी एक
 साल की उमर में भारत में क्या देखा ? उसने हिन्दू मुसलिम
 त्योहार देखे, हिन्दू मुसलिम कसाब देखे, इंदू देखी, यकरीर देखी,
 रान्ति देखी, कुरबानी देखी, दशहरा देखा, आशुरा* देखा, दिवाली
 की रोशनियां देखी, होली की रंगरलियां देखी, बड़ा दिन देखा नया
 दिन देखा, रामनौमी देखी, बसन्त पंचमी देखी, जन्माष्टमी देखी,
 फाकों का भूत काल देखा, माल का बड़ा हाल देखा, इंसानों का शिकार
 देखा, लाराओं का अनाार देखा, बच्चों को गाजर मूली की तरह
 कटते देखा, और सबकों पर कुत्तों की तरह मरते देखा—दिन दहाड़े
 खुन खबर देखे, इंसानों के सीनों में खंजर देखे,
 लीग और कांपेस की तू तू में में सुनी, नेताओं की

ॐ मुहरम की दस तारीख

—पंजाब की तकसीम देखी, पंजाब की तकसीम देखी, पाकिस्तान की नई तरकीब देखी, नया हिन्दुस्तान देखा, नया कानून नया विधान देखा. बटवारे के नकशे देखे, भारत के हिस्से बखरे देखे. माता के टुकड़े टुकड़े देखे. जमातों के म्काड़े तनते देखे, मुसकविल में जिनके शोले बनते देखे, लेकिन वह आज देखे.

कामों की नई तर्जीम देखी. तामोर की नई स्कीम देखी. वड़े वड़े चन्दे देखे, गरम गरम जज्बे देखे, और कहीं ठंडे ठंडे होसले देखे. किर्मा की बात गिरती देखी, किसी की कमान चढ़ती देखी. घमंड की तलवार के टुकड़े देखे. और कदमों में उनके रेंवे देखे—बहुत से सियासत के बंदे ऐसे देखे, सकते में उनकी बंदे देखे, या अकल के उनकी तोते उड़ते देखे—और क्या देखा ? बहुत से भूटे समझौते देखे, बहुत से बाद दूदे देखे, बहुत से हलक सोंटे देखे—और कहीं आजादी के शोशे ऋइते देखे, कहीं शायों के चोर जबर गिराने देखे. कहीं हवाई किले बनते देखे. कहीं खयाली महल गिरते देखे. और किसमत पर परयर पड़ते देखे.

जनता की उठान देखी, जमहरियत का नूकान देखा. इनकलाब की तुगयानी में राजधानी की करती देखी. राजों को मौजों के थपड़े सहते देखा. नवाबों को इनकलाब के तमाचे खाते देखा. हाल से बदहाल देखा.

आज की सियासत में भंगी नवाबी देखी. भंगी की बस्ती देखी. बस्ती की परसी देखी और महात्मा जी की बुलन्द हस्ती देखी. शरीफों की दुरगत देखी. शराकत को पिसते देखा, मिटते देखा.

अगस्त '४७

क्या देखा ?

नया हिन्द

—बलकल की तकसिम देखी, पंजाब की तकसिम देखी, पाकिस्तान की नई तरकीब देखी, नया हिन्दुस्तान देखा, नया कानून नया विधान देखा. बटवारे के नकशे देखे, भारत के हिस्से बखरे देखे. माता के टुकड़े टुकड़े देखे. जमातों के म्काड़े तनते देखे, मुसकविल में जिनके शोले बनते देखे, लेकिन वह आज देखे.

कामों की नई तर्जीम देखी. तामोर की नई स्कीम देखी. वड़े वड़े चन्दे देखे, गरम गरम जज्बे देखे, और कहीं ठंडे ठंडे होसले देखे. किर्मा की बात गिरती देखी, किसी की कमान चढ़ती देखी. घमंड की तलवार के टुकड़े देखे. और कदमों में उनके रेंवे देखे—बहुत से सियासत के बंदे ऐसे देखे, सकते में उनकी बंदे देखे, या अकल के उनकी तोते उड़ते देखे—और क्या देखा ? बहुत से भूटे समझौते देखे, बहुत से बाद दूदे देखे, बहुत से हलक सोंटे देखे—और कहीं आजादी के शोशे ऋइते देखे, कहीं शायों के चोर जबर गिराने देखे. कहीं हवाई किले बनते देखे. कहीं खयाली महल गिरते देखे. और किसमत पर परयर पड़ते देखे.

जनता की उठान देखी, जमहरियत का नूकान देखा. इनकलाब की तुगयानी में राजधानी की करती देखी. राजों को मौजों के थपड़े सहते देखा. नवाबों को इनकलाब के तमाचे खाते देखा. हाल से बदहाल देखा.

आज की सियासत में भंगी नवाबी देखी. भंगी की बस्ती देखी. बस्ती की परसी देखी और महात्मा जी की बुलन्द हस्ती देखी. शरीफों की दुरगत देखी. शराकत को पिसते देखा, मिटते देखा.

شہر کے گورنر دیکھا، روڈوں کو اٹھتے دیکھا۔ سستا لا سے نرالا ہفتہ دیکھا۔
مزدور باج دیکھا، تین مزدور کو ننگا کھوکا دیکھا، بیچتا پھرتا دیکھا، کچھ
آستان کا پلان دیکھا، امد کھیر، ہندو مسلمان دیکھا، اسلام کچھ
دیکھا، دیکھی، برہمنی دیکھی۔ امد برہمنی کی نظر تھکی دیکھی — ہندو
دیکھا، سیکھ دیکھا، گریبان دیکھا۔ امد بے گریبان مسلمان دیکھا — اور
کیا دیکھا؟

کھانے کی صفائیاں، برلی، کسی کی مناسبت، برلی، کسی کی ٹھوس برلی، کسی
کی نظرت برلی، کسی کی کاٹھی برلی، کسی کی لٹائی برلی، کسی کی برہمنی
برلی، کسی کی بیگم برلی، کسی کا دھیار، برلا، کسی کا لباس، برلا، کسی کا
دماغ، برلا، کسی کا خیال، برلا۔

خواب، برلا، خواب کی تعبیر، برلی، کسی کا دھرم، برلا، کسی کی
سیاست، برلی، کسی کی ریاست، برلی، کسی کی سستی، برلی، کسی کی
کی راستی، برلی۔

انگریز کی ستیاری دیکھی۔ کہ لیبیل کی منگاری دیکھی۔ امریکا کی سڑکیوں کی
دیکھی۔ روس کی نگاہ دیکھی۔ اس کی نیت بھائی، اس کے مقصد
کا پرچار، کچھ امد سفار کا اسے سالاد سمجھا — سر پر ایک
سفید کھجوت دیکھا یعنی سوٹ روس دیکھا!

اے اس نے اپنی حرکت کے ایک پھل میں دو چند گر کر دیکھے۔
(۱۱) ۱۳ جون ۱۹۴۷ء کو اور (۱۲) ۱۸ دسمبر کو۔

یہ تمام وہ حادثے اور انقلاب ہیں جو ایک سال کے

اور انداز اس کے سامنے آئے اور ان لوگوں کی لہجے میں رہ کر

آغا خان صاحب کے سامنے آیا، اور انسانیوں کی ہستی میں رہ کر

آگست ۱۹۴۷ء

کیا دیکھا؟

نیا ہند

شہر کے گورنر دیکھا، روڈوں کو اٹھتے دیکھا۔ سستا لا سے نرالا ہفتہ دیکھا۔

مزدور باج دیکھا، تین مزدور کو ننگا کھوکا دیکھا، بیچتا پھرتا دیکھا، کچھ

آستان کا پلان دیکھا، امد کھیر، ہندو مسلمان دیکھا، اسلام کچھ

دیکھا، دیکھی، برہمنی دیکھی۔ امد برہمنی کی نظر تھکی دیکھی — ہندو

دیکھا، سیکھ دیکھا، گریبان دیکھا۔ امد بے گریبان مسلمان دیکھا — اور

کیا دیکھا؟

کھانے کی صفائیاں، برلی، کسی کی مناسبت، برلی، کسی کی ٹھوس برلی، کسی

کی نظرت برلی، کسی کی کاٹھی برلی، کسی کی لٹائی برلی، کسی کی برہمنی

برلی، کسی کی بیگم برلی، کسی کا دھیار، برلا، کسی کا لباس، برلا، کسی کا

دماغ، برلا، کسی کا خیال، برلا۔

خواب، برلا، خواب کی تعبیر، برلی، کسی کا دھرم، برلا، کسی کی

سیاست، برلی، کسی کی ریاست، برلی، کسی کی سستی، برلی، کسی کی

کی راستی، برلی۔

انگریز کی ستیاری دیکھی۔ کہ لیبیل کی منگاری دیکھی۔ امریکا کی سڑکیوں کی

دیکھی۔ روس کی نگاہ دیکھی۔ اس کی نیت بھائی، اس کے مقصد

کا پرچار، کچھ امد سفار کا اسے سالاد سمجھا — سر پر ایک

سفید کھجوت دیکھا یعنی سوٹ روس دیکھا!

اے اس نے اپنی حرکت کے ایک پھل میں دو چند گر کر دیکھے۔

(۱۱) ۱۳ جون ۱۹۴۷ء کو اور (۱۲) ۱۸ دسمبر کو۔

یہ تمام وہ حادثے اور انقلاب ہیں جو ایک سال کے

اور انداز اس کے سامنے آئے اور ان لوگوں کی لہجے میں رہ کر

آغا خان صاحب کے سامنے آیا، اور انسانیوں کی ہستی میں رہ کر

ہم نے ختم کیا اور اس کے لیے اسے دیکھ کر دیکھ کر وہ کلاں اٹھا، جمع پڑا۔ اور انسان کی ہر سی اس کے کھنڈر دل اور جاغریں کو دیکھ کر اسے پڑا ہی دیکھ اور اجرت اور جب بھی وہ خردی منظر اس کے سامنے آجاتے ہیں وہ اپنے دھڑکتے ہوئے دل پر ہاتھ رکھ لیتا اور — اور آکھیں جمع لیتا اور — خدا کی شہرستی (مخلوق) میں ہم شہرستی سب سے ہزار گنا ہو اس کا نام ہے "انسان" اور ایشا (ریٹیک) اور ایشا اور مجتبیٰ محمد ہو انسان کی انسانیت اور شرافت کا، پھر ایک دوسرے سے بھاگنے کا کارن آخر؟

نیا دین ! اسی ختمی دیندستان سے شروع ہوا ہے — اور ختمی توفان سے نیکل کر شانتی کی کیتا پیدا کرنے میں اپنا کام کیوں جاتا ہے۔ اور اپنی لگاتار میں لگا ہوا ہے، لیکر ایک ایک نامیوک اور مہا توفان پیر بھی اس کی تکرار میں ہے۔ اسلیئے وہ اس خیال میں ہے اور ہوا اور سہا ہو کر اگر ہندستان میں کھٹا نضوئی کلا ہی رنگ ڈھنگ کا یہی رنگ ڈنگ رہا اور آج کے انسان کا یہی حال ہے —

آگے آئے دیکھتے آگے آئے کیا ؟

آگست سن 1917

کیا دیکھا ؟

نیا دین

اس نے خوں واردات اور مار کلاں کے لیے اسے دیکھ کر دیکھ کر وہ کلاں اٹھا، جمع پڑا۔ اور انسان کی ہر سی اس کے کھنڈر دل اور جاغریں کو دیکھ کر اسے پڑا ہی دیکھ اور اجرت اور جب بھی وہ خردی منظر اس کے سامنے آجاتے ہیں وہ اپنے دھڑکتے ہوئے دل پر ہاتھ رکھ لیتا اور — اور آکھیں جمع لیتا اور — خدا کی شہرستی (مخلوق) میں ہم شہرستی سب سے ہزار گنا ہو اس کا نام ہے "انسان" اور ایشا (ریٹیک) اور ایشا اور مجتبیٰ محمد ہو انسان کی انسانیت اور شرافت کا، پھر ایک دوسرے سے بھاگنے کا کارن آخر؟

نیا دین ! اسی ختمی دیندستان سے شروع ہوا ہے — اور ختمی توفان سے نیکل کر شانتی کی کیتا پیدا کرنے میں اپنا کام کیوں جاتا ہے۔ اور اپنی لگاتار میں لگا ہوا ہے، لیکر ایک ایک نامیوک اور مہا توفان پیر بھی اس کی تکرار میں ہے۔ اسلیئے وہ اس خیال میں ہے اور ہوا اور سہا ہو کر اگر ہندستان میں کھٹا نضوئی کلا ہی رنگ ڈھنگ کا یہی رنگ ڈنگ رہا اور آج کے انسان کا یہی حال ہے —

آگے آئے دیکھتے آگے آئے کیا ؟



हाय हिन्द !

(लाला हनुवन्त सहाय, देहली)

जिस प्यारे वतन की आजादी की खातिर हजारों आदमी अपनी सारी उमर आंध्रों की साम्राज से लड़ने और उसको सर जमीन हिन्दुस्तान से उखाड़ फेंकने के लिये जहाजबंद करते रहे आज वहां नई शकल में ब्रिटिश साम्राज की जड़े मजबूत होते और लाखों वेगुनाहों के जान माल को धाया होते देखकर जो सदमा दिल को पहुँचता है वह बयान से बाहर है सबसे ज्यादा दुख इस बात का है कि देश को अकेली कौमी संस्था इन्डियन नेशनल कांग्रेस, जिसके साथ मुल्क की आजादी का पिछले ४० साल से गहरा सम्बन्ध रहा है, ब्रिटिश हुकूमत की आज कल की उस तजवीज को मान लेने के लिये तैयार हो गई जिससे मुल्क और उसकी आजादी की स्थिति दोनों के बिचड़े उड़ रहे हैं. कांग्रेस के बड़े से बड़े लीडरों ने इस तजवीज को मान लेने की पुरजोर सिकांरिश ही नहीं की बल्कि वह उसको मुल्क की राजामन्दी हासिल करने से पहले ही अमर्ता जामा पहनाने में लगे हुए नजर आए.

अब्वल तो यह हरगिज किसी दलील से भी नहीं माना जा सकता कि हिन्दू और मुसलमान को ऐसी अलग अलग कौमों हैं जो एक मुल्क में साथ साथ या एक हुकूमत के मातहत नहीं रह सकतीं. सारी पिछली तारीख और खुद आज कल की

आज के महान्द

राला हनुवन्त सहाय, देहली

जिस प्यारे वतन की आजादी की खातिर हजारों आदमी अपनी सारी उमर आंध्रों की साम्राज से लड़ने और उसको सर जमीन हिन्दुस्तान से उखाड़ फेंकने के लिये जहाजबंद करते रहे आज वहां नई शकल में ब्रिटिश साम्राज की जड़े मजबूत होते और लाखों वेगुनाहों के जान माल को धाया होते देखकर जो सदमा दिल को पहुँचता है वह बयान से बाहर है सबसे ज्यादा दुख इस बात का है कि देश को अकेली कौमी संस्था इन्डियन नेशनल कांग्रेस, जिसके साथ मुल्क की आजादी का पिछले ४० साल से गहरा सम्बन्ध रहा है, ब्रिटिश हुकूमत की आज कल की उस तजवीज को मान लेने के लिये तैयार हो गई जिससे मुल्क और उसकी आजादी की स्थिति दोनों के बिचड़े उड़ रहे हैं. कांग्रेस के बड़े से बड़े लीडरों ने इस तजवीज को मान लेने की पुरजोर सिकांरिश ही नहीं की बल्कि वह उसको मुल्क की राजामन्दी हासिल करने से पहले ही अमर्ता जामा पहनाने में लगे हुए नजर आए.

अब्वल तो यह हरगिज किसी दलील से भी नहीं माना जा सकता कि हिन्दू और मुसलमान को ऐसी अलग अलग कौमों हैं जो एक मुल्क में साथ साथ या एक हुकूमत के मातहत नहीं रह सकतीं. सारी पिछली तारीख और खुद आज कल की

का नतीजा नहीं थी. दूसरी इनकलावी ताकतें इनकी तह में थी. लेकिन वर्तानवी हाकिम इन नए इनकलावी नेताओं के साथ सम्भौते की बातचीत करना ठीक नहीं सम्भलते थे. इसके खिलाफ कांग्रेसी लीडरों के साथ सम्भौता करना बहुत आसान और आस भरा नजर आता था. इसी वजह से वर्तानवी नुमाइन्दों ने कांग्रेस नेताओं की रिहाई के फौरन बाद उनसे सम्भौते की बातचीत शुरू कर दी.

यह बात चीन जिन जिन दर्जों से गुजरी इनका इस लेख में दुहराना फयूल है. अखबारों के पढ़ने वाले उन सबसे अच्छी तरह वाकिक है. बातचीत के शुरू होते ही एकदम जो कल्ल, लूट, गारतगरी और गुंडागरी का दौर शुरू हुआ और अभी तक जगह जगह जारी है. वह जिन की धूप की तरह सब पर रोशन है. इस गुंडागरी को उसके बाहरी रूप की वजह से किरकावाराना किसान या खानाजंगी समानता विलुल गालत और धोका है. किरकावाराना किसान एक किरके की तरह से किसी खास गुरसा दिला देने वाली कारवाई का नतीजा होते हैं. वेगुनाह कम तादाद मर्दा औरतों वचां और बूढ़ों पर जो सदियों और हजारों बरस से साथ साथ रहते सहते चले आए हैं अचानक हमले करना और चिला फरक कल और गारतगरी और ईमानियत तक के खिलाफ चुलम डालना जिसकी मिसाल इस तहर्चावदार हिन्दुस्तान के पिछले जमाने के किसी दौर में डूँह नहीं मिलती. किसी तरह भी हिन्दुस्तानियों की किरतत, आदत, या कुदरती दुश्मनी का नतीजा नहीं बताया जा सकता चाहे

गस्त १९३४

१६

नया हिन्द

का बिजे नहीं थी. दूसरी अफलाबी नेताओं की ताकतें इनकी तह में थी. लेकिन ब्रिटाणी साम्रान ने अफलाबी नेताओं के साथ सम्भौते की बातचीत करना मुश्किल नहीं समझते थे. इस के खिलाफ कांग्रेसी लीडरों के साथ सम्भौता करना बहुत आसान और आस भरा नजर आता था. इसी वजह से वर्तानवी नुमाइन्दों ने कांग्रेस नेताओं की रिहाई के फौरन बाद उनसे सम्भौते की बातचीत शुरू कर दी.

यह बात चीन जिन जिन दर्जों से गुजरी इनका इस लेख में दुहराना फयूल है. अखबारों के पढ़ने वाले उन सबसे अच्छी तरह वाकिक है. बातचीत के शुरू होते ही एकदम जो कल्ल, लूट, गारतगरी और गुंडागरी का दौर शुरू हुआ और अभी तक जगह जगह जारी है. वह जिन की धूप की तरह सब पर रोशन है. इस गुंडागरी को उसके बाहरी रूप की वजह से किरकावाराना किसान या खानाजंगी समानता विलुल गालत और धोका है. किरकावाराना किसान एक किरके की तरह से किसी खास गुरसा दिला देने वाली कारवाई का नतीजा होते हैं. वेगुनाह कम तादाद मर्दा औरतों वचां और बूढ़ों पर जो सदियों और हजारों बरस से साथ साथ रहते सहते चले आए हैं अचानक हमले करना और चिला फरक कल और गारतगरी और ईमानियत तक के खिलाफ चुलम डालना जिसकी मिसाल इस तहर्चावदार हिन्दुस्तान के पिछले जमाने के किसी दौर में डूँह नहीं मिलती. किसी तरह भी हिन्दुस्तानियों की किरतत, आदत, या कुदरती दुश्मनी का नतीजा नहीं बताया जा सकता चाहे

آگرارن ایل کراساواں کو آکراوا تاواا االوں آراور کم تاوااا االوں کے ویاا ااک اااااے اااااے ساااااا اااااا اااااا سوااااا سوااااا کے آراور کراسااااا ہینڈااااا االوں سوااااا اں کم تاوااااا موسلااااااں اااااا کولم کراااااا ن اااااا اااااا

آگرارن ایل ااااااں کو کراسااa

ااa

آگر اران قضاصل کو زیادہ قضا در والوں اور کم قضا در والوں کے بیچ ایک دو کمرے بد تالو پائے گئے تھے چھ کمرے سمجھا جائے تو سوال ہے صحیح ہے کہ اسے اور کسی زیادہ ہینڈوں والے صحیحوں میں کم قضا در مسالوں سمیتر اسی قسم کے حکم کیوں نہ چھوٹے گئے

اگر ان صحیحوں کو رزق والا نہ ہی پائے جائے تو سوال ہوتا ہے کہ سرحدی صحیحوں میں دوسرے مقاموں کی طرح رزق والا نہ ملنے میں شاید شریعہ اور فوراً بعد میں مسلم ایک اور مسلم قومی گورنمنٹ سے بیچ کیوں بدل گیا؟ سرحدی صحیحہ سب سے زیادہ مسلم وقت لاد رکھنے والا صحیحہ ہے۔ اور جہاں کی سرکار سے ممبروں میں بھی مسلم زیادہ نہ ہیں پھر اگر یہ ہینڈ مسلم چھوٹے ہیں تو مسالوں سے دو دلوں میں کیوں ہونے لگے؟

ایک بات مسالوں کے بارے میں یہ کہی جاتی تھی کہ وہ جگہ کلہاں لے کر پھیلا دیکھا ہے تھے کہ وہ سب اپنا ایک ایک ملک یعنی پاکستان بنا نا چاہتے تھے جس کو ملک کی غیر مسلم باہی نہیں بننے دیتی تھی لیکن جب ہینڈوں یا غیر مسلموں نے پاکستان کے اصول پر ایک سٹاٹوٹھ طاقتوں سے زیادہ ہینڈ طاقتوں کو ایک کرنے کی ہینڈ پیش کی تو پچھہ مسلموں کی بنیاد اس کی مخالفت کرنے لگے۔ صرف اسی ہی نہیں بلکہ یہ دفعہ کرنے لگے کہ پاکستان میں کم قضا در مسالوں کے تمام حقوں کی پوری حفاظت کی جائے گی اور وہ پاکستان چھوڑ کر جائیں۔ اس کے خلاف بارہی کچھ قومی رہنماؤں کی کامیاب کوششوں کی وجہ سے قضا در کا نہ صرف خاتمہ ہی کر دیا گیا بلکہ چلے جانے والے مسالوں کا

• دھند مینانل بھی کر دیا گیا۔ پیر میں آرمی سے کچھ مسلمانوں کو بھی لیا گیا۔ پیر کے مسلمانوں کو بھی لیا گیا۔ پیر کے مسلمانوں کو بھی لیا گیا۔ پیر کے مسلمانوں کو بھی لیا گیا۔

’پاکستان‘ کے بارے میں یہ بات بالکل سچی ہو کر آئی ہے۔ اس میں کوئی شک نہیں ہے۔ پاکستان میں مسلمانوں کی اکثریت ہے۔ پاکستان میں مسلمانوں کی اکثریت ہے۔ پاکستان میں مسلمانوں کی اکثریت ہے۔

یہ بات سچی ہے۔ پاکستان میں مسلمانوں کی اکثریت ہے۔ پاکستان میں مسلمانوں کی اکثریت ہے۔ پاکستان میں مسلمانوں کی اکثریت ہے۔

(۱۲)

یہ بات سچی ہے۔ پاکستان میں مسلمانوں کی اکثریت ہے۔ پاکستان میں مسلمانوں کی اکثریت ہے۔ پاکستان میں مسلمانوں کی اکثریت ہے۔

پاکستان میں مسلمانوں کی اکثریت ہے۔ پاکستان میں مسلمانوں کی اکثریت ہے۔ پاکستان میں مسلمانوں کی اکثریت ہے۔

یہ بات سچی ہے۔ پاکستان میں مسلمانوں کی اکثریت ہے۔ پاکستان میں مسلمانوں کی اکثریت ہے۔ پاکستان میں مسلمانوں کی اکثریت ہے۔

پاکستان میں مسلمانوں کی اکثریت ہے۔ پاکستان میں مسلمانوں کی اکثریت ہے۔ پاکستان میں مسلمانوں کی اکثریت ہے۔

یہ بات سچی ہے۔ پاکستان میں مسلمانوں کی اکثریت ہے۔ پاکستان میں مسلمانوں کی اکثریت ہے۔ پاکستان میں مسلمانوں کی اکثریت ہے۔

پاکستان میں مسلمانوں کی اکثریت ہے۔ پاکستان میں مسلمانوں کی اکثریت ہے۔ پاکستان میں مسلمانوں کی اکثریت ہے۔

مہمانوں میں مسلمان لوگ اور مسلمانوں سے ہندوستان کا کون بڑھتا ہے یا کون نہیں۔ ہندوستان میں مسلمانوں کی بڑھتی ہوئی تعداد نے ہندوستان کے لیے ایک نیا چیلنج پیدا کیا ہے۔

(۲۵)

’پاکستان‘ میں جب کم قسط غیر مسلم لوگوں کے حقوق کی پروری کی جائے گی تو ہندوستان میں مسلمانوں کی بڑھتی ہوئی تعداد نے ہندوستان کے لیے ایک نیا چیلنج پیدا کیا ہے۔

’پاکستان‘ میں جب کم قسط غیر مسلم لوگوں کے حقوق کی پروری کی جائے گی تو ہندوستان میں مسلمانوں کی بڑھتی ہوئی تعداد نے ہندوستان کے لیے ایک نیا چیلنج پیدا کیا ہے۔

آگست سن ۸۶

ہائپ ہینڈ !

نیا ہند

مہمانوں میں مسلمانوں کی بڑھتی ہوئی تعداد نے ہندوستان کا کون بڑھتا ہے یا کون نہیں۔ ہندوستان میں مسلمانوں کی بڑھتی ہوئی تعداد نے ہندوستان کے لیے ایک نیا چیلنج پیدا کیا ہے۔

’پاکستان‘ میں جب کم قسط غیر مسلم لوگوں کے حقوق کی پروری کی جائے گی تو ہندوستان میں مسلمانوں کی بڑھتی ہوئی تعداد نے ہندوستان کے لیے ایک نیا چیلنج پیدا کیا ہے۔

नया हिन्द

हाथ हिन्द !

अगस्त सन १४७

(१३२)

वैधानिक पाठिसों ने यानी लड़ाई और इनकलाव से बचकर अंग्रेज से किसी तरह मिल जुल कर थोड़े अखिलभार और नाम की ताकत हासिल करने की हवस ने ज्यादा तेज कर दिया. हिन्दु-स्तान की आजादी का सवाल बरतानिया और हिन्दुस्तान के बीच है. मुसलिम लीग की मांगें धरेलू मामला था जो देश की आजादी हासिल करने के बाद तै करना चाहिये था. लेकिन कांग्रेस जिसको कि वर्तानर्वा साम्राज की मुखालिफ पार्टीयों को संघटित करके आज साम्राजी ताकतों के मुकाबले में जंग करनी थी, वैधानिक जाल या आईनी चक्कर में पड़ कर पुकार पुकार कर रह ही है कि अब उसकी वर्तानर्वा राज से कोई लड़ाई नहीं बल्कि सिकं मुल्क में गंडगादी को खत्म करना है. यह सिकं देश के दुकड़े कर देने से किस तरह हो सकेगा ? इनसे पूछो इन्होंने साम्राजी स्वरुपी, समन्दरी और हवाई कौजों और पुलिस की उठती हुई बगावतों को रोक तो दिया लेकिन आज तक उसके मुकाबले में आईनी चरियों से क्या हासिल किया ? क्या यह लोग उन देश भक्त बहादुरों को जो कांग्रेस की दमन नीति या आईनी नीति की वजह से अंगरेजों के जुल्मों के शिकार हुए या गोलियां खाकर मर गए या जेलों में पड़े सड़ रहे हैं, आज तक रिहा भी करा सके या उनको अंगरेजों के बदले की ज्यादातियों से बचा सके जिसका कि इन कांग्रेसी नेताओं ने उस वक्त वादा किया था ? और तब से अब तक हुकुमत की वागडौर भी यही संभाले हुए हैं. कांग्रेसी नेता अपनी वेवसी क इस्तेहार तो करते हैं लेकिन साथ ही अपनी शीलता का इस्तेवाल भी क्यों नहीं करते ?

नया हिन्द
 हाथ हिन्द !
 अगस्त सन १४७

वैधानिक पाठिसों ने यानी लड़ाई और इनकलाव से बचकर अंग्रेज से किसी तरह मिल जुल कर थोड़े अखिलभार और नाम की ताकत हासिल करने की हवस ने ज्यादा तेज कर दिया. हिन्दु-स्तान की आजादी का सवाल बरतानिया और हिन्दुस्तान के बीच है. मुसलिम लीग की मांगें धरेलू मामला था जो देश की आजादी हासिल करने के बाद तै करना चाहिये था. लेकिन कांग्रेस जिसको कि वर्तानर्वा साम्राज की मुखालिफ पार्टीयों को संघटित करके आज साम्राजी ताकतों के मुकाबले में जंग करनी थी, वैधानिक जाल या आईनी चक्कर में पड़ कर पुकार पुकार कर रह ही है कि अब उसकी वर्तानर्वा राज से कोई लड़ाई नहीं बल्कि सिकं मुल्क में गंडगादी को खत्म करना है. यह सिकं देश के दुकड़े कर देने से किस तरह हो सकेगा ? इनसे पूछो इन्होंने साम्राजी स्वरुपी, समन्दरी और हवाई कौजों और पुलिस की उठती हुई बगावतों को रोक तो दिया लेकिन आज तक उसके मुकाबले में आईनी चरियों से क्या हासिल किया ? क्या यह लोग उन देश भक्त बहादुरों को जो कांग्रेस की दमन नीति या आईनी नीति की वजह से अंगरेजों के जुल्मों के शिकार हुए या गोलियां खाकर मर गए या जेलों में पड़े सड़ रहे हैं, आज तक रिहा भी करा सके या उनको अंगरेजों के बदले की ज्यादातियों से बचा सके जिसका कि इन कांग्रेसी नेताओं ने उस वक्त वादा किया था ? और तब से अब तक हुकुमत की वागडौर भी यही संभाले हुए हैं. कांग्रेसी नेता अपनी वेवसी क इस्तेहार तो करते हैं लेकिन साथ ही अपनी शीलता का इस्तेवाल भी क्यों नहीं करते ?

ہیندوستانیوں کو یہ بات ابھی طرح سمجھ لیتی جا چکی کہ کسی بھی
 پبلک عرض کو پبلک کرنے کے نام پر نوٹ مار اور فارغ مگر کسی
 طرہ میں محض ملک کے قومی اتحاد اور ایسی شخصیت کو اختیار کے
 لئے تیار کرنے کے لئے کی گئی ہیں، مسلمانوں باہتدوں یا کسی
 فرقہ یا پارٹی کے فائدے کی خاطر نہیں، اور نہ یہ طرہ میں کہیں
 کے من موافق، فلاح یا نسلی یا فرقہ وارانہ دشمنی کا نتیجہ ہیں جو
 برطانوی سامراج کے ختم ہو جانے کے محض اعلان پر اجاگر ہو گئے
 آج کون ہندوستانی اس تاریخی سٹیج سے واقف نہیں کر رہا ہے
 نے ہندوستان کو اپنی طاقت سے جو تک کے ذریعہ حاصل
 کر نہیں کیا بلکہ اس وقت کے بیسیوں اہم حکمرانوں کو آس میں لاکر
 اور اس طرح دونوں فریقوں کو گزند یا ختم کر کے یہ جیالاک حصار
 آپ قابض اور مالک بن بیٹھے، اب وہ آزاد مایا یا ساتھیوں کو
 اپنی نہیں رہیں، ان کی جگہ اب یہاں کے مذہبی فرقوں سے کام
 لیا گیا اور اپنی پُرانی بندہ بانت پالیسی کے موافق نئے بدلے
 اور نئے اندر لائبرٹی ڈھانچے میں برطانوی سامراج اپنے کوئے ڈھانچے
 پر نرستان اور مضبوط کر رہا ہے۔

ہیں مابذرت کر رہا ہے۔
 اس کام کے لیے ساہراجی حاکم یہاں کی تمام مذہبی
 نسلی یا سماجی گروہوں اور ذہنیوں کی آگے کر کے نئی پٹی اور
 کی گھنٹیوں کو تیار کر کے نئے سامراجی نقطہ نظر کی بنیادیں
 ڈال رہے ہیں، ہندستان کے بڑے بڑے مسلمانوں کو بعض
 کچھ مسلمان ہی جو اسے جیسی چیز کے چاہتے ہیں وہیں

سختام ہو رہا ہے؟ پتالوں کے مٹاویک—ہاں، لےکین آو کھڑ آواں
 سے دیکھا ہے رہا ہے۔ اسکی ریشانی میں میرے برتانیوی راج کو نیا
 رط دیا جا رہا ہے۔ جب بندر واٹ کی پالیسی پر चलते हुए
 वर्तनियां वह के करोड़ों वाशिनियों पर मुट्टी भर आसमनों
 थोड़ी सी आंगरेजी कौज के जरिये इस प्रकार कामयाबी के साथ राज
 काज चलाता रहा है, तो इस देश में कई, नाम को आचाद लेकिन
 एक दूसरे की वैरी, हठमते बनाकर जिनकी तरकरी, कायदा बलिक
 बजूर भी योग हमसाया हठमते को नुकसान पहुंचाए मुशकिल
 दिखाई देगा और जो योग वर्तनिया की मदद के तरकरी नहीं कर
 सकेंगी, वर्तनिया को इतने भी आंगरेज हाकिम और कौज रखने
 की क्या जरूरत है? आज कल की स्कीम के पूरा होने पर
 हिन्दुस्तान के वाशिनदे, जाहिर है, आचाद रकवों में रहने सहने
 के लिये वर्तनिया के हर तरह ज्यादा मुहताज होंगे. इस
 लिये वर्तनिया हिन्दुस्तानियों की दरखवास्त पर खास खास
 मुकामों में अपने हाकिम, कारपरदाच और चररी कौज
 रखने के आलावा राज काज के छोटे छोटे मामलों में दखल
 देने की जरूरत न देखेगा. निचाइ यह कि वर्तनिया यहाँ से
 जा नहीं रहा है बलिक पहले की तरह "मिरके हिन्दुवानियों की
 हिमाचत, मलाई और कायदे की खातिर, अपनी भरकी के
 खिलाफ, हिन्दुस्तान में मौजूद रहेगा लेकिन बहुत थोड़ी मात्रत में.
 और इस बाकीजी जिम्मेवारी के फर्ज हमेशा ही पूरे करता रहेगा".
 हिन्द के वाशिनदे तसल्ली रकवें.
 पिछली जग ने जो हालतें पैदा कर दीं उनमें एक यह है कि

आस्त

ان کے ہند

نیا ہیند

مستم ہو رہا ہے؟ اطراف کے علاقے میں صرف بھارتی راج کو نیا رط
 دکھائی دے رہا ہے اس کی روشنی میں صرف بھارتی راج کو نیا رط
 دکھائی دے رہا ہے۔ جب بندر واٹ کی پالیسی پر चलते हुए
 वर्तनियां वह के करोड़ों वाशिनियों पर मुट्टी भर आसमनों
 थोड़ी सी आंगरेजी कौज के जरिये इस प्रकार कामयाबी के साथ राज
 काज चलाता रहा है, तो इस देश में कई, नाम को आचाद लेकिन
 एक दूसरे की वैरी, हठमते बनाकर जिनकी तरकरी, कायदा बलिक
 बजूर भी योग हमसाया हठमते को नुकसान पहुंचाए मुशकिल
 दिखाई देगा और जो योग वर्तनिया की मदद के तरकरी नहीं कर
 सकेंगी, वर्तनिया को इतने भी आंगरेज हाकिम और कौज रखने
 की क्या जरूरत है? आज कल की स्कीम के पूरा होने पर
 हिन्दुस्तान के वाशिनदे, जाहिर है, आचाद रकवों में रहने सहने
 के लिये वर्तनिया के हर तरह ज्यादा मुहताज होंगे. इस
 लिये वर्तनिया हिन्दुस्तानियों की दरखवास्त पर खास खास
 मुकामों में अपने हाकिम, कारपरदाच और चररी कौज
 रखने के आलावा राज काज के छोटे छोटे मामलों में दखल
 देने की जरूरत न देखेगा. निचाइ यह कि वर्तनिया यहाँ से
 जा नहीं रहा है बलिक पहले की तरह "मिरके हिन्दुवानियों की
 हिमाचत, मलाई और कायदे की खातिर, अपनी भरकी के
 खिलाफ, हिन्दुस्तान में मौजूद रहेगा लेकिन बहुत थोड़ी मात्रत में.
 और इस बाकीजी जिम्मेवारी के फर्ज हमेशा ही पूरे करता रहेगा".
 हिन्द के वाशिनदे तसल्ली रकवें.
 पिछली जग ने जो हालतें पैदा कर दीं ان میں ایک - ایک

چاہتے ہیں کہ انہیں انگریزوں کی اصل بھرتیوں کا ایک بڑا حصہ ملے۔ اس لیے انگریزوں کو اپنے جنگل میں رکھنے کا۔ لیکن جو طاقتیں اس ملک میں اور برطانیہ کے ماتحت دیکھیں گئیں، انہیں نظر آ رہی ہیں، ایسا اندازہ لگانے کے لیے کم نہیں کر اوزن کس بل کو دیکھنے کو ہو۔

ہندوستان کے بھارت پر برطانیہ میں خودی

فاس فاس ہندوستانی واپاریوں کو ہندوستان کی حکومت سے الگ آزاد راج قائم کرنے کی قانونی آسانی اور پچھلے پچھلے

ہندوستان کے بھارت پر برطانیہ میں خودی

فاس فاس ہندوستانی واپاریوں کو ہندوستان کی حکومت سے الگ آزاد راج قائم کرنے کی قانونی آسانی اور پچھلے پچھلے

ہندوستان کے بھارت پر برطانیہ میں خودی

ظاہر ہو کہ ابھی تک برطانیہ کی اصل بھرتیوں کا ایک بڑا حصہ ملے۔ اس لیے انگریزوں کو اپنے جنگل میں رکھنے کا۔ لیکن جو طاقتیں اس ملک میں اور برطانیہ کے ماتحت دیکھیں گئیں، انہیں نظر آ رہی ہیں، ایسا اندازہ لگانے کے لیے کم نہیں کر اوزن کس بل کو دیکھنے کو ہو۔

ہندوستان کے بھارت پر برطانیہ میں خودی

فاس فاس ہندوستانی واپاریوں کو ہندوستان کی حکومت سے الگ آزاد راج قائم کرنے کی قانونی آسانی اور پچھلے پچھلے

ہندوستان کے بھارت پر برطانیہ میں خودی

ہندوستان کے بھارت پر برطانیہ میں خودی

ہارنگری اور تباہی کے ساتھ جاری رہے تو یہ بڑے بڑے مورتی بڑھتے بڑھتے اور شکست خوردگانہ ہوتے گئے۔ ہندوستانی قریب قریب تمام ہندوستانی قوم کی اصل طاقت اور برادری کا قومی سبب ہو گیا۔ اگر بھارتیہ کی برادری بڑھتی رہتا تو ہندوستان کے مطالبہ کا سبب ہو جاتا۔ یہ ممکن نہیں کہ ایک پچاس پچھتر سال میں ہندوؤں اور مسلمانوں دونوں کا ایک دیش میں نام نشان باقی نہ رہے اور ہندوستان آسٹریلیا، نیوزی لینڈ اور امریکا کی طرح صرف ایک سفید بستی بن جائے۔ یہ خیال، ناہم ہو کر صرف ایک خیال ہی ہو۔ یہ ملک کالج میں مستقبل یا بھوشیہ کے ممکن ہونے کو نظر میں رکھنا ضروری ہو۔ اور اسی لئے ہمارے مستقبل کی یہ تدبیر بھی دیش کھلیوں کی نظر سے اوجھل نہیں رہنی چاہئے۔

(۲۰۰)

ہندوستان کا بڑھتا ہوا ایک اور عالمگیر خطرہ کا بھی پیش نظر یعنی اس کا خری گنیش نظر آتا ہے۔ اس کا سلسلہ اس لئے الیشیاؤں ملکوں میں قائم کیا جائے گا۔ مہر میں خود ایک کے ایک خاص خاصہ لیبڈ کے ذریعے ڈورے ڈالے جائے۔ خدوں کو بچے ہیں۔ لایا کے پھر لوگوں کی طرف سے ایسے ہی بڑھنے کی ایک کی آواز سنائی دے چکی ہے۔ فلسطین میں یوڈوں کا ایک ایک مذہبی طبع بنانا اور عرب میں دو ایک ایک حکومتیں قائم کرنا سارے ملک کو مٹانا ہے۔ عرض جیتی جاگتی دنیا میں جب کہ مذہب کی اس طرح کی اہمیت کا خاکہ دیکھیں تو اس لئے ہوجاتا ہے الیشیا کے ملکوں یعنی گزر اور لیبڈ

ہندوستان کا بڑھتا ہوا ایک اور عالمگیر خطرہ کا بھی پیش نظر یعنی اس کا خری گنیش نظر آتا ہے۔ اس کا سلسلہ اس لئے الیشیاؤں ملکوں میں قائم کیا جائے گا۔ مہر میں خود ایک کے ایک خاص خاصہ لیبڈ کے ذریعے ڈورے ڈالے جائے۔ خدوں کو بچے ہیں۔ لایا کے پھر لوگوں کی طرف سے ایسے ہی بڑھنے کی ایک کی آواز سنائی دے چکی ہے۔ فلسطین میں یوڈوں کا ایک ایک مذہبی طبع بنانا اور عرب میں دو ایک ایک حکومتیں قائم کرنا سارے ملک کو مٹانا ہے۔ عرض جیتی جاگتی دنیا میں جب کہ مذہب کی اس طرح کی اہمیت کا خاکہ دیکھیں تو اس لئے ہوجاتا ہے الیشیا کے ملکوں یعنی گزر اور لیبڈ

قوموں کو مذہبی خولوں میں قید کرنا صرف سامراجی طاقتوں کے لئے زیادہ طاقت اور ان کی حکمرانی پر مضمون کے سما کسی بھی ایشیا کی قوم یا گروہ کے لئے فائدے کی چیز نہیں ہو سکتا۔

فدا کرے کہ ہندوستان کے اور پاکستان کے ہندو اور مسلمان دونوں جلد ہی ہی ایک دن اس جال کی حقیقت کو سمجھیں اور اس سے نکلنے کی پہلی اور عملی کوشش کریں۔ آئین طریقیوں پر چلنے سے برقرار نمانہ جھگڑے زیادہ بڑھیں گے۔ کھٹیں گے نہیں۔ تاؤنٹیا یا آئین سیاست کی جگہ نہیں لے سکتا۔ سیاست کی عملی بنیاد آئین کے نیچے بہیم اور قربانی پر ہے اور آئین ترقی کی بنیاد موجود حکومت کی اجازت پر ہے اور موجودہ حکومت سے آزادی تحفظ کے لئے عملی قدم اٹھانا چاہئے آئینی یعنی دیوہ ایک کوشش کے لئے کچھ سوشلسٹ حاصل کرنے چاہئے ہیں، آغازی دور نہیں کی جا سکتی۔

دوسرا

(جانباطالاف مشفقانہ)

پنجیم نے یورپ کے اندھے سورج کو بخشا اچھا لڑا
 پہلی طرف ڈاکٹر کرتی تھی کو سوشیا مضبوط کسٹارا
 دیکھ سے کو ایک بے سر بے پرواہی خوش می آئے
 کوردہ کپیٹ کے خوشیوں طوفانی بند سے چونکہ ہفتوں میں آئے
 سبھیوں اور لالائوں کی ڈنڈیا میں کبھی پتال تھوڑا
 صدر سے سجدہ کراؤ سجدہ سے سدا رکھرا
 رائے = تڑپ = پاریم = کھنڈ

نیا دھند "ہار" آگاس سمن ۱۹۷۹

کروٹوں کو مکتھری خولوں میں کبھ کرنا سیرک ساہراجی تاکروٹوں کے لیتے جیادیا تاکراٹ اور انکو زمر میں بڑھتی کے سیاہ کیرسی بھی پشیاہی کرویہ یا نیروہ کے لیتے کپادے کی چیخ نہرہی ہو سکتا۔

توہا کرے کہ کہ دھندوستان کے اور پاکستان کے دھند اور مسلمان دونوں جلد ہی ہی ایک دن اس جال کی حقیقت کو سمجھیں اور اس سے نکلنے کی پہلی اور عملی کوشش کریں۔ آئین طریقیوں پر چلنے سے برقرار نمانہ جھگڑے زیادہ بڑھیں گے۔ کھٹیں گے نہیں۔ تاؤنٹیا یا آئین سیاست کی جگہ نہیں لے سکتا۔ سیاست کی عملی بنیاد آئین کے نیچے بہیم اور قربانی پر ہے اور آئین ترقی کی بنیاد موجود حکومت کی اجازت پر ہے اور موجودہ حکومت سے آزادی تحفظ کے لئے عملی قدم اٹھانا چاہئے آئینی یعنی دیوہ ایک کوشش کے لئے کچھ سوشلسٹ حاصل کرنے چاہئے ہیں، آغازی دور نہیں کی جا سکتی۔

"ہار"

(جاناہ اہلآک مہاشہدی)

پنڈیہ م نے پورب کے انڈھ سورج کو بکھشا کجیوارا
 ڈگامنا ڈگامنا کرتی نہیا کو سبھا مہبھرت کینارا
 دیکھ مسامب کو عکرتوں سےہرتوں پرچم جوش میں آہا
 کوبھ کپٹ کے خولوں توڑوں نیر سے چیئے ہوش میں آہا
 تہرتاہوں اور مالاکوں کو تونیا میں بھچال یا آہا
 مندر سے مہبھرت دکھڑے مہبھرت سے مندر دکھرا

एकता की अर्थों को लेकर कौंधों पर निकले हमसाए

अपनों ने अपनों की लारों से जंगल में शहर वसाए

मन में लेकर क्रोध की अग्नि होठों पर चहरीली बोली

इनसानों ने मिल कर खेला इनसानों के खून से शोली

सुन्दर और शर्माली धरती के होठों पर चीखें कौंधों

लालच की व्याकुल दौड़ों में पीत लताएँ थक कर कौंधों

मजहब की अंधियारी उठुं शोलों की मालाएँ लेकर

शहरों को शमशान बनाने की मन में आशाएँ लेकर

कलरवियों ने तोड़ के रख दों सुन्दरता की सुन्दर थाली

भेड़ों की सब रखवालों ने भेड़िये बन कर की रखवाली

लाशों की सीढ़ी से होकर ऊँचाई का गोद में पहुँचे

ऊँचे होने वाले गोया गहराई की गोद में पहुँचे

आशाओं के सूरज राहों में जिनयारा बन कर फैले

खुलम के बादल लेकिन धरती पर अंधियारा बन कर फैले

योरप के वेदों ने जीवन की देवी को पत्थर मारें

अब मैं माना पच्छिम वालो ! पच्छिम जाता और हम हारे

—(उठूँ 'आज कल से')

कलरवियों = नगड़ालुओं

अगस्त १९४३

दिल्ली

श्री अरवि

कितनी की अरि की ले कर का बच्चों पर नखले हमसाए

अपनों ने अपनों की लारों से जंगल में शहर वसाए

मन में लेकर क्रोध की अग्नि होठों पर चहरीली बोली

इनसानों ने मिल कर खेला इनसानों के खून से शोली

सुन्दर और शर्माली धरती के होठों पर चीखें कौंधों

लालच की व्याकुल दौड़ों में पीत लताएँ थक कर कौंधों

मजहब की अंधियारी उठुं शोलों की मालाएँ लेकर

शहरों को शमशान बनाने की मन में आशाएँ लेकर

कलरवियों ने तोड़ के रख दों सुन्दरता की सुन्दर थाली

भेड़ों की सब रखवालों ने भेड़िये बन कर की रखवाली

लाशों की सीढ़ी से होकर ऊँचाई का गोद में पहुँचे

ऊँचे होने वाले गोया गहराई की गोद में पहुँचे

आशाओं के सूरज राहों में जिनयारा बन कर फैले

खुलम के बादल लेकिन धरती पर अंधियारा बन कर फैले

योरप के वेदों ने जीवन की देवी को पत्थर मारें

—(उठूँ 'आज कल से')

कलरवियों = नगड़ालुओं

آج کی دنیا

(شرعی ترمیم)

- † ایڈیشنٹینس ایکٹ سے ۱۹۳۵ء کے ایچ ای ایکٹ میں کچھ تبدیلیاں آئی ہیں۔ ایکٹ کا پھر سے نیا کیا جانا۔
- † آئی جی بھی ادھر سے ادھر علاقے آدے بدلے جاسکتے ہیں۔
- † گورنمنٹوں کے اندر رکھتے ہیں اور گورنمنٹوں کو دخل دینے کا اختیار۔
- † سٹیج جیس میں سائبرجی کی مضمون کی
- † انگریزی فوجوں کو ہندستان کے اندر اندر باہر غیر معمولی حق
- † فوجوں پر دہلی اور آئی جی سے خطرات
- † ہندستان اور پاکستان کے فوجوں کے برابر
- † کراچی، راولپنڈی، فیصل آباد، گجرات، سندھ اور پنجاب کے ایجنٹ
- † ان آزاد قومینوں کے اختیاراتوں میں
- † دست اعلیٰ

۳۵۔۔۔۔۔ کے ایکٹ کا ذکر آیا جانا۔

ہندستان کی آزادی کا جو قانون ۱۹۴۷ء میں منظور کیا گیا اس میں کے نام سے ایک حکمت کی پارلیمنٹ سے پاس کیا گیا ہے۔

(۳۲)

آج کی دنیا

(شرعی ترمیم)

- † ہندوستان سے ۱۹۳۵ء کے ایکٹ سے کچھ تبدیلیاں آئی ہیں۔ ایکٹ کا پھر سے نیا کیا جانا۔
- † آئی جی بھی ادھر سے ادھر علاقے آدے بدلے جاسکتے ہیں۔
- † گورنمنٹوں کے اندر رکھتے ہیں اور گورنمنٹوں کو دخل دینے کا اختیار۔
- † سٹیج جیس میں سائبرجی کی مضمون کی
- † انگریزی فوجوں کو ہندستان کے اندر اندر باہر غیر معمولی حق
- † فوجوں پر دہلی اور آئی جی سے خطرات
- † ہندستان اور پاکستان کے فوجوں کے برابر
- † کراچی، راولپنڈی، فیصل آباد، گجرات، سندھ اور پنجاب کے ایجنٹ
- † ان آزاد قومینوں کے اختیاراتوں میں
- † دست اعلیٰ

۳۶۔۔۔۔۔ کے ایکٹ کا ذکر آیا جانا۔

ہندستان کی آزادی کا جو قانون ۱۹۴۷ء میں منظور کیا گیا اس میں کے نام سے ایک حکمت کی پارلیمنٹ سے پاس کیا گیا ہے۔

نया ہیند
 آج کل دنیا

آج کل دنیا

آج کل دنیا

سب سے پہلی اور سب سے بڑی بات یہ ہے کہ جس نیاں حالتوں میں ۱۹۲۱ء کے شروع میں آئی تھیں وہیں جو گئی وہیں ہے۔ ہندستان کے پھر سے پکا کر دینا اور وہ پکڑے کے دو ٹکڑے کر دینے، ایک ہندستان اور دوسرا پاکستان، ہندستان کی ریاستوں پر سے الگ ہندستان کے بادشاہ کی چھوڑا گیا ہوا ہے، اور ان دونوں باتوں سے جوئی حالت پیدا ہوئی اس کے لئے بڑی کوششیں ہو رہی ہیں۔

نیا ہیند
 آج کل دنیا

۳۲

نیا ہیند
 آج کل دنیا

نیا ہیند
 آج کل دنیا

نیا ہیند
 آج کل دنیا

نیا ہیند

سب سے پہلی اور سب سے بڑی بات یہ ہے کہ جس نیاں حالتوں میں ۱۹۲۱ء کے شروع میں آئی تھیں وہیں جو گئی وہیں ہے۔ ہندستان کے پھر سے پکا کر دینا اور وہ پکڑے کے دو ٹکڑے کر دینے، ایک ہندستان اور دوسرا پاکستان، ہندستان کی ریاستوں پر سے الگ ہندستان کے بادشاہ کی چھوڑا گیا ہوا ہے، اور ان دونوں باتوں سے جوئی حالت پیدا ہوئی اس کے لئے بڑی کوششیں ہو رہی ہیں۔

نیا ہیند
 آج کل دنیا

نیا ہیند
پڑھا گیا۔ ان میں سے کئی نے اسٹیٹ کے سب اختیار اگرتے
کامیاب رہنے کے لیے یہ سب اختیار اگرتے۔

ہندوستان اور پاکستان کی سرحدیں

ہندوستان اور پاکستان کی سرحدیں
کامیاب رہنے کے لیے یہ سب اختیار اگرتے۔

ہندوستان اور پاکستان کی سرحدیں
کامیاب رہنے کے لیے یہ سب اختیار اگرتے۔

نیا ہیند
آج کی دنیا
اگست ۱۹۶۷ء

ہندوستان اور پاکستان کی سرحدیں
کامیاب رہنے کے لیے یہ سب اختیار اگرتے۔

ہندوستان اور پاکستان کی سرحدیں
کامیاب رہنے کے لیے یہ سب اختیار اگرتے۔

نیا دھند
 آج کی دنیا
 اگست ۱۹۷۱ء

پنجابی پاکِستان—

ماہنامہ ہوتا ہے کہ آسام کی سرحدیں جب چاہیں گورنر جنرل کی مرضی پر بدلی جاسکتی ہیں۔ بل کی دفعہ ۹ میں گورنر جنرل کو جو اختیار دیا گیا ہے اسے اگر دفعہ ۹ کے سب سیکشن ۲ کے ساتھ ملا کر پڑھنا چاہئے تو یہ دہ پتا رہتا ہے کہ آسام کا صوبہ کسی بھی وقت ایسا چھوٹا اور اس شکل کا بنا دیا جاسکتا ہے کہ اس کا بہت سہانہ ہے وہ سکھانا نہیں ہوگا جسے وہ چاہے۔

اب یہی پنجابی پاکستان کی بات۔ وہاں کی سرحدیں بھی آج وقت سے وہ وقت بدلتی رہ سکتی ہیں۔ گورنر جنرل دفعہ ۹ کے مطابق اپنے حکم سے یا دفعہ ۳ کے سیکشن ۳ کے مطابق اپنے سنبھلنے یا ڈیپلومی کی پیشین گوئی کر کے جو چاہے اول بدلا کر سکتا ہے۔ گورنر جنرل کی ذمہ داری سوائے پاکستان سے بادشاہ کے اور کسی کی طرف نہیں ہے۔ اور یہ سچ ہے کہ گورنر جنرل نہ اپنے سنبھلنے یا ڈیپلومی کے یا سنبھلنے کے ہوئے بل کہ اپنے دھند سے سرٹیفائی کر کے قانون بنا سکتا ہے اور نہ پاس کئے ہوئے بل کو اپنے دھند سے ناپا پاس کر سکتا ہے۔ لیکن دفعہ ۲ کے سب سیکشن ۳ کے مطابق اسے یہ اختیار ہے کہ اگر پاکستان کے بادشاہ کے نام پر محمد شہین کے سب قانون کو اپنا منظور کر دے اسکا کسی اس قانون کے جو انگلستان کے کسی قانون کو یہاں کے لئے رد کرتا ہو۔ دفعہ ۲ کے سب سیکشن ۲ میں

نیا دھند
 آج کی دنیا
 اگست ۱۹۷۱ء

یہ بھی صاف کر دیا گیا ہے کہ کسی ڈومینین کا کوئی قانون آگست ۱۹۳۷ء کے ایکٹ یا اس سے ایکٹ کے کسی اصول طور پر خلاف (کنٹریکٹ) ہوگا نہ وہ قانون نہیں چلے گا۔

پنجاب کے بارے میں صاف لکھا ہے کہ آگست ۱۹۳۷ء کے ایکٹ کے تحت جو نئے دو صوبے بریلی پنجاب اور گجپٹی پنجاب نام سے بنیں گے وہ بلاکہ پہلے کے پنجاب سے چھوٹے بھی ہو سکتے ہیں اور بڑے بھی۔ دفعہ ۲ سبکدوش ۲ میں لکھا ہے کہ "ان دونوں صوبوں کی سرحدیں وہ اصول کی جو ۱۵ آگست سے پہلے یا اس سے بعد گورنر جنرل کے مقرر کئے ہوئے کوئی باؤنڈری کمیشن وقت وقت پر طے کر دیں۔" یعنی گورنر جنرل ۱۵ آگست کے بعد بھی صوبے پنجاب یعنی باؤنڈری کمیشن مقرر کر سکتا ہے اور اگر کمیشن کے ذریعے پنجاب کے دونوں صوبوں کی سرحدیں ہمیشہ بدلتی رہ سکتی ہیں۔ اس کا مطلب یہ ہے کہ پنجاب اور اس کے جوائنٹ لٹ کے صوبوں اور ریاستوں کی سرحدیں ہمیشہ خطے میں رہیں گی۔ برطانیہ سا راج شاہی کو اس سے جو فائدہ ہو وہ صاف ہے اور حکومتوں کے اندر حکومتیں —

پاکستان وفاق کی دینا

پاکستان وفاق کی دینا اس سے پہلے ہی کہہ دیا گیا ہے کہ کسی ڈومینین کا کوئی قانون آگست ۱۹۳۷ء کے ایکٹ یا اس سے ایکٹ کے کسی اصول طور پر خلاف (کنٹریکٹ) ہوگا نہ وہ قانون نہیں چلے گا۔

پنجاب کے بارے میں صاف لکھا ہے کہ آگست ۱۹۳۷ء کے ایکٹ کے تحت جو نئے دو صوبے بریلی پنجاب اور گجپٹی پنجاب نام سے بنیں گے وہ بلاکہ پہلے کے پنجاب سے چھوٹے بھی ہو سکتے ہیں اور بڑے بھی۔ دفعہ ۲ سبکدوش ۲ میں لکھا ہے کہ "ان دونوں صوبوں کی سرحدیں وہ اصول کی جو ۱۵ آگست سے پہلے یا اس سے بعد گورنر جنرل کے مقرر کئے ہوئے کوئی باؤنڈری کمیشن وقت وقت پر طے کر دیں۔" یعنی گورنر جنرل ۱۵ آگست کے بعد بھی صوبے پنجاب یعنی باؤنڈری کمیشن مقرر کر سکتا ہے اور اگر کمیشن کے ذریعے پنجاب کے دونوں صوبوں کی سرحدیں ہمیشہ بدلتی رہ سکتی ہیں۔ اس کا مطلب یہ ہے کہ پنجاب اور اس کے جوائنٹ لٹ کے صوبوں اور ریاستوں کی سرحدیں ہمیشہ خطے میں رہیں گی۔ برطانیہ سا راج شاہی کو اس سے جو فائدہ ہو وہ صاف ہے اور حکومتوں کے اندر حکومتیں —

نیا ہند
 آج کی دنیا
 اگست ۱۹۷۱

(۱۵) (۱۶)
 (۱۷) (۱۸)
 (۱۹) (۲۰)

ہندوستان کے کائناتوں کے ماتحت ہوں گے۔
 یہ سب خطے کہاں تک پہنچے ثابت ہو سکتے ہیں یہ بات
 بہت جیسے دیکھ کر گورنر جنرل نے ہاتھ میں لے لی۔ گورنر جنرل
 نے اختیار بہت جیسے ہوئے ہیں اور یہ اختیار معمولی طور پر
 ۱۹۷۱ مارچ ۱۹۷۱ تک پہنچیں گے۔ ۱۹۷۱ مارچ ۱۹۷۱ کے
 بعد بھی دسمبر ۱۹۷۱ کے مطابق کچھ خاص چیزوں میں گورنر جنرل کے
 ذریعہ اختیار ہوں گے جو ستمبر ۱۹۷۱ کے ایسٹ کے مطابق تھے۔
 گورنر جنرل اگر طاقتور ہوں گے گورنر جنرل اگر طاقتور ہوں تو ان
 بہت جیسے دن سے پاکستان اور ہندوستان کو یا ہندوستان سے ان کو
 آئے دن ایک دوسرے سے لڑنے لکھ سکتے ہیں اور دونوں کو مصیبت میں ڈال سکتے ہیں۔

نیا ہند
 آج کی دنیا
 اگست ۱۹۷۱

ہندوستان کے کائناتوں کے ماتحت ہوں گے۔
 یہ سب خطے کہاں تک پہنچے ثابت ہو سکتے ہیں یہ بات
 بہت جیسے دیکھ کر گورنر جنرل نے ہاتھ میں لے لی۔ گورنر جنرل
 نے اختیار بہت جیسے ہوئے ہیں اور یہ اختیار معمولی طور پر
 ۱۹۷۱ مارچ ۱۹۷۱ تک پہنچیں گے۔ ۱۹۷۱ مارچ ۱۹۷۱ کے
 بعد بھی دسمبر ۱۹۷۱ کے مطابق کچھ خاص چیزوں میں گورنر جنرل کے
 ذریعہ اختیار ہوں گے جو ستمبر ۱۹۷۱ کے ایسٹ کے مطابق تھے۔
 گورنر جنرل اگر طاقتور ہوں گے گورنر جنرل اگر طاقتور ہوں تو ان
 بہت جیسے دن سے پاکستان اور ہندوستان کو یا ہندوستان سے ان کو
 آئے دن ایک دوسرے سے لڑنے لکھ سکتے ہیں اور دونوں کو مصیبت میں ڈال سکتے ہیں۔

ہندوستان کے کائناتوں کے ماتحت ہوں گے۔
 یہ سب خطے کہاں تک پہنچے ثابت ہو سکتے ہیں یہ بات
 بہت جیسے دیکھ کر گورنر جنرل نے ہاتھ میں لے لی۔ گورنر جنرل
 نے اختیار بہت جیسے ہوئے ہیں اور یہ اختیار معمولی طور پر
 ۱۹۷۱ مارچ ۱۹۷۱ تک پہنچیں گے۔ ۱۹۷۱ مارچ ۱۹۷۱ کے
 بعد بھی دسمبر ۱۹۷۱ کے مطابق کچھ خاص چیزوں میں گورنر جنرل کے
 ذریعہ اختیار ہوں گے جو ستمبر ۱۹۷۱ کے ایسٹ کے مطابق تھے۔
 گورنر جنرل اگر طاقتور ہوں گے گورنر جنرل اگر طاقتور ہوں تو ان
 بہت جیسے دن سے پاکستان اور ہندوستان کو یا ہندوستان سے ان کو
 آئے دن ایک دوسرے سے لڑنے لکھ سکتے ہیں اور دونوں کو مصیبت میں ڈال سکتے ہیں۔

بنا جسٹس
آج کا دن
آگست ۱۹۳۷ء

ہندستانی افسر کے تحت نہ ہو گی۔ سچ - یہ کہ ان انگریزی
فوجوں کی حیثیت غیر ملکی قابض فوجوں (Occupation
Army) کی سی ہی رہے گی۔ اور جب تک حکومت
دوسرے ہاتھوں میں نہ سونپ دی جائے گی تب تک دونوں ڈویژنوں
کی ہندستانی فوجیں انگلستان کے بادشاہ کی فوجیں ہی کہلا دیں گی
اور اس وقت تک امن کا کام صرف اپنی اپنی ڈویژنوں کے اندر
اسن قائم رکھنا ہو گا۔

سے قانون میں چار دفعائیں ایسی ہیں جن کا فوجوں سے فائل سمبند
۱۱۳ اور ۱۱۳۔ انھیں کا پختہ نام نے ابور دیا ہے۔
دو ڈویژنوں ڈویژنوں کی اپنی اپنی فوجوں سے بارے میں دو اور
ہائیں دھیان دینے کی ہیں۔ ایک نکل فوجی سامان اور ہتھیاروں کا
دو ڈویژنوں ڈویژنوں میں بانٹنا جانا اور دوسرے ان فوجوں کا انگریزی
فوجوں سے سمبند۔ اگر سامان کے بخوارے میں کسی بھی طرح
کے ساتھ چالاک با بے انصافی یا گھری ظلمی برائی کی تو وہ دو ڈویژنوں
کی بانٹ برسر تک اپنی فوجوں کو کھینک کھینک ہتھیار بند
کھینکے کے بالکل ناقابل ہو جائے گی۔ مگر یہ اپنا بخت بچانے
کے لئے اسے اپنی کچھ فوجیں توڑ دینی پڑیں۔

دوسری بات کے بارے میں کسی بھی فوجی کام سے کسی بوس
کو دباننا، گرائی ہونا وغیرہ میں انگریزی فوجوں کا یہ ہمد ستانی
فوجوں سے ہمیشہ بھاری رہے گا۔ ہر شے کا اسٹاک
اور سبھی گوائی اور طرح طرح کا بھاری سامان

نیاا ہند
آج کا دنیا
آگست ۱۹۳۷

ہندوستانی افسر کے ماتहत نہ ہو گی۔ سچ یہ ہے کہ رن
آگرہ کی کئی کئی ہتھیاروں سے ملنے کی قابض کئی کئی (Army of
Occupation) کی سی ہی رہے گی۔ اور تب تک ہندوستان دوسرے ہاتھوں
میں نہ سونپ دی جائے گی تب تک دونوں ڈویژنوں کی ہندوستانی
کئی کئی ہندوستان کے بادشاہ کی کئی کئی ہی کھلا دیں گی اور
تک تک ان کا کام سیکر اپنی اپنی ڈویژنوں کے اندر
آمن قائم رکھنا ہو گا۔

نئے قانون میں چار دفعائیں ایسی ہیں جن کا فوجوں سے فائل سمبند
۱۱۳ اور ۱۱۳۔ انھیں کا پختہ نام نے ابور دیا ہے۔
دو ڈویژنوں ڈویژنوں کی اپنی اپنی فوجوں سے بارے میں دو اور
ہائیں دھیان دینے کی ہیں۔ ایک نکل فوجی سامان اور ہتھیاروں کا
دو ڈویژنوں ڈویژنوں میں بانٹنا جانا اور دوسرے ان فوجوں کا انگریزی
فوجوں سے سمبند۔ اگر سامان کے بخوارے میں کسی بھی طرح
کے ساتھ چالاک با بے انصافی یا گھری ظلمی برائی کی تو وہ دو ڈویژنوں
کی بانٹ برسر تک اپنی فوجوں کو کھینک کھینک ہتھیار بند
کھینکے کے بالکل ناقابل ہو جائے گی۔ مگر یہ اپنا بخت بچانے
کے لئے اسے اپنی کچھ فوجیں توڑ دینی پڑیں۔

دونوں ڈویژنوں کی اپنی اپنی کئی کئی کئی کے بارے میں دو اور
کئی کئی کئی کے ہیں۔ ایک کئی کئی کئی کئی کئی کئی کئی کئی
کا دونوں ڈویژنوں میں بانٹا جاتا اور دوسرے ان فوجوں کا انگریزی
فوجوں سے سمبند۔ اگر سامان کے بخوارے میں کسی بھی طرح
کے ساتھ چالاک با بے انصافی یا گھری ظلمی برائی کی تو وہ دو ڈویژنوں
کی بانٹ برسر تک اپنی فوجوں کو کھینک کھینک ہتھیار بند
کھینکے کے بالکل ناقابل ہو جائے گی۔ مگر یہ اپنا بخت بچانے
کے لئے اسے اپنی کچھ فوجیں توڑ دینی پڑیں۔

دوسری بات کے بارے میں کسی بھی فوجی کام سے کسی بوس
کو دباننا، گرائی ہونا وغیرہ میں انگریزی فوجوں کا یہ ہمد ستانی
فوجوں سے ہمیشہ بھاری رہے گا۔ ہر شے کا اسٹاک
اور سبھی گوائی اور طرح طرح کا بھاری سامان

पहले सवाल का जवाब हम दे चुके हैं. सिकंदर इतना और बला देता बाकी है कि जो दो अमली चलाई जाने वाली है. उसमें कमाल्डर इन चीक इस मुल्क की सब देसी और अंगरेजी कौजों का बड़ा अकसर होगा. अंगरेजी कौजों के अखितयार देसी कौजों से बड़े हुए होंगे. दूसरे सवाल का सम्यन्ध सारे हिन्दुस्तान के जवाब से है. इस ज्ञानन में इसका खिक नहीं है. हुकूमत के अखितयार दिये जाने के बाद यह बात नए सिरे से तय होगी. तीसरे सवाल का जवाब यह है कि जब तक दो अमली खतम न हो तब तक पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की देसी कौजों सिकंदर अपनी अपनी डोमीनियन में ही काम कर सकेंगी. यह भी मालूम होता है कि जब कि इन दोनों में से कोई डोमीनियन किसी देसी रियासत पर चढ़ाई न कर सकेगी, कोई आजाद देसी रियासत अगर चाहे तो इनमें से किसी पर चढ़ाई कर सकेगी. बहर के हमले से अपने जवाब का इस ज्ञानन में कोई खिक नहीं है. यह बात भी हुकूमत सौंपे जाने के बाद तय होगी कि जो खिभेवारी अब तक ब्रिटेन के ऊपर थी वह आगे को ब्रिटेन के ऊपर ही रहे या किसी और के.

कहा जाता है कि कौज के ऊपर यह दो अमली थोड़े दिनों के लिये ही है. पर असल में यह दो अमली हुकूमत सौंपे जाने के बाद भी जारी रह सकती है.

तीस जून को बटवारे की कौंसिल ने नई दिल्ली में यह तय किया कि १५ अगस्त के बाद उस वकत तक दोनों जगह की कौजों पर यह दो अमली बराबर क्रायम रहेंगी, उन तक कि कौजों का बटवारा पूरा न हो जाय और दोनों सरकारें अपने अपने यहां

आज की दुनिया

एक साल का जवाब हम दे चुके हैं. सिकंदर इतना और बला देता बाकी है कि जो दो अमली चलाई जाने वाली है. उसमें कमाल्डर इन चीक इस मुल्क की सब देसी और अंगरेजी कौजों का बड़ा अकसर होगा. अंगरेजी कौजों के अखितयार देसी कौजों से बड़े हुए होंगे. दूसरे सवाल का सम्यन्ध सारे हिन्दुस्तान के जवाब से है. इस ज्ञानन में इसका खिक नहीं है. हुकूमत के अखितयार दिये जाने के बाद यह बात नए सिरे से तय होगी. तीसरे सवाल का जवाब यह है कि जब तक दो अमली खतम न हो तब तक पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की देसी कौजों सिकंदर अपनी अपनी डोमीनियन में ही काम कर सकेंगी. यह भी मालूम होता है कि जब कि इन दोनों में से कोई डोमीनियन किसी देसी रियासत पर चढ़ाई न कर सकेगी, कोई आजाद देसी रियासत अगर चाहे तो इनमें से किसी पर चढ़ाई कर सकेगी. बहर के हमले से अपने जवाब का इस ज्ञानन में कोई खिक नहीं है. यह बात भी हुकूमत सौंपे जाने के बाद तय होगी कि जो खिभेवारी अब तक ब्रिटेन के ऊपर थी वह आगे को ब्रिटेन के ऊपर ही रहे या किसी और के.

برطانیہ ہوا سوسائٹی تو اس میں انگریزوں کی کوئی ذمہ داری نہیں۔ فروری میں اس آؤس آئن لائٹس میں بولتے ہوئے لارڈ پیٹریک لائسن نے اپنی سکرال کی طرف سے کہا تھا کہ ہندوستان میں گھریلو جنگ کا خطرہ جو پر "سچو" انگریزی فوج دونوں میں سے کسی کو نہیں ملے گی اس لئے میں سمجھتا ہوں کہ اس جنگ سے زیادہ نقصان نہیں ہوگا۔"

مشرقی پاکستان کی فوج کے لئے کہنے کا بھی حق جو کہ فوج کے کس حصے کو زیادہ پہنچے۔ جیسا کہ کسی کی تعلیم پر زیادہ خرچ کیا جائے۔ جس طرح پاکستان اور ہندوستان کی فوجوں کے علاوہ پاکستان کی آؤس کی اور کب فوجوں کا بھی اصرار ہوگا۔ یہ دو عملی اس وقت تک جاری رہے گی جب تک کہ پاکستان اور ہندوستان دونوں کی جاگیریں فوجی سطحوں کے لئے تجارت کے لئے انٹرنیشنل تجارتی مرکز بنیں۔ اور چیزوں کی مدد کے لئے پاکستان کے ساتھ مناسب تجارتی اور تجارتی بائک انکسٹان کے اگھوں میں رہے گی۔

گورنر جنرل کے اختیارات
 ہوا کا ذمہ دار نے حال میں پراکھٹنا کے بعد این این ایک تقریر میں کہا تھا کہ ہندوستان کے گورنر جنرل کی حیثیت سے لارڈ ماؤنٹ بیٹن کی پراکھٹنا جیسی اگھوں نے ہے۔

اسید بھی تلا ہر کی تھی کہ لائٹ انڈسٹری میں پراکھٹنا کے اصول تھے۔ اس طرح کی بات کا اندھی جی نے سرسبز جناح کے بارے میں کہی تھی۔ صحیح صحیح گورنر جنرل کا عہدہ ہے۔

لگا رہے ہو تاہم تو اس میں آؤسوں کی کوئی ذمہ داری نہیں۔ فروری میں لارڈس آؤس لائٹس میں بولتے ہوئے لارڈ پیٹریک لائسن نے اپنی سرکار کی طرف سے کہا تھا کہ ہندوستان میں پورے جگہ کا خطرہ ہے۔ "چونکہ آؤسوں کی فوجوں میں سے کسی کو نہیں ملے گی اس لئے اس لئے میں سمجھتا ہوں کہ اس جنگ سے زیادہ نقصان نہیں ہوگا۔"

مشرقی پاکستان کو یہ تھوڑے کرنے کا بھی ہک ہے کہ کس کو کس حصے کو زیادہ پہنچے۔ جیسا کہ کسی کی تعلیم پر زیادہ خرچ کیا جائے۔ جس طرح پاکستان اور ہندوستان کی فوجوں کے علاوہ پاکستان کی آؤس کی اور کب فوجوں کا بھی اصرار ہوگا۔ یہ دو عملی اس وقت تک جاری رہے گی جب تک کہ پاکستان اور ہندوستان دونوں کی جاگیریں فوجی سطحوں کے لئے تجارت کے لئے انٹرنیشنل تجارتی مرکز بنیں۔ اور چیزوں کی مدد کے لئے پاکستان کے ساتھ مناسب تجارتی اور تجارتی بائک انکسٹان کے اگھوں میں رہے گی۔

گورنر جنرل کے اختیارات
 ہوا کا ذمہ دار نے حال میں پراکھٹنا کے بعد اپنی ایک تقریر میں کہا تھا کہ ہندوستان کے گورنر جنرل کی حیثیت سے لارڈ ماؤنٹ بیٹن کی پراکھٹنا جیسی اگھوں نے ہے۔

اسید بھی تلا ہر کی تھی کہ لائٹ انڈسٹری میں پراکھٹنا کے اصول تھے۔ اس طرح کی بات کا اندھی جی نے سرسبز جناح کے بارے میں کہی تھی۔ صحیح صحیح گورنر جنرل کا عہدہ ہے۔

لگا رہے ہو تاہم تو اس میں آؤسوں کی کوئی ذمہ داری نہیں۔ فروری میں لارڈس آؤس لائٹس میں بولتے ہوئے لارڈ پیٹریک لائسن نے اپنی سرکار کی طرف سے کہا تھا کہ ہندوستان میں پورے جگہ کا خطرہ ہے۔ "چونکہ آؤسوں کی فوجوں میں سے کسی کو نہیں ملے گی اس لئے اس لئے میں سمجھتا ہوں کہ اس جنگ سے زیادہ نقصان نہیں ہوگا۔"

مشرقی پاکستان کو یہ تھوڑے کرنے کا بھی ہک ہے کہ کس کو کس حصے کو زیادہ پہنچے۔ جیسا کہ کسی کی تعلیم پر زیادہ خرچ کیا جائے۔ جس طرح پاکستان اور ہندوستان کی فوجوں کے علاوہ پاکستان کی آؤس کی اور کب فوجوں کا بھی اصرار ہوگا۔ یہ دو عملی اس وقت تک جاری رہے گی جب تک کہ پاکستان اور ہندوستان دونوں کی جاگیریں فوجی سطحوں کے لئے تجارت کے لئے انٹرنیشنل تجارتی مرکز بنیں۔ اور چیزوں کی مدد کے لئے پاکستان کے ساتھ مناسب تجارتی اور تجارتی بائک انکسٹان کے اگھوں میں رہے گی۔

گورنر جنرل کے اختیارات
 ہوا کا ذمہ دار نے حال میں پراکھٹنا کے بعد اپنی ایک تقریر میں کہا تھا کہ ہندوستان کے گورنر جنرل کی حیثیت سے لارڈ ماؤنٹ بیٹن کی پراکھٹنا جیسی اگھوں نے ہے۔

اسید بھی تلا ہر کی تھی کہ لائٹ انڈسٹری میں پراکھٹنا کے اصول تھے۔ اس طرح کی بات کا اندھی جی نے سرسبز جناح کے بارے میں کہی تھی۔ صحیح صحیح گورنر جنرل کا عہدہ ہے۔

ایم آر آر پورٹنٹس ایکٹ میں ہندوستان اور پاکستان دونوں کے مصلحتوں میں گمنڈ جزیل کو ایک بھگت بے آئٹ اختیار لئے گئے ہیں۔ کسی کسی بات میں یہ اختیار ۱۹۳۵ء کے ڈیٹمنٹ آف ایشیا ایکٹ کے اختیاراتوں سے بھی زیادہ ہیں کیونکہ نئے قانون میں یہ سمجھ لیا گیا ہے کہ گمنڈ جزیل ان اختیارات کو سمجھ کر اور اس مصلحت سے کام میں لائے گا کہ جو لوگ ۱۹۳۵ء کے قانون کی نئی ترتیم میں آزادی دیکھتا چاہتے ہیں ان کا دھوکا دہ نہ ہوئے۔

نئے قانون میں ہندوستان اور پاکستان دونوں کے گمنڈ جزیلوں کے اختیار ہلبر ہیں۔ پھر اس کا یہ مطلب نہیں کہ دارا کرسٹ کے بعد وہ نفل کے گمنڈ جزیل یا اگر دونوں کا ایک گمنڈ جزیل ہو تو وہ دونوں جگہ اپنے اختیاروں کو الگ الگ طرح سے کھلے گمنڈ سر جان انڈسٹری نے سوال کیا کہ اگر دونوں حکومتوں کے وزیر اپنے اپنے یہاں کے گمنڈ جزیل کو ایک دوسرے کے خلاف مشورہ دیں تو کیا ہوگا؟ اور خاص کر اگر دونوں کا گمنڈ جزیل ایک زمانہ نفل جگہ کے فیصلوں نے اسے الگ الگ طرح کی مصلحت دی تو وہ کیا کرے گا؟

اسٹریٹس کو یہ مسئلہ سمجھا کر دونوں گورنر جنرل صرف انٹیکسٹان کے بارشہ کے بارشہ کے لئے صرف دستار ہیں اور کسی کے نہیں اور بادشاہ کا مطلب ہے انٹیکسٹان کا بڑا وزیر اور ان کی کپینٹ۔ ہندوستان اور پاکستان کے وزیر صرف سجاوٹ کی چیزیں ہیں۔ انڈسٹریٹس

نیا دیند آج کی دنیا آگاسٹ سن ۱۹۶۹

آہم ہے۔ انڈیپنڈنس ایکٹ میں ہندوستان اور پاکستان دونوں کے ماملوں میں گورنر جنرل کو لگامبغا بہ آہم اختیار دیئے گئے ہیں۔ کسی کسی بات میں یہ اختیار ۱۹۳۵ء کے گورنمنٹ آف ایشیا کے گورنمنٹ آف ایشیا کے اختیاروں سے بھی زیادہ ہیں کیونکہ نئے قانون میں یہ سمجھ لیا گیا ہے کہ گورنر جنرل ان اختیارات کو سمجھ کر اور اس سے کام میں لائے گا کہ جو لوگ ۱۹۳۵ء کے قانون کی نئی

(۱۷۷)

نئے قانون میں ہندوستان اور پاکستان دونوں کے گورنر جنرل کے اختیار ہیں۔ پھر اس کا یہ مطلب نہیں کہ دارا کرسٹ کے بعد وہ نفل کے گمنڈ جزیل یا اگر دونوں کا ایک گمنڈ جزیل ہو تو وہ دونوں جگہ اپنے اختیاروں کو الگ الگ طرح سے کھلے گمنڈ سر جان انڈسٹری نے سوال کیا کہ اگر دونوں حکومتوں کے وزیر اپنے اپنے یہاں کے گمنڈ جزیل کو ایک دوسرے کے خلاف مشورہ دیں تو کیا ہوگا؟ اور خاص کر اگر دونوں کا گمنڈ جزیل ایک زمانہ نفل جگہ کے فیصلوں نے اسے الگ الگ طرح کی مصلحت دی تو وہ کیا کرے گا؟

कुछ कितनावे

मानव धर्म प्रचारक—लिखने वाले आचार्य जगतकुमार
 राक्षी, सके ३८४, क्रीमत चार रूपये, लिखावट नागरी, पता—साहित्य
 मंडल, दीवान हाल, दिल्ली.

(४६)

गीता, कुरान शरीफ और करीब करीब सभी बड़ी किताबों में एक ही राय है कि जब धर्म की हानि होती है और पाप बढ़त है, तब तब अच्छे लोगों को बचाने और दुष्टों को मारने के लिये और मजहब को फिर से फैलाने के लिये बड़े लोग पैदा होते हैं. इस बात को नजर में रखते हुए अगर देखा जाय तो न जाने कितने ही धर्म के फैलाने वाले दुनिया में आए मगर इने गिने के ही बारे में तारीख हमें बताती है. इस किताब में दुनिया के उन बड़े लोगों में उन्हीं खास लोगो का बयान है जिनके बारे में तारीख हमें काफी अच्छी तरह बताती है, जैसे—याम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, अशोक, ईसा, मुहम्मद, कबीर, नानक, दयानन्द रामकृष्ण, विवेकानन्द, रामतीर्थ और गाँधी. इन्हीं बड़े लोगों की जीवनी और दुनिया के फायदे के लिये उनकी नसोहते इस किताब में दी हुई हैं. इस श्रोटी सो किताब में हमें थोड़े में ही बहुत कुछ मालूम हो जाता है, दुनिया के करीब करीब सभी मजहबों से हमें आसानी से ही जानकारी हो जाती है और हमारे अन्दर यह समझने की सूरत पैदा हो जाती है कि मानव धर्म यानी इन्सानो धर्म असलियत में क्या है जिसे हमल में लाने से इन्सान खुशहाली के साथ खिन्दगी बसर कर सकता है. इस किताब की बचान आसान हिन्दी है जिसे सब अच्छी तरह समझ सकते हैं. यह किताब सभी के लिये लेखक की एक कीमती देन है.

—निरा प्रसाद

कुछ कितनावे

طافه دهرم پرچا کرک — لیکنے والے آغا ریگرت کا رشارتسری صفحہ ۲۸۴
 قیمت حصار دہریمہ الکھادت اگری ایتر — ساہتیہ منظر دیوان الہ دلی .
 گیتا، کوران شریف اور قریب قریب سبھی بڑی کتابوں میں ایک ہی رائے

ہے کہ جب جب دهرم کی ہانی ہوئی ہو اور وہ پاپ بڑھتا ہو۔ تب تب اچھے لوگوں کو نکالنے اور دُشمنوں کو مارنے کے لئے اور مذہب کو بچھرنے سے بچھیلانے کے لئے جسے بول پیدا ہوتے ہیں۔ اس بات کو نظر میں رکھتے ہوئے اگر دکھا جائے تو نہ جانے کتنے ہی دهرم کے پھیلائے والے دنیا میں آئے جو ان کے لئے بڑے بڑے لوگوں کی طرح تیار ہوتے ہیں۔ اس کتاب میں دنیا کے ان بڑے بڑے لوگوں میں انھیں خاص خاص لوگوں کا بیان ہے جن کے بارے میں تاریخ میں کافی اچھی طرح بتائی ہو، جیسے دهرم، کریشن، بودھا، مہاویہ، اچوک، ایشیہ، ایشیہ، دیانند، رام کرشن، روڈیک، نند، رام تیرتھ اور گاندھی۔ انھیں بڑے لوگوں کی سمجھتی اور دنیا کے فائدے کے لئے ان کی سمجھتیں اس کتاب میں دی ہوئی ہیں۔ اس سمجھتی سی کتاب میں ہمیں کھوشی سے یہ بھی بہت کچھ معلوم ہو پاتا ہے۔ دنیا کے قریب قریب سبھی مذہبوں سے ہیں آسانی سے ہی جانکاری ہو جاتی ہے اور وہ ہمارے اندر یہ سمجھنے کی سوجھ بوجھ پیدا ہو جاتی ہے کہ ان دهرم یعنی انسانی دهرم اصلیت میں کیا ہے اور عمل میں لانے سے انسان خوش حالی کے ساتھ زندگی بسر کر سکتا ہے اور اس کتاب کی زبان آسان ہندی ہے جسے سب اچھی طرح سمجھ سکیں۔ یہ کتاب سبھی کے لئے ایک ایسا ہی ایک قیمتی دین ہے اور — گمنیش پرشار

ہماری رائے

انٹرنیشنل پر علم

حال ہی میں ڈیج ڈیجنگ ونگوں نے اٹلی جہازوں سے انٹرنیشنل پر
 عمل بول دیا تھا اور وہ اب تک چل رہا ہے۔ یورپ کی اس دنیا کا مطلب
 سے یونیا کے بہت سے ملک ناخوش ہیں برٹشوں کے خلاف آواز
 اٹھانے میں ہندستان نے پہل کی اور ہندستان کے دونوں ہی
 حصے پاکستان اور ہندستان اس معاملے میں ایک رائے ہیں اور
 کت بھیر انٹرنیشنل کی مدد کرنے کے لئے کہتے ہیں اور وقت بڑھنے

پر کریں گے بھی
 دنیا کے نئے بہتر طبیعت کے مطابق انٹرنیشنل کو آزاد ہونے کا
 حق نہیں ہو کر وہ کسی ملک کو اور کسی اور ملک کو بھر ڈیجنگ ونگوں کو
 اپنا علم بنائے رکھیں۔ ڈیجنگ ونگوں نے اپنے اس ناچار کام سے
 اپنے نقصان کئے ہیں۔

۱۔ انٹرنیشنل نے ان شرطوں کو توڑا ہے جو ان میں اور انٹرنیشنل
 میں اعمال تھیں۔ ۲۔ انٹرنیشنل نے سب ملکوں اور خاص کر انٹرنیشنل
 ملکوں کو اپنے خلاف نا اراض کر لیا ہے۔ ۳۔ یونوں (۲۔ این۔ این) اور
 کو سیدھے بیچنے کو روکنا بنا کر ڈیجنگ سے اس میں صل کا بیج
 بولوا ہے۔
 بددلت بھائی لال زہرا اور پاکستان کے ہونے والے

ہماری راہ

ہندوئی شریا پر ہم لانا۔

حال ہی میں ڈچ لوگوں نے ہواہے جہازوں سے ہندوئی شریا پر
 ہم لانا بول دیا تھا اور اب تک چل رہا ہے۔ یورپ کی
 اس دنیا کا کاروبار سے دنیویا کے बहुत سے ملک ناخوش ہیں
 ڈچوں کے खिलाف آواز اٹھانے میں ہندستان نے پہل کی اور
 ہندستان کے دونوں ہی حصے پاکستان اور ہندستان اس
 معاملے میں ایک رائے ہیں اور ہندستان کے دونوں ہی
 حصے پاکستان اور ہندستان اس معاملے میں ایک رائے ہیں اور
 کت بھیر انٹرنیشنل کی مدد کرنے کے لئے کہتے ہیں اور وقت بڑھنے

دنیویا کے ناطہ ہندوئی صلس کے متعلق ہندوئی شریا کو
 ہونے کا ہتھکانا ہی ہرک ہامیل ہے جیتنا کسی اور ملک کو۔
 फिर ڈچ لوگوں کو یہ ہر گرجا ہرک نہیں ہے کہ وہ کسی
 ملک کو اور خاص کر کسی ناطہ ہندوئی صلس کو
 گالام بنا رہے۔ ڈچ لوگوں نے اپنے اس ناچار کام سے
 ہتھکانا کر کے ہے۔

۱۔ انہیں ان راتوں کو توڑنا ہے جو انہیں اور ہندوئی شریا
 میں ہونے والے ہیں۔ ۲۔ انہیں سب ملکوں اور خاص کر ہندوئی
 ملکوں کو اپنے खिलाف ناطہ بنا کر لیا ہے۔ ۳۔ یونوں (۲۔
 این۔ این) کو سیدھے بیچنے کو روکنا بنا کر ڈیجنگ سے اس میں
 صل کا بیج بولوا ہے۔
 بددلت بھائی لال زہرا اور پاکستان کے ہونے والے

گورنر جنرل جناب جناح صاحب نے ٹیک بکنٹن پر اپنے بیان نکال کر ہندوستان کی ہی نہیں ساری دنیا کی بڑی خدمت کی ہے اور اس کام میں جیل کر کے دونوں نے ثابت کر دیا ہے کہ ہندوستان اپنی آزاد رائے رکھتا ہے اور فلسفی رائے بنانے کی پوری قابلیت رکھتا ہے۔

—بھوانی دین

پندرہ آغا اسٹوٹ—

(۱۲۰)

ہندوستان کو دو ڈومینیشنوں میں بانٹ دیا گیا ہے۔ ڈومینیشن انگریزی شہد اور جس کے معنی ہوتے ہیں انکی یعنی کسی کی مالکی۔ اب ہندوستان کی دونوں ڈومینیشن اپنی مالکی کے لئے یہ دونوں جیل رائے کی ڈومینیشن یعنی مالکی ایریا یعنی ان پر سیدھے ڈیڑھے دونوں طرح برطانیہ کا راج ہے۔ ان دو ریاستوں جو ان دونوں میں سے کسی میں شامل نہیں ہونا چاہتیں یہ جیک پوری آزاد ہوں گی کیونکہ وہ سوائے اور کسی قانون سے بندھی ہوئی نہیں ہوں گی۔ پھر یہ ریاستیں ایک ایک اپنی کمزور ہیں کہ وہ کسی ڈومینیشن پیٹک کا رین چھٹا ہے یعنی وہ کسی یا ان کو زندہ رہنے کے لئے کسی کسی ڈومینیشن سے دوسرے ایک سے گہری دوستی کرنی ہوگی اور اسان کام نہیں۔ برطانیہ نے صاف کہہ ہی دیا ہے کہ برطانیہ کسی اور ریاست کو تیسری ڈومینیشن نہیں بناتا چاہتا اور اسی لئے وہ پیچھے جی سے اس کو بخش میں آکر

ہندوستان کو دو ڈومینیشنوں میں بانٹ دیا گیا ہے۔ ڈومینیشن انگریزی شہد اور جس کے معنی ہوتے ہیں انکی یعنی کسی کی مالکی۔ اب ہندوستان کی دونوں ڈومینیشن اپنی مالکی کے لئے یہ دونوں جیل رائے کی ڈومینیشن یعنی مالکی ایریا یعنی ان پر سیدھے ڈیڑھے دونوں طرح برطانیہ کا راج ہے۔ ان دو ریاستوں جو ان دونوں میں سے کسی میں شامل نہیں ہونا چاہتیں یہ جیک پوری آزاد ہوں گی کیونکہ وہ سوائے اور کسی قانون سے بندھی ہوئی نہیں ہوں گی۔ پھر یہ ریاستیں ایک ایک اپنی کمزور ہیں کہ وہ کسی ڈومینیشن پیٹک کا رین چھٹا ہے یعنی وہ کسی یا ان کو زندہ رہنے کے لئے کسی کسی ڈومینیشن سے دوسرے ایک سے گہری دوستی کرنی ہوگی اور اسان کام نہیں۔ برطانیہ نے صاف کہہ ہی دیا ہے کہ برطانیہ کسی اور ریاست کو تیسری ڈومینیشن نہیں بناتا چاہتا اور اسی لئے وہ پیچھے جی سے اس کو بخش میں آکر

ہندوستان کو سب ریاستوں کی کسی نہ کسی ڈومین میں مزید مل جائیں۔ اگر کوئی ریاست ڈومین میں نہیں ملتی تو وہ ٹالوں کی لڑ سے ر طرح آزاد ہو جائی اور پر اسے نہ پاکستان آزاد دیکھنا چاہتا ہو نہ ہندستان اور نہ برطانیہ اگرچہ وہ کہہ کر وہ کسی بھی طاقت یا دشمن کے ہاتھ میں پھیل سکتی ہے اور برطانیہ یا برطانیہ کی ہندوستانی ڈومینوں کے لئے خطرناک ثابت ہو سکتی ہے۔ ان اگر ساری ریاستیں مل کر ایک فیڈریشن بنالیں اور اپنی اندرونی حکومت کو انگریزی یا امریکی ڈومینک کا بنالیں تو بے شک ان کا وہ ہندوستانی فیڈریشن بالکل آزاد ہوگا اور ہندستان یا پاکستان کی ڈومینوں سے ہزار گنا طاقت ہو اور دنیا کی نظروں میں اور فیڈریشن کے آزادی پسندوں کی نظروں میں قابل قدر ہوگا۔ یہ دیا اب نہیں ہو سکتا اور ریاستوں کو مجبور ڈومینوں میں مل کر برطانیہ کا راج ہی ماننا پڑے گا۔

ہندوستان کی سب ریاستوں کی کسی نہ کسی ڈومین میں بکر میل آج۔ آغا کوئی ریاست ڈومین میں نہیں ملتی ہے، پر جسے نہ پاکستان آزاد دیکھنا چاہتا ہے نہ ہندوستان اور نہ برطانیہ اگرچہ وہ کہہ کر وہ کسی بھی طاقت یا دشمن کے ہاتھ میں پھیل سکتی ہے اور برطانیہ یا برطانیہ کی ہندوستانی ڈومینوں کے لئے خطرناک ثابت ہو سکتی ہے۔ ان اگر ساری ریاستیں مل کر ایک فیڈریشن بنالیں اور اپنی اندرونی حکومت کو انگریزی یا امریکی ڈومینک کا بنالیں تو بے شک ان کا وہ ہندوستانی فیڈریشن بالکل آزاد ہوگا اور ہندوستان کی ڈومینوں سے ہزار گنا طاقت ہو اور فیڈریشن کے آزادی پسندوں کی نظروں میں قابل قدر ہوگا۔ یہ دیا اب نہیں ہو سکتا اور ریاستوں کو مجبور ڈومینوں میں مل کر برطانیہ کا راج ہی ماننا پڑے گا۔

سوادھین نام کا ٹیکا لگا اور ان دنوں ڈومینوں کو ابھی ۱۹۳۵ء کے گورنمنٹ ایکٹ میں کچھ شہکار۔ ان ڈومینوں کا رتبہ ابھی گورنمنٹ ایکٹ اور ڈومینک کی ڈومینوں کی ہے۔ یہ اپنے ڈومینک کی انٹی ڈومین برطانیہ نے جی آر کی ہیں۔ نرم دل دلہٹ مشر نہیں مل پائی۔ آزادی کی وہ ضروری چیزوں طرح اور پھیل رہی سے اس وقت صرف ایک چیز پھیل لی ہے اور پھیل ہی

(१००)

— कलकत्ता, नोआखाली, बिहार, गढ़, पंजाब और फ्रंटियर के आपसी जंगली कारनामों के बाद आप के हाथ में पूरी आजादी यमा देगा. यह तो हो सकता है कि अगर वह १५ अगस्त सन् १९१६ से पहले आठ आने आजादी देने वाला था तो अब आप को है आने पर ही राखी करले और यही उसने किया. ऐसी हालत में आप भी यही करते. चरा सोचिये अगर आप सूद पर रुपया उठाने का काम करते हैं और किन्हीं दो भाइयों का रुपया आप के यहां वे सूद जमा है और अगर वह दोनों मिल कर अपना रुपया भांगने आप और आप किसी बजह से पूरा रुपया न दे कर बाहर आना देने को तैयार हों और इतने में ही दोनों आपस में लड़ बैठें तो क्या आप उनके हाथ में १२ आने की जगह रुपया थमा देंगे ? अगर आप ऐसा करेंगे तो आप सूदखोरों की नजरों में तिरि वेबकूक समझे जायेंगे. आप ऐसा करेंगे भी नहीं. आप बाहर आने की जगह चार आने देने की कोशिश करेंगे और दोनों हैं आने पर खुश हो जायेंगे. खुलासा यह कि हमारे इस आपसी मगड़े ने हमको वह भी नहीं मिलने दिया जो कांग्रेस की सेवाओं और लीग की शोशियारी के बल पर हम पेंठ सकते थे, और अब हिन्दू महासभा डाइरेक्ट ऐंक्शन करके इस पाण्डु में से भी कुछ खो सकती है. अंगरेज की वेब से और कुछ नहीं निकलवा सकती हों, अगर लीग का डाइरेक्ट ऐंक्शन अपनों पर न हो कर डाइरेक्ट होता या महासभा का होने वाला डाइरेक्ट ऐंक्शन अपनों पर न हो क डाइरेक्ट हो तो नतीजा आहिंसा के कलसके के मुताबिक आजादी न भी होता या न भी हो

अगत

द्वारा लाई

नया

कलकत्ता, नोआखाली, बिहार, गढ़, पंजाब और फ्रंटियर के आपसी जंगली कारनामों के बाद आप के हाथ में पूरी आजादी यमा देगा. यह तो हो सकता है कि अगर वह १५ अगस्त सन् १९१६ से पहले आठ आने आजादी देने वाला था तो अब आप को है आने पर ही राखी करले और यही उसने किया. ऐसी हालत में आप भी यही करते. चरा सोचिये अगर आप सूद पर रुपया उठाने का काम करते हैं और किन्हीं दो भाइयों का रुपया आप के यहां वे सूद जमा है और अगर वह दोनों मिल कर अपना रुपया भांगने आप और आप किसी बजह से पूरा रुपया न दे कर बाहर आना देने को तैयार हों और इतने में ही दोनों आपस में लड़ बैठें तो क्या आप उनके हाथ में १२ आने की जगह रुपया थमा देंगे ? अगर आप ऐसा करेंगे तो आप सूदखोरों की नजरों में तिरि वेबकूक समझे जायेंगे. आप ऐसा करेंगे भी नहीं. आप बाहर आने की जगह चार आने देने की कोशिश करेंगे और दोनों हैं आने पर खुश हो जायेंगे. खुलासा यह कि हमारे इस आपसी मगड़े ने हमको वह भी नहीं मिलने दिया जो कांग्रेस की सेवाओं और लीग की शोशियारी के बल पर हम पेंठ सकते थे, और अब हिन्दू महासभा डाइरेक्ट ऐंक्शन करके इस पाण्डु में से भी कुछ खो सकती है. अंगरेज की वेब से और कुछ नहीं निकलवा सकती हों, अगर लीग का डाइरेक्ट ऐंक्शन अपनों पर न हो कर डाइरेक्ट होता या महासभा का होने वाला डाइरेक्ट ऐंक्शन अपनों पर न हो क डाइरेक्ट हो तो नतीजा आहिंसा के कलसके के मुताबिक आजादी न भी होता या न भी हो

نیا ہند ... ہندوستان کی آزادی کی سزا ہے۔

ہندوستان کی آزادی کی سزا ہے۔

ہندوستانی اور انگریزوں کے درمیان

ہندوستان کی آزادی کی سزا ہے۔

ہندوستان کی آزادی کی سزا ہے۔

ہندوستان کی آزادی کی سزا ہے۔

ہندوستان کی آزادی کی سزا ہے۔

ہندوستانی اور انگریزوں کے درمیان

ہندوستان کی آزادی کی سزا ہے۔

لیکھاواٹوں کے चलते रहते में ही है. अगर आज हिन्दुस्तान को सारी जनता सिकं उर्दू लिखावट पर राकी हो जाय तो हम उसके खिलाफ होंगे और अगर वह सिकं नागरी लिखावट पर राकी हो जाय तो हम इसके भी खिलाफ होंगे. जब हम दो लिखावटों की बात करते हैं तब, हम सब कहते हैं, हमारे दिल में मुसलमानों का रत्ती भर खयाल नहीं है. असल बात यह है कि हम दोनों लिखावटों को जारी रख कर दोनों के ही इस रूप को जल्म कर देना चाहते हैं. दोनों में से कोई और न दोनों मिलकर ही हमारी आज की जरूरतों को पूरा कर सकती हैं. दोनों लिखावटें मुल्क के हाथ में पड़कर न हिन्दू रह जाती हैं न मुसलमान, दोनों ही हिन्दुस्तानी हो जाती हैं, और फिर यह न अरबी फारसी के कायदों से बाँध सकती हैं और न संस्कृत के. वह हिन्दुस्तानी हो कर अपना रूप बदलने के लिये आबाद हो जाती हैं. नागरी इ, ऊ, ऐ, ए और पेट चिरा प साक करके ऐसी ही खुश है जैसे आज का जवान मूर्खें मुझा कर या आज की लड़कियां बाल कटा कर. उर्दू लिखावट बहुत जल्दी से, साद, जाद, तो, जो, बगैरा से हल्की होकर जल्दी आवादी से उड़ सकेगी और जहां नहीं भी पहुँच सकती थी पहुँच सकेगी. दस बरस भी न लगेंगे कि यह दोनों लिखावटें मिलकर एक तीसरी लिखावट में बदल जायंगी, और वह अपनी हिन्दुस्तानियत लिये होगी, इस लिये और सिकं इसी लिये रोमन लिखावट हमारी आंखों पर नहीं चढ़ती. दस बरस की दिक्कतों से हम बंधों घबरायें. यही बजह है कि हम दोनों लिखावटों पर जोर देते हैं. किसी एक ही को अपना कर हम उसमें मनचाहा और जरूरी बदलाव न कर

لیکھاواٹوں کے چلنے لہنے میں رہی ہو. اگر آج ہندوستان کی ساری جینا صورت اُردو لکھاواٹ پر بلائی ہو جائے تو ہم اس کے خلاف ہوں گے اور اُردو صورت انگری لکھاواٹ پر راضی ہو جائے تو ہم اس کے بھی خلاف ہوں گے. جب ہم وہ لکھاواٹوں کی بات کرتے ہیں تب ہم سچ کہتے ہیں: ہمارے دل میں مسلمانوں کا کوئی بھرخیال نہیں ہے اس بات یہ ہے کہ ہم دونوں لکھاواٹوں کو جاری رکھ کر دونوں کے ہی اس روپ کو ختم کر دینا چاہتے ہیں. دونوں میں سے کوئی اور نہ دونوں کو لے کر ہی ہماری آج کی ضرورت قفل کو پورا کر سکتی ہیں. دونوں کوئی دینی حکم کے پابند ہیں، پھر کہ نہ ہندو وہ جاتی ہیں نہ مسلمان، وہی ہندوستانی ہے جو جاتی ہے اور پھر یہ نہ عربی فارسی کے طالبوں سے بندہ ستانی ہے اور نہ سنسکرت کے. وہ ہندوستانی ہو کر اپنا روپ بدلنے کے لئے آزاد ہو جاتی ہے. انگری ای، اُو، اے، اِن اور ہیٹ چرائی صاف کر کے ایسی ہی خوش ہو جیسے آج کا جوان کھینچیں مُسکرا کر یا آج کی لڑکیاں بال کھانکر. اُردو لکھاواٹ بہت جلدی سے 'ض' 'ظ' 'ط' 'ظ' وغیرہ سے بھی ہو کر جلدی آرازی سے اُڑ سکے گی اور جہاں نہیں کھی بھی پہنچتی تھی پہنچ سکے گی. دس برس بھی نہ لگیں گے کہ یہ دونوں لکھاواٹیں، لک اور ایک تیسری لکھاواٹ میں بدل جائیں گی، اور وہ اپنی ہندوستانیہت لے لے ہوگی، اس لئے اور صرف اسی لئے لکھاواٹ ہماری آنکھوں پر نہیں چڑھتی. دس برس کی دیکھوں سے ہم کیوں گھبراہٹیں ہی وہی ہو کہ ہم دونوں لکھاواٹ پر زور دیتے ہیں. کسی ایک ہی کو اپنا کر ہم اس میں جس جگہ ہم ضروری بدلاؤ نہ کر

سکریں گے، وہ ہمیں بائیس لگے گی، ہم آگے نہ باندھ سکیں گے۔
 یہ خیال تو داع سے نکال ہی دینا چاہیے کہ ہندوستانی بولی
 اللہ دونوں کھلاؤں کے جاری رکھنے میں ہم کسی سے ڈر و بے
 رہے ہیں کسی کی منت سماجت کر رہے ہیں۔

ہماری راہ —
 آگست ۱۹۲۷ء

گاندھی جی اور امرتسری بولکلہ مرٹ —

انار اس وقت ملک بھارتی پر رتھی ڈرے گولامی کی سیتل کو
 جان کی باجی لگنا کر کونے کی کوشیلا میں ن لگنا ڈرنا ہوتا تو
 ہم امرتسر میں گاندھی جی کو کالے ہڈے دیکھنے کی بات کو ہتلا
 میں ن سہمہنتے جیتنا ان کے ہاتھ میں ایک پھانس لگ جانے کو۔ آج ہم
 ہم اس ن کھڑ بات کے لیے کھڑ ن کھڑ لیکھنے کے لیے کھڑ
 ہیں کہ کونے کی کھڑ بات کا کھڑ ہوتے ہوتے کھڑ ہوتے کھڑ
 ہوتے کھڑ ہوتے کھڑ ہوتے کھڑ ہوتے کھڑ ہوتے کھڑ ہوتے کھڑ ہوتے

ہو رہا ہے ہاتھ سے ہاتھ تک جیس گاندھی نے ہیندو دھرم کے
 آہیتا اور سہتارڈ کی بے پناہ پر اپنے ہتھیاروں کو کھڑ
 کر کے اپنے ہتھیاروں سے ہیندو دھرم کو اپنے ہتھیاروں سے
 کی کوشیلا میں ہیندو دھرم کے ہاتھ لگنا دیکھنے کے لیے ہیندو
 دھرم کھڑ ہونے کے لیے کھڑ ہونے کے لیے کھڑ ہونے کے لیے
 ان کے ہتھیاروں اور کھڑ کو ن کھڑ ہونے کے لیے کھڑ ہونے کے لیے
 ہتھ میں کھڑ ہونے کے لیے کھڑ ہونے کے لیے کھڑ ہونے کے لیے
 ہتھ میں کھڑ ہونے کے لیے کھڑ ہونے کے لیے کھڑ ہونے کے لیے

ہم جانتے ہیں گاندھی جی کہ ہتھ سے ہتھ ہتھ سے ہتھ
 ہتھ سے ہتھ ہتھ سے ہتھ ہتھ سے ہتھ ہتھ سے ہتھ ہتھ سے ہتھ

گاندھی جی اور امرتسری بولکلہ مرٹ —
 اگر اس وقت ملک بھارتی پر رتھی ڈرے گولامی کی سیتل کو
 جان کی باجی لگنا کر کونے کی کوشیلا میں ن لگنا ڈرنا ہوتا تو
 ہم امرتسر میں گاندھی جی کو کالے ہڈے دیکھنے کی بات کو ہتلا
 میں ن سہمہنتے جیتنا ان کے ہاتھ میں ایک پھانس لگ جانے کو۔ آج ہم
 ہم اس ن کھڑ بات کے لیے کھڑ ہونے کے لیے کھڑ ہونے کے لیے
 ہیں کہ کونے کی کھڑ بات کا کھڑ ہوتے ہوتے کھڑ ہوتے کھڑ
 ہوتے کھڑ ہوتے کھڑ ہوتے کھڑ ہوتے کھڑ ہوتے کھڑ ہوتے کھڑ ہوتے

کے دن پر اس تمامرو کا شایہ کھڑا بھی اسیار نہ ہوا ہونا کچھ
اپنی آنکھوں ان پر کسی بار اس سے زیادہ زور کے طار ہوتے
ہوئے دیکھتے ہیں اور ان میں سے آنکھیں نکلتے ہوئے بھی
دیکھتے ہیں۔ ہم جانتے ہیں کہ وہ اپنی اس طرح سے ہیں، کھڑے
کھڑے ہونے پر ابھی ان کا من ایک پھین میں پھیر جیوں کا
توں ہو جاتا ہے۔ ہم جانتے ہیں کہ وہ اسپرنگ کی طرح کھڑے
ہوئے بیٹھے رہتے ہیں۔ آنکھیں سیدھا کرنے کے لئے کئی آنکھوں
کا بنی چاہئے اور پھر چھوٹے تو پھر کھڑے بیٹھے جاتے ہیں۔ انہیں
طریق یا حالتوں کی مزاحمت نہیں، پھر ہم کس کھیت کی مولی
ہے ہیں کہ ہم ان کی حمایت میں کچھ لکھیں۔

ہمیں تو توڑس آتا ہے ان جھنڈے دکھاتے دلائل پر کہ وہ
سوچیں کہ وہ کیا کرگزرے ہیں اور کس کے لئے کرگزرے ہیں
کس لئے کرگزرے ہیں اور کس کے لئے کرگزرے ہیں۔ کوئی
آنکھیں آج اُس کے لئے اللہ ان کے بیٹھے ہوتے اللہ نہ جانتے کوئی
انکی سنتا نہیں ان کے لئے پر اپنی گردنیں جھکا لیں گی۔
پچھلے ان دین

—بگوان دین

آگست ۱۸۷۰

بگوان دین

بگوان دین

کے دن پر اس تمامرو کا شایہ کھڑا بھی اسیار نہ ہوا ہونا کچھ
اپنی آنکھوں ان پر کسی بار اس سے زیادہ زور کے طار ہوتے
ہوئے دیکھتے ہیں اور ان میں سے آنکھیں نکلتے ہوئے بھی
دیکھتے ہیں۔ ہم جانتے ہیں کہ وہ اپنی اس طرح سے ہیں، کھڑے
کھڑے ہونے پر ابھی ان کا من ایک پھین میں پھیر جیوں کا
توں ہو جاتا ہے۔ ہم جانتے ہیں کہ وہ اسپرنگ کی طرح کھڑے
ہوئے بیٹھے رہتے ہیں۔ آنکھیں سیدھا کرنے کے لئے کئی آنکھوں
کا بنی چاہئے اور پھر چھوٹے تو پھر کھڑے بیٹھے جاتے ہیں۔ انہیں
طریق یا حالتوں کی مزاحمت نہیں، پھر ہم کس کھیت کی مولی
ہے ہیں کہ ہم ان کی حمایت میں کچھ لکھیں۔

—بگوان دین

لیکھ کر—پڑھتے سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے مصنفوں کی ایک فہرست دی گئی ہے اور سب مصنفوں کی کتابوں سے حوالے دیے گئے ہیں۔ اس فہرست میں ان کے نام اور اس وقت کی حالت کے بارے میں بتایا گیا ہے۔

اس کے بعد دنیا کے لکھے جانے والے تمام بڑے بڑے مصنفوں کی فہرست دی گئی ہے اور ان کے نام اور اس وقت کی حالت کے بارے میں بتایا گیا ہے۔

آخر میں قرآن سے پہلے عرب کی حالت، قرآن کے بڑے بڑے مصنف اور ان کے نام اور اس وقت کی حالت کے بارے میں بتایا گیا ہے۔

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے مصنفوں کی ایک فہرست دی گئی ہے اور سب مصنفوں کی کتابوں سے حوالے دیے گئے ہیں۔ اس فہرست میں ان کے نام اور اس وقت کی حالت کے بارے میں بتایا گیا ہے۔

میں نے "نیا ہند" کا نام دیا ہے۔

لیکھ کر - پنڈت سنندھ لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے مصنفوں کی ایک فہرست دی گئی ہے اور سب مصنفوں کی کتابوں سے حوالے دیے گئے ہیں۔ اس فہرست میں ان کے نام اور اس وقت کی حالت کے بارے میں بتایا گیا ہے۔

اس کے بعد دنیا کے لکھے جانے والے تمام بڑے بڑے مصنفوں کی فہرست دی گئی ہے اور ان کے نام اور اس وقت کی حالت کے بارے میں بتایا گیا ہے۔

آخر میں قرآن سے پہلے عرب کی حالت، قرآن کے بڑے بڑے مصنف اور ان کے نام اور اس وقت کی حالت کے بارے میں بتایا گیا ہے۔

میں نے "نیا ہند" کا نام دیا ہے۔



الحمد لله

الحمد لله



نیا ہند

جلد ۳

سینہ ماہ ۱۹۷۵

نمبر ۳

جات آبادی، پرم ذمہ ہے، ہندوستانی بولی،
 'نیا ہند' پڑھنے کا طریقہ، لیتے پرم کی بولی.

“سپن پوجا”

[اکرم صاحب، پٹنہ “ہما،” لکھنؤ]

بوں سے لک کر دو آوازوں — جملوں سے کسی کے پھلے کے
 آوازوں میں جملوں کو لکھنے کی — دھرتی کو لکھنے کی آوازوں
 اکرم صاحب، پٹنہ، “ہما،” لکھنؤ
 جملوں سے لکھ کر دو آوازوں — جملوں سے کسی کے پھلے کے
 آوازوں میں جملوں کو لکھنے کی — دھرتی کو لکھنے کی آوازوں
 اکرم صاحب، پٹنہ، “ہما،” لکھنؤ

پھر کی نیاری مورت نے—دے کا رپ کیا یارن،
 بھ بولیا پوجاری کا پ بڑا—آزاد لے لگا ہندو کے لئے مانت.



جات آبادی، پرم ذمہ ہے، ہندوستانی بولی،
 'نیا ہند' پڑھنے کا طریقہ، لیتے پرم کی بولی.

“سپن پوجا”

[اکرم صاحب، پٹنہ “ہما،” لکھنؤ]

بوں سے لکھ کر دو آوازوں — جملوں سے کسی کے پھلے کے
 آوازوں میں جملوں کو لکھنے کی — دھرتی کو لکھنے کی آوازوں
 اکرم صاحب، پٹنہ، “ہما،” لکھنؤ
 جملوں سے لکھ کر دو آوازوں — جملوں سے کسی کے پھلے کے
 آوازوں میں جملوں کو لکھنے کی — دھرتی کو لکھنے کی آوازوں
 اکرم صاحب، پٹنہ، “ہما،” لکھنؤ

پھر کی نیاری مورت نے—دے کا رپ کیا یارن،
 بھ بولیا پوجاری کا پ بڑا—آزاد لے لگا ہندو کے لئے مانت.

مسلکے کے کہا ہے دوی نے — آیری شرن او مٹھارے .
آیریے بھاری میرے لے — نو جیوں دیپ جلا پیارے .

میں تیرے پریم کی مٹوالی — تو میرے پریم کا مٹوالا .
جرا پریم امرا تیرا روپ امر — میرے مندر کا تو اچھا .

بتلائیے اور میرے پریمی — کیوں نینوں سے پھلائے موتی .
یلا : بھاری بے کل اور — من اسے میرے جیوں کی جیتی .
تیرے درشن کی تھی پیاس بجھے — تھی جیوں بھرتے اس تھے .
آج آک بار بولے دوی میری — کول جرنل سے پس بجھے .

سُن کر نہتی : بھاری کی — دوی بھی تروت کر بول اٹھی .
آ آج بھاری بن کے تیری — میں خود اب تجھ کو پوچھوں گی .
اور بھر وہ بھاری کے جرنل میں — جب ٹھکے تھی تب شاکر .
آن سکر خود پریم بھاری — دوی نے جرنل میں آکر .
پریم اُٹھی من خوش ہوکر — جسے ہو خراب جیوں پایا .
پریم سے کول حسب رونوں کو — وہ نیر نین میں بھر لایا .
اور دیکھتے دیکھتے دوی بھر — پتھر کی مورت بن بیٹھی .
وہ سندھ سین لوٹ گئی — اور گھس گئی آنکھ بھاری کی .
پھر اس کی بھینگی لکول میں — دو تیر اٹھ کر مختصر حارے .
ملاش میں بجلی کو گندہ گئی — دھون کو سو سو بل آئے .

موسکوں کے کھلا بھد دےوا نے—آا میرا شرنن آا متبارة .
آا میرے پوجاری میرے لیتے—ناب جیونن دیپ جلا پیارے .

میں تیرے پریم کو متبالا—تو میرے پریم کا متبالا .
تیرا پریم آمار، تیرا روپ آمار—میرے مندر کا تو جیوالا .

بالتلا مٹکے آا میرے پریموں—آیا نینوں سے تپکاٹ موی .
بوالا بھد پوجاری بکول ہے—سُن ہے میرے جیونن کی جیوتی .

تیرے درشنن کی ریا پراس مٹکے—یا جیونن مر سے آراس مٹکے .
اگر بار بولا تے دےوا میرے—کومالل چرنوں کے پاس مٹکے .

سُن کر جینتی بھد پوجاری کی—دےوا بھی تڑپ کر بول اٹھی .
آا آج پوجارین بون کے تیرے—میں بھد آبب توم کو پوجائی .

آریر کیر بھد پوجاری کے چرنوں میں—جب مٹکے لگائی تب شرنن ماکر .
آجائ گیارا بھد پریم پوجاری—دےوا کے چرنوں میں آاکر .

آریر مٹم اٹھا من بھرا بھوکر—آسے ہے نیا جیونن پایا .
بوم کے کومالل چرنوں کو—بھد نیر نینن میں مر لایا .

آریر دےواتے دےواتے دےوا کیر—پتھر کی مورت بن بیٹھی .
بھد سندر سونا ٹوٹ گیا—آریر بھول گئے آراجن پوجاری کی .
کیر اوسکی بھائی پلکوں میں—دو نر نلک کر دےوا .

آکاٹھا میں جیوالی کویں گئے—دےوا کی ساری ساری بول آاٹھا .

ہندی کا پہلا مسلمان کবি

آنند پور ہمان

(باری یادو بکھنن آنند پور)

آنند پور ہندی اور مسلمانوں کے بیچ کی کہانی پڑھتی جا رہی ہو اور اسے پڑھنے میں خیروں کے ساتھ ساتھ ملک والوں کا بھی ہاتھ آج ایسا معلوم ہوتا ہے اور انوں ہم سدا ایک دوسرے کے دشمن رہے، لیکن تاریخ ہم بات کی گواہ ہے کہ ہم دونوں ہندو اور مسلمان اس ملک میں بیک وقت کی طرح سکھایوں برس سے رہتے آئے ہیں۔ ہم دونوں کی لڑائی میں ایک ہی پیکھول کا تخت ہے۔ مذہب کے جُلا ہوتے آئے بھی پہلا ملک ایک رام ہے، اس کی بھاشا اس کے ساتھ ہے۔ آج اس کی کلا کو ہندوؤں نے مسلمانوں نے ساتھ ل کر بنایا اور بڑھایا ہے۔ ہندی اردو کا بھگوان اس دیش میں بنے والے عام ہندوؤں اور مسلمانوں کا بھگوان نہیں ہے۔ آج کی کھڑی بولی کو بنانے اور ترقی دینے میں مسلمان کویں کا بڑا ہاتھ رام ہے۔

ہمیں بھولنا نہیں چاہیے اس وقت جب کہ ہندی کا سہارا ہے اس وقت میں ہی تھا جب کہ ہندی کی کوئی شروع ہی ہوئی تھی بلکہ آج کل کی کھڑی بولی ہندی کا ابھی یہ روپ بھی نہیں بنا تھا اسلئے کوئی سرہانے نے ۱۹۰۰ء عیسوی میں جب پہلا مسلمان کبی آواز اٹھائی تھی جس سے آج ہندی پہلے (۱۹۱۲ء عیسوی میں) سلطان اور سندھ پڑھنا شروع

(۱۰)

ہندی کا پہلا مسلمان کوی

بھائی گیتے دکتیہ اجیری

آج ہندوؤں اور مسلمانوں کے بیچ کی کہانی پڑھتی جا رہی ہو اور اسے پڑھنے میں خیروں کے ساتھ ساتھ ملک والوں کا بھی ہاتھ آج ایسا معلوم ہوتا ہے اور انوں ہم سدا ایک دوسرے کے دشمن رہے، لیکن دونوں ہندو اور مسلمان اس ملک میں بیک وقت کی طرح سکھایوں برس سے رہتے آئے ہیں۔ ہم دونوں کی لڑائی میں ایک ہی پیکھول کا تخت ہے۔ مذہب کے جُلا ہوتے آئے بھی پہلا ملک ایک رام ہے، اس کی بھاشا اس کے ساتھ ہے۔ آج اس کی کلا کو ہندوؤں نے مسلمانوں نے ساتھ ل کر بنایا اور بڑھایا ہے۔ ہندی اردو کا بھگوان اس دیش میں بنے والے عام ہندوؤں اور مسلمانوں کا بھگوان نہیں ہے۔ آج کی کھڑی بولی کو بنانے اور ترقی دینے میں مسلمان کویں کا بڑا ہاتھ رام ہے۔

ہمیں بھولنا نہیں چاہیے اس وقت جب کہ ہندی کا سہارا ہے اس وقت میں ہی تھا جب کہ ہندی کی کوئی شروع ہی ہوئی تھی بلکہ آج کل کی کھڑی بولی ہندی کا ابھی یہ روپ بھی نہیں بنا تھا اسلئے کوئی سرہانے نے ۱۹۰۰ء عیسوی میں جب پہلا مسلمان کبی آواز اٹھائی تھی جس سے آج ہندی پہلے (۱۹۱۲ء عیسوی میں) سلطان اور سندھ پڑھنا شروع

لا قبضہ ہو چکا تھا۔ ان دنوں ہندوستان اپنی دولت کے لئے دنیا میں مشہور تھا۔ باہر والے اسے سونے کی چڑیا سمجھتے تھے۔ یہاں کے جسے ایک کپڑے 'دُنيا' کے ابرو اٹھل کے من بھاتے تھے۔ ہندوستان میں کپڑوں کی تجارت سے بے شمار دولت آتی تھی۔ ایک لاکھ سے ہی ہر سال پونے دو کروڑ روپیہ اس ملک میں اسی کپڑے کی بیوات آتا تھا۔ لیکن کپڑے کے کاریگروں کا یہاں کیا حال تھا؟ ہندو سماج میں ان کی شہرت نہ تھی۔ وہ سچ سمجھے جاتے تھے۔ وہ اسی کیوں اچھے کی کاریگری سے زندگی بسر کرنے والی تمام جاہلیاں یہاں سچ سمجھی جاتی تھیں۔ اسی طرح اسے کاٹھیک لیا جاتا تھا۔ ہندوؤں نے بڑی سختی سے انہیں لاریوں اور ٹرکوں کے ایکڑتے تھے۔ ان پر آٹوں، چھتر پوں اور بیوں کے علاوہ سب سچ سمجھے جاتے تھے۔ ملک کے کروڑوں باشندوں کی عورت جان مال پر ہندوؤں اور لڑکیوں کا جبر تھا جو ان باجیلوں کو اپنے ساتھ بٹھا کر کھانا تو نظر نہ آیا، ایک لاکھ میں کھڑے ہو کر مرنے کا حق بھی دینے کو تیار نہ تھے۔ اس لئے ان قوموں کے دلوں میں اتنا ہی اتنا ایک استغوش اور بناوٹ آئی رہی تھی۔ اپنے وقت میں اسلام کا اس دیش میں آنا ان کے لئے زمینی کا سندیش تھا۔ تب کا اسلام سماج کے اسلام سے زیادہ کڑی لاری تھا۔ اس کا سب سے زبردست کھچاؤ بھائی جیالہ چھپوت بھات کا نہ رہا۔ یہی وجہ تھی کہ کپڑے بننے والوں کے دل اسلام کے بھونچنے کے سچھے نہ آئے۔ ان کپڑے بننے والے پرکاروں میں ہی کبیر اور عبدالرحمان اپنے ہی پیدا ہوئے۔ مسلم آواز آو شروع زمانے سے اسی کپڑا بننے

نیا ہندو ہندی کا پہلا مسلمان کاتبیت سن ۱۸۷۹

دھڑکتا ہوا چوکا تھا۔ ان دنوں ہندوستان اپنی دولت کے لیے دنیا میں مشہور تھا۔ باہر والے اسے سونے کی چڑیا سمجھتے تھے۔ یہاں کے جسے ایک کپڑے 'دُنيا' کے ابرو اٹھل کے من بھاتے تھے۔ ہندوستان میں کپڑوں کی تجارت سے بے شمار دولت آتی تھی۔ ایک لاکھ سے ہی ہر سال پونے دو کروڑ روپیہ اس ملک میں اسی کپڑے کی بیوات آتا تھا۔ لیکن کپڑے کے کاریگروں کا یہاں کیا حال تھا؟ ہندو سماج میں ان کی شہرت نہ تھی۔ وہ سچ سمجھے جاتے تھے۔ وہ اسی کیوں اچھے کی کاریگری سے زندگی بسر کرنے والی تمام جاہلیاں یہاں سچ سمجھی جاتی تھیں۔ اسی طرح اسے کاٹھیک لیا جاتا تھا۔ ہندوؤں نے بڑی سختی سے انہیں لاریوں اور ٹرکوں کے ایکڑتے تھے۔ ان پر آٹوں، چھتر پوں اور بیوں کے علاوہ سب سچ سمجھے جاتے تھے۔ ملک کے کروڑوں باشندوں کی عورت جان مال پر ہندوؤں اور لڑکیوں کا جبر تھا جو ان باجیلوں کو اپنے ساتھ بٹھا کر کھانا تو نظر نہ آیا، ایک لاکھ میں کھڑے ہو کر مرنے کا حق بھی دینے کو تیار نہ تھے۔ اس لئے ان قوموں کے دلوں میں اتنا ہی اتنا ایک استغوش اور بناوٹ آئی رہی تھی۔ اپنے وقت میں اسلام کا اس دیش میں آنا ان کے لئے زمینی کا سندیش تھا۔ تب کا اسلام سماج کے اسلام سے زیادہ کڑی لاری تھا۔ اس کا سب سے زبردست کھچاؤ بھائی جیالہ چھپوت بھات کا نہ رہا۔ یہی وجہ تھی کہ کپڑے بننے والوں کے دل اسلام کے بھونچنے کے سچھے نہ آئے۔ ان کپڑے بننے والے پٹکاروں میں ہی کبیر اور عبدالرحمان اپنے ہی پیدا ہوئے۔ مسلم آواز آو شروع زمانے سے اسی کپڑا بننے

نیا ہند ہندی کا پہلا مسلمان کاتب سیتا پھر سمر ۲۶

بالیوں کو کھانا کا شوق رکھتا ہے۔ کچھوں میں بھی آگاہ آگاہ

کھانے کے دھانگے سے کوئی ہوش کپڑے نہیں ہوتے۔

جب اس پرانی ہندی کویت کا آغاز ہوا تھا۔ آٹھویں صدی کے

تھے جتنے میں۔ پورے اتریں ہندستان کی بول چال کی ایک ہی بھاشا

تھی۔ "پہلی بھاشا" جس کا دوسرا نام "دہلی بھاشا" ہے۔ معلوم ہوتا ہے کہ

دہلی پندرہویں اور گولیاں نے عام گوئیوں سے اپنی نفرت ظاہر کرنے

کے لئے ہی "دہلی بھاشا" کو "پہلی بھاشا" نام دیا تھا۔ اس کے

معنی ہیں "بہت بڑی ہوئی"۔ وہ اسے سنسکرت سے جب وہ "دیوناگری"

پرانی دیوناگری کی بولی کہتے تھے گویا ہوا سمجھتے تھے۔ آٹھویں صدی سے

پندرہویں صدی تک قریب قریب سب سے آگے ہندستان میں ایک ہی

بولی بولی جاتی تھی۔ تب تک برنگالی، بنگالی، مرہٹی، اڑیسا، برہمن بھاشا،

بنجالی وغیرہ کا جنم نہیں ہوا تھا۔ یہی وہ دور ہے جس وقت گھٹے گھٹے

کوئی لے کر ہیں چاہئے وہ بنگال کے ہوں یا پنجاب کے، تجارت سے

اول یا بہار کے، سب کی بھاشا ایک ہی ہو گئی۔ آج کی ہندی

کو دیکھتے ہیں بہت دور کی چیز معلوم پڑے گی، لیکن آپ کو معلوم ہونا

چاہئے کہ اسی کے پیٹ سے ہندی کا جنم ہوا ہے۔ بیچ کے گولیاں

نے اس کا احسان چھپا کر صرف اپنی کمزوری ہی نہیں دکھلائی بلکہ

ہندی کی بھی بہت بڑی ہانی کی۔ اس نے بیڑا ہی کی وجہ سے کھینچا

اس سے کہ بہت سے لوگ جہین اور لودھ تھے جن سے ہندو

جہنم آ کر برائے بہت تھے۔ پچھ مسلمان تھے یا جنتا کے کوئی مجھیں

برائے لوگ چھین اور بیچ سمجھتے تھے۔ اس لئے انھوں نے ان کی قدر نہیں کی۔

ہندی کا پہلا مسلمان کاتب

والوں کو کھانا کا شوق رکھتا ہے۔ کچھوں میں بھی آگاہ آگاہ

کھانے کے دھانگے سے کوئی ہوش کپڑے نہیں ہوتے۔

جب اس پرانی ہندی کویت کا آغاز ہوا تھا۔ آٹھویں صدی کے

تھے جتنے میں۔ پورے اتریں ہندستان کی بول چال کی ایک ہی بھاشا

تھی۔ "پہلی بھاشا" جس کا دوسرا نام "دہلی بھاشا" ہے۔ معلوم ہوتا ہے کہ

دہلی پندرہویں اور گولیاں نے عام گوئیوں سے اپنی نفرت ظاہر کرنے

کے لئے ہی "دہلی بھاشا" کو "پہلی بھاشا" نام دیا تھا۔ اس کے

معنی ہیں "بہت بڑی ہوئی"۔ وہ اسے سنسکرت سے جب وہ "دیوناگری"

پرانی دیوناگری کی بولی کہتے تھے گویا ہوا سمجھتے تھے۔ آٹھویں صدی سے

پندرہویں صدی تک قریب قریب سب سے آگے ہندستان میں ایک ہی

بولی بولی جاتی تھی۔ تب تک برنگالی، بنگالی، مرہٹی، اڑیسا، برہمن بھاشا،

بنجالی وغیرہ کا جنم نہیں ہوا تھا۔ یہی وہ دور ہے جس وقت گھٹے گھٹے

کوئی لے کر ہیں چاہئے وہ بنگال کے ہوں یا پنجاب کے، تجارت سے

اول یا بہار کے، سب کی بھاشا ایک ہی ہو گئی۔ آج کی ہندی

کو دیکھتے ہیں بہت دور کی چیز معلوم پڑے گی، لیکن آپ کو معلوم ہونا

چاہئے کہ اسی کے پیٹ سے ہندی کا جنم ہوا ہے۔ بیچ کے گولیاں

نے اس کا احسان چھپا کر صرف اپنی کمزوری ہی نہیں دکھلائی بلکہ

ہندی کی بھی بہت بڑی ہانی کی۔ اس نے بیڑا ہی کی وجہ سے کھینچا

اس سے کہ بہت سے لوگ جہین اور لودھ تھے جن سے ہندو

جہنم آ کر برائے بہت تھے۔ پچھ مسلمان تھے یا جنتا کے کوئی مجھیں

برائے لوگ چھین اور بیچ سمجھتے تھے۔ اس لئے انھوں نے ان کی قدر نہیں کی۔

۲۶

کیتانا اچر راج ہوتا ہے یہ دیکھ کر کہ عبدالرحمان (سنہ ۱۷۹۰ سے لے کر ۱۷۹۳) تک کسی مسلمان کوئی جتنا نہیں ملتی۔ اس کی وجہ یہ تھی کہ مسلمان ہونے کے ناطے انھیں ہندو ساتھیوں کے پستکالیوں میں جگہ نہیں ملی اور اسی وجہ سے مسلمان بادشاہوں نے بھی اپنے کتاب گھروں میں انھیں جگہ نہ دی۔ پھر جتنا کے نقطہ سے آہستہ سے کب تک وہ زندہ رہ سکتی تھی۔ کوی عبدالرحمان کا جنم سلطان میں سنہ ۱۷۹۰ میں ایک جواما گھرانے میں ہوا تھا۔ ان کے پیتا کا نام میر حسین تھا۔ انھوں نے اپنی

(۲۰) آپنا حال اس तरह بتایا ہے—

تھ دیکھا۔ سنہ ۱۷۹۰ میں میر حسین

تھ تعلقاً کول کاملو پائے کویلیو دیکھو

ان کی بتائی ایک کتاب، سنیہ لاسیہ (سنہ ۱۷۹۰) ایک

میں پستکالی کی ہم بانی سے ملی ہو۔ اس کا پتھ حصہ یہاں

پستکالیوں میں سیکھتے ہیں۔ اپنی دہندی کا وہ حصہ لاسیہ

ہو۔ کوی عبدالرحمان پریم اور بہرا (ہجرا) کے کوئی تھے۔ ان کی

پوری خوب بنی ہوئی اور شہدوں کا بیٹا بہت نشتہ ہو۔ انھوں

نے اپنی کتاب اپنے سے بیچنے سے پہلے ہی ان کی کتاب

کے ایک لکیر ہو اور ناچکا (دیر دین) کوئی لایا یا لایا کسی نہیں

ہیں۔ نہ کالی پاس کے کیش کی طرح کوئی دیوتا ہی ہیں۔ وہ ایک

سوال پوچھائی ہو جو ترمودار کے سلسلے میں شان سے سمجھات جاتا ہو۔ اسے

کے ہونے ایک لب عرصہ بہت گیا ہو۔ گھر پر اس کی

کیتانا اچر راج ہوتا ہے یہ دیکھ کر کہ عبدالرحمان (سنہ ۱۷۹۰ سے لے کر ۱۷۹۳) تک کسی مسلمان کوئی جتنا نہیں ملتی۔ اس کی وجہ یہ تھی کہ مسلمان ہونے کے ناطے انھیں ہندو ساتھیوں کے پستکالیوں میں جگہ نہیں ملی اور اسی وجہ سے مسلمان بادشاہوں نے بھی اپنے کتاب گھروں میں انھیں جگہ نہ دی۔ پھر جتنا کے نقطہ سے آہستہ سے کب تک وہ زندہ رہ سکتی تھی۔ کوی عبدالرحمان کا جنم سلطان میں سنہ ۱۷۹۰ میں ایک جواما گھرانے میں ہوا تھا۔ ان کے پیتا کا نام میر حسین تھا۔ انھوں نے اپنی

(۲۱) آپنا حال اس तरह بتایا ہے—
تھ دیکھا۔ سنہ ۱۷۹۰ میں میر حسین
تھ تعلقاً کول کاملو پائے کویلیو دیکھو
ان کی بتائی ایک کتاب، سنیہ لاسیہ (سنہ ۱۷۹۰) ایک
میں پستکالی کی ہم بانی سے ملی ہو۔ اس کا پتھ حصہ یہاں
پستکالیوں میں سیکھتے ہیں۔ اپنی دہندی کا وہ حصہ لاسیہ
ہو۔ کوی عبدالرحمان پریم اور بہرا (ہجرا) کے کوئی تھے۔ ان کی
پوری خوب بنی ہوئی اور شہدوں کا بیٹا بہت نشتہ ہو۔ انھوں
نے اپنی کتاب اپنے سے بیچنے سے پہلے ہی ان کی کتاب
کے ایک لکیر ہو اور ناچکا (دیر دین) کوئی لایا یا لایا کسی نہیں
ہیں۔ نہ کالی پاس کے کیش کی طرح کوئی دیوتا ہی ہیں۔ وہ ایک
سوال پوچھائی ہو جو ترمودار کے سلسلے میں شان سے سمجھات جاتا ہو۔ اسے
کے ہونے ایک لب عرصہ بہت گیا ہو۔ گھر پر اس کی

नया हिन्दू हिन्दी का पहला मुसलमान कवि सितम्बर सन् '५७
 नौजवान पत्नी है जिसके विरह का बयान कवि ने किया है. नीचे
 हम उसके कुछ हिस्से देते हैं. नायिका की तसवीर मुलाहिजा
 फरमाइये—

धूमिलज उ मुक्क मुह विज्जंभइ अरु अंग मोइइ ।

विरहानल संतविय ससइ दीह कर साह तोइइ ॥

बिखर हुए बाल मुह पर छिटके हैं, जंभाई ले रही है और
 अंगड़ाई तोड़ रही है, विरह की आग से जल रही है, लम्बे सांस
 ले रहीं हैं और हाथों की उंगलियां चटला रही है.

एक मुसाफिर को देख कर उसे कुछ कहने के लिये जब वह
 चलती है तब उसकी क्या हालत होती है, देखिये—

तथा मनहर चलन्ती चंचल रमणभरी

छुटी खिसकि रसनावलि किंकिणि रवपसरी

हलना ही नहीं कि करधनी टूट कर गिर पड़ी बस बाल खतम
 हो गई. करधनी के जमोल पर से उठाने ही मोती का हार टूट
 कर खिसक पड़ा. उसके कुछ दाने चुने थे कि तब तक पात्रोब पैर
 से निकल भागी. मोती सड़क पर बिखर ही रह गए. उन्हें छोड़
 कर जब पात्रोबों को उठाने लपको कि सिर से ओढ़नी खिसक पड़ी,
 फिर उसे ठोक कर वह चलती—उसकी बेपरवाही का यह
 हाल था—

“कुरती फटी हुई थी, जहां तहां छेद हो रहे थे. और उसकी
 छातियां भलक रही थीं. उनको शरमाकर अपने हाथों से वह ढक
 रही थी मानों सोने के बड़ों को कमल से ढांक रही हो.”

मुसाफिर के पास पहुंच कर भराई हुई आवाज में बोली—

سپهر آسمانی

بندی کا پہلا مسلمان کوی
 نوجوان پتی او جس کے پرہ کا بیان کوی نے کیا ہے۔
 کے کچھ حصے دیتے ہیں۔ ناایکا کی تصویر ملاحظہ فرمائیے—

وہلوی صکت منہ وہم بھوی
 اللہ ایک موٹھی
 بر امل سنو یہ سستی وہی کہ ساہ آٹھی

بکھرت ہوئے بال مستہ بیٹھتے ہیں، جمبھائے دی
 وہ لڑھائی توڑ رہی ہو، برہ کی آگ سے جل رہی ہو، بے سانس
 لے رہی ہو اور انھوں کی انگلیاں چٹھا رہی ہو.
 ایک سا فرودیکھ کر اسے کچھ کہنے کے لئے جب وہ چلتی ہو
 تب اس کی باحالت ہوتی ہو، دیکھیے—

تھیلا سن چلتی چٹیل رہن بھوی
 پھوٹی کھسک رہتا رہی کن کو کھسک
 اتنا ہی نہیں کہ کر وہ سنی ٹوٹ کر پڑی نہیں بات ختم ہوگئی

کر وہ سنی کے زین پر سے اٹھائے ہی موق کا لہ ٹوٹ کر کھسک
 پڑا. اس کے کچھ ٹانے ٹپنے لگے کہ جب تک پائیزب سیر سے
 محل بجائی. موق ٹوٹ کر بے کھسک ہی رہ گئے. انھیں چھوڑ کر
 جب پائیزبول کو اٹھانے پہلی کر سر سے اور سنی کھسک پڑی
 پیر اسے کھٹیک کر وہ جوں دی—اس کی بے برہائی کا یہ حال تھا—
 “گوری چھٹی ہوئی تھی، اتنا ہی اتنا ہی تھیں اور اس کی چھاتیاں
 جھلک رہی تھیں. ان کو شرم کر اپنے ہاتھوں سے وہ ڈھک رہی
 تھی. اقل سونے کے کھڑوں کو کوزل سے ڈھانک رہی ہو.”
 سا فر کے پاس پہنچ کر بھڑائی ہوئی آواز میں بولی—

को चली जाती तो यह अच्छा न होता क्यों कि तुम मेरे मन में बैठे हो.

"कन्य ! तुम्हारे मन में रहते हुए मैं विरह से हार नहीं मान सकती क्यों कि मरने से बड़ कर हार जाने का दुख है.

"इतनी बड़ी हार कैसे सहती जाय—तुम्हारा हीसला कहाँ गया ?

जिस तन से तुम खेलते । ये उसे अब विरह जला रहा है.

"विरह ने निर्दयी हो कर देह पर चोट की है पर मैंने तुम्हारी इज्जत का खयाल करके दिल नहीं टूटने दिया.

"अब विरह मुझसे नहीं सहा जाता, इस लिये विलाप कर रही हूँ. रूप को गवाह मान कर आप मेरी रक्षा करें....."

"कहने को तो बहुत कुछ है पर मुझसे कहा नहीं जाता. कंठ डंगली में जो आने वाली अंगूठी थी अब वह बाँह में आती है."

हर है दुबलेपन की ! तेज खत्म होगया, बाल विखर गए, कंचन सी मैं काली पड़ गई.

"हे निशाचर ! (दरिन्दे) मैं तेरे विरह में निशाचरी बन गई. "

"मुसाफिर ! कहाँ भी तो क्या कहूँ ? जिसने मुझे विरह के कुहर में लाकर छोड़ दिया है, जिस धन के लोभों निरमोही ने मुझे अकेला छोड़ दिया है, मैं उसे क्या संदेसा भेजूँ ?"

यह सब कहते कहते नायिका छिन भर के लिए पत्थर की मूरत की तरह चुप खड़ी रहती है. मुसाफिर के तसल्ली देने पर शरमा कर आँसू पोछती हुई बोली—

"खोल खोल कर कह नहीं सकती, कामके धानों (शहवत के देवता के तीरों) से विधी है—यह मेरी अबस्था तु देख ही रहे हो, कंथ से कह देना." इस तरह संदेसा भी देती जाती थी और संदेसा न देने की बात

2

की चली जाती तो यह अच्छा न होता क्यों कि तुम मेरे मन में बैठे हो.

"कन्य ! तुम्हारे मन में रहते हुए मैं विरह से हार नहीं मान सकती क्यों कि मरने से बड़ कर हार जाने का दुख है.

"इतनी बड़ी हार कैसे सहती जाय—तुम्हारा हीसला कहाँ गया ?

जिस तन से तुम खेलते । ये उसे अब विरह जला रहा है.

"विरह ने निर्दयी हो कर देह पर चोट की है पर मैंने तुम्हारी इज्जत का खयाल करके दिल नहीं टूटने दिया.

"अब विरह मुझसे नहीं सहा जाता, इस लिये विलाप कर रही हूँ. रूप को गवाह मान कर आप मेरी रक्षा करें....."

"कहने को तो बहुत कुछ है पर मुझसे कहा नहीं जाता. कंठ डंगली में जो आने वाली अंगूठी थी अब वह बाँह में आती है."

हर है दुबलेपन की ! तेज खत्म होगया, बाल विखर गए, कंचन सी मैं काली पड़ गई.

"हे निशाचर ! (दरिन्दे) मैं तेरे विरह में निशाचरी बन गई. "

"मुसाफिर ! कहाँ भी तो क्या कहूँ ? जिसने मुझे विरह के कुहर में लाकर छोड़ दिया है, जिस धन के लोभों निरमोही ने मुझे अकेला छोड़ दिया है, मैं उसे क्या संदेसा भेजूँ ?"

यह सब कहते कहते नायिका छिन भर के लिए पत्थर की मूरत की तरह चुप खड़ी रहती है. मुसाफिर के तसल्ली देने पर शरमा कर आँसू पोछती हुई बोली—

"खोल खोल कर कह नहीं सकती, कामके धानों (शहवत के देवता के तीरों) से विधी है—यह मेरी अबस्था तु देख ही रहे हो, कंथ से कह देना." इस तरह संदेसा भी देती जाती थी और संदेसा न देने की बात

2

بھی کہتی جاتی تھی۔ سازنے نے کہا — سنندھی! لو کہ میرا اظہار نہ کر۔
ان آہستوں کو لو کہ لو۔ سنندھی نے کہا — "سازنہ تم جاؤ تمھارا لام
سہہ ہوگا۔ میں وہ نہیں رہی، برہ کی آگ کا ڈھواں آگھوں سے
نکل رہا ہوں۔ سازنہ کو اب اس کی باتوں میں رس آ رہا تھا۔ اس
نے ناپایکا سے پوچھا — کب سے تم نے برہ کی آگ کے اس
ڈھوئیں کو ڈھانپ رکھا تھا؟ اس نے ہم نے برہ کی آگ کے اس
بہشت تک کی اپنی حالت بیان کر دی۔

"جب نائنہ گھٹ پر گئی آگ تھی، بد مکھ بری مٹی میں
رہا تھا۔" لیکن ان کے چلے جانے کے بعد —

"کھینکر لیٹیوں نے چلانا شروع کر دیا، سورج کی کرنوں سے
گرہیں پر چلنے سے چل کر لاکھ ہو گئے۔ آسمان کے نیچے جو
گرم چھوٹی ہیں رہنے لگیں، ان کو چھوٹے ہی جلا رہتے تھے۔
پتھروں سے لے جو جھلک لاپیپ کر رہی تھی وہ اذیر ہی لڑکے جاتا تھا۔"
اس طرح دیوؤں کے جسم کو جلا کر گری نے چلے جانے کے

بعد — "برسات آئی، پہ پہ پتھر نہ لہے۔ چٹانوں کو گھونٹا گھونٹا
چھا گیا، آسمان میں غنٹے لے باطل گریخ رہے تھے۔ بجلی ایک
رہی تھی۔ سینڈکوں کا ٹوٹنا من نہیں جاتا تھا۔ سر پر بیٹھی کول
جاتی تھی اس کا مسر میں کیسے سمی؟ اسی رات! آج جو کچھ
میرے دل میں کہنے لاتی ہو وہ سینوں کو لوں میں نہیں جاتا، کوکھ
میں نہ چھٹی ہو جاتی ہو اور شکھ میں چھینچ جاتی ہو۔ اس طرح
دوڑے دوڑے گیت گاتے پلاکت پڑھتے برسات کے دن بھی بیت گئے ہیں ان کے

ہاں کہتی جاتی تھی۔ مساکیر نے کہا — "سندھی! راکر مہرا
آراگنن نہ کرے — دن آراں سواں کو راک لو۔ سندھی نے کہا —
"مساکیر! تو جانا تو ہرا کام سیدھ ہوگا۔ میں رو نہ رہی،
بیرھ کی آرا کا پھرا آراں سے نیکل رہا ہے"۔ مساکیر کو
آراں اسکا آراں میں رس آ رہا تھا۔ اس نے ناہیکا سے پوچھا — "کب
سے تو مہرے بیرھ کی آرا کے رس پوٹ کو ڈاؤن رہا تھا؟" اس پر
بیرھ نے گراہی سے لاکر بسنت تک کی آراہی ہالاکت بیاہن
کر دی۔

"تو ناہ پرا پر پھہ گراہی آرا رہی تھی، پر سولہ مہری سڈھی میں
رہتا تھا۔" لیکن ان کے چلے جانے کے بعد —

"بیرھ لپڈوں نے جلالا سولہ کر دیا، سورج کی کیرنوں
سے جرمین پر جلال کے تین کے جلال کر رہا ہوگا۔ آراہمان
کے نیچے جو گراہن ہرا سولہ چل رہے تھے پھراں کو کھولتے ہی جلال دیتے
تھے۔ ٹڈک کے لیکر جو چاندن کا لپہ کرنا تھی وہ آراہ ہی سولہ
جاتا تھا۔"

اس तरह بیرھ کے کیرم کو جلال کر گراہی کے چلے جانے کے
بعد — "بیرھ آراہ، پر پواتم نہ آراہ۔ چاروں ترک پرا آراہ
آرا گرا، آراہمان میں سولہ سے چاندن گراہ رہے تھے — بیرھ کی تڈک
رہی تھی۔ مہراں کا ڈراہنا سولہ نہ رہی جاتا تھا — سیر پر بڑی
کول چلال چالکتی تھی اسکا سولہ میں کسے سہرتی؟ آراہی رات! آراہ جو
کول مہرے دیکل سے کھولنے لپاک ہے وہ تینوں لوکوں میں نہ رہی سمانا، کول
میں نہ چوگونی ہو جاتی ہے، آراہ سولہ میں بڑی جاتی ہے۔ اس तरह
رولے پواتے — گیت گاتے پراکول پڑھتے بیرھ کے دین ہاں چوات گا۔ میں ان کے

नया हिन्दू हिन्दी का पहला मुसलमान कवि सितम्बर सन् 1890

आने की बात में दक्खिन की तरफ देखती रही कि अगस्त्य ऋषि (एक तारे का नाम) को देखा"—तब मुझे पता चला "बरसात बोल गई, पर पीतम परदेस में ही रहे लौटे नहीं. आसमान के बादल फट गए. सुन्दर तारे दीखने लगे. पानी इतना निर्मल हो गया कि उसमें अपनी परछाईं भी साफ दीखने लगी. कीचड़ सूख गई, सरदा में कौंच (एक चिड़िया) का शब्द सहा न जाता था. हंस के आने की राह देखते देखते मैं मर रही थी—जगह जगह सुन्दर औरतें सरो-वरों के किनारे अपने प्यारों के साथ घूम रही थी. लिये पुते घर बड़े सुहावने मालूम होते थे. नवेलियों की सेज सुख से सुहानी थी. नए चांद की रेखा हाथ में लिये दिवाली के दिवे चमचमा रहे थे. मैं बड़ी चाह लिये पीतम का पथ निहार रही थी कि पाले से भरा हेमंत (पतझड़) भी आ पहुँचा—

"अब दिन उंगली की बराबर हो गया और रात ब्रह्मा के युग के बराबर लंबी हो गई. हे कन्य! पतझड़ में भी अगस्त्य पर लौट कर न आओगे तो क्या सूख! खल! पापी! मेरे मरने पर आओगे!" पर पीतम न आए.

शिशिर ऋतु (सरदी) का बयान करते हुए लिखा है—

"शिशिर आ पहुँचा. नाथ अब भी दूर थे—आकाश में कजोर खुरक हवा के भन्वड़ चलते लगे. पेड़ों के फूल पत्ते झड़ गए, छाया न रही. पंखियों ने उन्हें छोड़ दिया. दिशाएं अंधेरे से भर गईं. कुहरा छा गया. कुन्द चतुर्थी के त्यौहार में नवेलियां अपने अपने पीतम के साथ सेज पर गईं—ऐसे गय में भी मेरी सेज अकेली थी, मुसाफिर! मैंने पीतम के पास अपने मन को दूर बना कर

न्यास
हैना का पहला सलाम कोरी
सितम्बर 1890

आने की बात में दक्खिन की तरफ देखती रही कि अगस्त्य ऋषि (एक तारे का नाम) को देखा"—तब मुझे पता चला "बरसात बोल गई, पर पीतम परदेस में ही रहे लौटे नहीं. आसमान के बादल फट गए. सुन्दर तारे दीखने लगे. पानी इतना निर्मल हो गया कि उसमें अपनी परछाईं भी साफ दीखने लगी. कीचड़ सूख गई, सरदा में कौंच (एक चिड़िया) का शब्द सहा न जाता था. हंस के आने की राह देखते देखते मैं मर रही थी—जगह जगह सुन्दर औरतें सरो-वरों के किनारे अपने प्यारों के साथ घूम रही थी. लिये पुते घर बड़े सुहावने मालूम होते थे. नवेलियों की सेज सुख से सुहानी थी. नए चांद की रेखा हाथ में लिये दिवाली के दिवे चमचमा रहे थे. मैं बड़ी चाह लिये पीतम का पथ निहार रही थी कि पाले से भरा हेमंत (पतझड़) भी आ पहुँचा—

अब दिन उंगली की बराबर हो गया और रात ब्रह्मा के युग के बराबर लंबी हो गई. हे कन्य! पतझड़ में भी अगस्त्य पर लौट कर न आओगे तो क्या सूख! खल! पापी! मेरे मरने पर आओगे!" पर पीतम न आए.

शिशिर ऋतु (सरदी) का बयान करते हुए लिखा है—

"शिशिर आ पहुँचा. नाथ अब भी दूर थे—आकाश में कजोर खुरक हवा के भन्वड़ चलते लगे. पेड़ों के फूल पत्ते झड़ गए, छाया न रही. पंखियों ने उन्हें छोड़ दिया. दिशाएं अंधेरे से भर गईं. कुहरा छा गया. कुन्द चतुर्थी के त्यौहार में नवेलियां अपने अपने पीतम के साथ सेज पर गईं—ऐसे गय में भी मेरी सेज अकेली थी, मुसाफिर! मैंने पीतम के पास अपने मन को दूर बना कर

नया हिन्द हिन्दी का पहला मुनलमान कवि सितम्बर सन् '४७
 भेजा. पर मन कुछ दृग्मान तो था नहीं, वह लौट कर न आया
 वहाँ जाकर रह गया"—

मैं दिग्दु हृदय ना प्राप्त प्रिय हुई उपमा यहि कहु कवन
 श्रृंगार्य गई गदही (सो पुनि) पेनु हराई निज श्रवन ॥

इसी तरह तन के तिनकों को जला कर शिशिर भी चल वसा.
 मनोहर वसन्त का मौसम आ गया. दक्खिन को दूना बढ़ने
 लगी. वियोगनों के दिल में कामदेव की आगा तेज हो उठी.
 बिना पानी के बादल देह जलाने लगे. कोई श्रव कैसे सह
 सकता था ?

(५४)
 इस तरह वसन्त भी चीत गया. पीतम न आए. इस के बाद नायिका
 ने अपने मन में सोचा कि अब तक न जाने मैं क्या क्या अनाप
 शनाप बकती रही हूँ—उसने मुसाफिर से कहा—“मुसाफिरा ! अगर
 मैंने बिरह के कारन कुछ बेजा कह दिया है तो तुम कठोर बातों
 को मत कहना जो नरमी से भरा हो वही कहना. ऐसी बात कहना
 जिससे पीतम नाराज न हो जाय.”

यह कह कर उसने मुसाफिर को कारन सिद्ध का आशीर्वाद
 दिया और घर की तरफ लौट चली. अभी अपने घर तक पहुंची
 भी न थी कि उसने मार्ग में अपने पीतम को खड़ा पाया—कान्ध की
 कथा यहीं खत्म हो जाती है. आखीर में कवि अपने पाठकों को
 आशीर्वाद देता है—

जिमि अचिन्ह कार्य तासु सिक्केहु छणार्थ महंत
 तैस पदन्त सुनन्तहु, जयतु अनादि अनन्त ॥

नया हिन्द
 हिन्दी का पहला मुनलमान कवि
 सितम्बर सन् '४७

मैं दिग्दु हृदय ना प्राप्त प्रिय हुई उपमा यहि कहु कवन
 श्रृंगार्य गई गदही (सो पुनि) पेनु हराई निज श्रवन ॥

इसी तरह तन के तिनकों को जला कर शिशिर भी चल वसा.
 मनोहर वसन्त का मौसम आ गया. दक्खिन को दूना बढ़ने
 लगी. वियोगनों के दिल में कामदेव की आगा तेज हो उठी.
 बिना पानी के बादल देह जलाने लगे. कोई श्रव कैसे सह
 सकता था ?

इस तरह वसन्त भी चीत गया. पीतम न आए. इस के बाद नायिका
 ने अपने मन में सोचा कि अब तक न जाने मैं क्या क्या अनाप
 शनाप बकती रही हूँ—उसने मुसाफिर से कहा—“मुसाफिरा ! अगर
 मैंने बिरह के कारन कुछ बेजा कह दिया है तो तुम कठोर बातों
 को मत कहना जो नरमी से भरा हो वही कहना. ऐसी बात कहना
 जिससे पीतम नाराज न हो जाय.”

जिमि अचिन्ह कार्य तासु सिक्केहु छणार्थ महंत
 तैस पदन्त सुनन्तहु, जयतु अनादि अनन्त ॥

نیا ہند ہندی کا پہلا مسلمان کاتب سیتابھار سن ۱۸۶
 کاتب انندپورہمان جناتا کے کاتب تھے۔ بھ کپڑا تونہ تھے
 اور پرم اور بھار کے گات گات تھے۔ دربار کا انکو کوہ
 سہارا نہ تھا کسی لیے انکا کاتب درباریوں سے بچو ہڈ
 ہے۔ کون جانتا ہے کہ اس تہ نہ جانتے کاتب ہوں ہوں
 جنکی کاتبیوں کسی یا کسی کو نہ پکرا اکل میں ہی نشٹ ہو گئیں۔ ایسے
 ہو گئے۔ اسے اس طرح نہ جانے کئی کوئی کوئی کی تخت سے ہی ہاسی بولی کا ساہتی
 کیڑوں پر آمدوں کوئی کی تخت سے ہی ہاسی بولی کا ساہتی
 ہوتا رہا ہے۔ یہ کسی چاہے میں سے ہوں یا بولہ ہوں
 سے ہوں یا مسلمان اسی دلش کی سنتان کے۔ انہوں نے
 بھ سک اپنی بھاش کی سید کی۔ اس کے کا وہ ساہتی کو کے
 ہڈی نے کی کو بخش کی۔ انہیں کی کو شمشوں سے کی ہندی
 ہے۔ بولی میں بھ پیچی ہے۔ ان کا احسان اتنا چاہے۔ صرف
 احسان ہی نہیں بلکہ ان سے آورش کو پانا چاہے اور ہست
 سلم بھید بھاد کے پنا ہستستان اور اس کی بولی کا ہست
 کرنا چاہے۔

پूजा کے تین گیت*

(رवीندر ناथ ڈاکٹر)

(۱)

مالک! تُو نے مُجھے کھنٹا کھنٹا ہے، مگر تُو نے بھی میری خواہشیں
پوری نہیں ہوئیں۔ میری عزتیں دور نہیں ہوئی۔ میری آسوں کی
دھما پونجھی نہیں گئی اور نہ میرے اندر کی پیاس بجھی ہو۔
تُو نے مجھے زندگی بخش دی ہے۔ من بخشا ہے۔ زندگی جیسے پیارے
رشتہ دار بنتے ہیں۔ پیچھی پیچھی ہلکی ہلکی اٹھا اٹھا خوبصورت آسمان
اور دل پہنچانے والی سبز زمین۔
اگر کچھ دیا ہے تو اسے دوست! تجھے اور بھی زیادہ دینا
چاہتا ہوں۔ اب تو بغیر تجھیں پائے میں کبھی نہیں جاؤں گا۔
(’گیت داتا‘ سے)

(’گیت داتا‘ سے)

(۲)

پھر پھر تُو نے مُجھے باپس کر دیا ہے۔
اس لیے میری پوجا کا پھل خیرا نہیں، کھنٹا کی رات ختم
نہیں ہوئی اور نہ میرے اور میرے بیٹے کا برہم دور ہوا ہو۔
زندگی کے اندر جو کچھ کھنٹا ہے وہ کون سی برکت والی کھنٹا
میں کھنٹے کھنٹے ہوگی؟
ہاں! کب تم میرا حق من اور وطن قبول کرو گے؟
(’گیت داتا‘ سے)

(’گیت داتا‘ سے)

پوجا کے تین گیت
(رشیندر ناتھ ڈاکٹر)

(۱۲)

نیا ہند
ہم و خواہیں کیوں کھڑیں!

ستمبر ۱۹۷۰ء

مسائلوں کا علاج ہوگی۔ وہاں سب بیکر اُردو ہی چلے گی۔ وہاں کا
علاج بھی شاید اسلام کی شریعت کے مطابق ہی چلے۔ ایسی حالت
میں باقی بیچے ہندستان کی رائیڈ بھانڈا جیسی ہوگی؟ اس کی یہی
کون سی ہوگی؟

ہندستان کا پرچار کرنے والے پرچارک بھی پوچھتے ہیں کہ
اب لوگوں کو ہم کیا کہیں؟ جس اہلیت کی دہائی دے کہ ہم ہندستان کا
اور اس کے لئے وہ لہیاں ہونی ہی چاہئے اس کا پرچار کرتے
وہ آیتا تو اب وہی نہیں، اب ہم لوگوں کو کیا سمجھائیں۔

پرچاروں کی سرکاری بھی کہہ سکتی ہیں کہ اب ہم ہندستان
کے لئے نائگری اور اُردو دو لہیاں لازمی طور پر کیسے سلھا سکتے
ہیں؟ ملی جلی ہندستان تو ہم چلا سکتے ہیں، پر اگر پاکستان میں
اُردو بھانڈا اور یہی لازمی کی گئی تو ہم بھی نائگری یہی کو رائیڈ
بھی بناکر اسے لازمی طور پر چلا سکتے ہیں۔ جو لوگ اُردو یہی سیکھنا
چاہیں یا اُردو ہی کے ذریعہ ہندستان سیکھنا چاہیں، انھیں اُردو
سہولت بھی دے دیں گے۔ لیکن ساری جتنائے اوپر اب تو ہم
دو لہیاں اگر لاد نہیں سکتے۔

اس وقت دہلی کی حالت ایسی ڈانٹاں مچا رہی ہے اور
لوگوں کے دلوں کو جس طرح بہکا دیا گیا ہے اور کشمیر سے سوچنا
بھی مشکل ہو گیا ہے۔

دہلی کی حالت اور دہلی کے بھوشیہ کا پلٹا پرچار کر کے ہم نے
وہ طے کیا ہے کہ آج تک جو نیستی ہم نے چلائی، آئندہ کے

سیتامبھار سن ۱۹۷۰

ہم حیرت کھاتے؟
نیا ہند
مسئلہ ہندو کا علاج ہوگا۔ وہاں سب بیکر اُردو ہی چلے گی۔ وہاں
کا علاج بھی شاید اسلام کی شریعت کے مطابق ہی چلے۔ ایسی
حالت میں باقی بیچے ہندستان کی رائیڈ بھانڈا جیسی ہوگی؟ اس کی
یہی کون سی ہوگی؟

ہندوستان کا پرچار کرنے والے پرچارک بھی پوچھتے ہیں کہ
اب لوگوں کو ہم کیا کہیں؟ جس اہلیت کی دہائی دے کہ ہم
ہندوستان کا اور اس کے لئے وہ لہیاں ہونی ہی چاہئے اس کا
پرچار کرتے وہی نہیں، اب ہم لوگوں کو کیا سمجھائیں۔

پرانٹوں کی سرکاروں بھی کہہ سکتی ہے کہ اب ہم ہندوستان
کے لئے نائگری اور اُردو دو لہیاں لازمی طور پر کیسے
سلھا سکتے ہیں؟ ملی جلی ہندوستان تو ہم چلا سکتے ہیں،
پر اگر پاکستان میں اُردو بھانڈا اور یہی لازمی کی گئی تو
ہم بھی بناکر اسے لازمی طور پر چلا سکتے ہیں۔ جو لوگ اُردو
یہی سیکھنا چاہیں یا اُردو ہی کے ذریعہ ہندوستان سیکھنا
چاہیں، انھیں اُردو سہولت بھی دے دیں گے۔ لیکن ساری
جتنائے اوپر اب تو ہم دو لہیاں لاد نہیں سکتے۔

اس وقت دہلی کی حالت ایسی ڈانٹاں مچا رہی ہے اور
لوگوں کے دلوں کو جس طرح بہکا دیا گیا ہے کہ کشمیر سے
سوچنا بھی مشکل ہو گیا ہے۔
دہلی کی حالت اور دہلی کے بھوشیہ کا پلٹا پرچار کر کے
ہم نے وہ طے کیا ہے کہ آج تک جو نیستی ہم نے چلائی، آئندہ کے

نیا ہر شہ
اہم و دشوار کیوں کہو گیں؟
سید احمد رضا

اب ہم ہندوستان کے مسکرتی کی بجائے ہندوستانی مسکرتی قائم کرنے کے بارے میں
. ہیں۔ ساٹھ سال سے کام لگائیں یہی کام کرتی آئی ہو۔ پاکستان
بن جانے سے ہندو کا مشن بیل نہیں سکتا۔ ہند میں مسلمان کوئی
پارسی سب لوگوں کو باہری نہ سمجھ کر ان کے ساتھ ہم سنسکرتی
کے بارے میں ایک روایت بننا چاہتے ہیں۔ بالکل ان کا دشمنی
جیون اوت پرورت اور ایک ہی لوکا۔ "جہا جہا پٹنا اور *Dehalya*
(*Dehalya*) کا زہر۔ جس نے یہ ساری بلا کوئی کوئی اور
ہیں دور کرنا لوکا۔ سبھی کو سنسکرتی ہو، سبھی کو آکر لوکاس کے لئے
بلابر کا موقع ملے، ایسا انتظام کرنا چھوٹے گا۔ سماجی نگاہ سے یا تعلیم
کے بارے میں جو کچھ چاہئے ہوئے ہیں انھیں آگے لانے کے لئے
دورانی کو تشخیص کرنی چاہی۔

مسلم لیگ نے پاکستان حاصل کیا اس لئے ہمارے سوال پل نہیں
گئے ہیں۔ اقلیت بھی نہیں گئے ہیں۔ لیکن اب ہم اپنی اندوئی ایسا زیادہ
اپنی طرح سے مضبوط کر سکیں گے۔ اور اگر ہم اپنی سلیکٹڈ لوگوں اور اراکوں
پس کی کون روٹوں دور کر کے اور ہند کو ایک جیوا، ایک پران بنا کے
تو کسی دن پاکستان کے لوگوں کو بھی اپنی طرف کھینچ سکیں گے۔ اس
ہی نہیں، بلکہ وہ پیش اور ادشوا اس کی ہوا کو ہٹا کر سادھ دینا کو
سنا دھو جھاڑ کا سندھیش بھی دے سکیں گے۔

ہمارے دشمن کے آج کوٹ ہو گئے ہیں، یہ کوئی معمولی بات نہیں ہے
اس دیکھنا سے آگ ہم سبق نہ سیکھے اور تک دل ہو گئے تو
جو کچھ آج شروع ہوئی ہو وہ آگے بڑھتی جائے گی اور ہمیں
دشمن کی طرف سے جانے کی۔ کڑت کی لالچہ ہانی کی دیکھنے سے

نیا ہر شہ
اہم و دشوار کیوں کہو گیں؟
سید احمد رضا

نیا ہر شہ
اہم و دشوار کیوں کہو گیں؟
سید احمد رضا

نیا ہر شہ
اہم و دشوار کیوں کہو گیں؟
سید احمد رضا

نیا ہر شہ
اہم و دشوار کیوں کہو گیں؟
سید احمد رضا

دیکھنے کے یہ دن نہیں ہیں۔ آج ہماری ماہی کا آوارہ دھیت، کو بچانے کا سوال سب سے بڑا ہے۔ اب ہم ہندو دھرم اور ہندو سنسکرتی کے لئے کربھی نہیں سکتے ہیں۔ اب ہمیں ہندوستانی سنسکرتی کی طرف بڑھنا ہے۔ اس کے لئے ہمیں ملی ہندوستانی کا دونوں لپیوں کے ساتھ برہما کرنا چاہیئے۔ ہندوستانی برہما کے لپیوں میں ناگری اور اوروہ دونوں لکھنا ہونی چاہئے۔ ہماری برہما سمجھا ہندوستان اور پاکستان — سارے ملک کو یہی فہمیت دے گی کہ دونوں لپیوں کے ساتھ ہندوستانی سمجھیں۔ ان یا نہ اتنا لوگوں کی مرضی کی بات ہے۔ اگر وہ ان جائیں گے تو سرکاروں کو بھی مان پڑے گا۔ تب تک صوبائی سرکاروں کا وہ نہیں ہوگا کہ جتنا جہاں تک جانے کے لئے تیار ہو وہاں ہیں کہ سے جانے کے لئے وہ اس طرح کا بڑھنا داری اور پھیلت کی طرف سے جانے والی جتنی بھی طاقتیں ہوں ان کا مقابلہ کرتی رہیں۔

دنییا کی ہندو حالت ایسی ہوگی کہ یا تو سب دیش دیش میں لپکڑ منیہ جاتی کہ ہی سخت کر دیں، یا اپنے ہوش سمجھال کر سب کے ساتھ میل جول کے بندھوتوں کو قائم کریں ہلا فرض ہے پاکستان سے صلہ ہے۔ ہمیں تو ہند کی بھی سمجھا کرنا ہے اور پاکستان کے لوگوں کی بھی۔ ہم اپنا دھماں کیوں کھویں؟ آج جو لوگ نہیں مانتے ہیں وہ بھی کل ہمارے پاس آئے ہالے یہی ہے، ہمیں اپنی اپنی جگہ نہیں کرنی ہے۔

نیا ہند ۱۸۵

نیا ہند میں بٹا دیں جس کی ایک ایک گھنٹا شہیدوں کے وقت کے ذکر سے گونج رہی تھی۔ اس طرح پکین میں ہی ان کے دل میں ملک کی آزادی کی گونج پیدا ہو گئی اور انھوں نے برطمان لیا کہ وہ اپنی زندگی کا ایک ایک پل اسی کام میں بتائیں گے۔

۱۹ جنوری ۱۹۱۹ء کو دلہند مدرسے کے بن پانچ قایم ہوئے۔ سر پر فنیلیٹ کی گپڑی بندھی یعنی جھنڈی ڈگریاں ملیں ان میں ایک وہ بھی تھے۔ اس کے بعد انھوں نے مدرسے میں ہی پٹا تنخواہ پر طعنا شروع کر دیا۔ سہ ماہہ میں صرف پچیس روپے ماہوار پر وہ مدرسے کے چوتھے مدرسے ہوئے اور انھوں نے دلہند کے دو دیا رتھیوں میں اپنا کام شروع کر دیا۔

۱۹۱۹ء میں ان کے استاد مولانا قاسم صاحب ایچ اے کے پہلے جلسے میں ان کا آن پر گہرا اثر ہوا۔ مولانا قاسم صاحب ان کو اپنے جلسے کی طرح بیار کرتے تھے۔ اس کے ایک سال بعد انھوں نے دلہند کے کچھ استادوں اور طالب علموں کو لاکھ شہرت کے نام سے ایک نئے سنگھن کی نیو ٹالی۔ خوش قسمتی سے دلی الٹی جاہت سے چوتھے امام حاجی امداد اللہ اس وقت تک کوٹہ میں زندہ تھے۔ مولانا محمود الحسن جج کے بہانے ان کے پاس کوٹہ گئے اور ان سے اپنے پندرہ کم کی بابت پلانتیں حاصل کیں۔ اس کے بعد مولانا ہندستان واپس آ گئے۔

اس وقت ہندستان میں پھر ایک نئی لاج کا جی ایل نظر آنے لگی تھی۔ برٹش حکومت بھی اسے بٹا دینے کے

نیا ہند میں بٹا دیں جس کی ایک ایک گھنٹا شہیدوں کے وقت کے ذکر سے گونج رہی تھی۔ اس طرح پکین میں ہی ان کے دل میں ملک کی آزادی کی گونج پیدا ہو گئی اور انھوں نے برطمان لیا کہ وہ اپنی زندگی کا ایک ایک پل اسی کام میں بتائیں گے۔

۱۹ جنوری ۱۹۱۹ء کو دلہند مدرسے کے بن پانچ قایم ہوئے۔ سر پر فنیلیٹ کی گپڑی بندھی یعنی جھنڈی ڈگریاں ملیں ان میں ایک وہ بھی تھے۔ اس کے بعد انھوں نے مدرسے میں ہی پٹا تنخواہ پر طعنا شروع کر دیا۔ سہ ماہہ میں صرف پچیس روپے ماہوار پر وہ مدرسے کے چوتھے مدرسے ہوئے اور انھوں نے دلہند کے دو دیا رتھیوں میں اپنا کام شروع کر دیا۔

۱۹۱۹ء میں ان کے استاد مولانا قاسم صاحب ایچ اے کے پہلے جلسے میں ان کا آن پر گہرا اثر ہوا۔ مولانا قاسم صاحب ان کو اپنے جلسے کی طرح بیار کرتے تھے۔ اس کے ایک سال بعد انھوں نے دلہند کے کچھ استادوں اور طالب علموں کو لاکھ شہرت کے نام سے ایک نئے سنگھن کی نیو ٹالی۔ خوش قسمتی سے دلی الٹی جاہت سے چوتھے امام حاجی امداد اللہ اس وقت تک کوٹہ میں زندہ تھے۔ مولانا محمود الحسن جج کے بہانے ان کے پاس کوٹہ گئے اور ان سے اپنے پندرہ کم کی بابت پلانتیں حاصل کیں۔ اس کے بعد مولانا ہندستان واپس آ گئے۔

اس وقت ہندستان میں پھر ایک نئی لاج کا جی ایل نظر آنے لگی تھی۔ برٹش حکومت بھی اسے بٹا دینے کے

ملنے پر دے کی ارٹ سے آئے دن ایک نئی نئی چال چل رہی تھی۔ حکومت کو سب سے بڑی گھبراہٹ یہ تھی کہ آزادی کی جو لگن ابھی تک مسلمانوں میں ہی زور پر تھی، وہ اب ہندوؤں میں بھی پھیل چاہی تھی۔ یہ لارڈ لٹن کا زمانہ تھا، جس سے زیادہ تنگ نظر اور ہندستان کے کھلے برے کے نہ سموننے والا والٹر نے اب تک شاید کوئی دوسرا نہیں آیا۔ اسی زمانے میں دکن کا وہ مشہور اکال پڑا، جس میں بجاس لاکھ سے زیادہ ہندوستانی کھیلوں کی طرح مسکے۔ لارڈ لٹن پر اس کا کچھ بھی اثر نہیں ہوا۔ اس نے ایک طرف تو افغانستان پر چڑھائی کردی اور دوسری طرف دلی میں ایک خاندانہ دربار کرنے کا سراپا نام شروع کر دیا۔ کچھکوں نے ہندوستانوں کے زعموں پر یہ تنگ چھپرانا تھا۔ نتیجہ یہ ہوا کہ ایک طرف دکن میں اور دوسری طرف پنجاب میں انگریزی حکومت کے خلاف بگ اٹھ کھڑے ہوئے۔ یہ تحریکیں جلد ہی دبا دی گئیں لیکن اس بات کا جو ت دس گھنٹیں کر سکتے تھے، کے بعد بھی ہندستان میں کچھ ایسے لوگ ہیں جو برٹش حکومت کے خلاف ہتھیار سے کرکھڑے ہو سکتے ہیں۔

حکومت نے اس جوش کو دبانے کے لئے ایک طرف کونسلیں قائم کر کے کچھ معمولی سے حق ہندوستانوں کو دئے تو دوسری طرف پریسوں، ایکٹ اور آتھتھار کھینے کا وقت تو ان بنا کر لوگوں کو دانا شروع کیا۔ اس نئے ساتھ ہی ایک تیسری چال پھیلتی گئی تھی، جو پہلی دونوں چالوں سے بھی زیادہ کامیاب رہی اور آج تک جاری ہو رہا ہے۔ پہلا یہ ہوا کہ ملک کے کچھ بڑے بڑے

نیا ہینڈ مولانا مہم دھول دھمن سیتاننہر سن ۱۹۷۷

لیجے پورے کی آؤٹ سے آؤٹ دین ایک نئے چال چل رہی تھی۔ دھکمپٹن کو سب سے بڑی پوراہٹ یہ تھی کہ کیا آؤٹ دین کی جو لگان ابھی تک مسلمانوں میں ہی زور پر تھی، وہ اب ہندوؤں میں بھی پھیل چاہی تھی۔ یہ لارڈ لٹن کا زمانہ تھا، جس سے زیادہ تنگ نظر اور ہندستان کے کھلے برے کے نہ سموننے والا والٹر نے اب تک شاید کوئی دوسرا نہیں آیا۔ اسی زمانے میں دکن کا وہ مشہور اکال پڑا، جس میں بجاس لاکھ سے زیادہ ہندوستانی کھیلوں کی طرح مسکے۔ لارڈ لٹن پر اس کا کچھ بھی اثر نہیں ہوا۔ اس نے ایک طرف تو افغانستان پر چڑھائی کردی اور دوسری طرف دلی میں ایک خاندانہ دربار کرنے کا سراپا نام شروع کر دیا۔ کچھکوں نے ہندوستانوں کے زعموں پر یہ تنگ چھپرانا تھا۔ نتیجہ یہ ہوا کہ ایک طرف دکن میں اور دوسری طرف پنجاب میں انگریزی حکومت کے خلاف ہتھیار سے کرکھڑے ہو سکتے ہیں۔

دھکمپٹن نے اس جوش کو دبانے کے لیے ایک طرف کونسلیں قائم کر کے کچھ معمولی سے حق ہندوستانوں کو دئے تو دوسری طرف پریسوں، ایکٹ اور آتھتھار کھینے کا وقت تو ان بنا کر لوگوں کو دانا شروع کیا۔ اس نئے ساتھ ہی ایک تیسری چال پھیلتی گئی تھی، جو پہلی دونوں چالوں سے بھی زیادہ کامیاب رہی اور آج تک جاری ہے۔ پہلا یہ ہوا کہ ملک کے کچھ بڑے بڑے

نیا ہند مولانا مہتمم دھرم سیتامبر ۱۹۳۰
 سب سے پہلے دار اور اثر طالع لوگ بھی حکومت کے اس حال میں جھنڈے لگے اور کھینچے رہے اور ملک کی آزادی کے اس نئے سے پورے کو جسے ایک طرف دلیوبند کی جماعت اور دوسری طرف دھرم بنگال و پنجاب میں اگھنسی ہوئی اگھنسی بیچ رہی تھیں 'نقصان پہنچاتے رہے۔
 مولانا محمود الحسن ان حالتوں میں بھی برابر اپنے کام میں لگے رہے اور 'ثمرۃ السیرت' کے سائنس کو مضبوط کرنے کی کوشش کرتے رہے 'پر وہ کوشش کچھ بھیل نہ لاسکی، اس کے بعد اپنے کھوٹے سے نئے ہوئے ساتھیوں کے ہمارے وہ اپنے کام میں لگے رہے اس وقت ان کا خیال تھا کہ چونکہ ہندوستانوں سے ہتھیار بچانے لے گئے ہیں اس لئے جب تک کوئی غیر ملکی حکومت نہ رہے مدد پر نہ ہو، تب تک آزادی کی جنگ شروع نہیں کی جا سکتی۔ اس کے لئے ان کی نظر کابل پر پڑ گئی۔ ہندوستان اور افغانستان کی حدیں ملی ہوئے کی وجہ سے وہیں سے مدد ملنا سب سے زیادہ آسان تھا۔ اس کے ساتھ ہی ہندوستان کی سرحد پر بسے ہوئے آزاد قبیلوں کی مدد حاصل کرنے کا خیال بھی ان کے دل میں اٹھا، کیونکہ وہیں دلی اللہی جماعت کی وہ دوسری شاخ جو ۱۸۳۳ء میں سید احمد بریلوی کے ساتھ ہندوستان سے ہجرت کر کے سرحد پر پہنچی تھی، ابھی تک اپنا کام کر رہی تھی۔ مولانا محمود الحسن نے مدرسہ دیوبند کے ان طالب علموں کے سہارے جو آزاد قبیلوں سے آئے تھے، اپنا تعلق وہیں سے قائم کیا اور وہ اس میں کامیاب ہوئے۔ آزاد قبیلوں کے

نیا ہند مولانا مہتمم دھرم سیتامبر ۱۹۳۰

نیا ہند مولانا مہتمم دھرم سیتامبر ۱۹۳۰
 سب سے پہلے دار اور اثر طالع لوگ بھی حکومت کے اس حال میں جھنڈے لگے اور کھینچے رہے اور ملک کی آزادی کے اس نئے سے پورے کو جسے ایک طرف دلیوبند کی جماعت اور دوسری طرف دھرم بنگال و پنجاب میں اگھنسی ہوئی اگھنسی بیچ رہی تھیں 'نقصان پہنچاتے رہے۔
 مولانا محمود الحسن ان حالتوں میں بھی برابر اپنے کام میں لگے رہے اور 'ثمرۃ السیرت' کے سائنس کو مضبوط کرنے کی کوشش کرتے رہے 'پر وہ کوشش کچھ بھیل نہ لاسکی، اس کے بعد اپنے کھوٹے سے نئے ہوئے ساتھیوں کے ہمارے وہ اپنے کام میں لگے رہے اس وقت ان کا خیال تھا کہ چونکہ ہندوستانوں سے ہتھیار بچانے لے گئے ہیں اس لئے جب تک کوئی غیر ملکی حکومت نہ رہے مدد پر نہ ہو، تب تک آزادی کی جنگ شروع نہیں کی جا سکتی۔ ہندوستان اور افغانستان کی حدیں ملی ہوئے کی وجہ سے وہیں سے دہم ملنا سب سے زیادہ آسان تھا۔ اس کے ساتھ ہی ہندوستان کی سرحد پر بسے ہوئے آزاد قبیلوں کی مدد حاصل کرنے کا خیال بھی ان کے دل میں اٹھا، کیونکہ وہیں دلی اللہی جماعت کی وہ دوسری شاخ جو ۱۸۳۳ء میں سید احمد بریلوی کے ساتھ ہندوستان سے ہجرت کر کے سرحد پر پہنچی تھی، ابھی تک اپنا کام کر رہی تھی۔ مولانا مہتمم دھرم نے مدرسہ دیوبند کے ان طالب علموں کے سہارے جو آزاد قبیلوں سے آئے تھے، اپنا تعلق وہیں سے قائم کیا اور وہ اس میں کامیاب ہوئے۔ آزاد قبیلوں کے

صاحب تھے۔ اب آج سرحدی گانڈی کے نام سے تمام ہندوستان میں مشہور ہیں۔ لیکن اس بات کو اس نے دیکھ کر ہی جانتے ہیں کہ ان کو سیاست کے میدان میں کھینچنے والے دلی اللہی جماعت کے ہی ایک ممبر ٹریڈنگ ڈپٹی کے حاجی صاحب تھے۔

سرکار نے فوراً سرحد کے یہ مدرسے جبراً بند کر دیئے اور حاجی صاحب پر کچھ پابندیاں لگانے یا ان کو قید کرنے کی بھی کوشش کی۔ اس پر مولانا کی ہدایت کے مطابق حاجی صاحب آزاد قبیلوں میں چلے گئے۔ انہوں نے وہاں پچھلوانوں کا سائنس شریعت کر دیا۔ کچھ دن بعد مولانا محمد الحسن نے مدرسے کو دوبارہ کے ایک پیمانے سے دوبارہ چلانی دیا۔ یہی مولانا صاحب کے ایک پیمانے سے لے کر ٹریڈنگ ڈپٹی کے حاجی صاحب کے پاس بھیجا۔ مولانا سمیت الرحمان پشاور کے نزدیک کے ہی رہتے تھے۔ ان مدرسے کو دوبارہ میں اُنہوں نے تعلیم پانے لگی۔ کچھ دن ٹریڈنگ میں بڑھ کر وہ وہی میں تھے پوری مدرسے کے پرنسپل اسٹر ہو گئے تھے۔ ٹریڈنگ ڈپٹی کے حاجی صاحب کے پاس پہنچ کر انہوں نے پچھلوانوں کا لانی سائنس کیا۔ اس کے بعد وہ اسی کام سے کابل چلے گئے۔ پر بعد میں سرکاری دباؤ اور چالوں نے انہیں اس صحیح پر نظر آنک راستے سے الگ کر دیا۔

مولانا محمد الحسن کا یہ مدرسہ کابل سے لیکر ہندستان کے کئی حصے اور سرحد کو گزرتے ہوئے ایک سائنس پیمانے کے سائنس میں پڑھا اور کابل اور آزاد قبیلوں کی ایک فوج ہندستان پر حملہ کرے۔ ایک کے کبیر کا سائنس

ساہب سے، جو آج سارہدی گانڈی کے نام سے تمام ہندوستان میں مشہور ہے، لیکن اس بات کو اس نے دیکھ کر ہی جانتے ہیں کہ ان کو سیاست کے میدان میں کھینچنے والے دلی اللہی جماعت کے ہی ایک ممبر ٹریڈنگ ڈپٹی کے حاجی صاحب تھے۔

سرکار نے کورن سرحد کے یہ مدرسے جبراً بند کر دیئے اور حاجی صاحب پر کچھ پابندیاں لگانے یا ان کو قید کرنے کی بھی کوشش کی۔ اس پر مولانا کی ہدایت کے مطابق حاجی صاحب آزاد قبیلوں میں چلے گئے۔ انہوں نے وہاں پچھلوانوں کے سائنس شریعت کر دیا۔ کچھ دن بعد مولانا محمد الحسن نے مدرسے کو دوبارہ کے ایک پیمانے سے دوبارہ چلانی دیا۔ یہی مولانا صاحب کے ایک پیمانے سے لے کر ٹریڈنگ ڈپٹی کے حاجی صاحب کے پاس بھیجا۔ مولانا سمیت الرحمان پشاور کے نزدیک کے ہی رہتے تھے۔ ان مدرسے کو دوبارہ میں اُنہوں نے تعلیم پانے لگی۔ کچھ دن ٹریڈنگ میں بڑھ کر وہ وہی میں تھے پوری مدرسے کے پرنسپل اسٹر ہو گئے تھے۔ ٹریڈنگ ڈپٹی کے حاجی صاحب کے پاس پہنچ کر انہوں نے پچھلوانوں کا لانی سائنس کیا۔ اس کے بعد وہ اسی کام سے کابل چلے گئے۔ پر بعد میں سرکاری دباؤ اور چالوں نے انہیں اس صحیح پر نظر آنک راستے سے الگ کر دیا۔

مہرموہن ہسن نے سارہدی دے بننے کے ایک پورے بیچارے مائولانا سیکورہمان کو آجیاد کرنیوں میں سنگٹن کے لیے تیرنگجڑ کے ہائی ساہب کے پاس بےجا۔ مائولانا سیکورہمان پشاور کے نزدیک کے ہی رہتے تھے اور سارہدی دے بننے کے کتھپوری سارہدی کے ہڈی سارہدی ہو گا۔ تیرنگجڑ کے ہائی ساہب کے پاس پڑھ کر انہوں نے پڑتوں کا کالی سنگٹن کیا۔ اس کے بعد وہ اسی کام سے کابل چلے گئے۔ پر بعد میں سرکاری دباؤ اور چالوں نے انہیں اس صحیح پر نظر آنک راستے سے الگ کر دیا۔

مائولانا مہرموہن ہسن کا پوپام یہ تھا کہ کابل سے لے کر ہندوستان کے ڈیڑے ڈیڑے کو تک ایک سنگٹن کتا جاو۔ وہ سنگٹن نہ پورا ہو گا تو کابل اور آجیاد کرنیوں کی ایک کبیر ہندوستان پر حملہ کرے۔ مولانا محمد الحسن

اس وقت ملک کے بھیت سے لڑائی پھیل رہی ہے اور اس طرح انگریزی حکومت کو دکھنا پھینکا جائے۔

کچھ دنوں بعد جب ٹرکی اور بلکان راستوں میں لڑائی پھڑپی تو مولانا اور ان کی پارٹی نے ٹرکی کی مدد کرنے کا فیصلہ کیا۔ اسی فیصلے کے مطابق ڈاکٹر انصاری صاحب ایک ڈاکٹری مشن لے کر جتنی گئے۔ اس کے کچھ دن بعد ۱۹۷۷ء میں یورپین جنگ کا اعلان ہو گیا۔ مولانا نے فوراً طے کر لیا کہ برٹش حکومت کے خلاف ہتھیار اٹھانے کا یہ سب سے اچھا موقع ہو۔ انھوں نے اس کے لئے اپنے سنگٹھن کی کڑیاں اور بھی مضبوط کرنی شروع کر دیں۔ اس وقت تک وہ دلی میں بھی 'نظامۃ المصروفات' کے نام سے ایک مدرسہ قائم کر چکے تھے جو دراصل دلی اسلامی جماعت کے گرانٹ کاری سنگٹھن کی ایک شاخ تھی۔ اس مدرسے کا نام بھی مولانا محمود الحسن صاحب کے خاص شاگرد اور ان کی سیاست کے لڑکوں مولانا بیہما شد سندھی پر تھا اور مدرسے کی مددگار انصاری حکیم اجمل خاں وغیرہ بھی کرتے رہتے تھے، جو مولانا کے مرید اور ان کے دوستوں میں سے تھے۔

اسی زمانے میں ہندستان کے ایک دوسرے مولوی محمد اجمل سخانی نے یہ فتویٰ دیا کہ ٹرکی کے خلاف انگریزوں کی مدد کرنا جائز ہو۔ اس فتوے پر کچھ اور مولویوں کے لئے بھی دستخط تھے۔ کچھ دن بعد یہ فتویٰ دستخطوں کے لئے گیا۔ مولانا محمود الحسن صاحب کے سامنے پیش کتب گیا۔ مولانا محمود الحسن صاحب نے مزاج کے تھے اور اپنے ساتھی

وہا ہننر مولک کے مائنر سے لہاڈ ڈیڈ ڈے اور ہس نرہ آنگرےوئی ہوکومت کو زلاڈ فیکا ناہ.

کولڈ. دینوں ناڈ جب ڈکوں اور بالکان ریناسنوں مں لہاڈ ڈیڈ ڈیڈ، تو مائالانا اور ونکو پارٹی نے ڈکوں کو مڈر کرنے کا کئسلا کینا. ہسی کئسلا کے موالیک ڈاکٹر آنساری ساڈھن اک ڈاکٹر میشین لیکر ٹورکوں ہا. ہسکے کولڈ دین ناڈ سنن ۱۹۷۷ مں یورپین جنگ کا اعلان ہوا گیا. مائالانا نے کورن تہہ لینگا کینا ڈیڈیا ڈکومت کے لیلناک ڈیڈیہار زڈانے کا ناڈ سب سے آنڈیا ماکا ہے. ونڈوں ہسکے لینگے آپنے سنگڈن کو کڈیاں اور مو مڈر کرکونو شاڈ کار ڈوں. ہس وکرت تک واڈ ڈیلڈوں مں مو 'نننارننن مڈارنن' کے نام سے اک مڈرنا کایم کار چوکے ڈے، جو ڈر آنسلا بالیڈلہاڈ جمالت کے کاننننکاری سنگڈن کو اک شالہ ڈا. ہس مڈر سے کا نامام واک مائالانا مہمڈول ہسن ساڈھن کے لاس شانگڈ اور ونکی سینگاسن کے رانڈوں مائالانا زونڈوللا سینڈیا ہر ڈا اور مڈر سے کو مڈر ڈا. آنساری، ڈکوم آنجمل لڈا وگورا مو کرتے رڈتے ڈے، جو مائالانا کے سوریڈ اور ونکے ڈوسوں مں سے ڈے.

ہسی ونامانے مں ہننڈولسان کے اک ڈوسرے مائالکی آنڈول ڈک ہکککانو نے واڈ کتاوا دینا کینا ٹورکوں کے لیلناک آنگرےووں کو مڈر کرنا ناہنا ہے. ہس کتاوے ہر کولڈ اور مائلیکیوں کے مو ڈسناوات ڈے. کولڈ دین ناڈ واڈ کتاوا ڈسناواتوں کے لینگے مائالانا مہمڈول ہسن ساڈھن کے سامانے ہشا کینا گیا. مائالانا مہمڈول ہسن ڈنڈے میناڈن کے ڈے اور آپنے سینگاسی

بہت حیرت انگیز کہ جنرل نادر خان ان کی اہلیت سے بہت کچھ جانتے تھے۔ اس کے بعد کابل میں اس بغاوت کے کارکنوں نے جو کچھ کیا، اس کی ایک لمبی کہانی اور تھوڑے سے میں یہ کہا جا سکتا ہے کہ کابل سے تخت سے انگریزوں کے حمایتی امیر علی بیگ اللہ کو چھوڑ کر ان کی جگہ انگریزوں کے سخت مخالفت والے ان اللہ خان کو بٹھانے والے انگریزوں سے بے نیچوں سے افغانستان کو آزاد کرانے میں بہت بڑا ہاتھ مولا نا محمد حسن اللہ ان کے خاندان کا تھا۔ یہ ایک ایسی بات ہے جو کسی بڑے کام کی گواہی سمجھ سکتے ہیں، لیکن اب نادر خان کی ہوک اس سے بڑے جوت بھی پیش کیے جاسکتے ہیں۔

۱۷ ستمبر ۱۹۱۵ء کو مولا نا محمد حسن صاحب بھی اپنے کچھ خاص شاگردوں کے ساتھ ج کے بہانے کو حیل دینے کی کوشش کی اپنے حاسوں انیس احمد کے ذریعے مولا نا کی ان پگلوں کی باتوں

مولا نا کو مولا نا کو آزاد کرانے کے لیے باہر جانے کی اجازت کا اچھا ٹھنڈکا، مولا نا کے ہمراہ اپنے پیچھے وہاں کے افسروں کو مولا نا کی سرنٹاری کا حکم بھیجا گیا۔ حکم دینے سے پہلے وہ اس وقت لاہور میں بیسیوں خیر سگستان سمندر کے کنارے کھڑے اپنے اس کام کو پایا کر رہتے تھے۔ اس کے بعد جہاز کے پیمانہ کو مولا نا کی سرنٹاری کا حکم دے دیا گیا۔ وہ بھی کسی وجہ سے عمل میں نہ آسکا۔ نتیجہ یہ ہوا

بہت حیرت انگیز کہ جنرل نادر خان ان کی اہلیت سے بہت کچھ جانتے تھے۔ اس کے بعد کابل میں اس بغاوت کے کارکنوں نے جو کچھ کیا، اس کی ایک لمبی کہانی اور تھوڑے سے میں یہ کہا جا سکتا ہے کہ کابل سے تخت سے انگریزوں کے حمایتی امیر علی بیگ اللہ کو چھوڑ کر ان کی جگہ انگریزوں کے سخت مخالفت والے ان اللہ خان کو بٹھانے والے انگریزوں سے بے نیچوں سے افغانستان کو آزاد کرانے میں بہت بڑا ہاتھ مولا نا محمد حسن اللہ ان کے خاندان کا تھا۔ یہ ایک ایسی بات ہے جو کسی بڑے کام کی گواہی سمجھ سکتے ہیں، لیکن اب نادر خان کی ہوک اس سے بڑے جوت بھی پیش کیے جاسکتے ہیں۔

۱۷ ستمبر ۱۹۱۵ء کو مولا نا محمد حسن صاحب بھی اپنے کچھ خاص شاگردوں کے ساتھ ج کے بہانے کو حیل دینے کی کوشش کی اپنے حاسوں انیس احمد کے ذریعے مولا نا کی ان پگلوں کی باتوں

مولا نا کو مولا نا کو آزاد کرانے کے لیے باہر جانے کی اجازت کا اچھا ٹھنڈکا، مولا نا کے ہمراہ اپنے پیچھے وہاں کے افسروں کو مولا نا کی سرنٹاری کا حکم بھیجا گیا۔ حکم دینے سے پہلے وہ اس وقت لاہور میں بیسیوں خیر سگستان سمندر کے کنارے کھڑے اپنے اس کام کو پایا کر رہتے تھے۔ اس کے بعد جہاز کے پیمانہ کو مولا نا کی سرنٹاری کا حکم دے دیا گیا۔ وہ بھی کسی وجہ سے عمل میں نہ آسکا۔ نتیجہ یہ ہوا

دیکر یہ کہ یہ اطمینان دلانے کی کوشش کریں کہ اس تحریک کا مطالب صرف ایک کی آزادی اور نہ کہ ہندوستان بے پیکر سے مسلمانوں کی حکومت قائم کرنا۔ اس سلسلے کے مطابق راجا ہند پر تاپ کو ہندوستان کی اس عارضی سرکار کا پرلینڈینٹ بنا دیا گیا جو کابل میں مولانا عبید اللہ سندھی و غیرہ نے قائم کی تھی۔ وہ اس طرح کی پہلی سرکار تھی جس کی یاد نیشا جی سوجھائی چندہ رس نے جاپان اسلام اور آزاد ہند سرکار قائم کرنے سے پہلے برسی بعد پیکر سے کر دی۔

اسی وقت اور پاشا کی صلاح سے یہ بھی طے ہوا کہ مولانا محمود الحسن صاحب خود بھی آزاد قبیلوں میں پہنچیں۔ اس کا نتیجہ یہ ہی رہا کہ گیارہ ماہ کا حکم شریف حسین انگریزوں سے مل گیا۔ اس نے بریکی حکومت کے اخراجات اجازت کا جھنڈا اٹھوا کر دیا۔ مولانا اس کا نتیجہ جاننے گئے۔ انہوں نے کوٹ سے نکل جانے کی کافی کوشش کی پر ناکام رہے اور پھر اس نے سچھیلوں کے ۱۶ نومبر ۱۹۱۶ کو محرمزاد کر لئے گئے۔ اس نے بعد قریب چھار سال تک وہ مالٹا کے فوجی قید خانے میں نظر بند رکھے گئے۔ ان چار سال میں ان کو وہاں کے سچھیلوں کو جو سخت تکلیفیں اٹھانی پڑیں ان کو بیان کرنے کے لئے کئی مونی مونی چھپدیں بھی لاکائی اٹلی کی شہرہ میں تو سبھی کو یقین تھا کہ یہی آئی رہیں جہاں کئی اور ایسی یقین کے مطابق مولانا کے ایک ساتھی کو بھی صاحب سہوہری اپنی گردن دبا دیا گیا کرتے تھے کہ پاشا کے وقت ہی تکلیف

نیا آئینہ مولانا محمد محمود الحسن

دیکر یہ کہ یہ اطمینان دلانے کی کوشش کریں کہ اس تحریک کا مطالب صرف ایک کی آزادی اور نہ کہ ہندوستان بے پیکر سے مسلمانوں کی حکومت قائم کرنا۔ اس سلسلے کے مطابق راجا ہند پر تاپ کو ہندوستان کی اس عارضی سرکار کا پرلینڈینٹ بنا دیا گیا جو کابل میں مولانا عبید اللہ سندھی و غیرہ نے قائم کی تھی۔ وہ اس طرح کی پہلی سرکار تھی جس کی یاد نیشا جی سوجھائی چندہ رس نے جاپان اسلام اور آزاد ہند سرکار قائم کرنے سے پہلے برسی بعد پیکر سے کر دی۔

کالونز کے زن بیچارہوں کا था, जिन्होंने खिलाफत तहरीक के प्रोग्राम के मुताबिक अलीगढ़ यूनीवर्सिटी इस लिये खोइ दी थी, क्योंकि वह सरकारी मदद पर चलती थी. इसी वकत मौलाना महमदुल हसन साहब के हाथों से 'जामिया मिल्लिया इस्लामिया' मदरसे की भी नींव रखी गई जो आज भी मदरसा देवबन्द की तरह दिल्ली में कौमा तालीम का एक खास मरकज है. इसके ठीक एक महिने बाद ३० अक्टूबर सन् १९२० ई० को दिल्ली में डाक्टर अंसारी साहब की कोठी पर मौलाना महमदुल हसन साहब का इन्तकाल हुआ. कहा जाता है कि मरने से कुछ घंटे पहले ही आजाद कबीलों के इलाके से आए हुए कुछ आदिमियों को उन्होंने हिदायत दी थी और चूंकि मुन्ते और बोलने की ताकत उस वकत बहुत कम हो गई थी, इसलिए मौलाना के मुंह पर कान रख कर सरहद के उन पठानों ने मौलाना की यह आखिरी बातें सुनी थी.

मौलाना महमदुल हसन साहब ने अपनी इमामत के जमाने में पिछले दो सौ बरस से चली आ रही बलीबल्लाई तहरीक में दो खास नई बातें की. पहली यह कि उन्होंने गैर मुसलमानों को शरीक करके इस तहरीक को सचे मानों में तमाम हिन्दुस्तान की तहरीक बना दिया और दूसरी यह कि इसमें आम जनता को शरीक करके वह उसे एक नया रास्ता दिखा गए.

سید محمد
مولاانا محمود الحسن

لا ارجح کے ان ودیاراتھیں کا اکتھا اجنھوں نے خلافت کھریک کے پروگرام کے مطابق علی گڑھ یونیورسٹی اس لئے چھوڑ دی تھی کیونکہ وہ سرکاری مدد پر چلتی تھی. اسی وقت مولاانا محمود الحسن صاحب کے ہاتھوں سے 'جامعہ تہیہ اسلامیہ' مدرسے کی بھی نیو رکھی گئی جو آج بھی مدرسہ دیوبند کی طرح دلی میں قومی تنظیم کا ایک خاص مرکز ہے. اس کے چھٹیک ایک مہینے بعد ۳۰ اکتوبر ۱۹۲۰ء کو دلی میں ڈاکٹر انصاری صاحب کی کوٹھی پر مولاانا محمود الحسن صاحب کا انتقال ہوا. کہا جاتا ہے کہ مرنے سے کچھ گھنٹے پہلے ہی آزاد قبیلوں کے علاقے سے آئے ہوئے کچھ آدمیوں کو انھوں نے ہلایس دی تھیں اور چونکہ مسند اوبد بولنے کی طاقت اس وقت بہت کم ہوگئی تھی، اس لئے مولاانا کے منہ پر کان رکھ کر سرحد کے ان پٹھانوں نے مولاانا کی یہ آخری باتیں سن لی تھیں.

مولاانا محمود الحسن صاحب نے اپنی امامت کے زمانے میں کچھ دو سو برس سے چلی آ رہی دلی الہی تحریک میں دو غاصبانی باتیں کیں. پہلی یہ کہ انھوں نے غیر مسلمانوں کو شریک کر کے تحریک کو چھپے محضوں میں تمام ہندستان کی تحریک بنا دیا اور دوسری یہ کہ اس میں عام جنتا کو شریک کر کے وہ اسے ایک نیا راستہ دکھائے.

गुलामों का नाच

(डा० मसूद हुसैन खाँ, अलीगढ़ यूनावर्सिटी)

स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री !

मेरे अन्दर

आज हैसी फिर माता काली

“मात प्रियासे” ? जाग उठी है

इस तल में

नाच रहा है मन मैनों की

हर हर गल पर

लेकिन कैसे भर पाऊंगा

माता खप्पर

तुन कहाँ है सोच गहो

स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री !!

सब से बड़ा है तेरा खप्पर

बूढ़े दादा

मुन्डों को भी तू है चाहता

ताकि बना के उनकी माला

डाल गले में नाचे आहा !

(१३२)

१—हर गल नसलें जो गुलामी में गुजरी हैं.

غلاموں کا ناچ

(ڈاکٹر مسعود حسین خان، علی گڑھ یونیورسٹی)

کھی کھی کھی کھی !

میرے اندر

آج ہےسی پھر ماں کالی

“مات پر یاسے” جاگ اٹھی ہیں

اس تال میں

ناچ رہا ہے من بھروں کی

ہر ہر گال پر

لیکن کیسے بھر پاؤں گا

ماتل کھپر

تو کہاں ہے سوچ کھی

کھی کھی کھی کھی !!

سب سے بڑا ہے تیرا کھپر

بوڑھے دادا

موندوں کو بھی تُو ہے چاہتا

تا کہ بنا کے ان کی مالا

ڈال گالے میں ناچے آہا !

۱۔ ہر گال نسلوں جو غلامی میں گزری ہیں۔

क्यों कि तेरे खून में नार्चो थां उनकी तलवारें !!

अब जी भर के नाच

और जी भर के पा

तेरे साथ तेरे क्रदमों पर

नाचेंगे हम भी

खी खी खी खी खी !!

रोक सके क्या यह खंजोरें

यह तो देंगी ताल

नाचो नाचो, सतों नाचें

इक बख्तर में

इस मैदान से

हिन्दुस्तान से

बच के न जाए कोई भी !

खी खी खी खी खी !!

[डा० साहब ने इन लाइनों में तमबोर खेंची हैं कि

गुलाम कैसे सोचते हैं, यानी इस तरह सोचना आजाद और

खुदवार इनसान की शान के खिलाफ है.—पंडितर]

—

ستمبر

غلاموں کا ناچ

نیا

کیونکہ تیرے خون میں ناچیں تھیں ان کی تلواریں !!

اب جی بھر کے ناچ

اور جی بھر کے پا

تیرے ساتھ تیرے قدموں پر

ناچیں گے ہم بھی

کھی کھی کھی کھی کھی !!

روک سکیں کیا یہ خنجریں

یہ تو دیں گی تال

ناچو ناچو ساتوں ناچیں

اس پیڑ میں

اس میدان سے

ہندوستان سے

بچ کے نہ جائے کوئی بھی !

کھی کھی کھی کھی کھی !!

تھوڑے کھنجر

جو آجڑ صاحب نے ان لائنوں میں تصویر کھینچی ہو کہ غلام

کیسے سوچتے ہیں یعنی اس طرح سوچنا آزاد اور خوددار انسان

کی شان سے غلامت اور — ایڈیٹر

ہندستانی کلچر اور سوسائٹی

(ریفرنس سائنس پبلسیشنز، لاہور، پاکستان)

(۶)

کھیلے لیکھ میں ہم محمد وزیر خاں صاحب بن کار تک پہنچے تھے۔ یہ اس ٹیپ کے آخری بڑے بین کار تھے۔ ان کی پیدائش ۱۸۶۰ عیسوی کے آس پاس ہوئی تھی۔ اس وقت ان کے پیتا امیر خاں لٹم پور کے قریب ملک علی خاں کے درباری بین کار تھے۔ مشہور سرنگار پے بہادر سین خاں بھی ان دنوں لٹم پور میں ہی تھے۔ سات آٹھ برس کی عمر سے ہی وزیر خاں نے لٹم پور سے بین اور ڈھریڈ کی تعلیم پائی شروع کی تھی۔ ان کے پاپا بہادر سین کے کوئی اولاد نہیں رہی۔ اسی سے انھوں نے بھی جی کھل کر وزیر خاں کو باب اللہ ڈھریڈ کی تعلیم دینی شروع کی۔ بین برس کی عمر آونے کے پہلے ہی انھوں نے بین، باب اللہ ڈھریڈ میں اچھی جانکاری حاصل کر لی۔ بہادر سین اللہ امیر خاں جی جان سے انھیں تعلیم دے رہے تھے۔ بہادر سین باب اللہ سرنگار خاں کے دونوں میں اپنا تعلق رکھتے تھے اور امیر خاں میں اور سکھنے میں۔ دونوں میں آج تک کئی کڑکون اپنے حق میں وزیر خاں کو زیادہ اہمیت دے سکتا ہے اور سچے سچے کہا کہ وزیر خاں کو اتنی پوری اور سب چیزوں کی سائنس ملی جتنی شاید ہی کسی اور شخص کو مل

ہندوستانی کالچر اور संगीत

(پंडित गणेश प्रसाद द्विवेदी)

(۵)

पिछले लेख में हम मुहम्मद बखीर खाँ साहब बानकार तक पहुँचे थे. यह इस युग के आखिरी बड़े बानकार थे. इन की पैदायश १८६० ईसवी के आस पास हुई थी. उस बक्त इनके पिता अभीर खाँ रामपुर के नवाब कलेवे अली खाँ के दरबारी बानकार थे. मशहूर सुरसिंगारिये बहादुर सेन खाँ भी उन दिनों रामपुर में ही थे. सात आठ बरस की उम्र से ही बखीर खाँ ने अपने पिता से बान और धुरपद की तालीम पानी शुरू की थी. इनके नाना बहादुर सेन के कोई औलाद नहीं थी. इसी से इन्होंने भी जो खोल कर बखीर खाँ को रबाब और धुरपद की तालीम देनी शुरू की. बीस बरस की उमर होने के पहले ही इन्होंने बान, रबाब और धुरपद में अच्छी जानकारी हासिल कर ली. बहादुर सेन और अभीर खाँ जो जान से इन्हें तालीम दे रहे थे. बहादुर सेन रबाब और सुरसिंगार दोनों में अपना साना नहीं रखते थे और अभीर खाँ बान और गाने में. दोनों में होड़ सी लग गई थी कि कौन अपने कन में बखीर खाँ को ज्यादा दोशियार कर सकता है. नतीजा यह हुआ कि बखीर खाँ को इतनी पूरी और सब चीजों की शिक्षा मिली जिनकी शायद ही किसी गुनी को मिल

सकी हो. कलमें अली खां के सामने ही बचीर खां उनके दरबारी कलावंत हो चुके थे. उनके इतकाल के बाद उनके भाई हैदर अली बचीर खां साहब को भिलसी ले गए. हैदर अली खां खुद एक ऊँचे दरजे के गुनी थे. उन्होंने तानसेन के घराने के कई बड़े उस्तादों से तालीम पाई थी. अमीर खां चीनकार के भी बहू शानिद थे. भिलसी में हैदर अली खां की अपनी निजो बर्मादारी थी. वहाँ उन्होंने छै बरस तक बचीर खां को बड़े प्रेम से रक्या. इसी बीच नवाब रामपुर के घराने की ही एक लड़की से बचीर खां की शादी हुई जिसका सारा इंतजाम खुद हैदर अली खां ने किया था.

संगीत के सिवा बचीर खां ने ब्राह्मण पंडितों से रामायन, महाभारत और पुराणों की शिक्षा भी दी थी, और संस्कृत व हिंदी दोनों की अच्छी जानकारी हासिल कर ली थी. संगीत पर लिखी हुई संस्कृत की पुरानी पोथियों को उन्होंने पंडितों से पढ़ा और कुछ के तर्जुमें भी इन्होंने उर्दू में किये जो इनके पोले दर्बार खां साहब के पास मौजूद हैं. इसके सिवा पुरान की कथाओं के आधार पर इन्होंने कुछ नाटक हिन्दी में रचे जो मौजूद हैं पर अभी तक छप नहीं सके. हमें इन पोथियों के देखने का इत्ताफ़ हुआ है. खास कर इन्होंने जो नाटक लिखे हैं वह संगीत और साहित्य (अदब) दोनों के लिहाज से ऊँचे दर्जे की चीजें हैं. इनके नाटक उस शैली में हैं जिसे आज दिन हिन्दी में गीति नाटक कहा जाता है. इनमें एकदरों की बात चीत गाने में ही है और रागों का चुनाव, रचना के रस को ध्यान में

श्री ११
हिन्दुस्तानी और संगीत
सुखी हो दुःखी हो
दरबारी कलावंत हो चुके थे. उनके इतकाल के बाद उनके भाई हैदर अली बचीर खां साहब को भिलसी ले गए. हैदर अली खां खुद एक ऊँचे दरजे के गुनी थे. उन्होंने तानसेन के घराने के कई बड़े उस्तादों से तालीम पाई थी. अमीर खां चीनकार के भी बहू शानिद थे. भिलसी में हैदर अली खां की अपनी निजो बर्मादारी थी. वहाँ उन्होंने छै बरस तक बचीर खां को बड़े प्रेम से रक्या. इसी बीच नवाब रामपुर के घराने की ही एक लड़की से बचीर खां की शादी हुई जिसका सारा इंतजाम खुद हैदर अली खां ने किया था.

संगीत के सिवा बचीर खां ने ब्राह्मण पंडितों से रामायन, महाभारत और पुराणों की शिक्षा भी दी थी, और संस्कृत व हिंदी दोनों की अच्छी जानकारी हासिल कर ली थी. संगीत पर लिखी हुई संस्कृत की पुरानी पोथियों को उन्होंने पंडितों से पढ़ा और कुछ के तर्जुमें भी इन्होंने उर्दू में किये जो इनके पोले दर्बार खां साहब के पास मौजूद हैं. इसके सिवा पुरान की कथाओं के आधार पर इन्होंने कुछ नाटक हिन्दी में रचे जो मौजूद हैं पर अभी तक छप नहीं सके. हमें इन पोथियों के देखने का इत्ताफ़ हुआ है. खास कर इन्होंने जो नाटक लिखे हैं वह संगीत और साहित्य (अदब) दोनों के लिहाज से ऊँचे दर्जे की चीजें हैं. इनके नाटक उस शैली में हैं जिसे आज दिन हिन्दी में गीति नाटक कहा जाता है. इनमें एकदरों की बात चीत गाने में ही है और रागों का चुनाव, रचना के रस को ध्यान में

طیاریت
ہندستان کا پچھلا سنگیت
ستمبر ۱۹۳۳ء

دیکھو، اتنا مستند اور کلا سے بھرا ہوا ملتا اور کر جی خوش گوشہ ہوا ہو۔
ہندی شاعری یہ برج بھاشا میں کہتے تھے، ان کے گیتوں میں
سنگیت کا حصہ بہت زیادہ اور اونچے درجے کا ہوتا تھا۔ ان سب
کے سوا انھیں چیزکاری کا بھی شوق تھا۔

کئی برس پچھلی رہنے کے بعد وزیر خاں صاحب حیدر علی خاں
سے پچھلی سے کرکچھ دن ڈیں بلیں گھونٹنے کے لئے باہر نکلے۔
سب سے پہلے وہ بنارس آئے۔ ان دنوں کا شی لاج کے دو بار میں
ان کے دو نانا صادق علی اور ستار علی خاں رہتے تھے۔ یہ دونوں
بابا بے تھے۔ وزیر خاں کی تعلیم کو انھوں نے ادا آگے بڑھا یا۔
وزیر خاں کو بہت سی ایسی چیزیں کہاں سیکھنے کو ملیں جو ابھی تک
وہ نہ سیکھ پائے تھے۔

اس کے بعد وزیر خاں کئی برس کلکتے میں رہے۔ منشی جی نام
کے کلکتے کے ایک مسلمان رئیس ان کے خاص پرکھی تھے۔ انھیں کے
یہاں یہ زیادہ تر رہتے تھے۔ ان کے علاوہ مسابراجا چند موحسن علی
پاسا کوئی بڑی بڑی تارا پر بسا د گھوش اور یاد چند بابو جیسے رئیس گھنٹیوں نے
ان کی صحبت میں خوب خوب قائدہ اٹھایا۔ انھیں مشمول کے یہاں
ان کا گانا اور جیسے ہوتے تھے۔ اس بیچ انھوں نے بگل بھاشا
سے بھی جانکاری حاصل کر لی، بگل بولتے تو مٹاٹ کر مار بگالی ہی
ہوں۔ کوئی بھی تھا پرکھی جو لکھنے یا سیکھنے کی عرض سے ان کے پاس
پہنچ جاتا تھا۔ اسے یہ بڑا ہی نہیں کرتے تھے۔ پر ان پیشہ ور استادوں کو
جو ان کی چیزوں کے ادا لینے کی نیت سے ان کے پیچھے گئے رہتے

نیا ہیندھ ہیندھستانی کالچر اور سنگیت سن ۱۹۲۹

رکھ کر، اتنا سوندر اور کلا سے بھرا ہوا ہیندھستانی کالچر ہے کہ جو
مغز ہو جاتا ہے۔ ہیندھی شاعری یہ برج بھاشا میں کرتے تھے۔
ان کے گیتوں میں سنگیت کا حصہ بہت زیادہ اور اونچے درجے کا
ہوتا تھا۔ ان سب کے سوا انھیں چیزکاری کا بھی شوق تھا۔

کئی برس پچھلی رہنے کے بعد وزیر خاں صاحب حیدر علی خاں
سے پچھلی سے کرکچھ دن ڈیں بلیں گھونٹنے کے لئے باہر نکلے۔
سب سے پہلے وہ بنارس آئے۔ ان دنوں کا شی لاج کے دو بار میں
ان کے دو نانا صادق علی اور ستار علی خاں رہتے تھے۔ یہ دونوں
بابا بے تھے۔ وزیر خاں کی تعلیم کو انھوں نے ادا آگے بڑھا یا۔
وزیر خاں کو بہت سی ایسی چیزیں کہاں سیکھنے کو ملیں جو ابھی تک
وہ نہ سیکھ پائے تھے۔

اس کے بعد وزیر خاں کئی برس کلکتے میں رہے۔ منشی جی
نام کے کالکرتوں کے ایک مسولمان رہے ان کے خاص پرکھی تھے۔
ان کے یہاں زیادہ تر رہتے تھے۔ ان کے علاوہ مسابراجا چند موحسن علی
پاسا کوئی بڑی بڑی تارا پر بسا د گھوش اور یاد چند بابو جیسے رئیس گھنٹیوں نے
ان کی صحبت میں خوب خوب قائدہ اٹھایا۔ انھیں مشمول کے یہاں
ان کا گانا اور جیسے ہوتے تھے۔ اس بیچ انھوں نے بگل بھاشا
سے بھی جانکاری حاصل کر لی، بگل بولتے تو مٹاٹ کر مار بگالی ہی
ہوں۔ کوئی بھی تھا پرکھی جو لکھنے یا سیکھنے کی عرض سے ان کے پاس
پہنچ جاتا تھا۔ اسے یہ بڑا ہی نہیں کرتے تھے۔ پر ان پیشہ ور استادوں کو
جو ان کی چیزوں کے ادا لینے کی نیت سے ان کے پیچھے گئے رہتے

نیا ہند ہندوستانی کلاچر اور संगीत सिताभर सन् 1909
ये, यह अपनी खास चीजे नहीं सुनाते थे. इसमें से कुछ लोग इन्हें
धमंही भी कहते थे.

बर्जर खां लगभग सात आठ बरस कलकत्ते रहें, पर इनके
घारे में आम शिकायत यह रही कि इन्होंने अपने बंस के लोगों
के सिवा और किसी को सिखाना तो दूर रहा. जी खोल कर सुनाना
भी पसंद न किया. कभी कभी बड़े रईसों की दावतों या जलसों
में कुछ चीन या सुरसिगार सुना दिया करते थे. सात आठ बरस
में दस पांच मुजरे इनके ऐसे हुए जो लोगों को अभी तक
याद है, क्योंकि इनका गाना बजाना सुने हुए कुछ लोग अभी
तक खिन्दा है. बंगाल के गोबरदाँगा के मशहूर रईस ज्ञानदा
प्रसन्न बाबू के यहां एक बार इन्होंने चांदनी केदारा नाम के
राग का जी खोल कर आलाप एक आसन से छे घंटे तक
बजाया था जिसकी याद अभी तक लोग करते हैं कि चीन पर ऐसे
आलाप नहीं सुनी गई. ऐसे मौके दो ही एक हुए.

कलकत्ते में जिन लोगों को इन्होंने सिखाया उनमें दो को
हम जानते हैं वह हैं बंगाल के मशहूर रईस बाबू तारा प्रसाद
घोष और प्रमथनाथ बनर्जी. बनर्जी साहब को इन्होंने रत्न बीणा
(रुदबीन) सिखलाई थी. इसका चलन सिकंदरन खास कर मद्रास
सूबे में है. इससे जाहिर है कि करनाटक स्कूल के संगीत की भी पूरी
ज्ञानकारी इनको थी.

इसी बीच रामपुर से फिर इनको बुलाहट आई. उस वकत
हामिद अली खां गद्दी पर थे. उन्होंने बर्जर खां साहब को गुरु
बनाकर उनसे बाकायदा तालीम लेनी शुरू की. उनके बड़े बेटे

नाम
छे. 1. ये अपनी खास چیزیں نہیں سنانے تھے. اسی سے کچھ
وہیں کھینچی بھی لیتے تھے.

وزیر خاں ایک جگہ سات آٹھ برس گلے رہا پر ان کے
بارے میں عام شکایت یہ رہی کہ انھوں نے اپنے بوسے کے لگن
سے سوا اور کسی کو سکھانا تو دود رہا، جی کھول کر سنانا بھی پسند نہ کیا
کبھی کبھی بڑے بڑے ریٹوں کی دکتوں باطلوں میں کچھ بین باشر مستطال
سنا دیا کرتے تھے. سات آٹھ برس میں دس پانچ محجے ان کے
ایسے آئے جو لوگوں کو ابھی تک یاد ہیں، کیونکہ ان کا گانا بجانا
میں نے اسے کچھ لوگ ابھی تک زندہ ہیں. بنگال کے گوہر ڈاکٹرانے
مشہور رئیس گمانا پرست بابو کے یہاں ایک بار انھوں نے
چاندنی کےدارا نام کے رگ کا جی کھول کر آلات ایک آسن سے
کچھ گھنٹے تک بجایا تھا جس کی یاد ابھی تک لوگ کرتے ہیں کہ میں
پر ایسی آلات نہیں سنی گئی. ایسے موقع دو ہی ایک آئے.

کھلتے ہیں جن لوگوں کے انھوں نے سکھایا ان میں دو کو ہم
جاننے ہیں وہ ہیں بنگال کے مشہور رئیس بابو تارا پراشا دگھوش
اور پرتھویا کھنجر جی. برہمی صاحب کو انھوں نے رُود بیٹا
(رُود بین) سکھایا تھی. اس کا چلن صرف رکن خاص کر مدلاس
صوبے میں ہے. اس سے ظاہر ہے کہ انھوں نے اسکول کے تعلیمت
کی بھی پوری جان کافی ان کو تھی.

اسی وقت رام پور سے پھر ان کو بلاہٹ آئی. اس وقت
حاجد علی خاں گدڑی پر تھے. انھوں نے وزیر خاں صاحب کو گدڑی
(بنا کر ان سے باقاعدہ بجیم سزوی کی. ان کے بڑے بیٹے

نیا ہند ہندوستانی کلاچر اور संगीत सितम्बर सन् १८७
नर्तार खां उर्फ प्यारे मियां की तालीम इन्होंने कलकत्ते में ही
शुरू कर दी थी. नवाब बहादुर के चाचा हैदर अली खां ने ही
नवाब को संगीत का शौक पैदा कराया था. नवाब बहादुर
को गाने में ज्यादा दिलचस्पी थी इस लिये थोड़ी चीन की
तालीम देकर इन्होंने उन्हें थुरपद और धमार ही ज्यादा याद
करवाया.

अब यह टिक कर रामपुर रहने लगे. कलकत्ते में एक
तरह से जम गए थे, पर इनके पुराने प्रेमो हैदर अली खां ने
बिन्होंने इन्हें मिलनी में भर्ष तक बड़े आदर के साथ रक्खा था,
जोर देकर इनसे कलकत्ता छोड़वाया और सदा के लिये फिर से
रामपुर में टिका दिया. इन्होंने नवाब बहादुर को बड़े जतन से
तालीम दी जिसके फल से वह ध्रुपद धमार में अच्छी खासी
महारत हासिल कर सके. और नवाब रामपुर ने इनकी कद्र थीं
बहुत की. हमेशा अपने साथ रखते थे. इनको एक अलग
आलीशान कोठी मय पूरे स्टाक के दे रखी थी. इनको महाराजा
काशमीर ने बहुत बड़ी तनजाह का लालच देकर बुलाने की
कोशिश की पर रामपुर छोड़ कर फिर कहीं जाने को इनका जी
नहीं चाहता.

बर्तार खां साहब की अवानी में जिन लोगों को इनसे तालीम
पाने का इत्फाक हुआ था उनमें खास यह हैं—चीनकार मुहम्मद
हुसेन, सितारिये अब्दुर रहिम, हार्मोनियम बजाने वाले सैयद
अब्बन अली, सितारिये नसीर अली, और कलकत्ते के मराहूर
रईस यादवेन्द्र बाबू खर्मादार पंचेनगढ़.

نظیر خاں عرف پیار سے میاں کی تسلیم انھوں نے کلکتہ میں ہی
شروع کر دی تھی. فاب بہادر کے چاچا حمید علی خاں نے ہی فاب
کو سنگیت کا شوق پیدا کرایا تھا۔ فاب بہادر کو گانے میں زیادہ
دلچسپی تھی اس لئے تھوڑی دیر میں ہی تسلیم دم کو انھوں نے انجمن
اور دھار ہی زیادہ یاد کروائے۔

اب یہ محکم کر لایم پید رہنے لگے۔ کلکتہ میں ایک طرح سے
جم گئے تھے۔ پیر ان سے پہلے نے پریمی حمید علی خاں نے انھوں
نے انھیں پھلسی میں برسوں تک بڑھے آد کے ساتھ رکھا تھا
زور دے کر ان سے کلکتہ چھڑوایا اور سدا کے لئے پھر سے لایم
ج میں لایا دیا۔ انھوں نے فاب بہادر کو بڑے بہن سے تسلیم دی جو
سے کھیل سے وہ کوسر پید دھار میں اتنی خاصی مہارت حاصل کرے۔
اور فاب لایم پید نے ان کی قدر بھی بہت کی۔ ہمیشہ اپنے ساتھ
رکھتے تھے۔ ان کو ایک ایک عالی شان کوٹھی مع لور سے اسٹاف
کے دسے دیکس تھی۔ ان کو مہلا طالا شمس نے بہت چڑی سخاوت کا
الانچ دے کر ملائے کی کوشش کی پر لایم پید چھوڑ کر پھر میں جانے
کو ان کا ہی نہیں پایا۔

وزیر خاں صاحب کی جوانی میں جن لوگوں کو ان سے تسلیم
پانے کا اتفاق ہوا تھا ان میں خاص یہ ہیں—پیر کار محمد حسین
ستار پید عبد الرحیم، اور محمد نجیم بجانے والے سید ابن علی
ستار پید نصیر علی، اور کلکتہ کے مشہور رئیس یادو سید بابو
زیندار پیر پیریت گکھ ۱۶۷

یہ بخوبی جگہ لیتے ہیں جیسے پکھاوج، اطلبیل، ستارا، بیچو، مولویوں، سرسٹول، اجلی، ترنگ، وغیرہ پیدھار بھی اٹھیں بہت یاد ہیں۔ ہندستان میں کوئی ایک آدمی ایسا نہیں جو اتنے باجے بجا سکتا ہو یا سنگیت کے بارے میں اتنی سب طرف جان لگائی رکھتا ہو۔ ان کی آواز بڑی روکھی اور پرکرائے خیال، دھڑپ، بوٹی اور ہتھار (وغیرہ جتنی تعداد میں ان کو یاد آتے شاید ہی کسی گویے کو یاد ہوں۔ اطلبیل اور پکھاوج قومی ایسا بجاتے ہیں کہ سننے سے معلوم ہوتا ہے کہ عمر بھر یہی کیا اور مشہور اڑے شکر (رنگت) کی پارٹی کے ساتھ فریب اور امریکا وغیرہ آئے ہیں اور ان کے علم اور کسب کی جو کیفیت ذرا سن لیں اور سمجھ لیں گے بڑے بڑے سنگیت اویسیوں نے کی ہے۔ ہندستان میں اس کے پیتر سنگیت کے جو دو سب سے بڑے استاد ہیں ان میں سے ایک یہ ہیں اور دوسرے ہیں سرود نواز استاد حفیظ علی۔ یہ دونوں استاد وزیر خاں صاحب کے شاگرد ہیں استاد حفیظ علی خاں نے صرف وزیر خاں صاحب سے ہی سیکھا اور بہت عرصے تک سیکھا۔ یہ حفیظ علی خاں اپنے والد نچے خاں صاحب سے لوری تعلیم پانچ لکھے۔ صرف اُسے نچا کرنے اور چلا گئے تھے۔ یہ دونوں ہی استاد ہندستان میں بڑے سرور ہند ہیں۔ حفیظ علی خاں صاحب سا سرود کے اور کسی باجے پر اچھے نہیں رکھتے، ان کے ہاتھ میں ایک قدرتی محاسن اور سٹروٹ اور جوشاید اس وقت اور کسی استاد کے ہاتھ میں نہیں ہو۔

यह बखूबी बजा लेते हैं जैसे पखावज, तबला, सितार, बैजा, मंडोलान, सुरमंडल, जलतरंग वगैरा. धुरपद धमार भी इन्हें बहुत याद है. हिन्दुस्तान में कोई एक आदमी ऐसा नहीं है जो इतने बजे बजा सकता हो या संगीत के बारे में इतनी सबतरका जानकारी रखता हो. इनकी आवाज बड़ी रखी है, पर पुराने रयाल, धुरपद, होटी (धमार) वगैरा जितनी तादाद में इनको याद है इतने शायद ही किसी गाये को याद हों. तबला और पखावज तो यह ऐसा बजाते हैं कि सुनने से मालूम होता है कि उमर भर यही किया है. मशहूर उदय शंकर (नतक) की पार्टी के साथ यह यूरोप और अमरीका वगैरा हो आए हैं और इनके इल्म और कसब की तारीफ फ्रांस और आस्ट्रिया के बड़े बड़े संगीत अलोचकों ने की है. हिन्दुस्तान में इस समय यंत्र संगीत के जो दो सब से बड़े उस्ताद हैं उनमें से एक यह हैं, और दूसरे हैं सरोद नवाज उस्ताद हर्नाज अली. यह दोनों ही उस्ताद बजीर खां साहब के शार्गद हैं.

उस्ताद अलाउद्दीन खां ने सिर्फ बजीर खां साहब से ही सीखा और बहुत असें तक सीखा. पर हकीज अली खां अपने बालिद नन्हें खां साहब से पूरी तालीम पा चुके थे. सिर्फ उसे पक्का करने और जिला देने के लिये दो बरस को रामपुर में खां साहब से सीखने गए थे. यह दोनों ही उस्ताद हिन्दुस्तान में बड़े हरदिल अर्थाज हैं. हकीज अली खां साहब सिवा सरोद के और किसी बाजे पर हाथ नहीं रखते. पर इसमें अपना सानी भी नहीं रखते. इनके हाथ में एक कुदरती मिठास है और 'सुरावट' है जो शायद इस वकत और किसी उस्ताद के हाथ में नहीं है.

کہتے ہیں۔ انکی उस इस वक्रत १०० से ज्यादा है. यह लखनऊ के आखरी नवाब वाजिद अली शाह के दरबारी थे. एक बार बड़े आदर के साथ लखनऊ के मारिस कालेज में प्रिंसिपल साहब ने इनका गाना कराया. गाना शुरू करने के पहले इन्होंने पुराने संगीत के बारे में अपनी कुछ राय जाहिर की थी और उस सिलसिले में कहा था कि नोटेशन या स्वरलिपि पद्धति से हیندु-स्तानी संगीत कभी नहीं सीखा जा सकता क्योंकि हमारी पुरानी गायकी की बंदिशें इतनी उलभी हुई हैं कि उनकी सही स्वरलिपि हो ही नहीं सकती. साथ ही आपने बातों बातों में यह भां कहा कि पंडित जी को कितानों में जो सुर लिपियां दी गई हैं वह ज्यादातर गलत हैं. इसके बाद गाना शुरू करते करते आपने चुनौती के तौर पर यह भी कहा कि मैं एक पुरानी चीज गा रहा हूँ कोई कर तो दे इसकी स्वरलिपि.

प्रिंसिपल साहब उनके बगल ही में बैठे हुए सब सुन रहे थे. पर उस वक्रत उसनाद खुशंद अली उनके व उनके कालेज के मेहमान थे और साथ ही बड़े बुजुर्ग थे. उन्होंने उन्हें टोकना मुनासिब नहीं समझा पर गाना शुरू होने के साथ ही चुपचाप उनके पीछे पंसिल और नोटबुक लेकर बैठ गए. लोगों ने देखा कि जब तक गाना चलता रहा, प्रिंसिपल साहब ध्यान मग्न और एक दिल हो कर लगातार लिखते ही रहे. सुनते बालों ने जो सामने बैठे थे उनकी यह हरकत देखी पर खुशंद अली साहब न देख सके क्यों कि उनके पीछे जो दो तानपूरा खेड़ने वाले बैठे थे उनके पीछे प्रिंसिपल साहब बैठे थे.

بہار میں ان کی عمر اس وقت ۱۰۰ سے زیادہ تھی۔ ان کے کھنڈ کے آخری قلاب داخل علی قادی کے درباری تھے۔ ایک بار مجھے آپ کے ساتھ کھنڈ کے اس کالج میں پرنسپل صاحب نے ان کا گانا کرنا دیکھا۔ شروع کرنے کے پہلے انھوں نے پیرا نے سنگیت کے بارے میں اپنی سمجھ لائے ظاہر کی تھی اور اس سلسلے میں کہا تھا کہ ہندوستانی موسیقی سے ہندوستانی سنگیت کبھی نہیں سیکھا جاسکتا کیونکہ ہماری پرانی گائیکی کی بندشیں اتنی اچھی گئی ہیں کہ ان کی صحیح سولہوی ہو ہی نہیں سکتی۔ ساتھ ہی آپ نے باتوں باتوں میں یہ بھی کہہ کر پرنسپل صاحب کی کتابوں میں جو سرلیپیاں دی گئی ہیں وہ زیادہ تر غلط ہیں۔ اس کے بعد گانا شروع کرتے کرتے آپ نے پھوٹی کے طہ پر یہ بھی کہا کہ میں ایک پڑائی چیز گا رہا ہوں۔

پرنسپل صاحب ان کے بول ہی میں بیٹھے ہوئے سست سن رہے تھے۔ پھر اس وقت استاد خورشید علی ان کے دان سے کالج کے مکان تھے اور ساتھ ہی بڑے بڑے گانے شروع کرنے کے ساتھ ہی انھیں ٹوکنا مناسب نہیں سمجھا۔ پھر گانے شروع کرنے کے ساتھ ہی پرنسپل صاحب ان کے پیچھے پانسلی اور نوت بک لے کر بیٹھ گئے۔ لوگوں نے دیکھا کہ جب تک گانا چلتا رہا پرنسپل صاحب دھیان مگن رہے اور ایک دل بوکر گانا لکھتے ہی رہے۔ کچھ دنوں کے بعد ان کے سامنے بیٹھے تھے ان کی یہ حرکت دیکھی یہ خورشید علی صاحب نے دیکھا کہ پھر ان کے پیچھے دو تان پورا خےڑنے والے بیٹھے تھے۔ ان کے پیچھے پرنسپل صاحب بیٹھے تھے۔

گانا ختم ہوا، پرنسپل صاحب کا بیچ کی طرف سے خال صاحب کا حکم کرنے پہنچے اور اس رسم کو مناسب لفظوں میں لفظی طور پر انھوں نے سہولتی سے بارے میں خال صاحب نے جو لائے ظاہر کی تھی اس پر ہم لفظوں میں اپنی نا اتفاقی بتائی اور ساتھ ہی یہ بھی پوچھا کہ خال صاحب نے جو چیز ابھی گائی ہو کیا آپ کو اس سے پھر سے مستن پسند کریں گے؟ دونوں نے تو بڑے تازگی سے مسننے کی ہرٹ کی ہی پر خال صاحب نے غاص طور سے مسننے کی خاطر پیش ظاہر کی۔ آخر پر پرنسپل صاحب تان پورا لے کر سامنے وہی فرٹ جیک کھول کر بیٹھ گئے۔ استھالی انترے وہ جموں کا تھول سا گانے لینی ناٹائی کی جو بھر تصویر انھوں نے لکھ دی اور وہی دکائی وہی میں خال صاحب کی ہی ذرا دہرائے اور پہلا وہی لکھی جوں کے تھول کہے اور لکھی گانے کے تھولوں میں ناٹائی اور انترے پر وہ بھانک اور دھڑولوں میں ہاں وہ کے علاوہ 'ستھالی' و 'آجھوگی' نام سے دو بھانک اور ہوتے ہیں۔ یہ گانے ناٹکیوں کے رہتے ہوئے ہیں جیسے تان سین، بھو، گول، سلطانک وغیرہ۔ اسی سے گانے کی مول جیٹا کو ناٹائی کہتے ہیں۔ اور بھانک کہتے ہیں کہ تھولوں میں جرت ناٹائی کی سہ لپٹاں ہی دی گئی ہیں۔ ناٹائی گانے کے بعد سچ کا دستاؤ یا پھیلاؤ، پہلا وہی، اور استھالی کو دوسرے ڈھنگ سے پڑھا کر آٹھ لپٹوں میں ظاہر کرنا، آٹھ لپٹوں آٹھوں آدمی کے ذریعے سے ہوتا ہے اس سچے کو گانائی کہتے ہیں۔ سچ سچ ہر وہی ہو اور گانائی اپنے ڈھنگ سے انھیں کرنا ہے۔ اصل جو ناٹائی اس میں بہ درت یا مد بدل نہیں ہونا چاہئے۔

گانا خاتم हुआ، प्रिंसिपल साहब कोलेज की तरफ से खाँ साहब का शुक्रिया करने उठे और इस رسم को मुनासिब लफ्जों में पूरी कर उन्होंने स्वरलिपि के बारे में खाँ साहब ने जो राय चाहिर की थी उस पर मुलायम लफ्जों में अपनी नाहत्ताफाकी बताई और साथ ही यह भी पूछा कि खाँ साहब ने जो चीज अभी गाई है क्या आप लोग उसे फिर से सुनना पसंद करेंगे ? लोगों ने तो बड़े तपाक से सुनने की हठ की ही पर खाँ साहब ने खास तौर से सुनने की खाहिश चाहिर की. आखिर प्रिंसिपल साहब तानपूरा लेकर सामने वहीं नोट बुक खोल कर बैठ गए. स्थायी अंतरे वह उगों का त्याग मुना गण यानी 'नायकी' की ह वह तसवीर इन्होंने रख दी और फिर 'गायकी' में खाँ साहब की कही ज्यादातर ताने और 'बहलावे' भी उगों के त्याग कह गए और

पुराने गानों में 'स्थायी' और 'अन्तरे' यह दो भाग और ध्रुपदों में इन दो के अलावा 'संचारी' व 'आभोग' नाम से दो भाग और होते हैं. यह पुराने नाचकों के रहे हुए हैं जैसे तानसेन, वैजू, गोपाल, सदाशंग वगैरह. इसी से गाने की मूल रचना को 'नायकी' कहते हैं. और भातखंडे की किताबों में सिर्फ 'नायकी' की स्वरलिपियां ही दी गई हैं. नायकी गाने के बाद चीज का 'विस्तार' या फैलाव 'बहलावों' (स्थायी को दूसरे ढंग से बढ़ा कर आलापों में चाहिर करना) आलापों, तानों आदि के चरित्र से होता है. इस हिस्से को 'गायकी' कहते हैं. यह तौर जरूरी है और हर गर्वया अपने ढंग से इन्हें करता है. असल है 'नायकी'. इस में परिवर्तन या रहवरल नहीं होना चाहिये.

उन्हीं के दंग के और उन्हीं वचन व भिक्कार की बहुत सी अपनी ताने भी कहीं. खाँ साहब आँखें फाड़ कर मौचक्के से गुरू से आखिर तक सुनते रहे और आखिर में उनके मुँह से यह अलकात्र निकले कि "यह लौंडा आदमी है या भूत ?" उन्होंने इस बात को कबूल किया कि नायकी की सही स्वरलिपि तुमने की और ताने भी मेरे आंदाज की कहीं. प्रिसिपल साहब ने बड़े अक्षय से उनकी इज्जत करते हुए उनकी दुआ माँगी और उन्होंने खुश हो उनकी पीठ पर हाथ रक्खा.

पंडित भातखंडे इन प्रिसिपल साहब के गुरू थे. उन्होंने अपनी किताब के चौथे भाग में (पृष्ठ ६) उन सब उस्तादों की कोहरिस्त दी है जिनसे उन्हें चीखें मिलीं. इनमें मोहम्मद अली (लड़के की तरफ से तानसेन की आखिराँ औलाद जिन की चर्चा हम आगे करेंगे) और वजीर अली खाँ साहब को अपना गुरू बताया है. इनके सिवा और जिन लोगों के नाम लिये हैं उनमें मुसलमान गुनी ही ज्यादा हैं जैसे—

नवाब बहादुर हिज हाइनेस हाभिद अली खान रामपुर, साहब चांदे सआदत अली खाँ रामपुर, खाँ साहब मुहम्मद अली खाँ, बासित खाँ रामपुर; खाँ साहेब वजीर खाँ व अमीर खाँ रामपुर; खाँ साहेब मुहम्मद अली खाँ कोठी बाल जयपुर मनरंग घराने के; आशिक अली खाँ जयपुर; अमहद अली खाँ जयपुर; हैदर खाँ (वैराम खाँ के शानिद); खाँ साहब फैयाज खाँ 'आफताब मौसूकी' बड़ोदा; रत्नीले घराने के (मौजूद हैं) खाँ साहब अमीर खाँ 'गुलाब सागर' जलतरंग नवाज बड़ोदा.

سپتمبر ۱۹۰۷ ہندوستانی کلاچر اور संगیت

انہیں کے ڈسٹنگ کے اور انہیں وزن و مقدار کی بہت سی اپنی تانیں بھی کہیں. خاں صاحب آکھیں کھا کر کھینچنے سے شروع سے آخر تک کھینچنے سے اور آخر میں ان کے منہ سے یہ الفاظ نکل کر پونڈ آوی ہو یا کھوت ہے "انکھوں نے اس بات کو قبول کیا کہ اپنی کی صحیح سولہ پانچ نام نے کی اور تانیں بھی میرے انداز کی کہیں. پرنسپل صاحب نے بڑے ادب سے ان کی عزت کرتے ہوئے ان کی دعا مانگی اور انکھوں نے خوش ہو ان کی پیٹھ پر ہاتھ رکھا. یہ مدت بھات کھنڈے ان پرنسپل صاحب کے گرو تھے. انکھوں نے اپنی کتاب کے چوتھے کھاگ میں (پہرست ۶) ان سب استادا کی فہرست دی جو جن سے انہیں چیزیں ملیں. ان میں محمد علی اورک کی طرف سے "ن سین کی آخری اطلاع جن کی چرچا ہم آگے سے کریں گے) اور دوسری علی خاں صاحب کو اپنا گرو بتایا ہے. ان کے سوا اور جن لوگوں کے نام لئے ہیں یہ مسلمان گنی ہی زیادہ

ہیں جیسے —

نواب بہادر نیر اٹس حامد علی خاں لادم لیدہ صاحبزادہ سعادت علی خاں لادم لیدہ خاں صاحب محمد علی خاں، بالسط خاں لادم لیدہ خاں صاحب وزیر خاں و امیر خاں لادم لیدہ خاں صاحب محمد علی خاں کوٹلی وال جے لیدہ من جگت کھرانے کے! عاشق علی خاں جے لیدہ، احمد علی خاں جے لیدہ، حیدر خاں لادم خاں کے شاگرد، خاں صاحب خیاخ خاں و خاں صاحب موسیقی، مجدد، رنجیلے کھرانے کے (موجود ہیں) خاں صاحب امیر خاں، خطاب ساگر، جلی تر بندہ، نواز پٹروہ.

ان کے سوا نرنجن خاں، پیر بھڑا، بھالیر، انندبھیا خاں بھڈے، آرمین خاں میراج بھرا کے ہندو، شانیوں کا بھی نام دیا ہے جنھوں نے ہندو، چیچے اور پیر لپی یا تو اپنے سامنے کرنا دیا یا ان کی پیر لپی سے سن کر تقدیر ہی کیا۔ اس کتاب میں یہ بھی لکھا ہے کہ ان چیزوں کو ادیب کے ہونے استادوں سے سیکھ کر بنائے جی نے گراموفون ریکارڈ میں ان کی نائی بھری اور وہ ریکارڈ موجود ہیں انھیں دیکھا تو دل کے سارے یہ سرلیاں بنی ہیں۔ ان سر پیٹوں کے صحیح ہونے میں آپیں شبہ نہ کرنا چاہئے۔ ہاں ٹرینی پدھی کی ہی جو کہیاں ہیں ان کے لئے بے شک مجبوری ہو، اور ساتھ یہ بھی یہ کہہ سکتے ہیں کہ جو لوگ سیاہے کسی گھرانے کے استادوں سے ان چیزوں کو سیکھ سکیں ان کی تعلیم بے شک زیادہ ہی ہوگی۔ بہتیں وقت پہنچتے ہی نے اس کام کو اچھے میں لیا اس وقت یہ گھرانے بڑی تیزی سے مٹ رہے تھے اور یہ طے تھا کہ اگر انھوں نے یہ کام اپنی اسادھان محنت اور بہت ڈانٹا کر اور بے شمار دولت خرچ کر نہ کیا ہوتا تو آج یہ مٹ چکی تھیں۔ آج سے سات آٹھ سو برس پہلے تک کی چیزیں ان کے دلائل سنگھ میں ہیں۔ سنگھ زمانے کے ہندو اپنی سنگرتی کی سب چیزوں کو بھول چکے تھے۔ انھیں سوا گھن اور ضلایا کے دور کچھ سمجھتا ہی نہیں تھا۔ اس زمانے کی جو کچھ کوٹا لٹی ہو وہ پانچویں کی اور اٹھارہویں کی تحریک میں ان کے دانش کی کوٹا جیسے نایابا کھید، کھٹ رتو پانہ اساکھ اور

نया ہیندو ہیندوستان کی کلاچر اور संगیت سیتابھار سن ۱۹۷۰

رہسبچار کی کثرتا، جہاں تک سامکھ میں آتا ہے ہیندو کینکوی
یہ کبیاا ائی، اسسے دیکلچرپی اڈوڈ چوکے اے۔ موسلمانوں نے
ہی اس اسلم کو کینلنا رکھنا، اور جرنل کی مندر سے پڈیت
ماترہڈے، راجا نواب ازلو، پڈیت کینلن ڈینگار کوروا ان
کویوں کو رکورڈ کرا سکے اور سبرلین کرا سکے۔

ہماری پورانی اور مہکلہ سسکلر کا اس संगیت سے
کیننا بڈا سمبندھ ہے یہ کورڈ بھی سامکھ سکاا ہے، اور
اگر کھے موساکیک جاب ہم اس پر گور کرتے ہے کی موسلمانوں
کی دن اس ماملے میں کینلہ کچااا ہے تو ہمیں بڈا اچرر
ہوئا ہے۔

کوری رلہاں ساہب کے رلن لڈکے اے۔ نوری رلہاں (اچارے میناں)،
نوری رلہاں، و سگری رلہاں، انمیں بڈے لڈکے نوری رلہاں کی رلارلیم
پوری ہو چوکی ائی، گانے کی رلرک ان کی کچااا دیکلچرپی دےک
ہلے ڈورپد، مہمار اور آلالپچار کی ہی رلارلیم کچااا مینلہ
ای اور ہندی رلرکار میں انکی رلنااا بھی ہو چوکی ائی کی
اچکایک ہئیے کی کوروری سے انکا اناکال ہو گیا، بڈاپے میں
یہ سدما کوری ازلو ساہب ن رلرارل کرا سکے اور
اس کے دو یا رلن رلررر رلر ۱۹۵۷ میں بڈا بھی کول کسے۔
لورا ککلی سے اڈوڈ لڈکے سگری رلہاں اور پوتے دوری رلہاں کی
رالارلیم اک ہڈ تک رلہاں ساہب پوری کرا گا اے، سگری رلہاں کو
گانے کی رلارلیم مینلہ ائی اور دوری رلہاں کو کون کی۔

کوری رلہاں ساہب کے اناکال کے کول دن رلر نواب
کرااااا ارا مینر ازلو رلہاں بھی کول کسے اور انکے رلرکار

نیا ہند ہندوستان کی ایلر ایلر سیکلر

رلر سولاد کی کوریا، کمال اک کچھ میں آتا ہو ہندو کین کی یہ دویا
کئی اس سے دلچسپی کھوڈ کئے تھے، سلالوں نے ای اسلم
کو زندہ رکھا، اور انھیں کی مدد سے پڈلر کجات کونرے،
رلر لواب علی و پڈلر دسٹو دلر ڈیور ان کیزوں کو رلرارڈ کر اسکے
اور سولر پی کورے۔

ہامری کورانی اور کچل سسکلر کا اس سنگیت سے کتا بڑا مہنڈھ
ہی یہ کوی بھی سمکھ سکاا ہو، اور اوپر کے سلالر کب اکم اس پر
کیز کرتے ہیں کرسلالوں کی دین اس سائے میں کتنی زیادہ ہو
تو ہمیں بڑا اچرر ہوئا ہو۔

وزیر رلہاں صاحب کے تین بکے تھے، نظیر رلہاں رلرارے سلالر
یہ نظیر رلہاں و صنیئر رلہاں، ان میں بڑے بڑے بڑے نظیر رلہاں کی تسلیم
پوری ہوئی تھی، کھانے کی طرف ان کی زیادہ دلچسپی دیکھ کر انھیں
کھپر پڈ دسٹو اور آلالر کھاری کی ہی تسلیم زیادہ ملی تھی اور اندور
دربار میں ان کی کولنااا کچھ ہوئی تھی کچااا یک سہینڈ کی کوروری
سے ان کا اناکال ہو گیا، بڑھکھاپے میں یہ سددر وزیر علی صاحب
رلر اناکال کورے اور اس کے دو یا رلن برس بعد ۱۹۶۴
میں خود بھی کول لے، خوش دلی سے کچھوٹے بڑے صنیئر رلہاں
اور بڑے دلر رلہاں کی تسلیم ایک صد تک رلہاں صاحب پوری کورے
تھے، صنیئر رلہاں کو کھانے کی تسلیم ملی تھی اور دلر رلہاں کو کین کی
وزیر رلہاں صاحب کے اناکال کے کچھ دن بعد لواب
رلرارہ رلر علی رلہاں بھی کول لے اور ان کے دربار

کی گانے بجاتے کی مبالغہ دھڑکی گئی، خلیفہ صفحہ خاں لاہور چھوڑ کر گلگت چلے گئے اور وہاں سوگدیہ ممالا جا کر رہیں۔ مومن کے پورے گائے گئے مینہ مومن کے گروہ کے روپ میں قیادت ہوئے۔ ان کے سامنے مشورہ کا ایک کرشن چندر دے (سرداس) نے بھی ان سے تعلیم یعنی شروع کی۔ زمین سنگھ گوری پور کے رئیس۔ سیریندر کمار رائے جھوڑھی کے شاگرد ہیں۔ یہ اور ان کے پڑا بھیند کھنڈ رائے جھوڑھی میں سنگیت کے مشورہ حاجی و پرجا کر کے والے ہیں اور انھوں نے گلگت میں 'سینی سنگیت ڈویژن' نام کا ایک کالج بھی قائم کیا اور وزیر خاں اور محمد علی خاں کے پیش کے اس وقت قریب ۵۳ برس کے ہیں اور بین میں کافی مہارت حاصل کر چکے ہیں۔ انھیں گوگھ اور خاں صاحب ان کی قیادت میں کر کے چلے ہی چلے یہ پراپر انھوں نے اپنی محنت سے بہت ترقی کی اور دن پر دن کرتے جا رہے ہیں۔

چینکار خاندان کے سب خاں لوگوں کی چارچا ہم کر چکے۔ یہ بے شک ہے کہ ہم نے ان سے بہت سیکھا ہے۔ اب ہم ان سے ملنے کی خواہش کرتے ہیں۔

کی گانے بجاتے کی مجلس ٹوٹ سی گئی۔ خلیفہ صفحہ خاں لاہور چھوڑ کر گلگت چلے گئے اور وہاں سوگدیہ ممالا جا کر رہیں۔ مومن کے پورے گائے گئے مینہ مومن کے گروہ کے روپ میں قیادت ہوئے۔ ان کے سامنے مشورہ کا ایک کرشن چندر دے (سرداس) نے بھی ان سے تعلیم یعنی شروع کی۔ زمین سنگھ گوری پور کے رئیس۔ سیریندر کمار رائے جھوڑھی کے شاگرد ہیں۔ یہ اور ان کے پڑا بھیند کھنڈ رائے جھوڑھی میں سنگیت کے مشورہ حاجی و پرجا کر کے والے ہیں اور انھوں نے گلگت میں 'سینی سنگیت ڈویژن' نام کا ایک کالج بھی قائم کیا اور وزیر خاں اور محمد علی خاں کے پیش کے اس وقت قریب ۵۳ برس کے ہیں اور بین میں کافی مہارت حاصل کر چکے ہیں۔ انھیں گوگھ اور خاں صاحب ان کی قیادت میں کر کے چلے ہی چلے یہ پراپر انھوں نے اپنی محنت سے بہت ترقی کی اور دن پر دن کرتے جا رہے ہیں۔

چینکار خاندان کے سب خاں لوگوں کی چارچا ہم کر چکے۔ یہ بے شک ہے کہ ہم نے ان سے بہت سیکھا ہے۔ اب ہم ان سے ملنے کی خواہش کرتے ہیں۔

چینکار خاندان کے سب خاں لوگوں کی چارچا ہم کر چکے۔ یہ بے شک ہے کہ ہم نے ان سے بہت سیکھا ہے۔ اب ہم ان سے ملنے کی خواہش کرتے ہیں۔

جلیخان والا باغ کی کھل یادگار

(مہارے رام جی دت)

(۳)

زبردستی کے مہمان

اب جب کہ زمانہ خانہ کی ستیاری آئی ہے وہ جگہ تھی جس میں داخل ہونے کے زمانے میں شہر سے بڑے بڑے گھروں کو ایف ایس آئی سے سب کے ہاتھ بانٹھ کر سر بازار پیدل حائلوں کی طرح کھینچ کر آیا گیا تھا، اس لئے کہ وہاں کی جیتا پھیر بھی انگریزی فوجوں کے حالات سے اٹھانے کی ہمت نہ کرے۔

رات کا وقت تھا شاید آدھی رات بیت چکی تھی۔ باہری دروازے پر دستک تھی۔ باہری ٹولی میں نہایت سستی تھی۔ جی جی جی میں سے کسی صاحب اور ایک پنجابی سچے تھے۔ ان کا نام یاد نہیں، مگر ان کی گھٹی ڈھکی تھی۔ صاحبان دو داخلی پھرتی اور کچھ افراد کے حالات سے جان لاری کے ہم قافل تھے۔ ہمارے ساتھ اگر یہ نہ آتے تو اس اجنبی جگہ سے اور ضابطہ میں عجیب مزید زمانے میں۔ اسی اپنے کام میں اور زیادہ مشکلیں آتیں۔

ستھان پر اترتے ہی ایسا جان بچا کہ ہم کسی اچھے درخت میں آ پہنچے۔ اصل میں اس سے وہ تھا بھی اچھا درخت۔ اسے پہلے نے جوش میں آکر اسٹیشن چلا دیا تھا اور

جلیخان والا باغ کی کھل یادگار

(بھائی رام جی دت)

زبردستی کے مہمان

اب جب کہ زمانہ خانہ کی ستیاری آئی ہے وہ جگہ تھی جس میں داخل ہونے کے زمانے میں شہر سے بڑے بڑے گھروں کو ایف ایس آئی سے سب کے ہاتھ بانٹھ کر سر بازار پیدل حائلوں کی طرح کھینچ کر آیا گیا تھا، اس لئے کہ وہاں کی جیتا پھیر بھی انگریزی فوجوں کے حالات سے اٹھانے کی ہمت نہ کرے۔

رات کا وقت تھا شاید آدھی رات بیت چکی تھی۔ باہری دروازے پر دستک تھی۔ باہری ٹولی میں نہایت سستی تھی۔ جی جی جی میں سے کسی صاحب اور ایک پنجابی سچے تھے۔ ان کا نام یاد نہیں، مگر ان کی گھٹی ڈھکی تھی۔ صاحبان دو داخلی پھرتی اور کچھ افراد کے حالات سے جان لاری کے ہم قافل تھے۔ ہمارے ساتھ اگر یہ نہ آتے تو اس اجنبی جگہ سے اور ضابطہ میں عجیب مزید زمانے میں۔ اسی اپنے کام میں اور زیادہ مشکلیں آتیں۔

ستھان پر اترتے ہی ایسا جان بچا کہ ہم کسی اچھے درخت میں آ پہنچے۔ اصل میں اس سے وہ تھا بھی اچھا درخت۔ اسے پہلے نے جوش میں آکر اسٹیشن چلا دیا تھا اور

اس کے جواب میں انگریزی حاکموں نے جتنا کے گھروں کو زیادہ کر دیا تھا اور دلوں کو سجا دیا تھا۔

ہم نے کہا کہ کوئی ایک نہ دکھائی بھی رہے تو انھوں نے ہماری مدد کرنے سے بہانہ کیا۔ حکومت گلگت اسٹیشن ماسٹر ہر ایک نے ہم سے بے رحمی برتی۔ ہمارے پنجابی دوست و صلاح کار نے ہمیں بتلایا کہ یہ سب خفیہ پولیس کے ڈر کا نتیجہ ہے۔

ہمیں بعد کو یہ پتہ چلا کہ جب ہم امرتسر سے نکلنا شروع کرے تو ہمیں انہیں ہمارے کام میں لگائی جائیں، لگائی جائیں کہ ہمیں ایک سب سے اپنا اسباب خود ڈھونڈنا پڑا ایک دہلی صاحب کے بچے تک پہنچا جو اسٹیشن کے پاس ہی تھا اور جہاں ہمارے گئے لا ان پنجابی بھجن نے انتظام کیا تھا۔

جب ہم دہلی صاحب کے ٹکے پر پہنچے تو اسٹیشن میں گھومنے کے بعد یا کچھ آوازیں بھی دہلی گھر کوئی جواب نہیں ملا۔ کچھ دیر تک ہم سب دہلی گھر کو کھٹکھٹایا گئے۔ کچھ عرصے میں ہمیں آواز آئی کہ خیرگی بات ہے کہ انداز سے کوئی بولتا نہیں۔

پرانے نکلان میں بالاکلیا میں تو تھا نہیں۔ ۱۰ جون صبح ہوا کہ ہم نے یہی سنا سب سمجھا کہ کسی طرح سے برآمد سے ہی میں بات کاٹیں، صبح دیکھا جائے گا۔

ہم چاروں نے ورامند میں جمنی اور ایک گھنٹے میں دلی

ہم نے کہا کہ کوئی ایک نہ دکھائی بھی رہے تو انھوں نے ہماری مدد کرنے سے بہانہ کیا۔ حکومت گلگت اسٹیشن ماسٹر ہر ایک نے ہم سے بے رحمی برتی۔ ہمارے پنجابی دوست و صلاح کار نے ہمیں بتلایا کہ یہ سب خفیہ پولیس کے ڈر کا نتیجہ ہے۔

ہمیں بعد کو یہ پتہ چلا کہ جب ہم امرتسر سے نکلنا شروع کرے تو ہمیں انہیں ہمارے کام میں لگائی جائیں، لگائی جائیں کہ ہمیں ایک سب سے اپنا اسباب خود ڈھونڈنا پڑا ایک دہلی صاحب کے بچے تک پہنچا جو اسٹیشن کے پاس ہی تھا اور جہاں ہمارے گئے لا ان پنجابی بھجن نے انتظام کیا تھا۔

جلیان والا باغ

اس کے جواب میں انگریزی حاکموں نے جتنا کے گھروں کو

زیادہ کر دیا تھا اور دلوں کو سجا دیا تھا۔

ہم نے کہا کہ کوئی ایک نہ دکھائی بھی رہے تو انھوں نے ہماری مدد

کرنے سے بہانہ کیا۔ حکومت گلگت اسٹیشن ماسٹر ہر ایک

نے ہم سے بے رحمی برتی۔ ہمارے پنجابی دوست و صلاح کار

نے ہمیں بتلایا کہ یہ سب خفیہ پولیس کے ڈر کا نتیجہ ہے۔

ہمیں بعد کو یہ پتہ چلا کہ جب ہم امرتسر سے نکلنا شروع کرے

تو ہمیں انہیں ہمارے کام میں لگائی جائیں، لگائی جائیں کہ

ہمیں ایک سب سے اپنا اسباب خود ڈھونڈنا پڑا ایک دہلی صاحب

کے بچے تک پہنچا جو اسٹیشن کے پاس ہی تھا اور جہاں

ہمارے گئے لا ان پنجابی بھجن نے انتظام کیا تھا۔

جب ہم دہلی صاحب کے ٹکے پر پہنچے تو اسٹیشن میں گھومنے

کے بعد یا کچھ آوازیں بھی دہلی گھر کوئی جواب نہیں ملا۔ کچھ دیر

تڑکا हुआ. बड़ी उन्मीद में हमारी आंखें तुलीं कि वकील साहब के दरशन होंगे. मगर काफी दिन चढ़े उन्होंने हलके से चोर की तरह अपनी शकल दिखाई और बराले भांकेते हुए, कुछ खोए हुए से बोले—“अच्छा आप लोग आगए.....कब आए..... आप को कोई तकलीफ तो नहीं हुई?”

हमने उनसे रात का किरसा सुनाया तो सिर खुजलाते घबराते हुए कहने लगे—“मैं बड़ी परेशानी में फँसा हूँ.....घर में बच्चा होने वाला है.....आपकी खातिर करने से मजबूर हूँ.....” उनकी बातों के तर्ज से साफ जाहिर था कि उनके दिल में कुछ है और कह कुछ रहे हैं. बहुत परेशान जरूर दिखते थे.

“अच्छा आप लोगों के खाने का मैं इन्तजाम करता हूँ.....घर में तो इस वक़्त मैं कुछ कर नहीं सकता.....बाजार से सब ठीक हो जायगा” वकील साहब ने बड़ी परेशानी के साथ कहा.

फिर वकील साहब ने हमारे पंजाबी मित्र से कुछ अकले में बातें कीं. तब हमें पता चला कि विचारे वकील साहब हमको अपने यहां टिकाने से डर रहे थे. कुछ दिन पहले शहर के पुलिस अफसरों ने उनको साफ़ इशारा कर दिया था कि अगर उन्होंने हमें अपने घर में पनाह दी तो उनके लिये अच्छा न होगा.

और यह वकील साहब भी उन बुजुर्गों में से थे जो कुछ ही महिने पहले हाथ बाँध कर सड़कों पर घुमाए गए थे और नंगी संगीन चढ़ी बंदूकें लिये सिपाही साथ थे. उस वेइजवती और जुलम का असर अभी तक इनके ऊपर छाया हुआ था. अलावा इसके अभी गुजरानवाला क्या पूरे पंजाब भर में पुलिस का रौब बैठा हुआ था.

تڑکا ہوا۔ بڑی اُتھیل میں ہمارے آنکھیں کھلیں کہ وہیں صاحب کے درشن ہوں گے۔ مگر کافی دن چڑھے انھوں نے ہلکے سے چور کی طرح اپنی شکل دکھائی اور ہلکے سے بولے: “اچھا آپ لوگ آئے... کب آئے... آپ کو کوئی تکلیف تو نہیں ہوئی؟”

ہم نے ان سے رات کا قصہ سنایا تو کھجلائے گھبرائے ہوئے کہنے لگے۔ میں بڑی پریشانی میں کھینسا ہوں..... گھر میں بچہ ہونے والا ہے..... آپ کی خاطر کرنے سے مجبور ہوں..... ان کی باتوں کے طرز سے صاف ظاہر تھا کہ ان کے دل میں کچھ ایسا اور کچھ

سہ ہے۔ بہت پریشانی ضرور دیکھتے تھے۔ اچھا آپ لوگوں نے کھانے کا میں انتظام کرتا ہوں..... گھر میں تو اس وقت میں کچھ نہیں کر سکتا..... بازار سے سب کھلیں ہو جائے گی۔” وہیں صاحب نے ہمارے پنجاب مہتر سے کچھ اکیلے میں باتیں پھر کر وکیل صاحب سے کیا کہ بیچارے وکیل صاحب ہم کو اپنے بیان کھولنے کیوں تب نہیں بچھڑا کر بیچارے وکیل صاحب ہم کو اپنے بیان کھولنے سے ڈر رہے تھے۔ کچھ دن پہلے شہر کے پولیس افسروں نے ان کو صاف نشانہ لویا تھا کہ اگر انھیں نے ہمیں اپنے گھر میں پناہ دی تو ان کے لئے اچھا نہ ہوگا۔

اور یہ وکیل صاحب بھی ان بندگان میں سے تھے جو کچھ ہی لینے پہلے ہاتھ بانٹ کر سرکوں پر گھسائے گئے تھے اور کئی ستھیں چھٹی بندھتیں تھے۔ اس کے سوا تو انھیں کچھ اور بھی نہ تھا۔ ان کے اوپر چھاپا ہوا تھا۔ اس کے اسی گھرانے کا لہو لہا ہوا ہے۔ پنجاب کجرتیں پولیس کا رعب بچھلایا تھا۔

हमें वकील साहब से पूरी हमदर्दी थी. उन्हें ज्यादा तकलीफ देना उनके साथ बेहन्साकी व दुशामनी करना था. हमने उनका भोजन तो बरकर रबीकार किया और वड़े शौक से अपना पेट भरा ! तंदूर की धी चुपड़ी रोटियाँ दही के साथ बड़ी अच्छी लगी.

हमने आपस में सलाह कर के यह तय किया कि हम उसी दिन किसी दूसरे मकान में चले जायेंगे. यह बात हमने वकील साहब से भी कह दी. इसको सुनकर उनके चेहरे पर रौनक आ गई. तब उन्होंने हमसे भी साफ लफ्जों में कहा—“मुझे बड़ी शर्मिन्दगी है. पर आप जानते नहीं कि यहां क्या क्या जुलम हुए हैं. अभी अभी मेरे पास पुलिस का एक संदेश आया था. उसमें धमकी थी कि अगर मैंने आप को अपना मेहमान बनाया तो मेरी खैर नहीं..... अब आप ही बतलाइये..... मुझे यहीं रहना है..... कैसे पुलिस से खैर करूं..... यहां तो आज इन्हीं का राज है.”

हमने उनको पूरा इतमीनान दिलाया कि हम जितनी जल्द हो सकेंगे उनका मकान छोड़ देंगे और बिना चरा सा भी बुरा माने.

(४)

हमारा बापकाट

अब हमें कि कहुई कि जाणं तो कहीं जाएं. इस आइं वक़्त हमारे पंजाबी दोस्त काम आए. उन्होंने कहा—“आप जरा देर सबर कीजिये. देखिये मैं बाजार में जाकर मकान ठीक करने की तरकीब लड़ाता हूँ.”

कुछ घंटों बाद वह लौट कर आए और बोले—“बलिये.

سید صاحب
جلیان والاباغ
ستمبر سن ۱۹۴۷

ہمیں وکیل صاحب سے پوری آمدردی تھی . انھیں زیادہ تکلیف دینا ان کے ساتھ بے انصافی و دشمنی کرنا تھی . ہم نے ان کا کھانا تو ضرور سوچا کہ کیا سادہ پڑے شوق سے اپنا پیٹ بھرا ! متن و کھانسی چھڑی لہشیاں دہی کے ساتھ بونی اچھی لگیں .

ہم نے آپس میں صلاح کیے یہ طے نہی کر ہم اسی دن کسی دوسرے مکان میں چلے جائیں گے . یہ بات ہم نے وکیل صاحب سے بھی کہ دی . اس کو سن کر ان کے چہرے پہ لطف اُٹھی . تب انھوں نے ہم سے بھی صاف لفظوں میں کہا—“مجھے بڑی شرمندگی ہے کہ آپ جاننے نہیں کہ یہاں کیا کیا ظلم ہوئے ہیں . ابھی ابھی میرے پاس پولیس کا ایک سند آیا تھا . اس میں دکھائی تھی کہ اگر میں نے آپ کو اپنا مہمان بنایا تو میری خیر نہیں..... اب آپ ہی بتائیے..... مجھے یہیں رہنا ہے..... مجھے پولیس سے خیر کرنا..... یہاں تو آج انھیں کا لاج ہے .

ہم نے ان کو پورا اطمینان دلایا کہ ہم جتنی جلد ہو سکے گا ان کا مکان چھوڑ دیں گے اور پناہ ساجی بنائیں گے .

(۴)

ہمارا باپ کاٹ

اب میں فکر ہوئی کہ طہیں تو کہاں جائیں . اس آڑے وقت ہمارے پیٹلی دست کام آئے . انھوں نے کہا—آپ فدا دیر میر کہیے . دیکھیے میں اللہ میں تاکر مکان چھینک کرنے کی ترکیب لواتا ہوں . کچھ گھنٹوں بعد وہ آگے آئے اور بولے—

نیا ہیند جلیان والہ باغ ستمبر ۱۹۱۹ء

مکان تپ رہا گیا۔ میں تالا بھی ڈال آیا ہوں۔

”کیسے..... گورنر کامیابی کیسے ہوئے؟“ ہم سب نے پوچھا۔

بولے—”بھائی ساہب! کچھ نہ بولیں۔ جلیان والہ باغ میں سب نے پوچھا۔

پولیس سے ڈرنا ہے۔ نہ مالوم میں نے کھیتوں سے مکان کے لٹیرے

کہا۔ ہر ایک نے ساکھنکار کر دیا۔ کہنے لگے ہم کون سے

والوں کو مکان دیکر کیا اپنا پارہہ بھانڈا لے کر آئے۔

نیراشا ہو چلا یا۔ ہتھیاروں سے..... سوشلسٹوں سے..... ایک

بانیوں کو میں نے فرانس۔ اس نے پوچھا آپ کون ہیں؟ میں نے کہا۔ میں

ایک وید ہوں۔ آریہ سماج کے رہنے والے ہوں۔ وہ ظاہر بیچارہ تھا۔

یا۔ دبا بھلائی کی لالچ میں اس نے لالچ کی لالچ میں اس نے

میں نے لالچ میں اس نے لالچ کی لالچ میں اس نے لالچ کی لالچ میں

تالا ڈال دیا۔“

ہم سب کو بڑی ہنسی آئی اور دھل میں اس نے لالچ کی لالچ میں

کی کھیر بھی ہوئی۔

بھائی صاحب سے رخصت ہو کر نئے مکان میں پرورش کیا۔

جیوں ہی ہم نے اس مکان میں قدم رکھا، ایک مکان نے ہم سے

ہاتھ جوڑ کر کہا شروع کیا کہ ہم اس کے مکان کو چھوڑ کر فرار ہو جائیں۔

اس کو بھی پوچھیں والوں نے اور اس کے مکان کو چھوڑ کر فرار ہو جائیں۔

نیا ہیند جلیان والہ باغ ستمبر ۱۹۱۹ء

مکان کے لٹیرے۔ ہمیں کامیابی تھی وہی ۱۹۱۹ء ہم سب نے پوچھا۔

بولے—”اجی صاحب! کچھ نہ بولیں۔ جلیان والہ باغ میں سب نے پوچھا۔

پولیس سے ڈرنا ہے۔ نہ مالوم میں نے کھیتوں سے مکان کے لٹیرے

کہا۔ ہر ایک نے ساکھنکار کر دیا۔ کہنے لگے ہم کون سے

والوں کو مکان دیکر کیا اپنا پارہہ بھانڈا لے کر آئے۔

نیراشا ہو چلا یا۔ ہتھیاروں سے..... سوشلسٹوں سے..... ایک

بانیوں کو میں نے فرانس۔ اس نے پوچھا آپ کون ہیں؟ میں نے کہا۔ میں

ایک وید ہوں۔ آریہ سماج کے رہنے والے ہوں۔ وہ ظاہر بیچارہ تھا۔

یا۔ دبا بھلائی کی لالچ میں اس نے لالچ کی لالچ میں اس نے لالچ کی لالچ میں

میں نے لالچ میں اس نے لالچ کی لالچ میں اس نے لالچ کی لالچ میں

تالا ڈال دیا۔“

ہم سب کو بڑی ہنسی آئی اور دھل میں اس نے لالچ کی لالچ میں

کی کھیر بھی ہوئی۔

بھائی صاحب سے رخصت ہو کر نئے مکان میں پرورش کیا۔

جیوں ہی ہم نے اس مکان میں قدم رکھا، ایک مکان نے ہم سے

ہاتھ جوڑ کر کہا شروع کیا کہ ہم اس کے مکان کو چھوڑ کر فرار ہو جائیں۔

اس کو بھی پوچھیں والوں نے اور اس کے مکان کو چھوڑ کر فرار ہو جائیں۔

اس کے مکان کو چھوڑ کر فرار ہو جائیں۔

نیا ہیند اعلیٰ یانوالا باغا سیتنبر سمن ۱۹۰۶

نیا ہیند اعلیٰ یانوالا باغا سیتنبر سمن ۱۹۰۶

اور یہی کہتا—”ہم مرنے جا رہے ہیں..... آپ مرنے کے لیے
”توئی““
ہم نے بھی ڈان لیا یا کہ ہم نے کیا کیا آپنا کام پورا
کیا ہے وہ نہ ہوتے۔ اور اگر ہوتے بھی تو جانتے ہیں؟ کون
کوئی باپس اسیں ہونا چاہتا۔

مکان کیا یا ایک خلیق تھا۔ ذرا آگے لے کر
سیر کرتے سے دکھایا۔ اور سے کہتے تو شاید سمجھتے بیٹھے جانے
تو میں نے پہلے ہی میں صرف ایک کمرہ تھا جو ایک بڑے بڑے
تھا۔

ہم نے کہا کہ لوگوں سے بیان جمع کریں، مگر کون سے
سوالوں کا جواب نہ دیتا۔ بس یہی اشارے سے کہتا—”دیکھتے
وہ خلیق بولیں گے کھری ہو..... آپ گئے اور اس
نے ہم کو بتایا۔“
ہم کو سنا یا“

بڑی مشکل سے کچھ بیان لے۔ ہم کو تائی کی ضرورت تھی۔
پڑھتے ہیں سے تائی کے لئے کہا۔ سب نے یہی جواب دیا—آپ
کے پاس تائی آنے سے انکار کرتے ہیں..... بولیں سے بیٹھے تو
کہتے ہیں..... آپ کی حاجت اگر وہ بتانے کی ہوتی کریں تو
بولیں ان کے گھر بھیجی جائے گی..... کیسے آئیں؟“
ہماری سچی حقائق کرنے سے بھگتی نے آنے سے انکار کیا۔
بلکہ یوں کہتا ہے کہ پڑھتے نے انہیں دھمکا کر کہا بائی کا
کہا۔ غیبت تھی کہ میرا نے زمانے کا سننا اس تھا۔
کہنے کو ہم بیدار جا کر ڈکان پر جاتے۔

ہماری تڑھی سا کرنے سے بھگی نے آنے سے انکار کیا۔
کہتے ہیں کہ ہونا سب ہی کا کہتے ہیں کہ انہیں نے انکار کیا۔
کہتے ہیں کہ ہونا سب ہی کا کہتے ہیں کہ انہیں نے انکار کیا۔
کہتے ہیں کہ ہونا سب ہی کا کہتے ہیں کہ انہیں نے انکار کیا۔

نیا ہیند اعلیٰ یانوالا باغ سیتنبر سمن ۱۹۰۶

اور یہی کہتا—”ہم مرنے جا رہے ہیں..... آپ مرنے کے لیے
”توئی““
ہم نے بھی ڈان لیا یا کہ ہم نے کیا کیا آپنا کام پورا
کیا ہے وہ نہ ہوتے۔ اور اگر ہوتے بھی تو جانتے ہیں؟ کون
کوئی باپس اسیں ہونا چاہتا۔

مکان کیا یا ایک خلیق تھا۔ ذرا آگے لے کر
سیر کرتے سے دکھایا۔ اور سے کہتے تو شاید سمجھتے بیٹھے جانے
تو میں نے پہلے ہی میں صرف ایک کمرہ تھا جو ایک بڑے بڑے
تھا۔

ہم نے کہا کہ لوگوں سے بیان جمع کریں، مگر کون سے
سوالوں کا جواب نہ دیتا۔ بس یہی اشارے سے کہتا—”دیکھتے
وہ خلیق بولیں گے کھری ہو..... آپ گئے اور اس
نے ہم کو بتایا۔“
ہم کو سنا یا“

بڑی مشکل سے کچھ بیان لے۔ ہم کو تائی کی ضرورت تھی۔
پڑھتے ہیں سے تائی کے لئے کہا۔ سب نے یہی جواب دیا—آپ
کے پاس تائی آنے سے انکار کرتے ہیں..... بولیں سے بیٹھے تو
کہتے ہیں..... آپ کی حاجت اگر وہ بتانے کی ہوتی کریں تو
بولیں ان کے گھر بھیجی جائے گی..... کیسے آئیں؟“
ہماری سچی حقائق کرنے سے بھگتی نے آنے سے انکار کیا۔
بلکہ یوں کہتا ہے کہ پڑھتے نے انہیں دھمکا کر کہا بائی کا
کہا۔ غیبت تھی کہ میرا نے زمانے کا سننا اس تھا۔
کہنے کو ہم بیدار جا کر ڈکان پر جاتے۔

ہماری تڑھی سا کرنے سے بھگی نے آنے سے انکار کیا۔
کہتے ہیں کہ ہونا سب ہی کا کہتے ہیں کہ انہیں نے انکار کیا۔
کہتے ہیں کہ ہونا سب ہی کا کہتے ہیں کہ انہیں نے انکار کیا۔
کہتے ہیں کہ ہونا سب ہی کا کہتے ہیں کہ انہیں نے انکار کیا۔

ہماری تڑھی سا کرنے سے بھگی نے آنے سے انکار کیا۔
کہتے ہیں کہ ہونا سب ہی کا کہتے ہیں کہ انہیں نے انکار کیا۔
کہتے ہیں کہ ہونا سب ہی کا کہتے ہیں کہ انہیں نے انکار کیا۔
کہتے ہیں کہ ہونا سب ہی کا کہتے ہیں کہ انہیں نے انکار کیا۔

ہماری تڑھی سا کرنے سے بھگی نے آنے سے انکار کیا۔
کہتے ہیں کہ ہونا سب ہی کا کہتے ہیں کہ انہیں نے انکار کیا۔
کہتے ہیں کہ ہونا سب ہی کا کہتے ہیں کہ انہیں نے انکار کیا۔
کہتے ہیں کہ ہونا سب ہی کا کہتے ہیں کہ انہیں نے انکار کیا۔

نیا یا سنہ طمان والا باغ

طمان والا باغ

طمان والا باغ

طمان والا باغ

طمان والا باغ

نیا یا سنہ
جلیان والا باغ
سیتا نگر سنہ '۲۹

ہلکا باری یا نان باری ہمارے ہاں رہنے کو چاہتے تھے، مگر
چلتے بڑھتے کہتا— "دیکھیے! آج کل پولیس نے سنا لیا۔"

پولیس نے بھی ہمارا باغ کاٹ لیا۔ اس کے سر پر بھی
پولیس کا ڈنڈا تھا۔

پولیس کا ڈنڈا تھا۔
پولیس نے بھی ہمارا باغ کاٹ لیا۔ اس کے سر پر بھی
پولیس کا ڈنڈا تھا۔

'ہندو مسلم ایکتا'

پانڈت مندر لال کے

چار لکچر اور انٹرنیٹ

سینٹرل کونگریگیشنل بورڈ بمبئی

کی کتاب پر مبنی

سے اس کے کتب خانے کی کتابت

میں "نیا یا سنہ"

۳۳ باری کا باغ، الہ آباد

ہندو مسلم ایکتا

پانڈت مندر لال کے

چار لکچر اور انٹرنیٹ

سے اس کے کتب خانے کی کتابت

میں "نیا یا سنہ"

۳۳ باری کا باغ، الہ آباد

دو दोस्त

(کویسری بیگم، لکھنؤ)

“भाई रशीद ! अगर हो सके तो आठ आने और दे दो. राम ने चाहा तो कल से नवाब साहब के यहां काम करने लगूंगा. पहली तनज़ाह में सबसे पहले तुम्हारे दाम अदा करूंगा. भाई तुमने आठ दिन से हमारा पेट पाला है वहाँ आज और रहम करो” गरीब माधो ने इतलजा करते हुए कहा.

“माधो ! मुझे यह तुम्हारा लहजा पसन्द नहीं है. मालूम होता है भीक मांग रहे हो. जैसे इका साथ चला कर दोस्त रहे वैसे अब भी हैं. अगर मुझे तुमसे इनकार होता तो पहले ही दिन वहाने करके एक कौड़ी न देता” रशीद ने माधो को मुखालिब करते हुए कहा जो अभी तक शरम से सर मुकाए था.

“तुम ठहरो मैं अभी घर से दाम लाता हूँ.” रशीद चला गया. माधो का यह हाल कि रशीद का इतना अपनापा देखकर बोझ से दबा जा रहा था. “देखो शाहर की किजा कैसी खराब हो रही है. लेकिन रशीद ने मेरे साथ किजना अच्छा सलूक किया. दुनिया पापियों ही से नहीं भरी है. इसमें नेक इनसान भी हैं. अगर शरीक हूँ, उमर भर पढ़सान मानूँगा. रशीद जानता है कि अगर आज मेरा घोड़ा न मर गया होता, मैं उसके आगे हाथ क्यों फैलाता—मजबूरी का भला हो वह सब कुछ करा लेती है.” माधो यह सोच ही रहा था कि रशीद दाम लिये हुए आया

“بھائی رشید ! اگر ہو سکے تو آٹھ آنے اور دے دو. رام نے چاہا تو کل سے نواب صاحب کے یہاں کام کرنے لگوں گا. پہلی آنچھ دن سے پہلے تمہارے دام ادا کر دوں گا. بھائی تم نے آٹھ دن سے پہلا پیٹ پالا ہے. وہاں آج اور رحم کرو.” غریب مادھو نے ایتجا کرتے ہوئے کہا.

“مادھو! تجھے یہ تمہارا لہجہ پسند نہیں ہے. معلوم ہوتا ہے تو کہ بھیک

رہے گا اب سب سے اور جیسے یہ ساتھ چلا کر دست لے دے اب بھی پڑے اگر تجھے تم سے انکار ہوتا تو پہلے ہی دن بہانے کر کے ایک کوڑی نہ دیتا” رشید نے مادھو کو مخاطب کر کے کہا جو ابھی تک شرم سے سر جھکا رکھا تھا. “ابھی تمہارے دام لانا ہوں.” رشید چلا گیا. مادھو کا یہ حال کہ رشید کا اتنا اپنا پاؤچھ سے دبا جا رہا تھا. “دیکھو شرم کی فضا کیسی خراب ہو رہی ہے. لیکن رشید نے میرے لیے ساتھ لکھنا ایسا سلوک کیا. دنیا پاپیوں ہی سے نہیں بھری ہے. اس میں نیک انسان بھی ہیں. اگر شریف ہوں، عمر بھر انسان ہوں گا. رشید جانتا ہو کہ اگر آج میرا گھوڑا نہ مر گیا ہوتا، میں اس کے آگے ہاتھ کیوں پھیلاتا—مجھری کا بھلا ہر وہ سب کچھ کرا لیتی ہے.”

مادھو یہ سوچ ہی رہا تھا کہ رشید دام لائے آئے آئے

और उसके समुद्र किये. माधो चाहता था अब उठे, रशीद बोला "अमे यार ! चिलम तो पीते जाओ."

माधो पास बैठ कर हुक्के पर की चिलम लेकर लम्बे लम्बे करा भरते लगा. दोनों बातें करने लगे.

रशीद—"अमे माधो ! अब मोटर बसों के आगे तो हमारी पेश नहीं जाती. मुश्किल से आज कल आठ दस आने रोबाना मिलते हैं. जहां एक रुपया तो चंकर बरना दो दो रुपये तक मिल चुके हैं."

माधो—"हां भाई ! फिर क्या किया जाय हम सब ने क्या कोशिश नहीं की ? हड़ताल की, जलसे किये, मुनिसपल्टी से भी रोये पीटे, लेकिन उनको क्या गारज पड़ी थी कि हम गरीबों की सुनते."

रशीद—"मेरी राय यह थी कि कतई हड़ताल न की जाय. लेकिन मजबूरी पड़ गई. क्यों कि सभों की रोबी इसी पर थी. भाई ! बाजों ने तो दो दो तीन तीन काके तक किये."

माधो—"हां यार ! जैसी अब मैं अंधेरी नगरी देखता हूँ अपनी इस पचीस साल की उमर में कर्मा नहीं देखी. आखिर हमारे बाप दादा भी तो यहाँ काम करते थे. सारा घर खाता पीता. लेकिन यह कांग्रेस सरकार क्या आई आफत आ गई. जिस तरह देखो कांग्रेसी गुलाम मचाते फिर रहे हैं—खुद मेहनत करो. अपने हाथ पांव चलाओ. दस्तकारी सीखो, यह करो, वह करो. आखिरकार लोगों ने अपने हाथ पैर चलाना शुरू किये. वड़े वड़े कांग्रेसी अमीर उमरावों से अमीना बाद तक पैदल भागे चले जाते हैं. कहाँ जलसा

शुभ्र २००८

दो दोस्त

शुभ्र के के प्रेर के. आदो पाठ्या अ ब मु छे. शुभ्र डाला

आदो पास बिछे करे के के. आदो पाठ्या अ ब मु छे. शुभ्र डाला

शुभ्र के के प्रेर के. आदो पाठ्या अ ब मु छे. शुभ्र डाला

आदो पास बिछे करे के के. आदो पाठ्या अ ब मु छे. शुभ्र डाला

शुभ्र के के प्रेर के. आदो पाठ्या अ ब मु छे. शुभ्र डाला

आदो पास बिछे करे के के. आदो पाठ्या अ ब मु छे. शुभ्र डाला

शुभ्र के के प्रेर के. आदो पाठ्या अ ब मु छे. शुभ्र डाला

आदो पास बिछे करे के के. आदो पाठ्या अ ब मु छे. शुभ्र डाला

शुभ्र के के प्रेर के. आदो पाठ्या अ ब मु छे. शुभ्र डाला

आदो पास बिछे करे के के. आदो पाठ्या अ ब मु छे. शुभ्र डाला

शुभ्र के के प्रेर के. आदो पाठ्या अ ब मु छे. शुभ्र डाला

आदो पास बिछे करे के के. आदो पाठ्या अ ब मु छे. शुभ्र डाला

शुभ्र के के प्रेर के. आदो पाठ्या अ ब मु छे. शुभ्र डाला

आदो पास बिछे करे के के. आदो पाठ्या अ ब मु छे. शुभ्र डाला

शुभ्र के के प्रेर के. आदो पाठ्या अ ब मु छे. शुभ्र डाला

आदो पास बिछे करे के के. आदो पाठ्या अ ब मु छे. शुभ्र डाला

शुभ्र के के प्रेर के. आदो पाठ्या अ ब मु छे. शुभ्र डाला

بہا شیعروانی بہن کہ پیدل چل دے۔ یہ بھی خیال نہیں کرتے کہ پہلا گنزدہ کہاں سے ہوگا۔ جب بڑے بڑے پیدل جاتے ہیں تو عزیزوں کا کیا ذکر؟

مشید۔ رہیں کر! — "واہ دوست! تم تو پورے عالم ہو گئے ہو۔"

مادھوی۔ "عالم عالم کیا؟ جس کے اوپر بیٹے ہو وہی جانتا ہے۔ اگر آج تم نے سہارا نہ دیا ہوتا تو مجھ نہیں کر گھوڑے سے سارے میں بھی چل با ہوتا۔ کیا میں سمجھا احسان کبھی کھول سکتا ہوں؟"

رشید۔ "اب بھائی! اس میں احسان کی کیا بات ہو یہ تو انسانی ہمدردی ہے۔"

مادھوی۔ "اللہ میں دعا ہوں کہ اب انسانی ہمدردی کہاں ہوگی انسان انسان کو کھائے جاتا ہے، ہندو مسلمان کے اور مسلمان ہندو کو مارے کھاتے ہیں۔ زینداد اور کسان جینک کا میدان الگ قائم کے ہوئے ہیں۔ کاکرہیسی لہم لگیوں میں آئے دن جھگڑتے ہوتے ہیں۔"

رشید۔ "واہ بھئی! تم نہیں سمجھتے، یہ انقلاب ہے، انقلاب!"

مادھوی۔ "لام لام! لام لام! یہ انقلاب سے بچائے۔ وہ وقت بہت بھگڑ رہی کھاتے تھے کہ اب ایک ہی وقت ہو گئی۔"

رشید۔ "اے! چھٹو ان باتوں کو میری سمجھ میں ایک بات لگی۔ وہ ہے کہ میرے پاس کچھ لادنے ہیں۔ اس سے ایک گھنٹا خریدا لیں اور تم اس کو اپنے تانے میں چلاؤ، اور جو کچھ آئے (انک طرفی سے ادھا بانٹ لو۔"

نیا ہینڈ
سیتلنبر سن ۱۹۲۲

نیا ہینڈ
تو دوسل
ہوآ شہر والی پھن کر پندرل चल दिये. यह भी ख्याल नहीं करते कि हमारा गुजर कहाँ से होगा. जब बड़े बड़े पैदल जाते हैं तो गरीबों का क्या चिन्तक."

रशीद (हंसकर) — "बाह दोस्त! तुम तो पूरे आलिम हो गए हो."
माधो — "आलिम बालिम क्या? जिसके ऊपर बीते है वहीं जानता है. अगर आज तुमने सहारा न दिया होता तो ताजुब नहीं कि बोड़ के साथ मैं भी चल बसा होता. क्या मैं तुम्हारा एहसान कर्मा भूल सकता हूँ?"

रशीद — "अब भाई! इसमें एहसान की क्या बात है यह तो इंसानी हम्दरदी है."

माधो — "और मैं रोता हूँ कि अब इंसानी हम्दरदी कहाँ रही. इंसान इंसान को खाये जाता है, हिन्दू मुसलमान को और मुसलमान हिन्दू को मार डालते हैं. जमींदार और किसान जंग का मैदान अलग कायम किये हुये हैं. कारासेरी और मुसलिम-लीगियों में श्रायें दिन भगाड़े होते हैं."

रशीद — "बाह भइये! तुम नहीं समझे, यह इनकलाब है. इनकलाब."

माधो — "राम राम! राम ऐसे इनकलाब से बचाए. दो बकल पेट भर कर रोटी खाते थे सो अब एक ही बकल रह गई."

रशीद — "अमे! छोड़ो इन बातों को, मेरी समझ में एक बात आ गई. वह यह कि मेरे पास कुछ रुपये हैं. इससे एक बोड़ा खरीद लूँ और तुम उसको अपने तांगे में चलाओ. और जो कुछ आप इंसानदारी से आधा बांट लो."

ماہو—“باہ! इससे बढ़ कर और क्या बात हो सकती है ! तुम खुदा का नाम लेकर घोड़ा खरीद लो. मैं ताना चलाऊंगा. गौ खाऊं अगर तुमसे बेहमानी करूँ!”

रशीद—“अरे भाई ! अब जाओ, कल सुबह को आ जाना. इत्वार है. नलास चलकर कोई घोड़ा खरीद लेंगे.”

माधो खुशी खुशी घर चला गया जैसे उसको दोनों जहान की दौलत मिल गई हो. इंसान को अपने पेशे और हमपेशा वालों से कितनी मुहब्बत होती थी. जुबारी जुबे में अपने साथियों के साथ क्या घुल मिल कर बैठता है. अजनबी चोर दूसरे चोरों से मिल कर कितना खुश होता है, जैसे उसी का भाई है. यही आलम उस वक़्त माधो का था. उसको अपने पेशे में एक खुशी महसूस हुई थी. अपने साथियों से मिल कर बात चीत करने में लुत्क आता था. दिन भर की कमाई ज़्यादा हो या कम, पेट भर रोटी मिले या न मिले लेकिन वह खुश नचर आता था. घोड़े की मालिश एक मशक्कत है लेकिन वह इसे हँस हँस कर करता. लेकिन जब से उसका घोड़ा मर गया था वह दिन रात उदास रहता था. उसकी माँ को भी घोड़े के मर जाने का गम था लेकिन वह बंदे का गम गलत करने के लिये हंसती थी.

माधो भी माँ को देख कर मुसकरा देता. वह आरखी हंसी होती थी. आज कोई माधो को देखे, बात बात पर उल्ला आ रहा है. रात भर खुशी से नींद न आई.

नवाब साहब के यहां नौकरी करता, दिन भर छुट्टी न मिलती. हर वक़्त डांट डपट हुआ करती, कभी टमटम, तो कभी घोड़े की

نیا دھند ۱۸۷

ادھو—“واہ! اس سے بڑھ کر اور کیا بات ہو سکتی ہے! تم خدا کا نام لے کر کھوٹا خرید لو. میں تانے چلاؤں گا. گویا کھاؤں اگر تم سے بے ایمانی کروں!”

رشید—“اب جاؤ، کل صبح کو آجانا! آوار ہو.”

نحاس میں کر کوئی گھوٹا خرید لیں گے۔ اب جاؤ، کل صبح کو آجانا! آوار ہو۔ ادھو خوش خوشی گھر چلا گیا جیسے اس کے دھول جہان کی دولت مل گئی ہو۔ انسان کو اپنے پیسے اور ہم پیسے والوں سے کتنی محبت ہوتی تھی۔ بخاری بھت میں اپنے ساتھیوں کے ساتھ کیا لٹکل کر رہتا ہے۔ اسی کا بھائی ہے۔ وہی عالم اس وقت ادھو کا بھائی ہے۔ اپنے پیسے میں ایک خوشی محسوس ہوتی تھی۔ اپنے ساتھیوں سے مل کر بات چیت کرنے میں لطف آتا تھا۔ دن بھر کسی کامیابی کی امید بھر دہنی کے بارے میں وہ خوش نظر آتا تھا۔ گھوٹے کی مالش ایک مشقت ہے لیکن وہ اسے ہنس ہنس کر کرتا۔ لیکن جب سے اس کا گھوٹا مرنے لگا وہ دن رات افسوس رہتا تھا۔ اس کی ماں کو بھی گھوٹے کے مرنے کا غم تھا لیکن وہ پیسے کا غم ظاہر کرنے کے لئے ہنسنے لگی تھی۔

ادھو بھی ماں کو دیکھ کر مسکاتا رہتا۔ وہ عارضی ہنسی ہوتی تھی۔ آج کی ادھو کو دیکھو، بات بات پر اچھٹا جا رہا ہے۔ رات بھر خوشی سے

نیا دھند ۱۸۸

نواب صاحب کے یہاں لکڑی کرتا، دن بھر ٹھنڈی نہ لگتی، ہر وقت تھنٹ تھنٹ ہوتی، آوار کرتی، کبھی کبھی

نیا دھند
 ماں— "بھتا ! تونے کپڑا دے، میں تونے خورا ہی دیکھنا چاہتی
 ہوں۔ آگر تونے میری سبھا کا کھال ہے تو ہر بکنن خورا رھا
 کر۔" ماں کپڑا لےکر تانگا ساک کرنے لگی۔ ماواں نے جلتی
 سے روٹی سارڈ آریر رشیاد کا ساا لےکر نلااس جا پھنچا۔

"یہ نہی ٹیک ہے، آرمے ! ہسکا پیر لنگڑا ہے۔ ہاں ہارڈ !
 کوا کراوات ہے ؟" "یہ آرنڈا ڈوڑا ہے، اک سہ پچاس رپوا
 "آرنڈا لاکا۔" "اک سہ پچاس رپوے کا دے دو۔" "آرم
 تک تانے میں جوتا تک تو ہے نہی۔"

لکھا پھارڈ ہا گارڈ۔ آریر رپوا دے دیا گیا۔ ماواں
 ڈوڈے کو لےکر چلتا ہے۔ "رشیاد !—ڈوڑا نیا ہے تو کوا، چار
 دین میں ڈورسٹ ہو جاوا۔" رشیاد—"ہاں ہارڈ ! آرم یہ ڈورسٹا
 کام ہے۔"

ماواں پیر خورا چلنے لگتا ہے کہ اوسکے پاس سے
 اک موٹر گجرا۔ اوسکے ہارڈ سے ڈوڑا بڈکا۔ نیا تو آا ہی
 بولہارا ماواں۔ لکین راریب ماواں نے آہ اوسکی رسی نہ ڈوڈی
 آہ، نہ ڈوڈی، کہ کہی ماواں نہ آوا آو سارے ماسوے آاک میں
 آاں۔ ہر ہسی کھال میں رسی سے لپٹا چلا گیا کہ اک مارتوا
 چیلنی کے سارے سے لڈ پڈا آریر سابلے سابلے کہ پشانی پر
 آوٹ سارڈ، چارو سانبے چیرا۔ سڈی ڈیلی پڈ گارڈ، رسی داوب سے
 ڈوٹ گارڈ، ڈوڈا موٹر کے سامنے لےکر ماواں آریر ہاں آاتم ہا
 گیا۔ موٹر الاتتے الاتتے ورا۔ رشیاد ڈوڈے کو مائل ماواں کو
 ترف ڈوڈا۔ ماواں آرم ووسو آا۔ موٹر والے سے رشیاد کو
 اوسد آہ کہ ہر ماواں کو آرسپتال تک لے چلےگا۔ پر اوسنے

ماں— "بھتا ! تونے کپڑا دے، میں تونے خورا ہی دیکھنا چاہتی
 ہوں۔ آگر تونے میری سبھا کا کھال ہے تو ہر بکنن خورا رھا
 کر۔" ماں کپڑا لےکر تانگا ساک کرنے لگی۔ ماواں نے جلتی
 سے روٹی سارڈ آریر رشیاد کا ساا لےکر نلااس جا پھنچا۔

"یہ نہی ٹیک ہے، آرمے ! ہسکا پیر لنگڑا ہے۔ ہاں ہارڈ !
 کوا کراوات ہے ؟" "یہ آرنڈا ڈوڑا ہے، اک سہ پچاس رپوا
 "آرنڈا لاکا۔" "اک سہ پچاس رپوے کا دے دو۔" "آرم
 تک تانے میں جوتا تک تو ہے نہی۔"

لکھا پھارڈ ہا گارڈ۔ آریر رپوا دے دیا گیا۔ ماواں
 ڈوڈے کو لےکر چلتا ہے۔ "رشیاد !—ڈوڑا نیا ہے تو کوا، چار
 دین میں ڈورسٹ ہو جاوا۔" رشیاد—"ہاں ہارڈ ! آرم یہ ڈورسٹا
 کام ہے۔"

ماواں پیر خورا چلنے لگتا ہے کہ اوسکے پاس سے
 اک موٹر گجرا۔ اوسکے ہارڈ سے ڈوڑا بڈکا۔ نیا تو آا ہی
 بولہارا ماواں۔ لکین راریب ماواں نے آہ اوسکی رسی نہ ڈوڈی
 آہ، نہ ڈوڈی، کہ کہی ماواں نہ آوا آو سارے ماسوے آاک میں
 آاں۔ ہر ہسی کھال میں رسی سے لپٹا چلا گیا کہ اک مارتوا
 چیلنی کے سارے سے لڈ پڈا آریر سابلے سابلے کہ پشانی پر
 آوٹ سارڈ، چارو سانبے چیرا۔ سڈی ڈیلی پڈ گارڈ، رسی داوب سے
 ڈوٹ گارڈ، ڈوڈا موٹر کے سامنے لےکر ماواں آریر ہاں آاتم ہا
 گیا۔ موٹر الاتتے الاتتے ورا۔ رشیاد ڈوڈے کو مائل ماواں کو
 اوسد آہ کہ ہر ماواں کو آرسپتال تک لے چلےگا۔ پر اوسنے

लो रशीद को ही उलटें भाड़ें हाथों लिया. उससे जान लुझा रशीद ने फौरन एक तांगा पकड़ा और उसमें माधो को लाद सीधा अस्पताल पहुँचा.

रात बहने के नाते देर पर देर होते लगी. सुरामद दरामद से काम चलते न देख, पास के सारे रूपए फँक उसने माधो के लिये अस्पताल में जगह बना ही ली. जगह मिलते ही माधो अस्पताल का हो गया और इतना हो गया कि दूसरे दिन शाम के पाँच बजे तक वह रशीद का कोई भी न था. रशीद मुँह लटकाए घर लौट रहा था. उसकी हिम्मत न होती थी कि वह माधो की मां को इस सब मामले की खबर दे. वह इस मामले में अपने को ही कसूरवार समझता था. सोचता जाता था—न में जोड़ा खरीदता और न माधो की जान खतरे में पड़ती. जानते दूझते नया जोड़ा खरीदा ही क्यों ? और अगर खरीद ही लिया था तो खुद ही क्यों न संभाला ? माधो की मां मुझे क्या कहेंगी ? मैं उस बुढ़िया को किस तरह तसल्ली करूँगा. अपने बेटे का हाल सुन कर उसके जी पर कैसी भीतगी ? मैं न जाऊँगा, न जाऊँगा. बुढ़िया को सुनाने से फायदा ही क्या ? हां मगर माधो के घर न पहुँचने से वह खरब बेचैन हो जायगी. पर इस बेचैनी को वह यह समझ कर दर कर लोगी कि रशीद के यहाँ सो गया होगा ! कई बार पहले वैसा हो भी चुका है. इसी सोच विचार में वह घर पहुँच गया. और फिर उसने यही फैसला किया कि बुढ़िया को अभी खबर नहीं देने चाहिये.

वह खाना खाने बैठे पर खायी न गया. उसकी बीबी ने बजह जानना चाही. पर वह उड़ा गया. बाहर चल दिया. ११ बजे लौटा और चुपचाप चारपाई पर पड़ गया. किस की

(७९)

दो दोस्त

राशियद को ही उलटें भाड़ें हाथों लिया. उससे जान लुझा रशीद ने फौरन एक तांगा पकड़ा और उसमें माधो को लाद सीधा अस्पताल पहुँचा. रात बहने के नाते देर पर देर होते लगी. सुरामद दरामद से काम चलते न देख, पास के सारे रूपए फँक उसने माधो के लिये अस्पताल में जगह बना ही ली. जगह मिलते ही माधो अस्पताल का हो गया और इतना हो गया कि दूसरे दिन शाम के पाँच बजे तक वह रशीद का कोई भी न था. रशीद मुँह लटकाए घर लौट रहा था. उसकी हिम्मत न होती थी कि वह माधो की मां को इस सब मामले की खबर दे. वह इस मामले में अपने को ही कसूरवार समझता था. सोचता जाता था—न में जोड़ा खरीदता और न माधो की जान खतरे में पड़ती. जानते दूझते नया जोड़ा खरीदा ही क्यों ? और अगर खरीद ही लिया था तो खुद ही क्यों न संभाला ? माधो की मां मुझे क्या कहेंगी ? मैं उस बुढ़िया को किस तरह तसल्ली करूँगा. अपने बेटे का हाल सुन कर उसके जी पर कैसी भीतगी ? मैं न जाऊँगा, न जाऊँगा. बुढ़िया को सुनाने से फायदा ही क्या ? हां मगर माधो के घर न पहुँचने से वह खरब बेचैन हो जायगी. पर इस बेचैनी को वह यह समझ कर दर कर लोगी कि रशीद के यहाँ सो गया होगा ! कई बार पहले वैसा हो भी चुका है. इसी सोच विचार में वह घर पहुँच गया. और फिर उसने यही फैसला किया कि बुढ़िया को अभी खबर नहीं देने चाहिये.

نیا ہیند ! رات دُوبھر ہو گئی۔ صبح سوئی! پتہ بڑی مشکل سے ہوا۔ باہر نکلا
ساتھیوں سے باتیں کرتے کرتے پتہ پلا کہ اسپتال میں صبح بھی نہیں
سے لئے رہتے ہیں۔

مادھو— میں کہاں ہوں! تم کون ہو؟
زریں— گھبراؤ نہیں۔ تم اسپتال میں ہو۔
مادھو— کیوں؟

زریں— رشید کھجھارے کون ہوتے ہیں؟
مادھو— ساتھ کھیلے ہیں! بھائی ہوتے ہیں؟

زریں— وہی کہتے تھے تم گھوٹا لئے جا رہے تھے۔ مار کے
کھپے سے تلے کھائی۔ گھوٹا چھوٹ گیا! وہ موٹر سے مر گیا۔ تم.....

مادھو— آیات کا حکم گھوٹا مر گیا؟
زریں— کچھ نہ کہہ پایا اور پھر بے ہوش ہو گیا۔ تھوڑی دیر میں اس
کو ہوش تو بھر گیا! یہ آیات کوئی بار پھونکا جس کی زبان پتہ ایک
ای آیات تھی۔ گھوٹا مر گیا! اب کیا ہو گا؟

صبح جب ہی رشید مادھو سے لئے پتیا، زریں نے لئے
پتے سے پہلے ساری حالت سے رشید کو آگاہ کر دیا۔

رشید— ایسے مادھو! یہ کیا گھوٹا مر گیا، گھوٹا مر گیا کی رٹ
کہا لے ہوئے ہو۔ ہو تو مرے میں؟

مادھو— گھوٹا مر گیا! اب کیا ہو گا؟
رشید— کس کا گھوٹا؟ کیسا گھوٹا؟ کون مر گیا؟

مادھو— رشید کا گھوٹا اللہ میں نے مار دیا۔
رشید— تم ہوش میں تو ہو؟ یہ کیا ایک رسبہ؟ کون کتا ہے؟

رشید— رشید کا گھوٹا اللہ میں نے مار دیا۔
مادھو— رشید کا گھوٹا؟ کون مر گیا؟

رشید— رشید کا گھوٹا اللہ میں نے مار دیا۔
مادھو— رشید کا گھوٹا؟ کون مر گیا؟

رشید— رشید کا گھوٹا اللہ میں نے مار دیا۔
مادھو— رشید کا گھوٹا؟ کون مر گیا؟

نیا ہیند! رات دُوبھر ہو گئی۔ صبح سوئی! پتہ بڑی مشکل سے ہوا۔ باہر نکلا
ساتھیوں سے باتیں کرتے کرتے پتہ پلا کہ اسپتال میں صبح بھی نہیں
سے لئے رہتے ہیں۔

مادھو— میں کہاں ہوں! تم کون ہو؟
زریں— گھبراؤ نہیں۔ تم اسپتال میں ہو۔
مادھو— کیوں؟

زریں— رشید کھجھارے کون ہوتے ہیں؟
مادھو— ساتھ کھیلے ہیں! بھائی ہوتے ہیں؟

زریں— وہی کہتے تھے تم گھوٹا لئے جا رہے تھے۔ مار کے
کھپے سے تلے کھائی۔ گھوٹا چھوٹ گیا! وہ موٹر سے مر گیا۔ تم.....

مادھو— آیات کا حکم گھوٹا مر گیا؟
زریں— کچھ نہ کہہ پایا اور پھر بے ہوش ہو گیا۔ تھوڑی دیر میں اس
کو ہوش تو بھر گیا! یہ آیات کوئی بار پھونکا جس کی زبان پتہ ایک
ای آیات تھی۔ گھوٹا مر گیا! اب کیا ہو گا؟

صبح جب ہی رشید مادھو سے لئے پتیا، زریں نے لئے
پتے سے پہلے ساری حالت سے رشید کو آگاہ کر دیا۔

رشید— ایسے مادھو! یہ کیا گھوٹا مر گیا، گھوٹا مر گیا کی رٹ
کہا لے ہوئے ہو۔ ہو تو مرے میں؟

مادھو— گھوٹا مر گیا! اب کیا ہو گا؟
رشید— کس کا گھوٹا؟ کیسا گھوٹا؟ کون مر گیا؟

مادھو— رشید کا گھوٹا اللہ میں نے مار دیا۔
رشید— تم ہوش میں تو ہو؟ یہ کیا ایک رسبہ؟ کون کتا ہے؟

رشید— رشید کا گھوٹا اللہ میں نے مار دیا۔
مادھو— رشید کا گھوٹا؟ کون مر گیا؟

رشید— رشید کا گھوٹا اللہ میں نے مار دیا۔
مادھو— رشید کا گھوٹا؟ کون مر گیا؟

ماہو—نرس۔

رشیاد—کریا ؟

ماہو—چوڑا مہر گیا۔

رشیاد—کیسے کہتا ؟

ماہو—تو مہنے

رشیاد—مہنے ؟ مہنے تو کہتا تھا چوڑا ڈر گیا۔

ماہو—یہ بات !

رشیاد—ہاں، یہ بات۔

ماہو پلنگ سے ایک دم اٹھتے پڑا اور رشیاد کے گالے میں

کار بولا—میں ذیلتوں میں آ گیا ہوں، چلو ہاں۔ دینوں چل دیئے۔

نرس کی ہنسنے والی ن ہنسی کی روکائی۔ رشتہ میں رشیاد ماہو سے

بولا—دوست ایک بات کہو، رشیاد نے کیا کیا ؟

ماہو—ہاں، کہو رشیاد نے کیا کیا ؟

رشیاد—بہت بڑا ہنسنے والا تھا۔ میں پانچ روپے کم

لے کر اس کو دیا تھا۔

ماہو—یار، ذیلتوں میں کیا کیا۔ میں تو ۱۰ روپے دے دیتا

تو سونے میں سنا کر گیا تھا۔ اب تو پانچ ہی دے دیتے پڑے۔

رشیاد—تو، اب تو چوڑا مہر گیا تھا تو تو مہر روپے

دے دیتے تھے؟ اور میں نے لے لیا تھا؟

رشیاد—تو، اب تو چوڑا مہر گیا تھا تو تو مہر روپے

دے دیتے تھے؟ اور میں نے لے لیا تھا؟

ماہو کا دم اٹھنے کا دم اٹھنے اور نرس کے دم اٹھنے کا دم اٹھنے۔

میتھری ۳۷

۱۹۳۳

نیا ہینڈ

رشیاد—نرس؟

رشیاد—کیا؟

رشیاد—کھوٹا گیا۔

رشیاد—کس نے کہا؟

رشیاد—نرس نے۔

رشیاد—یہ بات !

رشیاد—ہاں، یہ بات۔

رشیاد—یہ بات !

رشیاد—یہ بات !

رشیاد—یہ بات !

رشیاد—یہ بات !

رشیاد—یہ بات !

رشیاد—یہ بات !

رشیاد—یہ بات !

رشیاد—یہ بات !

رشیاد—یہ بات !

رشیاد—یہ بات !

رشیاد—یہ بات !

رشیاد—یہ بات !

رشیاد—یہ بات !

رشیاد—یہ بات !

رشیاد—یہ بات !

رشیاد—یہ بات !

بھارت کی دنیا

(کڑی پھیلنے والی)

❖ ہندوستان اور پاکستان کی "بھارت ڈومینیشن"

ن "بھارت" ہے نہ "ڈومینیشن"

❖ بھارت اور پاکستان کا اس سے ہٹا دیا جانا ! ❖

❖ نپال اور بھارتیہ ہندوستان ❖

❖ "نیا ہند" کے ایک پھیلنے والے میں بھارتیہ جا چکا ہے

❖ کی سن ۱۹۴۷ کا ہندوستان اور بھارتیہ ایکٹ کوئی نہ

❖ بھارتیہ ہے۔ سن ۱۹۴۷ کا بھارتیہ اور بھارتیہ ایکٹ کوئی نہ

❖ بھارتیہ تک چل رہا ہے اور نپال نے اس سے کچھ نہیں

❖ توڑ کر دیے ہیں۔ نپال ایکٹ کوئی نہ میں لکھا ہے کہ "بھارتیہ

❖ بھارتیہ سن ۱۹۴۷ کے بھارتیہ اور بھارتیہ ایکٹ میں جو کچھ

❖ بھارتیہ یا بھارتیہ بھارتیہ کرنا ٹیکہ سمجھا جاتا ہے اور کچھ

❖ بھارتیہ میں جاری کرنا ہے۔" یہی ہے بھارتیہ اور بھارتیہ

❖ نے اس پورے کائنات میں کچھ کچھ بھارتیہ اور بھارتیہ

❖ اور بھارتیہ ہندوستان کے سامنے رکھ دیا۔ اس سے پہلے

❖ کا ہندوستان ایک ہے۔ بھارتیہ کے ساتھ ہی بھارتیہ

❖ اور بھارتیہ بھارتیہ کرتے رہنے کا بھارتیہ اور بھارتیہ

❖ بھارتیہ بھی رہے گا۔ یہ بھی بھارتیہ رہے کہ سن ۱۹۴۷ کے

❖

آج کی دنیا

❖ ہندوستان اور پاکستان کی "بھارت ڈومینیشن"

❖ ن "بھارت" ہے نہ "ڈومینیشن"

❖ بھارت اور پاکستان کا اس سے ہٹا دیا جانا ! ❖

❖ نپال اور بھارتیہ ہندوستان ❖

❖ "نیا ہند" کے ایک پھیلنے والے میں بھارتیہ جا چکا ہے

❖ کی سن ۱۹۴۷ کا ہندوستان اور بھارتیہ ایکٹ کوئی نہ

❖ بھارتیہ ہے۔ سن ۱۹۴۷ کا بھارتیہ اور بھارتیہ ایکٹ کوئی نہ

❖ بھارتیہ تک چل رہا ہے اور نپال نے اس سے کچھ نہیں

❖ توڑ کر دیے ہیں۔ نپال ایکٹ کوئی نہ میں لکھا ہے کہ "بھارتیہ

❖ بھارتیہ سن ۱۹۴۷ کے بھارتیہ اور بھارتیہ ایکٹ میں جو کچھ

❖ بھارتیہ یا بھارتیہ بھارتیہ کرنا ٹیکہ سمجھا جاتا ہے اور کچھ

❖ بھارتیہ میں جاری کرنا ہے۔" یہی ہے بھارتیہ اور بھارتیہ

❖ نے اس پورے کائنات میں کچھ کچھ بھارتیہ اور بھارتیہ

❖ اور بھارتیہ ہندوستان کے سامنے رکھ دیا۔ اس سے پہلے

❖ کا ہندوستان ایک ہے۔ بھارتیہ کے ساتھ ہی بھارتیہ

❖ اور بھارتیہ بھارتیہ کرتے رہنے کا بھارتیہ اور بھارتیہ

❖ بھارتیہ بھی رہے گا۔ یہ بھی بھارتیہ رہے کہ سن ۱۹۴۷ کے

❖

شاہد
آج کی دنیا
سچے سچے

۱۰۵ کی کچھ پہلی ہیں جن کا واسطہ ہندوستان اور پاکستان کے ایک ایک سے جانے سے ہے۔ آئیے کو گورنر جنرل کو پچھرا اختیار ہو کہ وہ جب ضرورت سمجھے انہیں آدے بدلے یعنی دونوں نئی ڈومینوں یا نئی حکومتوں سے اختیاروں کا گھٹانا گورنر جنرل کے ہاتھ میں ہو اور گورنر جنرل چاہے ہندوستانی ہو چاہے انگریز پاکستان کے بادشاہ کا آدمی اور انہیں کا مطر کیا ہوا یعنی انگلستان کی سرکار کا وفادار ہو۔

انگلستان کی پارلیمنٹ کوئی قانون بناوے تو دنیا کی کسی بے صلاحیت میں یہ بحث نہیں کی جاسکتی کہ وہ قانون جائز ہو یا ناجائز، نہ کوئی عدالت اسے ناجائز کہہ سکتی ہو، یہ بلائے نئے قانون کے مطابق ہندوستان یا پاکستان کی عدالت سمجھیں اگر کوئی قانون بناویں تو یہاں کی بڑی عدالت (سپریم کورٹ) یا کوئی عدالت اس قانون کو ناجائز ٹھہرا سکتی ہو اور رد کر سکتی ہو۔

سچ یہ ہے کہ ہندوستان اور پاکستان — جنہیں دو آزاد و آئینی قومیں، بتایا جا رہا ہے — کے اندر سے باہر کے مصلحتوں اور دوسری مصلحتوں کے سبب سے سمبندھ تو ایک ایک کے اندر کے انتظام میں بھی ہے "آزاد" نہیں ہیں۔ جب تک ان کے انتظام سے انگلستان کا بادشاہ اور وہاں کی پارلیمنٹ خوش رہیں تب

سینا بھر سن ۱۹۶

نیا ہند
آج کی دنیا
سچے سچے

۱۰۵ کی کچھ پہلی ہیں جن کا واسطہ ہندوستان اور پاکستان کے ایک ایک سے جانے سے ہے۔ آئیے کو گورنر جنرل کو پچھرا اختیار ہو کہ وہ جب ضرورت سمجھے انہیں آدے بدلے یعنی دونوں نئی ڈومینوں یا نئی حکومتوں سے اختیاروں کا گھٹانا گورنر جنرل کے ہاتھ میں ہو اور گورنر جنرل چاہے ہندوستانی ہو چاہے انگریز پاکستان کے بادشاہ کا آدمی اور انہیں کا مطر کیا ہوا یعنی انگلستان کی سرکار کا وفادار ہو۔

انگلستان کی پارلیمنٹ کوئی قانون بناوے تو دنیا کی کسی بے صلاحیت میں یہ بحث نہیں کی جاسکتی کہ وہ قانون جائز ہو یا ناجائز، نہ کوئی عدالت اسے ناجائز کہہ سکتی ہو، یہ بلائے نئے قانون کے مطابق ہندوستان یا پاکستان کی عدالت سمجھیں اگر کوئی قانون بناویں تو یہاں کی بڑی عدالت (سپریم کورٹ) یا کوئی عدالت اس قانون کو ناجائز ٹھہرا سکتی ہے اور رد کر سکتی ہے۔

سچ یہ ہے کہ ہندوستان اور پاکستان — جنہیں دو آزاد و آئینی قومیں، بتایا جا رہا ہے — کے اندر سے باہر کے مصلحتوں اور دوسری مصلحتوں کے سبب سے سمبندھ تو ایک ایک کے اندر کے انتظام میں بھی ہے "آزاد" نہیں ہیں۔ جب تک ان کے انتظام سے انگلستان کا بادشاہ اور وہاں کی پارلیمنٹ خوش رہیں تب

کر دیا اور اس ملک سے ڈوہ پینسنگ اور وکھار چھین لئے۔ اسی طرح انگلستان کی پارلیمنٹ کبھی کبھی ہندوستان یا پاکستان سے آن کے آج کل کے اور وکھار چھین سکتی ہو۔ فرق یہ ہو کہ جس قانون سے یہ قوانین لینے کی ڈوہ پینسنگ بنی تھی اس کے مطابق وہاں کی سرکار کو مستقل کرنے سے پہلے وہاں کی وکھار سمجھا کی رضا مندی لینا پڑتی۔ ہندوستان یا پاکستان کے لئے یہاں کی کسی وکھار سمجھا کی اس طرح کی رضا مندی کی کبھی ضرورت نہیں ہوگی۔

جہاں تک انگریزی فوجوں سے اس ملک سے ہٹانے کے لئے جانے کی بات ہوئے قانون کے مطابق یہ فوجیں اس وقت ہٹائی جانی چاہئیں اور ان کی حسب ضرورت فوجیں کو وٹے جائیں گے۔ پورے اختیار اس وقت تک نہیں وٹے جاسکتے جب تک اس ملک کی حدود آواز و سرکاروں اور انگلستان کے بیچ نئے صلح نامے نہ کھ جائیں۔ انگلستان کی سرکار کا ان صلح ناموں کو منظور کر لینا ضروری ہے۔ اس کے بعد بھی "انگریزی فوجوں کے ہٹانے کے لئے" کا مطلب صرف یہ ہو کہ اس ملک کی حدودوں سرکاروں کی اپنی اپنی فوجوں میں انگریزی کیمپیاں نہیں رہیں گی اور انگریزی جہازیں نہیں ہوں گی۔ ہندوستانی ہوں گے۔ یہ مطلب نہیں ہو کہ انگلستان کے بادشاہ کی اپنی "امپیریل" فوجیں بھی یہاں نہیں رہیں گی۔ جو نئے صلح نامے ہوں گے ان میں ایک شرط یہ ہوگی کہ ہندوستان اور پاکستان میں برٹش گورنمنٹ کے فوجی مشن کو رہنے کی اجازت ہو۔ یہ فوجی مشن ہندوستان یا پاکستان کے قانون کے ماتحت نہ ہوں گے۔

کر دیا اور اس ملک سے ڈوہ پینسنگ کے اختیار لینے کے لئے۔ اسی طرح ہندوستان کی پارلیمنٹ کبھی کبھی ہندوستان یا پاکستان سے آن کے آج کل کے اور وکھار چھین سکتی ہو۔ فرق یہ ہو کہ جس قانون سے یہ قوانین لینے کی ڈوہ پینسنگ بنی تھی اس کے مطابق وہاں کی سرکار کو مستقل کرنے سے پہلے وہاں کی وکھار سمجھا کی رضا مندی لینا پڑتی۔ ہندوستان یا پاکستان کے لئے یہاں کی کسی وکھار سمجھا کی اس طرح کی رضا مندی کی کبھی ضرورت نہیں ہوگی۔

جہاں تک انگریزی کیمپوں کے اس ملک سے ہٹا لیا جانے کی بات ہے اور قانون کے مطابق یہ فوجیں اس وقت ہٹائی جانی چاہئیں اور ان کی حسب ضرورت فوجیں کو وٹے جائیں گے۔ پورے اختیار اس وقت تک نہیں دئے جاسکتے جب تک اس ملک کی حدود آواز و سرکاروں اور انگلستان کے بیچ نئے صلح نامے نہ لیا جائیں۔ انگلستان کی سرکار کا اس لئے صلح ناموں کو منظور کر لینا ضروری ہے۔ اس کے بعد بھی "انگریزی کیمپوں کے ہٹانے کے لئے" کا مطلب صرف یہ ہو کہ اس ملک کی حدودوں سرکاروں کی اپنی اپنی فوجوں میں انگریزی کیمپیاں نہیں رہیں گی اور انگریزی جہازیں نہیں ہوں گی۔ ہندوستانی ہوں گے۔ یہ مطلب نہیں ہو کہ انگلستان کے بادشاہ کی اپنی "امپیریل" فوجیں بھی یہاں نہیں رہیں گی۔ جو نئے صلح نامے ہوں گے ان میں ایک شرط یہ ہوگی کہ ہندوستان اور پاکستان میں برٹش گورنمنٹ کے کیمپوں کو رہنے کی اجازت ہو۔ یہ کیمپوں میں برٹش گورنمنٹ کے قانون کے ماتحت نہ ہوں گے۔

لکین دینوں نگرھ کوی کویجے چارریت کے بکرت این مینارنوں کے ماتھت آریر انکے هكوم سے کام کوریو. इसके अलावा इन दोनों नई सरकारों की कौजों में भी बहुत से बड़े बड़े अफसर और टेकनिकल दस्ता के छंटि अफसर तक आंगरेज ही रहेंगे. यह सब बातें नए कानून को और मिस्टर एटर्नी जेसो की तक्रारों को ध्यान से पढ़ने पर साफ दिखाई दे जाती है. प्रीस और चीन दोनों में जो ब्रिटिश और अमरीकन कौजी मिशन काम कर रहे हैं उनसे हमें बहुत कुछ असलियत का पता लग सकता है.

(१५)

आज कल को कौजों और लडाई के नए तरीकों ने दुनिया को बहुत बदल दिया है. लडाई का भारी से भारी सामान और कौजों तक आज कल हवाई जहाजों से आती जाती है. इस तरह का एक कौज ले जाने वाला हवाई जहाज मामूली तौर पर अपने अड़े से चारों तरफ १५७० मील दूर तक डीढ़ लगाता है, लडाकू हवाई जहाज १२०० मील और वममार १६०० मील, यह भी कम है. अमरीका का जहाज 'कानसटोलेशन' (सी. ६६) घंटे में २२५ मील जाता है, २८० मन का वजन ले जाता है और एक उड़ान में ४५०० मील की खबर लेता है. अमरीका ही का दूसरा हवाई जहाज 'कान्स-टिटयूशन' घंटे में ३०० मील जाता है, ६८० मन वजन ले जा सकता है और एक उड़ान में ६००० मील की खबर लेता है. इसलिये आज कल जमीन के ऊपर सब जगह बड़ी बड़ी हवाई जहाजियां रखने की जरूरत नहीं है. जरूरत सिर्फ इस बात की है कि इस तरह के हवाई और समन्दरी अड़े हों जिनमें १५०० मील से ज्यादा

सितंबर १९५६

आज की दुनिया

नया सितंबर

तक डफलों तक की नोजिन ضرورت के وقت इन स्थितियों के अर्थ और उन के حکم سے کام کریں گی. اس کے علاوہ ان دفتروں نئی سرکاروں کی فوجوں میں بھی بہت سے ڈپے بڑے افسر اور کنٹریبل دفتروں کے چھوٹے افسر تک آگریز ہی رہیں گے. یہ سب باتیں نئے حالات کو اور مشرق وسطیٰ کی تفریقوں کو دھیان سے پرچھنے پر مسافرت دکھائی دے جاتی ہیں. فرانس اور چین دفتروں میں جو برقی اور امریکن فوجی مشین کام کر رہے ہیں ان سے آریں بہت کچھ اصلیت کا پتہ مل سکتا ہے.

آج کل کی فوجوں اور ہوائی کے نئے طریقوں نے دنیا کو بہت بدل دیا ہے. ہوائی کا بھاری سے بھاری سامان اور فوجیں ایک ہی جگہ مل جاتی جہازوں سے آتی جاتی ہیں. اس طرح کا ایک فوج لے جانے والا ہوائی جہاز معمول طور پر اپنے اڈے سے چاروں طرف ۱۱۶۵ میل دُور تک تحفظ رکھتا ہے. ایٹک اڈے سے چاروں طرف ۱۹۰۰ میل. یہ بھی کم ہے. امریکہ کا جہاز ۱۳۰۰ میل اور کم (۶۶) گھنٹے میں ۲۳۵ میل جاتا ہے. ۲۸۰ من کا وزن لے جاتا ہے اور ایک اڈان میں ۲۵۰۰ میل کی جہر لیٹا ہے. امریکہ ہی کا دوسرا ہوائی جہاز 'کانسٹٹیوشن' گھنٹے میں ۳۰۰ میل جاتا ہے. ۶۸۰ من وزن لے جاسکتا ہے اور ایک اڈان میں ۶۰۰۰ میل کی جہر لیٹا ہے. اس لئے آج کل زمین کے اوپر سب جگہ بڑی بڑی جہازیں رکھنے کی ضرورت نہیں ہے. ضرورت صرف اس بات کی ہے کہ اس طرح کے ہوائی اور سمندری اڈے ہوں جن میں کہیں ۱۵۰۰ میل سے زیادہ

کامیابی نہ ہو۔ آج کل اگر برطانوی کا الام بیج جاوے تو ڈیڑھ گھنٹے کے اندر فوج خاص آگے سے ۱۹۰۰ میل ڈور تک کہیں بھی پہنچ سکتی ہو۔ سنگھاپور، سنگون، کولمبو اور کراچی میں انگریزوں کے ہوائی اور سمندری دونوں طرح کے آگے ہیں۔ سکندراباد (حیدرآباد دکن) اور گلگت کا شیراز میں زبردست ہوائی آگے ہیں۔ سارے ہندوستان اور پاکستان اور اس کے راستوں پر تابو رکھنے کے لئے یہ اہل کافی ہیں۔ پر ان اتوں درجے کے آگے کے علاوہ انگریزوں کے اہل چھوٹے بڑے آگے نیپال میں، ہندوستان اور پاکستان میں اور ریاستوں میں اس طرح بھرتے ہوئے ہیں کہ کہیں بھی دو آگوں میں ۵۰۰ میل سے زیادہ فاصلہ نہیں ہو۔ انڈین اور کومبار ٹاپوں میں انگریز بسائے جا رہے ہیں۔ اسی طرح عمان میں بھی انگریز بسائے جاویں گے (رائی پٹنہ، ایٹ دھرم ۱۶)۔ کتنے کو انڈین اور کومبار ہندوستان میں شامل رہیں گے اور عمان پاکستان میں رہیں گے۔ دونوں طرف کے یہ ناکے انگریزی سمندری فوج کے لئے بہت بڑے آگے ہوں گے۔ ایک سال گورکھا فوجوں کا لٹھا۔ انگریزوں کی سرکار نے اسے بھی بڑی خوبصورتی سے حل کر لیا اور نیپال کی سرکار اور انگریزوں کی سرکار میں سمجھوتہ ہو گیا اور انگریزوں کی اپنی اسپرٹل فوج میں گورکھے بھرتی ہو گئے ہیں اور ہوں گے۔ ہندوستان یا پاکستان کی فوجوں میں گورکھے بھرتی نہیں ہوں گے۔ اس کا مطلب یہ ہو کہ انگریزی فوج کی طرح گورکھا فوج بھی یہاں انگریزوں کے اصول کے تحت اسپرٹل

نیا ہند آج کی دنیا ستمبر ۱۹۵۰ء

کا مسلحہ نہ ہو۔ آج کل اگر برطانوی کا الام بیج جاوے تو ڈیڑھ گھنٹے کے اندر فوج خاص آگے سے ۱۹۰۰ میل ڈور تک کہیں بھی پہنچ سکتی ہے۔ سنگاپور، رنگول، کولمبو اور کراچی میں انگریزوں کے ہوائی اور سمندری دونوں طرح کے آگے ہیں۔ سکندراباد (حیدرآباد دکن) اور گلگت کا شیراز میں زبردست ہوائی آگے ہیں۔ سارے ہندوستان اور پاکستان میں اور ریاستوں میں اس طرح بھرتے ہوئے ہیں کہ کہیں بھی دو آگوں میں ۵۰۰ میل سے زیادہ فاصلہ نہیں ہو۔ انڈین اور کومبار ٹاپوں میں انگریز بسائے جا رہے ہیں۔ اسی طرح عمان میں بھی انگریز بسائے جاویں گے (رائی پٹنہ، ایٹ دھرم ۱۶)۔ کتنے کو انڈین اور کومبار ہندوستان میں شامل رہیں گے اور عمان پاکستان میں رہیں گے۔ دونوں طرف کے یہ ناکے انگریزی سمندری فوج کے لئے بہت بڑے آگے ہوں گے۔ ایک سال گورکھا فوجوں کا لٹھا۔ انگریزوں کی سرکار نے اسے بھی بڑی خوبصورتی سے حل کر لیا اور نیپال کی سرکار اور انگریزوں کی سرکار میں سمجھوتہ ہو گیا اور انگریزوں کی اپنی اسپرٹل فوج میں گورکھے بھرتی ہو گئے ہیں اور ہوں گے۔ ہندوستان یا پاکستان کی فوجوں میں گورکھے بھرتی نہیں ہوں گے۔ اس کا مطلب یہ ہے کہ انگریزوں کی طرح گورکھا فوج بھی یہاں انگریزوں کے اصول کے تحت اسپرٹل

(۲۵)

نیا ہند آج کی دنیا

نیا ہند آج کی دنیا

نیا ہند آج کی دنیا

نیا ہند

آج کی دنیا

نیا ہند آج کی دنیا

کی تاجیج کے چوروں سے ہک میں ہے۔ اسی لیے آکراگانستان کی سرکار نے یہ ایک ایک انگریزوں کے سامنے پیش کر دی کہ 'ڈیورنڈ لائن' سے سینھ نری تک کا سارا ہلاکا آکراگانستان کو دے دیا جاوے۔ بات بالکل بیجا بھی نہیں۔ اس علاقے کو دے دیا جاوے۔ بات بالکل بیجا بھی نہیں۔ اس علاقے میں ۱۹۷۰ء میں ایک قوم کے بونگ رہتے ہیں۔ پھر ساری آکراگان قوم کا ایک لاکھ آزاد لائے کیوں نہ ہو؟ اسی لیے آکراگان کا جیلا وزیر خد لندن اور امریکا گیا تھا۔ یہ بھی خبر آئی تھی کہ آکراگان جھگڑا کے اس سوال کو لو۔ این۔ او۔ کی پٹیائے کے سامنے پیش کیے ڈالا ہو۔ کابل سے خبر آئی ہو کہ آکراگان کے پاکستان میں لائے جانے کو اپنے لئے ایک چھوٹی چھوٹی جگہ ہو۔ وہ ساری طرف آکراگان سے تجارتی اور فوجی سمجھوتہ کرنا چاہتے ہیں اور آکراگان میں شامل کرنا بھی ضروری سمجھتے ہیں۔ آکراگان کے آگے پچھلے کی یہ کوئی بہت بڑے خطرے سے خالی نہیں آتی۔ کین جاپا ہو کہ انکی جنگ کی پہلی چھوٹی کاموں سے آکراگان کے کسی ریاستوں کے سامنے کوئی ڈالان سے اتنا الجھا ہوا ہو کہ ریاستیں نہ پیدا کی طرح آزاد چھوٹی گئی ہیں اور آکراگان یا پاکستان سے پیدا کی طرح بندھی ہوئی۔ کئی باتوں میں ریاستیں جیتا ہندستان یا پاکستان کے کاموں میں دخل دے سکیں گی۔ آکراگان یا پاکستان یا آکراگان ریاستوں کے کاموں میں دخل نہیں دے سکیں گی۔ انگریز سرکار کو ریاستوں سے پہلے زبردست سہارا ملتا ہی رہے گا۔

نیا ہند
آج کی دنیا
ستمبر ۱۹۷۱ء

کی تاجیج کے چوروں سے ہک میں ہے۔ اسی لیے آکراگانستان کی سرکار نے یہ ایک ایک انگریزوں کے سامنے پیش کر دی کہ 'ڈیورنڈ لائن' سے سینھ نری تک کا سارا ہلاکا آکراگانستان کو دے دیا جاوے۔ بات بالکل بیجا بھی نہیں۔ اس علاقے کو دے دیا جاوے۔ بات بالکل بیجا بھی نہیں۔ اس علاقے میں ۱۹۷۰ء میں ایک قوم کے بونگ رہتے ہیں۔ پھر ساری آکراگان قوم کا ایک لاکھ آزاد لائے کیوں نہ ہو؟ اسی لیے آکراگان کا جیلا وزیر خد لندن اور امریکا گیا تھا۔ یہ بھی خبر آئی تھی کہ آکراگان جھگڑا کے اس سوال کو لو۔ این۔ او۔ کی پٹیائے کے سامنے پیش کیے ڈالا ہو۔ کابل سے خبر آئی ہو کہ آکراگان کے پاکستان میں لائے جانے کو اپنے لئے ایک چھوٹی چھوٹی جگہ ہو۔ وہ ساری طرف آکراگان سے تجارتی اور فوجی سمجھوتہ کرنا چاہتے ہیں اور آکراگان میں شامل کرنا بھی ضروری سمجھتے ہیں۔ آکراگان کے آگے پچھلے کی یہ کوئی بہت بڑے خطرے سے خالی نہیں آتی۔ کین جاپا ہو کہ انکی جنگ کی پہلی چھوٹی کاموں سے آکراگان کے کسی ریاستوں کے سامنے کوئی ڈالان سے اتنا الجھا ہوا ہو کہ ریاستیں نہ پیدا کی طرح آزاد چھوٹی گئی ہیں اور آکراگان یا پاکستان سے پیدا کی طرح بندھی ہوئی۔ کئی باتوں میں ریاستیں جیتا ہندستان یا پاکستان کے کاموں میں دخل دے سکیں گی۔ آکراگان یا پاکستان یا آکراگان ریاستوں کے کاموں میں دخل نہیں دے سکیں گی۔ انگریز سرکار کو ریاستوں سے پہلے زبردست سہارا ملتا ہی رہے گا۔

نیا ہند
آج کی دنیا
ستمبر ۱۹۷۱ء

کی تاجیج کے چوروں سے ہک میں ہے۔ اسی لیے آکراگانستان کی سرکار نے یہ ایک ایک انگریزوں کے سامنے پیش کر دی کہ 'ڈیورنڈ لائن' سے سینھ نری تک کا سارا ہلاکا آکراگانستان کو دے دیا جاوے۔ بات بالکل بیجا بھی نہیں۔ اس علاقے کو دے دیا جاوے۔ بات بالکل بیجا بھی نہیں۔ اس علاقے میں ۱۹۷۰ء میں ایک قوم کے بونگ رہتے ہیں۔ پھر ساری آکراگان قوم کا ایک لاکھ آزاد لائے کیوں نہ ہو؟ اسی لیے آکراگان کا جیلا وزیر خد لندن اور امریکا گیا تھا۔ یہ بھی خبر آئی تھی کہ آکراگان جھگڑا کے اس سوال کو لو۔ این۔ او۔ کی پٹیائے کے سامنے پیش کیے ڈالا ہو۔ کابل سے خبر آئی ہو کہ آکراگان کے پاکستان میں لائے جانے کو اپنے لئے ایک چھوٹی چھوٹی جگہ ہو۔ وہ ساری طرف آکراگان سے تجارتی اور فوجی سمجھوتہ کرنا چاہتے ہیں اور آکراگان میں شامل کرنا بھی ضروری سمجھتے ہیں۔ آکراگان کے آگے پچھلے کی یہ کوئی بہت بڑے خطرے سے خالی نہیں آتی۔ کین جاپا ہو کہ انکی جنگ کی پہلی چھوٹی کاموں سے آکراگان کے کسی ریاستوں کے سامنے کوئی ڈالان سے اتنا الجھا ہوا ہو کہ ریاستیں نہ پیدا کی طرح آزاد چھوٹی گئی ہیں اور آکراگان یا پاکستان سے پیدا کی طرح بندھی ہوئی۔ کئی باتوں میں ریاستیں جیتا ہندستان یا پاکستان کے کاموں میں دخل دے سکیں گی۔ آکراگان یا پاکستان یا آکراگان ریاستوں کے کاموں میں دخل نہیں دے سکیں گی۔ انگریز سرکار کو ریاستوں سے پہلے زبردست سہارا ملتا ہی رہے گا۔

ہم تکسلیں میں جانا نہیں چاہیے۔ پر نئے قانون سے صاف آکر
 پاکستان کی سرکار بریائوں کے ذریعے سے ہندستان اور پاکستان
 پر اپنا فوجی اثر رکھے گی اور ہندستان اور پاکستان کے ذریعے
 بریائوں پر اپنا تاج لاجی اثر رکھے گی۔ دونوں پر انگریز سرکار کا جو
 سیدھا اثر ہے وہ الگ رہا۔ ہندستان یا پاکستان میں سے کوئی کسی
 ریاست میں کوئی ایسی بات نہیں کر سکتا جو انگریز سرکار کی مرضی کے
 خلاف ہو۔ اور پچھلے نمبر ایکٹ ۱۹۷۰ء۔ انگریز سرکار کسی ریاست
 کو آزاد ریاست نہیں اتنی دونوں میں سے کسی ایک آزاد ڈومینین
 سے مجبور ہی کوئی ریاست نہیں بن سکتی اور
 اور جو ایسا خطہ آج دکھائی گیا ہے کہ اس ریاست کو اس طرف سے اپنے
 سے بچانے کے لئے انگریزوں یا سہارا لینا ہی پڑے گا اور انگریزوں کی
 اس بات کو یقینی کرنا پڑے گا کہ یہ خطہ وہ ایک ہندستان کے خلاف
 برعکس پاکستان سے اور پڑے کسی دوسری ریاست کے۔ اس
 معاملے میں نیا قانون اور دوسرے ساتھ سے کاغذ بہت ہی خطرے
 سے بھرتے ہوئے ہیں۔

بہت مشکل ہو کر، ان خطوں کی سرکار کو جو کچھ بھی نئی مثال یا نئی سامراجی شاہی
 کا طریقہ بہانہ پڑا ہے وہ اپنی کوہنہ اور اپنے کھوکھری مصیبتوں کی وجہ
 سے بہانہ پڑا ہے۔ انگلستان میں آدمیوں کی اتنی کمی ہو کر کارخانوں کے
 لئے مزاحمت رک نہیں ہے۔ لازمی فوجی خدمت سے سالانہ گھنٹے
 بڑھتے ہیں۔ ایک طرف سامراج کا گنہہ بڑھتا چلا جا رہا
 ہے اور دوسری طرف اس کے بے گناہے یا اس کی حفاظت

ہم تکسلیں میں جانا نہیں چاہتے۔ پر نئے قانون سے صاف آکر
 پاکستان کی سرکار بریائوں کے ذریعے سے ہندستان اور پاکستان
 پر اپنا فوجی اثر رکھے گی اور ہندستان اور پاکستان کے ذریعے
 بریائوں پر اپنا تاج لاجی اثر رکھے گی۔ دونوں پر انگریز سرکار کا جو
 سیدھا اثر ہے وہ الگ رہا۔ ہندستان یا پاکستان میں سے کوئی کسی
 ریاست میں کوئی ایسی بات نہیں کر سکتا جو انگریز سرکار کی مرضی کے
 خلاف ہو۔ اور پچھلے نمبر ایکٹ ۱۹۷۰ء۔ انگریز سرکار کسی ریاست
 کو آزاد ریاست نہیں اتنی دونوں میں سے کسی ایک آزاد ڈومینین
 سے مجبور ہی کوئی ریاست نہیں بن سکتی اور
 اور جو ایسا خطہ آج دکھائی گیا ہے کہ اس ریاست کو اس طرف سے اپنے
 سے بچانے کے لئے انگریزوں یا سہارا لینا ہی پڑے گا اور انگریزوں کی
 اس بات کو یقینی کرنا پڑے گا کہ یہ خطہ وہ ایک ہندستان کے خلاف
 برعکس پاکستان سے اور پڑے کسی دوسری ریاست کے۔ اس
 معاملے میں نیا قانون اور دوسرے ساتھ سے کاغذ بہت ہی خطرے
 سے بھرتے ہوئے ہیں۔

بہت مشکل ہو کر، ان خطوں کی سرکار کو جو کچھ بھی نئی مثال یا نئی سامراجی شاہی
 کا طریقہ بہانہ پڑا ہے وہ اپنی کوہنہ اور اپنے کھوکھری مصیبتوں کی وجہ
 سے بہانہ پڑا ہے۔ انگلستان میں آدمیوں کی اتنی کمی ہو کر کارخانوں کے
 لئے مزاحمت رک نہیں ہے۔ لازمی فوجی خدمت سے سالانہ گھنٹے
 بڑھتے ہیں۔ ایک طرف سامراج کا گنہہ بڑھتا چلا جا رہا
 ہے اور دوسری طرف اس کے بے گناہے یا اس کی حفاظت

شاہد
کچھ نہیں
سمبر ۱۹۲۸ء

کرنے کا سال بنے گا۔ جاتا جا رہا ہے۔ اس طرح ہندوستانی فوج میں اپنے ایک اور قسم کا خیال بڑھتا جا رہا ہے اور اس طرح انگریزی فوج میں اس طرح کے نئے رنگوں کی تعداد بڑھتی جا رہی ہے جو انتہائی مزیدار آریوں سے تو لڑائیں گے پر نئے جہتا پر ہم برسائے میں ظاہر ہو رہے ہیں۔ اس سلسلے میں انگریز سرکار بہت خوشامی سے اپنے سر سنبھالنے کی کوشش کر رہی ہے۔

کچھ کتابیں

خریدی یا امیرمی — کھنے والے سینے گوند داس صفحے ۱۶۵ اگھارٹ
 میٹھ گوند داس جی ایک اویچے ورے کے ایک کھنے والے
 ہی۔ ان کی کہنی ہی سند کتابیں آج ہائے سے سائے موجود ہیں۔
 یہ کتاب بھی پانچ آگوں میں انہیں کا ایک ایک ۱۹۳۸ء
 میں جب میٹھ جی ازریق سے ہندستان لوٹ رہے تھے تو جہاز میں
 آیا اس کتاب کا پلاٹ ان کے سامنے میں تیار ہوا تھا۔ ازریق میں
 انہوں نے جو کچھ دیکھا اور وہاں ہن کر کتابوں کی حالت کو
 جہاں تک بھی انہوں نے سنا اور سمجھا، اس پلاٹ کی شکل میں
 ان کے سامنے میں پیر کرنے کا تھا۔ ایل ۱۹۴۱ء میں جیل پڑ جیل میں
 میں وہی سب کچھ ان کے قلم سے اس کتاب کی شکل

نیا ہیند میتنہار سن ۲۹

کرتے کا سامان بھدہر پدتا جا رہا ہے۔ جس तरह ہیندوستانی
 کویج میں اپنے مولک آریہ کویم کا خیال بڑھتا جا رہا ہے۔ ڈرہی
 तरह آریہ کویج میں اس तरह کے نئے رنگوں کی تعداد بڑھتی
 جا رہی ہے جو ہیندوستان بھدہر ناہیوں سے تو لڑ لیں گے پر ہیندو
 جنتا پر ہم ہرمانے میں شایہ کھل آناکارنا کرے۔ اس
 سہند میں آریہ کویج سرکار بھدہر ہیندوستانی سے اپنے کو سہمالنے
 کی کوشش کر رہی ہے۔

کھل کیتاویں

گرہی یا ہرمیہری — لیتنے والے سہند گوہیند داس، سہند
 ۱۹۲۸ء، لیتاوت ناگاری، کویمت دو رپے، پتا—ہیندوستانی
 ڈرہی ہلاہارپاد پو۔ پی۔

سہند گوہیند داس جی ایک کڑے درجے کے ناٹک لیتنے والے
 ڈرہی۔ انکی کیتاویں ہی سہند کیتاویں آریہ ہمارے سامنے مہیہر
 ڈرہی۔ یہ کیتاویں بھی پانچ آریوں میں انہیں کا ایک ناٹک ہے۔ ۱۹۳۷
 میں جب سہند جی آریہ کویج سے ہیندوستان لوٹ رہے تھے تو جہاز میں
 ہی اس کیتاویں کا پلاٹ ان کے سامنے میں تیار ہوا تھا۔ آریہ کویج
 میں انہوں نے جو کچھ دیکھا اور وہاں ہن کر کتابوں کی حالت کو
 جہاں تک بھی انہوں نے سنا اور سمجھا، اس پلاٹ کی شکل میں
 ان کے سامنے میں پیر کرنے کا تھا۔ ایل ۱۹۴۱ء میں جیل پڑ جیل میں
 میں وہی سب کچھ ان کے قلم سے اس کتاب کی شکل

میں نکلا۔ آج جو امیری اور غریبی کے بیچ اتنا بڑا فرق دکھائی دیتا ہے، غریبوں پر جو چلتی ہے اور اس سے جو بلائی بھیل رہی ہے اس کی ایک جہانسی ہیں اس کتاب میں دیکھنے کو ملے گی۔ اس کتاب پر سیدھی کو ہندستان آئی ہے، الہ آباد کی طرف سے۔

۱۹۶۵ میں بل جلا ہے۔ اس کتاب کا پلٹ لیں اور:

گھنٹی داس افریقہ میں ایک بڑے امیر تھوہاری ہیں، اچلا اکھیس کی خوبصورت جہان لڑکی ہے۔ وہ بجا بھوش اچلا کا ایک شہداء لہوان کو غریب دوست ہے۔ دونوں آپس میں شادی کرنا چاہتے ہیں مگر وہ بجا بھوش کتا ہے کہ جب تک اچلا اپنے باپ کی تمام دولت اور جائیداد کو اچلا جس کو انھوں نے غریبوں کا خون بہا ہے برسی میری اور ظلم سے بچا ہے۔ اس کا چھوڑ نہ دے کی وہ اس سے شادی نہ کرے گا۔ بھگتوں بعد وہ بجا بھوش اچلا کو پنا بنا جائے ہندستان کے لئے

(۲۵)

مطالعہ ہوتا ہے اور اچلا بھی اس کا پیچھا کرتی ہے۔ جہاں پر وہی دونوں ملتے ہیں۔ اچلا اس کی شہرٹوں کو مان لیتی ہے اور ہندستان آکر عدول ظاہری کر لیتے ہیں۔ وہ بجا بھوش کی بھی لاشیں داس کے لاکھ کئے پر بھی اس کی دولت قبول نہیں کرتا اور غریبی میں ہی خوش رہتا ہے۔ کچھ دنوں بعد اچلا کا بچہ نکلا پڑا ہے اور وہی بجا بھوش کی دھڑ سے اپنے پتھی کی لائے سے اچلا کو اپنے باپ سے مدد لینی پڑتی ہے۔ دھڑ سے دھڑ سے اچلا کا جھول بھڑکی سے اسی دھڑ سے سیاں بھڑکی سے کھٹ پٹ بھڑکی ہے اور اچلا اپنے پتھی

میں نیکلا۔ آج جو امیری اور غریبی کے बीच ہتلا بڑا فرق دکھائی دیتا ہے، غریبوں پر جو چلتی ہے اور اس سے جو بلائی بھیل رہی ہے اس کی ایک جہانسی ہیں اس کتاب میں دیکھنے کو ملے گی۔ اس کتاب پر سیدھی کو ہندستان آئی ہے، الہ آباد کی طرف سے۔

۱۹۶۵ میں بل جلا ہے۔ اس کتاب کا پلٹ لیں اور:

گھنٹی داس افریقہ میں ایک بڑے امیر تھوہاری ہیں، اچلا اکھیس کی خوبصورت جہان لڑکی ہے۔ وہ بجا بھوش اچلا کا ایک شہداء لہوان کو غریب دوست ہے۔ دونوں آپس میں شادی کرنا چاہتے ہیں مگر وہ بجا بھوش کتا ہے کہ جب تک اچلا اپنے باپ کی تمام دولت اور جائیداد کو اچلا جس کو انھوں نے غریبوں کا خون بہا ہے برسی میری اور ظلم سے بچا ہے۔ اس کا چھوڑ نہ دے کی وہ اس سے شادی نہ کرے گا۔ بھگتوں بعد وہ بجا بھوش اچلا کو پنا بنا جائے ہندستان کے لئے

(۲۵)

مطالعہ ہوتا ہے اور اچلا بھی اس کا پیچھا کرتی ہے۔ جہاں پر وہی دونوں ملتے ہیں۔ اچلا اس کی شہرٹوں کو مان لیتی ہے اور ہندستان آکر عدول ظاہری کر لیتے ہیں۔ وہ بجا بھوش کی بھی لاشیں داس کے لاکھ کئے پر بھی اس کی دولت قبول نہیں کرتا اور غریبی میں ہی خوش رہتا ہے۔ کچھ دنوں بعد اچلا کا بچہ نکلا پڑا ہے اور وہی بجا بھوش کی دھڑ سے اپنے پتھی کی لائے سے اچلا کو اپنے باپ سے مدد لینی پڑتی ہے۔ دھڑ سے دھڑ سے اچلا کا جھول بھڑکی سے اسی دھڑ سے سیاں بھڑکی سے کھٹ پٹ بھڑکی ہے اور اچلا اپنے پتھی

لوگوں کو اپنے اوپر نظموں کی کہانی بڑھا بڑھا کر سنانا، جوش دلانا اور اس جگہ کو پھیلانا معلوم ہوتا ہے۔ پنجاب کے دہلوں حصوں کے راجہ کی فوج کے خلاف جان بچا کر بھاگتے ہوئے لوگوں کو قتل کرنے کی شکار بنائیں۔ بارہ آدمی ہیں۔ شیخوپورہ میں پشت جواہر لال نرود کے حملے بنائے گئے۔ اس شہر کے ۱۵ ہزار ہندوؤں اور لاکھوں میں سے دس ہزار کو فوج اور پولیس نے قتل کیا وغیرہ وغیرہ۔ ۱۰۰ سب کون کر رہا ہے اور کیسے اور کہیں ہوا ہے؟

انگلستان ہی کے ایک مشہور انسان لیٹ۔ اخبار میں چھپنے لگا۔ چین نے حال کے ایک ایکہ میں چار اٹوں کو صاف صاف مارا ہے۔

ساکر مانا ہے۔

(۱) یہ کہ اس طرح کے حملے بغیر پہلے سے پہلی لادہ درگاہ کی شہادی اور باضابطہ تنظیم کے نہیں ہو سکتے تھے۔

(۲) یہ کہ پولیس نے بہت پہلے سے انگریز سرکار کو ان کی اطلاع دے دی تھی اور انگریزوں کو اپنی طرح معلوم تھا کہ باؤنڈری کمیٹی کا فیصلہ ہوتے ہی کیا ہونے والا ہے۔

(۳) یہ کہ ابھی تک حکومت کی ہر ہندوستانیوں کے ہاتھوں میں نہیں ہے۔ انگریزوں ہی کے ہاتھوں میں ہے۔ ہندوستان اور پاکستان دونوں طرف کی فوجوں کا ایک سپریم کمانڈر انگریز ہی، دونوں طرف کی فوجوں کے الگ الگ کمانڈر ان چیف بھی انگریز ہیں، اور صدر کمانڈر جنرل انگریز اور ادمیرلٹیم پنجاب کا گورنر انگریز۔

(۴) یہ کہ اگر وہ لوگ جن کے ہاتھوں میں ملک کی

پنجاب کا گورنر آرمی جنرل

(۵) یہ کہ آگرار وہ لوگ جن کے ہاتھوں میں ملک کی

لوگوں کو اپنے اوپر نظموں کی کہانی بڑھا بڑھا کر سنانا، جوش دلانا اور اس جگہ کو پھیلانا معلوم ہوتا ہے۔ پنجاب کے دہلوں حصوں کے راجہ کی فوج کے خلاف جان بچا کر بھاگتے ہوئے لوگوں کو قتل کرنے کی شکار بنائیں۔ بارہ آدمی ہیں۔ شیخوپورہ میں پشت جواہر لال نرود کے حملے بنائے گئے۔ اس شہر کے ۱۵ ہزار ہندوؤں اور لاکھوں میں سے دس ہزار کو فوج اور پولیس نے قتل کیا وغیرہ وغیرہ۔ ۱۰۰ سب کون کر رہا ہے اور کیسے اور کہیں ہوا ہے؟

انگلستان ہی کے ایک مشہور انسان لیٹ۔ اخبار میں چھپنے لگا۔ چین نے حال کے ایک ایکہ میں چار اٹوں کو صاف صاف مارا ہے۔

ساکر مانا ہے۔

(۱) یہ کہ اس طرح کے حملے بغیر پہلے سے پہلی لادہ درگاہ کی شہادی اور باضابطہ تنظیم کے نہیں ہو سکتے تھے۔

(۲) یہ کہ پولیس نے بہت پہلے سے انگریز سرکار کو ان کی اطلاع دے دی تھی اور انگریزوں کو اپنی طرح معلوم تھا کہ باؤنڈری کمیٹی کا فیصلہ ہوتے ہی کیا ہونے والا ہے۔

(۳) یہ کہ ابھی تک حکومت کی ہر ہندوستانیوں کے ہاتھوں میں نہیں ہے۔ انگریزوں ہی کے ہاتھوں میں ہے۔ ہندوستان اور پاکستان دونوں طرف کی فوجوں کا ایک سپریم کمانڈر انگریز ہی، دونوں طرف کی فوجوں کے الگ الگ کمانڈر ان چیف بھی انگریز ہیں، اور صدر کمانڈر جنرل انگریز اور ادمیرلٹیم پنجاب کا گورنر انگریز۔

(۴) یہ کہ اگر وہ لوگ جن کے ہاتھوں میں ملک کی

پنجاب کا گورنر آرمی جنرل

(۵) یہ کہ آگرار وہ لوگ جن کے ہاتھوں میں ملک کی

نیا ہند ہمارے ہندوستان سے بڑی آفتیں آئے گی ان میں بند ہو سکتی تھیں اور بند ہو سکتی ہیں۔

ہمیں خیال ہوتا ہے کہ شاید پاکستان اور ہندوستان دونوں کے بچے ہندوستانی دیش بھکت بننا اب تک یہ محسوس کرنے لگے ہوئے ہیں۔ ان کا ابھی سے آزادی کے موصول ہونا اور خوشیاں منانا چھوٹا تھا اور جتنا کہ ان جانے دھوکے میں ڈالنا تھا۔ ملک کی ہمسایاں ہندی طرح غیروں کے ہاتھوں میں ہو اور کسی جاہلی اور پچھلے ہزار برس کے دیش بھر میں پھیلے ہوئے مسلم راج، ہندو راج یا بے محلے راج کے اقتدار میں سے کوئی ایک مذہب کی جھٹکا نے اپنے دوسرے مذہب کے بڑے بڑے لوگوں پر اس طرح کے حملے کیے ہیں۔ یہ ایک باضابطہ نہیں جو ہندو مسلم اور سکھ جنتا سے یہ ہوا یعنی کی کر آخر انگریزی راج اپنے کولائے پاسے راج سے اچھا تھا، ہندوستانیوں کو ناقابل ثابت کرنے کی اللہ انگلستان کے ذمہ دینی ہے کہ اس ملک کے اوپر اور زیادہ مضبوطی کے ساتھ کس لینے کی۔

علاج بھی صاف ہے۔ ہمیں اپنی آنکھوں کی ترقیوں کو کھلانا ہے اور اپنے دلوں کو جیتنا اور صاف کرنا ہے۔ ہندوستانیوں کو ملانا اور اللہ بچی آزادی حاصل کرنے کو اس سے زیادہ تر باغیوں کے لئے تیار ہونا ہے۔ کام پیادہ کی چٹھائی ہو یہ دوسرا کوئی راستہ نہیں۔

۲۷/۹/۱۱

—مندرگال

نیا ہند ہمارے ہندوستان سے بڑی آفتیں آئے گی ان میں بند ہو سکتی تھیں اور بند ہو سکتی ہیں۔

ہمیں خیال ہوتا ہے کہ شاید پاکستان اور ہندوستان دونوں کے بچے ہندوستانی دیش بھکت بننا اب تک یہ محسوس کرنے لگے ہوئے ہیں۔ ان کا ابھی سے آزادی کے موصول ہونا اور خوشیاں منانا چھوٹا تھا اور جتنا کہ ان جانے دھوکے میں ڈالنا تھا۔ ملک کی ہمسایاں ہندی طرح غیروں کے ہاتھوں میں ہو اور کسی جاہلی اور پچھلے ہزار برس کے دیش بھر میں پھیلے ہوئے مسلم راج، ہندو راج یا بے محلے راج کے اقتدار میں سے کوئی ایک مذہب کی جھٹکا نے اپنے دوسرے مذہب کے بڑے بڑے لوگوں پر اس طرح کے حملے کیے ہیں۔ یہ ایک باضابطہ نہیں جو ہندو مسلم اور سکھ جنتا سے یہ ہوا یعنی کی کر آخر انگریزی راج اپنے کولائے پاسے راج سے اچھا تھا، ہندوستانیوں کو ناقابل ثابت کرنے کی اللہ انگلستان کے ذمہ دینی ہے کہ اس ملک کے اوپر اور زیادہ مضبوطی کے ساتھ کس لینے کی۔

علاج بھی صاف ہے۔ ہمیں اپنی آنکھوں کی ترقیوں کو کھلانا ہے اور اپنے دلوں کو جیتنا اور صاف کرنا ہے۔ ہندوستانیوں کو ملانا اور اللہ بچی آزادی حاصل کرنے کو اس سے زیادہ تر باغیوں کے لئے تیار ہونا ہے۔ کام پیادہ کی چٹھائی ہو یہ دوسرا کوئی راستہ نہیں۔

۲۷/۹/۱۱

—مندرگال

بلا کی برداشت

ہندوستانی اڈنٹیشن پر پچھلے دو ہفتے کو جی طابا ہو۔
انہوں نے سنہ ۱۹۴۷ء کے جون کے آخر میں پوری آزادی کی بات
کر کے سنہ ۱۹۴۷ء کے ان گاندھی جی کو جی بہت چھوڑ دیا
اور جنہوں نے سال بھر میں سوادج دلانے کی بات کر کے ہندوستان
کے چھوٹے بڑے سبھی کو اگلی بنا دیا تھا۔ ہندوستان کے
ہندو مسلمان راج پیتاؤں کو آج آزادی کی دہلی سالنے کھڑی نظر
آنے لگی اور ان کی وجہ سے ساری جنتا کو بھی وہ کچھ دیکھ
دیکھائی دینے لگی ہو۔ یہی وجہ ہو کہ کر دہلوں کا مال لٹ گیا اور
آکھوں بائیں ختم ہو رہی ہیں پر سب کے سب اس کی کچھ برباد
کئے بغیر جون ۱۹۴۷ء کی طرف دھڑکے جا رہے ہیں۔ لائے صاحب
نے بلا سے راج پیتاؤں میں بلا کی برداشت سیکھا کر دی ہو۔ شاید
یہ برداشت ان میں لائے صاحب سے پاس تحریر پر بیٹھتے ہی
اپنے آپ آگئی ہو پر اس میں شک نہیں کہ آئندہ بھی ایسے
آج اگر کارکنوں کو لائے صاحب سے پاس تحریر پر بیٹھتے ہو
ظلم ہندوستان میں پر فوٹ سبب ہیں ان کے شروع ہونے تو آج جو
زہیں آسمان ایک کر دے گئے ہوتے۔ دونوں نے لائے ایک ہی
آواز اٹھائی ہوتی ہو۔ موجودہ گورنر جنرل یا گورنر جنرل کو فوراً طلب
کر لیا جائے اور ان کی کینیڈٹ فوراً برباد کر دی جائے۔ سب اب
تو وہوں اگر چیک نہیں بیٹھی ہیں تو ایسی بل رہی ہیں انوں پر کسی نے
پانی پھینکے کہ کچھ کر دیا ہو۔ نہ جانے کیوں وہ اس کام کو ایسا ہی سمجھ

بلا کی برداشت

ہیچ افسوسلےسی ماہنڈ بہتن پر نیٹاہر ہو جانے کو جی
چاہتا ہے۔ انہوں نے سن ۱۹۴۷ کے جون کے آخر میں پوری آزادی کی بات
کر کر کہا کہ سن ۲۹ کے جن گاندھی جی کو جی بہت چھوڑ دیا
ہوڈ دیا ہے جنہوں نے سال ہر میں سوراہا دیا جانے کی بات کہ
کر ہندوستان کے ہونے بڑے سبھی کو پانال بنا دیا یا۔
ہندوستان کے ہندو مسلمان راج नेताओं کو آج آج
کی دےوا سامنے رکھو نہہر آجانے لگی اور انکی بجاہ سے ساری
جاننا کو جی بہت کچھ کچھ دیا ہے دینے لگی ہے۔ یہی بجاہ ہے
کی کر دےوا کا مال لٹ رہا ہے اور لائے جانے سبب ہو رہی
ہے پر سب کے سب افسوس کچھ پر یاہ کیے بغیر جون ۱۹۴۷ کی
نرک دہلی جا رہے ہیں۔ لائے صاحب نے ہمارے راج नेताओं میں بلا
کی برداشت پدیا کر دی ہے۔ شاید یہ برداشت ان میں لائے
صاحب کے پاس کورسی پر بیٹھے ہی اپنے آپ آگئی ہو پر اس
شک نہی کی آج بھر رہے ہیں۔

(۲۰)

آج اگر کارکنوں کو لائے صاحب سے پاس تحریر پر بیٹھتے ہو
ظلم ہندوستان میں پر فوٹ سبب ہیں ان کے شروع ہونے تو آج جو
زہیں آسمان ایک کر دے گئے ہوتے۔ دونوں نے لائے ایک ہی
آواز اٹھائی ہوتی ہو۔ موجودہ گورنر جنرل یا گورنر جنرل کو فوراً طلب
کر لیا جائے اور ان کی کینیڈٹ فوراً برباد کر دی جائے۔ سب اب
تو وہوں اگر چیک نہیں بیٹھی ہیں تو ایسی بل رہی ہیں انوں پر کسی نے
پانی پھینکے کہ کچھ کر دیا ہو۔ نہ جانے کیوں وہ اس کام کو ایسا ہی سمجھ

رہی ہے جسکو پوری خیمہداری असल में उनको नहीं है. मैंनेचस्तर
 गाजियन ने इस जादू को यह कर तोड़ दिया है कि अभी हिन्दुस्तान
 में अंधों का ही राज है. क्योंकि वहां के गवर्नर जनरल और
 कमान्डर इन चीफ और भी बड़े बड़े कौजी आफसर और
 कई गवर्नर तक अंधेच ही है. पर इस जादू के तोड़ ने भा
 कांधेस और लीगा वीवियों पर अभी तक कोई असर नहीं किया. इस
 लिये उनको तरफ से हमको मजबूर होकर यह कहना पड़ता है कि—

(२७)

हिन्दुस्तानी और पाकिस्तानी दोनों सरकारें इस काबिल साबित
 नहीं हुई कि वह हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की जान माल की
 हिकाजत कर सकें. और अब उनको चाहिये कि जितनी जल्दी
 हो सके वह अपना काम किसी और के सिपुद करें और अगर
 किसी वजह से वह अपनी यह खिमہداری अपने गवर्नरों पर
 फंक रही हों तो उनको इसीका देने के लिये मजबूर करें और
 अगर गवर्नर भी अपनी खिमہदारी कौजी, सिविल या पुलिस
 आफसरों के सिर मढ़ना चाहें तो उन कौजी सिविल या पुलिस
 आफसरों के खिलाफ मुकदमें चलाये जाय और उनको कौरन
 मुअत्तल कर दिया जाय. अगर यह सब नहीं किया जाता तो इस लूट
 और खून के खिमہदार वह गुन्हे और सिर फिरे नहीं समझे जा
 सकते जिनकी बातों से हमारी आलों के लिये यह जुलम टाप गए
 हैं. इस लूट और खून की खिमہदारी से हिन्दुस्तानी सरकार
 किसी तरह नहीं बच सकती और बरतानिया तो किसी तरह अपने
 को कम खिमہदार नहीं समझ सकता.

अगर ऊपर बताई बातों में से कोई एक भी न हुई तो हमारा

रही हैं जिसकी पूरी खिमہदारी असल में उनको नहीं है. मैंनेचस्तर
 गाजियन ने इस जादू को यह कर तोड़ दिया है कि अभी हिन्दुस्तान
 में अंधों का ही राज है. क्योंकि वहां के गवर्नर जनरल और
 कमान्डर इन चीफ और भी बड़े बड़े कौजी आफसर और
 कई गवर्नर तक अंधेच ही है. पर इस जादू के तोड़ ने भा
 कांधेस और लीगा वीवियों पर अभी तक कोई असर नहीं किया. इस
 लिये उनको तरफ से हमको मजबूर होकर यह कहना पड़ता है कि—

हिन्दुस्तानी और पाकिस्तानी दोनों सरकारें इस काबिल साबित
 नहीं हुई कि वह हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की जान माल की
 हिकाजत कर सकें. और अब उनको चाहिये कि जितनी जल्दी
 हो सके वह अपना काम किसी और के सिपुद करें और अगर
 किसी वजह से वह अपनी यह खिमہदारी अपने गवर्नरों पर
 फंक रही हों तो उनको इसीका देने के लिये मजबूर करें और अगर
 अगर गवर्नर भी अपनी खिमہदारी कौजी, सिविल या पुलिस
 आफसरों के सिर मढ़ना चाहें तो उन कौजी सिविल या पुलिस
 आफसरों के खिलाफ मुकदमें चलाये जाय और उनको कौरन
 मुअत्तल कर दिया जाय. अगर यह सब नहीं किया जाता तो इस लूट
 और खून के खिमہदार वह गुन्हे और सिर फिरे नहीं समझे जा
 सकते जिनकी बातों से हमारी आलों के लिये यह जुलम टाप गए
 हैं. इस लूट और खून की खिमہदारी से हिन्दुस्तानी सरकार
 किसी तरह नहीं बच सकती और बरतानिया तो किसी तरह अपने
 को कम खिमہदार नहीं समझ सकता.

अगर ऊपर बताई बातों में से कोई एक भी न हुई तो हमारा

یہ خیال ہے کہ یہ لوٹ ہٹ اور یہ لادھلاہٹ گزرتی رہے گی بلکہ بڑھتے بڑھتے سرخسوں کی طرح لڑائی کا روپ لے لے گی اور پھر ہم آدھی لکھ رہے ہیں گئے کہ ہمارے راج نیشادوں میں ہو گا کی برادشت!

—مہاواہن دین

۲—۵—۲۷

۔ خون کی واڈ کیسے رکے !

بدر لالہ لہنے کی آماج ہیند اور مسلمانان دینوں میں بھڑک وڑا ہے اور وہ ہر مینٹ نہروا کے ساہ بدرتی جا رہی ہے کیونکہ ہر مینٹ اومکاں روراک میل رہی ہے۔ وہ بدر لالہ لہنے کی آماج آجاسانی سے سرکار کے مسپور نہروا کی جا سکتی کیونکہ سرکار نے آرمی تک وہ ساہین نہروا کیا کی وہ بدر لالہ لہنے والوں کی بدر لہ کرے اچاسم دومان سکتا ہے۔ پانڈت جواہر لالہ جی کا یہ کہنا کہ ہر بدر لالہ لہنے کا کام جانتا کا نہروا سرکار کا ہے تو کہ ہے سہی، پر جانتا کے گالے اترنے والا ہر گینج نہروا ہے کیونکہ ہالہ ہی میں جانتا اپنے طاقت سے لائونڈر لہیوں کو جیل سے نکالنے کی کوشش کر چکی ہے اور آج وہ آسانی سے اپنا یہ کام سرکار کے ہاتھ میں نہ سونپے گی۔ یہ سچ ہے کہ اس کے نیچے بہت بڑے ہوں گے یہ بھڑک میں بڑے بچوں کی طرف دھیان نہیں جائے گا۔ اس لئے اب سوائے اس کے

سچیر

لاہی لائے

نیا ہیند

خون کی بارہ کیسے کرے ؟
 بدل لینے کی آگ ہیند اور مسلمان دونوں میں بھڑک اٹھی ہے اور وہ ہر مینٹ تیزی کے ساتھ بڑھتی جا رہی ہے کیونکہ ہر مینٹ کے سرخسوں کی جان سکتی ہے کہ سرکار نے ابھی تک یہ ثابت نہیں کیا کہ وہ بدل لینے والوں کی برے کی پیاس بجھا سکتی ہے۔ پانڈت جواہر لالہ جی کا یہ کہنا کہ بدل لینے کا کام جانتا کا نہیں سرکار کا ہے یہ سچ ہے اور صحیح ہے جانتا کے بدلے اترنے والوں کو لہیوں سے لائونڈر لہیوں کو جیل سے نکالنے کی کوشش کر چکی ہے اور آج وہ آسانی سے اپنا یہ کام سرکار کے ہاتھ میں نہ سونپے گی۔ یہ سچ ہے کہ اس کے نیچے بہت بڑے ہوں گے یہ بھڑک میں بڑے بچوں کی طرف دھیان نہیں جائے گا۔ اس لئے اب سوائے اس کے

۱—۹—۲۷

कोई तरीका नहीं है कि सरकार या तो सुद सुल्लम खुला नेक नियती से जनता को रहनुमाई करे और उसकी लीडर बन बैठे और कुछ दूर उसके साथ चलकर उसके ठीक राह पर ले आगे और अमन कायम होने के बाद वही तरीके अखिलधार करे जो आज कलकत्ते में गांधी जी और सुहरावर्दी साहब मिलकर कर रहे हैं. इस रास्ते से कामयाबी बहुत जल्दी होगी. कीजां की मदद से अन्वल तो यह मुमकिन नहीं कि जल्दी से भड़की हुई आग बुझाई जा सके और अगर बहुत ताकत के जरिये किसी तरह वह बुझाई भी जा सकी तो बुझेगी नहीं दबी रहेंगी और फिर कभी भी भड़क उठेगी.

यह तो समझ ही लेना चाहिये कि यह आग लगी हुई नहीं है लगाई गई है—नहीं तो क्या कभी सूबों के बटवारे नहीं हुए हैं ? बम्बई से सिन्ध काटा गया कोई खून नहीं हुआ. पंजाब से फ्रांटियर काटा गया कोई जान नहीं गई. एन. डबल्यू. पी. का यू. पी. बना कोई माल नहीं लुटा. फिर आज ही यह क्यों ? लगी आग बुझाना मुशिकल होता है. नासुमकिन भी होता है पर लगाई आग बुझाना बहुत आसान होता है. गांधी जी और सुहरावर्दी की तरह दो साफ दिल और सच्चे दिल बड़ी आसानी से लगाई को बुझा सकते हैं और यह खून की बाढ़ आसानी से रोकी जा सकती है.

—भगवान दीन

خبر
 ہادی لائے
 کیا سہند
 کوئی طریقہ نہیں ہو کہ سرکار یا آؤ خود حکم کھلا سیک ہی سے
 جیسا کہ رہنماؤں کو کہے اور اس کی لیڈر بن بیٹھے اور کچھ دور
 اس کے ساتھ چل کر اس کو چھیک لہ پرے آئے اور ان
 ٹائم ہونے کے بعد وہی طریقے اختیار کرے جو آج کل کے
 ہیں جو ہندی ہی اور سروردی صاحب مل کر سب اس
 راستے سے کامیابی بہت جلدی ہوگی. فوجوں کی مدد سے اول
 وہ یہ ممکن نہیں کہ جلدی سے جھڑکی ہوئی جنگ بچھائی جائے
 اور اگر بہت طاقت کے ذریعے کسی طرح وہ بچھائی بھی جائے گی
 تو بچنے کی نہیں دبی رہے گی اور کچھ عرصے ہی بھڑک اٹھے گی.
 یہ تو سمجھ ہی لینا چاہئے کہ یہ جنگ کئی ہوا نہیں ہو سکتی
 نہیں تو کیا کبھی صورتوں کے بخلاء سے نہیں ہوئے ہیں؟ یہی
 ہے سندھ کا حال بھی کوئی خون نہیں ہوا. پنجاب سے فرانسز
 گیا کوئی جان نہیں گئی. ایت. ڈبلیو. لیگ. کا پلٹ لیا تو کوئی مال
 نہیں گھا. پھر آج ہی یہ کیوں ہو گئی؟ جنگ بچھانا مشکل ہوتا ہے
 تاہم بھی ہوتا ہے اور یہ لگائی اگر بچھانا بہت آسان ہوتا ہے اور
 گاندھی جی اور سروردی کی طرح دو صاف دل اور سچے دل
 ہوں آسانی سے لگائی کو بچھائے ہیں اور یہ خون کی باڑھ
 آسانی سے روکی جاسکتی ہے اور

بھگوان دین
 ۱-۹-۴۳

کے باہر سے ملانے میں ہندوستان سب مل کر ملے ہوئے ہیں اور ہندی امداد دونوں کی بنیاد ہے اور ہندوستان کے زیادہ تر لوگ سمجھتے ہیں۔ سنسکرت بھری ہندی اور فارسی عربی بھری امدادوں کے بہت سے دلچسپ کھیل جان کاروں کی ہے لہذا یہ اس ہندوستان کو آگے بڑھانے سے بنا فرضی کے ہندی اور امدادوں کے خزانوں سے اور کچھ باہری بولیوں کے خزانوں سے بھی مال مال کیا جاوے اور عام جنت کی بولی سے بھی بولنا جائز ہو گا یا جاوے تو ہندی ہندوستانی امدادوں کی آگ آگ بہتی دھاراؤں کو لہری طرح لگا کر آگ کر سکتی ہے ان دونوں سے زیادہ مال مال بن سکتی ہے اور دھرم ، فلسفہ ، سائنس وغیرہ کی انہی سے اونچی باتیں اس میں بھی اور گہری جا سکتی ہیں۔ اس طرح ہندی بول ہندی ہندوستانی دیش کے پچھلے ہوئے دلوں کو لہانے والی اور ہندی کی سب سے آن نول پونجی ہے۔

دلی کی نئی دھواں سجھا دیش کے آگے کے لڑنے لڑنے کے ڈھانچے کو تیار کرنے کا بہت بڑا اور گہری ذمہ داری کا کام کر رہی ہے۔ دھواں سجھا کی کارروائی کے کارروائی میں اور ہندوستانی بولین کے آگے کے دھواں کے آگے میں جو پہلیت خواہ لال سرخ نے پیش کیا جو دونوں میں یہ مان لیا گیا ہے کہ "ہندوستانی" ہی اپنی دونوں شکلوں میں اور دونوں گھواؤں میں ہندوستان کی کوئی نہ پان ہے۔

اس کے باہر ہندوستان اور پاکستان کی دو آگ آگ اور سرکاری بنانے کا فرسلا ہوا۔ بہت سے دیش بھکت ہندو اور مسلمان

کے باہر سے ہندوستان میں ہندوستان سب مل کر ملے ہوئے ہیں اور ہندی امداد دونوں کی بنیاد ہے اور ہندوستان کے زیادہ تر لوگ سمجھتے ہیں۔ سنسکرت بھری ہندی اور فارسی عربی بھری امدادوں کے بہت سے دلچسپ کھیل جان کاروں کی ہے لہذا یہ اس ہندوستان کو آگے بڑھانے سے بنا فرضی کے ہندی اور امدادوں کے خزانوں سے اور کچھ باہری بولیوں کے خزانوں سے بھی مال مال کیا جاوے اور عام جنت کی بولی سے بھی بولنا جائز ہو گا یا جاوے تو ہندی ہندوستانی امدادوں کی آگ آگ بہتی دھاراؤں کو لہری طرح لگا کر آگ کر سکتی ہے ان دونوں سے زیادہ مال مال بن سکتی ہے اور دھرم ، فلسفہ ، سائنس وغیرہ کی انہی سے اونچی باتیں اس میں بھی اور گہری جا سکتی ہیں۔ اس طرح ہندی بول ہندی ہندوستانی دیش کے پچھلے ہوئے دلوں کو لہانے والی اور ہندی کی سب سے آن نول پونجی ہے۔

دلی کی نئی دھواں سجھا دیش کے آگے کے لڑنے لڑنے کے ڈھانچے کو تیار کرنے کا بہت بڑا اور گہری ذمہ داری کا کام کر رہی ہے۔ دھواں سجھا کی کارروائی کے کارروائی میں اور ہندوستانی بولین کے آگے کے دھواں کے آگے میں جو پہلیت خواہ لال سرخ نے پیش کیا جو دونوں میں یہ مان لیا گیا ہے کہ "ہندوستانی" ہی اپنی دونوں شکلوں میں اور دونوں گھواؤں میں ہندوستان کی کوئی نہ پان ہے۔

اس کے باہر ہندوستان اور پاکستان کی دو آگ آگ اور سرکاری بنانے کا فرسلا ہوا۔ بہت سے دیش بھکت ہندو اور مسلمان

مان ماہیوں کے دہل پر اس سے چوٹ لگے گی۔ کچھ ہندو بھائیوں نے
قہقہہ کی طرح یہ آواز اٹھائی کہ اب ہندوستان کی قومی بولی آسمان
لی بجلی ہندوستانی نہ ہو کہ ہندی اور وہ دونوں لہیوں میں نہ
کسی جگہ پھری لہی میں ہی گھسی جاوے۔ اسی سے ہمیں یہ خط
آپ کی سیوا میں بھیجا پڑا۔

ہم بڑی نخراتا سے آپ کا بیان اس طرح دیکھتا ہوں کہ
ہے کہ ہندوستان اور پاکستان کے آلتا آلتا ہونے سے
دش کا یہ سبب ہل نہیں ہوا ہے، اور نہ اس طرح ہل
ہو سکتا ہے، پانچ کروڑ مسلمان ہاڈ ہندوستان میں اور کم
سے کم تین کروڑ ہندو مسیح ہاڈ پاکستان میں ہے اور رہتے۔
پاکستان اور ہندوستان کے کما ن کما ن فیر، میتل کر فک ہو
جانے کا آس ہاڈ ہمانے آہاڈ نہیں ہے، جناتا کے دیکھ کا
ہالت اور رات کات کے داہے دہاں سدا بدلتے رہے ہیں اور
آہاڈ ہاڈ بدلتے، اس لیے ہم کو یہ بات ہمیں نہیں
چاہیے جس سے دش کا جناتا کے کسی ہاڈ ہیرے کا دیکھ
یا جس کا بدلتے سے کوئی ہاڈ اپنے کو سرکار کو سولہ
آہاڈ اپنا ن کہہ سکے، یا جس سے آہاڈ کے لیے
فک ہونے کے راستے میں آہاڈ ہونے کا

بداہاڈ کمرے کے سامنے پاکستان اور ہندوستان دہاں
کے بد سے بد نہاڈ ہاڈ نے یہ بد بد دیا ہے کہ دہاں آہاڈ کے
کما ن تاراہ لہاں کا ہاڈ، اتکا کاتر اور ان کا دہاں کا
پراہ اس سبب کیا جاتا، ہندوستان ہی کو لہاڈ، آہاڈ
ہمانے اس بد کو سکھوں، یوٹا ہاڈ اور کاترہاڈ کے دہاں

سختی

اگر رائے

نیا ہند

بھائیوں کے دل پر اس سے چوٹ لگے گی۔ کچھ ہندو بھائیوں نے
قہقہہ کی طرح یہ آواز اٹھائی کہ اب ہندوستان کی قومی بولی آسمان
لی بجلی ہندوستانی نہ ہو کہ ہندی اور وہ دونوں لہیوں میں نہ
کسی جگہ پھری لہی میں ہی گھسی جاوے۔ اسی سے ہمیں یہ خط
آپ کی سیوا میں بھیجا پڑا۔

اس بڑی بڑی سے آپ کا دھیان اس طرح دیکھتا ہوں کہ
ہندوستان اور پاکستان کے آگے ایک جہاں سے دیش کا یہ سوال
حل نہیں ہو سکتا اور نہ اس طرح حل ہو سکتا ہے۔ پانچ کروڑ
مسلمان بھائی ہندوستان میں اور کم سے کم تین کروڑ ہندو
بھائی پاکستان میں اور دہاں کے پاکستان اور ہندوستان کے کسی نہ
کسی جگہ پھری لہی میں ہی گھسی جاوے۔ اسی سے ہمیں یہ خط
آپ کی سیوا میں بھیجا پڑا۔

بہت سے ہاڈ ہیں اور آگے بھی ہاڈ گئے۔ اس لیے ہمیں کوئی بات
اسی نہیں کرنی چاہئے جس سے دیش کی جنتا کے کسی بھی حصے
کا دل دکھے یا جس کی وجہ سے کوئی بھی اپنے ہاڈ کی سرکار کو
سولہ آڑے اپنا نہ کر کے آہاڈ سے آگے کے لئے ایک کے پیر
ایک ہونے کے راستے میں آہاڈ ہونے کا ہاڈ دہاں بڑھیں۔
بجواہ کبھی کے سامنے پاکستان اور ہندوستان دہاں
کے جہ سے جہ سے نینا ہاڈ نے یہ جہ دہاڈ دہاں دہاں کے
کم ہاڈ دہاں کا دہاڈ ان کی کلچر اور ان کی بولی کا ہاڈ
کھا کر کھا جائے گا۔ ہندوستان ہی کو لہاڈ، آہاڈ ہمانے اس
بد کو سکھوں، یوٹا ہاڈ اور کاترہاڈ کے دہاں

بداہاڈ کمرے کے سامنے پاکستان اور ہندوستان دہاں
کے بد سے بد نہاڈ ہاڈ نے یہ بد بد دیا ہے کہ دہاں آہاڈ کے
کما ن تاراہ لہاں کا ہاڈ، اتکا کاترہاڈ اور ان کا دہاں کا
پراہ اس سبب کیا جاتا، ہندوستان ہی کو لہاڈ، آہاڈ
ہمانے اس بد کو سکھوں، یوٹا ہاڈ اور کاترہاڈ کے دہاں

अलग अलग मिलसिले खड़े करके पूरा किया तो देश में फुट का सामान और बढ़ जावेगा.

इस सबसे बच्कर हमें गरीब आम जनता को आमानी और भलाई की तरफ देखना है जिसमें हिन्दू मुसलमान और सब शामिल हैं संस्कृत भरी हिन्दी और कारमां अरबी भरी उर्दू दोनों ही आम जनता के लिये लोहे के चने होंगी. उनको मुशकिलों को हथार गुना बढ़ा देंगी. जनता को भलाई और उनका बचवारा तो मिली जुली चलती हुई आमामान हिन्दुस्तानी ही में है.

(४७)

हमारा इस हिन्दुस्तानी को ज्यादा संस्कृत भरी होने या ज्यादा अरबी कारमां लदी होने से बचाने के लिये यह भी जरूरी है कि हम नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों को अपनी कौमी लिखावट माने. आज कल की हालत में सिर्फ नागरी लिपि अपनाते से बचान का संस्कृत भरी हो जाना और सिर्फ उर्दू लिपि अपनाते से उसका अरबी कारमां लदी हो जाना नहीं बच सकता. दोनों के अपनाते से ही हम दोनों के मुशकिल शब्दों से बच सकेंगे और बीच की आमामान मिली जुली राह पकड़ सकेंगे. साथ ही उर्दू हिन्दी दोनों को जाने बिना हम दोनों को मिलाकर एक नहीं कर सकते. और दोनों लिखावटों को जाने और अपनाए बिना हम हिन्दी और उर्दू दोनों को नहीं जान सकते. आगे जाकर देश की लिखावट एक रहेगी या दो या कौनसी रहेगी और उसका रूप कितना बदलेगा यह बक और जरूरत अपने आप तय कर लेगी जावा से लेकर मिला तक के बहुत से देशों से मेल जोल बढ़ाने के लिये और एक दूसरे को समझने से आने के लिये भी उर्दू

भारी भार

ना अहम
अहम अहम सिले कल्ले करके भोला की तो दलिये में प्योठ कासान
अहम ब्रह्म जावले का.

अस स से ब्रह्म करे वलिये खरिब आम भुंता की आसान अहम जलाल
की तरफ दिखना जो हमें में भुंदा मसान अहम स शाल में
सुकरत भुरी भुंदी अहम फारी भुरी भुरी अहम डडोल ही आम जित
के लिये लोप के जेते अहम की. आन की मुशकिल को गार गार गार
नी गी. भुंता की जलाली अहम आन की ब्रह्मवारी लोपी लोपी जलाली

भसान भुंदा सानी अहम की

भारी अस भुंदा सानी को नुंदा सुकरत भुरी भुरी अहम फारी
लरी भुंते से बजाने के लिये बहमि भुंदा सानी अहम नागरी अहम
अहम डडोल केशव डडोल को अपनी उर्दू केशव जित नागरी आज अहम की हालत
में सुकरत नागरी ली भुंता से नुंदा का सुकरत भुरी भुरी अहम
सुकरत अहम ली भुंता से अस का भुरी फारी लरी अहम भुंता मिसिंक
कल्ला. डडोल के भुंता से अस भुंता के लिये सुकरत भुरी भुरी से
जि लिये के अहम जित को आसान ली ली लोपी लोपी सुकरत भुरी
अहम भुंदा डडोल को जितने भुंता अहम डडोल को लोपी लोपी सुकरत भुरी
अहम डडोल केशव डडोल को जितने अहम भुंता से भुंता अहम भुंदा अहम
डडोल को मिसिंक. आके जाकर दलिये की केशव डडोल अहम भुंता
या डडोल को मिसिंक अहम भुंता का लोपी लोपी सुकरत भुरी
सुकरत भुरी अहम भुंता से भुंता अहम भुंता से भुंता अहम भुंता
जितने अहम भुंता से भुंता अहम भुंता से भुंता अहम भुंता से भुंता अहम भुंता

لیا پی سے ہمیں बहुत बड़ी मदद मिल सकती है. इन पड़ोसी मुल्कों के साथ हमारी किस्मत कई तरह से बंधी हुई है. कई भिसालों हमारे सामने हैं पर हम इस जगत को और बढ़ाना नहीं चाहते.

हमारी आप से प्रार्थना है कि आप इस सवाल के सब पहलुओं पर गौर करते हुए देश को इस वक्त किसी तरह की भी तंग-नबरी की तरफ जाने से रोकें और आगे के भले और आम जनता के भले और सब के भले को देखते हुए हिन्दुस्तानी और उसकी दोनों लिखावटों को ही मुल्क की कौमी जवान और उसक लिखावट बनाए रखें.

हम हैं आप के भाई

सुन्दरलाल, सेकेटरी हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद
नारायणद, वाइस चानसलर इलाहाबाद यूनिवर्सिटी

श्रीमती पेरिन बहन केटन के नाम महात्मा गांधी ने हाल के एक खत में हिन्दुस्तानी के सवाल पर लिखा है—

“कल जो कुछ मैंने हिन्दुस्तानी के बारे में कहा उसे तुमने देखा. तुमको और मुझको इस काम पर इतनी मेहनत करनी चाहिये कि अगर हम मर भी जायें तो परवाह नहीं. हमको हिम्मत नहीं हारना चाहिये. दोनों लिपि में हिन्दुस्तानी लिखने और हिन्दुस्तानी बोलने की कोशिश करो. यह मुर्खावत दो महीनों के लिये टल गई है. इस दुख भरे वकालत में काम करने वाले बहुत कुछ कर सकते हैं.”

سید محمد علی

بھاری رائے

نیا ہند

یہی سے ہیں بہت بڑی مدد مل سکتی ہو. ان پڑوسی ملکوں کے ساتھ ہماری قسمت کئی طرح سے بندھی ہوئی ہو. کئی مضامین باہر سامنے ہیں پر ہم اس خط کو اور بڑھانا نہیں چاہتے.

بھاری آپ سے پراکتنا ہو کر آرت اس سوال کے سب پہلوؤں پر غور کرتے ہوئے دیش کو اس وقت کسی طرح کی بھی تنگ نظری کی طرف جانے سے بچائیں اور آگے کے بچھے اور علم جیٹا کے بچھے اور سب کے بچھے کو دیکھتے ہوئے ہندوستانی اور اس کی حفاظت لکھا ویل کو ہی ملک کی قومی زبان اور اس کی لکھا ویل بنائے رکھیں.

ہم ہیں آپ کے بھائی

سندھ لال، سیکریٹری ہندوستانی کالج سوسائٹی، الہ آباد
سارا چند، وائس چانسلر الہ آباد یونیورسٹی

شریکتی بیرون بہن کیپٹن کے نام ساتھ لکھا گیا ہے۔

ایک خط میں ہندوستانی کے سوال پر لکھا ہے—
“کلی جو کچھ میں نے ہندوستانی کے بارے میں کہا ہے اسے تم نے دیکھا. تم کو اور مجھ کو اس کام پر اتنی محنت کرنی چاہیے کہ اگر ہم مر بھی جائیں تو پرہٹا نہیں. ہم کو آرت نہیں لڑنا چاہیے. طفل یعنی میں ہندوستانی لکھنے اور ہندوستانی بولنے کی کوشش کرو. یہ مصیبت دو مہینوں کے لئے عملی ہو گئی ہو. اس کو بھجوت وقت میں کام کرنے والے بہت کچھ کر سکتے ہیں.”

‘موسیٰ صلت’ سے گانوارا اور کا شراشا ساک کبیاخان سمانا کے کور
مہنوارا کی ہال اور کور نہر تاروارا سے ہے۔

شری مانی پرین بھارن کورن ہا کے نام ہال کے رک صارت میں
پر۔ جوارا ہار لال اور نہرک نے لیاہا ہے۔

‘ہندوستانیوں کو نیکال دینے کا مبال اور بیلکول ابلار
رہا، میں اور اراہن بانانے والی ارسہنہنہنہ اور پارا کے مہنہنہ
میں ہسکے کللاک لارہا رہا ہے۔ جاراں تک اور مہرا مبال ہے
میں اس بارے میں ساک ساک کھنا ہے کہ ہندوستانیوں کو نیکال
کار اسکاں جاراہ جسے شاک ہندی کہا جاتا ہے لانا بھار
بوری بار ہونگا۔’

پانڈت جوارا ہار لال اور نہرک کا ساندھا

۱۷-۷-۸۷ اور بھارہ کی ہندوستانیوں کا انکرونس کے نام

کری بارس ہار نہرانل کانس نے تہ کیا ہا کہ ہندوستانی
کو مکنک کی کورما جاران کی ہسیرت سے اپناہا اور بھارا
جوابہ میں ساممنا ہے کہ ہر ہار نیاہ سے اکملمانہی کا
کوسلا ہے۔ شاراہ میں ہندوستانیوں کی تارکارا اس لیے کرتا
ہے کہ ہندی ہندوستانیوں میں ہار کو جاران ہے۔ ہار مہرا راہ جاراہ
ہر تک اور بارے سوان کار کراہم ہر ہے۔

جراہی ہے کہ ہندوستانیوں بھرا جاران ہونگا اور جاراہار
ہندوستانیوں کو لانے والے اراہ تار ہار بولانے ہا سوان سارہ ہرا
سے لیاہتے ہے۔ اسکا مبالہ ہر ہے کہ جسین جسین بولیاہا

سہر ۱۳۱۱

باری ہلائے

نیا ہند

مصیبت سے گانوسی ہا کا اشاء صان وصال سبھا کے

بھار مہراں کی حال کی نئی جوجہ سے ہے۔

شری ہی ہراں ہن کوشن ہی کے نام حال کے ایک نط میں

بھارت ہار لال ہی ہر نے کھسا ہے۔

‘ہندوستانیوں کو نکال دینے کا سوال اور باکل اگ سا میں اور

آرین ہارے وال آہلی اور پارا کے مہراں میں اس کے صان

وہا سا اول۔ جہاں تک ہر ہرا سوال اور میں اس بارے میں

صان صان آتا ہوں کہ ہندوستانیوں کو نکال اور اس کی جگہ

جسے ہندی کہا جاتا ہے لانا بہت ہی بڑی بات ہونگی۔

پنڈت جوارا لال کی ہر کا سندھیشہ

۱۱-۸-۱۹۱۷ء کی ہندی کی ہندوستانیوں کا انکرونس کے نام

کری برس ہرے نیکل کا کوشن نے ہے کیا تھا کہ ہندوستانیوں کو

کی وی زبان کی مہیت سے اپنا ہا اور بھارا جاراہ۔ میں کھتا ہوں

کہ ہر ہار سے مکنہی کا فیصلہ ہے۔ شاید میں ہندوستانیوں کی طرف

اس کے کرتا ہوں کہ ہندی ہندوستانیوں میں ہار کی زبان اور

ہا کے زیادہ کھہ کی باہیں صان کہ قانیم ہونگی اور

ضروری ہے کہ ہندوستانیوں کی زبان اور ہا کی نیاہ ہندوستانیوں

ہولنے ہارے عام طور پر بولتے یا سیدھے سارے ہندوستانیوں

से मिलकर हिन्दुस्तानी बोली बनी है, उन सब का हिस्सा हिन्दुस्तानी में रहना चाहिये, और हिन्दुस्तानी न ज्यादा संस्कृत भरी होनी चाहिये और न ज्यादा फारसी भरी, क्योंकि ऐसा करने से यह करोड़ों जनता की चाँच न रह जायगी.

यह सब है कि हिन्दी और उर्दू के अलग अलग अदबी रूप बन गए हैं. असल में यह दोनों एक ही जवान है. इन दोनों अदबी रूपों में से किसी को मिटाने या दबाने की जरूरत नहीं है. हालांकि इनमें से बहुत से रूप ऐसे हैं जो बहुत ही बनावटी हैं और मामूली या औसत आदमी की समझ से बाहर हैं. अदबी लोगों के छोटे छोटे गिराहों का जवान के बढ़ने पर असर तो कुररती तौर पर पड़ता है, पर कोई भी बड़ी जवान इस तरह के छोटे अदबी गिराहों के सहारे नहीं फल फूल सकती.

जवान जबरस्तती नहीं बनाई जा सकती. वह अपने आप बनती और बढ़ती है. फिर भी हम जवान की इस बात में मदद कर सकते हैं कि वह एक खास दिशा में बढ़े. मैं समझता हूँ कि हमें अपनी बात चीत में और अपने लिखने में ऐसी जवान बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिये जो दोनों अलग अलग अदबी रूपों के कुछ बीच की चीज हो, और जिसे आसानी के लिये हिंदुस्तानी कहा जाता है.

हिन्दुस्तानी कौम एक मिली जुली कौम है. हिन्दुस्तान की हकूमत भी एक मिली जुली हकूमत है. अगर हिन्दुस्तान को बड़ा होना है तो उसे अपना यह मिला जुला रूप बनाए रखना होगा. अपनी चिन्तनी के चुनियादी आयुलों पर कायम रहते हुए बाहर

न्याय
शुक्रवार
सितम्बर

से एक हिन्दुस्तानी लुली ही आता है सब का हिस्सा हिन्दुस्तानी में रहना चाहिये. हिन्दुस्तानी न ज्यादा संस्कृत भरी होनी चाहिये और न ज्यादा फारसी भरी होनी चाहिए. किन्तु हिन्दुस्तानी में हिन्दुस्तानी के लिये हिंदुस्तानी कहा जाता है.

यह सब है कि हिन्दी और उर्दू के अलग अलग अदबी रूप बन गए हैं. असल में यह दोनों एक ही जवान है. इन दोनों अदबी रूपों में से किसी को मिटाने या दबाने की जरूरत नहीं है. हालांकि इनमें से बहुत से रूप ऐसे हैं जो बहुत ही बनावटी हैं और मामूली या औसत आदमी की समझ से बाहर हैं. अदबी लोगों के छोटे छोटे गिराहों का जवान के बढ़ने पर असर तो कुररती तौर पर पड़ता है, पर कोई भी बड़ी जवान इस तरह के छोटे अदबी गिराहों के सहारे नहीं फल फूल सकती.

जवान जबरस्तती नहीं बनाई जा सकती. वह अपने आप बनती और बढ़ती है. फिर भी हम जवान की इस बात में मदद कर सकते हैं कि वह एक खास दिशा में बढ़े. मैं समझता हूँ कि हमें अपनी बात चीत में और अपने लिखने में ऐसी जवान बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिये जो दोनों अलग अलग अदबी रूपों के कुछ बीच की चीज हो, और जिसे आसानी के लिये हिंदुस्तानी कहा जाता है.

हिन्दुस्तानी कौम एक मिली जुली कौम है. हिन्दुस्तान की हकूमत भी एक मिली जुली हकूमत है. अगर हिन्दुस्तान को बड़ा होना है तो उसे अपना यह मिला जुला रूप बनाए रखना होगा. अपनी चिन्तनी के चुनियादी आयुलों पर कायम रहते हुए बाहर

کے خیالوں اور اٹھوں کو اپنے اپنے رہنا چاہئے۔ بل جوں ہی ہندوستانی زندگی اور ہندوستانی فطرت سے ایک چیز رہا ہے۔ اسے ہی بل جوں کا ایک فطرت اور جڑا اپنے رہنے ہندوستانی ہے۔ ہندوستانی بہت سے بڑے بڑے خزانوں سے شہ اور عالم سے لے کر بڑھ سکتی ہے اور میں سمجھتا ہوں کہ بہت جلد ایک زبردست زبان بن سکتی ہے جس میں سب طرح کی چیزیں گھسی اور کسی جا سکیں۔ اس لئے میں امید کرتا ہوں کہ ہندوستانی کو اپنا یا اور جیسا یا جاسے گا۔

نئی دہلی

۲۲ اگست ۱۹۴۷ء

جواہر لال نہرو

(آپنے سے)

ہندی یا ہندوستانی

(مہاتما گاندھی)

شری مہاتما گاندھی صاحب سے کہیں گے کہ:

”دہلی کے رہنے والوں پر مہاتما صاحب نے کہا ہے کہ ہندوستانی زندگی کے لئے ہمیں اپنی اپنی چیزیں چاہنی چاہئے۔ ہندوستانی سے ہمارا تعلق ہے۔ ہندوستانی کے لئے ہمیں اپنی اپنی چیزیں چاہنی چاہئے۔ ہندوستانی کے لئے ہمیں اپنی اپنی چیزیں چاہنی چاہئے۔ ہندوستانی کے لئے ہمیں اپنی اپنی چیزیں چاہنی چاہئے۔“

نیا ہند

نیا ہند

نیا ہند

کے خیالوں اور اٹھوں کو اپنے اپنے رہنا چاہئے۔ بل جوں ہی ہندوستانی زندگی اور ہندوستانی فطرت سے ایک چیز رہا ہے۔ اسے ہی بل جوں کا ایک فطرت اور جڑا اپنے رہنے ہندوستانی ہے۔ ہندوستانی بہت سے بڑے بڑے خزانوں سے شہ اور عالم سے لے کر بڑھ سکتی ہے اور میں سمجھتا ہوں کہ بہت جلد ایک زبردست زبان بن سکتی ہے جس میں سب طرح کی چیزیں گھسی اور کسی جا سکیں۔ اس لئے میں امید کرتا ہوں کہ ہندوستانی کو اپنا یا اور جیسا یا جاسے گا۔

جواہر لال نہرو

۲۲ اگست ۱۹۴۷ء

(انگریزی سے)

ہندی یا ہندوستانی

(مہاتما گاندھی)

شری مہاتما گاندھی صاحب سے کہیں گے کہ:

”دہلی کے رہنے والوں پر مہاتما صاحب نے کہا ہے کہ ہندوستانی زندگی کے لئے ہمیں اپنی اپنی چیزیں چاہنی چاہئے۔ ہندوستانی سے ہمارا تعلق ہے۔ ہندوستانی کے لئے ہمیں اپنی اپنی چیزیں چاہنی چاہئے۔ ہندوستانی کے لئے ہمیں اپنی اپنی چیزیں چاہنی چاہئے۔“

نیا ہند
 ہندوستان
 ہندوستان

نیا ہند
 ہندوستان
 ہندوستان

نیا ہند
 ہندوستان
 ہندوستان

نیا ہند
 ہندوستان
 ہندوستان

نیا ہند
 ہندوستان
 ہندوستان

نیا ہند
 ہندوستان
 ہندوستان

تو उसकी भाग सीख कर कायदा ही उठाता है. मैं ने कई मौल-
वियों से बातें की हैं. हिन्दुस्तानी में उन्हें अपने बात समझाने
में मुझे कोई विककत नहीं मालूम हुई. अगरचे मैंने उनकी कारमी
रायों से मरा ऊंचो उर्दू बोलने का टंगा करने की कमी कोशिश
नहीं की. आम तौर पर इसमें नुकसान उनका है. मैं ने तो
हमेशा कायदा ही उठाया है. मुझे विश्वास है कि जो बात मेरे
लिये सब है वह बहुतों के लिये सब है:—

अब पेरिन बहन के पास सबालों को लें:—

(१) हिन्दुस्तानी कमेंटी के हर मेम्बर को अपने अकीदे पर अमल
करना है. यानी उसे दोनों लिपियां सीखनी हैं. और हिन्दी और
उर्दू के मिलावट से बनी हुई भाषा हिन्दुस्तानी पर कायू पाना है.
यह तभी होगा जब सारी उर्दू का मेहनत के साथ अन्यास किया
जायगा और यह पहली जरूरत पूरी करने के बाद यानी खूद
हिन्दुस्तानी सीख लेने के बाद उसे (मेम्बर को) चाहिये कि वह
दूसरों को हिन्दुस्तानी सीखने के लिये कहे.

(२) अगर हिन्दुस्तानी प्रचारक ईमानदार और त्यागी हैं तो
उनके पास पास के बातारन पर उनकी बात का असर पड़े बिना
न रहेगा.

(३) जो लोग हिन्दुस्तानी को राष्ट्र भाषा मानते हैं और उसे
प्यार करते हैं उन्हें इसका सबूत देने के लिये उन लोगों से हमेशा
सिर्फ हिन्दुस्तानी में ही बोलना चाहिये या खत लिखना चाहिये
जो उनकी मातरी बचान नहीं जानते. इस तरह तामिलनाड का
आदमी अपने यहां के आदमी से तामिल में बोलना मगर दूसरे

تو اس کی بھانڈا بھانڈا کرنا ہوا ہے۔ میں نے کئی مولوں سے
باتیں کی ہیں۔ ہندستانی میں انھیں اپنی بات بھانڈے میں بھانڈے
رہتی نہیں معلوم ہوا۔ اگرچہ میں نے ان کی فاری شبوں سے
بھی اونچی آرد بولنے کا ڈھونڈ کرنے کی کبھی کوشش نہیں کی۔
اٹھایا ہے۔ مجھے دشواس ہو کہ جو بات میرے لئے صحیح ہے وہ
ہوں کے لئے صحیح ہے:—

اب پیرن بہن کے خاص سوالوں کو لوں:—

(۱) ہندستانی کمیٹی کے ریمبر کو اپنے عقیدے پر عمل کرنا
ہو یعنی اسے دونوں لپیاں سیکھنی ہوں اور ہندی اور
آرد کے طاوت سے بنی ہوئی بھانڈا ہندستانی پر تالو پانا ہو۔
جتنی ہو گا جب سادی آرد کا محنت کے ساتھ ابھیاس کیا
جائے گا اور یہ اپنی ضرورت پوری کرنے کے بعد یعنی خود
ہندستانی سیکھ لینے کے بعد اسے ریمبر کو چاہئے کہ وہ دوسروں
کو ہندستانی سیکھنے کے لئے کہے۔

(۲) اگر ہندستانی پریچارک ایمان دار اور تیار ہیں تو ان کے
اس پاس کے داتا دون پر ان کی بات کا اثر پڑے گا۔

(۳) جو آگ ہندستانی کو ریشتر بھانڈا ماننے ہیں اور اسے
پیار کرتے ہیں انھیں اس کا ثبوت دینے کے لئے آگ لگوں
سے ہمیشہ صرف ہندستانی میں ہی بولنا چاہئے یا خط لکھنا
چاہئے جو ان کی لہدی زبان نہیں جانتے۔ اس طرح تامل ناڈ
کا آدی اپنے یہاں کے آدی سے تامل میں بولے گا۔

نیا ہیند

ہماری راہ

سیتا بھر سن '۸۹

پرائیوٹ کے لوگوں کے ساتھ ہیندوستانی میں بات کرے گا۔ آج
آگرتھی میں نہا—

نہا دینا

۱۹۰۸-۱۹۰۹

مہاتما جی کرشنن گاندھی

(ہیرا جی سے)

سپتمبر ۱۹۰۸ء

ہادی لائے

نیا ہیند

آج کے لوگوں کے ساتھ ہندوستانی میں بات کرے گا۔ آج

کی طرح انگریزی میں نہیں۔

نئی دہلی

موتی داس کرشنن گاندھی

۱۹۰۸-۱۹۰۹

(ہیرا جی سے)

“گیتا اور کورن”

لکھنؤ—پڈین سوندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے مہتمموں کی ایکٹو کو دکھایا گیا ہے اور سب مہتمموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر مانتی جاتی بینادی سہائتوں کو بیان کیا گیا ہے اسکے بعد گیتا کے لکھ جانے کے وقت کی اس پیش کی حالت گیتا کے بڑوں اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ہے۔

آخر میں کورن سے پہلے عرب کی حالت کورن کے بڑوں اور ایک ایک بات پر کورن کی تعلیم کو بیان کیا گیا ہے۔ اسمیں کورن کی پہنچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ہے۔ یہ آیتیں بتلایا گیا ہے کہ کورن میں جہاں عاقبت آخرت جنت جہنم کا ذکر و فہرہ کسے کہا گیا ہے۔

جو لوگ سب مہتمموں کی ایکٹو کو سمجھنا چاہیں یا مہتمموں اور اسلام دونوں کی ان دو امور دستکوں کی - کئی جاگاری حاصل کرنا چاہیں انہیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاہئے۔ کتاب دستنی زبان میں ناگری اور اردو دونوں زبانوں میں الگ الگ مل سکتی ہے۔ پورے تیس سو صفحے کی سند جلد بڑھی کتاب کی قیمت صرف تھائی روپیہ - تاکہ خرچ الگ۔

میں نے جہاں ’گیتا اور کورن‘ کی ایکٹو کو سمجھنا چاہیں یا مہتمموں اور اسلام دونوں کی ان دو امور دستکوں کی - کئی جاگاری حاصل کرنا چاہیں انہیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاہئے۔ کتاب دستنی زبان میں ناگری اور اردو دونوں زبانوں میں الگ الگ مل سکتی ہے۔ پورے تیس سو صفحے کی سند جلد بڑھی کتاب کی قیمت صرف تھائی روپیہ - تاکہ خرچ الگ۔

میں نے جہاں ’گیتا اور کورن‘

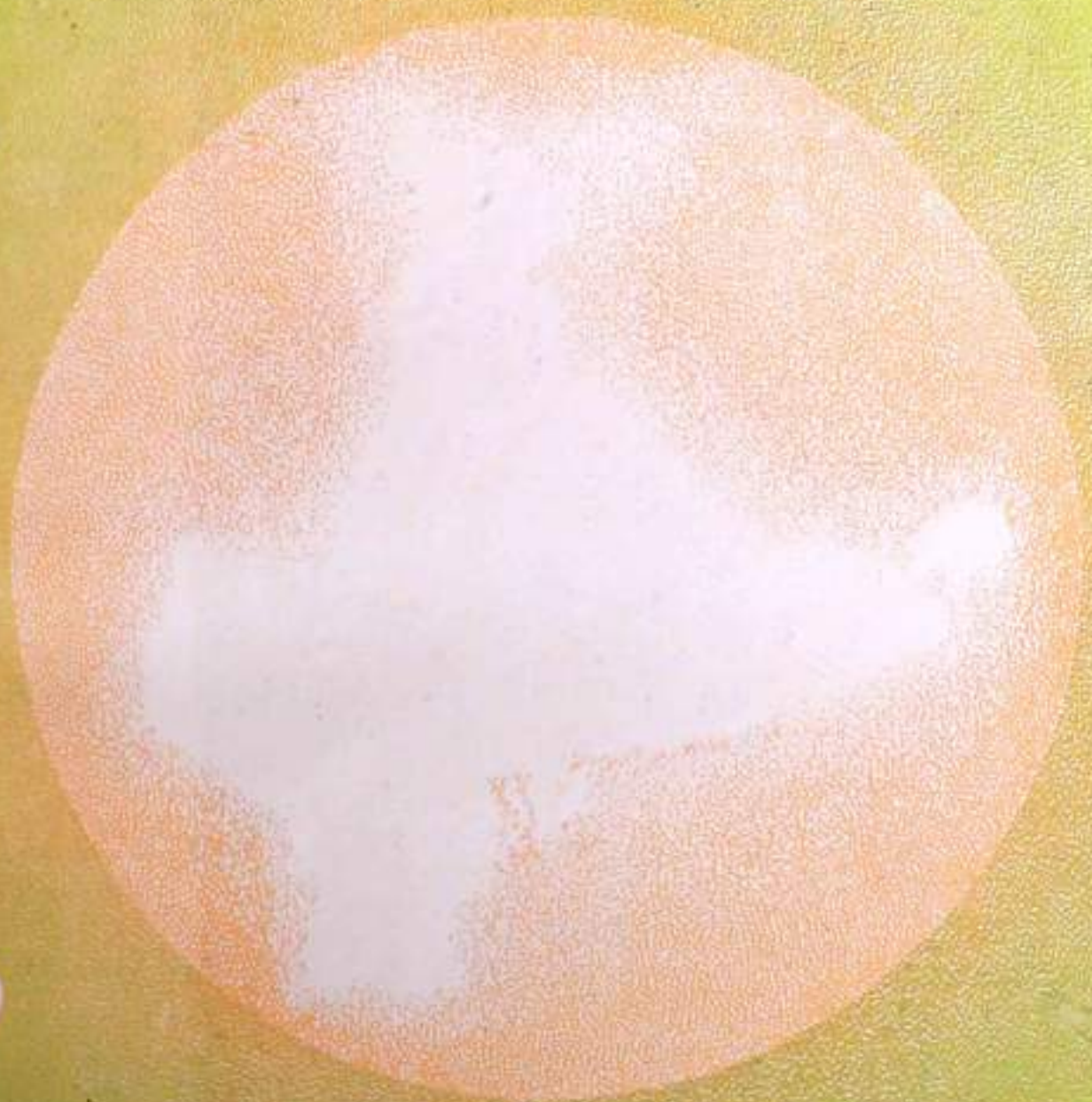
۶۷ بارے کا نام، دناہاواہ

Printer—Bishambhar Nath, Vishwawani Press, South Malaka, Allahabad.

Publisher—Bishambhar Nath for Hindustani Culture Society, 48 Bai ka Bagh, Allahabad.

संस्कृत

अभ्यास



अभ्यास
संस्कृत
अभ्यास

अभ्यास
संस्कृत
अभ्यास

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडिटर—

ताराचन्द्र, भगवानदीन, मुखर्जकर हसन, विशम्भरनाथ, सुन्दरलाल

अक्टूबर १९४७

क्या-किससे	सका
१—सच्ची बात (गीत)—श्री वासुदेव ...	३११
२—सब मञ्जुहर्षों की एकता—डाक्टर भगवानदास, वनारस ...	३१३
३—राह देखना—रवीन्द्रनाथ ठाकुर ...	३२५
४—इसलाम—अपने को अल्लाह की मरजी पर छोड़ देना ...	३२६
५—थिकट कहानी—प्रोफेसर सैयद मसीहउल्लमा जायसी ...	३३६
६—एकता और भी अधिक खतरे में—भाई श्रींकारनाथ जी रायची ...	३६०
७—इन्सानियत (कहानी)—भाई मधुकर खेर ...	३६०
८—हिन्दू-मुसलिम ज्योहार—भाई चन्द्र दत्त सेनाती ...	३६०
९—आज की दुनिया—कौमी जिद्दमतगार ...	३६७
१०—हमारी राय ...	३६७

कीमत—हिन्दुस्तान में छै ६५९ साल. बाहर दस ६५९ साल,

एक परचा दस आने.

मैनेजर

हन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का प्रचा

एडिटर—

दारा चन्द्र, बेगवान दीन, مظفر حسن, बशबेर, फातिहे सुन्दरलाल.

अक्टूबर १९२७

क्या-किससे	صفحه
१—सच्ची बात (गीत)—श्री वासुदेव ...	३११
२—सब मञ्जुहर्षों की एकता—डाक्टर भगवानदास, वनारस ...	३१३
३—राह देखना—रवीन्द्रनाथ ठाकुर ...	३२५
४—इसलाम—अपने को अल्लाह की मरजी पर छोड़ देना ...	३२६
५—थिकट कहानी—प्रोफेसर सैयद मसीहउल्लमा जायसी ...	३३६
६—एकता और भी अधिक खतरे में—भाई श्रींकारनाथ जी रायची ...	३६०
७—इन्सानियत (कहानी)—भाई मधुकर खेर ...	३६०
८—हिन्दू-मुसलिम ज्योहार—भाई चन्द्र दत्त सेनाती ...	३६०
९—आज की दुनिया—कौमी जिद्दमतगार ...	३६७
१०—हमारी राय ...	३६७

कीमत—हन्दुस्तान में छै ६५९ साल. बाहर दस ६५९ साल.

एक प्रचा दस आने.

मैनेजर

“नया हन्दू”

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी चाली,
'नया हिन्द' पहुँचगा घर घर, लिये प्रेम की मोली.

नम्बर ४

अक्टूबर १९४७

जिल्द ३

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी चाली,
दुनियाँ है पीछे का घर घर के प्रेम की मोली.

सच्ची बात—

(पं० वासुदेव मिश्र शास्त्री, कालाकाँकर)

एक माँ के पुत्र जितने,

धरम उतने दीन इतने !

अपनी टपली अपना गाना,

बेसुरा छेड़ा तराना !

कौन हिन्दू ? कौन मुसलिम ?

कौन वामन ? कौन पासी ?

अपने मतलब के हैं भूले,

जिन पर भूले देश वासी !

सच्ची बात

(पंडित दासोदर प्रसाद शास्त्री, कालाकाँकर)

एक माँ के पुत्र जितने,

धरम उतने दीन इतने !

अपनी टपली अपना गाना,

बेसुरा छेड़ा तराना !

कौन हिन्दू ? कौन मुसलिम ?

कौन वामन ? कौन पासी ?

अपने मतलब के हैं भूले,

जिन पर भूले देश वासी !

हाथ रँग कर, ऐ नमाजी !
 हाथ रँग कर, ऐ पुजारी !
 कैसा सिजदा, कैसी पूजा ?
 माँ तड़पती है विचारी !
 क्यों तोड़ता है गुल बता.
 है कुफ्र का तुमको पता ?
 माली चमन का देखता
 क्यों माफ होगी यह खता !
 इस बाहमी शैतानियत को,
 माँ की खातिर तू भगा,
 सोए हुओं को इनकलाची,
 जोश देकर तू जगा,
 है बेद बतलाते यही,
 कुरआन भी कहता यही,
 इनसान गुल है एक चमन के,
 माली है जिसका एरुही ।
 हर गुलसे तुम्हको प्रेम हो !
 हर गुल को तुमसे प्रेम हो !
 खुरानू से महके सब जहाँ !
 दीनों घरम का नेम हो !

पिछी बात
 याहसद

बाह्ने रंग करा असे नमाजी !
 बाह्ने रंग करा असे बिजारी !
 कैसा सिजदा, कैसी पूजा ?
 माँ तड़पती है बिजारी !

क्यों तोड़ता है गुल बता
 है कुफ्र का बह्ने को पता ?
 माली चमन का देखता
 क्यों सजात होगी ये सजा !
 इस बाहमी शैतानियत को,
 माँ की खातिर तू भगा,
 सोए हुओं को इनकलाची,
 जोश देकर तू जगा,

हैं वेद बतलाते यही,
 कुरआन भी कहता यही,
 इनसान गुल है एक चमन के,
 माली है जिसका एरुही ।
 हर गुलसे तुम्हको प्रेम हो !
 हर गुल को तुमसे प्रेम हो !
 खुरानू से महके सब जहाँ !
 दीनों घरम का नेम हो !

सब مذहबों की अिकता

(डाक्टर भगवान दास, बनारस)

जब सब धर्म म्जहबों की एकता की बात की जाती है तो लोग कई तरह के एतराख उठाते हैं. कुछ लोग तो यह कहते हैं कि आप सब म्जहबों में से मोटी मोटी एकता की बातें एक जगह जमा कर देते हैं, तो उन छोटी छोटी बातों को भी साफ साफ (लिखिये जिनमें एक म्जहब और दूसरे म्जहब में फरक है, जो आदमी हर म्जहब की या किसी म्जहब की हर छोटी बड़ी बात को जानना जरूरी समझे, उरुके लिये यह कहना ठीक है. पर यह पंडितों और आलिमों की बहस है. दिमाग की चीज है, अमली और दिल की चीज नहीं. इसके अलावा छोटे छोटे और 'बारीक फरकों पर तो जरूरत से ज्यादा जोर दिया ही जा रहा है. इन फरकों पर अमल भी काफी किया जा रहा है. इससे इन्सानी समाज को बेहद नुकसान भी पहुँच रहा है. एक सी और एकता की बातों से लोगों ने आंखें फिटा रखी हैं जिससे दुनिया साफ घाटे में है. दिमागी लयाल से देखें तब भी जिन बातों में एक म्जहब और दूसरे म्जहब में फरक है वह बातें ऊपर की हैं, यानी वह बुनियादी या जरूरी नहीं हैं, और जो बातें सब में पाई जाती हैं वही बुनियादी हैं, वही असल हैं. इसलिए उन बुनियादी चीजों पर जिनमें सब म्जहबों की एक राय है ज्यादा जोर देना चाहिये. अभी तक इन पर काफी जोर नहीं दिया गया

सब म्जहबों की एकता

(डाक्टर भगवान दास, बनारस)

जब सब धर्म म्जहबों की एकता की बात की जाती है तो लोग कई तरह के एतराख उठाते हैं. कुछ लोग तो यह कहते हैं कि आप सब म्जहबों में से मोटी मोटी एकता की बातें एक जगह जमा कर देते हैं, तो उन छोटी छोटी बातों को भी साफ साफ (लिखिये जिनमें एक म्जहब और दूसरे म्जहब में फरक है, जो आदमी हर म्जहब की या किसी म्जहब की हर छोटी बड़ी बात को जानना जरूरी समझे, उरुके लिये यह कहना ठीक है. पर यह पंडितों और आलिमों की बहस है. दिमाग की चीज है, अमली और दिल की चीज नहीं. इसके अलावा छोटे छोटे और 'बारीक फरकों पर तो जरूरत से ज्यादा जोर दिया ही जा रहा है. इन फरकों पर अमल भी काफी किया जा रहा है. इससे इन्सानी समाज को बेहद नुकसान भी पहुँच रहा है. एक सी और एकता की बातों से लोगों ने आंखें फिटा रखी हैं जिससे दुनिया साफ घाटे में है. दिमागी लयाल से देखें तब भी जिन बातों में एक म्जहब और दूसरे म्जहब में फरक है वह बातें ऊपर की हैं, यानी वह बुनियादी या जरूरी नहीं हैं, और जो बातें सब में पाई जाती हैं वही बुनियादी हैं, वही असल हैं. इसलिए उन बुनियादी चीजों पर जिनमें सब म्जहबों की एक राय है ज्यादा जोर देना चाहिये. अभी तक इन पर काफी जोर नहीं दिया गया

हे. इन्हीं को सब मजहबों का दिल, और सचाई या हकीकत का इत्र समझना चाहिये. आज कल के जनतंत्र या जम्हूरियत के असूल पर भी जिन बातों में सब की या बहुत सों की राय मिलती है वह तो सारे इंसानी समाज का मजहब हो ही गईं. इस लिये असली तौर पर भी और इस धरती पर नेक समझ और अमन कायम करने के लिये भी यह काम बहुत ही बड़ा और जरूरी है.

कुछ लोगों को एक दूसरी तरह का एतराज होता है. यह वह लोग हैं जो अपने अक्ल के बड़े कट्टर होते हैं. कुदरती तौर पर इस तरह का हर आदमी यह समझता है कि मेरा ही धर्म, मेरा ही मजहब सबसे अनोखा और बही अकेला ठीक और सबसे अच्छा मजहब है. कुदरत ही ने शुरू से यह बात आदमी के अन्दर पैदा की है कि हर आदमी चाहता है कि मैं 'सबसे पहला', 'अनोखा', 'अच्छा' और 'बेमिसाल' माना जाऊँ. दुनिया माने कि मेरा जैसा और कोई है ही नहीं. खुली या छिपी दबी यह चाह सब के अन्दर होती है. इंसानी चिन्दगी के सब पहलुओं में यह नजर आती है. खाने पीने में, माल असबाब रखने में, ब्याह शादी में, सिपहगिरी में, यहाँ तक कि साहित्य या अदब में और साइन्स तक के मैदान में हमें यह चीज दिखाई देती है. हर जगह आदमी के अन्दर लाग डाट या दूसरों से बढ़ चढ़ कर रहने की इच्छा एक कुदरती चीज है. इसी से लगातार प्रेम और नफरत, मेल और जंग चलते रहते हैं. दुनयवी चिन्दगी में तो यह बात है ही. त्याग और तपस्या की चिन्दगी में भी, तर्क और जोहर में भी, यह चीज आखीर तक चमकती रहती है और मिटते मिटते

हो. अक्सर को सब मजहबों का दिल, और सचाई या हकीकत का इत्र समझना चाहिये. आज कल के जनतंत्र या जम्हूरियत के असूल पर भी जिन बातों में सब की या बहुत सों की राय मिलती है वह तो सारे इंसानी समाज का मजहब हो ही गईं. इस लिये असली तौर पर भी और इस धरती पर नेक समझ और अमन कायम करने के लिये भी यह काम बहुत ही बड़ा और जरूरी है.

कुछ लोगों को एक दूसरी तरह का एतराज होता है. यह वह लोग हैं जो अपने अक्ल के बड़े कट्टर होते हैं. कुदरती तौर पर इस तरह का हर आदमी यह समझता है कि मेरा ही धर्म, मेरा ही मजहब सब

से अकेला ठीक और बही अकेला ठीक और सबसे अच्छा मजहब है. कुदरत ही ने शुरू से यह बात आदमी के अन्दर पैदा की है कि हर आदमी चाहता है कि मैं 'सबसे पहला', 'अनोखा', 'अच्छा' और 'बेमिसाल' माना जाऊँ. दुनिया माने कि मेरा जैसा और कोई है ही नहीं. खुली या छिपी दबी यह चाह सब के अन्दर होती है. इंसानी चिन्दगी के सब पहलुओं में यह नजर आती है. खाने पीने में, माल असबाब रखने में, ब्याह शादी में, सिपहगिरी में, यहाँ तक कि साहित्य या अदब में और साइन्स तक के मैदान में हमें यह चीज दिखाई देती है. हर जगह आदमी के अन्दर लाग डाट या दूसरों से बढ़ चढ़ कर रहने की इच्छा एक कुदरती चीज है. इसी से लगातार प्रेम और नफरत, मेल और जंग चलते रहते हैं. दुनयवी चिन्दगी में तो यह बात है ही. त्याग और तपस्या की चिन्दगी में भी, तर्क और जोहर में भी, यह चीज आखीर तक चमकती रहती है और मिटते मिटते

है. यही खुदी और खुदा, स्वार्थ और परस्वार्थ की वह खेचा-तानी है जिसका नाम चिन्दी है. यही मुकाब जब मजहबों के मैदान में आता है तो आदमी कहता है—मेरा ही मजहब सबसे अच्छा है. मेरा मजहब विलकुल अनोखा है. विलकुल नया है, और सब मजहबों से अलग है. इससे पहले कोई ऐसा मजहब हुआ ही नहीं, मेरे मजहब में कोई बात किसी दूसरे मजहब से नहीं ली गई. मेरा मजहब ही आखिरी है. इससे अच्छा तो क्या इतना अच्छा कोई मजहब आगे होगा भी नहीं."

यह वंशी ही बात है जैसी लोग कहते हैं कि—मेरी नसल, मेरा वर्ण या रंग, मेरी जात जैसे ब्राह्मण, क्षत्री वगैरा, या अगर मैं मंद हूँ तो मंद जात और अगर औरत हूँ तो औरत जात ही सबसे ऊँची और अच्छी है. मेरी क्रीम को खुद भगवान ने सबसे से चुना है. ईश्वर ने मेरी जात वालों को खास हक दिये हैं. मैं सूर्य वंशी हूँ. मैं चन्द्र वंशी हूँ, मेरी क्रीम समन्दर की लहरों पर हड़मत करती है, मेरी क्रीम सबसे बढ़ कर है, मेरे मुल्क के पास सबसे ऊँचे, आसमान को छूने वाले मकान हैं, सबसे बड़े हवाई जहाज हैं, सबसे ज्यादा सोना है, हर चीज सबसे बढ़ कर है, मेरे साम्राज्य पर कभी सूरज नहीं डबता, मैं ब्रह्मा के मुख से निकला हूँ, मैं सूरज का बेटा हूँ, वगैरा वगैरा.

इस अहंकार को रोक सकने के लिये आदमी को बड़े बड़े कड़े तजरबों में से निकलना पड़ता है. बड़ी मुसीबतें भेल कर आदमी इस चीज को सीखता है कि जब कि इस तरह की थोड़ी बहुत खुदी छोटे जानवर या छोटी उमर की क्रीम की बदवार

सब मजहबों की एकता
 ही. यही खुदी और खुदा, स्वार्थ और परस्वार्थ की वह खेचा-तानी है जिसका नाम चिन्दी है. यही मुकाब जब मजहबों के मैदान में आता है तो आदमी कहता है—मेरा ही मजहब सबसे अच्छा है. मेरा मजहब विलकुल अनोखा है. विलकुल नया है, और सब मजहबों से अलग है. मेरा मजहब में कोई बात किसी दूसरे मजहब से नहीं ली गई. मेरा मजहब ही आखिरी है. इससे अच्छा तो क्या इतना अच्छा कोई मजहब आगे होगा भी नहीं."

यह वंशी ही बात है जैसी लोग कहते हैं कि—मेरी नसल, मेरा वर्ण या रंग, मेरी जात जैसे ब्राह्मण, क्षत्री वगैरा, या अगर मैं मंद हूँ तो मंद जात और अगर औरत हूँ तो औरत जात ही सबसे ऊँची और अच्छी है. मेरी क्रीम को खुद भगवान ने सबसे से चुना है. ईश्वर ने मेरी जात वालों को खास हक दिये हैं. मैं सूर्य वंशी हूँ. मैं चन्द्र वंशी हूँ, मेरी क्रीम समन्दर की लहरों पर हड़मत करती है, मेरी क्रीम सबसे बढ़ कर है, मेरे मुल्क के पास सबसे ऊँचे, आसमान को छूने वाले मकान हैं, सबसे बड़े हवाई जहाज हैं, सबसे ज्यादा सोना है, हर चीज सबसे बढ़ कर है, मेरे साम्राज्य पर कभी सूरज नहीं डबता, मैं ब्रह्मा के मुख से निकला हूँ, मैं सूरज का बेटा हूँ, वगैरा वगैरा.

इस अहंकार को रोक सकने के लिये आदमी को बड़े बड़े कड़े तजरबों में से निकलना पड़ता है. बड़ी मुसीबतें भेल कर आदमी इस चीज को सीखता है कि जब कि इस तरह की थोड़ी बहुत खुदी छोटे जानवर या छोटी उमर की क्रीम की बदवार

है, वैसे ही जैसे हर एक का शरीर अपना अपना हा शरीर बनता है, हम इन फरकों को भी जरूर समझें और मानें, इन्हीं फरकों से 'मैं' 'तू' और 'वह' बज्रद में आते हैं, पर हम इन फरकों को, बदलने वाली चीज, अपनी जानी चीज समझें और उस हकीकत को जो सब में और सबके अन्दर रमी हुई है ज्यादा बड़ी, ज्यादा टिकाऊ और ज्यादा बुनियादी समझें, खुदी की भी अपनी कीमत है, पर इसकी बेजा कद्र हमें मिटा देने वाली होगी, सब की यानी सबके भले की या सबके अन्दर काम करने वाली जान की हमें ज्यादा कद्र करनी चाहिये, इसी से 'हर आदमी सबके लिये और सब हर एक के लिये' हो सकेगा, सिर्फ इसी से समाजी खिन्दगी, मिली जुली खिन्दगी, या अलग अलग 'मैं' और 'तू' की जगह एक 'हम' कायम हो सकेगा और हम सबका भला मुमकिन होगा.

कमी यह है कि अभी हम में से ज्यादातर के दिमाग उस कम उमरी या लड़कपन की हालत में हैं जिसमें आदमी को अपने 'अनोखेपन' में ज्यादा मबा आता है और अपने को कुल का यानी सारी इनसानी क्रोम के जिस्म का एक हिस्सा समझने में इतना आनन्द नहीं आता, लेकिन यह ऊँची व्यास भी हर दिल के अन्दर मौजूद है, हमने अभी उसे पहचाना नहीं है, कोई आदमी भी सदा विल्कुल अकेला ही रहना नहीं चाहता, फिर उसका अनोखापन भी कौन देखेगा और मानेगा? आदमी दूसरों से मिलना चाहता ही है, दूसरों से बँधना चाहता है, यह व्यास ही जब और ऊँची और गहरी हो जाती है तो आदमी की रूह

सब नदियों की अिकता
 हो, वैसे ही जैसे हर एक का शरीर अपना अपना हा शरीर बनता है, हम इन फरकों को भी जरूर समझें और मानें, इन्हीं फरकों से 'मैं' 'तू' और 'वह' बज्रद में आते हैं, पर हम इन फरकों को, बदलने वाली चीज, अपनी जानी चीज समझें और उस हकीकत को जो सब में और सबके अन्दर रमी हुई है ज्यादा बड़ी, ज्यादा टिकाऊ और ज्यादा बुनियादी समझें, खुदी की भी अपनी कीमत है, पर इसकी बेजा कद्र हमें मिटा देने वाली होगी, सब की यानी सबके भले की या सबके अन्दर काम करने वाली जान की हमें ज्यादा कद्र करनी चाहिये, इसी से 'हर आदमी सबके लिये और सब हर एक के लिये' हो सकेगा, सिर्फ इसी से समाजी खिन्दगी, मिली जुली खिन्दगी, या अलग अलग 'मैं' और 'तू' की जगह एक 'हम' कायम हो सकेगा और हम सबका भला मुमकिन होगा.

कमी यह है कि अभी हम में से ज्यादातर के दिमाग उस कम उमरी या लड़कपन की हालत में हैं जिसमें आदमी को अपने 'अनोखेपन' में ज्यादा मबा आता है और अपने को कुल का यानी सारी इनसानी क्रोम के जिस्म का एक हिस्सा समझने में इतना आनन्द नहीं आता, लेकिन ये अदुखी प्यास कभी हर दिल के अन्दर मौजूद है, हमने अभी पहचाना नहीं है, कोई आदमी भी सदा विल्कुल अकेला ही रहना नहीं चाहता, फिर उसका अनोखापन भी कौन देखेगा और मानेगा? आदमी दूसरों से मिलना चाहता ही है, दूसरों से बँधना चाहता है, यह व्यास ही जब और ऊँची और गहरी हो जाती है तो आदमी की रूह

नया हिन्दू सब मजहबों की एकता अक्टूबर सन् '४७

को उस 'रुहे कुल' से जा बाँधती है जहाँ पहुँच कर आदमी अपनी हकीकत और अपने खोए हुए रुतबे को पहचानता है. तभी उसे असली अपनापन मिलता है, पूरा और सच्चा आनन्द मिलता है.

पर जिस तरह हम अलग अलग आदमियों के बज्र को नहीं मिटा सकते उसी तरह अलग अलग मजहबों के बज्र को विलकुल मिटा देने की कोशिश भी फ़ज़ूल है. लेकिन हमें इन अलग अलग मजहबों के अलगपन को कम करना है, जहाँ तक हो सके इनमें मेल बैठाना है और दुनिया को जैसे और मामलों में वैसे ही मजहब के मामले में भी एकता की तरफ़ ले जाना है. लोगों के दिलों को धीरे धीरे इधर मोड़ना है. यह काम ना मुमकिन नहीं है. यह भी उतना ही क़दरती और ज़रूरी है जितना खुदी का होना बल्कि उससे कहीं ज्यादा ज़रूरी है.

कुछ पढ़े लिखे विद्वान इस बात के साबित करने के चक्कर में पड़ जाते हैं कि बाद के मजहबों ने पहले के मजहबों से नक़ल की है. की है या नहीं इसका पता लगाने की क़ीमत थोड़े से विद्वानों के लिये कुछ हो सकती है. पर कहीं ज्यादा जानते और समझने का बीच आम लोगों के लिये और सब के लिये यह है कि अगर मजहबों ने एक दूसरे से नक़ल की भी है तो क्यों की है. क्या इसका यह सबब नहीं है कि सब मजहब और सब सबाई की बात करने वाले 'एक ही अनादि अनन्त सबाई' की नक़ल करते रहे हैं ? किसी के सामने और कुछ नक़ल करने के लिये था ही नहीं. नई नसलें पुरानी नसलों में से पैदा होती हैं. नई क़ीमं पुरानी क़ीमों

को उस 'दोस्र कुल' से जा बान्धती है जहाँ पहुँच कर आदमी अपनी हकीकत और अपने खोए हुए रुतबे को पहचानता है. तभी उसे असली अपनापन मिलता है. पूरा और सच्चा आनन्द मिलता है.

पर जिस तरह हम अलग अलग आदमियों के बज्र को नहीं मिटा सकते इसी तरह अलग अलग मजहबों के बज्र को विलकुल मिटा देने की कोशिश भी फ़ज़ूल है. लेकिन हमें इन अलग अलग मजहबों के अलगपन को कम करना है, जहाँ तक हो सके इनमें मेल बैठाना है और दुनिया को जैसे और मामलों में वैसे ही मजहब के मामले में भी एकता की तरफ़ ले जाना है. लोगों के दिलों को धीरे धीरे इधर मोड़ना है. यह काम ना मुमकिन नहीं है. यह भी उतना ही क़दरती और ज़रूरी है जितना खुदी का होना बल्कि उससे कहीं ज्यादा ज़रूरी है.

कुछ पढ़े लिखे विद्वान इस बात के साबित करने के चक्कर में पड़ जाते हैं कि बाद के मजहबों ने पहले के मजहबों से नक़ल की है. की है या नहीं इस का बतरे क़लने की क़ीमत क़चोड़से समझने के लिये कुछ हो सकती है. पर कहीं ज्यादा जानने और समझने का बीच आम लोगों के लिये और सब के लिये यह है कि अगर मजहबों ने एक दूसरे से नक़ल की भी है तो क्यों की है. क्या इस का ये सबब नहीं है कि सब मजहब और सब सबाई की बात करने वाले 'एक ही अनादि अनन्त सबाई' की नक़ल करते रहे हैं ? किसी के सामने और कुछ नक़ल करने के लिये क्या ही नहीं. नई नसलें पुरानी नसलों से पैदा होती हैं. नई क़ीमं पुरानी क़ीमों

और उनकी नौआवादियों में से उग पड़ती हैं. पुराने दिव्यों से नए चिराग रोशन किये जाते हैं. पर वह जान. वह जोति (नूर). वह शक्ति (कुदरत) जो इन सब बदलती रहने वाली सूरतों में से भलक रही है और इन्हें चला रही है. इन सबसे ऊपर है, इन सब में से होकर वह बह रही है. वही इन सब शक्तियों को पैदा करती है. जिस चीज की नकल की जावे वह अगर हक है, सचाई है, तो नकल करना इज्जत की बात है और फर्क है, और जो कोई नई, अनोखी चीज पैदा की जा रही है वह अगर 'भूट' है तो अनोखा या मौलिक होना जिल्लत की बात है. अनोखापन या नयापन सिर्फ़ फ़ानी (नश्वर) चीजों में ही हो सकता है. और फ़ानी चीजें सब वातिल (असत्य) होती हैं. सचाई में नयापन नहीं हो सकता, क्योंकि जो हमेशा से है और हमेशा रहेगा वही सच है. वही है. उसकी नकल करनी चाहिये और नकल ही हो सकती है. यह नकल बड़ी मेहनत से करनी चाहिये. यही बड़ी बात है. सचाई का 'कापी राइट' नहीं होता. उसमें किसी का पट्टा नहीं है, पर ठीक बात तो यह है कि कभी किसी मजहब के कायम करने वाले को किसी सची बड़ी रूह को कभी 'नकल' करने की जरूरत ही नहीं पड़ी. रूहानी खिन्दगी का दरिया हमेशा बहता रहता है. जिस किसी को रूहानी व्यास होती है वह अपना डोल उसमें डुबो कर उसे भर सकता है. वही एक सच्चाई अलग अलग अपने आजाद तरीके से हर नए मुतलाशी, नए पैगम्बर, नए ऋषि और नए तीर्थकर के सामने अन्दर से उबलती और जोश मारती रहती है.

सब मजहबों की अक़ीदा
 और उन की तौबादियों में से अक़ पड़ती हैं. ग़िराने दिव्यों से
 चिराग़ रोशन किये जाते हैं. पर वह जान, वह जोती (नूर) वह शक्ति
 (कुदरत) जो इन सब बदलती रहने वाली सूरतों में से
 भलक रही है और इन्हें चला रही है. इन सबसे ऊपर है, इन सब
 में से होकर वह बह रही है. वही इन सब शक्तियों को पैदा करती
 है. जिस चीज की नकल की जावे वह अगर हक़ है, सचाई है,
 तो नकल करना इज्जत की बात है और फ़र्क़ है, और जो कोई
 नई, अनोखी चीज पैदा की जा रही है वह अगर 'भूट' है तो
 अनोखा या मौलिक होना ज़िल्लत की बात है. अनोखापन या
 नयापन सिर्फ़ फ़ानी (नश्वर) चीजों में ही हो सकता है. और
 फ़ानी चीजें सब वातिल (असत्य) होती हैं. सचाई में नयापन
 नहीं हो सकता, क्योंकि जो हमेशा से है और हमेशा रहेगा वही सच
 है. वही है. उसकी नकल करनी चाहिये और नकल ही हो सकती
 है. यह नकल बड़ी मेहनत से करनी चाहिये. यही बड़ी बात है. सचाई
 का 'कापी राइट' नहीं होता. उसमें किसी का पट्टा नहीं है, पर
 ठीक बात तो यह है कि कभी किसी मजहब के कायम करने वाले को
 किसी सची बड़ी रूह को कभी 'नकल' करने की जरूरत ही नहीं पड़ी.
 रूहानी खिन्दगी का दरिया हमेशा बहता रहता है. जिस किसी को
 रूहानी व्यास होती है वह अपना डोल उसमें डुबो कर उसे भर
 सकता है. वही एक सच्चाई अलग अलग अपने आजाद तरीके से
 हर नए मुतलाशी, नए पैगम्बर, नए ऋषि और नए तीर्थकर के
 सामने अन्दर से उबलती और जोश मारती रहती है.

इस एकता को समझने के लिये दूसरों या दूसरे धर्मों की वेकदरी करने, उन्हें छोटा दिखाने या उनका मबाक उड़ाने की जगह उन्हें समझना, उनकी कदर करना और उनकी इज्जत करना ज्यादा अच्छा है. दूसरों की बुराई या कमी को देखने की निस्वत उनकी अच्छी अच्छी बातों को देखना ज्यादा कायदे का है. एक दूसरे के फरकों को निगाह में रखने की निस्वत मेल की बातों पर निगाह रखना ज्यादा काम का है. लड़ने की निस्वत मुलह से रहना ज्यादा अच्छा है.

कुलसके में और साइन्स में, दर्शन में और विज्ञान में, दोनों में हर बात और हर कायदे को समझने के लिये उसके पीछे दूसरी बातों और दूसरे कायदों को जानने की जरूरत पड़ती है. यह सिलसिला बराबर पीछे को चलता रहता है, यहाँ तक कि इसका कोई सिरा दिखाई नहीं देता. आखीर में हम उस अनन्त आत्मा, उस रुहे कुल, उस परम चेतन तक पहुँच जाते हैं जिसकी चेतनता में हमारी जागने की हालत, सपने की हालत और गहरी नींद की हालत तीनों सब समा जाती है. उस रुहे कुल में कायनात की सारी शक्तें बनती और बिगड़ती रहती हैं. सब माही और ख्यानी, जड़ और चेतन कानून उसी के बनाए और उसी के मातहत हैं, उसी अनन्त आत्मा, उसी रुहे कुल में जाकर सब मजहब, सब फलसफे, सब साइन्स, सब कानून और सब हुनर मिल जाते हैं, उसी से वह सब फिर निकलते हैं, यह सिलसिला फिर वे अनन्त दिखाई देता है. जब हम उस सच्चाई तक पहुँच जाते हैं तब हमें सब सबालों का जवाब मिल जाता है, हमारे सब

इस एकता को देखने के लिये दूसरों या दूसरे धर्मों की बुराई करने, उन्हें छोटा दिखाने या उनका मबाक उड़ाने की जगह उन्हें समझना, उनकी कदर करना और उनकी इज्जत करना ज्यादा अच्छा है. दूसरों की बुराई या कमी को देखने की निस्वत उनकी अच्छी अच्छी बातों को देखना ज्यादा काम का है. लड़ने की निस्वत मुलह से रहना ज्यादा अच्छा है.

कुलसके में और साइन्स में, दर्शन में और विज्ञान में, दोनों में हर बात और दूसरे कायदों को जानने की जरूरत पड़ती है. यह सिलसिला बराबर पीछे को चलता रहता है, यहाँ तक कि इसका कोई सिरा दिखाई नहीं देता. आखीर में हम उस अनन्त आत्मा, उस परम चेतन तक पहुँच जाते हैं जिसकी चेतनता में हमारी जागने की हालत, सपने की हालत और गहरी नींद की हालत तीनों सब समा जाती हैं. उस रुहे कुल में कायनात की सारी शक्तें बनती और बिगड़ती रहती हैं. सब माही और ख्यानी, जड़ और चेतन कानून उसी के बनाए और उसी के मातहत हैं, उसी अनन्त आत्मा, उसी रुहे कुल में जाकर सब मजहब, सब फलसफे, सब साइन्स, सब कानून और सब हुनर मिल जाते हैं, उसी से वह सब फिर निकलते हैं, यह सिलसिला फिर वे अनन्त दिखाई देता है. जब हम उस सच्चाई तक पहुँच जाते हैं तब हमें सब सबालों का जवाब मिल जाता है, हमारे सब

नया हिन्दू सच मजहबों की एकता अक्टूबर सन '५७
 शक दूर हो जाते हैं, हम आखिरी संगम, आखिरी समन्वय
 मजमे-उल-बहरत तक पहुंच गए, हमारी आत्मा को पूरी शान्ति,
 रूह को पूरा इतमीनान मिल जाता है.

इस संगम पर पहुँचे चार इनसानी समाज को न इस दुनिया
 में मुल मिल सकता है, न दूसरी दुनिया में. हमारे मजहबी जंग,
 हमारी किरकवाराना लड़ाइयाँ, हिन्दू मुसलमानों के मगड़े, हिन्दुओं
 हिन्दुओं के मगड़े, जात जात के मगड़े, शिया सुन्नी के मगड़े,
 अरबों और यहूदियों के मगड़े, यहूदियों और जरमनों के मगड़े,
 अगली पिछली लड़ाइयाँ, सच की असली वजह असल
 में इसी एक मेल की कमी है, इसी एकता को अपने अन्दर न
 समझ सकता है, जिस दरजे तक भी हम इसे अपने अन्दर पैदा
 कर सकें और समझ सकें उसी दरजे तक हम इन मुसीबतों से
 बच सकते हैं.

जितनी रुहानी, दिमागी और जिस्मानी चारुदें हमने जमा
 कर ली हैं उन सबको चाहे एक दूसरे को मारकाट कर और चाहे
 सचाई और दूरदेशी से एक दूसरे को समझ कर और एक दूसरे
 से राजी होकर जब हम खतम कर देंगे तब सारी इनसानो खिन्दगी
 और आपस के सम्बन्धों को नए सिर से और नए ढंग से कायम
 करके हमें इस तरह का एक बहुत बड़ा संगम बनाना ही पड़ेगा,
 नया मेल जोल कायम करना पड़ेगा, एक ऐसे नए और अजरदस्त
 गठान को रूप देना होगा जिसमें सच खप जाय और जिसमें
 हमारी इनसानी खिन्दगी के सब पहलू, रुहानी और माही शरूसी
 और समाजी समा जावें.

नासन्द
 सब मजहबों की एकता
 कब्रिस्तान

शक दूर हो जाते हैं, हम आखिरी संगम, आखिरी समन्वय
 मजमे-उल-बहरत तक पहुंच गए, हमारी आत्मा को पूरी शान्ति,
 रूह को पूरा इतमीनान मिल जाता है.

इस संगम पर पहुँचे चार इनसानी समाज को न इस दुनिया
 में मुल मिल सकता है, न दूसरी दुनिया में. हमारे मजहबी जंग,
 हमारी किरकवाराना लड़ाइयाँ, हिन्दू मुसलमानों के मगड़े, हिन्दुओं
 हिन्दुओं के मगड़े, जात जात के मगड़े, शिया सुन्नी के मगड़े,
 अरबों और यहूदियों के मगड़े, यहूदियों और जरमनों के मगड़े,
 अगली पिछली लड़ाइयाँ, सच की असली वजह असल
 में इसी एक मेल की कमी है, इसी एकता को अपने अन्दर न
 समझ सकता है, जिस दरजे तक भी हम इसे अपने अन्दर पैदा
 कर सकें और समझ सकें उसी दरजे तक हम इन मुसीबतों से
 बच सकते हैं.

माड़ी . شخصی اور سماجی سما جاویں .

इसी का एक नया तजरबा रुस में हो रहा है. अगर वह सब तरह कामयाब सम्पन्ना गया तो हर जगह उसकी नकल होने लगेगी. अगर वह कुछ खास बातों में नाकाम रहा—और उसके नाकाम होने का ही डर है, क्योंकि उसमें वह जहरों को चूसने वाली, भरोसा पैदा करने वाली, सचाई और हमदर्दी को जनम देने वाली रचनात्मक रहानी खूराक नहीं है—तो फिर दूसरा रास्ता सिर्फ एक ऐसे विश्व व्यापक, आलमगीर मजहब, मजहबे इनसानियत, मानव धर्म को कायम करना है जो सब अलग अलग धर्मों को मिलाकर एक कर दे, जिसमें सबके दिल और दिमाग मिल जावें, जो सब को रहानी खूराक दे, जिससे विश्वास और फूट के सब तरह तरह के जहर इतंसानी क्रीम के जिस्म से निकल कर बाहर हो जावें, इस बड़े जिस्म के सब रंग पट्टे एक दूसरे से गठने चले जावें, प्रेम बढ़े, भरोसा बढ़े, और सारा इतंसानी समाज एक खानदान माना जाने लगे. इसी से समाजी संगठन की चार ठीक ठीक तरतीब पैदा होगी जिसमें सब अपने अपने सुभाव और शक्ति के मुताबिक सबके भले के कामों में लग सकेंगे.

सब मुल्कों और सब क्रीमों की पाक कित्तबें हमें इसी का उपदेश दे रही हैं और इसी तरफ ले जाना चाह रही हैं. यह कोई नई राह नहीं है. धर्म या मजहब को अगर खिन्दा रहना है तो उसे इतंसानी क्रीम के लिये इस दुनिया में और दूसरी दुनिया में ज्यादा से ज्यादा सुख और ज्यादा से ज्यादा तरककी के सामान पैदा करके दिवाने होंगे.

दीन, धर्म या मजहब के बाहरी रूपों और गलत रूपों पर

इसी का एक नया तजरबा रुस में हो रहा है. अगर वह सब कामयाब सम्पन्ना गया तो हर जगह उसकी नकल होने लगेगी. अगर वह खास बातों में नाकाम रहा—और उस के नाकाम होते का ही डर है, क्योंकि उसमें वह जहरों को चूसने वाली, भरोसा पैदा करने वाली, सचाई और हमदर्दी को जनम देने वाली रचनात्मक रोहाती खूराक नहीं है—तो फिर दूसरा रास्ता सिर्फ एक ऐसे विश्व व्यापक, आलमगीर मजहब, मजहबे इनसानियत, मानव धर्म को कायम करना है जो सब अलग अलग धर्मों को मिलाकर एक कर दे, जिसमें सबके दिल और दिमाग मिल जावें, जो सब को रहानी खूराक दे, जिससे विश्वास और फूट के सब तरह तरह के जहर इतंसानी क्रीम के जिस्म से निकल कर बाहर हो जावें, इस बड़े जिस्म के सब रंग पट्टे एक दूसरे से गठने चले जावें, प्रेम बढ़े, भरोसा बढ़े, और सारा इतंसानी समाज एक खानदान माना जाने लगे. इसी से समाजी संगठन की चार ठीक ठीक तरतीब पैदा होगी जिसमें सब अपने अपने सुभाव और शक्ति के मुताबिक सबके भले के कामों में लग सकेंगे.

सब मुल्कों और सब قومों की पाक कित्तबें हमें इसी का उपदेश

देने लगे हैं. यह कोई नई राह नहीं है. धर्म या मजहब को अगर खिन्दा रहना है तो उसे इतंसानी क्रीम के लिये इस दुनिया में और दूसरी दुनिया में ज्यादा से ज्यादा सुख और ज्यादा से ज्यादा तरककी के सामान पैदा करके दिवाने होंगे.

दीन, धर्म या मजहब के बाहरी रूपों और गलत रूपों पर

खोर देना—और यह ही मजहब मजहब में फरक करने वाली चीजें हैं—और दीन धर्म को उस असलियत को सामने न रखना—जो सब मजहबों को असलियत है—इन्हीं का ही यह नतीजा है कि आज दुनिया में अपनी अपनी हकूमत को कायम रखने के लिये बेचैन हाकिम, और अपने अपने बहूपन को बनाए रखने की फिक में बड़े बड़े नेता न सिर्फ अँधेरे में राह टटोल रहे हैं बल्कि 'अंधों को राह दिखाने वाले अंधों' की तरह राजकाजी जंगों, माली लड़ाइयों और फिरकेंवाराना मारकाट के जरिये इस दुनिया को भयंकर नरक बनाए हुए हैं, और जिन का भला करना चाहते हैं, या कम से कम करने का दावा करते हैं उन्हीं के जिस्मों, इखलाक और रूहों सब को बरबाद कर रहे हैं.

कोई यह नहीं कह सकता कि उसे 'सच्ची राह' दिखाई नहीं देती. हमने खुद अपनी आँखें उस राह से फेर रखी हैं. सबे दीन धरम का सूरज अब भी पूरी तेजी के साथ चमक रहा है. उसकी किरनें बराबर चारों तरफ फैल रही हैं. इन राजकाजी हाकिमों और नेताओं को सिर्फ अपने आँखों पर से पट्टियाँ खोल कर फेंकनी हैं. यह पट्टियाँ हैं अहंकार की, अपनी अपनी राष्ट्रीयता को टपली की—मेरा राष्ट्र, मेरी क्रौम, मेरा दीन, मेरा धर्म. इन पट्टियों को उतार कर उसकी जगह इन्हें मानवता, इन्सानियत की ऐनकें लगानी हैं. ऐसा करते ही उन्हें अपनी और सब की सुख, शान्ति का रास्ता साफ दिखाई दे जावेगा. हमारी सब बड़ी बड़ी मजहबी कितारें बार बार जगह जगह और साफ साफ बता रही हैं कि वह रास्ता क्या है और इनसानों समाज को उसके असली

जुद देना—और ये ही मजहब मजहब में फरक करने वाली चीजें हैं—और दीन धरम की असलियत को सामने न रखना—जो सब मजहबों की असलियत है—इन्हीं का ही ये नतीजा है कि आज दुनिया में अपनी अपनी हकूमत को कायम रखने के लिये बेचैन हाकिम और अपने अपने बूटन को बनाए रखने की फिक में बड़े बड़े नेता न सिर्फ अंधेरों में माद भूल रहे हैं बल्कि अंधेरों को राह दिखाने वाले अंधेरों, की तरह राज काजी जंगों, माली लड़ाइयों और फरकेंवाराना मारकाट के जरिये इस दुनिया को भयंकर नरक बनाए हुए हैं, और जिन का भला करना चाहते हैं, या कम से कम करने का दावा करते हैं उन्हीं के जिस्मों, इखलाक और रूहों सब को बरबाद कर रहे हैं.

कोई यह नहीं कह सकता कि उसे 'सच्ची राह' दिखाई नहीं देती. हमने खुद अपनी आँखें उस राह से फेर रखी हैं. सबे दीन धरम का सूरज अब भी पूरी तेजी के साथ चमक रहा है. उसकी किरनें बराबर चारों तरफ फैल रही हैं. इन राज काजी हाकिमों और नेताओं को सिर्फ अपनी आँखों पर से पट्टियाँ खोल कर फेंकनी हैं. यह पट्टियाँ हैं अहंकार की, अपनी अपनी राष्ट्रीयता को टपली की—मेरा राष्ट्र, मेरी क्रौम, मेरा दीन, मेरा धरम. इन पट्टियों को उतार कर उसकी जगह इन्हें मानवता, इन्सानियत की ऐनकें लगानी हैं. ऐसा करते ही उन्हें अपनी और सब की सुख, शान्ति का रास्ता साफ दिखाने का दावा करते हैं कि वह रास्ता क्या है और इनसानों समाज को उसके असली

भले के लिये किस तरह तरतीब देना और चलाना चाहिये। अगर सब अलग अलग धर्मों के इस तरह के बड़े बड़े विद्वान जिनके दिमाग साफ और दिल् बड़े हों और जो सबके भले को सचाई से सोचते हों मिल कर छोटे बड़े दरजों के लिये इस तरह की किताबें तय्यार कर दें तिनमें सब अलग अलग धर्मों की किताबों से एक सी बातें लेकर इस आलमगीर विश्वव्यापी मानव धर्म, महहवे इनसानियत के सब मोटे मोटे असूल बयान किये गए हों और उन पर असल की मिसालें भी उन्हीं धर्मों की किताबों से ले लेकर दी गई हों तो दुनिया का और त्वास कर आगे आने वाली नसलों का बहुत बड़ा कल्याण हो सकता है। इस तरह की किताबें सब उबानों में, सब महहवों के लोगों में, सब स्कूलों और कालिजों में चलाई और फैलाई जा सकती हैं।

आगे के लेखों में हम इसी तरह के कुछ मोटे मोटे असूल और उनकी मिसालें देने की कोशिश करेंगे जिससे काम की राह निकले और सब का भला हो।

आप! आमीन! एमन!

इस महमून पर ब्यादा जानकारी के लिये लेखक की अंग्रेजी किताब 'The Essential Unity of All Religions' पढ़िये।

याहसन्द
सब महहवों की एकता
कितोबरीसलाम
बहले के लिये किस तरह तरतीब देना और चला जायै।

अगर सब अलग अलग महहवों के इस तरह के बड़े बड़े विद्वान जिनके दिमाग साफ और दिल् बड़े हों और जो सबके भले को सचाई से सोचते हों मिल कर छोटे बड़े दरजों के लिये इस तरह की किताबें तय्यार कर दें तिनमें सब अलग अलग धर्मों की किताबों से एक सी बातें लेकर इस आलमगीर विश्वव्यापी मानव धर्म, महहवे इनसानियत के सब मोटे मोटे असूल बयान किये गए हों और उन पर असल की मिसालें भी उन्हीं धर्मों की किताबों से ले लेकर दी गई हों तो दुनिया का और त्वास कर आगे आने वाली नसलों का बहुत बड़ा कल्याण हो सकता है। इस तरह की किताबें सब उबानों में, सब महहवों के लोगों में, सब स्कूलों और कालिजों में चलाई और फैलाई जा सकती हैं।

आगे के लेखों में हम इसी तरह के कुछ मोटे मोटे असूल और उन की मिसालें देने की कोशिश करेंगे जिससे काम की राह निकले और सब का भला हो।
आमीन!
एमन!

इस महमून पर ब्यादा जानकारी के लिये लेखक की अंग्रेजी किताब 'The Essential Unity of All Religions' पढ़िये।

राह देखना*

(रवीन्द्र नाथ ठाकुर)

मेरी सुशी राह देखने में ही है,
जहाँ धूप छाँव एक दूसरे के साथ खेलती है
बरसात आती है और वसंत आता है,
मेरे सामने से कौन खबर लेकर आते जाते हैं ?
मैं अपने आप में ही सुश रहता हूँ,
भीनी भीनी हवा चल रही है
मैं सारे दिन आँखें विछाए दरवाजे पर रहूँगा,
जब यकायक शुभ घड़ी आयगी तभी उसका
दरशन होगा, तब तक पल पल अपनी मौज में
गाता हूँ और उठर उठर कर कभी कभी उसकी
सुशच आती है,

मेरी सुशी राह देखने में ही है,

('गीति माला' से)

* बंगला से तरजुमा—गु. म.

राह देखना

(रबिन्द्र नाथ ठाकुर)

मेरी सुशी राह देखने में ही है,
जहाँ धूप छाँव एक दूसरे के साथ खेलती हैं
बरसात आती है और वसंत आता है,
मेरे सामने से कौन खबर लेकर आते जाते हैं ?
मैं अपने आप में ही सुशी रहता हूँ,

भीनी क्विनी हवा चल रही है
मैं सारे दिन आँखें बजलें दरवाजे पर रहूँगा
जब यकायक शुभ घड़ी आयगी तभी उसका
दरशन होगा तब तक पल पल अपनी मौज में
गाता हूँ और उठर उठर कर कभी कभी उसकी
सुशी आती है,

मेरी सुशी राह देखने में ही है,
(गीति माला से)

बंगला से तरजुमा—गु. म.

इसलाम

अपने को अल्लाह की मरजी पर बाँड देना,

मजहबी रवादायी

“ये ईमान वालो! किखी पर भी शक करने से बहुत बहुत बचो. क्योंकि इसमें शक नहीं कभी कभी शक करना गुनाह होता है. और दूसरों की बुराइयाँ डूढते न फिरो. दूसरों की पीठ पीछे बुराई न करो. क्या तुममें से कोई अपने मुर्दा भाई का मांस खाना पसन्द करेगा? नहीं. तुम ऐसे काम से नकरत करते हो (इसी तरह दूसरों की पीठ पीछे बुराई करने से भी बचो). अल्लाह की तरफ अपने फर्ज का खयाल रक्खो. इसमें शक नहीं अल्लाह बार बार साक करने वाला और दयावान है” (कुरान ४९—१२)

इतिहास इस बात की मिसालों से भरा पड़ा है कि अलग अलग धर्मों और अवतारों, तीर्थकरों और पंगम्बरों की वात गलत और तंग विचारों के फैलने फैलाने से दुनिया को कितना नुकसान पहुँचा है. यही हाल हमारे मुल्क में भी हुआ है और हो रहा है. हमें यहाँ इन चीखों के राजकाजी या दूसरे पहलुओं से कोई मतलब नहीं. हम सिर्फ यह कहना चाहते हैं कि इन गलत रहसियों से इतनासी क्रिम की तरक्की को और लास कर हमारे मुल्क हिन्दुस्तान को बहुत नुकसान पहुँचा है. हम यहाँ दिखाना चाहते हैं कि अरब के पैगम्बर ने जिस इसलाम की तालीम दी थी वह इसलाम क्या है. यह हम कुरान से और रसूल के उपदेशों से ही बताना चाहते हैं

रखनी इल्म के किसी बड़े उपदेशक ने आज तक कभी कोई

اسلام (اپنے کو اللہ کی مرضی پر چھوڑ دینا)

مذہبی رواداری

”اے ایمان والو! کسی پر بھی شک کرنے سے بہت بہت بچو۔ کیونکہ اس میں شک نہیں کبھی کبھی شک کرنا گناہ ہوتا ہے۔ اور دوسروں کی بُرائیاں ڈھونڈتے نہ بھرو۔ دوسروں کی بیٹھ بیٹھے بُرائی نہ کرو۔ کما تم میں سے کوئی اپنے مُردہ بھائی کا ماس نہ کھائے اور نہ کھائے۔ تم ایسے کام سے نفرت کرتے ہو (اسی طرح دوسروں کی بیٹھ بیٹھے بُرائی کرنے سے بھی بچو)۔ اللہ کی طرف اپنے فرض کا خیال رکھو۔ اس میں شک نہیں اللہ بار بار معاف کرنے والا اور دیاوان

ہے“ (قرآن ۴۹—۱۲)

اتھاس اس بات کی مثالوں سے بھرا بیٹا ہے کہ الگ الگ دھرموں اور آؤتاہوں تہکتیکوں اور بینبروں کی بابت غلط اور تنگ دیاروں کے پھیلنے پھیلانے سے دُنیا کو کتنا نقصان پہنچا ہے۔ یہی حال ہمارے ملک میں بھی ہوا ہے اور ہو رہا ہے۔ ہمیں ان چیزوں کے راج کا جی یا دوسرے پہلوؤں سے کوئی مطلب نہیں۔ ہم صرف یہ کہنا چاہتے ہیں کہ ان غلط فہمیوں سے انسانی قوم کی ترقی کو اور خاص کر ہمارے ملک ہندستان کو بہت نقصان پہنچا ہے۔ ہم یہاں دکھانا چاہتے ہیں کہ عرب کے بینمبر نے جس اسلام کی تعلیم دی تھی وہ اسلام کیا ہے۔ یہ ہم قرآن سے اور رسول کے آپدیشوں سے ہی بتانا چاہتے ہیں۔

رومانی علم کے کسی بڑے ایدیشک نے آج تک کبھی کوئی

अलग मजहब चलाया ही नहीं. इस तरह के सब राह दिखाने वाले मजहब के विगड़े हुए रूप को हटा कर उसे नया और ठीक रूप देने रहे हैं. विगड़े हुए को सुधारते रहे हैं. खास कर जिन लोगों में वह पैदा हुए उनकी दिमागी और इखलाकी खिन्दगी में जो बुराइयाँ पैदा हो गई थीं उनको उन्होंने दिखलाया और उनसे लड़े. कृष्ण महाराज ने कलयुग के शुरु में अवतार लिया. उन्होंने कोई नया मजहब नहीं चलाया. बुद्ध भगवान राज घराने में पैदा हुए थे. उन्होंने भी कोई नया धर्म नहीं चलाया. उन्होंने सिक्क धर्म के रूप को सुधारा उन्हें इनसानो कौम के अपने सब भाइयों से प्रेम था. इनकी धार्मिक खिन्दगी में महात्मा बुद्ध ने जहालत और अंध विश्वास भरे हुए पाप. इन्हीं को उन्होंने हटाने की कोशिश की. चीन के महात्मा लाओत्से और महात्मा कंफ्यू-शियस, इसी तरह हजरत ईसा और दूसरे पैगम्बरों ने विगड़े हुए धर्म को ही सुधारा. यही सब देशों और सब जमानों में होता रहा है, यही हजरत मोहम्मद ने किया.

हर रूहानी राह दिखाने वाले के चले जाने के बाद उसके मानने वाले जिनमें समझ कम और जोश ज्यादा होता है किसी न किसी शकल में पुरोहित, मुल्ला या पादरी बन बैठते हैं. वह अपने हादी को बताई हुई असली राह से हट जाते हैं. इसी तरह तरह तरह के अलग धर्म मजहब खड़े हो जाते हैं. पोप, पुरोहित, मोविद और मौलाना ही इन अलग अलग मजहबों को खिन्दा रखते हैं. सच यह है कि हर मजहब को सबसे ज्यादा नुकसान उसी के मानने वालों ने पहुँचाया है.

نیا مسند
 الگ مذہب چلایا ہی نہیں۔ اس طرح کے سب راہ دکھانے والے مذہب کے گڑھے ہوئے روپ کو ہٹا کر اُسے نیا اور ٹھیک روپ دیتے رہے ہیں، گڑھے ہوئے کو سدھارتے رہے ہیں، خاص کر جن لوگوں میں وہ پیدا ہوئے ان کی دماغی اور اخلاقی زبردگی میں جو بیماریاں پیدا ہوئی تھیں ان کو انھوں نے دکھلایا اور ان سے لڑے۔ کرشن مہاراج نے کلچر کے شرورے میں اوتار لیا۔ انھوں نے کوئی نیا مذہب نہیں چلایا۔ بُدھ بھگوان نے گھرانے میں پیدا ہوئے تھے۔ انھوں نے بھی کوئی نیا دھرم نہیں چلایا۔ انھوں نے صرف دھرم کے روپ کو سدھارا۔ انھیں انسانی قوم کے اپنے سب بھائیوں سے پریم تھا۔ ان کی دھارک زندگی میں مہاتما بھو نے جہالت اور اندھ ویشوال بھرے ہوئے پائے۔ انھیں کو انھوں نے ہٹانے کی کوشش کی۔

چین کے مہاتما لاؤ تزیس اور مہاتما کنفیوشیس اسی طرح حضرت علی اور دوسرے پیغمبروں نے گڑھے دھرم کو ہی سدھارا۔ یہی سب دیشوں اور سب زمانوں میں ہوتا رہا ہے۔ یہی حضرت محمد نے کیا۔ ہر روحانی راہ دکھانے والے کے چلے جانے کے بعد اُس کے لذت والے جن میں سمجھ کم اور جوش زیادہ ہوتا ہے کسی نہ کسی شکل میں بددھت، تمنا یا پادری بن بیٹھتے ہیں۔ وہ اپنے پادی کی بتانی ہوئی اصلی راہ سے ہٹ جاتے ہیں۔ اسی طرح، طرح طرح کے الگ دھرم مذہب کھڑے ہو جاتے ہیں۔ نیز یوپ، یہودیت، مہد اور مولانا ہی ان الگ مذہبوں کو زندہ رکھتے ہیں۔ صحیح یہ ہے کہ ہر مذہب کو سب سے زیادہ نقصان اسی کے ماننے والوں نے پہنچایا ہے۔

इस बात को समझने के लिये यह जरूरी है कि हम हर मजहब के शुरु की हालत को और जिस अमाने और जिन हालतों में वह पैदा हुआ उन्हें अच्छी तरह समझें. हर मजहब का बानी विगड़ी हुई राह को सीधा करने की कोशिश करता है, कोई नई राह बनाने की नहीं. वह सारी दुनिया के लिये बात करता है, अपने लिये नहीं. पुरोहित पंडे और मौलवी फिर उस राह को टेढ़ी करके एक किरका या सम्प्रदाय चला बैठते हैं. असली पैगम्बर के उपदेश मार्फत और ज्ञान से भरे होते हैं. उनसे दुनिया को रोशनी मिलती है. पुरोहित पंडे जो कुछ कहते हैं उससे जहालत अन्ध विश्वास और तास्सुब बढ़ता है. दुनिया के सब पैगम्बरों की बताई हुई राह को इसी तरह नुकसान पहुँचा है और इसी तरह अरब के पैगम्बर के नेक और پاک मिशन को नुकसान पहुँचा है.

सन् ५७५ ई० में मोहम्मद साहब का जनम हुआ था. उस वक्त की अरब देश की हालत को "इसलाम इन दि बल्ह" नामी किताब के लेखक मराहूर मुसलमान आलिम जकी अली साहब ने इस तरह बयान किया है—

"पांचवीं और छठीं सदी ईसवी में एशिया और योरप दोनों के अन्दर पुरानी तहजीबें गिर रही थीं और पुरानी कलचर मिट रही थी. इसके बाद अगली सदी ही में एक ऐसी क्रीम के लोगों ने इतिहास को बहती हुई धार को जोर के साथ बदल दिया कि जिनसे इसकी उम्मीद न थी. खाना बंदोश बढ़ू अरबों ने अपने रंगिस्तान से ऊँटों पर निकल कर उधर रोम और इधर ईरान की सल्तनतों से मोरचा लिया. ईरान का खुसरो दंग

इस बात को समझने के लिये जरूरी है कि हम अरब के शुरु की हालत को और जिस अमाने और जिन हालतों में वह पैदा हुआ उन्हें अच्छी तरह समझें. हर मजहब का बानी विगड़ी हुई राह को सीधा करने की कोशिश करता है, कोई नई राह बनाने की नहीं. वह सारी दुनिया के लिये बात करता है, अपने लिये नहीं. पुरोहित पंडे जो कुछ कहते हैं उससे जहालत अन्ध विश्वास और तास्सुब बढ़ता है. दुनिया के सब पैगम्बरों की बताई हुई राह को इसी तरह नुकसान पहुँचा है और इसी तरह अरब के नेक और पैगम्बर के मुहम्मद साहब का जन्म हुआ. उस वक्त की अरब मुसलमानों के लिये एक नया शेरूक था. उस वक्त की अरब देश की हालत को "इसलाम इन दि बल्ह" नामी किताब के लेखक मराहूर मुसलमान आलिम जकी अली साहब ने इस तरह बयान किया है—

"पांचवीं और छठीं सदी ईसवी में एशिया और योरप दोनों के अन्दर पुरानी तहजीबें गिर रही थीं और पुरानी कलचर मिट रही थी. इसके बाद अगली सदी ही में एक ऐसी क्रीम के लोगों ने अतास की बیتی भोजी देवदार को उड़ो उड़ो के साक्षरों के लिये जिनसे इसकी उम्मीद न थी. खाना बंदोश बढ़ू अरबों ने अपने रंगिस्तान से ऊँटों पर निकल कर उधर रोम और इधर ईरान की सल्तनतों से मोरचा लिया. ईरान का खुसरो दंग

रह गया. उसने पूछा "तुम कौन हो कि इतनी बड़ी सलतनत पर हमला करो? दुनिया की कौमों में तुम सब से गरीब और सब से नाहिल हो और तुममें आपस में सब से ज्यादा फूट है." अरब दूत ने बिना भिक्के जवाब दिया—"जो कुछ आप कह रहे हैं वह सब किसी जमाने में ठीक था. अरब लोग जानवरों की मोटी उन के कपड़े पहनते थे. हरी छिपकलियाँ (!) खाते थे. अपनी छोटी छोटी लड़कियों को जिन्दा दफन कर देते थे, मुद्रों जानवर खाते थे, गरम गरम खून पी जाते थे, अपने रिस्तेदारों को मार डालते थे और लूट के माल पर कब्ज़ करते थे, हमें भले बुरे की कोई तमीज नहीं थी, न हम यह बता सकते थे कि क्या जायज है और क्या नाजायज है. लेकिन अब यह सब विल्कुल नहीं रहा. अल्लाह ने हम पर रहम करके एक पाक पैगम्बर हमारे पास भेजा जिसने हमें एक पाक किताब दी जिससे हमें यह तालीम मिलती है कि सच्चा दीन क्या है."

इस तरह के हालात में कुरेश खानदान के अन्दर मुहम्मद साहब का जन्म हुआ था. सात बरस की उमर तक उनके माँ बाप चल बसे थे. उनके ताऊ अबू तालिब ने उन्हें पाला. वह तिजारत के काम में लग गए. उन्होंने बेवा खदीजा के यहाँ नौकरी करली. खदीजा खुद बहुत हौशियार व्यापारी थी. बाद में मोहम्मद साहब ने खदीजा से शादी करली. जब वह पैगम्बर हुए तो खदीजा ही सबसे पहले उन पर ईमान लाई. खदीजा के यहाँ नौकरी करते हुए मोहम्मद साहब ऊपर से देखने में तो अँट पर सवारी करते थे और खदीजा को सुनाफा कमा कर देते थे, लेकिन अन्दर की

रह गयी. उसने पूछा "तुम कौन हो कि अपनी बड़ी सलतनत पर हमला करो? दुनिया की कौमों में तुम सब से गरीब और सब से नाहिल हो और तुममें आपस में सब से ज्यादा फूट है." अरब दूत ने बिना भिक्के जवाब दिया—"जो कुछ आप कह रहे हैं वह सब किसी जमाने में ठीक था. अरब लोग जानवरों की मोटी उन के कपड़े खाते थे. अपनी छोटी छोटी लड़कियों को जिन्दा दफन कर देते थे, मुद्रों जानवर खाते थे, गरम गरम खून पी जाते थे, अपने रिस्तेदारों को मार डालते थे और लूट के माल पर कब्ज़ करते थे, हमें भले बुरे की कोई तमीज नहीं क्ती, न हमें यह बता सकते थे कि क्या जायज है और क्या नाजायज है. लेकिन अब यह सब विल्कुल नहीं रहा. अल्लाह ने हम पर रहम करके एक पाक पैगम्बर हमारे पास भेजा जिसने हमें एक पाक किताब दी जिससे हमें यह तालीम मिलती है कि सच्चा दीन क्या है."

इस तरह के हालात में कुरेश खानदान के अन्दर मुहम्मद साहब का जन्म हुआ क्ता. सात बरस की उमर तक उनके माँ बाप चल बसे थे. उनके ताऊ अबू तालिब ने उन्हें पाला. वह तिजारत के काम में लग गये. उन्होंने बेवा खदीजा के यहाँ नौकरी करली. खदीजा खुद बहुत हौशियार व्यापारी क्ती. बाद में मोहम्मद साहब ने खदीजा से शादी करली. जब वह पैगम्बर हुये तो खदीजा ही सबसे पहले उन पर ईमान लाई. खदीजा के यहाँ नौकरी करते हुए मोहम्मद साहब ऊपर से देखने में तो अँट पर सवारी करते थे और खदीजा को सुनाफा कमा कर देते थे, लेकिन अन्दर की

खिन्दी में उनकी आत्मा उनके मन और नरस पर सवारी कर रही थी और दुनिया के छोटे छोटे धन्दों से उन्हें दूर और ऊपर उठाए लिये जा रही थी।

लोगों के गलत विश्वासों और उनकी गिरी हुई हालत को देख कर कुछ समझदारों को उन्हें सुधारने की सूझी. एक सोसाइटी कायम की गई जिन्हें हनीक कहते थे. 'हनीक' उसे कहते हैं जो धर्म के मामले में भूटी बातों को झोड़कर सच्चाई को तरफ मुके. जो लोग अल्लाह की जगह अपने अपने अलग अलग खुदाओं या देवी देवताओं को पूजते थे और फिर उनके नाम पर लड़ते थे उन्हें इन हनीक लोगों ने गलत बताया, इन्होंने सचाई को जानने का कोशिश की. आख बन्द करके वह किसी चीज को नहीं मानते थे. लेकिन सबसे रवादारी चरतते थे. वह अपने को बहुत छोटा बताते और मानते थे. वह उन बुरी और भूटी बातों के खिलाफ थे जो उस बल्लत मजहब के नाम पर चल रही थी. सच्चे सुधारकों की तरह उन्होंने यह सोचना समझता गुरु किया कि पुराने मजहबों में से क्या रखना चाहिये और क्या नहीं. हनीक लोग हजरत इब्राहीम के पुराने दीन को उन सब गलत बातों से पाक करना चाहते थे जो उसमें आ घुसी थीं. वह चाहते थे कि लोग फर्जी "अल्लाह की वेदियों" की पूजा करने के बजाय सिर्फ एक अल्लाह की पूजा करें. इन "वेदियों" की पूजा भी अरब में बहुत ही गंदे और इजलाक से गिरे हुए ढंग से होती थी.

मोहम्मद साहब हनीक सोसाइटी में शामिल हो गए. उधर

दुन्दगी में उन की आत्मा के मन और नरस पर सवारी को ही नहीं छोड़ दिया के ज्योटे ज्योटे वसन्दों से अकलिस दूर और अकलिस दूर जा रही थी.

लोगों के غلط विश्वासों और उन की गरीबी अथवा गरीबी की दिके के कुछ कुछ दारों को अकलिस सहकारने की सुझी. एक सोसाइटी कायम की ज्योटे ज्योटे ज्योटे ज्योटे. "हनीक" उसे कहते हैं जो धर्म के मामले में ज्योटे बातों को ज्योटे ज्योटे की तरफ मुके. जो लोग अल्लाह की जगह अपने अलग अलग खुदाओं या देवी देवताओं को पूजते थे और फिर उनके नाम पर लड़ते थे उन्हें इन हनीक लोगों ने गलत बताया, इन्होंने सचाई को जानने की कोशिश की. आख बन्द करके वे किसी चीज को नहीं मानते थे. लेकिन सब से रवादारी चरतते थे. वे अपने को बहुत ज्योटे बताते और मानते थे. वे उन बुरी और भूटी बातों के खिलाफ थे जो उस बल्लत मजहब के नाम पर चल रही थी. सच्चे सुधारकों की तरह उन्होंने यह सोचना समझता शुरू किया कि पुराने मजहबों में से क्या रखना चाहिये और क्या नहीं. हनीक लोग हजरत इब्राहीम के पुराने दीन को उन सब गलत बातों से पाक करना चाहते थे जो उसमें आ घुसी थीं. वह चाहते थे कि लोग फर्जी "अल्लाह की वेदियों" की पूजा करने के बजाय सिर्फ एक अल्लाह की पूजा करें. इन "वेदियों" की पूजा भी अरब में बहुत ही गंदे और इजलाक से गिरे हुए ढंग से होती थी.

मोहम्मद साहब हनीक सोसाइटी में शामिल हो गये. उधर

अपनी तिजारीत ईमानदारी, सचाई और ऊँचे इखलाक की वजह से वह "अल अमीन" यानी 'भरोसे के' मशहूर हो चुके थे।

काबा मस्के में पहले से मौजूद था. हजरत इब्राहीम ने एक अल्लाह की पूजा के लिये इसे कायम किया था. काबे की इमारत बड़ी नहीं है. पर अपने खास ढंग की है. यह एक चौकोर इमारत है जो चौबिस हाथ लम्बी, तेइस हाथ चौड़ी और सत्ताइस हाथ ऊँची है. इसमें सिर्फ पूरब की तरफ एक दरवाजा है जिससे अन्दर रोशनी जा सकती है. उत्तर पूरब के कोने में बाहर की तरफ 'संगे असवद' नाम का काला पत्थर लगा हुआ है. कहा जाता है कि यह पत्थर सीधा आसमान से आया था. पहले विल्कुल बरफ की तरह सफेद था. पर बाद में लोगों के गुनाहों की वजह से काला पड़ गया. "सफेद पत्थर" जिसे इस्माइल की कब्र कहा जाता है काबे से उत्तर में है और हजरत इब्राहीम का मुकाम पूरब में है. हनीफ लोग इस पुरानी रिवायत को मानते थे कि अल्लाह ने हजरत इब्राहीम और इस्माइल को काबे की तामीर का हुकुम दिया था. मोहम्मद साहब भी इसे मानते थे. कुरान में इसका साफ जिक्र आता है. लिखा है—

"और जब हम (अल्लाह) ने इस घर को लोगों के आने की जगह और हिक्मत की जगह बनाया और उनसे कहा कि इब्राहीम के मुकाम पर अपने लिये दुआ करने की जगह मुक़र्र करो, और हमने इब्राहीम और इस्माइल को हिदायत की कि मंर इस मकान को पाक करो, उन लोगों के लिये जो यहाँ परिक्रमा करें और जो यहाँ रहें चन्दगी करने के लिये और यहाँ मुक़े और

نیا ہند
اپنی تجارتی ایمان داری، سچائی اور اونچے اخلاق کی وجہ سے وہ
"الاین" یعنی 'مخبرو سے کے' مشہور ہو چکے تھے۔

کعبہ مکہ میں پہلے سے موجود تھا. حضرت ابراہیم نے ایک اللہ کی پوجا کے لئے اسے قائم کیا تھا. کعبے کی عمارت بڑی نہیں ہو۔ یہ اسے خاص دھنگ کی ہو۔ یہ ایک چوکور عمارت ہو جو چوبیس ہاتھ لمبی، تیس ہاتھ چوڑی اور ستائیس ہاتھ اونچی ہو۔ اس میں صرف یورپ کی طرف ایک دروازہ ہو جس سے اندر روشنی جاسکتی ہو۔ اتر یورپ کے کونے میں باہر کی طرف دستگ اسود نام کا کالا پتھر لگا ہوا ہو۔ کہا جاتا ہو کہ یہ پتھر یہاں آسمان سے آیا تھا۔ پہلے بالکل برف کی طرح سفید تھا۔ پھر بعد میں لوگوں کے گناہوں کی وجہ سے کالا پڑ گیا۔ "سفید پتھر" جسے اسلام کی قبر کہا جاتا ہو کعبہ سے اتر میں ہو اور حضرت ابراہیم کا مقام یورپ میں ہو۔ صیغ لوگ اس پڑائی مدایت کو ماننے لگے کہ اللہ نے حضرت ابراہیم اور اسماعیل کو کعبے کی تعمیر کا حکم دیا تھا۔ محمد صاحب بھی اسے ماننے لگے۔ قرآن میں اس کا صاف ذکر آتا ہو۔ لکھا ہو—

"اور صبراہیم (اللہ) نے اس گھر کو لوگوں کے آنے کی جگہ اور حفاظت کی جگہ بنایا اور اس گھر کے کہا کہ ابراہیم کے مقام پر اپنے لئے دونا کرنے کی جگہ مقرر کرو، اور ہم نے ابراہیم اور اسماعیل کو ہدایت کی کہ کعبے کے اس مکان کو پاک کرو، ان لوگوں کے لئے جو یہاں پیکر کرنا کریں اور جو یہاں رہیں بندگی کرنے کے لئے اور یہاں ٹھکیں اور

سیدنا محمد (ﷺ) (قرآن ۲-۱۲۵)

وہ یاد رکھنا بہت ضروری ہے کہ حضرت محمد (ﷺ) شروع میں ہی حنیف سوسائٹی کے ممبر تھے۔ اس سے ان کے آگے کی ساری زندگی آسانی سے سمجھ میں آئے گئی اور ان کی اندرونی روحانی ترقی ایک گھٹا تا بیڑہ معلوم ہوتی ہے۔ روحانی معرفت اور روشنی اور کمال کی طرف وہ بڑے بڑھتے رہے۔

لکھا ہے کہ ہر سال ایک مہینہ وہ حرانام کی پہاڑی میں جا کر اکیلے رہا کرتے تھے۔ وہاں روزہ رکھتے تھے اور اللہ سے مدد کی کے لئے دعائیں مانگتے تھے۔ جب ان کی عمر تریس چالیس برس کی ہوئی تو ایک دن اسی مہینے میں ان کے اوپر ایک خاص حالت طاری ہو گئی۔ اس عجیب حالت میں ان سے کہا گیا "بڑھو" محمد صاحب ان بڑھتے تھے۔ وہ کھنا پڑھنا نہ جانتے تھے۔ یہ پھر کی باتوں میں وہ ان جان نہ تھے۔ انہوں نے اپنے اندر کی آنکھ سے دیکھا اور اندر کے کان سے سنا۔ محمد صاحب اس سندیسے کو سمجھ گئے۔ "وہ لفظ ان کے دل کے اوپر ہمیشہ کے لئے نقش ہو گئے"۔ اس روحانی تجربے کے ساتھ ساتھ پیغمبر کی حیثیت سے محمد صاحب کی زندگی شروع ہوئی۔

سندیسہ کیا تھا؟ "اعلان برا اپنے اللہ کے نام پر اعلان کرنا محمد صاحب بہت شکر یعنی نرم مزاج کے تھے۔ انہیں یقین نہ آیا کہ شعاہت کے لئے اللہ کا پیغام ان کے سپرد کیا جا رہا ہے۔ وہ خدیجہ کے پاس دوڑ کر گئے۔ خدیجہ نے ان سے کہا "آپ الامن ہیں۔ اللہ کو کسی ایسے آدمی کی ضرورت ہے جو ایمان والوں کو

हिदायत कर सके. अल्लाह ने इसके लिये आपको चुना है." खदीजा सबसे पहले मोहम्मद साहब पर ईमान लाई. उसके बाद उनके चचेरे भाई अबी और गुलाम खंद. इस तरह सबसे पहले तीन ईमान लाने वाले सभी जम्हूरियत के तुमाइन्दे थे—खाविद और बीबी, मालिक और नौकर, बूढ़ा और जवान. बड़ी समझ के साथ मोहम्मद साहब पहले तीन साल तक सिर्फ थोड़े से साथियों को लेकर खामोशी से काम करते रहे. यह लोग चुपचाप मेहनत करते थे और अल्लाह के जो पैगाम मोहम्मद साहब के जरिये आते थे उन्हें लिख कर रखते जाते थे. जब तक इन पैगामों को आम करने का वक्त नहीं आया तब तक यह हिकाजत से रखे गए.

पुराने मजहब के मानने वाले बहुत ताकतवर थे. मोहम्मद साहब के मानने वालों का तादाद बढ़ती गई. लेकिन तीन साल के बाद भी जब उन्होंने खुले प्रचार करना शुरू कर दिया, लोगों ने उनका विरोध किया. मोहम्मद साहब को अपने ही देश और घरम के लोगों से लड़ना पड़ा, क्योंकि वह लोग उनका पैगाम सुनने को और पुराने दीन में से बाद की बुराइयों और अन्वी मानताओं को निकाल कर उसे पाक करने के लिये तय्यार न थे. यह लोग मोहम्मद साहब से बेहद गैरियत बरतते थे और बड़े जोरों के साथ मुखालफत करते थे. फिर भी मोहम्मद साहब उन्हें न दुरमन समझते थे और न उनसे लड़ते थे. वह बड़े सन्न और नरमी के साथ उन्हें समझने समझाने की कोशिश करते थे. बाद के दिनों में भी उनकी यही चाल रही. अपने खिलाफ लड़ने वाले सब दुशमनों की तरफ बह उदारता और बरदाश्त ही दिखाते रहे. यह तरीका

न्यास-
 हैरत करके. अल्लाह ने इस के लिये आप को चुना है." खुदीजा
 सब से पहले मोहम्मद साहब पर ईमान लाई. इस के बाद अन् के
 चचेरे भाई अबी और गुलाम खंद. इस तरह सबसे पहले तीन रिान
 लाने वाले सभी जम्हूरियत के न्माइन्दे थे. खावद और बीबी
 मालिक और नौकर बूढ़ा और जवान. बड़ी समझ के साथ मोहम्मद साहब
 पहले तीन साल तक صرف क्ठोर से साकियों को लै कर फामोशी से
 काम करते रहे. ये लोग चूपचाप मेहनत करते थे और अल्लाह के
 जो पैगाम मोहम्मद साहब के जरिये आते थे उन्हें लिख कर रखते जाते
 थे. जब तक इन पैगामों को आम करने का वक्त नहीं आया तब तक
 ये हिकाजत से रखे गए.

पुराने मजहब के मानने वाले बहुत ताकतवर थे. मोहम्मद साहब
 के मानने वालों का तादाद बढ़ती गयी. लेकिन तीन साल के बाद भी जब
 उन्होंने खुले प्रचार करना शुरू कर दिया, लोगों ने अन् का उरुदुद कर
 मोहम्मद साहब को अपने ही देश और घरम के लोगों से लड़ना पड़ा, कि
 वह लोग अन् का पैगाम सुनने को और पुराने दीन में से बाद की बुरायी
 और अन्वी मानताओं को निकाल कर उसे पाक करने के लिये तय्यार न थे.
 यह लोग मोहम्मद साहब से बेहद गैरियत बरतते थे और बड़े जोरों
 के साथ मुखालफत करते थे. फिर भी मोहम्मद साहब उन्हें न दुरमन
 समझते थे और न उनसे लड़ते थे. वह बड़े सन्न और नरमी के साथ
 उन्हें समझने समझाने की कोशिश करते थे. बाद के दिनों में भी
 उनकी यही चाल रही. अपने खिलाफ लड़ने वाले सब दुशमनों
 की तरफ बह उदारता और बरदाश्त ही दिखाते रहे. यह तरीका

उन हिदायतों के विलकुल मुताबिक था जो अल्लाह से उन्हें मिलती थीं. उन्होंने अपने पैगाम का नाम 'इसलाम' रक्खा, जिसका मतलब है "अल्लाह की मरजी पर अपने को छोड़ देना".

"लेकिन अगर यह लोग तुम्हारे साथ भगड़ा करें तो इनसे कह दो कि मैंने विलकुल अपने आप को अल्लाह की मरजी पर छोड़ दिया है. और जितने मेरे साथ हैं सब ने. और उन लोगों से जिनके पास पहले की मजहबी किताबें आ चुकी हैं या जो अन-पढ़ हैं उन सबसे कहो कि क्या तुम भी अल्लाह की हिदायतों के सामने सर मुकाते हो? (यहाँ इसलाम शब्द के माने हैं.) पस अगर वह मानते हैं तो सचमुच वह ठीक रास्ते पर हैं. और अगर नहीं मानते तो तुम्हारा काम सिर्फ उन तक संदेश पहुँचा देना था, और अल्लाह खुद अपने बंदों को देखता है".

(कुरान ३—१६).

और फिर—

"रसूल उसे मानता है जो अल्लाह ने उसे हिदायत की है और दूसरे सब ईमान वाले भी उसे मानते हैं. वह सब अल्लाह को मानते हैं. अल्लाह के करिश्तों को मानते हैं. अल्लाह की भजी हुई सब मजहबी किताबों को मानते हैं. और अल्लाह के सब रसूलों को मानते हैं. इन रसूलों रसूलों में हम कोई किसी तरह का फरक नहीं करते और वह कहते हैं—पे हमारे अल्लाह हम मुनते हैं और अमल करते हैं. हम तुमसे माफी चाहते हैं. सबको आखिर तैरे ही पास लौट कर जाना है." (कुरान २—२८५)

खुदा या ईश्वर का अल्लाह नाम इसलाम के पैगाम्बर ने ईजाद

ان ہدایتوں کے بالکل مطابق تھا جو اللہ سے انھیں ملتی تھیں. انھوں نے اپنے پیغام کا نام 'اسلام' رکھا، جس کا مطلب ہے "اللہ کی مرضی پر اپنے کو چھوڑ دینا".

"لیکن اگر یہ لوگ تمھارے ساتھ جھگڑا کریں تو ان سے کہو کہ میں نے بالکل اپنے آپ کو اللہ کی مرضی پر چھوڑ دیا اور جسے میرے ساتھ ہیں سب نے. اور ان لوگوں سے جن کے پاس پہلے کی مذہبی کتابیں آچکی ہیں یا جو ان پر صہ ہیں ان سے کہو کہ کیا تم بھی اللہ کی ہدایتوں کے سامنے سر جھکاتے ہو؟ اور اسلام شہد کے معنی ہیں، ایسے گروہ مانتے ہیں تو سچ وہ نہیں کہ راستے پر ہیں. اور اگر نہیں مانتے تو تمھارا کام صرف ان تک مذہبی بیویجان دینا تھا، اور اللہ خود اپنے بندوں کو دیکھتا ہے (قرآن ۳—۱۶)

اور پھر—

"رسول اسے مانا جو اللہ نے اسے ہدایت کی اور وہ دوسرے سب ایمان والے بھی اُسے مانتے ہیں. وہ سب اللہ کو مانتے ہیں، اللہ کے فرشتوں کو مانتے ہیں. اللہ کی کبھی ہوئی سب مذہبی کتابوں کو مانتے ہیں. اور اللہ کے سب رسولوں کو مانتے ہیں. ان رسولوں میں ام کوئی کسی طرح کا فرق نہیں کرتے اور وہ کہتے ہیں—اے ہمارے اللہ ہم کہتے ہیں اور عمل کرتے ہیں. ہم تجھ سے معافی چاہتے ہیں. سب کو آخر تیرے ہی پاس لوٹ

کر جاتا ہے." (قرآن ۲—۲۸۵)

خدا یا اللہ کا اللہ نام اسلام کے پیغمبر نے ایجاد

نہی کیا۔ یہ پہلے سے چلا آ رہا تھا۔ پہلے کی مذہبی کتابیں اللہ ہی کے پیغام ہیں اور ان کی آیتوں میں ان سب پہلے کے پیغاموں کو ٹھیک مانا گیا ہو۔ کسی نہ کسی شکل میں اسلام میں اس کا مطلب اور انسان کا اپنے کو اللہ کی مرضی پر چھوڑ دینا یعنی اپنے کو اللہ کے اور کردینا۔ یہی ہمیشہ ہر پیغام کا سارا لب لباب رہا ہو۔ لوگوں اس سارا قبول کر اور اس سے کھٹک کر اس میں گمراہیاں لادیتے تھے۔ جب جب ایسا ہوا تب تب اللہ نے پھر ٹھیک راستہ دکھایا اور نیا پیغام بھیجا۔ قرآن کی یہی آیتیں گیتا کے چوتھے اور پانچویں کے سالوں اور آٹھویں مشہور مخلوقوں سے کتنی ملتی

موتی ہیں اور لکھا ہو کہ —

”اور لوگ ایک اللہ کے سوا جن دوسروں کو پوجتے ہیں انہیں تم بُرا نہ کہو، تاکہ کہیں نادانی میں آکر وہ اللہ کو بُرا نہ کہہ بیٹھیں۔ اس طرح ہم نے یہ کر دیا ہے کہ ہر قوم کو اپنی ہی کام اچھے لگتے ہیں۔ پھر سب کو اللہ ہی کے پاس لوٹ کر جانا پڑا اور اللہ انہیں بتا دے گا کہ وہ کیا کرتے تھے۔“ قرآن (۱۰۹ — ۱۰۸)

قرآن میں لکھا ہے کہ —

”مذہب کے معاملے میں کسی طرح کی زبردستی نہیں ہونی چاہیے۔“ (۲۵۴ — ۲۵۳)

کیا نیچے کئی آیت سے زیادہ صاف مذہبی رواداری کی کوئی بات ہو سکتی ہو۔

دیکھو کہ ہم اللہ کو دیتے ہیں اور جو ہدایت

हमें अल्लाह से मिली है उसे मानते हैं और जो हिदायतें इब्राहिम को, इस्राइल को, इसाक को और याकूब को और क्रौमों को और जो कुछ मूसा को और ईसा को और दूसरे नबियों को अल्लाह से मिली थीं उन सब को मानते हैं, हम उन सबमें किसी तरह का फरक नहीं करते और हमने अल्लाह हा की मरजी पर अपने को छोड़ रक्खा है." (कुरान २-१३६)

इसलाम का पैगम्बर मानता था कि— 'अल्लाह तक पहुँचने के उतने ही रास्ते हैं जितने आदिमियों के सांस.' मोहम्मद साहब ने इनसानों क्रौम के पुराने गुरुओं को बहुत साक लपखों में माना और अपनाया है, कुरान में लिखा है कि—

"तमाम इन्सान एक ही क्रौम है, अल्लाह ने उन सब में अपने पैगम्बर भेजे ताकि उन्हें नेक कामों के नताजों को खुश खबरी दे और बुरे कामों के नताजों से आगाह करें, और अल्लाह ने उनके साथ किताबें भेजीं जिनमें सचाई है ताकि जिन बातों में लोगों में फरक था उनमें वह उसमें ठीक फैसला कर सकें, और वही लोग जिन्हें किताबों से हिदायत करदी गई थी, साक साक इलीलों के आने के बाद भी फिर उसके बारे में अपनी अपनी राय बनाकर आपस में लड़ने लगे, पर, अल्लाह ने उन लोगों को जो ईमान रखते हैं उस बात में सच्चाई को राह दिखादी जिसमें वह एक दूसरे से अलग अलग तरह सोचते थे, और अल्लाह जिसे चाहता है ठीक रास्ता दिखाता है." (कुरान, २-२१३)

कुरान की नीचे की आयतें आजकल के उन लोगों के लिये बहुत ठीक जबाब हैं जो अपने अपने मतवहव में—चाहे वह किसी भी

हैं अल्लाह से ही जो रास्ते मानते हैं जो मलायतियाँ अब्राहम को, इस्राइल को, इसाक को और يعقوب को, और जो कुछ मूसा को और عيسى को, और दूसरे नबियों को अल्लाह से मिली हैं उन सब को मानते हैं, हम उन सब में किसी तरह का फरक नहीं करते और हमने अल्लाह का पैगम्बर माना तथाक— "अल्लाह तक पहुँचने के रास्ते ही रास्ते हैं जितने आदिमियों के सांस." मोहम्मद साहब ने इनसानों क्रौम के पुराने गुरुओं को बहुत साक लपखों में माना और अपनाया है, कुरान में लिखा है कि—

(कुरान)

"तमाम انسان ایک ہی قوم ہیں۔ اللہ نے ان سب میں اپنے پیغمبر بھیجے تاکہ انھیں نیک کاموں کے نتیجوں کی خوش خبری دیں اور بُرے کاموں کے نتیجوں سے اجگاہ کریں اور اللہ نے ان کے ساتھ کتابیں بھیجیں جن میں سچائی ہو تاکہ جن باتوں میں لوگوں میں فرق تھا ان میں وہ اس سے کھٹیک فیصلہ کر سکیں اور دنیا لوگ جنھیں کتابوں سے ہدایت کردی گئی تھی، صاف صاف دلیلوں کے آنے کے بعد بھی پھر اس کے بارے میں اپنی اپنی رائے بنا کر آپس میں لڑنے لگے۔ پس اللہ نے ان لوگوں کو جو ایمان رکھتے ہیں اس بات میں سچائی کی راہ دکھادی جس میں وہ ایک دوسرے سے الگ الگ طرح سوچتے تھے، اور اللہ جسے چاہتا اور کھٹیک راستہ دکھاتا ہو." (کुरان ۲-۲۱۳)

کुरان کی نیچے کی آیتیں آج کل کے ان لوگوں کے لئے بہت کھٹیک جواب ہیں جو اپنے اپنے مذہب میں—پہلے وہ کسی بھی

मबहब के हों—दूसरों को लाने की धुन में लगे रहते हैं—

“और वह लोग कहते हैं कि सिबाय उसके जो यहूदी हो या मिबाय उसके जो ईसाई हो और कोई जन्नत में नहीं जा सकता, यह सब इन लोगों के वहम हैं, इनसे कहो कि अगर तुम सबे हो तो सबूत लाकर दिखलाओ.” (कुरान २-१११)

“और जो कोई नेक काम करता है, चाहे मंद हो या औरत और ईमान रखता है वह जन्नत में जायगा, उनके साथ जरा सो ज्यादती नहीं की जायगी.” (कुरान ४-१२४)

आम तौर पर लोग यह समझते हैं कि इसलाम एक कौजी मबहब है, यह बात जितनी हजरत ईसा के ईसाई मबहब के बारे में रालत है उतनी ही इसलाम के बारे में रालत है, यह दूसरी बात है कि दोनों मबहबों के कुछ मुतासिब लोग खौफनाक जंगों और खूबों के गुनाहों के खिम्बेवार रहे हैं, मोहम्मद साहब ने तशद्दुद या हिंसा नहीं बल्कि अदम तशद्दुद यानी अहिंसा की तालीम दी है, और उनके पीछे चलकर अब्दुल्लाह के इरक में सरशार सूक्तियों ने भी यहाँ किया है—

“और जो कोई सन्न करता है और दूसरों को मार कर देता है, इसमें कोई शक नहीं कि यही उन कामों में से है जिनको इरादा करके करना चाहिये.” (कुरान, ४-४२)

“अगर कोई किसी के साथ युगई करे तो उसे उतनी ही सजा दी जा सकती है, लेकिन जां कोई मार कर देता है और युगई करने वाले का सुधार करता है उसे अब्दुल्लाह से इनाम मिलेगा क्योंकि इसमें शक नहीं अब्दुल्लाह किसी बलम करने वाले को प्यार

अक़ीदतुल्लह

याहन्द—
 مذہب کے ہوں— دوسروں کو لانے کی دھن میں لگے رہتے ہیں۔
 لہذا وہ لوگ کہتے ہیں کہ سوائے اُس کے جو یہودی ہو یا عیسائی ہو اور کوئی جنت میں نہیں جاسکتا۔ یہ سب ان لوگوں کے دہم ہیں۔ ان سے کہو کہ اگر تم سچے ہو تو ثبوت لاکر دکھاؤ۔“

(قرآن ۲-۱۱۱)
 ”اور جو کوئی نیک کام کرتا ہو، چاہے مرد ہو یا عورت اور ایمان رکھتا ہو وہ جنت میں جائے گا۔ ان کے ساتھ ذرا بھی زیادتی نہیں کی جائے گی۔“ (قرآن ۲-۱۲۴)

عام طور پر لوگ یہ سمجھتے ہیں کہ اسلام ایک فوجی مذہب ہے۔ یہ بات جتنی حضرت عیسیٰ کے عیسائی مذہب کے بارے میں غلط ہو آتی ہے اسلام کے بارے میں غلط ہے۔ یہ دوسری بات ہے کہ دونوں مذہبوں کے کچھ منتقِب لوگ خوفناک جنگوں اور فیزی کے گناہوں کے ذمہ دار رہے ہیں۔ محمد صاحب نے تشدد یا ہنسائیں بلکہ عدم تشدد یعنی ہنسائی کی تعلیم دی ہے۔ اور ان کے پیچھے چل کر اللہ کے عشق میں سرشار صوفیوں نے ابھی یہی کیا ہے۔

اور جو کوئی صبر کرتا ہو اور دوسروں کو معاف کر دیتا ہو، اس میں کوئی شک نہیں کہ یہی ان کاموں میں سے ہے جن کو اللہ کر کے

کرنا چاہئے۔“ (قرآن ۲۲-۴۳)
 ”اگر کوئی کسی کے ساتھ بُرائی کرے تو اُسے اتنی ہی سزا دی جاسکتی ہے، لیکن جو کوئی معاف کر دیتا ہو اور بُرائی کرنے والے کا سہارا کرتا ہو اُسے اللہ سے اخصام ملے گا، کیونکہ اس میں شک نہیں، اللہ کسی ظلم کرنے والے کو پیار

नहीं करता।" (कुरान, ४२-४०)

"और उस रहमान अल्लाह की सभी इबादत करने वाले वह है जो जमीन के ऊपर मुक कर चलते हैं और जब कभी जाहिल लोग उनसे कुछ (ऐसी वैसी बात) कहते हैं तो वह जवाब में कहते हैं—यलाम!" (कुरान २५-६३)

दुनिया में चारों तरफ जो हसद, नफरत और राससा फैला हुआ है वह इसलाम के असूलों के कितना खिलाफ है! और मुसलिम लोग यह सब अपने मुखद्वारा के नाम से, या जिनमें वह अपने "असूल" बताते हैं उनके नाम पर करें या न करें, लेकिन जो मुसलमान दूसरों को ऊतल करने में और इस तरह के कामों में दूसरों से मुकाबला करने में अपने रसूल का नाम लेते हैं वह उस रसूल की इज्जत नहीं बढ़ाते जिसने "ऊलम" को तलवार से कहीं उयादा ताऊतवर बताया है।

पुरानी दुनिया के अपने से पहले के पैगम्बरों की इज्जत करने में, ईमान से मोहज्जत करने में, हद दरजे की रवादारी में, गहराई से सब को समझने में, अपने अन्दर की आत्मा को अल्लाह की मरबी पर छोड़ देने का उपदेश देने में और सब के साथ अमन और सलामती से रहने की हिदायत करने में, मोहम्मद साहब इल्मे इलाही यानी ब्रह्म विद्या के माहिरों के लम्बे सिलसिले में से थे। वह इनसानी क्रीम और उनकी रूहों से सबा प्रेम करने वाले बड़े से बड़े बुकुरों में से थे।

—(दि थियामाफिकल मूवमेन्ट से)

अनुवाद

याम

नहीं करता।" (कुरान ४२-४०)
 "और उस रहमान अल्लाह की सच्ची عبادत करने वाले वे ही जो जिनके के ओये छुटक कहते हैं और जब कभी जाहल लोग उन से कुछ (ऐसी वैसी बात) कहते हैं तो वे जवाब में कहते हैं "सलाम!"

(कुरान २५-६३)

दुनिया में चारों तरफ जो हसद, नफरत और छुटक फैला हुआ है वह इसलाम के असूलों के कितना खिलाफ है! और मुसलिम लोग अपने नद्वरों के नाम से, या जिनमें वे अपने "असूल" बताते हैं उन के नाम पर करें या न करें, लेकिन जो मुसलमान दूसरों को ऊतल करने में अपने रसूल का नाम लेते हैं वह उस रसूल की इज्जत नहीं बढ़ाते जिसने "ऊलम" को तलवार से कहीं उयादा बताया है।

पुरानी दुनिया के अपने से पहले के पैगम्बरों की इज्जत करने में, ईमान से मोहज्जत करने में, हद दरजे की रवादारी में, गहराई से सब को समझने में, अपने अन्दर की आत्मा को अल्लाह की मरबी पर छोड़ देने का उपदेश देने में और सब के साथ अमन और सलामती से रहने की हिदायत करने में, मोहम्मद साहब इल्मे इलाही यानी ब्रह्म विद्या के माहिरों के लम्बे सिलसिले में से थे। वह इनसानी क्रीम और उनकी रूहों से सबा प्रेम करने वाले बड़े से बड़े बुकुरों में से थे।

—(दि थियामाफिकल मूवमेन्ट से)

بکٹ کہانی

دیورنر سید سراج الزماں جالسی الدآد یونیورسٹی

بکٹ کہانی ایک شہزی ہے۔ شہزی ایسی نظم کو کہتے ہیں جس کے شعر ایک دو سزے سے سمبند رکھتے ہوں اور دونوں سزوں کا قافیہ ایک سا ہو۔ مجھے بکٹ کہانی کی دو کتابیں مل سکی ہیں۔ یہ دونوں نول کشور پریس کھنڈ کی چھپی ہیں۔ لیکن نہ چھپنے کا سال ہی لکھا ہوا ہے نہ چھپنے والے کا نام ہے۔ شہزی اللہ شہزی تفریہ سے شروع ہوتی ہے۔ اس کے بعد صاحب کی تفریہ ہے۔ اس کے علاوہ بکٹ کہانی میں قریب تمام ہندو دیولہوں اور ان کے منانے کے بڑھنگ کو بڑے پریم کے ساتھ بیان کیا گیا ہے۔ انڈیا اور محمد صاحب کی تفریہ مسلمانوں کے دلوں میں اردو کے ہندو کھنڈ والے بھی اپنی کتابوں میں کرتے تھے اور ہندو دیولہوں کو منانے کا بڑھنگ مسلمان بھی خوب جانتے تھے اس لئے اس کتاب کی اولی یا باتوں سے یہ فیصلہ نہیں کیا جاسکتا کہ اس کا کہنے والا ہندو تھا یا مسلمان۔

اسی طرح اس زمانے کی مسلمانوں کی نگرانی یا ہندی میں کھتی سی کتابیں ملتی ہیں جو شہزی گیتھ سے کہتا ہے۔ شہزی پریم چند کے زمانے جیسے شعروں سے شروع ہوتی ہیں۔ یہ چیز کتاب کی زبان یا لپی اور آپس کے میل ملاپ سے تعلق رکھتی تھی۔ اڈیٹر۔

بیکٹ کہانی

(پروفیسر سٹریٹ مرساٹھ ڈبما جاپسی، اٹلاھاواہڈ یونیورسٹی)
 'بیکٹ کہانی' ایک ماسنوی ہے۔ ماسنوی ایسی نظم کو کہتے ہیں جس کے شعر ایک دو سزے سے سمبند رکھتے ہوں، اور دونوں سزوں کا قافیہ ایک سا ہو۔ مجھے بیکٹ کہانی کی دو کتابیں مل سکی ہیں۔ یہ دونوں نول کشور پریس کھنڈ کی چھپی ہیں۔ لیکن نہ چھپنے کا سال ہی لکھا ہوا ہے نہ چھپنے والے کا نام ہے۔ شہزی اللہ شہزی تفریہ سے شروع ہوتی ہے۔ اس کے علاوہ بیکٹ کہانی میں قریب تمام ہندو دیولہوں اور ان کے منانے کے بڑھنگ کو بڑے پریم کے ساتھ بیان کیا گیا ہے۔ انڈیا اور محمد صاحب کی تفریہ مسلمانوں کے دلوں میں اردو کے ہندو کھنڈ والے بھی اپنی کتابوں میں کرتے تھے اور ہندو دیولہوں کو منانے کا بڑھنگ مسلمان بھی خوب جانتے تھے اس لئے اس کتاب کی اولی یا باتوں سے یہ فیصلہ نہیں کیا جاسکتا کہ اس کا کہنے والا ہندو تھا یا مسلمان۔

اسی طرح اس زمانے کی مسلمانوں کی نگرانی یا ہندی میں کھتی سی کتابیں ملتی ہیں جو شہزی گیتھ سے کہتا ہے۔ شہزی پریم چند کے زمانے جیسے شعروں سے شروع ہوتی ہیں۔ یہ چیز کتاب کی زبان یا لپی اور آپس کے میل ملاپ سے تعلق رکھتی تھی۔ اڈیٹر۔

یہ چیز کتاب کی زبان یا لپی اور آپس کے میل ملاپ سے تعلق رکھتی تھی۔ اڈیٹر۔

इस मसनवी पर एक नवर डालने से इस पर भापा की शायरी का गहरा असर मिलता है. उर्दू की और मसनवियों से अलग इसमें मोहब्बत औरत की तरफ से बाहिर की गई है और न सिक फेल यानी कियान यह बताती है कि एक औरत बोल रही है बल्कि बयान के तरीके और दृष्ट से भी औरत के जन्म और ख्याल बाहिर होते हैं. यह मसनवी इस तरह शुरू होती है—

मेरा एक साँवर के साथ दिल मिल
हुआ मानिन्द गुल खुश बक्त स्विल खिल
रही मैं रात दिन उस साथ खुश हाल
लिया मैं अपने जी को ऐसा बंजाल
अरी मैं क्या कहूँ तुमसे सखी रो
बिरह की आग मुझ दिल में लगी रो
फहूँ क्या एक बयक उस साँवर ने
किया अस्त^१ पे सबी उस साँवर ने. ॐ

सना मैंने बहुत रो रो किया रो
बिया अपनी मुनाई दिल की सारी
कहा मैंने बहुत मसका के उसको
कि इस रत में अकेली कर न मुसको

ॐ इस शेर में काफिया नहीं है. मगर छपा ऐसा ही है.

१—अस्त = इराद ।

कतोर बरस

कैफ कानि

नाहसन्द

इस शनवी पर एक नए फूलाने से इस पर बहाशा की शायरी का गहरा असर होता है. उर्दू की ओर शनवीयों से अलग इसमें मोहब्बत औरत की तरफ से बाहिर की गई है और न सिक फेल यानी कियान यह बताती है कि एक औरत बोल रही है बल्कि बयान के तरीके और दृष्ट से भी औरत के जन्म और ख्याल बाहिर होते हैं. यह मसनवी इस तरह शुरू होती है—

मेरा एक साँवर के साथ दिल मिल
हुआ मानिन्द गुल खुश बक्त स्विल खिल
रही मैं रात दिन उस साथ खुश हाल
लिया मैं अपने जी को ऐसा बंजाल
अरी मैं क्या कहूँ तुमसे सखी रो
बिरह की आग मुझ दिल में लगी रो
फहूँ क्या एक बयक उस साँवर ने
किया अस्त^१ पे सबी उस साँवर ने. ॐ

सना मैंने बहुत रो रो किया रो
बिया अपनी मुनाई दिल की सारी
कहा मैंने बहुत मसका के उसको
कि इस रत में अकेली कर न मुसको

इस शनवी पर एक नए फूलाने से इस पर बहाशा की शायरी का गहरा असर होता है. उर्दू की ओर शनवीयों से अलग इसमें मोहब्बत औरत की तरफ से बाहिर की गई है और न सिक फेल यानी कियान यह बताती है कि एक औरत बोल रही है बल्कि बयान के तरीके और दृष्ट से भी औरत के जन्म और ख्याल बाहिर होते हैं. यह मसनवी इस तरह शुरू होती है—

मेरा एक साँवर के साथ दिल मिल
हुआ मानिन्द गुल खुश बक्त स्विल खिल
रही मैं रात दिन उस साथ खुश हाल
लिया मैं अपने जी को ऐसा बंजाल
अरी मैं क्या कहूँ तुमसे सखी रो
बिरह की आग मुझ दिल में लगी रो
फहूँ क्या एक बयक उस साँवर ने
किया अस्त^१ पे सबी उस साँवर ने. ॐ

सना मैंने बहुत रो रो किया रो
बिया अपनी मुनाई दिल की सारी
कहा मैंने बहुत मसका के उसको
कि इस रत में अकेली कर न मुसको

इस शनवी पर एक नए फूलाने से इस पर बहाशा की शायरी का गहरा असर होता है. उर्दू की ओर शनवीयों से अलग इसमें मोहब्बत औरत की तरफ से बाहिर की गई है और न सिक फेल यानी कियान यह बताती है कि एक औरत बोल रही है बल्कि बयान के तरीके और दृष्ट से भी औरत के जन्म और ख्याल बाहिर होते हैं. यह मसनवी इस तरह शुरू होती है—

१—अस्त = इराद ।

सजन तुम होइ कर सुभंको न जाओ
 सजन विरहा अगिन में ना जलाओ
 पिया तुम बिन जलूंगी मैं अगिन में
 लगाऊँ आग सारे तन बदन में

अकेली तुम बिना कैसे रहूंगी
 दुख ऊपर दुख पिया कैसे मरूंगी
 मैं अपना दूँ गम किससे कहूंगी
 अरे इस गम से कब जीती रहूंगी

तजगी तुम बिना सिगार अपना
 रहूंगी मैं सजन मन मार अपना
 पिया तुम बिन मैं काजल कब करूंगी
 लिकास अपना मैं बालम सब धरूंगी

अंधरी रैन में तुम बिन डरूंगी
 अकेली सेज पर कैसे रहूंगी

अगर विरहा निपट सुभ जी में जीती
 नहीं पाने के फिर तुम मुझ को जीती
 मोहब्बत की मारी इसी तरह उसे रोकती रही

पिया बच्चे बिन जलोंगी मैं अँक में
 लगाऊँ अँक सारे तन बदन में

अकेली बच्चे बिना कैसे रहूंगी
 दुख ऊपर दुख पिया कैसे मरूंगी

मैं अपना दूँ गम किससे कहूंगी
 अरे इस गम से कब जीती रहूंगी

तजगी तुम बिना सिगार अपना
 रहूंगी मैं सजन मन मार अपना

पिया तुम बिन मैं काजल कब करूंगी
 लिकास अपना मैं बालम सब धरूंगी

अंधरी रैन में तुम बिन डरूंगी
 अकेली सेज पर कैसे रहूंगी

अगर विरहा निपट सुभ जी में जीती
 नहीं पाने के फिर तुम मुझ को जीती
 मोहब्बत की मारी इसी तरह उसे रोकती रही

कहीं मैं सौ तरह समझा उसे बात

न मानी उसने कुछ हीहात हीहात ?

किया अपना सकर मुझ छोड़ अकेली
मेरी सब में विरहा ने लाज ले ली

पिया के चले जाने पर उसकी याद में बराबर तड़पती रही
और जैसे जैसे रूत बदलती रही जैसे जैसे इसका दर्द भी नई
सूरतों से सामने आता रहा.

बुनांचे—

असाढ़ आया मुझे दुख देते देते

सदा आंसू सेती मुँह धोते धोते

फिरूँ वेकल पिया बिन दर बदर मैं

पुकारूँ नित सजन को घर व घर मैं

अरी सब नार पिय के संग बोलें

गिरहूँ अपने पिया के जी से खोलें

फिरूँ पिय दृढती मैं हर तरफ़ रे

नाग़ दुख से दीबानी मैं भई रे.

हमन सी विरहनी रोती फिरें हे

गामे हिजराँ का नित दुखड़ा भरें हे

१. हीहात = अफसोस

२. गामे हिजराँ = जुदाई का रंज

कभी में सुपरि बग्गा असे बात
जमानी अस ने कच्चे हीसात हीसात

किया अपना सफ़र मज्हे च्छोड़ कियली

मिरी सब में बरहाने लज से ली

पिया के चले जाने पर उसकी याद में बराबर तड़पती रही
और जैसे जैसे रूत बदलती रही जैसे जैसे इसका दर्द भी नई
सूरतों से सामने आता रहा.

चिन्ता चिन्ता

साइद आया मज्हे डक़े दिये दिये

सदा आंसू सेती मुँह धोते धोते

पिचरोन बने कल पिया इन दर बदर मैं

पुकारूँ नित सजन को घर व घर मैं

अरी सब नार पिया के संग बोलें

गिरहूँ अपने पिया के जी से खोलें

फिरूँ पिया दृढती मैं हर तरफ़ रे

नाग़ दुख से दीबानी मैं भई रे.

हमन सी विरहनी रोती फिरें हे

गामे हिजराँ का नित दुखड़ा भरें हे

सखी निस दिन मेरा रोते कटे है
मेरी इस दद से झाली फटे है.

हुई थी किस खड़ी मुझसे जुदाई
फिर आने क्यों नहीं जी चाहता जी

सखी गे इन्तेदा? बरसात का है
विरहा वैराग से जी अब डरा है.

घटा हर तरफसे उमड़ी खड़ी रे
अटारी में लगी देखू खड़ी रे
उमड़ कर लाल बादल आवते हैं
विरहा की आग दिल में लावते हैं

घटा को देख मैं रो रो खड़ी हूँ
गरज फिर आ सतावे विरहनी कूँ

इस विछड़ी हुई की यही हालत रही कि सावन आ गया लौर;
अपने साथ एक नई आफत लाया—

अरी जब मोर बन से कूकता है
मेरा आवाज सुन जी सूखता है

पपीहा फिर दिलावे याद पी की
अगिन दूनी लगावे आग जी की
सभी सखियाँ पिया संग भूलती हैं
पिया के साथ नौगिन वृम्ती हैं

कोठोर शक
किट कानी

नया हिनद

किसी दिन मेरा रोते कटे है
मेरी इस दद से झाली फटे है.

हुई थी किस गहरी मुझसे जुदाई
फिर आने क्यों नहीं जी चाहता जी

किसी री अत बरसात का है
ब्रभा बिराग से जी अब डरा है.

घटा हर طرفसे उमड़ी खड़ी रे
अटारी में लगी देखू खड़ी रे

उमड़ कर लाल बादल आवते हैं
विरहा की आग दिल में लावते हैं

घटा को देख मैं रो रो खड़ी हूँ
गरज फिर आ सतावे विरहनी कूँ

इस गहरी होती की भी हालत रही कि सावन आ गया लौर;
अपने साथ एक नई आफत लाया—

अरी जब मोर बन से कूकता है
मेरा आवाज सुन जी सूखता है

पपीहा फिर दिलावे याद पी की
अगिन दूनी लगावे आग जी की
सभी गहियाँ पिया संग भूलती हैं
पिया के साथ नौगिन वृम्ती हैं

अरी जब कूक कोयल की सुनाई
तमासी तन बदन में आग लाई
हँडोले मूलते हैं सच सखी री
फिर मैं टंढती पी दर बदर री

पिया के साथ जाकर नार सारी
लगाती है वह मँहदी हाथ करी
घटा काली में देख और रात काली

क्रयामत^१ देख उनकी चुल्हक काली
मुझे आवे सजन नित याद मेरा
न जानू कच करेगा आव्य फेरा
सलोनों को सखी सच मुख करत है
सलोनों^२ चिन अरी हम दुख सरत है
पढ़े बूँदे स्वही राऊँ अकेली
मुझे चरसात रुत हैगी दुहली

बिकट मौसम निषट चरसात है रे
रुवामत वह अंधरी रात है रे
और जब यह महीना भी क्यों त्यों हातम हुआ तो

१—क्रयामत = मुसीबत. २—सलोनों = प्यारे

अरी जब कूक कोयल की सुनाई
तमासी तन बदन में आग लाई
हँडोले मूलते हैं सच सखी री
फिर मैं टंढती पी दर बदर री

पिया के साथ जाकर नार सारी
लगाती है वह मँहदी हाथ करी
घटा काली में देख और रात काली

क्रयामत^१ देख उनकी चुल्हक काली
मुझे आवे सजन नित याद मेरा
न जानू कच करेगा आव्य फेरा
सलोनों को सखी सच मुख करत है

सलोनों^२ चिन अरी हम दुख सरत है
पढ़े बूँदे स्वही राऊँ अकेली
मुझे चरसात रुत हैगी दुहली

बिकट मौसम निषट चरसात है रे

रुवामत वह अंधरी रात है रे

और जब यह महीना भी क्यों त्यों हातम हुआ तो

१—क्रयामत = मुसीबत. २—सलोनों = प्यारे

दूसरा आया—

आया भादों मुझे तरसावता है
पटा राम की सखी बरसावता है

अंधेरी रैन जब चमके है जुगनू
निपट होती हूँ मैं बेजान मजनू

अरी इस रात के रोशन सितारे
मेरी लेखे तो है अंगारे सारे

कबूतर जा खबर ला दे पिया की
सहूँगी किस तरह विपदा सदा की

.....

मैं देखत वाट पा, बौरा गई रे
अकेली बिन पिया दीया गई रे
सादों भी गुजरा मगर पिया न आए—

फिर पंडित जगत के पूछती रे
दसहरा और दिवाली पूजती रे
पिया के आबने का दिन न आया
बहुत ताबीच और मन्तर पढ़ाया

निकालूँ काल और रम्माल डू हूँ
हर एक से पा की अपने बात पूछूँ

अक्तूबर १९४७

किश कानी

नया हिन्द

दूसरा आया—
आया बहादुर मेरे त्रसादता है
गंगा घन की खुशी बरसादता है

अंधेरी रैन जब चमके है जुगनू
निपट होती हूँ मैं बेजान मजनू

अरी इस रात के रोशन सितारे
मेरी लेखे तो है अंगारे सारे

कबूतर जा खबर ला दे पिया की
सहूँगी किस तरह विपदा सदा की

.....

मैं देखत वाट पा, बौरा गई रे
अकेली बिन पिया दीया गई रे
सादों भी गुजरा मगर पिया न आए—

फिर पंडित जगत के पूछती रे
दसहरा और दिवाली पूजती रे
पिया के आबने का दिन न आया
बहुत ताबीच और मन्तर पढ़ाया

निकालूँ काल और रम्माल डू हूँ
हर एक से पा की अपने बात पूछूँ

मौसम बदला तो जुदाई ने तकलीक पहुँचाने की और सूख निकाली—

गया अगहन सबी दुख दे घनेरा

किया सरमा ने आ मुफ पास डेरा

सलोना री मेरा कित रस रहा है

मेरा आकर लवों पर दम रहा है

दुख देने वाले पिया को शिकायत के बजाय वह अब

अपने ही को इलजाम देती है—

मैं दुशमन जी की अपने आप हूँगी

किसी को बैठ कर क्या दोष दूँगी

कोई भी जान अपनी खोबता है

वेगाने वास्ते यूँ रोबता है

लगाई है जहाँ में पीत सबने

गँवाया कब किसी ने जी को अपने

इतने में दूसरों को मगन और चोहलें करती देखती है तो दिल

और भी तइप उठता है. सुनिये क्या तैयारियाँ हैं—

अरी सब नार बदलें भेस अपने

करें कंभी नहावें केस अपने

लगाकर हर घड़ी धनबन कटारी

करें मिस्सा दिखावें पान सुपारी

मुख ऊपर नागनी बह चुल्क खोली

पहन कर लाल ओदी रंग चोली

मौसम बदला तो जुदाई ने तकलीक पहुँचाने की और सूख निकाली—

गया अगहन सबी दुख दे घनेरा

किया सरमा ने आ मुफ पास डेरा

सलोना री मेरा कित रस रहा है

मेरा आकर लवों पर दम रहा है

दुख देने वाले पिया को शिकायत के बजाय वह अब

अपने ही को इलजाम देती है—

मैं दुशमन जी की अपने आप हूँगी

किसी को बैठ कर क्या दोष दूँगी

कोई भी जान अपनी खोबता है

वेगाने वास्ते यूँ रोबता है

लगाई है जहाँ में पीत सबने

गँवाया कब किसी ने जी को अपने

इतने में दूसरों को मगन और चोहलें करती देखती है तो दिल

और भी तइप उठता है. सुनिये क्या तैयारियाँ हैं—

अरी सब नार बदलें भेस अपने

करें कंभी नहावें केस अपने

लगाकर हर घड़ी धनबन कटारी

करें मिस्सा दिखावें पान सुपारी

मुख ऊपर नागनी बह चुल्क खोली

पहन कर लाल ओदी रंग चोली

बह आपके अपने पी के संग खेले
 बतासे और खिलौने पी को देवे
 रचा के हाथ और महदी लगा के
 धरें हे तोरनी सर पर पिया के

और इससे इस बिरहा की मारी पर क्या गुजरती है—

अरी बस क्या कहूँ तुझसे सखीरी
 नहीं कुछ बात कहने की सखीरी

देर तो हो रही है लेकिन जरा देखें कि चाँदनी रात में उसके
 बेचैन दिल की क्या हालत दिखाई दी—

यकायक आपके छिटकी चाँदनी रे
 मेरे डसने को निकली चाँदनी रे

हुई है चाँदनी की रात ज्यूँ दिन
 मेरे लेखे अँधरी है पिया बिन

कभी मैं जलम अपना फिर से खोलूँ
 अरी इस चाँदनी मार न जीऊँ

पिया बिन चाँदनी नित आ सतावे
 सदा मुझ साथ आ भगड़ा मचावे

अँधरी रैन तो कटती थी मेरी
 पिया बिन चाँदनी कैसे कटे रो

चाँदनी के बाद देखिये होली जैसा राग और रंग का त्योहार
 उस पर क्या असर करता है—

अक्टूबर सन् '४७

कमल कानी

०० आके अपने पी के सग कहेलिन
 बतासे अद कहेलने पी को देलिन

रचा के हाथ अद सन्दी लगा के
 धरिन हिन तोरनी सर पर पिया के
 और इस से इस बिरहा की मारी पर क्या गुजरती है—

अरी हिन क्या कहलन त्हे से कहेली रे
 नहिन क्छे बात कहने की कहेली रे

देर तो हो रही है लेकिन जरा देखिये कि चाँदनी रात में उस
 के बेचैन दिल की क्या हालत दिखाई दी—

यकायक आपके छिटकी चाँदनी रे
 मेरे डसने को निकली चाँदनी रे

हुई है चाँदनी की रात ज्यूँ दिन
 मेरे लेखे अँधरी है पिया बिन

कभी मैं जलम अपना फिर से खोलूँ
 अरी इस चाँदनी मार न जीऊँ

पिया बिन चाँदनी नित आ सतावे
 सदा मुझ साथ आ भगड़ा मचावे

अँधरी रैन तो कटती थी मेरी
 पिया बिन चाँदनी कैसे कटे रो

चाँदनी के बाद देखिये होली जैसा राग और रंग का त्योहार
 उस पर क्या असर करता है—

करें सब नारियाँ अश्रुमान नहावें
 लगा कर हाथ को मँहदी रचावें
 लगा कर पान को मँह नार सारी
 पिया के संग बैठी सब से न्यारी
 गले में पहिर कर बढी व हैकल
 पिया के साथ बैठी अपने रिल मिल
 पहर सोने के वाज् बंद पाचेव
 करें हँस हँस के अपनी हर घड़ी चेव
 बनावें हर घड़ी सज दिल बरी को
 मखा बट्टे पिया की दिल बरी को
 खुशी होकर गले पी को लगावें
 अरी धन नार जिनको पी मनावें

लिये हाथों में पिचकारी फिरत हैं
 अचीर अपने पिया के मुख मलत हैं

गुलाल और रंग सब कुछ फेंकती हैं
 गुलाब और मुरक इसमें मेलती हैं
 अरी आलस में होरी मच रही है
 दक श्री मिरदंग को गत लग रही है
 हर एक सहलों में बस जाते हैं भांगल
 सुहागिन नार के पाँव के बिछवन

करी सब नारियाँ अश्रुमान नहावें
 लगा कर हाथ को मँहदी रचावें
 लगा कर पान को मँह नार सारी
 पिया के संग बैठी सब से न्यारी
 गले में पहिर कर बढी व हैकल
 पिया के साथ बैठी अपने रिल मिल
 पहर सोने के वाज् बंद पाचेव
 करें हँस हँस के अपनी हर घड़ी चेव
 बनावें हर घड़ी सज दिल बरी को
 मखा बट्टे पिया की दिल बरी को
 खुशी होकर गले पी को लगावें
 अरी धन नार जिनको पी मनावें

सबे हाथों में पिचकारी फिरत हैं
 अचीर अपने पिया के मुख मलत हैं
 गुलाल और रंग सब कुछ फेंकती हैं
 गुलाब और मुरक इसमें मेलती हैं
 अरी आलस में होरी मच रही है
 दक श्री मिरदंग को गत लग रही है
 हर एक सहलों में बस जाते हैं भांगल
 सुहागिन नार के पाँव के बिछवन

सभी हँस हँस के पी के संग बोलें
खुशी सेतो पिया के संग भूले

रंगोली चूंदरी पर रंग डारें
भई होरी में वौरी सारो नारें
अन्नी यह देख कर हंगामे होली
मेरे जी पर ऋयामत आज होली

रहें सब खुश मैं लोहू पीवती हूँ
यह हसरत देखने को जीवती हूँ

गर्मी के आने पर भी दुखिया की मुसीबत कम न हुई और
पिय का राम बराबर उसकी जान को लगा रहा—

वियाचां में फिरें उड़ते बगूले
चिरहा के संग मेरा जित भूले

वसंत और पंच में सब मिल मनावें
सदा हम चिरहनी दुख दर्द गावें
वहाँ मिलता मुझे पी कि कहूँ क्या ?
न नौद आई कि देखूँ खवाब में जा

लेकिन वैसाख वीतने के बाद जब जेठ आया—
गयी वैसाख जेठ अब आ लगा है
पिया का शौक मुझ दिल में रचा है

सभी अन्नों के पी के संग बोलें
खुशी सेतो पिया के संग भूले

रंगोली चूंदरी पर रंग डारें
भई होरी में वौरी सारो नारें

रहें सब खुश मैं लोहू पीवती हूँ
यह हसरत देखने को जीवती हूँ

गर्मी के आने पर भी दुखिया की मुसीबत कम न हुई और
पिया का राम बराबर उसकी जान को लगा रहा—

वियाचां में फिरें उड़ते बगूले
चिरहा के संग मेरा जित भूले

वसंत और पंच में सब मिल मनावें
सदा हम चिरहनी दुख दर्द गावें
वहाँ मिलता मुझे पी कि कहूँ क्या ?
न नौद आई कि देखूँ खवाब में जा

लेकिन वैसाख वीतने के बाद जब जेठ आया—
गयी वैसाख जेठ अब आ लगा है
पिया का शौक मुझ दिल में रचा है

और इसी के बयान पर किस्सा खत्म है जिसके बाद कुछ शेरों में शायर ने बताया है कि यह प्रेम कहानी खाहिर में तो दो आदमियों के जुदा होकर बचन होने और फिर मिल जाने का किस्सा है लेकिन अबसल में खुदा के इश्क से मतलब है—

यह आया दिल में कहिये एक कहानी
 बर्याँ हो जिसमें सोचे दिल निहानी

जहाँ हर चंद है सादी जनानी
 व लेकिन दर्द दिल की है कहानी

लगी जो बात दिल की मुनकसिम है
 सजन जो दर्द का पूछो तो कम है

अगर समझे कोई अजराह तहकीक
 खुदा के इश्क की हैगी यह तहकीक

पिया कौन और सजन देखूँ कहाँ है
 उसी महबूब का जलवा अर्याँ है

दिलों में हैगी उसके इश्क की आग
 जिसे देखो उसे है उसका वैराग

सबसे ज्यादा ध्यान देने के लायक तो इस मसनवी की खबान है जो मीठी और दर्दिली होने के साथ आम तौर पर लोगों की समझ में आ सकती है. यूँ तो खानवी खबान में शेर कहने के लिये दर्द में रखती के नाम से एक अलग चीज ही है लेकिन इसमें जिन लोगों ने लिखा है वह इस इरादे में कामयाब न हो सके कि औरतों के जबवे हमारे अबदव में जगह पा जाए. चिकट कहानी

कित्त कहानी

नासबन्द
 और इसी के बयान पर नक्ते खत्म हो जिस के बाद किस्सा शेरों में शायर ने बताया है कि यह प्रेम कहानी खाहिर में तो दो आदमियों के जुदा होकर बचन होने और फिर मिल जाने का किस्सा है लेकिन अबसल में खुदा के इश्क से मतलब है—

ये आया दिल में कहिये एक कहानी
 बर्याँ हो जिस में सोचो दिल ननानी

जहाँ हर चंद है सादी जनानी
 व लेकिन दर्द दिल की है कहानी
 लगी जो बात दिल की मुनकसिम है
 सजन जो दर्द का पूछो तो कम है

अगर समझे कौन अजराह तहकीक
 खुदा के इश्क की हैगी यह तहकीक
 पिया कौन और सजन देखूँ कहाँ है
 उसी महबूब का जलवा अर्याँ है

दिलों में हैगी उसके इश्क की आग
 जिसे देखो उसे है उसका वैराग

सब से ज्यादा देखियान दिने के लायक तो इस शेरों की खबान जो मीठी और दर्दिली होने के साथ आम तौर पर लोगों की समझ में आ सकती है. यूँ तो खानवी खबान में शेर कहने के लिये दर्द में रखती के नाम से एक अलग चीज ही है लेकिन इसमें जिन लोगों ने लिखा है वह इस इरादे में कामयाब न हो सके कि औरतों के जबवे हमारे अबदव में जगह पा जाए. चिकट कहानी

घराने के थे. इसीलिये उन्होंने बिकट कहानियों के खालों पर सूक्रियाना रंग दे दिया है.

लेकिन चूँकि भाषा की शायरी में कुरल जी का कॅरेक्टर बहुत आता है. इसलिये ताजुब की बात नहीं अगर 'अकाल' ने बिकट कहानी में 'साँवर' और 'गोपाल' से कुरल जी का ही बिकट किया हो. मगर हसन ने गलती से 'गोपाल' को कोई आदमी समझ लिया.

बिकट कहानी कोई खास कहानी नहीं लेकिन इसकी जवान ऐसी जरूर है जिसमें भाषा के शब्द बहुत ज्यादा हैं लेकिन करीब करीब यह सारे लफ्ज ऐसे हैं जो हमारी रोच को बोल चाल में दाखिल हैं और हम उन्हें आसानी से समझ सकते हैं.

नाहन्द
गहराने के थे. इस लिये अन्धों ने बिकट कहानी के खाँके पर

सुनियाने रङ्ग दे दिया है.
लेकिन प्रत्येक बहाशा की शायरी में कुरल जी का किरकिरी बहुत आता है. इस लिये बिकट की बात नहीं अगर 'अकाल' ने बिकट कहानी में

साँवर के अह गहराने से कुरल जी का ही बिकट किया है.
बिकट कहानी कौन खास कहानी नहीं लेकिन इस की जवान ऐसी जरूर है जिस में बहाशा के शब्द बहुत ज्यादा हैं लेकिन करीब करीब ये सारे लफ्ज ऐसे हैं जो हमारी रोच की बोल चाल में दाखिल हैं और हम अन्धों को आसानी से समझ सकते हैं.

'हिन्दू मुस्लिम एकता'

पंडित सुन्दर लाल के

चार लेखन जो उन्होंने

सेन्ट्रल कन्सोलिडेटरी बोर्ड ग्वालियर

की दावत पर ग्वालियर में दिये.

सौ सके को कितान की कामत सिकं धारह आने

मेनेजर "नया हिन्द"

३३ बाई का बाग, इलाहाबाद

हिन्दू मुस्लिम एकता

पंडित सुन्दर लाल के

चार लेखन जो अन्धों ने सेन्ट्रल कन्सोलिडेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर

मेनेजर "नया हिन्द"

मेनेजर "नया हिन्द"

मेनेजर "नया हिन्द"

ایکسا اور بھی زیادہ خطرے میں!

एकता और भी ज़्यादा ख़तरे में!

(भाई आँकार नाथ जी शास्त्री)

माली और राजकाजी निगाह से इंडिया और पाकिस्तान ने क्या पाया इस पर यहां बहस करते की मेरी मंशा नहीं है. मुझे सिर्फ कलचर के पहलू पर गौर करना है. नया हिन्द के पिछले नम्बर में एक मजमून में मैंने लिखा था—'भारत के हिन्दू, मुसलमानों का सदियों से बोली. लेन देन, रहन सहन, कला, दर्शन, इल्म हुनर, गाना बजाना, मजाक, मेले तमाशे, खेल कूद सबमें मेल मिलाप चला आता है.' ऐसा मालूम होता है कि सदियों से बढ़ता हुआ यह मेल मिलाप कुछ दिनों के लिये खतरे में पड़ गया है.

जिन समय यह मजमून लिखा जा रहा है कलकत्ते से कुछ खबरें आई हैं उनसे मालूम होता है कि महात्मा गांधी की कोशिशों का नतीजा वहां अच्छा हो रहा है. कलकत्ते के लीगो असर के मुसलमानों को इधर बरसों के बाद शायद पहली बार यह मालूम हो रहा है कि दर असल 'अल्लाहो अकबर' का नारा सिर्फ काफ़िरो को चिढ़ाने के लिये नहीं है. हिन्दू भी यह समझते मालूम होते हैं कि एक ही जगह पर गीता और कुरान के श्लोक और आयतें प्रार्थना के रूप में पढ़ी जा सकती हैं. इस तरह की सुलह की फ़िजा में कौन कौन बातें काम कर रही हैं यहां उन पर बहस छेड़ने का मेरा इरादा नहीं. पर वह बात साक है कि कलकत्ते के इस तरह के समाचार काले चारलों में दिलाई देने

दुबानी अंकार नाथ जी शास्त्री

مالی اور راج کا جی نگاہ سے انڈیا اور پاکستان نے کیا پایا اس پر یہاں بحث کرنے کی میری منشا نہیں ہو. مجھے صرف کلمچر کے پہلے مضمون کرنا ہے. نیا ہند کے پچھلے نمبر میں ایک مضمون میں یہ سب لکھا تھا۔ بھارت کے ہندو و مسلمانوں کا صدیوں سے بولی لین لین بہن سن، کلا، دوشن، علم ہنر، گانا بجانا، مذاق، میل تماشے، کھیل کود سب میں میل ملاپ چلا آتا ہے۔ ایسا معلوم ہوتا ہے کہ صدیوں سے بڑھتا ہوا یہ میل ملاپ کچھ دنوں کے لئے خطرے میں پڑ گیا ہے۔ جس سے یہ مضمون لکھا جا رہا ہے کلمتے سے سمجھ نہیں سکتی کہ ان سے معلوم ہوتا ہے کہ ہمارا کام ہی کیوں نہیں ہے۔ کلمتے کے سبب ان کے کا نتیجہ وہاں اچھا ہوا ہے۔ کلمتے کے سبب ان کے سلسلوں کو اور بددعوں کے بعد شاید پہلی بار یہ معلوم ہوا ہے کہ دواصل، اللہ اکبر، کا نعرہ صرف کاندوں کو چڑھانے کیلئے نہیں ہے۔ ہندو بھی یہ سمجھنے شروع ہوتے ہیں کہ ایک ہی جگہ پر گیتا اور قرآن کے شلوک اور آیتیں پراکتھنا کے روپ میں پڑھی جاسکتی ہیں۔ اس طرح کی صلح کی فضا میں کون کون باتیں کام کر رہی ہیں یہاں ان پر بحث چھیڑنے کا میرا ارادہ نہیں۔ پر یہ بات صاف ہے کہ کلمتے کے اس طرح کے سماچار کالے بادلوں میں دکھائی دینے

नया हिन्दू एकता और भी ज्यादा खतरे में ! अक्टूबर सन् '४७
 वाली रुपहली लकीर की तरह है. अभी पंजाब की हालत में
 कोई खास सुधार नहीं हुआ है अभी भी खबरें आ रही हैं कि सरहदी
 इलाकों के दंगों को लीजी सखितियों से दबाया जा रहा है. यह
 बात साफ है कि जब तक इस तरह की हालत कायम रहती है
 तहसीब और तमदुन का मेल मिलाप उससे कहीं ज्यादा खतरा में
 है जितना आज से कुछ दिनों पहिले था.

इस हालत में हिन्दू सभा और हिन्दू सभाई कांग्रेसियों को
 खूब बन आई है. अब तक जब ब्रिटिश सरकार से लड़ने की
 बात उठाई जाती थी हिन्दू सभा कभी मैदल में नहीं आई. असल
 में शुरू से हिन्दू महासभा को तारीख कम या ज्यादा बुझदिलों की
 तारीख रही है. आजादी की लड़ाई में इसने मुसलिम लोग की
 तरह ही बहुत करके ब्रिटिश राज का साथ दिया है. मुल्क में
 जब जब आईनी या कागजी हल चलने ज़ोर पकड़ा है तब तब
 हिन्दू सभा की चौखलाहट ने भी ज़ोर दिखाया है. इस सभा
 का यही खास काम रहा है कि कॉंसिलों और बोर्डों में पहुँचा जावे
 और लम्बी लम्बी तक्रारों की जावे. फिर मुसलिम लोग क्यों पीछे
 रहती, जिसका जन्म ही इस बात के लिये कराया गया था कि
 आजादी की लड़ाई में रोड़े अटकें. लेकिन अब तक कांग्रेस के
 सामने हिन्दू सभा दबी सी थी, लोग ज्यादा खुली थी. आज
 हिन्दू सभा खूब खुलना चाहती है. यह बात और है कि मुल्क के
 बड़े बड़े सरमायादार आज भी हिन्दू सभा की इतनी धाक मानने
 के लिये तैयार नहीं हैं. क्यों, क्यों कि कांग्रेस खुद हिन्दुओं
 से खाली नहीं है. और अगर कांग्रेस को पाकिस्तान की मांग

न्यायसुन्द
 अिता और कभी ज्यादा خطر में ! अक्टूबर सन् '४७
 वाला रुपहली लकीर की तरह है. अभी पंजाब की हालत में कौनो खास
 सुधार नहीं हुआ है. अभी भी खबरें आ रही हैं कि सरहदी इलाकों के
 दंगों को लीजी सखितियों से दबाया जा रहा है. यह बात साफ है कि जब तक
 इस तरह की हालत कायम रहती है तहसीब और तमदुन का मेल मिलाप उससे
 कहीं ज्यादा खतरा में है जितना आज से कुछ दिनों पहिले था.

इस हालत में हिन्दू सभा और हिन्दू सभाई कांग्रेसियों की खूब
 बन आई है. अब तक जब ब्रिटिश सरकार से लड़ने की बात उठाने
 जाती कभी हिन्दू सभा कभी मैदान में नहीं आती. असल में शुरू से
 हिन्दू महासभा की तारीख कम या ज्यादा बुझदिलों की तारीख
 रही है. आजादी की लड़ाई में इसने मुसलिम लोग की तरह ही बहुत
 करके ब्रिटिश राज का साथ दिया है. मुल्क में जब जब आईनी या कागजी
 हल चलने ज़ोर पकड़ा है तब तब तब हिन्दू सभा की चौखलाहट ने भी
 ज़ोर दिखाया है. इस सभा का यही खास काम रहा है कि कॉंसिलों
 और बोर्डों में पहुँचा जावे और लम्बी लम्बी तक्रारों की जावे. फिर
 मुसलिम लोग क्यों पीछे रहती, जिसका जन्म ही इस बात के लिये
 कराया गया है कि आजादी की लड़ाई में रोड़े अटकें. लेकिन अब तक
 कांग्रेस के सामने हिन्दू सभा दबी सी कभी, लीक ज्यादा कष्टी कभी.
 आज हिन्दू सभा खूब खुलना चाहती है. यह बात साफ है कि मुल्क के
 बड़े बड़े सरमायादार आज भी हिन्दू सभा की इतनी धाक मानने
 के लिये तैयार नहीं हैं. क्यों, क्यों कि कांग्रेस खुद हिन्दुओं
 से खाली नहीं है. और अगर कांग्रेस को पाकिस्तान की मांग

नया हिन्द एकता और भी ज्यादा खतरे में! अक्टूबर सन् '४७ के सामने झुकना पड़ा है, तो इस लिये नहीं कि कांग्रेस हिन्दुओं के नके मुक़्तान का ध्यान नहीं रखती थी, बल्कि इसलिये कि वह जिस ढंग की आजादी को लड़ाई लड़ती रही है, उसका नतीजा इससे अच्छा नहीं हो सकता था. हाँ, तो कांग्रेसी हिन्दू पहिले बनिया है फिर हिन्दू, बनिया होने के नाते उसे सारे हिन्दुस्तान का वाजार चाहिये था. उसने देखा कि यह मुमकिन नहीं, जो मिला उसपर समझौता किया. अब भो बहं अपनी इस राख को भूला नहीं है. लेकिन इसके पूरे होने को उसे उम्मीद नहीं मालूम होती. फिर हिन्दूपन को क्यों और दबाया जाय. इसके लिये कुछ न कुछ मौका आ ही गया है, नहीं तो महत्त्व नाम की आजादी के जलसों के मिलसिले में कांग्रेस का हिन्दूपन क्यों जग उठता? अगर पाकिस्तान में इसलाम के रीति रिवाज के मुताबिक़ खुशियां मनाई गईं हों तो हिन्दुस्तान में क्यों न हिन्दू रीति रिवाज चरते जाय. १५ अगस्त के समाचार किससे छिपे हैं? हवन, यज्ञ, देव पूजा, वेद पाठ, राम कृष्ण, गंगा जमुना सरस्वती, पूरा बन्दे-मातरम, सभी याद आगए. मैं यह नहीं कहता कि हिन्दू जनता का अपनी खुशी हिन्दू रस्म रिवाज के मुताबिक़ मनाना गलत था. कहता महत्त्व यह है कि क्या बजह है कि कुल हिन्दू नेशनल कांग्रेस के सरकारी और दफ्तरी जलसे हिन्दूपन के रंग में हुए? क्या इस लिये कि पाकिस्तान का जवाब देना था? क्या इसलिये कि कांग्रेस का अब तक का राष्ट्रीयता का प्रचार सिकं ढोंग था और असल में मिस्टर जिन्ना का साम्प्रदायिक 'राष्ट्रवाद' यानी महात्माजी कीमियत का नारा सही था! क्या अब सचे मानों में

या असल में मिस्टर जिन्ना का नारा सही था! क्या अब सचे मानों में
 के साथे मुक़्तान पड़ा है, तो उस लिये नहीं कि कांग्रेस हिन्दुओं के
 नफ़े लफ़्तान का ध्यान नहीं रखती कहीं बल्कि इस लिये कि वे ही मुक़्तान
 की आजादी की रीति रीति में ही लड़ें, उस का निज्ज इस से अच्छा नहीं
 हो सकता कथा. लान तो कांग्रेसी हिन्दू बिले बनिया हो फिर हिन्दू. बिया होने
 के नाते सारे हिन्दुस्तान का बाजार चाहिये कथा. उस ने देखा कि ये मुक़्तान
 नहीं, जो लारास पर कथिना किया. अब कभी वे अपनी इस घरस को कथिला नहीं
 हो. लकिन उस के पिला होने की उसे अमिद नहीं मलूम होती. - फ़िर
 हिन्दुिन को कथिला, ओर दिया जाने. इस के लिये कथिने ने मुक़्तान
 अभी किया हो, नहीं तो मुक़्तान नाम की आजादी के जलसों के लिये
 इस लिये कांग्रेस का हिन्दुिन कथिला जल मलुत्ता? अगर पाकिस्तान में इसलाम
 के रीति रिवाज के मुताबिक़ खुशियां मनाई गईं हों तो हिन्दुस्तान में
 क्यों न हिन्दू रीति रिवाज चरते जाय. १५ अगस्त के समाचार
 किस से छिपे हैं? हवन, यज्ञ, देव पूजा, वेद पाठ, राम कृष्ण,
 गंगा जमुना सरस्वती पूरा बन्दे मातरम सभी याद आगए. मैं यह नहीं
 कहता कि हिन्दू जनता का अपनी खुशी हिन्दूपन के रंग में हुए? क्या
 इस लिये कि पाकिस्तान का जवाब देना कथा? क्या इसलिये कि
 कांग्रेस का अब तक का राष्ट्रीयता का प्रचार सिकं ढोंग कथा
 ओर असल में मिस्टर जिन्ना का साम्प्रदायिक 'राष्ट्रवाद' यानी
 महात्माजी कीमियत का नारा सही था! क्या अब सचे मानों में

या असल में मिस्टर जिन्ना का नारा सही था! क्या अब सचे मानों में

नया हिन्द एकता और भी ज्यादा खतरों में ! अक्टूबर सन् '४९

'इन्डिया' 'हिन्दु' स्थान हो गया ?

मेरा खयाल है कि इस तरह की बीखलाहट अच्छी नहीं है. आज पल भर के लिये यह बातें कितनी भी भली मालूम होती हों पर राज की तरफ से किसी खास धर्म को बढ़ावा मिलना खतरों से खाली नहीं है. ब्रिटिश साम्राज्यशाही इन बातों को खूब 'वाच' कर रही है. पाकिस्तान को और हिन्दुस्तान को आज वह जान चूक कर ढील दे रही है कि दोनों सरकारों के बीच की खाई इतनी बढ़ जाय कि फिर दोनों का मिलना नामुमकिन हो. तभी वह दोनों को लड़ाती हुई अपने साम्राज्यी पंजे को मजबूती से कसे रख सकती है. वह अच्छी तरह समझती है कि अब दंगों को छोटे मोटे कारणों से टिकाऊ नहीं बनाया जा सकता. अब उनकी बुनियादें और भी गहराई में जानी चाहियें. जब तहजीब और तमद्दुन की, धर्म और मजहब की, कला और साहित्य की लड़ाइतना खोर पकड़ जायेगी कि दो 'अलग अलग' राज एलानिया अपनी अपनी तरफदारी बरतने लगेंगे तो फिर दोनों का आपसी भगड़ा हमेशा के लिये कायम होकर रहेगा और ब्रिटिश क्रीम की माली लूट भी जारी रहेगी.

कलचर, तहजीब और तमद्दुन की एकता का मतलब क्या है ? क्या सचमुच यह इतना डरावना सवाल है कि इससे किसी पढ़े लिखे आदमी को चाहे वह किसी मजहब का हो डरना चाहिये ? हर्गिज नहीं. इस साइन्स के जमाने में संसार के कोने कोने के आदमियों को आपस में नाता जोड़ने का जो बेजोड़ मौका मिला है, वह उन्हें बरबस एकता की खंजीर में बांध रहा है. हर एक दूसरे की भाषा, भेषभूषा, रहन

अिकता और कभी-कभी अधिकतर !

अिकता और कभी-कभी अधिकतर !

अिकता और कभी-कभी अधिकतर !

अिकता और कभी-कभी अधिकतर !

नया हिन्द एकता और भी ज्यादा खतरे में ! अक्टूबर सन् '४७

सहन, खान पान, हुनर और रीति रिवाज बरबस सीख रहा है. इस विकास को जबरदस्ती रोकना जहालत है. खिन्दगी बसर करने के जो ढंग और जो असूल देस विदेस के आदमियों ने बनाए हैं वह ज़रूरत और जमाने के सुताधिक हैं. ज्ञान और तालीम के बढ़ने के साथ इन बातों में तरक्की होना जरूरी है. एक दूसरे से मिलकर भी इतलानी क्रीम अगर अपनी तंग निगाह को बनाए रखती है और कलचर और तहजीब, कला और साहित्य की तरक्की को रोकने की कोशिश करती है, तो यह उसकी भूल है. यह कहना कि दो या ज्यादा तहजीबों का मिलाना बुरा है भूल है. कुछ लोग इसे खिचड़ी कहकर इसका मचाक उड़ाते हैं पर खिचड़ी हमेशा बुरी नहीं होती—असल में खिचड़ी का भी एक अपना स्वाद होता है जो दाल चावल में अलग अलग नहीं होता. और हर अच्छे से अच्छा खाना खिचड़ी ही तो होता है. पर मैं खिचड़ी पकाने की बात भी नहीं करता, मैं तो ऐसे मेल मिलाप की बात करता हूँ. जिसमें बनावट नाम के लिये भी न हो. कला और तमदुन को मैं सिर्फ इतना चाहता हूँ कि आजाद छोड़ दिया जाय. जनता को अपना काम चलाने की आजादी हो. उसे ज्यादा से ज्यादा लोगों के, ज्यादा से ज्यादा तहजीबों के साथ मेल जोल का मौता मिले. इधर साइन्स का प्रचार बढ़ता रहेगा. साइन्स में इतनी शक्ति है कि वह एक नई सभ्यता, नई तहजीब और नई कलचर का विकास करके रहेगी, जिसमें सभी पुरानी अच्छी बातों का मेल होगा, और साथ ही यह व्यापक यानी आलम गीर कलचर सबको खुश रख सकेगी. जिन बातों में पूरी एकता नहीं हो सकती, जिनमें अनेकता में

किताब और कभी ज्यादा खड़े में ! अक्टूबर सन् '४७

सन् 'कहाँ पान' भर और रीति रिवाज सब सीख रहा है. इस विकास को जबरदस्ती रोकना जहालत है. खिन्दगी बसर करने के जो ढंग और जो असूल देस विदेस के आदमियों ने बनाए हैं वह ज़रूरत और तालीम के बढ़ने के साथ इन बातों में तरक्की होना जरूरी है. एक दूसरे से मिलकर भी इतलानी क्रीम अगर अपनी तंग निगाह को रोकने की कोशिश करती है, तो यह उसकी भूल है. यह कहना कि दो या ज्यादा तहजीबों का मिलाना बुरा है भूल है. कुछ लोग इसे खिचड़ी कहकर इसका मचाक उड़ाते हैं पर खिचड़ी हमेशा बुरी नहीं होती—असल में खिचड़ी का भी एक अपना स्वाद होता है जो दाल चावल में अलग अलग नहीं होता. और हर अच्छे से अच्छा खाना खिचड़ी ही तो होता है. पर मैं खिचड़ी पकाने की बात भी नहीं करता. मैं तो ऐसे मेल मिलाप की बात करता हूँ. जिसमें बनावट नाम के लिये भी न हो. कला और तमदुन को मैं सिर्फ इतना चाहता हूँ कि आजाद छोड़ दिया जाय. जनता को अपना काम चलाने की आजादी हो. उसे ज्यादा से ज्यादा लोगों के, ज्यादा से ज्यादा तहजीबों के साथ मेल जोल का मौता मिले. इधर साइन्स का प्रचार बढ़ता रहेगा. साइन्स में इतनी शक्ति है कि वह एक नई सभ्यता, नई तहजीब और नई कलचर का विकास करके रहेगी, जिसमें सभी पुरानी अच्छी बातों का मेल होगा, और साथ ही यह व्यापक यानी आलम गीर कलचर सबको खुश रख सकेगी. जिन बातों में पूरी एकता नहीं हो सकती, जिनमें अनेकता में

नया हिन्दू एकता और भी ज्यादा खतरा है! अक्टूबर सन '७३

एकता (Unity in Diversity) यानी रवादायी की जरूरत है वहाँ किसी को भी मिसाल के लिये अलग अलग कलाओं और भाषाओं पर बराबर अधिकार रखने में गुंजा नहीं होगा, गव होगा, दूसरों को जानने समझने का फल होगा. मेरा खयाल है कि वह जमाना आके रहेगा जिसमें आम जनता भी दस पाँच बच्चों की जानकारी रख सके, जहाँ तक भूठी मानताओं की बात है, साइन्स उन्हें बेमुरीखती से छोटती जायेगी. इससे किसी को नाराज नहीं होना चाहिये. समझदार आदमी इस मंजिल को तरफ चढ़ेंगे और मौजूदा खतरों में वह जाने से अपने को बचायेंगे.

न्यास
 अक्टूबर साल
 अलत और भी زیادہ خطر ہے!
 ایکتا (Unity in Diversity) یعنی رواداری کی ضرورت ہے
 وہاں کسی کو بھی مثال کے لئے الگ الگ کلاؤں اور بھاشاؤں
 پر برابر ادھکار رکھنے میں گریز نہیں ہوگا، گورہ اور دوسروں کو جلنے
 سمجھنے کا خطر ہوگا. میرا خیال ہے کہ وہ زمانہ آئے کہ ہرے گھنے کا جس میں
 عام جنٹا بھی دس پانچ زبانوں کی جانکاری رکھے. جہاں تک
 جھوٹی مانٹاؤں کی بات ہے، سائنس انھیں بے مروتی سے
 چھٹانے کی جائے گی. اس سے کسی کو ناراض نہیں ہونا چاہیے.
 سمجھدار آدمی اس منزل کی طرف بڑھیں گے اور موجودہ خطرات
 میں بہ جائے سے اپنے کو بچائیں گے.



التاريخ

دبھائی دھوکا رکھیر، بڑھا یا لارا، رام پور، سی۔ پی۔ ۱۰

سارے پنجاب میں نہیں تو کم سے کم اس ضلع میں وہ گاؤں کافی مشہور تھا۔ گاؤں کا نام توانا تھا۔ ۲۰ ہزار گائے بھگ ایک ہزار بھگتی۔ گاؤں میں ایک گرو دوالا تھا۔ اس سے کچھ ہٹ کر ایک چھوٹی سی مسجد تھی۔ گرو دوالا قلم اچھا تھا اور ضلع بھر میں مشہور تھا گرو دوالا سے کی تھا پنا خند گوہ گوند سنگھ نے کی تھی۔ گاؤں میں ہندو زیادہ تھے۔ بھر بھی ہندو اور مسلمان دونوں بڑے پر یکم سے رہتے تھے۔ گرمی کی راتوں میں جب بھارتی بابا میدان میں دھرم گرنہتوں کی گئی کہا نیاں سناتے تھے تب کئی مسلمان بھی انھیں مننے پہنچ جاتے تھے۔ بابا بھارتی پوسٹ ضلع میں گرنہتہ صاحب پڑھنے کے لئے مشہور تھے۔ ان کی باتوں کو سادھان سے سادھان آدی بھی سمجھ جاتا تھا۔ وہ بڑی سیدی سادی بھاشا میں سمجھاتے تھے۔ گاؤں بھر میں ان کا اور رمضان کا بہت مان تھا۔ دونوں اسی گاؤں میں پیدا ہوئے تھے۔ وہیں بڑھے ہوئے تھے۔ بھارتی بابا کو سب 'بابا' کہتے تھے اور رمضان کو سب 'بچا' کہا کرتے تھے۔ دونوں ایک ساتھ کھیلے تھے۔ عمر آنے پر رمضان مننے شادی کی۔ گھر بسایا اور پیر صہل سے چلے آئے اپنے کھیتی کے دھندے کو اپنا لیا۔ بھارتی نے مال باب کے مرنے پر پوری حاداد گرو دوالا کے نام کر دیں اپنا آسن بجایا۔ بھارتی نے اپنے صہم کی زیادہ سے زیادہ پستکیں پڑھی تھیں۔ گرنہتہ صاحب نے اپنی

इनसानियत

(भाई मधुकर खेर, बृहापारा, रामपुर, सी० पी०)

सारे पंजाब में नहीं तो कम से कम उत जिले में वह गांव का की मशहूर था. गांव का नाम तिवाना था. आवादी लगभग एक हजार थी. गांव में एक गुरुद्वारा था. उससे कुछ दूर एक छोटी सी सतिद थी. गुरुद्वारा जाला अचछा था और जिले भर में मशहूर था. गुरुद्वारे की थापना खुद गुरु गोविन्दसिंह ने ही थी. गांव में हिन्दू ज्यादा थे. फिर भी हिन्दू और मुसलमान दोनों बड़े प्रेम से रहते थे. गर्मी की रातों में जब भारती चाचा मेदल में घमे प्रन्यों की कहानियाँ सुनाते थे तब कई मुसलमान भी उन्हें सुनने पहुँच जाते थे. चाचा भारती पूरे जिले में ग्रन्थ साहेब पढ़ने के लिये मशहूर थे. उनकी बातों को साधारन से साधारन आदमी भी समक जाता था. वह बड़ी सीधो सादो भाषा में समझाते थे. गाँव भर में उनका और रमजान का दोनों का बहुत मान था. दोनों उसी गाँव में पैदा हुए थे. वहाँ पले थे. वहाँ बड़े हुए थे. भारती चाचा को सब चाचा कहते थे और रमजान को सब 'चाचा' कहा करते थे. दोनों एक साथ खेले थे. उमर आने पर रमजान ने शादी की. घर बसाया और पीढ़ियों से चलते आए अपने खेतों के धने को अपना लिया. भारती ने माँ चाप के मरने पर पूरी जायदाद गुरुद्वार के नाम कर वही अपना आसन जमाया. भारती ने अपने धम को ज्यादा से ज्यादा पुरकें पड़ी थी. ग्रन्थ साहेब उसे खचानो

याद था. वह थोड़े ही दिनों में 'भारती बाबा' कहलाने लगे. दोनों का बचपन का प्रेम बन्ता रहा. उस के साथ और बढ़ता गया. एक बार भारती बाबा को अमृतसर के गुरुद्वारे में प्रन्थ साहेब पढ़ने के लिये बुलाया गया. अमृतसर के एक बहुत बड़े आदर्सी वहाँ आए थे. वह भारती बाबा के भक्त हो गए थे. रमजान ने आँवों में आँसू भरकर पूछा—“क्यों भारती भैया क्या तुम अब गाँव छोड़कर चल दोगे ? यह तो बताने जाओ कि किसके भरोसे मुझे छोड़ते जा रहे हो.” भारती बाबा का यह सुन गला भर आया उन्होंने प्रेम से कहा “कैसी बातें करते हो रमजान ! अरे भाई मेरे लिये तो दुनिया में सब जगह भगवान है. मुझे तो उसी की सेवा में चिन्दगी काटनी है. मर लिये तिवाना और अमृतसर में कुछ फर्क नहीं है. मैं इस गाँव को कैसे छोड़ सकता हूँ ? हम तुम एक साथ खेले हैं. अब तो अपने मरने का वक्त आ रहा है. आखिरी वक्त हम थोड़े ही अलग होंगे”. प्रेम और अहसान से रमजान का सिर मुक गया.

दिन बीतते जाते थे. भारती बाबा का नाम दिनों दिन चमकता जाता था. उनका अपना कोई घर न था. सारे संसार को ही वह अपना कुनवा मानते थे. सरकारी अफसर तक उनका और रमजान का दोनों का बड़ा मान करते थे. नहर और जमीन के मामलों में उन दोनों की सलाह ली जाती थी. उनकी सचाई की वजह से गाँव के लोग जब उन्हें अपने मुकदमों में गवाही देने को कहते तो वह यह कह कर इनकार कर देते—“भाई ! हमें इन अदालतों पर भरोसा नहीं है. गाँव की पंचायत को तुम अपनी बातें बताओ

याद कथा. वे कठोर से ही दिलों में 'भारती बाबा' कलाने लगे. दुदल का बचपन का प्रेम बन्ता रहा. एक के साथ और बढ़ता गया. एक बार भारती बाबा को अमृतसर के गुरुद्वारे में प्रन्थ साहेब पढ़ने के लिये बुलाया गया. अमृतसर के एक बहुत बड़े आदर्सी वहाँ आए थे. वह भारती बाबा के भक्त हो गये. रमजान ने आँवों में आँसू भरकर पूछा—“क्यों भारती बھैया क्या तुम अब काल जेकरा रमजान के भरोसे मुझे छोड़कर चल दोगे ? यह तो बताने जाओ कि किसके भरोसे मुझे छोड़ते जा रहे हो.” भारती बाबा का यह सुन गला भर आया उन्होंने प्रेम से कहा “कैसी बातें करते हो रमजान ! अरे भाई मेरे लिये तो दुनिया में सब जगह भगवान है. मुझे तो उसी की सेवा में चिन्दगी काटनी है. मर लिये तिवाना और अमृतसर में कुछ फर्क नहीं है. मैं इस गाँव को कैसे छोड़ सकता हूँ ? हम तुम एक साथ खेले हैं. अब तो अपने मरने का वक्त आ रहा है. आखिरी वक्त हम थोड़े ही अलग होंगे.” प्रेम और अहसान से रमजान का सिर मुक गया.

दिल चिन्ते जाते गये. भारती बाबा का नाम दुदल को चकित बनाता था. उन का अपना कोई घर न था. सारे संसार को ही वह अपना कुनवा मानते थे. सरकारी अफसर तक उन का और रमजान का दोनों का बड़ा मान करते गये. नहर और जमीन के मामलों में उन दोनों की सलाह ली जाती थी. उनकी सचाई की वजह से गाँव के लोग जब उन्हें अपने मुकदमों में गवाही देने को कहते तो वह यह कह कर इनकार कर देते—“भाई ! हमें इन अदालतों पर भरोसा नहीं है. गाँव की पंचायत को तुम अपनी बातें बताओ

और इन्हीं का फैसला मानो. पंच परमेश्वर ही सबसे बड़ी अदालत है. उससे बड़ी अदालत इस दुनिया में नहीं है. भारतीय बाबा और रमजान खुद गाँव की पंचायत में नहीं थे पर पंच भी उनका बहुत मान करते थे. इस तरह के बरेलू मामलों में जिनमें पंचों की पहुँच नहीं थी. लोग भारतीय बाबा और रमजान के पास जाते थे. गाँव में सित्त लड़का खड्गसिंह और मुसलमान नौजवान वरकत अली बड़े जोशिले थे. दोनों में गरम खून था. मुल्क की चिंगडती हुई किरकेवाराना हवा का इन दोनों पर असर था. दोनों हंकड़ी में एक दूसरे से बढ़कर थे. खड्गसिंह कहा करता—'जब तक खड्गसिंह के पास खड्ग है तब तक उसे कोई नहीं दबा सकता.' वह सदा किसी न किसी से डलभते रहता था. इनसे गाँव के भाई चारे को हमेशा खतरा रहता था. खड्गसिंह कई बार भारतीय बाबा से भी बहस करता था पर उसे हमेशा भौंपना पड़ता था. रमजान तो बरकत अली से साक कह देता—'तैर दिल में मैल भरा है, तू इस्लाम को समझने के काबिल ही नहीं.'

एक दिन गुरुद्वार में भारतीय बाबा रोज की तरह अपना पाठ कर रहे थे. कई लोगों के साथ खड्गसिंह भी वहाँ बैठा था. अपने पाठ में भारतीय बाबा ने कहना शुरू किया—'दुनिया: में न कोई धर्म छोटा है. न कोई धर्म बड़ा है. सब मजहब अच्छे और इज्जत के काबिल हैं. भगवान ने संसार बनाया और इसमें रहने के लिये आदमी बनाए. आदमी आदमी के आपसी मतभेद ने इतने धर्म बना दिये. जड़ में सब एक हैं. संसार का असली धर्म 'मानव धर्म' मजहब इनसानियत है. यह सार मानव समाज का

अहमकाम का फ़ैसला नो. तैर पदशुद्ध ही सब से ठीकी उदालत है. अस से बड़ी उदालत अस दुनिया में नहीं है. बहारती बाबा अहमकाम खड्गसिंह की चिंगडती में बहस करते थे. बाबा भी उनका बहुत मान करते थे. इस तरह के बरेलू मामलों में जिनमें पंचों की पहुँच नहीं थी. लोग भारतीय बाबा और रमजान के पास जाते थे. गाँव में सित्त लड़का खड्गसिंह और मुसलमान नौजवान वरकत अली बड़े जोशिले थे. दोनों में गरम खून था. मुल्क की चिंगडती हुई किरकेवाराना हवा का इन दोनों पर असर था. दोनों हंकड़ी में एक दूसरे से बढ़कर थे. खड्गसिंह कहा करता—'जब तक खड्गसिंह के पास खड्ग है तब तक उसे कोई नहीं दबा सकता.' वह सदा किसी न किसी से डलभते रहता था. इनसे गाँव के भाई चारे को हमेशा खतरा रहता था. खड्गसिंह कई बार भारतीय बाबा से भी बहस करता था पर उसे हमेशा भौंपना पड़ता था. रमजान तो बरकत अली से साक कह देता—'तैर दिल में मैल भरा है, तू इस्लाम को समझने के काबिल ही नहीं.'

एक दिन गुरुद्वार में भारतीय बाबा रोज की तरह अपना पाठ कर रहे थे. कई लोगों के साथ खड्गसिंह भी वहाँ बैठा था. अपने पाठ में भारतीय बाबा ने कहना शुरू किया—'दुनिया: में न कोई धर्म छोटा है. न कोई धर्म बड़ा है. सब मजहब अच्छे और इज्जत के काबिल हैं. भगवान ने संसार बनाया और इसमें रहने के लिये आदमी बनाए. आदमी आदमी के आपसी मतभेद ने इतने धर्म बना दिये. जड़ में सब एक हैं. संसार का असली धर्म 'मानव धर्म' मजहब इनसानियत है. यह सार मानव समाज का

धर्म है. सचाई, प्रेम और त्याग इसके अमूल हैं. यह तीनों हममें त्याग और कुरबानी को भावना पैदा करते हैं. सब धर्मों की गरज एक ही है—ईश्वर को पाना. सब धर्म उसी गरज को पूरा करने के अलग अलग साधन हैं. हमें दुनिया के किसी भी धर्म को हँसो नहीं करनी चाहिये. धर्म का नाम लेकर लड़ना निरी मूर्खता है. बाबा नानक हमारे सामने मिसाल हैं. उन्होंने बताया है कि दुनिया में एक ही ईश्वर है पर अलग अलग लोग उसे अलग अलग नामों से पुकारते हैं. कोई उसे 'राम' कहता है तो कोई 'रहाम' कोई केशो कहता है तो कोई करीम."

खन्न सिंह अब तक भारती बाबा के लिहाज से चुप था. अब वह अपने को न रोक सका. उसने खड़े होकर पूछा—“बाबा! आपने बाबा नानक को तो बातें बता दीं. हमें जरा गुरु गोविन्द सिंह का भी तो हाल बताइये. उनको भावना कैसी रही होगी. मजहब के नाम पर उनके दो लड़कों को चुनवा दिया गया था और खुद उन्हें भी तंग किया गया था."

भारती बाबा ने शान्ति के साथ कहा—“खन्न सिंह ने जो पूछा ठीक पूछा है. मैं जब गुरु गोविन्द सिंह के बारे में सोचता हूँ तो मेरा दिल प्रेम और आनंद से भर जाता है. उस शेर दिल महापुरुष पर सिलों को ही नहीं सारे भारतवर्ष को कल होना चाहिये. उन्होंने धार्मिक आजादी के लिये युद्ध छेड़ा था. यह अधिकार आदमी का जन्म-सिद्ध अधिकार है. मनुष्य के अधिकारों के लिये लड़ना मनुष्यता के लिये लड़ना है. गुरु गोविन्द सिंह ने खुद कभी किसी की मजहबो आजादी पर हमला नहीं किया. उन्होंने

दमरु-५०. सजाय, प्रियम और तिाग इस के अमूल हैं. ये तीनों हमें तियाग और قربानी के ब्यादा पिया करते हैं. सब दमरु की गरज एक ही है—शिव को पाना. सब दमरु इसी गरज को पूरा करने के लिये साधन हैं. हमें दुनिया के किसी दमरु की हँसनी नहीं करनी चाहिये. दमरु का नाम लें कि योना जेरी मरकता है. बाबा नानक हमारे सामने मिसाल हैं. उन्होंने बताया है कि दुनिया में एक ही ईश्वर है पर अलग अलग लोग उसे अलग अलग नामों से पुकारते हैं. कोई उसे 'राम' कहता है तो कोई 'रहाम' कोई केशो कहता है तो कोई करीम."

खन्न सिंह अब तक भारती बाबा के लिहाज से चुप था. अब वह अपने को न रोक सका. उसने खड़े होकर पूछा—“बाबा! आपने बाबा नानक को तो बातें बता दीं. हमें जरा गुरु गोविन्द सिंह का भी तो हाल बताइये. उनको भावना कैसी रही होगी. उनको भावना कैसी रही होगी. मजहब के नाम पर उनके दो लड़कों को चुनवा दिया गया और खुद उन्हें भी तंग किया गया था."

भारती बाबा ने शान्ति के साथ कहा—“खन्न सिंह ने जो पूछा ठीक पूछा है. मैं जब गुरु गोविन्द सिंह के बारे में सोचता हूँ तो मेरा दिल प्रियम और आनंद से भर जाता है. उस शेर दिल महापुरुष पर सिलों को ही नहीं सारे भारतवर्ष को कल होना चाहिये. उन्होंने धार्मिक आजादी के लिये युद्ध छेड़ा था. यह अधिकार आदमी का जन्म-सिद्ध अधिकार है. मनुष्य के अधिकारों के लिये लड़ना मनुष्यता के लिये लड़ना है. गुरु गोविन्द सिंह ने खुद कभी किसी की मजहबो आजादी पर हमला नहीं किया. उन्होंने

द्वीन धर्म हो सन्चे रूप में समस्ता था. अपने धर्म की रक्षा के लिये उन्होंने तलवार निकाली पर उस तलवार से किसी के धर्म पर चार नहीं किया. वह सब के साथ न्याय चाहते थे. उनको तलवार में शक्ति थी पर उन्होंने उस शक्ति का गलत इस्तेमाल कभी नहीं किया. अगर उन्होंने धर्म के नाम पर खुलम किया होता तो बड़े भारतो को बचपन में खेलेने के लिये रमजान न मिलता और खड्गसिंह को बरकत न मिलता. गुरु गाँबिन्द सिंह दूसरों का धर्म मिटा कर स्वर्ग पाने की आशा नहीं करते थे. जो कोई धर्म के नाम पर लड़ता है या दूसरे धर्म को मिटाने की कोशिश करता है उसे न तो स्वर्ग में जगह मिलती है न नरक ही में. स्वर्ग में तो उसके लिये स्थान ही नहीं होता पर नरक वाले भी कहते हैं कि ऐसे पाप की सजा यहाँ भी कहीं? उस आदमी की आत्मा तड़फ़ाती रहती है. आखिर में खुद भगवान ही उसका न्याय करेंगे." इस जवाब ने खड्गसिंह का मुँह बंद सा कर दिया. फिर भी सचकी आशा के खिलाफ उसने कहा— "बाबा! आप बहुत पुराने जमाने की बातें कर रहे हैं. अब समाना बदल गया है. अब हमारे देश में दो क्रीमें हैं हिन्दू और मुसलमान. दोनों में अब पहले का नाता नहीं है. आज कल जगह जगह यह आपस में लड़ते हैं. मुसलमान पाकिस्तान की वंजा मांग खड़ी कर एक तुलान उठा रहे हैं. यह हम हिन्दुओं को छुड़ते हैं और दंगा किसान करते हैं. धर्म के नाम पर यह लड़ते हैं. अब तक यह रहेंगे हमारी गुलामी नहीं मिटेगी. हम सिखों का भी कर्ज है कि अपनी तलवारें तय्यार रखें."

भारती बाबा ने ताराज होकर कहा— "देखो खड्गसिंह! यह

द्वीन धर्म को सिधे रूप में समझा क्हा. अिने धर्म की रक्षा के लिये अण्णों ने तलवार न्काली पर अस तलवार से अी के धर्म पर चार न्हीं किया. वे सब के साथ न्णियाे जाते क्हे. अण्ण की तलवार में क्ति क्ती पर अण्णों ने अस क्ति का गलत अ्तेमाल क्भी न्हीं किया. अ्ण अण्णों ने धर्म के नाम पर न्णुलम किया होता तो बूड़े भारतो को बचपन में खेलेने के लिये रमजान न मिलता अ्ण खड्गसिंह को बरकत न मिलता. गुरु गाँबिन्द सिंह दूसरों का धर्म मिटा कर स्वर्ग पाने की आशा नहीं करते क्हे. जो कोणी धर्म के नाम पर लूटा अ्णुया दूसरे धर्म को म्णाने की कोशिश करना अ्णुस से न तो सुवर्ग में जगह मिलती अ्ण न नरक ही में. सुवर्ग में तो अ्णके लिये स्थान ही नहीं क्ते हैं कि अिसे पाप की सजा यहाँ भी क्हीं? उस आदमी की आत्मा तड़फ़ाती रहती है. आखिर में खुद भगवान ही उसका न्याय करेंगे." इस जवाब ने खड्गसिंह का मुँह बंद सा कर दिया. फिर भी सचकी आशा के खिलाफ उसने कहा— "बाबा! आप बहुत पुराने जमाने की बातें कर रहे हैं. अब समाना बदल गया है. अब हमारे देश में दो क्रीमें हैं हिन्दू और मुसलमान. दोनों में अब पहले का नाता नहीं है. आज कल जगह जगह यह आपस में लड़ते हैं. मुसलमान पाकिस्तान की वंजा मांग खड़ी कर एक तुलान उठा रहे हैं. यह हम हिन्दुओं को छुड़ते हैं और दंगा किसान करते हैं. धर्म के नाम पर यह लड़ते हैं. अब तक यह रहेंगे हमारी गुलामी नहीं मिटेगी. हम सिखों का भी कर्ज है कि अपनी तलवारें तय्यार रखें."

भारती बाबा ने ताराज होकर कहा— "देखो खड्गसिंह! यह

भगवान का दरवार है यहाँ हम प्रेम और एकता का पाठ पढ़ते आते हैं, यहाँ न कोई छोटा है न कोई बड़ा, यहाँ दुनिया के सब लोग बराबर हैं, तुम इस तरह की बातें यहाँ मत किया करो, यहाँ का मैदान प्रेम का ही होना चाहिये, आपसी लड़ाई और फूट का बातों के लिये बाहर के मैदान में बहुत जगह है, मैं किसी आदम की भूलों के कारण किसी को मार या धर्म को बदनाम नहीं कर सकता, जो दंगे मिसाद करते हैं वह किसी धर्म के नहीं होते, कोई धर्म इनका पाठ नहीं पढ़ाता, दंगे मिसाद करने वाले मानव धर्म से दूर है, इस लिये किसी भी धर्म के नहीं हैं, खैर जो भी हो मैं गुल्दारा में तुम्हें इस तरह की बातें करने की इजाजत नहीं देता और उम्मीद करता है कि आगे कोई ऐसी बातें यहाँ न करेगा,

खन्नाबिह का मुँह लाल हो गया, वह चुपचाप बैठ गया, भारती बाबा पर गुस्सा दिखाना उसकी शक्ति से परे था,

भारती बाबा ने खन्नाबिह को चुप तो कर दिया पर खन्नाबिह की बातों को वह सोचते रहे पाकिस्तान का सवाल देश के सामने था चुका था, भारती बाबा कभी कभी 'बीर अर्जुन' पढ़ते या सुन लेते थे, जगह जगह दंगों की खबरों से उनके दिल को बड़ी ठेस लगती थी, एक दिन इस बारे में उन्होंने रमजान से बातें करने का फैसला किया, उन्होंने बातों ही बातों में पूछा—'क्यों रमजान ! अगर तुम्हें कहा जाय कि सब मुसलमान एक जगह रहे और हिन्दू दूसरी जगह रहें, तो तुम खुश होगे या दुखी ? मानलो तिवाना में मुसलमान ही रहें और हिन्दुओं को निकाल दें तो तुमको कैसा लगेगा ?' रमजान ने कहा—'मैं क्यों खुश होने चला ? मैं अपने इतने

नासित
बहकान का दरबार हो, यहाँ हम प्रेम और एकता का पाठ पढ़ते आते हैं, यहाँ न कोई छोटा है न कोई बड़ा, यहाँ दुनिया के सब लोग बराबर हैं, तुम इस तरह की बातें यहाँ मत किया करो, यहाँ का मैदान प्रेम का ही होना चाहिये, आपसी लड़ाई और फूट का बातों के लिये बाहर के मैदान में बहुत जगह है, मैं किसी आदम की भूलों के कारण किसी को मार या धर्म को बदनाम नहीं कर सकता, जो दंगे मिसाद करते हैं वह किसी आदम के नहीं होते, कोई धर्म इन का पाठ नहीं पढ़ाता, दंगे मिसाद करने

वाले मानव धर्म से दूर हैं, खैर जो भी हो मैं गुल्दारा में तुम्हें इस तरह की बातें करने की इजाजत नहीं देता और उम्मीद करता हूँ कि आगे कोई ऐसी बातें यहाँ न करेगा, खन्नाबिह को चुपचाप बैठ गया, भारती बाबा पर गुस्सा दिखाना उसकी शक्ति से परे था,

भारती बाबा ने खन्नाबिह को चुप तो कर दिया पर खन्नाबिह की बातों को वह सोचते रहे, पाकिस्तान का सवाल देश के सामने था चुका था, भारती बाबा कभी कभी 'बीर अर्जुन' पढ़ते या सुन लेते थे, जगह जगह दंगों की खबरों से उनके दिल को बड़ी ठेस लगती थी, एक दिन इस बारे में उन्होंने रमजान से बातें करने का फैसला किया, उन्होंने बातों ही बातों में पूछा—'क्यों रमजान ! अगर तुम्हें कहा जाय कि सब मुसलमान एक जगह रहे और हिन्दू दूसरी जगह रहें, तो तुम खुश होगे या दुखी ? मानलो तिवाना में मुसलमान ही रहें और हिन्दुओं को निकाल दें तो तुमको कैसा लगेगा ?' रमजान ने कहा—'मैं क्यों खुश होने चला ? मैं अपने इतने

दिनों के दोस्तों को हिन्दू होने को बजह से कैसे छोड़ सकता है ? यह तो मद्दह बेवकूफ होगो ! फिर तुम लोग भी यह गाँव कैसे छोड़ सकते हो ! यहाँ पले, यहाँ खेले और यहाँ इतने दिन काटे. भारती भैया ! भारती बाबा ने फिर पूछा— "क्यों रमजान ! तुम पाकिस्तान नहीं चाहते क्या ?" रमजान हँस पड़ा. उसने जल्दों हा गम्भीर होकर कहा— "मैं तो सारी दुनिया को पाक मानता हूँ. यह दुनिया खुदा ने ही तो बनाई है. अपना बतन तो पाक ही हो. फिर दूसरे पाकिस्तान की जरूरत कहाँ ? भारती भय्या ! तुमसे अलग होकर क्या मैं खुश हो सकूँगा और क्या मुझसे अलग होने पर तुम को खुशो हागो ?" रमजान कुछ देर के लिये ठहर गया. उसने फिर कहना शुरू किया— "मैं जब पढ़ता हूँ कि हिन्दुओं ने मस्जिद को लूटा और मुसलमानों ने मंदिर को रोड़ा तो रास्से से भर जाता हूँ. यों तो आपस को लड़ाई हो सबसे बुरी चीज है. पर मंदिर और मस्जिद तो सबको इज्जत के हैं. न जाने इनको तुकतान पड़चा कर लोगों को कोई खिदमत करते हैं और न हिन्दू मुसलमान ही इसलाम की कोई खिदमत करते हैं और न हिन्दू मस्जिद गिरा कर अपने मजहब को बढ़ा सकते हैं. यह काम कर्मोपन को निशानी है. सच कहता हूँ भारती भय्या मेरे रहते न तो कोई मुसलमान तुम्हारे गुरुद्वार को हाथ लगा सकेगा और न कोई हिन्दू मेरे जति जी मस्जिद की इंट हिला सकेगा." भारती बाबा को अपने मित्र से गप्पी हो आशा थी. दोनों फिर उधर का चर्चे करने लगे.

समय बदलने लगा. सारे मुल्क में हिन्दू मुस्लिम दंगे शुरू हो

दलों के दस्तियों को हिन्दू होने की वजह से कैसे छोड़ सकता हों ? यह तो मद्दह बेवकूफ होगो ! फिर तुम लोग भी यह गाँव कैसे छोड़ सकते हो ! यहाँ पले, यहाँ खेले और यहाँ इतने दिन काटे. भारती भैया ! भारती बाबा ने फिर पूछा— "क्यों रमजान ! तुम पाकिस्तान नहीं चाहते क्या ?" रमजान हँस पड़ा. उसने जल्दों हा गम्भीर होकर कहा— "मैं तो सारी दुनिया को पाक मानता हूँ. यह दुनिया खुदा ने ही तो बनाई है. अपना बतन तो पाक ही हो. फिर दूसरे पाकिस्तान की जरूरत कहाँ ? भारती भय्या ! तुमसे अलग होकर क्या मैं खुश हो सकूँगा और क्या मुझसे अलग होने पर तुम को खुशो हागो ?" रमजान कुछ देर के लिये ठहर गया. उसने फिर कहना शुरू किया— "मैं जब पढ़ता हूँ कि हिन्दुओं ने मस्जिद को लूटा और मुसलमानों ने मंदिर को रोड़ा तो रास्से से भर जाता हूँ. यों तो आपस को लड़ाई हो सबसे बुरी चीज है. पर मंदिर और मस्जिद तो सबको इज्जत के हैं. न जाने इनको तुकतान पड़चा कर लोगों को कोई खिदमत करते हैं और न हिन्दू मुसलमान ही इसलाम की कोई खिदमत करते हैं और न हिन्दू मस्जिद गिरा कर अपने मजहब को बढ़ा सकते हैं. यह काम कर्मोपन को निशानी है. सच कहता हूँ भारती भय्या मेरे रहते न तो कोई मुसलमान तुम्हारे गुरुद्वार को हाथ लगा सकेगा और न कोई हिन्दू मेरे जति जी मस्जिद की इंट हिला सकेगा." भारती बाबा को अपने मित्र से गप्पी हो आशा थी. दोनों फिर उधर का चर्चे करने लगे.

समय बदलने लगा. सारे मुल्क में हिन्दू मुस्लिम दंगे शुरू हो

गए. तवाही और बरवाही का राज था. भाई भाई के खून का प्यासा हो रहा था. छुरेबाही का डर सब तरफ छा गया था. पंजाब में यह लपेट खोर पर थी. वहाँ रोच दंगे होते थे. यह खूनखराबी देख नादिरशाह अपनी क्रत्र में शर्मा रहा था और अकबर अपनी क्रत्र में अपना सिर घुन रहा था. नादिरशाह का कल्लेआम भी इसके सामने फीका था. क्लाइव और वारेनहेस्टिंग्स की तइफइती लाशें ब्रिटिश राज को यों जमते देख अपनी क्रत्रों में शांत हो गई थीं.

तिवाना में मुसलमान सिकं करीब एक सौ थे. वह बहुत डरे हुए रहते थे. वहाँ अब तक शान्ति थी. पंजाब भर में दो तीन जगह ही ऐसी थी जो इस आग से बची थीं. खड्गसिंह को यह बरदारत न था. वह नोआखाली जैसी जगहों का बदला लेना चाहता था. वह तिवाना के मुसलमानों को तहस नहस करने की तय्यारी कर रहा था. उसने तय कर लिया. उसे कई साथी भी मिल गए. न जाने कैसे बरकत अली को इसकी खबर मिल गई. पास के एक गाँव में मुसलमानों की ज्यादा बस्ती थी. तिवाना के सब मुसलमानों ने वहाँ जाकर रहने का फैसला किया. बरकतअली को गुस्सा त बहुत आया पर लाचार था. उसने क्रसम खाई 'मुसलमानों को लाकर यहाँ कल्लेआम न करा दिया तो मेरा नाम बरकतअली नहीं.' सब जाने के लिये राखी हो गए, पर रमखान राखी न हुआ. उसने वहाँ ही मसजिद में रहना ठीक समझा. उसे भारती बाबा पर पूरा भरोसा था. लोगों ने बहुत समझाया पर उस पर कुछ असर न हुआ. सब चले गए. अकेला रमखान मसजिद में जा बैठा.

याहसुन्दा
हो गئے. تاہی اور بریادی کا راج کتھا. بھالی بھالی کے خون کا پیاسا ہوا کتھا. چھڑے باندی کا دودھ سب طرف چھانگیا کتھا. پنجاب میں یہ بلیس زور پر کھیں. وہاں روز دہے ہوتے تھے. یہ خون خرابی دیکھ نامہ شاہ اپنی قبر میں شرمایا کتھا اور اکبر اپنی قبر میں اپنا سر دھن رہا کتھا. نامہ شاہ کا قتل عام بھی اس کے سامنے پھینکا کتھا. کلاریو اور طران ہیننگز کی تڑکھڑائی لاشیں برٹش راج کو بھول جاتے دیکھ اپنی قبروں میں شانت ہوئی کھیں.

توانا میں مسلمان صرف قریب ایک سو تھے. وہ بہت ڈرسے ہوسے رہتے تھے. وہاں اب تک شانتی تھی. پنجاب بھر میں بدترین جگہ ہی ایسی کھیں جو اس آگ سے بچی کھیں. کھڑک سنگھ کو یہ برداشت نہ کتھا. وہ ٹاکھالی جیسی جگہوں کا بدلہ لینا چاہتا کتھا. وہ توانا کے مسلمانوں کو تحس تحس کرنے کی تیاری کر رہا کتھا. اس نے طے کر لیا. اسے کئی ساتھی بھی مل گئے. نہ جاتے کیے برکت علی کو اس کی خبر مل گئی. پاس کے ایک گاؤں میں مسلمانوں کی زیادہ بستی تھی. توانا کے سب مسلمانوں نے وہیں جا کر رہنے کا فیصلہ کیا. برکت علی کو غصہ تو بہت آیا پر لاچار کتھا. اس نے قسم کھائی۔ مسلمانوں کو لاکر یہاں قتل عام نہ کرادیا تو میرا نام برکت علی نہیں! سب جانے کے لئے اپنی ہوسگریا پر رمضان راضی نہ ہوا. اس نے وہاں ہی مسجد میں رہنا کھینک کتھا. اسے بھارتی بابا پر کھروسا کتھا. لوگوں نے بہت کتھایا پر اس پر کچھ اثر نہ ہوا. سب چلے گئے. اکیلا رمضان مسجد میں جا بیٹھا.

यह सब रातों रात हो गया. खन्नसिंह ने यह देखा तो वह बहुत चौखलाया. उसने मसजिद और मुसलमानों के घरों को ही तहस नहस करने की सोची. वह कुछ आदमियों को ले मसजिद की तरफ चला. यह टोली नारे लगाती चली. अचानक उन्हें मसजिद के छोटे से दरवाजे पर रमजान खड़ा मिला. रमजान ने कहा—“भाइयों! अगर दोस्त के नाते आप आना चाहते हैं तो आइये. मैं खिदमत के लिये तय्यार हूँ. पर अगर दुश्मन बन कर मसजिद में घुसना है तो आपको मेरी लाश पर से जाना होगा. लोगों ने नारा लगाया—“नोआखाली का बदला लेके रहेंगे”. खन्नसिंह ने कहा—“चचा! तुम बूढ़े हो. हमें तुमसे कुछ दुश्मनी नहीं है. हमें अपना बदला लेना है. तुम हमारी राह छोड़ दो. तुम सीधी तरह राह न छोड़ोगे तो हमें सखती करनी पड़ेगी.” रमजान ने कब्ज से कहा—“भइया! तुमको बदला लेना है तो लोगों से लो. मसजिद ने तुम्हारा क्या विगाड़ा है? मुझे जो कहना था कह चुका. तुम्हें भी जो करना हो करो.” खन्नसिंह लाल हो गया. भारती बाबा यह सब देख रहे थे. वह पास की दीवार के पीछे थे. खन्नसिंह ने तलवार निकालते हुए कहा—“मुझे कोई दोष न देना. ईश्वर नहीं चाहता कि हम सीधी तीर से घुसे. हम अपना काम कर के रहेंगे.” वह रमजान को तरफ बट्ट ही रहा था कि आवाज आई—“ठहरो खन्नसिंह! तुम्हें इत्सानियत दोष देगी. तवारीख तुम पर यूकेगी!” सब ने भारती बाबा को पीछे खड़े देखा.

भारती बाबा ने आते ही कहा—“रमजान! तुम हट जाओ.

सब रातों रात होगी. कहरक سنگे ने देखा तो वह बेत होकलया. उसने मसजिद और मुसलमानों के घरों को ही तहस नहस करने की सोची. वह कुछ आदमियों को ले मसजिद की तरफ चला. ये टोली नारे लगाती चली. अचानक अकबरी मसजिद के चबूटे से दरवाजे पर रमजान खड़ा मिला. रमजान ने कहा—“भाइयों! अगर दोस्त के नाते आप आना चाहते हैं तो आइये. मैं खिदमत के लिये तय्यार हूँ. पर अगर दुश्मन बन कर मसजिद में घुसना है तो आपको मेरी लाश पर से जाना होगा. लोगों ने नारा लगाया—“नोआखाली का बदला लेके रहेंगे”. खन्नसिंह ने कहा—“चचा! तुम बूढ़े हो. हमें तुमसे कुछ दुश्मनी नहीं है. हमें अपना बदला लेना है. तुम हमारी राह छोड़ दो. तुम सीधी तरह राह न छोड़ोगे तो हमें सखती करनी पड़ेगी.” रमजान ने कब्ज से कहा—“भइया! तुमको बदला लेना है तो लोगों से लो. मसजिद ने तुम्हारा क्या विगाड़ा है? मुझे जो कहना था कह चुका. तुम्हें भी जो करना हो करो.” खन्नसिंह लाल होकलया. भारती बाबा यह सब देख रहे थे. वह पास की दीवार के पीछे थे. खन्नसिंह ने तलवार निकालते हुए कहा—“मुझे कोई दोष न देना. ईश्वर नहीं चाहता कि हम सीधी तीर से घुसे. हम अपना काम कर के रहेंगे.” वह रमजान को तरफ बट्ट ही रहा था कि आवाज आई—“ठहरो खन्नसिंह! तुम्हें इत्सानियत दोष देगी. तवारीख तुम पर यूकेगी!” सब ने भारती बाबा को पीछे खड़े देखा.

भारती बाबा ने आते ही कहा—“रमजान तुम हट जाओ.

मुझे भगवान पर भरोसा है. मसजिद में भी भगवान है. उसके लिये मैं मरने को तय्यार हूँ. किसी को भीतर घुसना है तो मेरी लाश पर से जाना पड़ेगा." भारती बाबा को मसजिद के दरवाजे पर खड़े स्व स्वप्नसिंह को छोड़ सब एक एक कर लौट गए. स्वप्नसिंह की आंखों में आंसू था गए. उसने आगे बढ़ भारती बाबा को प्रनास किया और कहा— "बाबा! मुझे माफ करो!" प्रेम से उसके सिर पर हाथ फेर कर भारती बाबा ने कहा— "भूल सबसे होती है, घंटा! तू भगवान से ही माफी माँग. अब इस बात को तू भूल जा. चल मेरे साथ भीतर चल. देख इसमें और अपने गुरुद्वारे में कुछ भी फरक है? चल हम तीनों भजन करेंगे." तीनों भीतर चले गए.

कुछ ही देर में मसजिद में भारती बाबा का सधुर स्वर गूँज उठा— "भज मन राम रहीमा, भज मन कृष्ण करीमा" गौँव वाले इसे सुन रहे थे. बाबा भारती के बाद रहमान और स्वप्नसिंह इसे दुहराते जाते थे.

जैसे बह्मूतान पर बहरोसा हो. मसजिद में भी बह्मूतान हो. उस के लिये मरने को तय्यार होल. किसी को बह्मूतिर क्लुस्त हो तो मिररी लाश पर से जाना पड़ेगा. भारती बाबा को मसजिद के दरवाजे पर क्लुस्त देखे बह्मूतानक सङ्के को चहोत सब एक एक कर लौट गये. क्लुस्तक सङ्के की आंखों में आंसू आ गये. उस ने आगे बढ़े बह्मूतान बाबा को प्रनाम किया और कहा— "बाबा! मुझे माफ करो!" प्रेम से उसके सिर पर हाथ फेर कर भारती बाबा ने कहा— "बह्मूतान से होती हो, बिशा! तू बह्मूतान से ही माफी माँग. अब इस बात को तू बह्मूतान जा. चल मिररी साथे बह्मूतिर चल. देख इस में और अपने गुरुद्वारे में बह्मूतान भी फरक है? चल हम सङ्के बह्मूतान करीर सङ्के. तूनीर बह्मूतिर चले सङ्के.

पहले ही मिररी मसजिद में बह्मूतान बाबा का महर मुहूद गूँज उठा. बह्मूतान में राम रहिम बह्मूतान में करुशन को रीम का फल वाले इस्त. उस ने बह्मूतान बाबा बह्मूतान के बाद रहमान और क्लुस्तक सङ्के इस्त. डहराते जाते सङ्के.

हिन्दू मुसलिम बयोहार

(भाई चन्द्रदत्त सेनानी)

'अगर हिन्दू धर्म को खिन्दा रहना है तो हिन्दू समाज की आत्म कल की जात पात और दायरेबन्दी जरूर मिट जानी चाहिये'—गांधी जी, 'लीडर' १३-२-४७

'तब तक कि ऊंची जात के हिन्दुओं में नीची जात के हिन्दुओं को सामाजिक तौर से खरा नहीं लिया जाता, और उनके साथ इज्जत और ईमानदारी नहीं बरती जाती तब तक छोटी जात के हिन्दू अपने को बड़ी जात के हिन्दुओं से ठीक मुसलमानों की तरह अलग ही समझेंगे, और उनकी बड़ी बड़ी बातों के मुलावे में नहीं आवेंगे'—डा० अम्बेदकर, 'गांधी और कांग्रेस ने छोटी जातों के लिये क्या किया' नाम की किताब से

'सादियों से हिन्दू और मुसलमान दो झोमों को तरह रहे हैं, उनकी संस्कृति, धर्म और सामाजिक बर्तोंब अलग अलग हैं, इसके अलावा हिन्दू समाज का ढांचा इस ढंग का है कि उसमें मुसलमानों के अपना बज्रू आयम रखते हुये, घुल मिल सकने की कोई गुंजाइश नहीं—इस लिये अच्छा ही है कि दोनों अलग अलग होकर अपने अपने हिस्से—हिन्दुस्तान और पाकिस्तान—को तरफती अपनी अपनी समक के मुताबिक करें'—मि० जिल्लाह, 'तकरीर'.

हिन्दू मुसलिम बयोहार

(बहाली चन्द्रदत्त सेनानी)

अगर हिन्दू धर्म को खिन्दा रहना हो तो हिन्दू समाज की आत्म कल की जात पात और दायरेबन्दी जरूर मिट जानी चाहिये—'तकरीर' १३-२-४७

जब तक कि ऊंची जात के हिन्दुओं में नीची जात के हिन्दुओं को सामाजिक तौर से खरा नहीं लिया जाता, और उनके साथ इज्जत और ईमानदारी नहीं बरती जाती तब तक छोटी जात के हिन्दू अपने को बड़ी जात के हिन्दुओं से ठीक मुसलमानों की तरह अलग ही समझेंगे, और उनकी बड़ी बड़ी बातों के मुलावे में नहीं आवेंगे'—डा० अम्बेदकर, 'गांधी और कांग्रेस ने छोटी जातों के लिये क्या किया' नाम की किताब से

सदियों से हिन्दू और मुसलमान दो तोंबों की तरह रहे हैं, उनकी संस्कृति, धर्म और सामाजिक बर्तोंब अलग अलग हैं, इसके अलावा हिन्दू समाज का ढांचा इस ढंग का है कि उसमें मुसलमानों के अपना बज्रू आयम रखते हुये, घुल मिल सकने की कोई गुंजाइश नहीं—इस लिये अच्छा ही है कि दोनों अलग अलग होकर अपने अपने हिस्से—हिन्दुस्तान और पाकिस्तान—को तरफती अपनी अपनी समक के मुताबिक करें'—मि० जिल्लाह, 'तकरीर'.

तथा हिन्दू हिन्दू मुसलिम व्योहार अक्टूबर सन् ४७

अगर ऊंची जात के हिन्दू समाजों मामलों में तानाशाही बरतना छोड़ दें और सब के साथ प्रेम बराबरी और आदर का व्योहार करें तो कोई बजह नहीं कि मुसलमान अपनी पाकिस्तान की मांग को क्यों न वापिस लें—'डान' १८ मार्च १९४४, 'मार्च', आरु ट इम्स" लेख से.

यह ठीक है कि हिन्दू मुसलिम भगड़े के पीछे ब्रिटिश साम्राज्य-शाही का हाथ रहा है, पर इसमें भी शक नहीं, इसको जड़ हम लोगों के आपसी व्योहार में मौजूद है.

आज कल के हिन्दू मिली जुली नसल से हैं. इस लिये उनका यह डर कि समाजी मेल मिलाप का दरवाजा सब के लिये खोलने ही वह "वण संकर" यानी खिचड़ी नसल के हो जायेंगे, वे बुनियाद है न ऐसा करने से उनके धर्म जाने का डर है. हिन्दुस्तान के मुसलमान ज्यादातर हिन्दू नसल से ही हैं. इसलिये उनका अपना लगाव विदेस के मुसलमानों के साथ लगाना और अपने को हिन्दुओं से अलग करने की खींचतान करना 'तमाचे का जवाब तलवार' से देने की गलती के बराबर है.

समाजी अजादी और समाजी एकता के बिना हिन्दुओं और मुसलमानों का आपसी जीवन जहरीला ही बना रहेगा. इतना ही नहीं, बल्कि इसके बगैर सारा हिन्दू समाज टुकड़े टुकड़े रहेगा और उसमें समय समय पर फूट का ज्वारभाटा आता रहेगा जो उसे और भी तोड़ फोड़ कर बरबाद करता रहेगा.

हिन्दुओं की छुआ छूट और समाजी कट्टरता काफ़ी तकलीफ़ देह है. हिन्दू समाज खुले आम मुसलमानों के साथ जो अनादर

कोटिपुस्तक

हिन्दू म. १०५

न्यास

अगर औद्योगिक जल के हिन्दू समाजी मामलों में तानाशाही बरतना छोड़ दें और सब के सामूहिक प्रेम बराबरी और आदर का व्योहार करें तो कोई बजह नहीं कि मुसलमान अपनी पाकिस्तान की मांग को क्यों न वापिस लें—'डान' १८ मार्च १९४४, 'मार्च', आरु ट इम्स" लेख से.

यह ठीक है कि हिन्दू मुसलिम भगड़े के पीछे ब्रिटिश साम्राज्य-शाही का हाथ रहा है, पर इसमें भी शक नहीं, इसको जड़ हम लोगों के आपसी व्योहार में मौजूद है.

आज कल के हिन्दू मिली जुली नसल से हैं. इस लिये उनका यह डर कि समाजी मेल मिलाप का दरवाजा सब के लिये खोलने ही वह "वण संकर" यानी खिचड़ी नसल के हो जायेंगे, वे बुनियाद है न ऐसा करने से उनके धर्म जाने का डर है. हिन्दुस्तान के मुसलमान ज्यादातर हिन्दू नसल से ही हैं. इसलिये उनका अपना लगाव विदेस के मुसलमानों के साथ लगाना और अपने को हिन्दुओं से अलग करने की कहेजतान करना 'तमाचे का जवाब तलवार' से

दिने की छल्ले के बराबर है. समाजी आजादी और समाजी एकता के बिना हिन्दुओं और मुसलमानों का आपसी जीवन जहरीला ही बना रहेगा. इतना ही नहीं, बल्कि इसके बगैर सारा हिन्दू समाज टुकड़े टुकड़े रहेगा और उसमें समय समय पर फूट का ज्वारभाटा आता रहेगा जो उसे और भी तोड़ फोड़ कर बरबाद करता रहेगा.

हिन्दुओं की छुआ छूट और समाजी कट्टरता काफ़ी तकलीफ़ देह है. हिन्दू समाज खुले आम मुसलमानों के साथ जो अनादर

नया हिन्द
 और बानी काठ का स्लोक क्रमादम हो वो बहो मुसलमानों की तासुकी का
 एक खास कारन हो.

मुसलमानों की मजहबी कट्टरता कभी कभी जुलमी हो जाती है. हिन्दुओं को खबरदस्ती मुसलमान बनाने का जो बहशियाना रवैया बह कभी अखिलतार करते हैं उससे हिन्दू उनसे चिढ़ते और अलग रहते हैं. आजकल के जमाने में खबरदस्ती किसी का धर्म बदलना अपने मजहब और तहजाव की हसी उड़वाना और अपनी तरक्की पर कुल्हाड़ी मारना है. हिन्दुओं के धार्मिक अन्ध-विरवासों — संतान, सम्पत्ति, शादी, और सफलता के लिये देवी देवताओं की पूजा, रोग, गरीबी और मौत से बचने के लिये जादू, टोना, भाइफूक, या भूत-प्रेतों की खुशामद, आकृत से बचने के लिये यज्ञ और पाठ कराना, पाप धोने के लिये गंगा में नहाना और पितरों का सुख भंजने के लिये दान, भोज और पूजा, भविष्य अच्छा बनाने के लिये ज्योतिषी के यज्ञ साहित बिचरवाना, हाथ दिखाना या कुँडली-जबवाने दौड़ दौड़ कर पहुँचना, जानवरों या कीड़े मकोड़ों को तो बचाने में लगना पर आदिमियों के बिलिये हिंसा या तकरत अपने दिलों में पालना और उनकी जान लेने तक से न भिस्कना, सारी उन्न विषय भोग में लचें करने में बहुत हानि न देखना पर आप-पसन्द विवाह से धर्म 'सयोदा' और 'परलोक' को नष्ट समगना, थोड़ी सी उन्न के अन्दर तीन तीन शादियां करते शरम न आना पर जबान बेबा के विवाह के खयाल पर गाज गिरने का डर महसूस करना, जैसे नासमनों कोकामों ने उन्हें निकम्मा और बुबदिल बना रखा है.

हिन्दू मुसलिम व्योहार
 अक्टूबर सन '४७
 और वाइकाट का सलूक करता रहा है बह भी मुसलमानों की ताराजगी का एक खास कारन है.

हिन्दू मुसलिम व्योहार अक्टूबर सन '४७
 और वाइकाट का सलूक करता रहा है बह भी मुसलमानों की ताराजगी का एक खास कारन है.

नया हिन्दू हिन्दू मुसलमन ज्योहार अक्तर सन '४७

मुसलमानों की समाजी कुरीतियों जैसे—औरतों को चहार दीवारी में बन्द रखना, बहुत नवदीकी रिश्तेदारों के लड़के लड़कियों में शादी, बचरिया विवाह वगैरा ने उन्हें पिछड़ा हुआ और कुन्द जेहन बना रखा है.

मुसलमानों से सच्चा मेल जोल करने के लिये हिन्दुओं को अपने अन्दर दूसरे को इज्जत, ईमानदारी और दिल से रवादारो को पैदा करना और समाजी मेल और खाने पीने के दायरे को चौड़ा करना जरूरी है.

हिन्दुओं से मेल जोल बढ़ाने के लिये मुसलमानों को अपने अन्दर सदाचार, ऐतमाद, मेहनत, सफाई और किरायत शारी की आदतों को बढ़ाना है.

हिन्दुओं का एक आदर्श "इन्द्रिय दमन" यानी नपस पर काबू पाना है. मुसलमानों का एक आदर्श "इमानदारी" है. लेकिन यह दोनों ही आदर्श सिन्दरी को पूरा बनाने के लिये जरूरी है.

हिन्दुओं को कमजोरी, ईमानदारी की कमी और लालच है. मुसलमानों की कमजोरी शहवत यानी वासना पर काबू न होना और सदाचार की कमी है. दोनों ही कमजोरियों एक हद के बाहर बहुत खतरनाक हैं.

मुसलमानों को इस कमजोरी से मुँकलाकर हिन्दुओं ने मुसलमानों से दिलकाइ नफरत की है, और अपनी ईमानदारी की कमी से मुसलमानों को चूसा और गरीब बनाया है. हिन्दुओं की पैसा परस्ती से भड़क कर मुसलमानों ने हिन्दुओं की दीलत

कोबर शास्त्र

हिन्दू मुसलमन ज्योहार

न्याहस्त

मुसलमानों की समाजी कुरीतियों जैसे—छोटों को चार दीवारी में बन्द रक्खा, बहुत नवदीकी रिश्तेदारों के लड़के लड़कियों में शादी, बचरिया विवाह वगैरा ने उन्हें पिछड़ा हुआ और कुन्द जेहन बना रखा है. मुसलमानों से सच्चा मेल जोल करने के लिये हिन्दुओं को अपने अन्दर दूसरे को इज्जत, ईमानदारी और दिल से रवादारो को पैदा करना और समाजी मेल और खाने पीने के दायरे को चौड़ा करना जरूरी है.

हिन्दुओं का एक आदर्श "इन्द्रिय दमन" यानी नपस पर काबू पाना है. मुसलमानों का एक आदर्श "इमानदारी" है. लेकिन ये दोनों ही आदर्श सिन्दरी को पूरा बनाने के लिये जरूरी हैं.

हिन्दुओं की कमजोरी, ईमानदारी की कमी और लालच है. मुसलमानों की कमजोरी शहवत यानी वासना पर काबू न होना और सदाचार की कमी है. दोनों ही कमजोरियों एक हद के बाहर बहुत खतरनाक हैं.

मुसलमानों को इस कमजोरी से मुँकलाकर हिन्दुओं ने मुसलमानों से दिलकाइ नफरत की है, और अपनी ईमानदारी की कमी से मुसलमानों को चूसा और गरीब बनाया है. हिन्दुओं की पैसा परस्ती से भड़क कर मुसलमानों ने हिन्दुओं की दीलत

(३३)

(३३)

पर हमले किये हैं और 'अपनी शहवत पर काबू रख सकने की कमी' से उन्होंने हिन्दुओं की आबरू पर हमले किये हैं, यह दूसरी बात है कि अब मुसलमानों में भी कुछ पैसा परस्त हो चले हैं और हिन्दुओं में भी शहवत या वासना के गुलाम पाए जाते हैं.

हिन्दुओं की नफरत ने दिल जलाए हैं, मुसलमानों की हिंसा ने राख ढाए हैं, हिन्दुओं की नफरत ने मुसलमानों में हिंसा उभारी है, मुसलमानों की हिंसा ने हिन्दुओं में सुलगी नफरत भड़काई है.

हिन्दुओं ने बट्टे की बायकाट की आवाज उठा कर और मुसलमानों ने हिन्दी के बायकाट की आवाज उठाकर एक दूसरे के खिलाफ नफरत और हिंसा को धार पानी को है.

नतीजा यह हुआ है कि दोनों ने मूर्ख बटेर की तरह खुलेआम एक दूसरे का अपमान और नुकसान करके अपने चारों तरफ दुनिया के तमाशबीनों को इकट्ठा कर लिया है और अपने अपने दास चढ़वा कर गुलामी के पित्रे एक से दो कर लिये हैं.

हिन्दुओं का आपस में मुसलमानों के लिये अपमान का शब्द इस्तेमाल करना या उनका मज़ील उड़ाना उनका अपनी संस्कृति पर एक बड़ा लोंछन है. मुसलमानों का हिन्दू औरतों के साथ जोर खबरदस्ती करना या उनको देख लकंगई करना इंसानी तहज़ीब पर एक बड़ा धब्बा है.

हिन्दुओं का कर्तव्य है कि वह अपने अन्दर से नफरत निकालें, मुसलमानों का कर्तव्य है कि वह अपने अन्दर से हिंसा निकालें, दोनों को आजादी और मुल की तरफ ले चलने का यही एक रास्ता है. आजकल इसके खिलाफ दोनों एक दूसरे की बुराइयों

पर हमले किये हैं और अपनी शहवत पर काबू रख सकने की कमी' से उन्होंने हिन्दुओं की आबरू पर हमले किये हैं, यह दूसरी बात है कि अब मुसलमानों में भी कुछ पैसा परस्त हो चले हैं और हिन्दुओं में भी शहवत या वासना के गुलाम पाए जाते हैं.

हिन्दुओं की नफरत ने दिल जलाए हैं, मुसलमानों की हिंसा ने राख ढाए हैं, हिन्दुओं की नफरत ने मुसलमानों में हिंसा उभारी है, मुसलमानों की हिंसा ने हिन्दुओं में सुलगी नफरत भड़काई है.

नतीजा यह हुआ है कि दोनों ने मूर्ख बटेर की तरह खुलेआम एक दूसरे का अपमान और नुकसान करके अपने चारों तरफ दुनिया के तमाशबीनों को इकट्ठा कर लिया है और अपने अपने दास चढ़वा कर गुलामी के पित्रे एक से दो कर लिये हैं.

हिन्दुओं का आपस में मुसलमानों के लिये अपमान का शब्द इस्तेमाल करना या उनका मज़ील उड़ाना उनका अपनी संस्कृति पर एक बड़ा लोंछन है. मुसलमानों का हिन्दू औरतों के साथ जोर खबरदस्ती करना या उनको देख लकंगई करना इंसानी तहज़ीब पर एक बड़ा धब्बा है.

हिन्दुओं का कर्तव्य है कि वह अपने अन्दर से नफरत निकालें, मुसलमानों का कर्तव्य है कि वह अपने अन्दर से हिंसा निकालें, दोनों को आजादी और मुल की तरफ ले चलने का यही एक रास्ता है. आजकल इसके खिलाफ दोनों एक दूसरे की बुराइयों

नया हिन्दू हिन्दू मुसलिम ब्योहार अक्टूबर सन् '४७
की नकल करने और उनमें बड़ा बढ़ी करने की कोशिश कर रहे हैं. यह बरबादी का रास्ता है.

बड़ी तादाद होने के नाते हिन्दुओं की एक और जिम्मेदारी यह है कि वह अपने ब्योहार, ख्याल और काम से यह साबित कर दें (खाली खान से नहीं) कि उनके बरिये मुसलमानों के साथ मजहबी, कलचरी, भापाई, या माली खबरदस्ता या बेईमानी नहीं होती, और न उनके साथ नफरत ही दिखाई जाती है. मुसलमानों को चाहिये कि वह नेकी, पाक बिन्दगी और मीठे ब्योहार से हिन्दुओं के अन्दर से नफरत और शक को निकाल फेंकें. इसी तरह "हिन्दू धर्म का बड़प्पन" और "इसलाम की अजमत" दोनों सबी साबित हो सकती हैं.

इतना हो जाने पर कोई बजह नहीं कि मुसलमान हिन्दुओं से विगड़े रहें या हिन्दू मुसलमानों से रुठे रहें.

हिन्दुस्तान की फूट श्री जड़ नफरत है जिसकी खाद समाजी तंग नचरी है जो दूसरी तरफ धर्म जाने के डर और बेईमानी को भी बढ़ावा देती है. मुसलमानों में आपसी बरताव और इमान-दारी की खूबियां हैं. हिन्दुओं में इखलाकी और दिमारी विकास की खूबियां हैं. समझदार लोगों का फर्ज है कि वह मुसलमानों में इखलाकी पहलू और हिन्दुओं में ब्योहारी पहलू बढ़ावें.

यही और सिक्रं यही एक इलाज है जिससे हिन्दू मुसलिम समाजी एकता का खबरदस्त इनकलाव भिन्दों में उनके सारे पुराने कलकों पर सफेदी फेर सकता है—हां थोड़ी सी दिमारी तकलीफ के बाद.

न्यास
किन्तु ब्रह्म
हिन्दू मुसलमानों का
की नकल करने और उन में
ब्रह्मचरिणी करने की कोशिश कर रहे
हैं. यह बरबादी का रास्ता है.

बड़ी तादाद होने के नाते हिन्दुओं की एक और जिम्मेदारी यह है कि वह अपने ब्योहार, ख्याल और काम से यह साबित कर दें (खाली खान से नहीं) कि उनके बरिये मुसलमानों के साथ मजहबी, कलचरी, भापाई, या माली खबरदस्ता या बेईमानी नहीं होती, और न उनके साथ नफरत ही दिखाई जाती है. मुसलमानों को चाहिये कि वह नेकी, पाक बिन्दगी और मीठे ब्योहार से हिन्दुओं के अन्दर से नफरत और शक को निकाल फेंकें. इसी तरह "हिन्दू धर्म का बड़प्पन" और "इसलाम की अजमत" दोनों सबी साबित हो सकती हैं.

इतना हो जाने पर कोई बजह नहीं कि मुसलमान हिन्दुओं से विगड़े रहें या हिन्दू मुसलमानों से रुठे रहें.

हिन्दुस्तान की चिन्त की जरूरत हमें कि कहेसारा समाजी तंग नचरी है जो दूसरी तरफ धर्म जाने के डर और बेईमानी को भी बढ़ावा देती है. मुसलमानों में आपसी बरताव और इमान-दारी की खूबियां हैं. हिन्दुओं में इखलाकी और दिमारी विकास का फर्ज है कि वह मुसलमानों में इखलाकी पहलू और हिन्दुओं में ब्योहारी पहलू बढ़ावें.

यही और सिक्रं यही एक इलाज है जिससे हिन्दू मुसलिम समाजी एकता का खबरदस्त इनकलाव भिन्दों में उनके सारे पुराने कलकों पर सफेदी फेर सकता है—हां थोड़ी सी दिमारी तकलीफ के बाद.

नया हिन्दू हिन्दू मुसलिम व्योहार अक्टूबर सन् '४७
 छोटी जात के हिन्दुओं के साथ बड़ी जात वाले हिन्दुओं का
 व्योहार कुछ कम बुरा नहीं है, उनके साथ ईमानदारी और सम्मान
 की जरूरत है.

समाजो फूट की परिशानियों के अलावा वेईमानी करने की
 आजादी होने की वजह से मेहनतियों और सरमायेदारों के बीच
 की कशमकश एक नई उलझन पैदा कर रही है.
 मेहनती इंसान काविले इरजत है चाहे वह हिन्दू हो या
 मुसलमान, मेहनती इंसान की हिराजत और उसकी आबरू की
 लड़ाई ही स्वराज की सबूत लड़ाई है.

जिस स्वराज में वेईमानों और बदचलों का जोर होगा,
 और जिस समाज में वेईमानी और छीन छपट का आज कल का
 टांचा बना रहेगा, वह स्वराज या वह समाज किरकेवाराना सवाल
 को हल नहीं कर सकेगा, क्योंकि उसमें मेहनत करने वालों, किसानों
 मजदूरों का चूसा जाना बराबर होता रहेगा.

वहाँ हकूमत जिसमें बड़ी बड़ी पूंजी, जमीन, मकान, मशीन
 बगैरा का ठीक ठीक बटवारा होगा और वह समाज जिसमें ईमान-
 दारी को सब से ऊँची जगह दी जायगी, शरीफी, बेकारी, और
 तंगनबरी को दूर कर सकते हैं. उन्हीं में सब की जरूरतों के पूरा
 होने और काम मिलने की गारन्टी दी जा सकती है. ऐसी हकूमत
 के चलाने वाले साफ दिल और ईमानदार इनसात होंगे, गुलाम
 बनाने वाले, वेईमान या तामसुबी हिन्दू या मुसलमान नहीं.

अक्टूबर सन् '४७

हिन्दू मुसलिम व्योहार

समाज

ज्योती जात के हिन्दुओं के साठे बड़ी जात वाले हिन्दु
 का ब्योहार कुछ कम बुरा नहीं है. उन के साथ ईमानदारी और सम्मान
 की जरूरत है.
 समाजो फूट की परिशानियों के अलावा वेईमानी करने की
 आजादी होने की वजह से मेहनतियों और सरमायेदारों के बीच
 की कशमकश एक नई उलझन पैदा कर रही है.
 मेहनती इंसान काविले इरजत है चाहे वह हिन्दू हो या
 मुसलमान, मेहनती इंसान की हिराजत और उसकी आबरू की
 लड़ाई ही स्वराज की सबूत लड़ाई है.

जिस स्वराज में वेईमानों और बदचलों का जोर होगा,
 और जिस समाज में वेईमानी और छीन छपट का आज कल का
 टांचा बना रहेगा, वह स्वराज या वह समाज किरकेवाराना सवाल
 को हल नहीं कर सकेगा, क्योंकि उसमें मेहनत करने वालों, किसानों
 मजदूरों का चूसा जाना बराबर होता रहेगा.

वहाँ हकूमत जिसमें बड़ी बड़ी पूंजी, जमीन, मकान, मशीन
 बगैरा का ठीक ठीक बटवारा होगा और वह समाज जिसमें ईमान-
 दारी को सब से ऊँची जगह दी जायगी, शरीफी, बेकारी, और
 तंगनबरी को दूर कर सकते हैं. उन्हीं में सब की जरूरतों के पूरा
 होने और काम मिलने की गारन्टी दी जा सकती है. ऐसी हकूमत
 के चलाने वाले साफ दिल और ईमानदार इनसात होंगे, गुलाम
 बनाने वाले, वेईमान या तामसुबी हिन्दू या मुसलमान नहीं.

वही हकूमत जिसमें बड़ी बड़ी पूंजी, जमीन, मकान, मशीन
 बगैरा का ठीक ठीक बटवारा होगा और वह समाज जिसमें ईमान-
 दारी को सब से ऊँची जगह दी जायगी, शरीफी, बेकारी, और
 तंगनबरी को दूर कर सकते हैं. उन्हीं में सब की जरूरतों के पूरा
 होने और काम मिलने की गारन्टी दी जा सकती है. ऐसी हकूमत
 के चलाने वाले साफ दिल और ईमानदार इनसात होंगे, गुलाम
 बनाने वाले, वेईमान या तामसुबी हिन्दू या मुसलमान नहीं.

आज की दुनिया

(नयी खबरें गार)

ॐ बाबु राज याफते वारत राज दूनों का निजे कहरु जंग ॐ
 ॐ हन्दुस्तान की माली मसिबत और अस का हल ॐ
 ॐ बाबु राज के मेल पाले पाले हस्तान सि कहे ॐ
 ॐ चीन सि अरिका का फुजी दखल ॐ
 ॐ जाङ्ग का फु मसिबत की मूत का सर पर मँडलाना ॐ
 ॐ डाँको अरिका तिसरी बुरी जङ्ग के सलके तिसार ॐ

हमारे मलक सि बाबु राज—जर्मनी और अली के राज को
 ॐ अङ्गरेजी सि फासिम कहा जाता ह्वा. हमारे मलक की बोली सि हमि अस का
 ॐ तुरजे मेलुम हुता हर बाबु राज. पाकस्तान सि और हन्दुस्तान सि जो सने राज
 ॐ अस वत तकिम सि दे जन्ता के राज या जिन राज निस हूँ. ॐ बाबु राज
 ॐ सि मनि अन बाबुलू के राज जो अपने को जन्ता से ज्वा लिसा जानते हूँ.
 ॐ अस मलक सि स्या जिन राज तकिम हुने सि अहि कचे दन और मकिम के.
 ॐ अहि हन्दु और म बाबुलू सि से म्हे अिसे म्ही सि हूँ.
 ॐ हन्दुलू और मसलानू को लुआकर या पाकस्तान और हन्दुस्तान
 ॐ को लुआकर म्हेरु जङ्ग कहरु कहरुना पालेते हूँ. लिक
 ॐ या कहरु म्हेरु को लुआकर सि बाकल खाली निस हूँ
 ॐ लुग अपने म्हेरु म्हेरु म्हेरु म्हेरु म्हेरु म्हेरु म्हेरु म्हेरु म्हेरु म्हेरु
 ॐ सि कहे सि क अस लुआलू सि अन की पारुती की म्हेरु म्हेरु म्हेरु म्हेरु म्हेरु म्हेरु म्हेरु म्हेरु म्हेरु म्हेरु

आज की दुनिया

(कौमी खिदमतगार)

ॐ बाबू-राज या फिरकेवाराना राज दोनों का नतीजा घरेलू जंग ॐ
 ॐ हिन्दुस्तान को माली मुसीबत और उसका हल ॐ
 ॐ बाबू-राज के गुल पहले पाकिस्तान में खिले ॐ
 ॐ चीन में अमरीका का फौजी दखल ॐ
 ॐ चांगकाई शोक की मौत का सर पर मँडलाना ॐ
 ॐ डाकू अमरीका तीसरी बड़ी जंग के लिये तय्यार ॐ

हमारे मुल्क में बाबू-राज—जर्मनी और इटली के राज को
 ॐ अंगरेजी में फ्रांसिज्म कहा जाता था. हमारे मुल्क की बोली में
 ॐ हमें उसका तरजुमा मालूम होता है बाबू-राज. पाकिस्तान में और
 ॐ हिन्दुस्तान में जो तए राज इस वकत कायम हैं वह जनता के राज
 ॐ या जन-राज नहीं हैं. वह बाबू-राज हैं यानी उन बाबुओं के राज
 ॐ जो अपने को जनता से चुनवा लेना जानते हैं. इस मुल्क में मरुचा
 ॐ जन राज कायम होने में अभी कुछ दिन और लगेंगे.

इन्हीं हिन्दू और मुसलिम बाबुओं में से कुछ ऐसे भी हैं जो
 ॐ हिन्दुओं और मुसलमानों का लड़ा कर या पाकिस्तान और
 ॐ हिन्दुस्तान को लड़ा कर घरेलू जंग खड़ी कर देना चाहते हैं.
 ॐ लीग या काँग्रेस कोई इस तरह के लोगों से बिल्कुल खाली नहीं है
 ॐ यह लोग अपने पीछे चलने वाले मुसलमानों और हिन्दुओं से तो
 ॐ यही कहते हैं कि इस लड़ाई में उनको पार्टी को जोत होगी, पर

बहु अन्दर से लूच जानते हैं कि भाई भाई की इस लड़ाई में आखीर में कम किन्हीं एक को जीत हो ही नहीं सकती. इस लड़ाई को उकसाने से उनका अपनी मतलब यह है कि गरीब और करोड़ों हिन्दू मुसलिम जनता का ध्यान उनके इस किरकेवापना या अधक़िरके-वाराना राज और उसका मुसोबतों में हट कर जन-उठान, जन-राज और उसके मुख चैन की तरफ न जानें पावे.

इसी तरह के लोगों की बदौलत इस मुल्क में आज नरक उतरा हुआ दिखाई दे रहा है. लाखों हिन्दुओं, मुसलमानों और सिक्खों ने अपने को भिटाकर हिन्दुस्तान के दो टुकड़े किये जाने को मंजूर कर लिया है. अब अगर भगवान न करे, धरंलू जंग चल पड़ी तो लाखों हाँवे गुनाह और कुत्तान होंगे, और अँगरेजों को चलाई हुई किरकापरन्ती और किरकापरस्त बाबू हकूमतें और मजबूती में जम जावेंगी.

इस तरह की धरंलू लड़ाई में किसी एक को जीत इसलिये भी नहीं हो सकती क्योंकि किसी एक को जीत हो जाने से सारे हिन्दुस्तान में फिर एक भिजा जुली मजबूत हकूमत कायम हो जावेंगी जिसके सामने फिर ब्रिटिश साम्राजशाही को न चल सकेगा. इस लिये ब्रिटेन को खुद यह फिक रहेगा कि किसी एक को जीत न हो पाए. इसके लिये चल्तरत होंगी तो ब्रिटेन बड़ी आसानी से, और ऐसे कि किसी को शिकायत भी न हो सके, साम्राज्यी कौनों से भी पूरा पूरा काम लेगा. इन बाबुओं में से भी कुछ ऐसे हैं जो कम से कम अभी और कुछ दिनों एक हकूमत या अखंड हिन्दुस्तान नहीं चाहते. क्योंकि वह जानते हैं कि जहाँ आजकल

वे अन्दर से खोब जाते हैं कि बहानी बहानी की इस लड़ाई में अन्त में किसी किसी एक की जीत हो ही नहीं सकती. इस लड़ाई को उकसाने से उनका अपनी मतलब यह है कि गरीब और करोड़ों हिन्दु मुसलिम जनता का ध्यान उनके इस किरकेवापना या अधक़िरके-वाराना राज और उसकी मुसोबतों में हट कर जन-उठान, जन-राज और उसके मुख चैन की तरफ न जानें पावे.

इसी तरह के लोगों की बदौलत इस मुल्क में आज नरक उतरा हुआ दिखाई दे रहा है. लाखों हिन्दुओं, मुसलमानों और सिक्खों ने अपने को भिटाकर हिन्दुस्तान के दो टुकड़े किये जाने को मंजूर कर लिया है. अब अगर भगवान न करे, धरंलू जंग चल पड़ी तो लाखों हाँवे गुनाह और कुत्तान होंगे, और अँगरेजों को चलाई हुई किरकापरन्ती और किरकापरस्त बाबू हकूमतें और मजबूती में जम जावेंगी.

इस तरह की धरंलू लड़ाई में किसी एक को जीत इसलिये भी नहीं हो सकती किन्तु किसी एक की जीत हो जाने से सारे हिन्दुस्तान में फिर एक भिजा जुली मजबूत हकूमत कायम हो जावेंगी. इस लिये ब्रिटेन को खुद यह फिक रहेगा कि किसी एक को जीत न हो पाए. इसके लिये चल्तरत होंगी तो ब्रिटेन बड़ी आसानी से, और ऐसे कि किसी को शिकायत न हो सके, साम्राज्यी कौनों से भी पूरा पूरा काम लेगा. इन बाबुओं में से भी कुछ ऐसे हैं जो कम से कम अभी और कुछ दिनों एक हकूमत या अखंड हिन्दुस्तान नहीं चाहते. क्योंकि वह जानते हैं कि जहाँ आजकल

के साँचे का एक अखंड राज कायम हुआ वहाँ तुलना हो चीन की तरह शराबों, किसानों और मजदूरों का जगह जगह उठान शुरू हो जावेगा. इसीलिये लोग बटवारा चाहती थी और इसीलिये कांग्रेस को उसे "मजदूर होकर मानना पड़ा".

सारे हिन्दुस्तान भर में भूक, तंग और बोगारियों को जो खबरदस्त मुसीबत इस बक्त करोड़ों पर छाई हुई है, जो पहले कभी देखने या सुनने में नहीं आई थी, उसको तरक से लोगों का ध्यान बटा देने के लिये यह पत्राल जंग इन वाबुओं और उनके चालाक अंग्रेज साथियों के हाथों में बहुत अच्छा हथियार मिल गया है. लोगों को यह मुसीबतें बटवारे से और बढ़ गई हैं. आजकल का वाबू-राज उन्हें हल नहीं कर सकता. इसके लिये हमें अपना सारा माली, तिजारीती और कारवारी ढाँचा ही बदलना पड़ेगा. मुल्क के कारवार को और मुल्क में दौलत पैदा करने के जरियों को उन करोड़पतियों और अरबपतियों के हाथों से छोन लेना पड़ेगा जो इस वाबू-राज कायम होने के भी पहले से अंग्रेज और अमरों की पूँजीपतियों के साथ समझौते करके इस मुल्क को बेच रहे हैं और जन्ता की गरीबी की जड़ों को और भी मजबूत कर रहे हैं. दोनों में से कोई वाबू-राज इसके लिये तय्यार नहीं है. इनमें और उन पूँजीपतियों में खुली साजबाज है.

मेल से ही अखंडता फिर हो सकती है—

मुसलिम जन्ता पर बटवारे को माँग का इलजाम लगाना राहत है. उनकी सी हालत में हिंदू भी ऐसा ही करते. पंजाब

के साँचे का एक अखंड राज कायम हुआ वहाँ श्रुत ही चीन की तरह शराबों, किसानों और मजदूरों का जगह जगह उठान शुरू हो जावेगा. इसीलिये लोग बटवारा चाहती थी और इसीलिये कांग्रेस को उसे "मजदूर होकर मानना पड़ा".

सारे हिन्दुस्तान भर में भूक, तंग और बोगारियों को जो खबरदस्त मुसीबत इस बक्त करोड़ों पर छाई हुई है, जो पहले कभी देखने या सुनने में नहीं आई थी, उसकी तरक से लोगों का ध्यान बटा देने के लिये यह पत्राल जंग इन वाबुओं और उनके चालाक अंग्रेज साथियों के हाथों में बहुत अच्छा हथियार मिल गया है. लोगों की मुसीबतें बटवारे से और बढ़ गई हैं. आजकल का वाबू-राज उन्हें हल नहीं कर सकता. इसके लिये हमें अपना सारा माली, तिजारीती और कारवारी ढाँचा ही बदलना पड़ेगा. मुल्क के कारवार को और मुल्क में दौलत पैदा करने के जरियों को उन करोड़पतियों और अरबपतियों के हाथों से छिन लेना पड़ेगा. वाबू-राज कायम होने के भी पहले से अंग्रेज और अमरों की पूँजीपतियों के साथ समझौते करके इस मुल्क को बेच रहे हैं और जन्ता की गरीबी की जड़ों को और भी मजबूत कर रहे हैं. दोनों में से कोई वाबू-राज इसके लिये तय्यार नहीं है. इनमें और उन पूँजीपतियों में खुली साजबाज है.

मेल से ही अखंडता फिर हो सकती है—

मुसलिम जन्ता पर बटवारे की माँग का इलाम लगाना राहत है. उनकी सी हालत में हिंदू भी ऐसा ही करते. पंजाब

और बंगाल दोनों में हिंदुओं ने यहो किया भी. मुसलिम बाबू-राज के बहकाए और अस्सर में नादान मुसलमानों ने पाकिस्तान की मांग का और हिंदू या कांग्रेसी बाबू-राज के बहकाए और अस्सर में भोले हिंदुओं और सिक्खों ने बंगाल और पंजाब में अपने अपने सूत्रों के बटवारे पर जित की. दोनों में से कोई यह न देख पाया कि अस्सली रोग बाबू-राज और फिरकेदाराना राज में है, फिर चाहे वह हिंदुओं का हो चाहे मुसलमानों का. इन्हें भिटाए बिना जनता के दुख दूर नहीं हो सकते.

लोग धारें धारे इस कड़वी सच्चाई को समझते जा रहे हैं और तलवार से समझेंगे. किसी के यह कह देने से कि हमारा राज फिरकेदाराना नहीं राष्ट्रीय है, धोके में नहीं आना चाहिये. कसौटी यह है कि मुल्क की दीलत और दीलत पैदा करने के साधन जनता के हाथों में हैं या इस फिरके या उस फिरके के कुछ अमोरों के हाथों में. दुनिया के दुख दूर होने के लिये सब पैदावार के साधनों और माल के बटवारे के साधनों, पर राष्ट्र का यानी जनता का कब्जा होना चाहिये. मुल्क की दीलत उस जनता के हाथों में होनी चाहिये जो अपना पसीना बहा कर उसे जमीन में से पैदा करती है या मोहनत मत्तदूरी से उसे बढ़ाती है. यही सबी राष्ट्रीय हकूमत या कौमी हकूमत की कसौटी है.

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों में यह हो जावे तो दोनों फिर तुलत मिल जावें क्योंकि इस तरह के इन्तजाम में मिल जुल कर काम करने का मैदान जितना बड़ा होगा उतना ही हर चीज सस्ती होगी, अच्छी होगी और उतना ही अच्छा चीलों का बटवारा

और बंगाल दोनों में हिन्दुओं ने भी किया भी. मुसलमानों के पैदा करने और अस्सर में नादान मुसलमानों ने पाकिस्तान की मांग की और हिन्दू या कांग्रेसी बाबू-राज के बहकाए और अस्सर में भोले हिंदुओं और सिक्खों ने बंगाल और पंजाब में अपने अपने सूत्रों के बटवारे पर जित की. दोनों में से कोई यह न देख पाया कि अस्सली रोग बाबू-राज और फिरकेदाराना राज में है, फिर चाहे वह हिंदुओं का हो चाहे मुसलमानों का. इन्हें भिटाए बिना जनता के दुख दूर नहीं हो सकते.

लोग धारें धारे इस कड़वी सच्चाई को समझते जा रहे हैं और तलवार से समझेंगे. किसी के यह कह देने से कि हमारा राज फिरकेदाराना नहीं राष्ट्रीय है, धोके में नहीं आना चाहिये. कसौटी यह है कि मुल्क की दीलत और दीलत पैदा करने के साधन जनता के हाथों में हैं या इस फिरके या उस फिरके के कुछ अमोरों के हाथों में. दुनिया के दुख दूर होने के लिये सब पैदावार के साधनों और माल के बटवारे के साधनों, पर राष्ट्र का यानी जनता का कब्जा होना चाहिये. मुल्क की दीलत उस जनता के हाथों में होनी चाहिये जो अपना पसीना बहा कर उसे जमीन में से पैदा करती है या मोहनत मत्तदूरी से उसे बढ़ाती है. यही सबी राष्ट्रीय हकूमत या कौमी हकूमत की कसौटी है.

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों में यह हो जावे तो दोनों फिर तुलत मिल जावें क्योंकि इस तरह के इन्तजाम में मिल जुल कर काम करने का मैदान जितना बड़ा होगा उतना ही हर चीज सस्ती होगी, अच्छी होगी और उतना ही अच्छा चीलों का बटवारा

होगा. कारवारी कामों में इस तरह का मेल मिलान बिना राजकाजी मेल मिलाप के ठाक तरह नहीं चल सकता, और जहाँ कारवार और राजकाज में मेल मिलाप हुआ कि फिर फौजी मेल मिलाप भी नहीं रुक सकता क्यों कि फिर जनता की धन दौलत और उनके साधनों को बिदेसी, साम्राज्यी लुटेरों से बचाने के लिये मिलना बहुरी हो जाता है. थोड़े से बड़े लोगों के हाथ में दौलत इसके ठीक उलटे नतीजे पैदा करती है और जनता की वरवादी का कारन बनती है.

जैसा कारवारी राजकाजी और फौजी मेल मिलाप हम कह रहे हैं उसके रास्ते में कलचर, भाषा या मजहब कोई रुकावट नहीं डाल सकता. पंजाब में हिन्दू, मुसलमान और सिक्ख खासे अच्छे मिल कर रहते थे और मिलकर कारवार करते थे. इसी तरह बंगाल में हिन्दू और मुसलमान रहते थे. पर आंगरेजों ने अपने मतलब के लिये मुल्क के टुकड़े करना चाहा और हमारे कुछ बाबू लोग खुशी से राजी हो गए. नतीजा हुआ आंगरेजी साम्राजशाही और हिन्दुस्तानी बाबू-राज की वेदी पर हिन्दुस्तानी जनता की बलि चढ़ा दिया जाना.

हमारी माली मुर्सवत—

देश में करोड़ों आदमियों का खाने पीने और अपना नंग ढकने तक से तंग होना, करोड़ों का भूँके पेट मोना और जनता का गरीबी का बढ़ते जाना तो सबको दिलाई दे ही रहा है, खयाल यह है कि आगे आगे मुल्क की हालत इससे भी कहीं बुरी होगी. लोग अपनी

कोरिया की दुनिया

नया हैसन्द

कारवारी कामों में इस तरह का मेल मिलान बिना राजकाजी मेल मिलाप के ठाक तरह नहीं चल सकता, और जहाँ कारवार और राजकाज में मेल मिलाप भी नहीं रुक सकता क्यों कि फिर जनता की धन दौलत और उनके साधनों को बिदेसी, साम्राज्यी लुटेरों से बचाने के लिये मिलना बहुरी हो जाता है. थोड़े से बड़े लोगों के हाथ में दौलत इसके ठीक उलटे नतीजे पैदा करती है और जनता की वरवादी का कारन बनती है.

जैसा कारवारी राजकाजी और फौजी मेल मिलान बिना हम कह रहे हैं उसके रास्ते में कलचर, भाषा या मजहब कोई रुकावट नहीं डाल सकता. पंजाब में हिन्दू, मुसलमान और सिक्ख खासे अच्छे मिल कर रहते थे. इसी तरह बंगाल में हिन्दू और मुसलमान रहते थे. पर आंगरेजों ने अपने मतलब के लिये मुल्क के टुकड़े करना चाहा और हमारे कुछ बाबू लोग खुशी से राजकाजी साम्राजशाही और हिन्दुस्तानी बाबू-राज की वेदी पर हिन्दुस्तानी जनता की बलि चढ़ा दिया जाना.

हमारी माली मुर्सवत—

देश में करोड़ों आदमियों का खाने पीने और अपना नंग ढकने तक से तंग होना, करोड़ों का भूँके पेट मोना और जनता का गरीबी का बढ़ते जाना तो सबको दिलाई दे ही रहा है, खयाल यह है कि आगे आगे मुल्क की हालत इससे भी कहीं बुरी होगी. लोग अपनी

इस मुसीबत को तो धीरे धीरे समझते जा रहे हैं पर उसके असली कारनों और इलाज को बहुत कम समझ पा रहे हैं. हमारी इस मुसीबत की जड़ें बहुत पीछे से शुरू हुई हैं. पिछली जंग ने इन्हें अच्छी तरह सूँचा है. अब अंग्रेज सरकार ने यह फैसला करके कि हम अपने ब्रिटिश सिककों यानी स्ट्रलिंग की जगह अमरीकी सिक्के यानी डालर नहीं खरीद सकते, हमारी इस माली और तिजारती मुसीबत को और भी बढ़ा दिया है. इसका मतलब यह है कि हम जो कुछ खरीदना बेचना करें वह इंगलिस्तान ही से करें जहाँ स्ट्रलिंग चलता है, अमरीका या किसी और ऐसे देश से न कर सकें जहाँ डालर चलता है. यह जान बूझ कर हमारी तिजारत और कारबार का गला घोटना है और हमें मजबूर करना है कि हम इंगलिस्तान ही को अपना कच्चा माल बेचें और जो कुछ खरीदें वह भी इंगलिस्तान ही से खरीदें. यह है दिखावटी आजादी के साथ जबरदस्त तिजारती और माली गुलामी.

इङ्गलिस्तान और अमरीका के बीच जो समझौता अमरीकी कर्जों के बारे में हुआ है उसमें इङ्गलिस्तान ने यह वादा किया था कि १५ जुलाई १९४७ के बाद से स्ट्रलिंग की जगह डालर खरीदने की लोगों को खुली इजाजत दे दी जावेगी. इंगलिस्तान का इस वास्त का फैसला उस समझौते के खिलाफ है. ऐसा क्यों हुआ? क्यों कि इङ्गलिस्तान अपने पास के सब डालर खर्च कर चुका और अमरीका से माल खरीदने के लिये इंगलिस्तान को खुद डालरों की जरूरत है. उधर अमरीका उस वक़्त तक इंगलिस्तान को और डालर देने

नया हिन्द
 इस मुसीबत को तो देहिर से देखते जा रहे हैं पर इस के
 اصلی कारनों اور علاج کو بہت کم سمجھ پارہے ہیں. ہماری اس مصیبت
 کی جڑیں بہت پیچھے سے شروع ہوئی ہیں. پچھلی جنگ نے انھیں
 ایسی طرح سنیچا جو. اب انگریز سرکار نے یہ فیصلہ کر کے کہ ہم اپنے
 برٹش سیکوں یعنی سٹریلنگ کی جگہ امریکی سیکے یعنی ڈالرنیں خرید
 سکتے، ہماری اس مالی آمد تجارتی مصیبت کو اور بھی بڑھا دیا ہے.
 اس کا مطلب یہ ہے کہ ہم جو کچھ خریدنا چاہتے ہیں وہ انگلستان
 ہی سے کریں جہاں سٹریلنگ چلتا ہے، امریکا یا کسی اور ایسے ملک
 سے نہ خریدیں جہاں فالو چلتا ہے. یہ جان بوجھ کر ہماری تجارت اور
 کاروبار کا گلا گھونٹنا ہے اور ہمیں مجبور کرنا ہے کہ ہم انگلستان ہی
 کو اپنا سنیچا مال بنیں اور جو کچھ خریدیں وہ بھی انگلستان ہی سے
 خریدیں. یہ تو دکھا دتی آزادی کے ساتھ زبردست تجارتی اور مالی غلامی.
 انگلستان اور امریکا کے بیچ جو سمجھوتا امریکی
 قرضے کے بارے میں ہوا ہے اس میں انگلستان نے یہ
 وعدہ کیا تھا کہ ۱۵ جولائی ۱۹۴۷ کے بعد سے سٹریلنگ کی
 جگہ ڈالر خریدنے کی لوگوں کو کھلی اجازت دے دی
 جائے گی. انگلستان کا اس وقت کا فیصلہ
 اس سمجھوتے کے خلاف ہے. ایسا کیوں ہوا؟ کیونکہ
 انگلستان اپنے پاس کے سب ڈالر خرچ کر چکا اور امریکا
 سے مال خریدنے کے لئے انگلستان کو خود ڈالروں کی ضرورت
 ہے. ادھر امریکا اس وقت تک انگلستان کو اور ڈالر دینے

के लिये तय्यार नहीं है जब तक अमरीका को ब्रिटिश साम्राज्य भर में विजारात करने की सुली इजाजत न दे दी जावे और इंगल्लिस्तान ने जो साम्राज्य के दूसरे देशों के साथ विजारात करने का एक तरह का ठेका अपने हाथ में ले रक्खा है वह न तोड़ दिया जावे. इंगल्लिस्तान इसके लिये तय्यार नहीं. वह चाहता है कि साम्राज्य के दूसरे देश अमरीका के साथ विजारात न कर इंगल्लिस्तान ही के साथ करें और अमरीका के साथ भी जो कुछ थोड़ी बहुत विजारात करें वह भी इंगल्लिस्तान की मार्फत करें.

१४ अगस्त सन् १९४७ को इंगल्लिस्तान के बिस्मे हिन्दुस्तान का कर्जो १६ अरब रुपए के बराबर था. इसी को स्टर्लिंग वैलेंस कहा जाता है. उस दिन इंगल्लिस्तान और हिन्दुस्तान में जिस समझौते पर दस्तखत हुए उसके मुताबिक इंगल्लिस्तान का कर्जो था कि यह कर्जो अदा करदे यानी १६ अरब रुपए तक का माल हिन्दुस्तान इंगल्लिस्तान से, अमरीका से या जिस मुल्क से चाहे खरीद सके. इंगल्लिस्तान ने हजार हुज्जतें करके अपने इस वादे को तोड़ दिया. हिन्दुस्तान को जो खाने की चीजों की कमी पड़ रही है वह इंगल्लिस्तान से नहीं मिल सकती. सिर्फ अमरीका से या अमरीका की मार्फत ही मिल सकती है. आज कल कई कारणों से हिन्दुस्तान को साल में कम से कम पौने चार करोड़ टन (१ टन = २८ मन) नाज की बाहर से जरूरत होती है. नाज की कमी से जनता में बहुत ज्यादा बदअमनी न फैल जावे इसलिये इंगल्लिस्तान ने हिन्दुस्तान को यह इजाजत दे दी है कि वह साढ़े तीन करोड़ पौन्ड के डालर खरीद कर उससे बाहर से नाज

के लिये तय्यार नहीं हो जब तक अमरीका को ब्रिश् साम्राज्य बहरि विजारात करने की कठ्थली इजाजत न दे दी जावे. अंगल्लिस्तान ने जो साम्राज्य के दूसरे देशों के साथ विजारात करने का एक तरह का ठेका अपने हाथ में ले रक्खा है वह न तोड़ दिया जावे. अंगल्लिस्तान इसी के लिये तय्यार नहीं. वह चाहता है कि साम्राज्य के साथ विजारात न कर इंगल्लिस्तान ही के साथ करें और अमरीका के साथ भी जो कुछ थोड़ी बहुत विजारात करें वह भी इंगल्लिस्तान की मार्फत करें.

१४ अरब रुपए के बराबर रक्क. इसी को स्टर्लिंग वैलेंस कहा जाता है. इस दिन अंगल्लिस्तान और हिन्दुस्तान में जिस समझौते पर दस्तखत हुए था कि यह कर्जो अदा करदे यानी १६ अरब रुपए तक का माल हिन्दुस्तान अंगल्लिस्तान से, अमरीका से या जिस मुल्क से चाहे खरीद सके. अंगल्लिस्तान ने हजार हुज्जतें करके अपने इस वादे को तोड़ दिया. हिन्दुस्तान को जो खाने की चीजों की कमी पड़ रही है वह इंगल्लिस्तान से नहीं मिल सकती. सिर्फ अमरीका से या अमरीका की मार्फत ही मिल सकती है. आज कल कई कारणों से हिन्दुस्तान को साल में कम से कम पौने चार करोड़ टन (१ टन = २८ मन) नाज की बाहर से जरूरत होती है. नाज की कमी से जनता में बहुत ज्यादा बदअमनी न फैल जावे इसलिये अंगल्लिस्तान ने हिन्दुस्तान को यह इजाजत दे दी है कि वह साढ़े तीन करोड़ पौन्ड के डालर खरीद कर उससे बाहर से नाज

मंगाली, इससे हिन्दुस्तान की कुल कर्मा का एक कोना भी नहीं पूरा हो सकता.

हमारा मुसीबत की एक वजह यह है कि हमारी सरकार जान बूझ कर बहुत ऊँचे दामों वाहर से नाज खरीदती रही है ताकि लंदन से जो हमें कर्जा लेना है वह किसी तरह खूब घट जावे. अगर समादारी का रिवाज खतम कर दिया जावे, खेती बाड़ी में साइन्स को नई इंजादों से फायदा उठाया जावे और हर गाँव के किसान मिल कर खेती बाड़ी करें तो हमारा कर्जा और हर गाँव के किसानों नई इंजादों से फायदा उठाया जावे और हर गाँव के किसान मिल कर खेती बाड़ी करें तो हमारा कर्जा अदा कर दे तो हम इन चीजों में बहुत तरक्की कर सकते हैं. पर इङ्गलिस्तान न यह चाहता है और न इसके लिये तय्यार है. नतीजा यह है कि हमारी हालत और गिरती जा रही है. इङ्गलिस्तान उल्टा इस कोशिश में है कि पिछली जंग की वजह से इङ्गलिस्तान की कारागरी और कारवार जो पिछड़ गया है उसे कितना तरह हमारे पैसे से, हमें दवा कर और हमें खबरदस्ती अपना गाहक बना कर उसे फिर से ठीक करले. हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों की सरकारें इस तरह फँस गई हैं कि वह आसानी से इङ्गलिस्तान के इस जाल से नहीं निकल सकती. हमारे कच्चे माल और हमारी मंडियों के कच्चे पर ही इङ्गलिस्तान मौज उड़ा सकता है और इन नए बावु राजों के जरिये इङ्गलिस्तान ने अपने इस इन्तखाम को और पक्का कर लिया है.

हमारी माली दिक्कतों को दूर करने के लिये हमारी नई सरकार ने पाँच इलाज सोचे हैं—(१) जर्मनी और कारखानों की पैदावार को बढ़ाना, (२) चीजों की कीमतों पर कड़ा 'कन्ट्रोल,' (३) 'राशनिंग'

न्यासन्द
कोच की डीया

युष्कल्ले, इस से हन्दुस्तान की कुल कर्मा कौना भी नहीं पैदा हो सकता.

हमारी मुसीबत की एक वजह यह है कि हमारी सरकार जान बूझ कर बहुत ऊँचे दामों बाहर से नाज खरीदती रही है ताकि लंदन से जो हमें कर्जा लेना है वह किसी तरह खूब घट जावे. अगर समादारी का रिवाज खतम कर दिया जावे, खेती बाड़ी में साइन्स को नई इंजादों से फायदा उठाया जावे, हर गाँव के किसान मिल कर खेती बाड़ी करें तो हमारा कर्जा अदा कर दे तो हम इन चीजों में बहुत तरक्की कर सकते हैं. पर इङ्गलिस्तान न यह चाहता है और न इसके लिये तय्यार है. नतीजा यह है कि हमारी हालत और गिरती जा रही है. इङ्गलिस्तान उल्टा इस कोशिश में है कि पिछली जंग की वजह से इङ्गलिस्तान की कारागरी और कारवार जो पिछड़ गया है उसे कितना तरह हमारे पैसे से, हमें दवा कर और हमें खबरदस्ती अपना गाहक बना कर उसे फिर से ठीक करले. हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों की सरकारें इस तरह फँस गई हैं कि वह आसानी से इङ्गलिस्तान के इस जाल से नहीं निकल सकती. हमारे कच्चे माल और हमारी मंडियों के कच्चे पर ही इङ्गलिस्तान मौज उड़ा सकता है और इन नए बावु राजों के जरिये इङ्गलिस्तान ने अपने इस इन्तखाम को और पक्का कर लिया है.

हमारी माली दिक्कतों को दूर करने के लिये हमारी नई सरकार ने पाँच इलाज सोचे हैं—(१) जर्मनी और कारखानों की पैदावार को बढ़ाना, (२) चीजों की कीमतों पर कड़ा 'कन्ट्रोल,' (३) 'राशनिंग'

बंगाल के बरिये लोगों के खर्च को हद के अन्दर रखना, (४) कारखानों में मजदूरों से ज्यादा घंटे काम लेना और (५) हिन्दुस्तान से कच्चा माल खूब बाहर भेजना, जिससे हमें दूसरे मुल्कों के सिक्के मिल सकें और उनसे हम विदेशों में विदेशी माल खरीद सकें.

यह पांचों तजवाँचें ब्रिटेन को मोटा करने वाली और हिन्दुस्तान को बरबाद करने वाली हैं.

हमारी सरकार का खयाल है कि हमारी माली दिक्कतों के सात कारन हैं— (१) खाने के सामान की बेहद कमी, (२) कपड़े की कमी, (३) लोगों के खर्च का बढ़ना, (४) क्लॉमनों का बढ़ते जाना, (५) मजदूरों में बेवैती, (६) जर्मन और कारखानों दोनों की पैदावार का घटते जाना और (७) विदेशों से माल खरीदने के लिये विदेशी सिक्कों की कमी.

जो आदमी थोड़ा बहुत भी इन चीजों को समझता है वह देख सकता है कि यह सातों हमारी मुसीबत के सबब नहीं हैं बल्कि उसके नतीजे हैं. अगर हमारा राज सचमुच जनता के कायदे को देख कर चलाया गया होता तो इनमें से कोई बात पैदा न होती.

सरकार के साँचे हुए इलाज भी विल्कुल निकम्मे हैं. जमान की पैदावार उस वक़्त तक नहीं बढ़ सकती जब तक हम किसान के ऊपर के कर्जों को रद्द करके उसके बोझ को हलका न करें और उसे खेतों को पैदावार को बढ़ाने में खुद अपना कायदा दिखाई न दे. इसके कुछ उपाय हम ऊपर बता चुके हैं. इसी तरह कारखानों की पैदावार भी तब तक नहीं बढ़ सकती जब तक मजदूर को

न्यास है. विशेष के लिये लोगों के खर्च को हद के अन्दर रकना, (२) कारखानों में मजदूरों के लिये कम लेना और (५) हिन्दुस्तान से कच्चा माल खूब बाहर भेजना. जिस से हमें दूसरे मुल्कों के सिक्के मिल सकें और उनसे हम विदेशों में विदेशी माल खरीद सकें.

यह पांचों तजवाँचें ब्रिटेन को मोटा करने वाली और हिन्दुस्तान को बरबाद करने वाली हैं.

हमारी सरकार का खयाल है कि हमारी माली दिक्कतों के सात कारन हैं— (१) खाने के सामान की बेवैती, (२) कपड़े की कमी, (३) लोगों के खर्च का बढ़ना, (४) क्लॉमनों का बढ़ते जाना, (५) मजदूरों में बेवैती, (६) जर्मन और कारखानों दोनों की पैदावार का घटते जाना और (७) विदेशों से माल खरीदने के लिये विदेशी सिक्कों की कमी.

जो आदमी थोड़ा बहुत भी इन चीजों को समझता है वह देख सकता है कि यह सातों हमारी मुसीबत के सबब नहीं हैं बल्कि इसके नतीजे हैं. अगर हमारा राज सचमुच जनता के कायदे को देख कर चलाया गया होता तो इनमें से कोई बात पैदा न होती.

सरकार के साँचे हुए इलाज भी विल्कुल निकम्मे हैं. जमान की पैदावार उस वक़्त तक नहीं बढ़ सकती जब तक हम किसान के ऊपर के कर्जों को रद्द करके उसके बोझ को हलका न करें और उसे खेतों को पैदावार को बढ़ाने में खुद अपना कायदा दिखाई न दे. इसके कुछ उपाय हम ऊपर बता चुके हैं. इसी तरह कारखानों की पैदावार भी तब तक नहीं बढ़ सकती जब तक मजदूर को

उसमें अपना कायदा दिवाई न दे. यह सब तब तक नहीं हो सकता जब तक हमारे राज का ढाँचा ही पूरी तरह न बदले.

सरकार के 'कन्ट्रोल' और 'राशनिंग' से चोर बाजारों का पैदा होना लाजमाँ है. मजदूरों से ज़यादा घंटे काम लेना और उन्हें खाना कपड़ा इतनी मंहगाई से मिलना और उनकी मजदूरी का न बढ़ना उनमें बेचैनी और गोलमाल पैदा किये बिना नहीं रह सकता, जिससे पुलिसों की लाठियों और फौज का ज़हरत और भौ ज़यादा बढ़ेगी. दूसरे मुल्कों के सिक्के लेने के लिये यहाँ के कच्चे माल को बाहर भेजना और भी ना समझो की बात है. इससे यहाँ नाज की कमी, मंहगाई और मुसोबत बढ़ती ही जावेगी.

नतीजा यह कि हमारी सब मुसोबतों का असली इलाज सिर्फ एक है और वह इस बाबू राज की जगह वह जन-राज कायम करना है जिसका हम ऊपर विक्र कर चुके हैं.

मुसलमानों मुसलमानों में—

पाकिस्तान के अन्दर खास कर सिन्ध में यह खोर की हलचल शुरू हो गई कि 'सिन्ध सिर्फ सिन्धियों के लिये है.' यानो बाहर के जो मुसलमान एक एक महकमें और एक एक कारबार के अन्दर बहाँ घुसा दिये गए हैं उनकी सिन्धी मुसलमानों को जबरदस्त शिफायत है. पाकिस्तानी सरकार इस हलचल को दबाने की पूरी कोशिश कर रही है. इसमें खास कर दिल्ली से गए हुए मुसलमान व्यापारियों और सिन्धी मुसलमान व्यापारियों में बहुत बड़ी लाग हाट चल पड़ी है. कुछ जानकारों का तो यहाँ तक खयाल है

आज की दुनिया

न्यासद

अस में अपना फामदे कहाँ न दे. ये सब तब तक नहीं हो सकता जब तक हमारे राज का ढाँचा ही पूरी तरह न बदले. सरकार के कन्ट्रोल और मॅडफेन्किंग से चोर बाजारों का पैदा होना लाजमाँ है. मजदूरों से ज़यादा कम्पे काम लेना और उन्हें खाना कपड़ा इतनी मंहगाई से मिलना और उनकी मजदूरी का न बढ़ना उनमें बेचैनी और गोलमाल पैदा किये बिना नहीं रह सकता, जिससे पुलिसों की लाठियों और फौज की ज़हरत और भौ ज़यादा बढ़ेगी. दूसरे मुल्कों के सिक्के लेने के लिये यहाँ के कच्चे माल को बाहर भेजना और भी ना समझो की बात है. इससे यहाँ नाज की कमी, मंहगाई और मुसोबत बढ़ती ही जावेगी.

नतीजा यह कि हमारी सब मुसोबतों का असली इलाज सिर्फ एक है और वह इस बाबू राज की जगह वह जन-राज कायम करना है जिसका हम ऊपर विक्र कर चुके हैं.

पाकिस्तान के अन्दर खास कर सिन्ध में यह खोर की हलचल शुरू हो गई कि 'सिन्ध सिर्फ सिन्धियों के लिये है.' यानो बाहर के जो मुसलमान एक एक महकमें और एक एक कारबार के अन्दर बहाँ घुसा दिये गए हैं उनकी सिन्धी मुसलमानों को जबरदस्त शिफायत है. पाकिस्तानी सरकार इस हलचल को दबाने की पूरी कोशिश कर रही है. इसमें खास कर दिल्ली से गए हुए मुसलमान व्यापारियों और सिन्धी मुसलमान व्यापारियों में बहुत बड़ी लाग हाट चल पड़ी है. कुछ जानकारों का तो यहाँ तक खयाल है

कि अगर आज सिन्ध के मुसलमानों को राय इस बात में ली जावे कि वह पाकिस्तान में रहना चाहते हैं या आज़ाद सिन्ध चाहते हैं तो अस्सां को सदी लोग आज़ाद सिन्ध के हक में राय देंगे" सरहद और आस पास के कबीलों के पठान भी इसी चोख से बचना चाह रहे हैं कि बाहर के मुसलमान पूँजीपति उनके यहाँ पहुँच कर उनकी रही सही खुरहाली को भी खतम न कर दें.

असली मुसोबत पाकिस्तान और हिंदुस्तान दोनों में एक ही है और वह मुसोबत है शत्रुओं और पूँजीपतियों के राज से जनता की बरबादी. जल्दी या देर में इससे जनता का उठना और सच्चा जन राज कायम करना लाजमी है. उसी दिन को टलाने के लिये जहाँ और तरकोंवें की जा रही है वहाँ एक तरकीब यह हिन्दू मुसलिम भगड़े भी है.

चीन का छुटकारा—

खबर आई है कि चांग काई शेक ने अमरीका से दो अरब डालर का कर्ज और मांगा है और उसके साथ बेहद फौजो सामान, हथियार, इवाई जहाज वगैरा, वगैरा यहाँ तक कि काही फौजें भी. पुराना कर्जो अलग रहा. इसको बजह यह है कि चीन के कम्युनिस्ट बढ़ते बले जा रहे हैं और अगर चाँग काई शेक और कम्युनिस्ट को लड़ाई ने पलटा न लाया तो हो सकता है इस साल के आखीर तक चाँग काई शेक को हालत लाइलाज हो जावे. चाँग काई शेक के पार्टी के लोग और अमरीकी भी वहाँ के कम्युनिस्ट लोगों को "डाकू" "राज के दुशमन" वगैरा नामों से पुकारते हैं और उन्हें खतम कर

के "अगर आज सिन्ध के मुसलानों की लाँसे इस बात में ली जावेंगे कि वे पाकिस्तान में रहना चाहते हैं या आज़ाद सिन्ध चाहते हैं तो उसी निस्सदी लोग आज़ाद सिन्ध के हक में राय देंगे." सरहद और आस पास के कबीलों के पठान भी इसी चोख से बचना चाह रहे हैं कि बाहर के मुसलान पूँजीपति उनके यहाँ पहुँच कर उनकी रही सही खुरहाली को भी खतम न कर दें.

असली मुसोबत पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनों में एक ही है और वह मुसोबत है शत्रुओं और पूँजीपतियों के राज से जनता की बरबादी जल्दी या देर में इस से जनता का उठना और सच्चा जन राज कायम करना लाजमी है. उसी दिन को टलाने के लिये जहाँ और तरकीबों की जा रही है वहाँ एक तरकीब है हिन्दू मुसलिम भगड़े भी हैं.

चीन का छुटकारा—

खबर आई है कि चाँग काई शेक ने अमरीका से दो अरब डालर का कर्ज मांगा है और उसके साथ बेहद फौजो सामान, हथियार, इवाई जहाज वगैरा, वगैरा यहाँ तक कि काही फौजें भी. पुराना कर्जो अलग रहा. इसको बजह यह है कि चीन के कम्युनिस्ट बढ़ते बले जा रहे हैं और अगर चाँग काई शेक और कम्युनिस्ट को लड़ाई ने पलटा न लाया तो हो सकता है इस साल के आखीर तक चाँग काई शेक को हालत लाइलाज हो जावे. चाँग काई शेक के पार्टी के लोग और अमरीकी भी वहाँ के कम्युनिस्ट लोगों को "डाकू" "राज के दुशमन" वगैरा नामों से पुकारते हैं और उन्हें खतम कर

देने के लिये चीन को ही खतम कर देने के लिये तय्यार हैं। इस वक्त चांग काई शेक की तरफ से इस घरेलू लड़ाई में, कहा जाता है, क़रीब छै अरब पैंसठ करोड़ रुपया सालाना खर्च हो रहा है। कौजों को बिन्दा रखने के लिये किसानों के साथ जो जबर-दस्तों को जा रही है वह अलग. मुल्क बरबाद हो रहा है. चारों तरफ़ बेचैनी बढ़ रही है. लोग चिल्ला रहे हैं कि लड़ाई बन्द करो. दस साल से ऊपर इस घरेलू लड़ाई को शुरू हुए हो गए. पर चांग काई शेक की जीत और दूर हटती जा रही है. मालूम होता है अमरीका की जबरदस्त मदद भी काम नहीं दे रही है. चांग काई शेक के पास इस वक्त बीस लाख से ऊपर कौजें हैं. पर मंचूरिया जहाँ उसको सबसे अच्छी कौजें थीं क़रीब क़रीब चांग काई शेक के हाथों से निकल गया. जतना जगह जगह कम्यूनिस्टों का साथ दे रही है. कई अमरीकी जानकारों और सेना-पतियों ने भी यह राय जाहिर की है कि ज़मीन चांग काई शेक के पैरों के नीचे से खिसकता मालूम हो रही है. खुद चांग काई शेक को पार्टी के अन्दर मागड़े खड़े हो गए हैं.

पेसी हालत में बहुत से राष्ट्रीय खयाल के चीनी अमरीका वालों से चिल्ला चिल्ला कर कह रहे हैं "चांग लाओ ये" जिसका मतलब है "ए बिदेसों बाप हमें बचा" पर यह बिदेसों बाप चीन और चांग काई शेक दोनों की मुसीबतों से अपना पर भरने के फिक्र में हैं. हो सकता है कि चांग काई शेक की हकूमत अभी दस बरस और चल जावे. इसकी वजह यह है कि अगर कम्यूनिस्ट लोग चांग काई शेक को पूरी तरह हरा दें तो अमरीका फिर खुले

कर देने के लिये चीन को ही खतम करने के लिये तय्यार हैं। इस वक्त चांग काई शेक की तरफ से इस घरेलू लड़ाई में, कहा जाता है, क़रीब छै अरब पैंसठ करोड़ रुपया सालाना खर्च हो रहा है। कौजों को बिन्दा रखने के लिये किसानों के साथ जो जबर-दस्तों को जा रही है वह अलग. मुल्क बरबाद हो रहा है. चारों तरफ़ बेचैनी बढ़ रही है. लोग चिल्ला रहे हैं कि लड़ाई बन्द करो. दस साल से ऊपर इस घरेलू लड़ाई को शुरू हुए हो गए. पर चांग काई शेक की जीत और दूर हटती जा रही है. मालूम होता है अमरीका की जबरदस्त मदद भी काम नहीं दे रही है. चांग काई शेक के पास इस वक्त बीस लाख से ऊपर कौजें हैं. पर मंचूरिया जहाँ उसको सबसे अच्छी कौजें थीं क़रीब क़रीब चांग काई शेक के हाथों से निकल गया. जतना जगह जगह कम्यूनिस्टों का साथ दे रही है. कई अमरीकी जानकारों और सेना-पतियों ने भी यह राय जाहिर की है कि ज़मीन चांग काई शेक के पैरों के नीचे से खिसकती मालूम हो रही है. खुद चांग काई शेक को पार्टी के अन्दर मागड़े खड़े हो गए हैं.

ऐसी हालत में बहुत से राष्ट्रीय खयाल के चीनी अमरीका वालों से चिल्ला चिल्ला कर कह रहे हैं "चांग लाओ ये" जिसका मतलब है "ए बिदेसों बाप हमें बचा" पर यह बिदेसों बाप चीन और चांग काई शेक दोनों की मुसीबतों से अपना खतम करने के लिये अपनी पर भरने के फिक्र में हैं. हो सकता है कि चांग काई शेक की हकूमत अभी दस बरस और चल जावे. इसकी वजह यह है कि अगर कम्यूनिस्ट लोग चांग काई शेक को पूरी तरह हरा दें तो अमरीका फिर खुले

चीन पर हमला कर बैठेगा जिससे तीसरी बड़ी जंग शुरू हो आवेगी. लोग इसे बचाने का कोशिश कर रहे हैं.

तीसरी बड़ी जंग दिखाई दे रही है—

पिछले ३० अगस्त को कैनेडा के अंप्रेस गवर्नर जनरल वाई काउन्ट एलेक्जेंडर ने न्यूयॉर्क में कहा था—“अमरीका को चाहिये कि ग्रीस को बहर मदद भेजे चाहे इसकी बजह से रुस से लड़ना ही क्यों न पड़े जाय. अमरीका का यह कर्ज है. हमें अपने दोस्तों का साथ देना चाहिये”. वाई काउन्ट एलेक्जेंडर के खयाल के आदमी खुद अमरीका में भी कम नहीं हैं. जून के आखीर में अमरीका के मशहूर जनरल आइसेनहोवर ने सेनेट की एक कमेटी के सामने कहा था—“अमरीका के लड़ाई के महकमें ने सन् १९४८ के लिये खर्च का जो अन्दाजा लगाया है वह यह समझ कर नहीं लगाया गया कि सन् '४८ में जंग होगी, लेकिन वह यह सोच कर भी नहीं लगाया गया कि सन् '४८ में जंग नहीं होगी.” जनरल आइसेनहोवर के लक्ष्य एक पक्के राजनेता के लक्ष्य हैं. दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है—“हम जंग नहीं चाहते, हम माल चाहते हैं, लेकिन माल नहीं मिलेगा तो हम जंग करेंगे.” जो माल अमरीका चाहता है वह इन मुल्कों में है—(१) ग्रीस, (२) चीन, (३) जर्मनी, (४) फ्रांस, (५) इटली. अमरीका इन सबको तरक़ तेबा से लपक रहा है और साथ ती साथ सरी जंग की भी बबरदस्त तयारियाँ कर रहा है. अंप्रेसों को तरह अमरीका भी दूसरे मुल्कों के राजकाजी नेताओं से काम लेना खूब जानता है.

यासन्द
पहिले पर हमला कर बैठेगा जिससे तीसरी बड़ी जंग शुरू हो आवेगी. लोग इसे बचाने का कोशिश कर रहे हैं.

तीसरी बड़ी जंग दिखाई दे रही है—
अक्टूबर ३० अगस्त को कैनेडा के अंप्रेस गवर्नर जनरल वाई काउन्ट एलेक्जेंडर ने न्यूयॉर्क में कहा था—“अमरीका को चाहिये कि ग्रीस को बहर मदद भेजे चाहे इसकी बजह से रुस से लड़ना ही क्यों न पड़े जाय. अमरीका का यह कर्ज है. हमें अपने दोस्तों का साथ देना चाहिये”. वाई काउन्ट एलेक्जेंडर के खयाल के आदमी खुद अमरीका में भी कम नहीं हैं. जून के आखीर में अमरीका के मशहूर जनरल आइसेनहोवर ने सेनेट की एक कमेटी के सामने कहा था—“अमरीका के लड़ाई के महकमें ने सन् १९४८ के लिये खर्च का जो अन्दाजा लगाया है वह यह समझ कर नहीं लगाया गया कि सन् '४८ में जंग होगी, लेकिन वह यह सोच कर भी नहीं लगाया गया कि सन् '४८ में जंग नहीं होगी.” जनरल आइसेनहोवर के लक्ष्य एक पक्के राजनेता के लक्ष्य हैं. दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है—“हम जंग नहीं चाहते, हम माल चाहते हैं, लेकिन माल नहीं मिलेगा तो हम जंग करेंगे.” जो माल अमरीका चाहता है वह इन मुल्कों में है—(१) ग्रीस, (२) चीन, (३) जर्मनी, (४) फ्रांस, (५) इटली. अमरीका इन सबकी बबरदस्त तयारियाँ कर रहा है. अंप्रेसों की तरह अमरीका भी दूसरे मुल्कों के राजकाजी नेताओं से काम लेना खूब जानता है.

सन् १९४८ के बजट में प्रेसिडेंट ट्रूमैन ने सैंतीस अरब रुपए से ऊपर कौजी खर्च के लिये रक्खा है यानी कुल अमरीकी बजट का करीब करीब एक तिहाई. कौजी खर्च के लिये और सब खर्चों को कम किया जा रहा है. खुद अमरीका में भा नोटों का तादाद बढ़ती जा रही है. माली संकट के डर से अमरीकी सरकार भी खाली नहीं है. चीजों की कीमत सन् १९४६ से ढाई गुना है. पूँजी-पतियों का मुनाफा भी करीब करीब उसी औसत से बढ़ा है. राष्ट्र की पैदावार घट रही है. पर अमरीका को ज्यादा राख है. पैसेकिक महासागर में अपने कौजी अड्डे बनाने से, उत्तर एट-लान्टिक महासागर में अड्डे बनाने से, बीच एशिया में अपनी जहाजों को फँसा देने से, हर अमरीकी को सिपाही बना देने से और सारे अमरीका इङ्गलिस्तान और पच्छिमी योरप को अमरीकी हंग के नए हथियारों से भर देने से. अमरीका तेजी के साथ तँसरी जंग की तरफ जा रहा है.

१९४७ के बजट में प्रेसिडेंट ट्रूमैन ने सैंतीस अरब रुपए से और फौजी खर्च के लिये रक्खा है यानी कुल अमरीकी बजट का करीब करीब एक तिहाई. फौजी खर्च के लिये और सब खर्चों को कम किया जा रहा है. खुद अमरीका में भी नोटों की तुलना बढ़ती जा रही है. माली संकट के डर से अमरीकी सरकार भी खाली नहीं है. चीजों की कीमत सन् १९४६ से ढाई गुना है. पूँजी-पतियों का मुनाफा भी करीब करीब उसी औसत से बढ़ा है. राष्ट्र की पैदावार घट रही है. पर अमरीका को ज्यादा राख है. पैसेकिक महासागर में अपने कौजी अड्डे बनाने से, उत्तर एट-लान्टिक महासागर में अड्डे बनाने से, बीच एशिया में अपनी जहाजों को फँसा देने से, हर अमरीकी को सिपाही बना देने से और सारे अमरीका इङ्गलिस्तान और पच्छिमी योरप को अमरीकी हंग के नए हथियारों से भर देने से. अमरीका तेजी के साथ तँसरी जंग की तरफ जा रहा है.

हमारी बुराई

हमारी राय

दो अक्टूबर—

दो अक्टूबर न जाने कितनी पुरानी है. पर आने वाली दो अक्टूबर को हम उन्नासीवों दो अक्टूबर कह कर ही याद करेंगे. क्योंकि वह देश के प्यारे गांधी जी का जनम दिन है. दुनिया भर के प्यारे हो जाने की वजह से उनकी जन्म भूमि बहुत पीछे पड़ गई. दुनिया भर की मानी हुई शख्सियत को तारीख से ही याद रखना ठीक है. आसानी भी इसी में है. गांधी जी ने अपने अपने देश को ही नहीं चमकाया. सारी दुनिया का साथ देना ठीक है. कुमारी पल्लव का कहना ठीक ही है कि 'गांधी जी अब एक व्यक्ति नहीं हैं बल्कि इस दुखी संसार में रहने का एक तरीका है.'

रेगमाल (सैन्ड पेपर) लकड़ी को इसलिये नहीं रगड़ता कि वह उसे चिकनी बना दे. क्योंकि वही रेगमाल उंगली को रगड़ कर उसमें खून निकाल देगा. सान हीरे को इसलिये नहीं रगड़ती कि वह उसे चमकाना चाहती है, क्योंकि वह लकड़ी को रगड़ कर उसके परखचे उड़ा देगी पर चमका न पाएगी, आग सोने को चमकाने के लिये नहीं शरम करती क्योंकि अगर ऐसा होता तो वह पीतल को भी चमका देती, असल में लकड़ी, हीरे और सोने में चिकनापन, दमक और चमक पहले से ही मौजूद है. ठीक यही हाल गांधी जी का है. दुनिया उन्हें इसलिये गाली नहीं देती

दो अक्टूबर—

दो अक्टूबर न जाने कितनी पुरानी है. पर आने वाली दो अक्टूबर को हम अत्सीवों दो अक्टूबर कह कर ही याद करेंगे. क्योंकि वह देश के प्यारे गांधी जी का जनम दिन है. दुनिया भर के प्यारे हो जाने की वजह से उनकी जन्म भूमि बहुत पीछे पड़ गई. दुनिया भर की मानी हुई शख्सियत को तारीख से ही याद रखना ठीक है. आसानी भी इसी में है. गांधी जी ने अपने प्यारे देश को ही नहीं चमकाया. सारी दुनिया का साथ देना ठीक है. कुमारी पल्लव का कहना ठीक ही है कि 'गांधी जी अब एक व्यक्ति नहीं हैं बल्कि इस दुखी संसार में रहने का एक तरीका है.'

रेगमाल (सैन्ड पेपर) लकड़ी को इसलिये नहीं रगड़ता कि वह उसे चमकाना चाहती है, क्योंकि वह लकड़ी को रगड़ कर उसके परखचे उड़ा देगी पर चमका न पाएगी, आग सोने को चमकाने के लिये नहीं शरम करती क्योंकि अगर ऐसा होता तो वह पीतल को भी चमका देती, असल में लकड़ी, हीरे और सोने में चिकनापन, दमक और चमक पहले से ही मौजूद है. ठीक यही हाल गांधी जी का है. दुनिया उन्हें इसलिये गाली नहीं देती

कि वह उन्हें ऊँचा उठाना चाहती है, अगर ऐसा होता तो दुनिया ने गाली दे-देकर सैकड़ों ही को ऊँचा उठा दिया होता. दुनिया गांधी जी को इसलिये नहीं सताती कि वह उनको सबका तख़्तों में इज्जत को जगह देना चाहती है, अगर ऐसा होता तो दुनिया सत्ता सत्ता कर कितनों ही को महात्मा बना देती असल बात यह है कि गांधी जी खुद ही कुछ ऐसी चीज़ के बने हुए हैं कि उन्हें रगड़ो, उन्हें मारो, काटो या उन्हें सताओ वह तो वही रहेंगे जो वह हैं.

गांधी जी जिस सचाई और अहिंसा पर आज अड़े हुए हैं उस पर तो वह बचपन से अड़े हुए हैं, पर आज उनकी यह अड़ा दुनिया भर को बुरा लग रही है और हिंदुस्तान के बहुत से हिंदुओं को तो एक आँख नहीं सुहाती, पर वह क्या करें, किसी को बुरी लगे लगा करें, किसी को न सुहाए, वह तो सिर से पैर तक सच और अहिंसा के पुतले हैं और वहां रहेंगे, सूज ने गरमियों में करोड़ों को गालियों खा कर चमकना नहीं छोड़ और चौद ने कितनी ही वियोगिनियों के उलाहने सुन कर ठंडक पहुँचाना नहीं छोड़ा, तब गांधी जी कैसे उस चीज़ को छोड़ सकते हैं जिसके वह बने हुए हैं, गांधी जी का सच और अहिंसा छोड़ना गांधी का खतम हो जाना है.

यह मार काट बार दिन रहने वालों चीज़ है, मार काट का दूसरा नाम है 'गरमाई हुई अहिंसा', लूट पाट का दूसरा नाम है 'गरमाया हुआ सत्य', गरमाया हुआ पानी ठंडा होता ही है और उसके ठंडे रहने में ही दुनिया का भला है, ठंडक इसी तरह से

कथोरे सार

हमारी राई

नया हंस

कह वह अखिरी ओखा अथमाना चाहती थी, अगर ऐसा होता तो दुनिया ने गाली दे दे कर सिकुड़ों ही को ओखा अथमा दिया होता, दुनिया गांधी जी को इस लिये सताती है कि वह उनको सबकी लूपट में उलट की जगह देना चाहती थी, अगर ऐसा होता तो दुनिया सत्ता सत्ता कर कितनी ही को महात्मा बना देती, असल बात यह है कि गांधी जी खुद ही कुछ ऐसी चीज़ के बने हुए हैं कि गांधी जी को बुरा लगे लगा दें, किसी को बुरा लगे लगा दें, किसी को न सुहाए, वह तो सिर से पैर तक सच और अहिंसा के पुतले हैं और वहां रहेंगे, सूज ने गरमियों में करोड़ों को गालियों खा कर चमकना नहीं छोड़ और चौद ने कितनी ही वियोगिनियों के उलाहने सुन कर ठंडक पहुँचाना नहीं छोड़ा, तब गांधी जी कैसे उस चीज़ को छोड़ सकते हैं जिसके वह बने हुए हैं, गांधी जी का सच और अहिंसा छोड़ना गांधी का खतम हो जाना है.

असल बात यह है कि गांधी जी खुद ही कुछ ऐसी चीज़ के बने हुए हैं कि गांधी जी को बुरा लगे लगा दें, किसी को बुरा लगे लगा दें, किसी को न सुहाए, वह तो सिर से पैर तक सच और अहिंसा के पुतले हैं और वहां रहेंगे, सूज ने गरमियों में करोड़ों को गालियों खा कर चमकना नहीं छोड़ और चौद ने कितनी ही वियोगिनियों के उलाहने सुन कर ठंडक पहुँचाना नहीं छोड़ा, तब गांधी जी कैसे उस चीज़ को छोड़ सकते हैं जिसके वह बने हुए हैं, गांधी जी का सच और अहिंसा छोड़ना गांधी का खतम हो जाना है.

यह मार काट बार दिन रहने वाली चीज़ है, मार काट का दूसरा नाम है 'गरमाई हुई अहिंसा', लूट पाट का दूसरा नाम है 'गरमाया हुआ सत्य', गरमाया हुआ पानी ठंडा होता ही है और उसके ठंडे रहने में ही दुनिया का भला है, ठंडक इसी तरह से

'गरमाई हुई अहिंसा' और 'गरमाया हुआ सत्य' ठंडे होंगे ही. फिर गांधी जी क्यों खुद गरमा कर ऐसा कर डालें जिसके लिये उनको भी हम सब की तरह पछताना पड़े.

हम बहुत छोटे हैं. हमको उरा उरा देर में पछताना पड़ता है और बड़े बड़े पछतावे करने पड़ते हैं. गांधी जी बहुत बड़े हैं. उनको अपने किये पर शायद ही कभी पछताना पड़ता हो. पछताना अच्छी चीज नहीं. इतना ही नहीं पछताना बुरी चीज है और गांधी जी पछताने के लिये कोई काम क्यों करें. सुखी रहने के लिये गांधी जी की नकल करो, तब बोलो 'गांधी जी की जय'! और 'जय हिंद'!

— भगवान दीन

२३ सितम्बर सन् '४७

आबादी की बदल-बदल--

बुलार में. नशों में और तुसे में आदमी जितनी बातें बकता है वह बहुत कर वह होता है जिनको वह जी से कभी नहीं चाहता. आज पाकिस्तानियों और हिन्दुस्तानियों को बुलार भी बड़ा हुआ है. नशा भी है और गुस्सा तो बेहद है ही. ऐसी हालत में आबादी की बदल बदल के लिये शोर मचाने के वहाँ माने हो सकते हैं जो बुलार में किसी ऐसा बकने वाले के हुआ करते हैं. बुलार वाले की बातें तनदुरुस्त आदमी को हँसते हँसते सुन लेना चाहिये. उनसे न भड़कने की जरूरत है. न उन पर सोच करने की. घरों में यह रोज ही होता है. नशों में आए दिन किस के घर बतन

नया हिन्द
ग़ुरमाई हुयी अहिंसा' ओर 'ग़ुरमाया हुवा सत्य' ठण्डे होंगे ही. फिर ग़ान्धी जी क्यों खुद ग़रमा कर ऐसा कर डालें जिसके लिये उनको भी हम सब की तरह पछताना पड़े.

हम बहुत पछोटे हैं 'हम को डरा डरा देर में पछताना पड़ता हो ओर बड़े बड़े पछतावे करने पड़ते हैं. ग़ान्धी जी बहुत बड़े हैं. उन को अपने सन्के बर शायद ही पछताना पड़ता हो. पछताना अचिी चीज़ न्हीं. इतना ही न्हीं पछताना बुरी चीज़ हो ओर ग़ान्धी जी पछताने के लिये कौनी काम किये करेन. सखी रहने के लिये ग़ान्धी जी की नकल करो! ओर 'जय हिंद'!

— जेकवान दीन

२३ सितम्बर सन् '४७

आबादी की ओल बदल--

बुलार में. नशों में ओर तुसे में आदमी जितनी बातें बकता हो ओर बहुत कर वह होता है जिनको वह जी से कभी न्हीं चाहता. आज पाकिस्तानियों ओर हिन्दुस्तानियों को बुलार भी बड़ा हुआ है. नशा भी है ओर गुस्सा तो बेहद है ही. ऐसी हालत में आबादी की बदल बदल के लिये शोर मचाने के वहाँ माने हो सकते हैं जो बुलार में किसी ऐसा बकने वाले के हुआ करते हैं. बुलार वाले की बातें तनदुरुस्त आदमी को हँसते हँसते सुन लेना चाहिये. उनसे न भड़कने की जरूरत हो. न उन पर सोच करने की. घरों में यह रोज ही होता हो. नशों में आये दिन किस के घर बतन

नहीं टूटने और किसके यहाँ बच्चे नहीं पिटते. पर समझदार भाई बहन और माएं यह सब बरदाश्त कर लेती हैं, टूटी फूटी चीजों को समेट कर रख लेती हैं और जहाँ तक बच्चे बहुत सी चीजों को टूटने फूटने से बचा लेती हैं. ठीक इसी तरह से आज की हवा में समझदारों का यही काम है कि वह अपने अपने हिस्से को आवादी को दूसरे हिस्से में जाने से रोकें. जो चला पड़े हो उन्हें समझकर वापस लाएं. जो दूसरे मुल्क में पहुँच चुके हों उन्हें वापस बुलाने की सारी मुनासिब कोशिशें करें. इसी में उनका और सारी दुनिया का भला है.

दुनिया में कोई मुल्क ऐसा नहीं है जहाँ एक ही धरम के आदमी बसते हों या एक ही तरह के आदमी बसते हों यानी एक ही खयाल के. फिर कैसे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान यह सोच रहे हैं कि वह अपने यहाँ एक ही धरम के मानने वालों को बसायेंगे, और एक ही खयाल के आदमियों को जगाह देंगे. मुसलमानों में बूढ़ शिया, सुन्नी, नेचरी, अगा खानों, बहाई और न जाने कितने अलहदा खयाल के लोग हैं. अगर यह सब पाकिस्तान में बस सकें तो हिन्दुओं या सिक्खों के बसने में क्या दिक्कत हो सकती है. हिन्दुओं में तो पहले ही से जैन, बौद्ध, शाक, शैव, सिख, आर्य समाजों, राधा स्वामी न जाने कितने मत और खयाल वाले शामिल हैं. जब यह सब हिन्दुस्तान में बस सकते हैं तो मुसलमान क्यों नहीं बस सकते. बस सकने का खयाल नहीं, हिन्दुस्तान में हिन्दुओं की भलाई के लिये मुसलमानों का रहना जरूरी है और पाकिस्तान में इस्लाम की भलाई इसी में है कि वह हिन्दुओं

नहीं लुटते और किसी के बियान बच्चे नहीं बँटते. बरखे वाला कहीं भी और माँस सब बरदाश्त कर लेती हैं, लुटी बूझी चीजों को समिट कर रक्ख लेती हैं और जहाँ तक बच्चे बहुत सी चीजों को टूटने बूझने से बचा लेती हैं. कृषिक इसी तरह से आज की हवा में समझदारों का यही काम है कि वह अपने हिस्से को आवादी को दूसरे हिस्से में जाने से रोकें. जो चला पड़े हों उन्हें वापस बूझा कर वापस लायें. जो दूसरे मुल्क में बँट चुके हों उन्हें वापस बुलाने की सारी मुनासिब कोशिशें करीं. इसी में उनका और सारी दुनिया का कभला है.

दुनिया में कौनो मुल्क इसा नैस हउ जहाँ एक ही धरम के आदी बँटे हों या एक ही तरह के आदी बँटे हों यैनी एक ही खयाल कभर किये हँदुस्तान और पाकस्तान ये सुबुज नैस हँ हँ के वे अपने यहाँ एक ही धरम के माने वालों को बसायेंगे, और एक ही खयाल के आदीयों को जगह देंगे. मुसलानों में खुद छिंद, सुन्नी, खैरी, अफगान, बहाई, अद नै बँटे कँटे छुद्रे छुद्रे खयाल के लोग हँ. अगरे ये सब पाकस्तान में बँस सकेंगे. तो हँदुओं या सिक्खों के बँसने में क्या दिक्कत हो सकती हउ. हँदुओं में तो पहले ही से जैन, बौद्ध, शाक, शैव, सिख, आर्य समाजों, राधा स्वामी न जाने कितने मत और खयाल वाले शामिल हँ. जब ये सब हँदुस्तान में बँस सकेंगे तो मुसलान किये नैस बँस सकेंगे. बँस सके का खयाल नैस, हँदुस्तान में हँदुओं की कभलाई के लै मुसलानों का रहना खरूरी हउ और पाकस्तान में इस्लाम की कभलाई इसी में हउ के वे हँदुओं

को अपने यहाँ बसने दे. जिस तरह हिन्दी और उर्दू लिखावट हिन्दुस्तानी नदों को उबल कर फारसी अरबी या संस्कृत की तरफ जाने से रोकने के लिये जरूरी है उसी तरह पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में नेशनलियत की नदों को उबल कर हिन्दू और मुसलमान पने में बदलने से रोकने के लिये हिन्दू और मुसलमानों का दोनों जगह बसना और रहना जरूरी है. नेशनलियत नाम ही है कई धर्म वालों का मिल कर रहना और उस मुल्क की खातिर कुरबान होने की क्राविलियत रखना. नेशनलियत हमेशा से जमात की चीज रही है और जमात की ही चीज है. धरम हमेशा से एक आदर्मी की चीज रहा है और बढ़ कर जमात का भी बन जाता रहा है. बुद्ध पहले अकेले बौद्ध थे, महावीर अकेले ही जैन पर नेशन कभी एक आदर्मी की सुन्ने में नहीं आई. धरम मिलिकियत का क्रायल नहीं. नेशन मिलिकियत के बिना बनती नहीं. मोहम्मद साहब ने खुदा के दरबार में जाने से पहले हजरत आयशा से पूछ लिया था कि हमारे पास कुछ है तो नहीं. उन्होंने जवाब दिया कि-हाँ कुछ सिक्के हैं. इसलाम के पैगम्बर ने उसी वक्त हुकुम दिया कि उन सिक्कों को शौरन गरीबों में बाँट दिया जावे ताकि वह खुदा के सामने यह न कह सकें कि वह किसी चीज के मालिक भी थे. हिन्दू धरम भी ऐसी मिसालों से भरा पड़ा है. इसलिये धरम जमात की चीज नहीं हो सकती. वह तो एक एक आदर्मी का अलग हो रहेगा और इसी में सबका भला है. यूँ नेशनलियत को अपने में सब धर्म वालों और सब खयाल वालों को जगह देनी पड़ेगी. आज का जोश कम होने दोजिये पाकिस्तान को बुला

को अपने यहाँ बसने दे. जिस तरह हिन्दी और उर्दू लिखावट हिन्दुस्तानी नदों को उबल कर फारसी अरबी या संस्कृत की तरफ जाने से रोकने के लिये जरूरी है उसी तरह पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में नेशनलियत की नदों को उबल कर हिन्दू और मुसलमान पने में बदलने से रोकने के लिये हिन्दू और मुसलमानों का दोनों जगह बसना और रहना जरूरी है. नेशनलियत नाम ही है कई धर्म वालों का मिल कर रहना और उस मुल्क की खातिर कुरबान होने की क्राविलियत रखना. नेशनलियत हमेशा से जमात की चीज रही है और बढ़ कर जमात का भी बन जाता रहा है. बुद्ध पहले अकेले बौद्ध थे, महावीर अकेले ही जैन पर नेशन कभी एक आदर्मी की सुन्ने में नहीं आई. धरम मिलिकियत का क्रायल नहीं. नेशन मिलिकियत के बिना बनती नहीं. मोहम्मद साहब ने खुदा के दरबार में जाने से पहले हजरत आयशा से पूछ लिया था कि हमारे पास कुछ है तो नहीं. उन्होंने जवाब दिया कि-हाँ कुछ सिक्के हैं. इसलाम के पैगम्बर ने उसी वक्त हुकुम दिया कि उन सिक्कों को शौरन गरीबों में बाँट दिया जावे ताकि वह खुदा के सामने यह न कह सकें कि वह किसी चीज के मालिक भी थे. हिन्दू धरम भी ऐसी मिसालों से भरा पड़ा है. इसलिये धरम जमात की चीज नहीं हो सकती. वह तो एक एक आदर्मी का अलग हो रहेगा और इसी में सबका भला है. यूँ नेशनलियत को अपने में सब धर्म वालों और सब खयाल वालों को जगह देनी पड़ेगी. आज का जोश कम होने दोजिये पाकिस्तान को बुला

हाने से पहले हजरत عائشة से पूछ लिया था कि हमारे पास कुछ है तो नहीं. उन्होंने जवाब दिया कि-हाँ कुछ सिक्के हैं. इसलाम के पैगम्बर ने उसी वक्त हुकुम दिया कि उन सिक्कों को शौरन गरीबों में बाँट दिया जावे ताकि वह खुदा के सामने यह न कह सकें कि वह किसी चीज के मालिक भी थे. हिन्दू धरम भी ऐसी मिसालों से भरा पड़ा है. इसलिये धरम जमात की चीज नहीं हो सकती. वह तो एक एक आदर्मी का अलग हो रहेगा और इसी में सबका भला है. यूँ नेशनलियत को अपने में सब धर्म वालों और सब खयाल वालों को जगह देनी पड़ेगी. आज का जोश कम होने दोजिये पाकिस्तान को बुला

घुला कर हिन्दुओं को बसाना पड़ेगा. हिन्दुस्तान को गान्धी जी के रहते शायद ऐसी अरुत न पड़ेगी क्यों कि वह मुसलमानों को जाने ही नहीं देंगे.

आबादी बढ़ल कर पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की नौसिखिया सरकारें शायद यह सोचती हों कि इस भाग जाने वालों को जमान और माल की मालिक बन जायंगी और यों मालदार हो जायंगी पर वह यह नहीं सोचती कि वह ऐसा करने में ऐसा हो कर रही है जैसा उस शख्स ने किया था जिसके पास सोने का खंडा देने वाली मुर्गी थी. कमाने वाले दिसारों को मुल्क से बाहर निकाल कर मुल्क कुछ दिन के लिये ही मालदार बन सकता है हमेशा के लिये नहीं. कमाऊ पूत को घर से निकाल कर उसके भाई कुछ पैसा उससे जरूर छीन सकते हैं पर उसकी कमाई की काविलियत में से रत्ती भर नहीं पा सकते. मिसाल के लिये इंदौर के एक बड़े सेठ ने बहां के राजा से न बनने पर इंदौर से निकल जाना तय किया, तो राजा घबरा उठा और उसने उसको राबो करके अपने यहां बसाए रखना ही ठाँक समझा नहीं तो इंदौर को शान ही उठ जाती. आबादी के अदल बदल का जोश ठंडा होने पर दोनों सरकारों को हाथ मल कर पछताना पड़ेगा. पर जो पछताने के लिये ही पैदा हुए हैं वह जोश में क्यों किसी की सुनने लगे.

आबादी के अदल बदल को रोकना जनता का पहला काम होना चाहिये. इसकी खातिर उन्हें सरकारों से लड़ बैठना चाहिये. उनको बदल डालन चाहिये. पर जनता जब इतनी समझदार

बलाक हेंदू. वुल को बसाना पड़ेगा. हेंदुस्तान को कान्डुही जी के रहते शायद ऐसी ضرورت न पड़ेगी कि कौनके वे मुसलमान को जाने ही नहीं देंगे. आबादी बढ़ल कर पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की नौसिखिया सरकारें शायद ऐसी अरुत न पड़ेगी क्यों कि वह मुसलमानों को जाने ही नहीं देंगे. आबादी बढ़ल कर पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की नौसिखिया सरकारें शायद ऐसी अरुत न पड़ेगी क्यों कि वह मुसलमानों को जाने ही नहीं देंगे. आबादी बढ़ल कर पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की नौसिखिया सरकारें शायद ऐसी अरुत न पड़ेगी क्यों कि वह मुसलमानों को जाने ही नहीं देंगे.

आबादी के अदल बदल को रोकना जनता का पहला काम होना चाहिये. इसकी खातिर उन्हें सरकारों से लड़ बैठना चाहिये. उनको बदल डालना चाहिये. पर जनता जब इतनी समझदार

होगा तो यह नीबत ही नहीं आयेगी क्योंकि वह आबादी के अदल बदल के लिये तय्यार ही नहीं होगी, आबादी की पूरी अदल बदल के बाद पाकिस्तान में शिया सुन्नी, मुसल पठान, सिन्धी बम्बईये भगाड़े उठें या न उठें हिन्दुस्तान में तो दस बरस के अन्दर ही सिक्ख आर्य समाजी, जैना सनातनी भगाड़े खड़े हो जायेंगे, इन भगाड़ों में सरकार या सरकारों का भला भले ही हो जनता का कोई भलाई नहीं.

आबादी की अदल बदल और इस मार काट और लूट पाट से जाने अन जाने दोनों सरकारों का एक माने में भला हो रहा है क्योंकि आज दोनों सरकारों की जनता इस भगाड़े की बजह से जो मिलता है उसे ही खा कर रह जाती है और ज्यादा शोर नहीं मचाती. अगर आज यह भगाड़े न होते तो पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की जनता ने दोनों सरकारों का नाक में दम कर दिया होता. इन लड़ाई दंगों की बजह से एसेम्बलियां सरकार से किसी बात का पूछताछ ही नहीं कर सकतीं. जनता को तबुद ही समझ कर अपने भले के लिये इस मार काट को बन्द कर देना चाहिये. पंजाबी और बाहर गई हुई आबादी को और न बुला लेना चाहिये. पंजाबी बरा तो सांचे कि पच्छिमी बंगाल से आप हुए बंगाली मुसलमान पच्छिमी पंजाब में बस कर उनके ज्यादा नजदीक हो सकते हैं या फिर वापस बुलाए हुए वह पंजाबी हिन्दू जो एक भरतवा उनके दोस्त और साथी रह चुके हैं. हिन्दुस्तानी बरा छाती पर हाथ धर कर विचारें कि कैसे वह दोस्त और साथी मुसलमानों को निकाल कर और उनकी जगह अजनबी पंजाबियों को बसा कर खुश रह

होगी तो ये नोबत ही नहीं आयेगी किन्तु वे आबादी के अदल बदल के लिये तय्यार ही नहीं होगी. आबादी की पूरी अदल बदल के बाद पाकिस्तान में शिया सुन्नी, मुसल पठान, सिन्धी बम्बईये भगाड़े उठें या न उठें हिन्दुस्तान में तो दस बरस के अन्दर ही सिक्ख आर्य समाजी, जैना सनातनी भगाड़े खड़े हो जायेंगे, इन भगाड़ों में सरकार या सरकारों का भला भले ही हो जनता का कोई भलाई नहीं.

आबादी की अदल बदल और इस मार काट और लूट पाट से जाने जाने दोनوں सरकारوں کا ایک معنے میں کھلا ہو رہا ہے کیونکہ آج دونوں सरकारوں کی جنتا اس جھگڑے کی وجہ سے بولتا ہے اسے ہی کھاکر رہ جاتی ہے "اگر زیادہ شوق نہیں مچاتی. اگر آج ہی جھگڑے نہ ہوتے تو پاکستان اور ہندوستان کی جنتا نے دونوں सरकारوں کا ناک میں دم کر دیا ہوتا. ان لڑائی دنگوں کی وجہ سے اسمبلیاں सरकार سے کسی بات کی پوچھتا پچھ ہی نہیں کر سکتیں. جنتا کو خود ہی سمجھ کر اپنے کھلے کے لئے اس مار کاٹ کو بند کر دینا چاہئے، اور باہر گئی ہوئی آبا دی کو فوراً بلا لینا چاہئے.

پنجابی ذرا تو سوچیں کہ پچھی بنگال سے آئے ہوئے بنگالی مسلمان پچھی پنجاب میں بس کر ان کے زیادہ نزدیک ہو سکتے ہیں یا پھر واپس بلائے ہوئے وہ پنجابی ہند جو ایک مرتبہ ان کے دوست اور ساتھی رہ چکے ہیں. ہندوستانی ذرا چھاتی یہ نہ ہاتھ دھو کر بجاویں کر کیسے وہ دوست اور ساتھی مسلمانوں کو نکال کر اور ان کی جگہ اجنبی پنجابیوں کو بسا کر خوش رہ

سکتے ہیں۔ آج ہم جوش میں ہیں تب بھی پنجاب سے بچ کر بھاگے ہوؤں کو یہاں ہمیشہ کے لئے بک کر ہم زیادہ خوش نہیں ہیں۔ جوش کم ہونے پر تو ہم سر یکڑ کر رہ جائیں گے۔ ان کو ہمارے ساتھ گھٹانے کی باتیں برسوں ہی لگائیں گے اور تب تک تو سب کو عقل آ ہی جائے گی اور سب اپنی اپنی جگہ ٹوٹ بچھڑیں گے۔ مطلب یہ ہے کہ اس وقت جو یہ آدل بدل ہو رہی ہے وہ بالکل غلط ہے اور اس غلطی سے جتنی جلدی بجا جائے اتنا ہی بھٹیک۔

اگر یہ آبادی کی آدل بدل مار کاٹ اور ٹوٹ پاٹ کا سلسلہ چھہ مینے بھی اور چلتا رہا تو پھر پاکستانی اور ہندستانی یہ اچھی طرح سمجھ لیں کہ وہ آزادی کی دیوی جنھوں نے ان کو اپنے ٹیٹ کھول کر درشن دئے ہیں ایسا ددوازا بند کر لیں۔ گی اور غلامی رانی کا پھر سے راج قائم ہو جائے گا۔ کون سمجھ دار ہے جو ایسا چاہے گا۔ ہر سمجھ داری اب ہو کہاں؟ جوش کے وہ پاس نہیں بچھڑک سکتی۔ دونوں سرکاریں، پاکستان اور ہندستان کی جنتا ذرا جوش کم کریں تو گاندھی جی کی بات ہی نہیں سمجھ میں آئے گی، وہ سب کے سب اٹھیں گے سر میں لٹا کر پکارنے لگیں گے۔ ہمیں غلامی نہیں چاہئے اس لئے ہم نہ آبادی کا آدل بدل چاہتے ہیں اور نہ مار پیٹ کو ہی جاری رکھنا چاہتے ہیں۔ ذرا جوش کم کیجئے، مار کاٹ، ٹوٹ پاٹ اور آبادی کی آدل بدل کر لگئے۔ اور نشہ اترنے پر نہ ہر معلوم ہونے لگے گی۔

سکتے ہیں۔ آج ہم جوش میں ہیں تب بھی پنجاب سے بچ کر بھاگے ہوؤں کو یہاں ہمیشہ کے لئے بک کر ہم زیادہ خوش نہیں ہیں۔ جوش کم ہونے پر تو ہم سر یکڑ کر رہ جائیں گے۔ ان کو ہمارے ساتھ گھٹانے کی باتیں برسوں ہی لگائیں گے اور تب تک تو سب کو عقل آ ہی جائے گی اور سب اپنی اپنی جگہ ٹوٹ بچھڑیں گے۔ مطلب یہ ہے کہ اس وقت جو یہ آدل بدل ہو رہی ہے وہ بالکل غلط ہے اور اس غلطی سے جتنی جلدی بجا جائے اتنا ہی بھٹیک۔

اگر یہ آبادی کی آدل بدل مار کاٹ اور ٹوٹ پاٹ کا سلسلہ چھہ مینے بھی اور چلتا رہا تو پھر پاکستانی اور ہندستانی یہ اچھی طرح سمجھ لیں کہ وہ آزادی کی دیوی جنھوں نے ان کو اپنے ٹیٹ کھول کر درشن دئے ہیں ایسا ددوازا بند کر لیں۔ گی اور غلامی رانی کا پھر سے راج قائم ہو جائے گا۔ کون سمجھ دار ہے جو ایسا چاہے گا۔ ہر سمجھ داری اب ہو کہاں؟ جوش کے وہ پاس نہیں بچھڑک سکتی۔ دونوں سرکاریں، پاکستان اور ہندستان کی جنتا ذرا جوش کم کریں تو گاندھی جی کی بات ہی نہیں سمجھ میں آئے گی، وہ سب کے سب اٹھیں گے سر میں لٹا کر پکارنے لگیں گے۔ ہمیں غلامی نہیں چاہئے اس لئے ہم نہ آبادی کا آدل بدل چاہتے ہیں اور نہ مار پیٹ کو ہی جاری رکھنا چاہتے ہیں۔ ذرا جوش کم کیجئے، مار کاٹ، ٹوٹ پاٹ اور آبادی کی آدل بدل کر لگئے۔ اور نشہ اترنے پر نہ ہر معلوم ہونے لگے گی۔

اگر یہ آبادی کی آدل بدل مار کاٹ اور ٹوٹ پاٹ کا سلسلہ چھہ مینے بھی اور چلتا رہا تو پھر پاکستانی اور ہندستانی یہ اچھی طرح سمجھ لیں کہ وہ آزادی کی دیوی جنھوں نے ان کو اپنے ٹیٹ کھول کر درشن دئے ہیں ایسا ددوازا بند کر لیں۔ گی اور غلامی رانی کا پھر سے راج قائم ہو جائے گا۔ کون سمجھ دار ہے جو ایسا چاہے گا۔ ہر سمجھ داری اب ہو کہاں؟ جوش کے وہ پاس نہیں بچھڑک سکتی۔ دونوں سرکاریں، پاکستان اور ہندستان کی جنتا ذرا جوش کم کریں تو گاندھی جی کی بات ہی نہیں سمجھ میں آئے گی، وہ سب کے سب اٹھیں گے سر میں لٹا کر پکارنے لگیں گے۔ ہمیں غلامی نہیں چاہئے اس لئے ہم نہ آبادی کا آدل بدل چاہتے ہیں اور نہ مار پیٹ کو ہی جاری رکھنا چاہتے ہیں۔ ذرا جوش کم کیجئے، مار کاٹ، ٹوٹ پاٹ اور آبادی کی آدل بدل کر لگئے۔ اور نشہ اترنے پر نہ ہر معلوم ہونے لگے گی۔

पद्धताने से पहले ही विद्वियों को खेत चुगते से रोकना.

—भगवान दीन

२३—६—४७

निन्यातवे की कुरबानी—

यू० पी० के बड़े बच्चीर ही नहीं यू० पी० की जनता भी आज किसी किसी मुसलमान के लिये निन्यातवे आदिमियों की कुरबानी करने के लिये तैयार है. निन्यातवे ही नहीं, किसी किसी के लिये जनता नौ सौ निन्यातवे और नौ हजार नौ सौ निन्यातवे तक की कुरबानी करने के लिये तैयार हो सकती है. मिसाल के लिये सरहद के गांधी खान अब्दुल सफ्फार खां या कांग्रेस के कई साल रहे हुए सदर और आम्र कल के तालीमी बच्चीर मौलाना अबुलकलाम आजाद, यह और ऐसी ही और बहुत सों हस्तियां मुल्क में आज मौजूद हैं जिनके लिये हिन्दू जनता को हजारों की तादाद में कुरबान हो जाने के लिये किसी सूबे के बच्चीर आज़म की तक्रार की जरूरत नहीं पड़ेगी. फिर न जाने क्यों निन्यातवे की बलि को लेकर सूबे में एक नया आन्दोलन खड़ा किया जा रहा है.

एक मुसलमान के लिये निन्यातवे की बलि देने की बात न जाने लीडर और असृत वाजार पत्रिका दोनों ही अखबारों ने क्यों पंत जी से न कहलवाकर सिर्फ अपनी कलम से सुर्खी में जाहिर की है. इसमें क्या भेद है हम कुछ समझ नहीं पा रहे हैं. फिर भी हम यह मान कर चलते हैं कि यह लफ्ज सचमुच पंत जी के मुंह से निकले.

पछताने से पहले ही चुरियों को कुरबानि करने से रोकना.

—भगवान दीन

२३—६—४७

तनावने की قربानी—

यू० पी० के बड़े बच्चीर ही नहीं यू० पी० की जनता भी आज किसी किसी मुसलमान के लिये तनावने आदिमियों की قربानी करने के लिये तैयार हो. तनावने ही नहीं, किसी किसी के लिये जनता नौ सौ तनावने और नौ हजार नौ सौ तनावने तक की कुरबानी करने के लिये तैयार हो सकती है. मिसाल के लिये सरहद के गांधी खान अब्दुल कल खान या कांग्रेस के कई साल रहे हुए सदर और आम्र कल के तालीमी बच्चीर मौलाना अबुलकलाम आजाद, यह और ऐसी ही और बहुत सों हस्तियां मुल्क में आज मौजूद हैं जिनके लिये हिन्दू जनता को हजारों की तादाद में तनावने की बलि देनी पड़ेगी. फिर न जाने क्यों तनावने की बलि को लेकर सूबे में एक नया आन्दोलन खड़ा किया जा रहा है.

एक मुसलमान के लिये तनावने की बलि देने की बात न जाने लीडर और अम्रत बाजार पत्रिका दोनों ही अखबारों ने क्यों पंत जी से न कहलवाकर सिर्फ अपनी कलम से सुर्खी में जाहिर की है. इसमें क्या भेद है हम कुछ समझ नहीं पा रहे हैं. फिर भी हम यह मान कर चलते हैं कि यह लफ्ज सचमुच पंत जी के मुंह से निकले.

(१) इन लकड़ों के यह माने लगाना कि किसी चोर, उचकके, खानी, बदमाश या खून से हाथ रेंगे मुसलमान की जान बचाने के लिये पंत जी किन्हीं नित्यानवे वेगुनाह भले हिन्दुओं को कुरबान कर देंगे, पंत जी के साथ ही गैरइंसाफी करना नहीं है बल्कि अपनी पड़ाई लिखाई पर भी पानों फेरना है—और भापन देने वाले की भापा को न समझने का सबूत देना है.

(२) या इन लकड़ों के यह मानी लगाना कि किसी एंग्रे गैंगे नल्यू खेंगे मुसलमान की जान बचाने के लिये पंत जी किन्हीं अन्धे नित्यानवे हिन्दुओं को कुरबान कर देंगे, अपनी समझ का दिवाला पीटना होगा.

(३) या इन लकड़ों के यह मानी लगाना कि किसी एक हिन्दू के खरिये एक मुसलमान के मार जाने पर उस एक मारने वाले के पकड़ लिये जाने पर भी किन्हीं और अट्टानवे हिन्दुओं को ईद कर उस एक मुसलमान की खातिर फांसी के तख्ते पर चढ़ा दिया जायगा, यह साबित करता है कि माने लगाने वाला न बोली के तरीकों से वाकिल है और न यह ही समझता है कि बोलने वाला असल में कहना क्या चाहता है.

इन लकड़ों के त्यों के त्यों माने निकालना या तो बोलने वाले के साथ अपने पुराने कौने को बाहर निकालना है या जान बचक कर जनता को भड़काना है. हम यह चेशक मानते हैं कि पंतजी के अगर यही लफ्फ है तो वह राजनेतापने की तराजू पर कुछ हलके चेशक उतरते हैं, पर सूबे का बड़ा बजीर कोरा राजनेता ही नहीं होता वह मौजी जनरल भी होता है, और पंतजी ने अगर यह लफ्फ

(१) इन लफ्फों के ये मन्ने कलाना किसी चोर, अचकके, खानी, बदमाश या खून से हाकके रेंगे मुसलमान की जान बचाने के लिये पंत जी किन्हीं नित्यानवे भले हिन्दुओं को कुरबान कर देंगे, पंत जी के साथ ही गैरइंसाफी करना नहीं है बल्कि अपनी पड़ाई लिखाई पर भी पानों फेरना है—और भापन देने वाले की भापा को न समझने का सबूत देना है.

(२) या इन लफ्फों के ये मन्ने कलाना किसी अचकके, खानी, बदमाश या खून से हाकके रेंगे मुसलमान की जान बचाने के लिये पंत जी किन्हीं अचकके नित्यानवे हिन्दुओं को कुरबान कर देंगे, अपनी समझ का दिवाला पीटना होगा.

(३) या इन लफ्फों के ये मन्ने कलाना किसी अचकके, खानी, बदमाश या खून से हाकके रेंगे मुसलमान की जान बचाने के लिये पंत जी किन्हीं अचकके कुरबाने जाने पर भी किन्हीं और अट्टानवे हिन्दुओं को कुरबान कर दिया जायगा, यह साबित करता है कि माने लगाने वाला न बोली के तरीकों से वाकिल है और न यह ही समझता है कि बोलने

वाला असल में कलाना क्या चाहता है.
 इन लफ्फों के त्यों के त्यों माने निकालना या तो बोलने वाले के साथ अपने पुराने कौने को बाहर निकालना या जान बचक कर जनता को भड़काना है. हम यह चेशक मानते हैं कि पंतजी के अगर यही लफ्फ है तो वह राजनेतापने की तराजू पर कुछ हलके चेशक उतरते हैं, पर सूबे का बड़ा बजीर कोरा राजनेता ही नहीं होता वह मौजी जनरल भी होता है, और पंतजी ने अगर यह लफ्फ

कहे हैं तो उसी जनरली के नाते कहे हैं, इसका मतलब सिर्फ इतना और इतना ही है कि वह हिन्दू जो समझे नासमझे सरकार को मटिया मेट करने पर उतारु हो गए हैं होश में आजायं और समझें कि वह किसी बेगुनाह मुसलमान की जान नहीं ले सकते और किसी गुनहगार की भी जान लेने में कानून की हदों से बाहर नहीं जा सकते.

पंतजी सब हिन्दुओं पर नहीं सिकं चासी हिन्दुओं के दिल पर यह नकश कर देना चाहते हैं कि वह उनका मुकाबला करने के लिये हर तरह तैयार हैं, असल में निन्यानेवे हिन्दुओं को जो भीड़ किसी एक मुसलमान की जान लेना चाहती है वह इस लिये गोली से नहीं उड़ाई जायगी कि वह एक ऐसे आदमी की जान ले रही है जो उस फिरके से ताल्लुक रखता है जिसको ताशद सूबे में जान लेने वाले फिरके से बहुत कम है, बल्कि वह निन्यानेवे इसलिये सजा के काबिल है क्योंकि वह सरकार के खिलाफ सरकारी कानूनों को तोड़कर अमन में खलल डालना चाहते हैं और बराबत का मंडा खड़ा करना चाहते हैं, पंतजी को तकरार एक जनरल की हैसियत से मौके को हो सकती है, सूबे भर में जिस तरह हवा बिगड़ी हुई है उसे काबू में रखने के लिये कुछ सख्तों को जरूरत है, अगर ऐसे मौके का सरकार ने कभी फायदा उठा ही लिया तो वह सिकं मुसलमानों की खिदमत नहीं, हिन्दुओं की भी सभी खिदमत कर सकेगी, वह तहां एक मुसलमान के कट जाने पर निन्यानेवे को कुरबान कर रही है वहां वह यह भी करती है कि एक मुसलमान को बचा कर किसी दूसरी तगह सैकड़ों

कतोर सरसल

हमारी राय

न्यासन्द
के हैं तो उसी जनरली के नाते कहे हैं, इसका मतलब सिर्फ इतना और इतना ही है कि वह हिन्दू जो समझे नासमझे सरकार को मटिया मेट करने पर उतारु हो गए हैं होश में आजायं और समझें कि वह किसी बेगुनाह मुसलमान की जान नहीं ले सकते और किसी गुनहगार की भी जान लेने में कानून की हदों से बाहर नहीं जा सकते.

पंतजी सब हिन्दुओं पर नहीं सिकं चासी हिन्दुओं के दिल पर यह नकश कर देना चाहते हैं कि वह उनका मुकाबला करने के लिये हर तरह तैयार हैं, असल में निन्यानेवे हिन्दुओं को जो भीड़ किसी एक मुसलमान की जान लेना चाहती है वह एक ऐसे आदमी की जान ले रही है जो उस फिरके से ताल्लुक रखता है जिसको ताशद सूबे में जान लेने वाले फिरके से बहुत कम है, बल्कि वह निन्यानेवे इसलिये सजा के काबिल है क्योंकि वह सरकार के खिलाफ सरकारी कानूनों को तोड़कर अमन में खलल डालना चाहते हैं, पंतजी को तकरार एक जनरल की हैसियत से मौके को हो सकती है, सूबे भर में जिस तरह हवा बिगड़ी हुई है उसे काबू में रखने के लिये कुछ सख्तों को जरूरत है, अगर ऐसे मौके का सरकार ने कभी फायदा उठा ही लिया तो वह सिकं मुसलमानों की खिदमत नहीं, हिन्दुओं की भी सभी खिदमत कर सकेगी, वह तहां एक मुसलमान के कट जाने पर निन्यानेवे को कुरबान कर रही है वहां वह यह भी करती है कि एक मुसलमान को बचा कर किसी दूसरी तगह सैकड़ों

कतोर सरसल

नहीं हचारां हिन्दुओं को बचा लेती हैं और करोड़ों को फिर गुलामी के फन्दे में फंसे से बचाती है. हमें पूरा भरोसा है कि यू० पी० सरकार को कभी ऐसा करने के लिये मजबूर न होना पड़ेगा क्योंकि सूबे के हिन्दू कह भले ही कुछ लें पर इतने नासमझ नहीं हैं कि वह ऐसी गलती करके सिर्फ अपने सूबे को ही नहीं सारे हिन्दुस्तान को आक्रान्त में डालना मुनासिब समझें.

सूबे की तन्हा से हमारी यह ही दरलास्त है कि वह पंतजी के लक्ष्यों के वह ही माने लगा ले जो उनके पीछे पीछे हैं न कि वह जो खीच तान कर उसमें से पैदा किये जा सकते हैं.

उहां तक हमारी अकल काम करती है हमें ऐसा मालूम होता है कि पंतजी ने शायद यह कहा होगा कि लिन्यानवे हिन्दुओं को उस एक बेगुनाह मुसलमान की जान बचाने के लिये कुरबान हो जाना चाहिये जो उनके मुहल्ले या उनके बीच में रहता है और इस तरह हिन्दू बरादुरी की लाज रखना चाहिये. कोई रिपोर्टर लिन्यानवे की कुरबानी ले उठा और राई को पर्वत बना दिया.

—भगवान दीन

१६ सितम्बर '४७

इस नोट के लिखे जाने के दूसरे दिन अखबारों में खबर छपी कि पंतजी ने ठीक वही बात कही थी जो इस नोट के आखीर में बताई गई है—रिपोर्टर

जान बचा कर भागे हुआ से --

जान बचा कर भागना बहादुरों के लिये भी हमेशा बुरी बात नहीं होती. शेर भी जिसको बहादुरी की मिसाल इनसान को

नहीं हज़ारों हिन्दुओं को बचाली. जो अहमद को बचाने के लिये सरकार को कभी ऐसा करने के लिये मजबूर न होना पड़े कि वह ऐसी गलती करके सिर्फ अपने सूबे को ही नहीं सारे हिन्दुस्तान को आक्रान्त में डालना मुनासिब समझें.

सूबे की जन्ता से हमारी ये ही दरलास्त आरु के वे पंतजी के लक्ष्यों के वे ही माने लगा ले जो उनके पीछे पीछे हैं न कि वह जो खीच तान कर उसमें से पैदा किये जा सकते हैं.

उहां तक हमारी अकल काम करती है हमें ऐसा मालूम होता है कि पंतजी ने शायद यह कहा होगा कि लिन्यानवे हिन्दुओं को उस एक बेगुनाह मुसलमान की जान बचाने के लिये कुरबान हो जाना चाहिये. कोई रिपोर्टर लिन्यानवे की कुरबानी ले उठा और राई को पर्वत बना दिया.

—बेगवान दीन

१९ सितम्बर '४७

इस नोट के लिखे जाने के दूसरे दिन अखबारों में खबर छपी कि पंतजी ने ठीक वही बात कही थी जो इस नोट के आखीर में बताई गई है—रिपोर्टर

जान बचा कर भागे हुआ से --
जान बचा कर भागना बहादुरों के लिये भी हमेशा बुरी बात नहीं होती. शेर भी जिसकी बहादुरी की मिसाल इनसान को

ही जाती है, कभी कभी जान बचा कर भागता है, जंगल में आग लग जाने पर सभी जानवर जान बचा कर भागते हैं, आदमी भी भागते हैं, कुछ भगवान भी मधुरा से झारका भागे थे, पर आज तो बड़े बड़े बहादुर बड़े प्रेम से उनका रणछोड़ नाम लेकर बहादुरी का पेट पतते हैं, कायरपन भागने में नहीं है कायरपन मन की एक हालत का नाम है, गीदड़ भी अगर डर कर खड़े का खड़ा रह जाय तो शेर का नाम नहीं पायगा, मतलब यह कि डटे रहकर मर जाने में ही बहादुरी नहीं है, बहादुरी है निडर होकर और जानबूझ कर औरों को और अपनी जान बचाने में, फिर चाहे वह डट कर बचाई जाय या भाग कर बचाई जाय, बहादुरी मन में रहती है, पैरों में नहीं और हाथों में भी नहीं, जिसके सिके हाथ पाँव बहादुर हैं यानी जो खूब मारता काटता और भाग जाता है वह कायर है, जिसका मन बहादुर है वह सबा बहादुर है, वह मार काटेगा भी और भागेगा भी, यह हुई उसूल की बात, इसी उसूल की कसौटी पर कायर और बहादुर के दोन धरम की जाँच होती है,

पंजाब से जान बचा कर भागे हुएओं में शेर भी हैं, गाय भी हैं और गीदड़ भी, वहाँ तो आग लग गई थी, सभी को भागना चाहिये था, और भाग कर जान बचाली, सबने ठोक किया, पर यहाँ पहुँच कर ऊदम ऊदम पर उनकी जाँच हो रही है, शेर अपने कारनामों दिखा रहे हैं, गाय अपने और गीदड़ अपने, शेर बचकर भागेगा पर खि सियाएगा नहीं, गीदड़ पर कभी थाप नहीं उमाएगा, गीदड़ का पेट फाड़ कर वह कभी अपने पंजे को नापाक नहीं करेगा और दूसरे जानवर का मारा हुआ शिकार भी नहीं खायगा, चूहा

को बुरा कहते

हमारी लासे

दी जाती हो, कभी कभी जान बचाकर बھاگता हो, جنگل میں آگ لگ جانے پر کبھی جانور جان بچا کر بھاگتے ہیں, دی کبھی بھاگتے ہیں, کرشن بھگوان کبھی مختصراً سے دوڑا کر بھاگے گئے, پیر آج تو بڑے بڑے بھادر بڑے پریم سے ان کا 'رن جھوڑ' نام لے کر بھادی کا ٹھونٹ پیتے ہیں, کایرین بھاگنے میں نہیں ہو, کایرین من کی ایک حالت کا نام ہو, گیدڑ کبھی اگر ڈر کر کھڑے کا کھڑا رہ جائے تو تیر کا نام نہیں پائے گا, مطلب یہ ہو کہ ڈر کر رہ کر مرجانے میں ہی بھادری نہیں ہو, بھادری ہو نہ ہو کہ ہو کر اور جان بچھو کر اوروں کی اور اپنی جان بچانے میں 'پھر چاہے یہ ڈر کر بچا جائے یا بھاگ کر بچا جائے, بھادری من میں رہتی ہو, پیروں میں نہیں اور ہاتھوں میں بھی نہیں, جس کے من کا یہ ہو کہ بھادری میں جو خوب مارتا کاٹتا اور بھاگ جاتا ہو, وہ کایر ہو, جس کا من بھادر ہو وہ سچا بھادر ہو, اصول کی کوئی پر کایر اور بھادر کے دین دھرم کی تاریخ ہوتی ہو, پیاب سے جان بچا کر بھاگے ہوؤں میں تیر کبھی ہیں, گائے کبھی ہیں اور یہ کبھی, وہاں تو آگ لگ گئی تھی کبھی کو بھاگنا چاہئے تھا, اور بھاگ کر جان بچا ل, سب نے ٹھیک کیا, پر یہاں پہنچ کر قدم قدم پر ان کی تاریخ ہو رہی ہو, تیر اپنے کارنامے دکھا رہے ہیں, گائے اپنے اور گیدڑ اپنے, تیر بچ کر بھاگے گا, پر کھیائے گا نہیں, گائے پر کبھی کتاب نہیں جائے گا, گیدڑ کا پیٹ پھاڑ کر وہ کبھی اپنے سینے کو ناپاک نہیں کرے گا, اور دوسرے جانور کا مارا ہوا شکار کبھی نہیں کھائے گا, چوہا

असल में, उसका बहादुर मन उसके साथ है, और उसको कोई धक्का नहीं पहुँचा. पाँव का काम ही भागना है, चाहे आगे भागें चाहे पीछे. वही पाँव बहादुरों के मन के हुकूम से भागते हैं और वही पाँव कार्यों के मन को भगा कर ले जाते हैं और वही पाँव मोले भाले आदिमियों के मन को बहादुरों के पीछे पीछे भागने को कहते हैं और खुद भी भागते हैं.

पाकिस्तान से भाग कर यहाँ जो सच्चे बहादुर आए हैं वह ज्यादा-तर सिक्ख हैं. वह सभी जैसे बहादुर हैं वैसे ही तलवार के धनी भी हैं. पहले हम उन्हीं से दो बातें करना चाहते हैं.

हमारे सिक्ख बहादुरों, इसमें शक नहीं कि तुम्हारे साथ ऐसे जुल्म हुए हैं जिन को आम आदमी बरदाश्त नहीं कर सकता. पर तुम्हारी गिनती आम आदिमियों में नहीं है. तुम तो गुरु के पाँच प्यारों में से हो. तुममें तो बेहद बरदाश्त होना चाहिए. इसके यह माने हरगिब नहीं है कि तुम जालिम का जुल्म सहे जाओ. जुल्म की जड़ काटना तो बहादुर का काम है और ताबू और धर्माल्मा सभी का का काम है और जुल्म को जड़ काटने में तो गान्धी जी सबसे ज्यादा लगे हुए हैं. पर जालिम के जुल्म को नरुल कर बैठना न बहादुरी है न धर्म. यह ठीक है कि तलवार के धनी होते हुए तुम्हारे ताबू लड़ने के लिये फड़कते होंगे तो उनके लिये तो आज हिन्दुस्तान में बेहद काम पड़ा है. जिसकी जान ली जा रही हो उसके पचाने में अपने ताबू से काम लो. जिसको रेल से फेंका जा रहा हो उसको अपने ताबूओं की ताकत से हरगिब न फिकरे दो.

हमारी राई

ऑक्टोबर १९६६

नया हस्त

असल में, उसका बहादुर मन उसके साथ है, और उसको कोई धक्का नहीं पहुँचा. पाँव का काम ही भागना है, चाहे आगे भागें चाहे पीछे. वही पाँव बहादुरों के मन के हुकूम से भागते हैं और वही पाँव कार्यों के मन को भगा कर ले जाते हैं और वही पाँव मोले भाले आदिमियों के मन को बहादुरों के पीछे पीछे भागने को कहते हैं और खुद भी भागते हैं.

पाकिस्तान से भाग कर यहाँ जो सच्चे बहादुर आए हैं वह ज्यादा-तर सिक्ख हैं. वह सभी जैसे बहादुर हैं वैसे ही तलवार के धनी भी हैं. पहले हम उन्हीं से दो बातें करना चाहते हैं.

हमारे सिक्ख बहादुरों, इसमें शक नहीं कि तुम्हारे साथ ऐसे जुल्म हुए हैं जिन को आम आदमी बरदाश्त नहीं कर सकता. पर तुम्हारी गिनती आम आदिमियों में नहीं है. तुम तो गुरु के पाँच प्यारों में से हो. तुममें तो बेहद बरदाश्त होना चाहिए. इसके यह माने हरगिब नहीं है कि तुम जालिम का जुल्म सहे जाओ. जुल्म की जड़ काटना तो बहादुर का काम है और ताबू और धर्माल्मा सभी का का काम है और जुल्म को जड़ काटने में तो गान्धी जी सबसे ज्यादा लगे हुए हैं. पर जालिम के जुल्म को नरुल कर बैठना न बहादुरी है न धर्म. यह ठीक है कि तलवार के धनी होते हुए तुम्हारे ताबू लड़ने के लिये फड़कते होंगे तो उनके लिये तो आज हिन्दुस्तान में बेहद काम पड़ा है. जिसकी जान ली जा रही हो उसके पचाने में अपने ताबू से काम लो. जिसको रेल से फेंका जा रहा हो उसको अपने ताबूओं की ताकत से हरगिब न फिकरे दो.

कभी कभी चबा बैठते हैं जिससे वह पीटे गए हों पर शेर हमेशा बाँस चलाने वाले पर हमला करता है, मतलब यह कि बहादुरी जिसके मन की खासियत हो गई है वह कभी कभी चबा बैठती नहीं सकती, लड़कियों को उड़ा नहीं सकता, औरतों को बेइज्जत नहीं कर सकता, इनको सार डालने को बात तो एक तरह,

हमारे सिख बहादुरों, आज कल की हवा में तुम को यह सिखाना तो बेकार है कि इस आपसी मारकाट का नतीजा ज़रूरी तौर से गुलामी है, और गुलामी भी एक की नहीं, दो की नहीं, दस की नहीं, बल्कि सारे मुल्क का, और उसका तो तुम बरदास्त ही कैसे कर सकते हो, और अगर वह तुम्हारे किसी जल्दवाल काम के जरिये आए तो वह सिर्फ तुम्हें ही बदनाम न करेगी, उसका असर आगे और पीछे दूर तक होगा,

पाकिस्तान से भाग कर आए हुए दूसरे लोग वह हैं जो मामूली ग्रहस्थ हैं और जो अपने यहाँ के बहादुरों की नकल करके उनके पीछे पीछे चल पड़े थे, लीजिये अब उनसे भी कुछ बातें कर लें,

आपने अपने बंधों को नकल की यह ठीक किया, आप हमारे मेहमान हैं यह बात भी ठीक है, पर मेहमान अगर अपना धरम छोड़ बैठे तो मेहमानदारी करने वाले पर कई गुना बोनमल हो जाता है, और अगर अपना धरम निभाता रहे तो महीनों और बरतों भी भारी नहीं होता, इतना ही नहीं ऊँचे दरजे का मेहमान तो मेहमानदार का बोनम भी चौथे दिन अपने कंधे पर रख लेते में ही छुरी मानता है, मिसाल के लिये एक बात सुनिये,

ईरान के शहर हीराबल के एक बुजुर्ग हिन्दुस्तान में किसी

कभी कभी चबा बैठते हैं हमें से वे पिने लगे हों पर शेर हमेशा बाँस चलाने वाले पर हमला करता है, मतलब यह कि बहादुरी मन की खासियत होती हो गई है कभी कभी चबा बैठती नहीं, लड़कियों को उड़ा नहीं सकता, औरतों को बेइज्जत नहीं कर सकता, इनको सार डालने को बात तो एक तरह,

हमारे सिख बहादुरों आज कल की हवा में तुम को यह सिखाना तो बेकार है कि इस आपसी मारकाट का नतीजा ज़रूरी तौर से गुलामी है, और गुलामी भी एक की नहीं, दो की नहीं, दस की नहीं, बल्कि सारे मुल्क की और उसका तो तुम बरदास्त ही कैसे कर सकते हो, और अगर वह तुम्हारे किसी जल्दवाल काम के जरिये आए तो वह सिर्फ तुम्हें ही बदनाम न करेगी, उसका असर आगे और पीछे दूर तक होगा,

पाकिस्तान से बھاگ کر آئے ہوئے دوسرے لوگ وہ ہیں جو معمولی گراںقدر ہیں اور جو اپنے یہاں کے بہادروں کی نقل کر کے ان کے پیچھے پیچھے چل پڑے گئے، لیجئے اب ان سے بھی کچھ باتیں کر لیں،

آپ نے اپنے بڑوں کی نقل کی یہ ٹھیک کیا، آپ ہمارے یہاں ہیں یہ بات بھی ٹھیک ہے، پر یہ یہاں اگر اپنا دھرم چھوڑ بیٹھے تو یہاں داری کرنے والے پر کسی کو بوجھ ہو جاتا ہے، اور اگر اپنا دھرم بھٹاتا رہے تو مہینوں اور برسوں بھی بھاری نہیں ہوتا، اتنا ہی نہیں ادریے درجے کا یہاں تو یہاں دارکا بوجھ بھی ہوتے ہیں اپنے کو، یہ پرکھ لینے میں ہی خوشی مانتا ہو، مثال کے لئے ایک بات لیں

बादशाह के मेहमान हुए. बादशाह ने ४० रोज तक उनकी बड़ी खातिर की. मगर उनसे वह पूछने पर कि आज्ञा की दावत कैसी रही शाराजों साहब से यही जवाब मिलता रहा—“दावते शीराज” यानी दावत देना तो शीराज ही जानते हैं. बादशाह क्या कहता, मन मार कर रह गया. शाराजों साहब की वापसी पर बादशाह ने अपना एक मोतबिर आदमों उनके साथ कर दिया और उससे यह कह दिया कि वह शाराज जाकर यह पता लगाए कि वहाँ दावते कैसी हाता हैं. जब शाराजों साहब बादशाह के उस आदमों को लेकर शीराज पहुँचे तो पहले दिन उन्होंने उस को वही खाना खिलाया जो उस दिन घर पर बना हुआ मौजूद मिला. और वह भा पेट भर नहीं था क्योंकि कि जा कुछ बना था उसमें खुद शाराजों साहब और उनका मेहमान साथी दोनों शामिल थे. मेहमान ने पहला दिन समक कर अपना तसल्लो करली और दूसर दिन “दावते शीराज” के लिये तय्यार रहा. पर दूसरे दिन भी दोनों वक्त तरकारों, चटनी, रोटी और प्याज के सिवा कुछ न था. उस दिन भी मेहमान ने ज्यों त्यों अपने मन को समझा लिया यानी यह समक लिया कि “दावते शीराज” के लिये कुछ तय्यारियाँ करना जरूरी होती होंगी और इसलिये वह आज कैसे ही सकती थी. पर तसरे चौथे दिन भी जब उसे सिकं चटनी, रोटी ही मिली और तरकारी और प्याज भी गायब हो गया तो उससे न रहा और पूछ ही बैठा कि—हजरत वह दावते शीराज कहाँ है. जवाब में शीराजों साहब बोले—रोज आप दावते शीराज ही तो खा रहे हैं. मेहमान ने बड़े ताजुब के साथ कहा कि—यह है दावते

नया हिन्द. बादशाह के मेहमान हुंसे. बादशाह ने ४० रोज तक उनकी बड़ी खातिर की. मगर उन से ये पूछने पर कि आज की दावत कैसी रही शीराजों साहब से यही जवाब मिलता रहा—“दावते शीराज” यानी दावत देना तो शीराज ही जानते हैं. बादशाह क्या कहता, मन मार कर रह गया. शाराजों साहब की वापसी पर बादशाह ने अपना एक मोतबिर आदमों उनके साथ कर दिया. उससे यह कह दिया कि वह शीराज जाकर यह पता लगाए कि वहाँ दावते कैसी हाता हैं. जब शाराजों साहब बादशाह के उस आदमों को लेकर शीराज पहुँचे तो पहले दिन उन्होंने उस को वही खाना खिलाया जो उस दिन घर पर बना हुआ मौजूद मिला. और वह पेट भर नहीं था क्योंकि कि जा कुछ बना था उसमें खुद शाराजों साहब और उनका मेहमान साथी दोनों शामिल थे. मेहमान ने पहला दिन समक करली और दूसरे दिन “दावते शीराज” के लिये तय्यार रहा. पर दूसरे दिन भी दोनों वक्त तरकारी, चटनी, रोटी और प्याज के सिवा कुछ न कहा. उस दिन भी मेहमान ने ज्यों त्यों अपने मन को समझा लिया यानी यह समक लिया कि “दावते शीराज” के लिये कुछ तय्यारियाँ करना जरूरी होती होंगी और उससे लिये तय्यार होना ही मिली और पूछ ही बैठा कि—हजरत वह दावते शीराज कहाँ है. जवाब में शीराजों साहब बोले—रोज आप दावते शीराज ही तो खा रहे हैं. मेहमान ने बड़े ताजुब के साथ कहा कि—यह है दावते

शरीरात्' ! शीराजी बोले-जी हाँ, यही है. आप मेरे यहाँ बरसों रहिये, मुझे भारी न मालूम होंगे. मैं आपके यहाँ ४० दिन में ही आपको अखरते लगा था और आप यह चाहते थे कि जल्दी से जल्दी आप का मकान में छोड़ दूँ. मगर मैं, मेरे बीबी बच्चे यह चाहते हैं कि आप कभी यहाँ से न जाय और यहाँ रहें क्यों कि आप को बजह से हमारे घर का खर्च कुछ बढ़ा तो है ही नहीं.

ऐ पंजाब से आए हुए ग्रहस्थियों, अगर आप जरा अपना भी सहारा लगाएँ तो हम आपको कोई तकलीफ न होने देंगे. लेकिन अगर आपने अपना सहारा छोड़ दिया तो न हम आपको सम्भाल सकेंगे और न अपने को. जागता हुआ बच्चा अगर एक नम्बर का बोम्बा होता है तो सोया हुआ बच्चा दो नम्बर का और मचला हुआ तो दस नम्बर का. आपमें से कुछ तो सोए हुए हैं और बहुत हैं मचले हुए. जागे हुए शायद ही एक दो हों. अब कहिये हम आप को कैसे सम्भालें. अगर आपने हमको अपने लिये बुरा सोचने वाला बना दिया तो न आप का भला और न हमारा भला. हमारे घरमें आप चैन पाने के लिये आए हैं. अगर हमारे पास चैन न हुआ तो हम आपको कहाँ से दे सकेंगे. हममें फूट डाल कर आप शायद तन टक लें और पेट भरलें पर चैन न पा सकेंगे. फूट डाल कर हमारे पास से ही चैन भाग जाएगा. हम आपको कहाँ से देंगे. और आप हमसे कैसे पा लेंगे. आप यहाँ फूट और खुल्लम के बीच न चोड़िये. हाँ, आप हमारा चैन चुराइये, चैन लूटिये क्यों कि वह बिधा की तरह चुराने और लूटने से और बढ़ता ही है. उसमें हमारा आपका दोनों का भला है. दिल की जलन और

शिराने! शिराजी बोले-जी हाँ, यही है. आप मेरे यहाँ बरसों रहिये, मुझे भारी न मालूम होंगे. मैं आपके यहाँ ४० दिन में ही आपको अखरते लगा था और आप यह चाहते थे कि जल्दी से जल्दी आप का मकान में छोड़ दूँ. मगर मैं, मेरे बीबी बच्चे यह चाहते हैं कि आप कभी यहाँ से न जाय और यहाँ रहें क्यों कि आप को बजह से हमारे घर का खर्च कुछ बढ़ा तो है ही नहीं.

ऐ पंजाब से आئے ہوئے گھرستھیوں! اگر آپ ذرا اپنا بھی سہارا لگائیں تو ہم آپ کو کوئی تکلیف نہ ہونے دیں گے. لیکن اگر آپ نے اپنا سہارا چھوڑ دیا تو نہ ہم آپ کو سمجھال سکیں گے اور نہ اپنے کو. جانتا ہوا بچہ اگر ایک نمبر کا بولچھا ہوتا ہے تو سویا ہوا بچہ دو نمبر کا اور پھلا ہوا تو دس نمبر کا. آپ میں سے کچھ تو سوئے ہوئے ہیں اور بہت ہیں مجھے ہوئے. جاگے ہوئے شاید ہی ایک دو ہوں. اب کہتے ہم آپ کو کیسے سمجھالیں. اگر آپ نے ہم کو اپنے لئے بڑا سوچنے والا بنا دیا تو نہ آپ کا بھلا اور نہ ہمارا بھلا. ہمارے گھر میں آپ چین پانے کے لئے آئے ہیں. اگر ہمارے پاس چین نہ ہو تو ہم آپ کو کہاں سے دے سکیں گے. ہم میں کھوٹ کمال کر آپ شاید تن ڈھک لیں اور پیت بھر لیں پرسیں نہ پاسکیں گے. کھوٹ ڈال کر ہمارے پاس سے ہی چین بھاگ جائے گا. ہم آپ کو کہاں سے دیں گے. اور آپ ہم سے لئے پالیں گے. آپ یہاں کھوٹ اور غلطی کے بیج نہ بویئے. ان آپ ہمارے چین چرائیے! چین لویئے کیونکہ وہ دیا کی طرح چرائے اور لٹنے سے اور بڑھتا ہی ہے. اس میں ہمارا آپ کا دونوں کا بھلا ہے. دل کی سبلیں اور

दिल की आग बदले से बढ़ती और भड़कती है, रत्ती भर कम नहीं होती, और अगर उस बदले में कहीं खुलम भी शामिल हो तब तो खर्मान पर ही देखल आजाती है, स्वर्ग तक नरक में बदल जाता है, वह जलन और आग तो कम होगी इतसाफ से और बुझेगी माफ़ी से, खुजली खुजाने से कभी दूर नहीं हुई, खुजाकर सब पछ-ताए ही हैं, उसी तरह खुलम की जलन खुलम से कभी दूर नहीं होती, खुलम करके पछताना ही पड़ता है, खुजली को मिटाने के लिये तेज दवा लगानी ही पड़ती है, खुलम की जलन को कम करने के लिये इतसाफ का खारी और माफ़ी का कड़वा घूँट पीना ही पड़ेगा, आप सचमुच रोगी हैं, हम आपका भला चाहते हैं, हमारी सुनिये, यहाँ की सरकार भी आपका भला चाहती है, उसकी ध्यान से सुनिये, और गाँधी जी आपके सबे डाक्टर हैं, उनकी कड़वी दवा एक घूँट गले से उतार कर देखिये तो, अभी आराम मिलेगा, हाथ पाँव न फुलाइये, उससे कुछ हाथ नहीं आयगा, आप जरा अपना जोर लगाइये और ईश्वर आपके साथ हज़ार गुना जोर लगा देगा, आपकी अपनी मदद के बिना दुनिया को कोई ताकत आपका भला नहीं कर सकती,

२५.६.४७

—भगवान दिन

हम यह चाहते हैं—

जैनों का अपनी अलग गायत्री और अपना अलग कलमा है, उसमें उन्होंने सबसे पहले सर मुकाया है जीवन मुक्तों को, और उसके बाद मुक्त आत्माओं को, जब उनसे पूछा गया कि आपने दूसरे तन्वर को पहला तन्वर क्यों दिया तो उनसे जवाब,

कितो बरसक

हमारी राय

याहसन्द

दिल की आग बदले से ब्रुष्ती और ब्रुष्कती हो, रत्ती भर कम नहीं होती, और अगर उस बदले में कहीं खुलम भी शामिल हो तब तो खर्मान पर ही देखल आजाती है, स्वर्ग तक नरक में बदल जाता है, वह जलन और आग तो कम होगी इतसाफ से और बुझेगी माफ़ी से, खुजली खुजाने से कभी दूर नहीं हुई, खुजाकर सब पछ-ताए ही हैं, उसी तरह खुलम की जलन खुलम से कभी दूर नहीं होती, खुलम करके पछताना ही पड़ता है, खुजली को मिटाने के लिये तेज दवा लगानी ही पड़ती है, खुलम की जलन को कम करने के लिये इतसाफ का खारी और माफ़ी का कड़वा घूँट पीना ही पड़ेगा, आप सचमुच रोगी हैं, हम आपका भला चाहते हैं, हमारी सुनिये, यहाँ की सरकार भी आपका भला चाहते हैं, हमारी सुनिये, यहाँ की सरकार भी आपका भला चाहती है, उसकी ध्यान से सुनिये, और गाँधी जी आपके सबे डाक्टर हैं, उनकी कड़वी दवा एक घूँट गले से उतार कर देखिये तो, अभी आराम मिलेगा, हाथ पाँव न फुलाइये, उससे कुछ हाथ नहीं आयगा, आप जरा अपना जोर लगाइये और ईश्वर आपके साथ हज़ार गुना जोर लगा देगा, आपकी अपनी मदद के बिना दुनिया को कोई ताकत आप का भला नहीं कर सकती,

—बहकवान दिन

२५ — १ — २५

हम यह चाहते हैं—

जैनों की अपना अलग गायत्री और अपना अलग कलमा है, उसमें उन्होंने सबसे पहले सर मुकाया है जीवन मुक्तों को, और उससे पूछा गया कि आपने दूसरे तन्वर को पहला तन्वर क्यों दिया तो उनसे जवाब,

मिला कि हम दुनियादार हैं, हमको मुक्त आत्माओं से कुछ कायदा नहीं पहुँच सकता, हमारा भला तो जीवन मुक्त ही कर सकते हैं, क्योंकि वह दुनिया में है और इस तांत कम ज्यादा दुनियादार भी है. हमको जैनों की यह बात बड़ी जैची और इसीलिये हम इज्जत मोहम्मद को बहुत से सन्तों से डंढा समझते हैं. वजह साफ है, उन्होंने जो धर्म की बातें बताईं उनको कह कर ही नहीं रह गए, उन्होंने बादशाह बन कर अपने बताए धर्म के मुताबिक राज करके भी दिला दिया. जिस वजह से हम इज्जत मोहम्मद को बहुत से सन्तों से बड़ा समझते हैं उसी क्रम की एक बात में हम कायदे आकाम मोहम्मद अली जिन्नाह, गवर्नर जनरल पाकिस्तान को महात्मा मोहन दास करमचन्द गांधी—हिन्दुस्तान की शान, सच्चे हिन्दू, हिन्दुओं के सरनाम—से बड़ा समझने के लिये मजबूर हैं. कायदे आकाम ने जो कुछ कहा उसको पूरा कर दिखाने की चिन्मेवारी अपने सिर ली और पाकिस्तान की बादशाही को आगे बढ़ कर लिया और उसका चिन्मेवारी को अपने सर पर संभाला. इस तरह उन्होंने अपने मुसलमान साथियों को और अपने हमेशा के लिये नहीं, काम निकालने भर के लिये माने हुए, हिन्दू, दुरसनों को इस बात का मौका दिया कि वह उनको (कायदे आकाम को) अच्छी तरह परख लें कि वह जैसा कहते हैं वैसा पाकिस्तान कायम कर सकते हैं या नहीं. हम इस बहस में नहीं जाना चाहते कि पाकिस्तान कैसा कायम हुआ, या आगे कैसा बनेगा. हम तो सिर्फ यह ही कहना चाहते हैं कि उन्होंने सबको अपनी जाँच का पूरा मौका दिया. अब जनता उनको

प्लेक हम दुनियादार हैं, हमको मुक्त आत्माओं से कुछ फायदा नही पहुँच सकता, हमारा भला तो जीवन मुक्त ही कर सकते हैं, क्योंकि वह दुनिया में है और इस तांत कम ज्यादा दुनियादार भी है. हमको जैनों की यह बात बड़ी जैची और इज्जत मोहम्मद को बहुत से सन्तों से डंढा समझते हैं. वजह साफ है, उन्होंने जो धर्म की बातें बताईं उनको कह कर ही नहीं रह गए, उन्होंने बादशाह बन कर अपने बताए धर्म के मुताबिक राज करके भी दिला दिया. जिस वजह से हम इज्जत मोहम्मद को बहुत से सन्तों से बड़ा समझते हैं उसी क्रम की एक बात में हम कायदे आकाम मोहम्मद अली जिन्नाह, गवर्नर जनरल पाकिस्तान को महात्मा मोहन दास करमचन्द गांधी—हिन्दुस्तान की शान, सच्चे हिन्दू, दुओं के सरनाम—से बड़ा समझने के लिये मजबूर हैं. कायदे आकाम ने जो कुछ कहा उसको पूरा कर दिखाने की चिन्मेवारी अपने सिर ली और पाकिस्तान की बादशाही को आगे बढ़ कर लिया और उसका चिन्मेवारी को अपने सर पर संभाला. इस तरह उन्होंने अपने मुसलमान साथियों को और अपने हमेशा के लिये नहीं, काम निकालने भर के लिये माने हुए, हिन्दू, दुरसनों को इस बात का मौका दिया कि वह उनको (कायदे आकाम को) अच्छी तरह परख लें कि वह जैसा कहते हैं वैसा पाकिस्तान कायम कर सकते हैं या नहीं. हम इस बहस में नहीं जाना चाहते कि पाकिस्तान कैसा कायम हुआ, या आगे कैसा बनेगा. हम तो सिर्फ यह ही कहना चाहते हैं कि उन्होंने सब को अपनी जाँच का पूरा मौका दिया. अब जनता उनको

उन्हें मिल भी रही थीं पर किसी बजह से एक उनके हाथ से खिसक गई, तो फिर महात्मा गांधी सिर्फ एक डोमीनियन संभालने और दूसरा लोगों को समझाने का काम, क्यों नहीं कर सकते ?

यह ठीक है कि शुरू में जो सरकार बनी, जिन हालतों में बनी और जिन ताकतों और शक्तों के साथ बनी वह ऐसी नहीं थी जो विलडुल उनके (गांधी जी के) मन लगती हो, इस लिये उन्हें उसका (सरकार का) साथ तो दिया, उसको आशीर्वाद भी दिया पर उसमें कोई हिस्सा नहीं लिया और यह ठीक ही किया. पर अब तो वह (गांधी जी) उसको (सरकार को) हर तरह ठीक समझते हैं और लोगों से कहते हैं कि जो सौदा उनके नेताओं ने कर लिया उसको ठीक मान कर हर तरह उनका (नेताओं का) साथ देना चाहिये, फिर शुरू में हिस्सा न लेने की बात का खोर अब कम हो जाना चाहिये और उनको सीधे सरकार का हाथ बँटाने में कोई दिक्कत न होनी चाहिये. हाथ तो टेढ़े सीधे अब भी बह बँटा ही रहे हैं. पर इस तरह हाथ बँटाने से हमारी तसल्ली नहीं और न हम ऐसे खयाल वालों की. ऐसे खयाल वालों की तादाद कांग्रेस में और बाहर बहुत ज्यादा है.

यह जो कुछ हम लिख रहे हैं यह समझ कर तो लिख ही रहे हैं कि जिस तरह की सरकार अब बन गयी है वह ऐसी नहीं है जिसकी बजह से कांग्रेस के सिद्धान्त को थका पहुँचा हो और इतना थका पहुँचा हो कि कांग्रेस अब पुरानी कांग्रेस ही न रह गई हो. अगर गांधी जी की राय में ऐसा हुआ होता तो वह जरूर लोगों के लिये कांग्रेस छोड़ने की आवाज उठाते

अच्छी मल भी रही है. किसी तरह से एक उन के हाथ से क्लिक गयी, तो फिर सतता गांधी सिर्फ एक डोमीनियन संभालने और दूसरा लोगों को समझाने का काम, क्यों नहीं कर सकते ?

ये छहिक हो के शुरू में जो सरकार बनी, जिन हालतों में बनी और जिन ताकतों और शक्तों के साथ बनी वह ऐसी नहीं थी जो विलडुल उनके (गांधी जी के) मन लगती हो, इस लिये उन्हें उसका (सरकार का) साथ तो दिया, उसको आशीर्वाद भी दिया पर उस लिये कोनी छहिक नहीं लिया और ये छहिक ही किया. पर अब तो वह (गांधी जी) उसको (सरकार को) हर तरह छहिक समझते हैं और लोगों से कहते हैं कि जो सौदा उन के नेताओं ने कर लिया उसको ठीक मान कर हर तरह उनका (नेताओं का) साथ देना चाहिये, फिर शुरू में हिस्सा न लेने की बात का खोर अब कम हो जाना चाहिये और उनको सीधे सरकार का हाथ बँटाने में कोई दिक्कत न होनी चाहिये. हाथ तो टेढ़े सीधे अब भी बह बँटा ही रहे हैं. पर इस तरह हाथ बँटाने से हमारी तसल्ली नहीं और न हम ऐसे खयाल वालों की. ऐसे खयाल वालों की तादाद

कान्ग्रेस में अब बाहर बहुत ज्यादा हो. ये जो कुछ हम लिख रहे हैं यह समझ कर तो लिख ही रहे हैं कि जिस तरह की सरकार अब बन गयी है वह ऐसी नहीं है जिसकी बजह से कांग्रेस के सिद्धान्त को थका पहुँचा हो और इतना थका पहुँचा हो कि कांग्रेस अब पुरानी कांग्रेस ही न रह गयी हो. अगर गांधी जी की राय में ऐसा हुआ होता तो वह जरूर लोगों के लिये कांग्रेस छोड़ने की आवाज उठाते

पर ऐसी कोई आवाज उठाने नहीं उठाई. इसलिये यह वजह भी उनके सरकार सम्भालने की राह में नहीं अड़ती.

रही यह बात कि गवर्नर जनरल या वजीर बन कर उनके महात्मापने को कुछ धक्का लगता और फिर उनके उपदेश इतने असरदार न रह जाँत जितने अब हैं तो हम यह मानने को तैयार नहीं. इस तरह के सैकड़ों इलजाम, आयें दिन, उनके सिर थोपे जाते हैं और वह अपनी दलीलों से उन्हें ऐसा धो डालते हैं मानो कभी थोपे ही नहीं गए थे. अब उनकी सचाई की धाक हिन्दुस्तान के हिन्दू सुसलमानों पर ही नहीं एशिया, योरप और नई दुनिया तक के सब मुल्कों पर इतनी छा गई है कि उनकी दलीलों के बाद उनकी सचाई सब की नजरों में दूध की धुली रह जाती है. सौ दो सौ की तसल्ली शायद न भी होती हो पर वह तो चाँद में कलौच की तरह गांधी जी की सचाई को बढ़ाने में मदद ही करती है. और फिर सुसलमानों में पैगम्बर साहब खुद दीन दुनिया दोनों का काम सम्भाले हुए थे, हिन्दुओं में कृष्ण भगवान योगी भी थे और राजा भी. सभी धर्मों में ऐसी मिसालें मिलती ही हैं तो महात्मा जी के दोनों काम सम्भालने पर उनके असर को क्यों धक्का पहुँचेगा?

यह ठीक हाँ है कि गवर्नर जनरल हो कर या वजीर बनकर वह या तो तनलाह लेंगे ही नहीं, या अगले लेंगे तो अपने गुजारे भर के लिये. इस लिये उनके असर को ग्रहन न लगकर उल्टी दुगुनी चमक ही मिलेगी और एक बहुत बड़ा आदर्श भी कायम हो जायगा.

यह कहना कि उनका दो चार दिन में उन्नासीवाँ साल लगने वाला है और अब वह बहुत बूढ़े हो गए हैं, उनका अपमान

पर ऐसी कोई आवाज उठाने नहीं उठाने. इस लिये हम भी उन के सरकार सम्भालने की राह में नहीं अड़ती.

रही ये बात कि गवर्नर जनरल या वजीर बन कर उनके महात्मापने को कुछ धक्का लगता और फिर उनके उपदेश इतने असरदार न रह जाँत जितने अब हैं तो हम यह मानने को तैयार नहीं. इस तरह के सैकड़ों इलजाम, आयें दिन, उनके सिर थोपे जाते हैं मानो कभी थोपे ही नहीं गये थे. अब उनकी सचाई की धाक हिन्दुस्तान के हिन्दू सुसलमानों पर ही नहीं एशिया, योरप और नई दुनिया तक के सब मुल्कों पर इतनी छा गई है कि उनकी दलीलों के बाद उनकी सचाई सब की नजरों में दूध की धुली रह जाती है. सौ दो सौ की तसल्ली शायद न भी होती हो पर वह तो चाँद में कलौच की तरह गांधी जी की सचाई को बढ़ाने में मदद ही करती है. और फिर सुसलमानों में पैगम्बर साहब खुद दीन दुनिया दोनों का काम सम्भाले हुए थे, हिन्दुओं में कृष्ण भगवान योगी भी थे और राजा भी. सभी धर्मों में ऐसी मिसालें मिलती ही हैं तो महात्मा जी के दोनों काम सम्भालने पर उनके असर को क्यों धक्का पहुँचेगा?

यह ठीक हाँ है कि गवर्नर जनरल हो कर या वजीर बनकर वह या तो तनलाह लेंगे ही नहीं, या अगले लेंगे तो अपने गुजारे भर के लिये. इस लिये उनके असर को ग्रहन न लगकर उल्टी दुगुनी चमक ही मिलेगी और एक बहुत बड़ा आदर्श भी कायम हो जायगा.

यह कहना कि उनका दो चार दिन में उन्नासीवाँ साल लगने वाला है और अब वह बहुत बूढ़े हो गए हैं, उनका अपमान

करना है, सौ बरस जीने वालों के लिये हिन्दुस्तानी कहावत है 'साठा सा पाठा'. फिर १२५ बरस जीने को उम्माद रखने वाले के लिये 'पचासा सा पाठा' मानना ही पड़ेगा और फिर पाकिस्तान के गवर्नर जनरल हो कौन कम उमर वाले हैं? इस लिये बुढ़ापे की दलाल कोरा टालने की दलाल हा सकती है, हमार गल उतरने वाली नहीं.

यह कहना कि यह दो काम बहुत बड़े होंगे और संभलि नहीं संभल सकत आजकल के इंतजाम को न समझता है. अंगरज ने हड़मत का मशान को एसा बढ़िया बना दिया है कि वह बिना बर्जाराँ और बिना गवर्नराँ और गवर्नर जनरलाँ के विलायत से, बैठे बैठे भा चल सकती है. लन्दन का इंडिया आफिस है, हाँ, खरा उसने नाम बदल दिया है. सन् १९३५ क गवर्नमेन्ट आफ इंडिया एक्ट का दफे. ९३ क चमत्कार किसस छिपे हुए है. गवर्नर जनरल और बर्जाराँ का काम सिर्फ पालिसी तय करना होता है याना सिर्फ काम करने का नाति चता देना होता है. बाकी काम संकेंटराँ सब संभाल लेत है. जभाँ तो सार वखार हवाई जहाजाँ में इधर से उधर उड़ते नजर आते हैं. यह दूसरा बात है कि फाइ गवर्नर मंगलदास पकबासा जाँ का तरह पाच घंटे डटकर काम कर. इसलिय महात्मा गांधा बिला किसाँ दिक्कत के दानो काम संभाल सकते हैं.

यह कहना कि कांप्रेसी ऐसा नहीं चाहते, शाद कभाँ ठाँक रहा हो, आज तो बल्दा है. आज तो शायद हिन्दू महासभा भी जो देखने में महात्मा जी की दुरमन मालूम होती है सब को

करना हो. सुबस सिने वालों के लै भेन्दस्तानी कहात हो साह्या सुयाह्या' प्यर १२५ बस सिने की अमिद रहने वाले के लै प्यहाकी सुयाह्या' मानना ही प्यरै गा. ओर प्यरै पाकिस्तान के गवर्नर जनरल अमी कुन कम उमर वाले हैं? इस लै ब्रह्यापै की दलिल कोरुसी मानने की दलिल होसुकी हो 'हमारे कले अत्रने वाली नहिस.

सिन्वल सकेते आज कल के अतजाम को न समझना हो. अंगरेजने कलोन की मशिन को यिसा ब्रह्या बना दिया हो कि वह बना डरियोँ ओर बना कोरुणुँ ओर गवर्नर जनरल के दलात से, बिच्छे बिच्छे कभी चल सकुती हो. लन्दन का इंडिया ऑफिस हो, हाँ, खरा उसने नाम बदल दिया हो. सन् १९३५ के गवर्नमेन्ट ऑफ इंडिया एक्ट की दफे. ९३ के चमत्कार किस से, सिन्वल होसुकेते हैं. गवर्नर जनरल ओर डरियोँ का काम सरत पालिसी लै करना होता हो यिसी सरत काम करने की निसी मशान होसुकी हो. याना काम सकुरी सब सिन्वाल लिये ली. जेभी तो सारसे डरियोँ होसुकी

महानुँ में अदम से अदम अउते लपटाकेते हैं. ये दूसरी बात हो कि कलनी गवर्नर मन्कल दास किये साजी की लरुच या रज सिन्वल टुट कर काम करे. इस लै महानुँ गान्धीजी ब्लाकसी दफत के दुनुँ काम सिन्वाल सकेते हैं.

ये कना कि काँग्रेसी यिसा नहिस चाहते, शायद कभी सिन्वल रभा हो, आज तो अल्ला हो. आज तो शायद ये भेन्दो महासभा भी जो देखने में महानुँ की दुश्मन मालूम होती हो सब की

सब इस मामले पर एक राय होकर पुकार उठेंगी—'हां, ऐसा ही हो'। हिन्दुस्तानी यूनिवर्स के मुसलमान ही नहीं पाकिस्तान के मुसलमान भी ऐसा ही चाहेंगे और अगर उनसे राय लो जाय तो वह भी एक दिल होकर यही कहेंगे—'ऐसा ही हो'। इसलिये ऐसे डर को यहां कोई जगह नहीं रह जाती।

हम यह सिर्फ इसलिये नहीं चाहते कि हिन्दुस्तान में बहुत जल्दी मारकाट खतम हो जायगी और हिन्दुस्तानी यूनिवर्स और पाकिस्तान में बहुत जल्दी दिलीदोस्ती कायम हो जायगी बल्कि इस लिये चाहते हैं कि आने वाली अगली वेदद डरावनी दुनिया की लड़ाई की जड़ इससे कट जायगी और सारे दुनिया अहिंसा के तरीके को मान लेगी, सचाई को अपनाएगी, प्रेम को बढ़ाएगी, और तोंपों तलवारों को तोड़ तोड़ कर हल बनाएगी या हथौड़ों हसियों में बदल देगी, इसमें कोई शक नहीं दुनिया के सभी मुल्क घबराए हुए हैं, जी से अमन चाहते हैं, सुनने समझने को तैयार हैं, पर उन्हें कोई करके दिखाए तो, कोरी बातों से उनकी तसल्ली नहीं होगी, हिन्दुस्तान में अमन कायम हो जाने के बाद और वे-नौज-वे-पुलिस की हकूमत बन जाने के बाद किसकी मजाल है जो 'पाकिस्तान हिन्दुस्तान' की तरफ मुंह करके उस खुदा की याद न करे जो रहमान और रहीम है और जो सचमुच अपने बन्दों में मारकाट को पसन्द नहीं करता।

साफ और खुली बात यह है कि हम यह चाहते हैं कि कायदे आजम की तरह महत्मा जी भी लोगों को अपनी परख का मौका दें और लोगों को भी चाहिये कि वह उनका जी जान से साथ दें

न्यास
सब इस मामले पर एक राय होकर पुकार उठेंगी—'हां, ऐसा ही हो'। हिन्दुस्तानी यूनिवर्स के मुसलमान ही नहीं पाकिस्तान के मुसलमान भी ऐसा ही चाहेंगे और अगर उनसे राय लो जाय तो वह भी एक दिल होकर यही कहेंगे—'ऐसा ही हो'। इसलिये ऐसे डर को यहां कोई जगह नहीं रह जाती।

हम ये चिन्तित हैं कि हिन्दुस्तान में बहुत जल्दी मारकाट खतम हो जायगी और हिन्दुस्तानी यूनिवर्स और पाकिस्तान में बहुत जल्दी दिलीदोस्ती कायम हो जायगी बल्कि आने वाली अगली वेदद डरावनी दुनिया की लड़ाई की जड़ इससे कट जायगी और सारे दुनिया अहिंसा के तरीके को मान लेगी, सचाई को अपनाएगी, प्रेम को बढ़ाएगी, और तोंपों तलवारों को तोड़ तोड़ कर हल बनाएगी या हथौड़ों हसियों में बदल देगी, इसमें कोई शक नहीं दुनिया के सभी मुल्क घबराए हुए हैं, जी से अमन चाहते हैं, सुनने समझने को तैयार हैं, पर उन्हें कोई करके दिखाए तो, कोरी बातों से उनकी तसल्ली नहीं होगी, हिन्दुस्तान में अमन कायम हो जाने के बाद और वे-नौज-वे-पुलिस की हकूमत बन जाने के बाद किसकी मजाल है जो 'पाकिस्तान हिन्दुस्तान' की तरफ मुंह करके उस खुदा की याद न करे जो रहमान और रहीम है और जो सचमुच अपने बन्दों में मारकाट को पसन्द नहीं करता।

जब कि वह इस अनोखे तजरवे में लगे हुए हो. लोगों से हमारा मतलब है कांग्रेस के बिम्बेदार आदमी, सरकारी अफसर और देश के समझदार सुखिया.

हम समझते हैं हम जो चाहते हैं कुछ ज्यादा नहीं चाहते.

जब कि वे इस नुस्खे खर्च में लगे होंगे. लोगों से हमारा मतलब है कांग्रेस के डक्टर आदमी, सरकारी अफसर और देश के समझदार सुखिया.

हम समझते हैं हम जो चाहते हैं कुछ ज्यादा नहीं चाहते.

—कल्लोअन दीन

“गीता और कुरान”

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे देकर मिनती मुनती बुनियादी सचाइयों को बयान किया गया है.

उसके बाद गीता के लिले जाने के वक् की इस देश की हालत, गीता के बड़हन और एक अन्वय को लेकर गीता को तालीम को बतलाया गया है.

आखिर में कुरान से पहले की अरब को हालत, कुरान के बड़हन और एक एक बात पर कुरान को तालीम को बयान किया गया है. इस में कुरान को पाँच सौ से ऊपर आयतों का लगभग तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि कुरान में जेहाद, आक्रोश, आखेरत, जन्नत, जहन्नम, काफिर बौरा कित कहा गया है. जो लोग सब धर्मों को एकता को समकता चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों को इन दो अमर पुस्तकों को सचची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को जरूर पढ़ना चाहिये.

किताब आसान हिन्दुस्तानी बयान में, नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकता है. पौनेतीन सौ सके की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की कीमत सिर्फ़ ड़ाई रुपए. डाक खर्च अलग.

मैनेजर “नया हिन्द”

४८ बाई का बाग, इनाहाबाद

Printer—Bishambhar Nath, Vishwvani Press, South Malaka, Allahabad.

Publisher—Bishambhar Nath for Hindustani Culture Society, 48 Bai ka Bagh, Allahabad.

“गिना ओ कुरान”

लेखक - पंडित सुन्दर लाल

अस क्ताब के शुरुअ में दुनया के सब बड़े बड़े धर्मों की अइकता को देखाया गिया हे ओर - सब धर्मों की क्ताबों से हवाल दे दे कर सक्ती जल्ती बन्दगी सच्चाईयों को बयान किया गिया हे. अस्के बेद गिना के लक्के जाने के वकत की अस दिश की हालत गिना के बड़हन ओर अइक अइक के को लिकर गिना की तेलीम को बतलाया गिया हे.

अखर में कुरान से पहले अरब की हालत कुरान के बड़हन ओर अइक अइक बात पर कुरान की तेलीम को बयान किया गिया हे. असे में कुरान की पालीज - ओ से ओर ओर अइतों का अफ्जली तरजुमे देया गिया हे. ये बेसी बतलाया गिया हे के कुरान में जेहन 'आक़ीत' अखरत' जन्नत' जेहन' काफ़र वगैरे कसे ब्या किया हे.

ओ लोग सब धर्मों की अइकता को समजेना चाहे में या हेन्दु धर्म ओर अलाम धर्मों की अइ दो अस पुस्तकों की सच्ची जानकारी हावल करना चाहे में अस क्ताब को जरूर पढ़ना चाहे.

क्ताब सुक्ती रज़ान में नागरी ओर ओरदु धर्मों के लिखावटों में अलक अलक मल सकती हे. ओने तीन - ओ वस्फे की सुन्दर जिल्द बेदगी क्ताब की क़ीमत सुवत देवली रुपये - डाक खर्ज अलक.

मैनेजर 'नया हेन्द'

४८ - पार्क, का बाग, अलाहाबाद

हस्तसंस्थानि कल्पे सौसंस्थानि

मसूर -

(१) ایک ایسی ہندستانی کتاب کا پڑھنا ' پھیلان اور پوجا' کو کہا جاتا ہے۔
 (۲) ایک کتاب پھیلانے کے لیے کتابوں ' اخباروں ' رسالوں وغیرہ کا پھیلانا۔
 (۳) یوحانی کیوں ' کتاب کیوں ' - ہاؤں ' کانفرنسوں ' کیوں ' سے سب چیزوں ' چیزوں ' ہوائیوں اور فرقوں میں ایسے کا میل ہونا۔

سوسائٹی کے پوسٹسٹ - سرتیج بہار سیرز والی پوسٹسٹ - ڈاکٹر بہکوان ماسی اور ڈاکٹر عبدالعق ' گورنگ پالی کے پوسٹسٹ - ڈاکٹر بہکوان ماسی ' سکریٹری - ہندو سوسائٹی - خزانچی - ڈاکٹر قارا چند۔
 گورنگ پالی کے اور مسٹر - ڈاکٹر سید سعید ' مسٹر عبدالجود خواجہ ' مولوی سید سلیمان ' مسٹر منظر علی - رشتہ ' شری ہی جی گپتا ' مسٹر ایسی کے روزرا ' ہندو ہسپتال ڈاکٹر۔

سوسائٹی کی پہلی شام کا ڈنر - ڈاکٹر وادیا ہندوستان کا ہواقت کا دہائی اور فورٹ بہار۔
 پہلی شام کی میٹنگ لیٹی کے مسٹر - شری ہی جی - ' لیٹر ' شری شری ' صوفیادادیا ' پوسٹسٹ - ' - ' ایسے فیضی شری نام - پاج - ' رگولسا ' شریمنی عفت ہندو - ' ہندو اللہ پریلوئی مسٹر کے - ' وی - ' شام۔

مسٹر کے قاعدوں کے لئے لکھیے - مسٹر لال
 گورنگ پالی ہندوستانی کالج سوسائٹی
 گورنگ پالی کا پاج ' الہ آباد۔

نوٹ - سوسائٹی کے مسٹروں کو ' لیا عفت ' اور سوسائٹی کی سب کتابیں وغیرہ کو ' لیا عفت ' اور سوسائٹی کی

ہندوستانی کالج کلچر سوسائٹی

(۱) ایک ایسی ہندستانی کتاب کا پڑھنا ' پھیلان اور پوجا' کو کہا جاتا ہے۔
 (۲) ایک کتاب پھیلانے کے لیے کتابوں ' اخباروں ' رسالوں وغیرہ کا پھیلانا۔
 (۳) یوحانی کیوں ' کتاب کیوں ' - ہاؤں ' کانفرنسوں ' کیوں ' سے سب چیزوں ' چیزوں ' ہوائیوں اور فرقوں میں ایسے کا میل ہونا۔

سوسائٹی کے پوسٹسٹ - سرتیج بہار سیرز والی پوسٹسٹ - ڈاکٹر بہکوان ماسی اور ڈاکٹر عبدالعق ' گورنگ پالی کے پوسٹسٹ - ڈاکٹر بہکوان ماسی ' سکریٹری - ہندو سوسائٹی - خزانچی - ڈاکٹر قارا چند۔
 گورنگ پالی کے اور مسٹر - ڈاکٹر سید سعید ' مسٹر عبدالجود خواجہ ' مولوی سید سلیمان ' مسٹر منظر علی - رشتہ ' شری ہی جی گپتا ' مسٹر ایسی کے روزرا ' ہندو ہسپتال ڈاکٹر۔

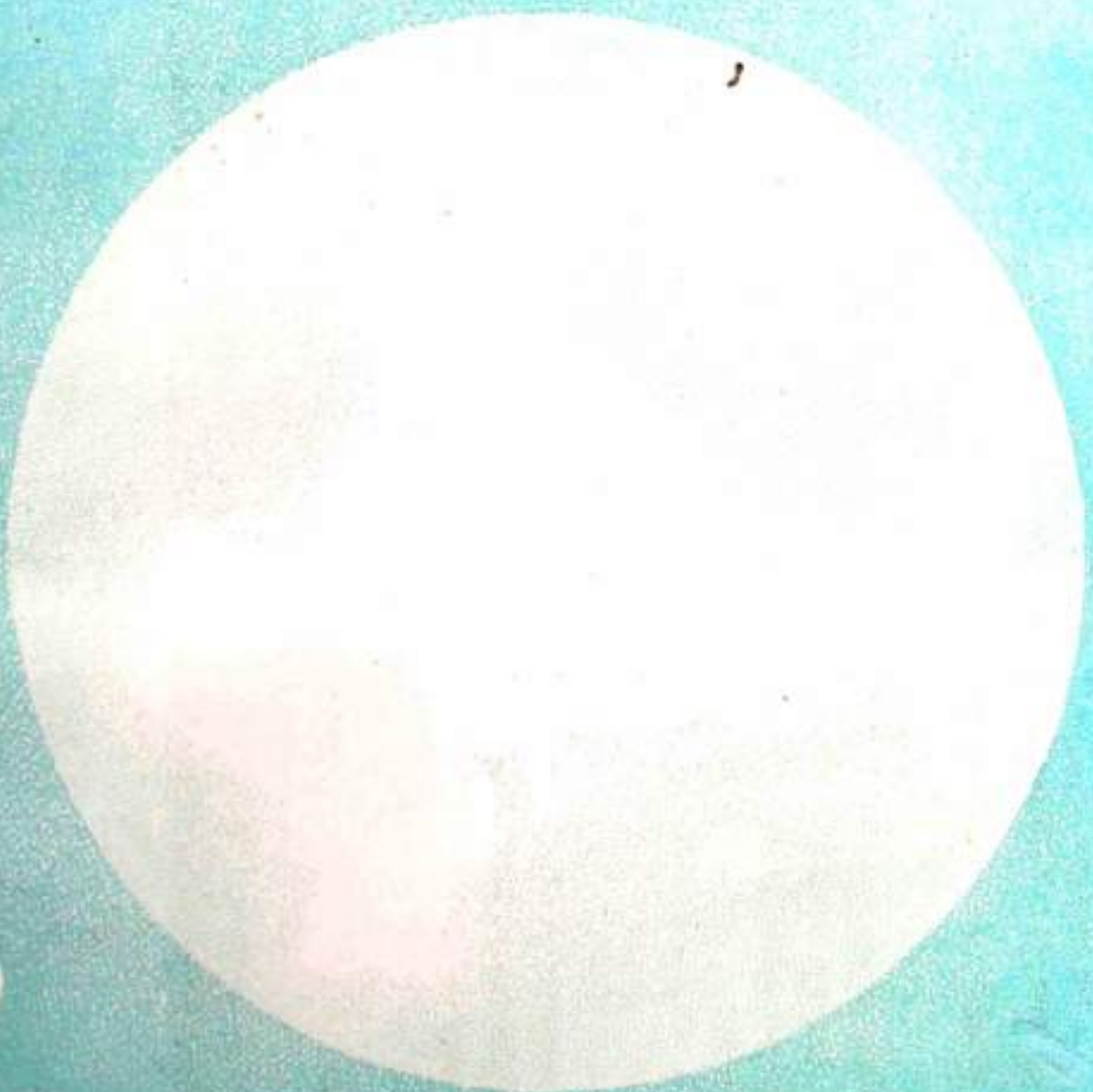
سوسائٹی کی پہلی شام کا ڈنر - ڈاکٹر وادیا ہندوستان کا ہواقت کا دہائی اور فورٹ بہار۔
 پہلی شام کی میٹنگ لیٹی کے مسٹر - شری ہی جی - ' لیٹر ' شری شری ' صوفیادادیا ' پوسٹسٹ - ' - ' ایسے فیضی شری نام - پاج - ' رگولسا ' شریمنی عفت ہندو - ' ہندو اللہ پریلوئی مسٹر کے - ' وی - ' شام۔

مسٹر کے قاعدوں کے لئے لکھیے - مسٹر لال
 گورنگ پالی ہندوستانی کالج سوسائٹی
 گورنگ پالی کا پاج ' الہ آباد۔

نوٹ - سوسائٹی کے مسٹروں کو ' لیا عفت ' اور سوسائٹی کی سب کتابیں وغیرہ کو ' لیا عفت ' اور سوسائٹی کی



श्रीराम



लला भा
महा भा
श्रीराम

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडिटर—

नारायणचन्द्र, भगवानदीन, मुखफार हसन, विशम्भरनाथ, सुन्दरलाल.

नवम्बर १९४७

क्या-किससे

- १— लिखे वालें पढ़े हिन्दुस्तानी (गीत) — ‘विस्मिल’ साहब
इलाहाबादी
- २— सब मजहबों की एकता—डा० भगवानदास, बनारस
- ३— मैं हूँ आजाद—गु. सु.
- ४— रोमन हर्षों में देशी भाषाओं—श्री किशोरलाल
मशरूवाला, वर्धा
- ५— मैं आदमी नहीं हूँ—शब्दुल हलीम साहब अंसारी
- ६— गो-बध—भगवानदीन
- ७— हमारे गिनावे के कुछ आंकड़े और हमारा राज—डाक्टर
जाफर हसन, उसमानिया यूनिवर्सिटी, हैदराबाद
- ८— जलियानवाला बाग का कुछ यादगार—टी रामजी दर
- ९— चालाक शिकारी—अकरम साहब इलाहाबादी
- १०— जवान के बारे में कुछ बातें (एक खत)—जाफर हुसैन
खॉं, कानपुर
- ११— नौआबालो—श्री केदारनाथ
- १२— आज की दुनिया—फौजी खिदमतगार
- १३— कुछ किताबें
- १४— हमारा राय

कीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपए साल, बाहर दस रुपए साल,
एक परचा दस आने.

मैनेजर

४८ बाई का बाग, इलाहाबाद.

“नया हिन्दू”

हन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का प्रचा

एडिटर—

नारायणचन्द्र, भगवानदीन, मुखफार हसन, विशम्भरनाथ, सुन्दरलाल.

नोम्बर १९४७

क्या-किससे	संख्या	पृष्ठ	विवरण
१— लिखे वालें पढ़े हिन्दुस्तानी (गीत) — ‘विस्मिल’ साहब इलाहाबादी	४१७	४१७	...
२— सब मजहबों की एकता—डा० भगवानदास, बनारस	४१८	४१९	...
३— मैं हूँ आजाद—गु. सु.	४२६	४२६	...
४— रोमन हर्षों में देशी भाषाओं—श्री किशोरलाल मशरूवाला, वर्धा	४३०	४३०	...
५— मैं आदमी नहीं हूँ—शब्दुल हलीम साहब अंसारी	४३८	४३८	...
६— गो-बध—भगवानदीन	४४१	४४१	...
७— हमारे गिनावे के कुछ आंकड़े और हमारा राज—डाक्टर जाफर हसन, उसमानिया यूनिवर्सिटी, हैदराबाद	४४६	४४६	...
८— जलियानवाला बाग का कुछ यादगार—टी रामजी दर	४६६	४६६	...
९— चालाक शिकारी—अकरम साहब इलाहाबादी	४६९	४६९	...
१०— जवान के बारे में कुछ बातें (एक खत)—जाफर हुसैन खॉं, कानपुर	४७४	४७४	...
११— नौआबालो—श्री केदारनाथ	४८४	४८४	...
१२— आज की दुनिया—फौजी खिदमतगार	४९९	४९९	...
१३— कुछ किताबें	५०३	५०३	...
१४— हमारा राय	५०५	५०५	...

कीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपए साल, बाहर दस रुपए साल,
एक प्रचा दस आने.

मैनेजर

“नया हन्द”

४८ बाई का बाग, इलाहाबाद.

नया हिन्दू

दिनांक ३

नवम्बर '४७

नम्बर ५

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्दू' पहुँचेगा घर घर, लिये प्रेम की भोली.

नवम्बर १९४७

पृष्ठ ३

जात आदमी 'यदिम' वरुम हो, हन्दुस्तानी बोली,
नया हन्दू, पिंजे का गुरुगुरु, लैके प्रेम की जहोली.

(३५)

लिखें बोलें पढ़ें हिन्दोस्तानी

('बिस्मिल' साहब इलाहाबादी)

मजे की बात है इसमें मजा है
मिले हिन्दी से उर्दू लुलक क्या है
यहाँ परचार कर इसमें मला है
तरककी देश की यों देखना है

लिखें बोलें पढ़ें हिन्दोस्तानी

कहवें बोलवें पढ़वें हन्दुस्तानी

('बिस्मिल' साहब का आदी)

मजे की बात हो इस में मजा हो
मिले हन्दी से उर्दू गुलफत किया हो
यही परचार करे इस में भला हो
तरकी दलित की यों दिखना हो

कहवें बोलवें पढ़वें हन्दुस्तानी

نیا ہند
کہیں بولیں پڑھیں ہندوستانی
نویسندگان

نومبر ۱۹۰۹ء

نیا ہند
لکھیں بولیں پڑھیں ہندوستانی
بھلا تارکھ
جو سچ ہو بات
جہاں ہم ہوں
پسند ایک
کھیں بولیں پڑھیں ہندوستانی
جہاں میں پریم کا دریا بہا
گلے اردو کے ہندی کو ملا
نیا سنسار کو سنگم دکھائیں
یہی ہم راگ دل سے جی سے گائیں
کھیں بولیں پڑھیں ہندوستانی

لکھیں بولیں پڑھیں ہندوستانی
نیا ہند
بھلا تارکھ
جو سچ ہو بات
جہاں ہم ہوں
پسند ایک
کھیں بولیں پڑھیں ہندوستانی
جہاں میں پریم کا دریا بہا
گلے اردو کے ہندی کو ملا
نیا سنسار کو سنگم دکھائیں
یہی ہم راگ دل سے جی سے گائیں
کھیں بولیں پڑھیں ہندوستانی

لکھیں بولیں پڑھیں ہندوستانی
نیا ہند
بھلا تارکھ
جو سچ ہو بات
جہاں ہم ہوں
پسند ایک
کھیں بولیں پڑھیں ہندوستانی
جہاں میں پریم کا دریا بہا
گلے اردو کے ہندی کو ملا
نیا سنسار کو سنگم دکھائیں
یہی ہم راگ دل سے جی سے گائیں
کھیں بولیں پڑھیں ہندوستانی

لکھیں بولیں پڑھیں ہندوستانی
نیا ہند
بھلا تارکھ
جو سچ ہو بات
جہاں ہم ہوں
پسند ایک
کھیں بولیں پڑھیں ہندوستانی
جہاں میں پریم کا دریا بہا
گلے اردو کے ہندی کو ملا
نیا سنسار کو سنگم دکھائیں
یہی ہم راگ دل سے جی سے گائیں
کھیں بولیں پڑھیں ہندوستانی

لکھیں بولیں پڑھیں ہندوستانی

सब मذهبों की एकता

(डॉ. मजहबुल दास, बनारस)

(२)

(डाक्टर भगवान दास, बनारस)

(२)

आज कल आम तौर पर ११ मजहब दुनिया के खिन्दा मजहबों में गिने जाते हैं. पूरब से पच्छिम को चलते हुए यह ११ मत यह हैं—(१) जापान का शिन्तो मत, (२) चीन का ताओ मत जिसे लाओत्सी मत भी कहते हैं, (३) चीन ही का कनफ्यूशियन मत, (४) हिन्दुस्तान का वैदिक मत जिसे आज कल हिन्दू मत कहते हैं, (५) बौद्धमत, (६) जैन मत, (७) सिक्ख मत, (८) खरथुलों यानी पारसी मत, (९) यहूदी मत, (१०) ईसाई मत और (११) इस्लाम.

इन सब मजहबों की अपनी अपनी मशहूर पाक किताबें हैं जिन्हें यहाँ गिताने की ज़रूरत नहीं है. इन किताबों से मिलती जुलती अच्छी बातें लेकर योरप के कुछ विद्वानों ने बड़ी मेहनत के साथ एक जगह जमा करदी है. जो लोग अंगरेजी पढ़ सकें उनके लिये इस तरह की एक बहुत अच्छी किताब रावर्ट अरनेस्ट ह्यूम की लिखी हुई "ट्रेजर हाउस आफ लिबिंग रिलीजन्स" है जिसके मानी होन हैं "खिन्दा मजहबों का तोशाखाना". यह किताब सन १८३३ में न्यूयार्क और लन्दन से निकली है. इसमें अलग अलग मजहबों की किताबों से ३०३४ अच्छे अच्छे किहारे मन्त्र, आयत या टुकड़े जमा कर दिये गए हैं. इन्हें जमा

आज कल عام طور پر ۱۱ مذہب دنیا کے زمرہ مذہبوں میں گئے جاتے ہیں. یورپ سے پچھیم کو چلتے ہوئے یہ ۱۱ मत = ہیں— (۱) جاپان کا شنتومت، (۲) چین کا تاؤمت جسے لاؤتسی मत بھی کہتے ہیں، (۳) چین ہی کا کنفیوشین मत، (۴) ہندستان کا ویک मत، جسے آج کل ہندومت کہتے ہیں، (۵) بودھ मत، (۶) جین मत، (۷) سکھ मत، (۸) زرتشتی یعنی پارسی मत، (۹) یہودی मत، (۱۰) عیسائی मत اور (۱۱) اسلام.

ان سب مذہبوں کی اپنی اپنی مشہور پاک کتابیں ہیں جنہیں یہاں گننانے کی ضرورت نہیں ہے۔ ان کتابوں سے ملتی جلتی اچھی باتیں لے کر یورپ کے کچھ دودانوں نے بڑی محنت کے ساتھ ایک جگہ جمع کر دی ہیں۔ جو لوگ انگریزی پڑھ سکیں ان کے لئے اس طرح کی ایک بہت اچھی کتاب رابرٹ اریسٹ ٹوم کی لکھی ہوئی "ٹریزور ہاؤس آف لیوینگ ریلیجینس" اور جس کے معنی ہوتے ہیں "مذہبہ مذہبوں کا توشہ خانہ"؛ یہ کتاب ۱۹۳۳ء میں نیویارک اور لندن سے نکلی ہے۔ اس میں الگ الگ مذہبوں کی کتابوں سے ۳۰۳۴ اچھے اچھے فقرے، منتر، آیت یا حکمے جمع کر کے گئے ہیں۔ انہیں جمع

करने के लिये विद्वान लेखक को १,०६,४२३ पन्ने पढ़ने पड़े थे. किताब चार हिस्सों में है जिनमें कुल ५१ मजहब हैं. लेखक ने किसी चीज पर अपना कोई राय नहीं दी. सिर्फ समझाने के लिये और अते पते के लिये अपने कुछ नोट दे दिये हैं जिनसे पढ़ने वाले को कुछ मदद मिले. किताब के चौथे हिस्से में सब मजहब वालों के लिये एक मिली जुली पूजा का ढंग भी बताया गया है.

इसी तरह की एक दूसरी बहुत अच्छी किताब डाक्टर फ्रैन्क एल० रिले की लिखी "दि वाइविल आर वाइविल्स" है जिसके माने होते हैं 'इन्जीलों की इन्जील' या 'किताबों की किताब'. यह सन् १९२६ में छपी है. इसके ३४३ सकों में दुनिया की साठ पाक किताबों में से, जिनमें से कोई कोई कहा जाता है तेरह हजार बरस पुरानी हैं, उन्नीस बरस की मेहनत से, लेखक ने करीब १४०० चुनी चुनी बातें बारह अध्यायों के अन्दर जमा कर दी हैं.

यह दोनों किताबें विद्वान लेखकों की सिर्फ राजब की मेहनत ही का सयूत नहीं देती बल्कि सब धर्मों की एकता और इनसानी भाई चार में उनके जबरदस्त एतकाद और विश्वास का भी सबूत देती हैं. सच्चे धर्म के फैलने और इनसानी भाई चार के कायम करने के लिये इस तरह की किताबों का सब मुल्कों में और दुनिया का सब जवानों में बेहद जरूरत है.

दुनिया की इस बरत जो हालत हो रही है और दुनिया भर के लोग जिस तरह की सुसीबतों में फँसे हुए हैं उससे जाहिर है कि 'नेकी, सचाई और रोशनी की ताकतों' को बुराई, भूट

करने के लिये दुवान लिक्क को १,०६,४२३ पन्ने पढ़ने पड़े थे. किताब चार हिस्सों में है जिनमें कुल ५१ मजहब हैं. लेखक ने किसी चीज पर अपनी कोई राय नहीं दी. सिर्फ समझाने के लिये और अते पते के लिये अपने कुछ नोट दे दिये हैं जिनसे पढ़ने वाले को कुछ मदद मिले. किताब के चौथे हिस्से में सब मजहब वालों के लिये एक मिली जुली पूजा का ढंग भी बताया गया है.

इसी तरह की एक दूसरी बहुत अच्छी किताब डाक्टर फ्रैन्क एल० रिले की लिखी "दि वाइविल आर वाइविल्स" है जिसके माने होते हैं 'इन्जीलों की इन्जील' या 'किताबों की किताब'. यह सन् १९२६ में छपी है. इसके ३४३ सकों में दुनिया की साठ पाक किताबों में से, जिनमें से कोई कोई कहा जाता है तेरह हजार बरस पुरानी हैं, उन्नीस बरस की मेहनत से, लिक्क ने करीब १४०० चुनी चुनी बातें बारह अध्यायों के अन्दर जमा कर दी हैं.

यह दोनों किताबें विद्वान लिक्कों की सिर्फ एहनत ही का सयूत नहीं देती बल्कि सब धर्मों की एकता और इनसानी भाई चार में उनके जबरदस्त एतकाद और विश्वास का भी सबूत देती हैं. सच्चे धर्म के फैलने और इनसानी भाई चार के कायम करने के लिये इस तरह की किताबों का सब मुल्कों में और दुनिया का सब जवानों में बेहद जरूरत है.

दुनिया की इस बरत जो हालत हो रही है और दुनिया भर के लोग जिस तरह की सुसीबतों में फँसे हुए हैं उससे जाहिर है कि 'नेकी, सचाई और रोशनी की ताकतों' को बुराई, भूट

सब मजहबों की एकता के साथ सभी बहुत दिनों तक और बड़ी और अंधेरे की ताकतों के साथ अंधी बहुत दिनों तक और बड़ी सख्त लड़ाई लड़नी है, यह दूसरी तरह की ताकतें ही इनसानी कौम को असली दुःखमत्त हैं, जरूरत इस बात की है कि सब मुल्कों में बहुत से सच्चे काम करने वाले इस काम को अपने हाथ में लें, इसके बिना माली या राजकाजी अमन दुनिया में क्रायस नहीं हो सकता.

हमें एक ऐसे व्यापक आलमगीर मजहब की जरूरत है जिसका साफ अपना ढाँचा हो, जिसमें इधर उधर से लेकर चीजें जोड़ न ली गई हों बल्कि जो आप एक क़दरती और खिन्दा जिस्म की तरह दिखाई दे, सब अलग अलग मजहबों के अलग अलग बाहरी खोलों में से यह जिस्म उसी तरह साफ चमकता हुआ दिखाई दे जिस तरह सब अलग अलग आदमियों के अलग अलग शरीरों में से एक इनसानी जिस्म साफ दिखाई देता है, फिर जिस तरह एक इनसानी जिस्म के होते हुए अलग अलग आदमी भी होते हैं और उनसे कुल इनसानी कौम को इज्जत और खुशहाली बढ़ सकती है उसी तरह इस एक व्यापक आलमगीर दान या धर्म के होते हुए जो सबका धर्म हो, लोगों के अलग अलग रास्तों, अलग अलग अक्रादि और अलग अलग रीतिरिवाज इनसानी कौम की शोभा और खुशहाली को बढ़ा सकते हैं.

हमें अपने सब स्कूलों और कालिजों में लड़कों और लड़कियों को धर्म की शिक्षा जरूर देना चाहिये, पर वह शिक्षा सच्चे धर्म, सदाचार की शिक्षा हो, वह शिक्षा सब मतों और मजहबों के लड़के लड़कियों को एक सी दी जावे, वह तालीम उदार हो,

सब मजहबों की अिता
 और अंधेरे की ताकतों के साफ़े अभी बहुत दिनों तक और बड़ी सख्त लड़ाई लड़नी है - दूसरी तरह की ताकतें ही इनसानी कौम की असली दुःखमत्त हैं, जरूरत इस बात की है कि सब मुल्कों में बहुत से सच्चे काम करने वाले इस काम को अपने हाथ में लें, इसके बिना माली या राजकाजी अमन दुनिया में क्रायस नहीं हो सकता.

हमें एक ऐसे व्यापक आलमगीर मजहब की जरूरत है जिसका साफ़े अपना ढाँचा हो, जिसमें इधर उधर से लेकर चीजें जोड़ न ली गई हों बल्कि जो आप एक क़दरती और खिन्दा जिस्म की तरह दिखाई दे, सब अलग अलग मजहबों के अलग अलग बाहरी खोलों में से यह जिस्म उसी तरह साफ चमकता हुआ दिखाई दे जिस तरह सब अलग अलग आदमियों के अलग अलग शरीरों में से एक इनसानी जिस्म साफ़े दिखाई देता है, फिर जिस तरह एक इनसानी जिस्म के होते हुए अलग अलग आदमी भी होते हैं और उनसे कुल इनसानी कौम की शोभा और खुशहाली बढ़ सकती है उसी तरह इस एक व्यापक आलमगीर दान या धर्म के होते हुए जो सबका धर्म हो, लोगों के अलग अलग रास्तों, अलग अलग अक्रादि और अलग अलग रीतिरिवाज इनसानी कौम की शोभा और खुशहाली को बढ़ा सकते हैं.

हमें अपने सब स्कूलों और कालिजों में लड़कों और लड़कियों को धर्म की शिक्षा जरूर देनी चाहिये, पर वह शिक्षा सच्चे धर्म, सदाचार की शिक्षा हो, वह शिक्षा सब मतों और मजहबों के लड़के लड़कियों को एक सी दी जावे, वह तालीम उदार हो,

नया हिन्दू सब मजहबों की एकता नवम्बर सन् '४७

रवादारी की हो. उसका वास्ता किसी एक अलग मजहब से न हो. उसमें सब मजहब शामिल हों. एक दूसरे के खिलाफ दिखाई देने वाले मजहब भी शामिल हों. और इस तरह शामिल हों कि किसी के खिलाफ कोई बात न हो. किसी से दूसरे की मुबाल-फत न मलके. इस तालीम का मकसद हो बच्चों के चरित्र को, उनके चलन को मजबूत और ऊँचा बनाना. उन्हें नेक बनाना. उन्हें अपनी तरफ और दूसरों की तरफ अपने कर्ज को समझाना और उस कर्ज के पूरा करने के काबिल बनाना. उन्हें ईमानदार, प्रेमी, सच्चा, मेहनती और इन्साफ पसन्द बनाना यानी उन्हें अच्छा शहरी और अच्छा इनसान बनाना. इसका यही तरीका है कि उन्हें सब मजहबों के यानी मजहब के बह बुनियादी असूल बताए जावें जिनके अनुसार हममें से हर एक का जीवन चलना चाहिये. इस तरह की तालीम में वह सब बातें चमकाई जावेंगी और दिखाई जावेंगी जिनमें सब मजहब एक हैं और वह सब बातें अलग रखी जावेंगी जो मजहब मजहब में तकरका पैदा करती हैं. आखीर में इस तरह की तालीम में यह कोशिश की जावेगी कि लड़के लड़कियों में एक दूसरे की तरफ और सब मजहबों की तरफ उदारता हो जिससे वह एक दूसरे की अलग अलग मानताओं या रीतिरिवाज के फरकों का भी आदर कर सकें और यह समझें कि यह सब अलग अलग रास्ते उसी एक ईश्वर, अल्लाह, गाड तक पहुँचने के रास्ते हैं. सब मजहबों की कितानों से इसके लिये बेहद मसाला और मदद मिल सकती है.

इसमें शक नहीं कि सब बड़े बड़े मजहब उसी एक ईश्वर से

नामसन्द सब मजहबों की अिना नुबेरस

रवादारी की हो. अस का واسطे किसी एक अक मजहब से नु हो. अस یر, सब मजहब شامل हوں. ایک دوسرے کے خلاف دکھائی دینے والے مذہب بھی شامل ہوں. اور اس طرح شامل ہوں کہ کسی کے خلاف کوئی بات نہ ہو. کسی سے دوسرے کی مخالفت نہ جھلکے. اس تعلیم کا مقصد یہ ہے کہ ہرگز کوئی ان کے طعن مضمون اور اونچا بنانا، پھینکنا، انہیں اپنی طرف اور دوسروں کی طرف سے قرض کو گھسانا اور اس فرض کے پورا کرنے کے قابل بنانا. انہیں ایسا وارہ برائی، پتلا، سختی اور انصاف چننا یعنی انہیں اچھا شہری اور اچھا انسان بنانا. اس کا یہی طریقہ ہو کہ انہیں سب مذہبوں کے یعنی مذہب کے وہ بنیادی اصول بتائے جاویں جن کے انساہ ہم میں سے ہر ایک کا جیون چلنا چاہئے. اس طرح کی تعلیم میں وہ سب باتیں چمکائی جاویں گی اور سکھائی جاویں گی جن میں سب مذہب ایک ہی اور وہ سب باتیں اگ بھی جاویں گی جو مذہب مذہب میں تفرق پیدا کرتی ہو. آخر میں اس طرح کی تعلیم میں یہ کوشش کی جاوے گی کہ لڑکے لڑکیوں میں ایک دوسرے کی طرف اور سب مذہبوں کی طرف اُدارتا ہو جس سے وہ ایک دوسرے کی اگ اگ اناٹاوں یا ریت رواج کے فرقوں کا بھی آد کر سکیں اور یہ سمجھیں کہ یہ سب اگ اگ راستے اسی ایک الشور، اللہ کا لڑکے پہنچنے کے راستے ہیں. سب مذہبوں کی کتابوں سے اس کے لئے بے حد مسالہ اور مدد مل سکتی ہو.

اس میں شک نہیں کہ سب بڑے بڑے مذہب اسی ایک الشور سے

निकले हैं, बाद में सच में तरह तरह की नई बातें जुड़ गई या अर्जाव अर्जाव और अलग अलग रीत रिवाज जुड़ते चले गए, यह एक दूसरी बात है, अगर हम इन बाद की चीजों या ऊपरी रीत रिवाजों को अलग कर दें तो फिर सब मजहबों का तत्व, उनकी असलियत एक ही दिखाई देगी।

इन्जील में लिखा है—

“ईश्वर का भेजा हुआ सब मजहबी कितानें आदमी के फायदे की है, वह आदमी को तालीम देने, ठीक करने, बुराई से बचाने और नेकी सिखाने के लिये हैं जिससे ईश्वर का हर बन्दा कामिल बन सके और हर नेक काम कर सके” (इन्जील, २ तिमोथी ३, १६—१७)।

कुरान में लिखा है—

“हम उस ज्ञान को मानते हैं जो अल्लाह ने हमें भेजा है और उसे भा मानते हैं जो अल्लाह ने तुम्हें भेजा है, हमारा और तुम्हारा अल्लाह एक ही है, और उसी अल्लाह के सामने हम सुकत हैं” (कुरान २९—४५)

इन्जील में लिखा है—

“कोई आदमी सिर्फ अपने लिये नहीं जीता..... हम सब एक दूसरे का हिस्सा हैं..... ईश्वर ने सब क्रौमों को जो इस धरती पर आबाद है एक ही खून से बनाया है”

कुरान में लिखा है—

“सब मजहब (जानदार) अल्लाह का एक बड़ा कुनवा है”

वेद में लिखा है—

“सब इनसानों का एक दूसरे के साथ ऐसा ही नाता है जैसे

मिले हैं। बाद में सब में तरह तरह की नई बातें जुड़ गई या अर्जाव अर्जाव और अलग अलग रीत रिवाज जुड़ते चले गए, यह एक दूसरी बात है, अगर हम इन बाद की चीजों या ऊपरी रीत रिवाजों को अलग कर दें तो फिर सब मजहबों का तत्व, उनकी असलियत एक ही दिखाई देगी।

अजिल में लिखा है—

“ईश्वर की कृपा से सब मजहबी कितानें आदमी के फायदे की हैं, वे आदमी को तालीम देने, ठीक करने, बुराई से बचाने और नेकी सिखाने के लिये हैं जिससे ईश्वर का हर बन्दा कामिल बन सके और हर नेक काम कर सके” (अजिल, २ तिमोथी ३, १६—१७)।

कुरान में लिखा है—

“हम उस ज्ञान को मानते हैं जो अल्लाह ने हमें भेजा है और उसे भा मानते हैं जो अल्लाह ने तुम्हें भेजा है, हमारा और तुम्हारा अल्लाह एक ही है, और उसी अल्लाह के सामने हम सुकत हैं” (कुरान २९—४५)

अजिल में लिखा है—

“कोई आदमी सिर्फ अपने लिये नहीं जीता..... हम सब एक दूसरे का हिस्सा हैं..... ईश्वर ने सब क्रौमों को जो इस धरती पर आबाद है एक ही खून से बनाया है”

कुरान में लिखा है—

“सब मजहब (जानदार) अल्लाह का एक बड़ा कुनवा है”

वेद में लिखा है—

“सब इनसानों का एक दूसरे के साथ ऐसा ही नाता है जैसे

نیا ہند سب مذہبوں کی ایکتا
 ایک شریعہ کے سر، ہاتھ، دھڑ اور ٹانگوں کا ایک دوسرے کے ساتھ۔
 آگے بڑھنے سے پہلے ہم سب دھرموں کے گرنختوں کی کچھ
 خاص خاص پارکھنائیں نیچے دیتے ہیں۔

ایٹنڈ کا کہنا ہو۔
 "ایک ہی ایٹور سب پر اٹیموں میں چھپا ہوا ہو۔"
 "وہی سب کو دیکھتا ہو، وہی سب دلوں کے اندر ہو۔"
 "کچھ دار آدمی اسے اپنے ہی اندر ڈھونڈتے اور پاتے ہیں۔"
 "ایسے لوگ ہی لیکار دیکھ پاسکتے ہیں دوسرے نہیں۔"
 "وہی ہمیشہ سے اور ہمیشہ رہنے والا ہو۔ وہ سب جانوں کی

پنج جان تک۔

"وہ اکیلا سب کی اچھاؤں کو پورا کرتا ہو۔"
 "عقل مند آدمی اس ایک کو اپنے اندر دیکھتے ہیں۔"
 "ایسے لوگ ہی لیکار ذاتی حاصل کر سکتے ہیں دوسرے نہیں۔"
 "وہ سب جگہ موجود ہو، سب دھروں کی روح ہو۔"
 "اس کا کوئی دوی نہیں یہ وہ سب روٹیوں کا بنانے والا ہو۔"
 "عقل مند آدمی اس ایک کو اپنے اندر دیکھتے ہیں۔"
 "ایسے لوگ ہی لیکار دیکھ پاسکتے ہیں دوسرے نہیں۔"
 "وہ ایک ہر اس کا کوئی رنگ نہیں یہ وہ اپنی شکتی (قدرت) سے
 "طرح طرح کے بے شمار رنگ پیدا کرتا ہو۔"
 "پھر انہیں مٹاتا ہو اور پھر بناتا ہو۔"
 "وہ ایٹور ہیں صاف صاف سمجھ دے۔"

نیا ہند سب ماحدہوں کی ایکتا نونبر ۱۸۹
 ایک شریعہ کے سر، ہاتھ، دھڑ اور ٹانگوں کا ایک دوسرے
 کے ساتھ۔

آپنے بڑنے سے پہلے ہم سب دھرموں کے گرنختوں کی کچھ
 خاص خاص پارکھنائیں نیچے دیتے ہیں۔
 ایٹنڈ کا کہنا ہے۔
 "ایک ہی ایٹور سب پر اٹیموں میں چھپا ہوا ہے۔"
 "وہی سب کو دیکھتا ہے، وہی سب دلوں کے اندر ہے۔"
 "کچھ دار آدمی اسے اپنے ہی اندر ڈھونڈتے اور پاتے ہیں۔"
 "ایسے لوگ ہی لیکار دیکھ پاسکتے ہیں دوسرے نہیں۔"
 "وہی ہمیشہ سے اور ہمیشہ رہنے والا ہے۔ وہ سب جانوں کی

پنج جان تک۔

"وہ اکیلا سب کی اچھاؤں کو پورا کرتا ہے۔"
 "عقل مند آدمی اس ایک کو اپنے اندر دیکھتے ہیں۔"
 "ایسے لوگ ہی لیکار ذاتی حاصل کر سکتے ہیں دوسرے نہیں۔"
 "وہ سب جگہ موجود ہے، سب دھروں کی روح ہے۔"
 "اس کا کوئی دوی نہیں یہ وہ سب روٹیوں کا بنانے والا ہے۔"
 "عقل مند آدمی اس ایک کو اپنے اندر دیکھتے ہیں۔"
 "ایسے لوگ ہی لیکار دیکھ پاسکتے ہیں دوسرے نہیں۔"
 "وہ ایک ہر اس کا کوئی رنگ نہیں یہ وہ اپنی شکتی (قدرت) سے
 "طرح طرح کے بے شمار رنگ پیدا کرتا ہے۔"
 "پھر انہیں مٹاتا ہے اور پھر بناتا ہے۔"
 "وہ ایٹور ہیں صاف صاف سمجھ دے۔"

نیا سہنر
سب مذہبوں کی ایکتا
نومبر ۱۹۷۸ء

مسلمان صوفی کہتا ہے۔
”اُس کی کیا عجیب بے رنگی ہو جس سے لاکھوں رنگ پیدا ہوتے ہیں!
عجب وہ بے شکلی ہو جس سے بے شمار شکلیں پیدا ہوتی ہیں!“
”میں شروع کرتا ہوں اُس کے نام سے جس کا کوئی نام نہیں۔
”تسے جس نام سے نکلا وہ سر اویجا کر کے عوالب دیتا ہو۔
”میں اُس کے نام سے شروع کرتا ہوں جو اُس کثرت (ہستات) میں آپ اکیلا ہو۔“
”مگر اُس کی وحدت (ایک پن) میں کثرت قیہ ہو۔“

وید میں لکھا ہے۔
”اُس ایک پریشور کی ہم پوجا کرتے ہیں، اُس کی جیوتی (نور) کا
(۵) ہم دھیان کرتے ہیں! وہ جیوتی ہماری بڑھیوں کو روشن کرے اور راستہ
دکھا دے۔ یہ ایشور ہمیں سیدھے راستے پر لے چلے۔ تو ہی سب کچھ
جاننا ہے۔ ہمیں بل دے کہ ہم اُن گناہوں سے لڑ سکیں جن کا بچان
ہمارے اندر پیدا ہوتا رہتا ہے اور جو ہمیں ٹھیک راستے سے بھٹکاتے
رہتے ہیں۔ ہم تیرے ہی سامنے جھکتے ہیں اور تیری ہی پوجا کرتے ہیں۔“
قرآن کہتا ہے۔

”سابقہ نام اُس اللہ کے جو رحمان اور رحیم ہے۔ ہم اُسی اللہ کی حمد
(ستوتی) کرتے ہیں جو سب دُنیاؤں کا مالک ہے! جو رحمان اور رحیم ہے! جو
ایک دن سب کو اُن کے کاموں کا پھل دینے والا ہے۔ اے اللہ! تیری
ہی ہم عبادت (پوجا) کرتے ہیں، کچھ سے ہی مدد چاہتے ہیں۔ ہمیں سیدھا راستہ
بتا۔ وہ راستہ جو اُن لوگوں کا راستہ ہے جو جنھیں تو نے اپنی کیتیں دے رکھی

نیا ہیندہ سب مذہبوں کی ایکتا نومبر ۱۹۷۸ء

موسلمان سوتی کہتا ہے۔
”اسکو کيا عجب بے رنگی ہے کي جس سے لاکھوں رنگ پيدا ہوتے ہيں!
”عجب وہ بے شكلي ہے جس سے بے شمار شكليں پيدا ہوتی ہيں!“
”میں شروع کرتا ہوں اس کے نام سے جس کا کوئی نام نہیں۔
”تسے جس نام سے نکلا وہ سر اویجا کر کے عوالب دیتا ہو۔
”میں اس کے نام سے شروع کرتا ہوں جو اس کثرت (ہستات) میں آپ اکیلا ہے۔“
”مگر اس کی وحدت (ایک پن) میں کثرت قیہ ہو۔“

وید میں لکھا ہے۔
”اس ایک پریشور کی ہم پوجا کرتے ہیں، اس کی جیوتی (نور) کا
(۵) ہم دھیان کرتے ہیں! وہ جیوتی ہماری بڑھیوں کو روشن کرے اور راستہ
دکھا دے۔ یہ ایشور ہمیں سیدھے راستے پر لے چلے۔ تو ہی سب کچھ
جاننا ہے۔ ہمیں بل دے کہ ہم اُن گناہوں سے لڑ سکیں جن کا بچان
ہمارے اندر پیدا ہوتا رہتا ہے اور جو ہمیں ٹھیک راستے سے بھٹکاتے
رہتے ہیں۔ ہم تیرے ہی سامنے جھکتے ہیں اور تیری ہی پوجا کرتے ہیں۔“
قرآن کہتا ہے۔

”سابقہ نام اس اللہ کے جو رحمان اور رحیم ہے۔ ہم اُسی اللہ کی حمد
(ستوتی) کرتے ہیں جو سب دُنیاؤں کا مالک ہے! جو رحمان اور رحیم ہے! جو
ایک دن سب کو اُن کے کاموں کا پھل دینے والا ہے۔ اے اللہ! تیری
ہی ہم عبادت (پوجا) کرتے ہیں، کچھ سے ہی مدد چاہتے ہیں۔ ہمیں سیدھا راستہ
بتا۔ وہ راستہ جو اُن لوگوں کا راستہ ہے جو جنھیں تو نے اپنی کیتیں دے رکھی

है. उन लोगों का रास्ता नहीं जो भटक हुए हैं और जिनसे तू नाराज है."

पारसियों की गाथा में लिखा है—

"ऐ बड़े ईश्वर हमें बड़ी उन्न दे और धीरज दे और साफ दिमाग दे और हमें सीधा रास्ता दिखा जिस पर तू मिलता है और जो तुम्ह तक पहुँचता है."

इन्जील के पुराने अहंदा में लिखा है—

"ऐ ईश्वर मेरा रोना सुन ! मेरी प्रार्थना को तरक कान दे. यह प्रार्थना मेरे दिल से निकल रही है. मुझे अपने रास्ते पर सँभाल कर ले चल ताकि मेरे पैर इधर उधर न भटकें. मुझे अपना रास्ता दिखा. ऐ ईश्वर ! मुझे अपने रास्तों की तालीम दे. मुझे अपनी सबाई की तरक ले चल. तू ही मेरी निजात (मुक्ति) का मालिक है. मेरी आंखें खोल ताकि मैं तेरे ज्ञान की अजीब बातें देख सकूँ. अपने कहने के अनुसार मुझे अन्दर से चला. मुझे भूट के रास्ते से अलग रख."

इन्जील के नए अहंदा में लिखा है—

"ऐ हम सबके पैदा करने वाले जो आसमान में है ! तेरा पाक नाम फैले ! तेरा राज दुनिया में कायम हो ! इस धरती पर जैसे आसमान में सब तेरी मर्जी से चलें ! आज के दिन हमारी रोख की रोखी हमें दे ! हमारे कर्जे (कसूर) माफ कर जिस तरह हम अपने कर्ज वालों को माफ कर देते हैं. हमें लोभ में मत फँसा ! हमें बुराई से बचा ! असली राज तेरा ही राज है ! तेरी ही शक्ति (क़बल) है तेरी ही शान है हमेशा हमेशा के लिये ! आमीन."

चीन के पैगम्बर कनफूसियस ने कहा है—

"ऐ बड़े, सबसे बड़े ईश्वर हम तुम्ही को बुलाते हैं ! तू ही हमारा बाप और तू ही हमारी माँ है."

यौबराह
सब मनुष्यों की अक्ता

हैं. उन लोगों का रास्ता नहीं जो भटक हुए हैं और जिनसे तू नाराज हो."

पारसियों की गाथा में लिखा है—
"ऐ बड़े ईश्वर हमें बड़ी उन्न दे और धीरज दे और साफ दिमाग दे और हमें सीधा रास्ता दिखा जिस पर तू मिलता है और जो तुम्ह तक पहुँचता है."

इन्जील के पुराने अहंदा में लिखा है—

"ऐ ईश्वर मेरा रोना सुन ! मेरी प्रार्थना को तरक कान दे. यह प्रार्थना मेरे दिल से निकल रही है. मुझे अपने रास्ते पर सँभाल कर ले चल ताकि मेरे पैर इधर उधर न भटकें. मुझे अपना रास्ता दिखा. ऐ ईश्वर ! मुझे अपने रास्तों की तालीम दे. मुझे भूट के रास्ते से अलग रख."

इन्जील के नए अहंदा में लिखा है—

"ऐ हम सबके पैदा करने वाले जो आसमान में है ! तेरा पाक नाम फैले ! तेरा राज दुनिया में कायम हो ! इस धरती पर जैसे आसमान में सब तेरी मर्जी से चलें ! आज के दिन हमारी रोख की रोखी हमें दे ! हमारे कर्जे (कसूर) माफ कर जिस तरह हम अपने कर्ज वालों को माफ कर देते हैं. हमें लोभ में मत फँसा ! हमें बुराई से बचा ! असली राज तेरा ही राज है ! तेरी ही शक्ति (क़बल) है तेरी ही शान है हमेशा हमेशा के लिये ! आमीन."

चीन के पैगम्बर कनफूसियस ने कहा है—

"ऐ बड़े, सबसे बड़े ईश्वर हम तुम्ही को बुलाते हैं ! तू ही हमारा बाप और तू ही हमारी माँ है."

सिक्तों के ग्रन्थ साहब में लिखा है—

“ये दया के सागर तू हमेशा हमारे दिलों के अन्दर रह और हमारे दिमागों को रोशन कर ताकि हम तुम्हें प्यार करें, तेरी सेवा करें और तेरी पूजा करें. ऐ ईश्वर ! हम हमेशा तुम्हें अपने पास समझें ! तू ही हमारा बाप, हमारी माँ, हमारा गुरु और हमारा सब कुछ है.”

प्यारे दोस्तों वहनों और भाइयों !

हर नेक बात सोचने और हर नेक काम करने से पहले हमें सब जानों की जान उस परमेश्वर का ध्यान करना चाहिये और उससे मदद मांगनी चाहिये जो अपनी वहदत, अपनी एकता में से बहुमार जानों और इस बेअन्त रंग विरंगों कुदरत को पैदा करता है और फिर इस सब कुनवे को एक सूत में बाँधे रखता है. वही खरी स रग पट्टे, रंग पट्टों से जिस्म, जिस्मों से गिरोह, क्रौंम और मुल्क, मुल्कों से ग्रह और नक्षत्र, उनसे सूरज, उनसे सौर जगत (निचामे शम्सी), इन्हें मिलाकर फिर और बड़े बड़े जगत बे अन्त और बेहद बनाकर उन सब की फिर एक दुनिया, एक जगत, एक यूर्नोवर्स बनाता है. आदमी गोशत पोस्त का लोथड़ा है. वही इसमें घुसकर जान और चेतना पैदा करता है. वह चेतना जो सारे विश्व, सारं आलम को अपने अन्दर ले सकती है. सब दिलों में बढी छिपा हुआ है. उसी की बदौलत हम सब गोशत पोस्त के लोथड़े एक दूसरे को समझ सकते हैं, एक दूसरे के साथ हमदर्दी कर सकते हैं और दुख दर्द में एक दूसरे की मदद कर सकते हैं. हममें जो कुछ एकता है वह उसी एक की दी हुई है, उसी एक से पैदा हुई है. उसी एक को अपने अन्दर और सबके

प्यारे दोस्तों किनो और क्या किनो !

अरिक्त बात सोचने और हर नेक काम करने से पहले हमें सब जानों की जान उस परमेश्वर का ध्यान करना चाहिये और उससे मदद मांगनी चाहिये जो अपनी वहदत, अपनी एकता में से बहुमार जानों और इस बेअन्त रंग विरंगों कुदरत को पैदा करता है और फिर इस सब कुनवे को एक सूत में बाँधे रखता है. वही खरी स रग पट्टे, रंग पट्टों से जिस्म, जिस्मों से गिरोह, क्रौंम और मुल्क, मुल्कों से ग्रह और नक्षत्र, उनसे सूरज, उनसे सौर जगत (निचामे शम्सी), इन्हें मिलाकर फिर और बड़े बड़े जगत बे अन्त और बेहद बनाकर उन सब की फिर एक दुनिया, एक जगत, एक यूर्नोवर्स बनाता है. आदमी गोशत पोस्त का लोथड़ा है. वही उसी की बदौलत हम सब गोशत पोस्त के लोथड़े एक दूसरे को समझ सकते हैं, एक दूसरे के साथ हमदर्दी कर सकते हैं और दुख दर्द में एक दूसरे की मदद कर सकते हैं. हममें जो कुछ एकता है वह उसी एक की दी हुई है, उसी एक से पैदा हुई है. उसी एक को अपने अन्दर सबके

यासन्द
सिक्तों के गर्तने सावब में लकहा हो—
“अे दया के सागर तू हमेशा हमारे दिलों के अन्दर रह और हमारे दिमागों को रोशन कर ताकि हम तुम्हें प्यार करें, तेरी सेवा करें और तेरी पूजा करें. ऐ ईश्वर ! हम हमेशा तुम्हें अपने पास समझें ! तू ही हमारा बाप, हमारी माँ, हमारा गुरु और हमारा सब कुछ है.”

अन्दर बैठा हुआ देख और समझ कर ही हम सुख चैन पा सकते हैं. वह रहे कुल, वह ज्योतियों की ज्योति, वह नूरों का नूर हमारे दिलों और दिमागों को रोशन करे ! हमें 'सीधा रास्ता' दिखावे और हमें उस रास्ते पर चलने की हिम्मत और ताकत दे. किसी भी काम में हमें कामयाबी तभी मिल सकती है जब हम शुरू करने से पहले अपने दिल उस ईश्वर अल्लाह के सामने खोल दें !

इसके बाद हमें चाहिये कि अदब के साथ सब मुल्कों, सब कौमों और सब जमानों के ऋषियों, पैगम्बरों, बुद्धों, मर्सायाहों, नबियों, रसूलों, अवतारों, तार्थकरो, अर्हतों, गुरुओं और रुहानी रास्ता दिखाने वालों को याद करें और सलाम करें जिन्होंने बार बार सभी तालीम देकर इतसानी समाज के दिलों में उस 'एकता' को जगाए रखने की कोशिश की.

आखीर में हमें उन सब भाई बहनों, सोसाइटियों को नमस्कार करनी चाहिये जो अपनी अपनी जगह इस एकता को बनाए रखने, सबका ध्यान, सबकी असलियत की तरफ दिलाने और बिना देश, जात, मजहब, रंग, कौम, नसल या किसी तरह के फरक के एक आलमगीर, व्यापक इंसानी भाई चारे को कायम रखने और मजबूत करने की कोशिश में लगे हुए हैं. बिना इस यहाँ की एकता के हम उस दुनिया की, अल्लाह की एकता को नहीं पा सकते !

इस मजमून पर ज्यादा जानकारी के लिये लेखक की अँगरेजी किताब 'The Essential Unity of All Religions' पढ़िये

—एडिटर

सब मजहबों की एकता

नया हिन्दू

अन्दर बैठा हुआ देखे और समझे कि ही हम एक जिन पा सकते हैं. वह नूरों का नूर हमारे दिलों और दिमागों को रोशन करे ! हमें 'सीधा रास्ता' दिखावे और हमें उस रास्ते पर चलने की हिम्मत और ताकत दे. किसी भी काम में हमें कामयाबी तभी मिल सकती है जब हम शुरू करने के पहले अपने दिल उस ईश्वर अल्लाह के सामने खोल दें !

इसके बाद हमें चाहिये कि अदब के साथ सब मुल्कों, सब कौमों और सब जमानों के ऋषियों, पैगम्बरों, बुद्धों, मर्सायाहों, नबियों, रसूलों, अवतारों, तार्थकरो, अर्हतों, गुरुओं और रुहानी रास्ता दिखाने वालों को याद करें और सलाम करें जिन्होंने बार बार सभी तालीम देकर इतसानी समाज के दिलों में उस 'एकता' को जगाए रखने की कोशिश की.

आखीर में हमें उन सब मजहबों, सोसाइटियों को नमस्कार करनी चाहिये जो अपनी अपनी जगह इस एकता को बनाए रखने, सबका ध्यान, सबकी असलियत की तरफ दिलाने और बिना देश, जात, मजहब, रंग, कौम, नसल या किसी तरह के फरक के एक आलमगीर, व्यापक इंसानी भाई चारे को कायम रखने और मजबूत करने की कोशिश में लगे हुए हैं. बिना इस यहाँ की एकता के हम उस दुनिया की, अल्लाह की एकता को नहीं पा सकते !

इस मजमून पर ज्यादा जानकारी के लिये लेखक की अँगरेजी किताब

'The Essential Unity of All Religions'

पढ़िये — एडिटर

میں ہوں آزاد !

(گ۰ م۰)

میری بستی نہی پاکستان،
اور نہ ہی ہندوستان،
بلکہ ہے انسانیستان،

سو میں ہوں آزاد !

میں نہی پورے مندر میں،
اور نہ ہی مسجد میں،
بلکہ اپنے ہی دل میں،

سو میں ہوں آزاد !

میرے دھڑاتے دل کا نہی،
اپنے اور دوسرے کا نہی،
پیسے پونجی کا نہی،

سو میں ہوں آزاد !

میں ہوں آزاد !

(گ۰ م۰)
میری بستی نہیں پاکستان،
اور نہ ہی ہندوستان،
بلکہ ہے انسانیستان،

سو میں ہوں آزاد !
میں نہیں پورے مندر میں،
اور نہ ہی مسجد میں،
بلکہ اپنے ہی دل میں،
سو میں ہوں آزاد !

مجھے چھوٹ چھات کا بھید نہیں،
اپنے اور دوسرے کا دھڑاتے نہیں،
پیسے پونجی کا کلہاڑی نہیں،
سو میں ہوں آزاد !

रोमन حرفوں میں دلہنی بھاشائیں

(دہری کشور لال مشرو والہ، وردھا)

میرا کہنا یہ نہیں کہ ہم دلہنی لکھاؤں چھوڑ دیں اور رومن سے ہی کام لیں۔ اپنی لکھاؤں کی خوبیوں کو بھی میں سمجھتا ہوں۔ ہمارے پیرائت کے ساتھ ہیہ کے کچھ حصے اس بولی کی لکھاؤں سے بھی سمجھنے رکھتے ہیں۔ جیسے، تلسی واس جی کا نیچے کا مشہور دوہا ناگری کی لکھاؤں کے بنائے مطلب ہو جائے گا۔

ایک چھتر ایک ٹکٹ منی، سب برتی پر جوؤ
تلسی رکھوہ نام کے برن براجت دوؤ

اسی طرح نقطے کے پیر پھیر سے منی کیسے بدل جاتے ہیں، اس پر اُردو میں وی تظہیں ہیں، جن کا مزہ اُردو لکھاؤں میں ہی پایا جاسکتا ہے۔

لیکن ساتھ ہی مجھے یہ بھی کہنا چاہئے کہ ہماری لکھاؤں کو (جس میں اُردو بھی شامل ہے) بہت سادہ سادہ کرنے کی ضرورت ہے۔ اور جب تک ہم اس پر ایک رائے سے کوئی فیصلہ نہیں کر لیتے، تب تک آج کے استعمال میں بڑی عملی کٹھنایاں ہیں۔

دوسری بات یہ ہے کہ آج کے زمانے میں ٹائپ رائٹر جیسے سادہ سادوں کے بغیر اور تار وغیرہ کے کاموں میں دلہنی لکھاؤں کا اُپہیوگ کرنے میں بہت اڑھنیں ہوتی ہیں۔ نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ لکھاؤں کے لئے ہم اپنی بھاشائیں بھی چھوڑ دیتے ہیں، اور

رومن ہرفوں میں دلہنی بھاشائیں

(شری کیشور لال مشرو والہ، وردھا)

میرا کہنا یہ نہیں کہ ہم دلہنی لکھاؤں چھوڑ دیں اور رومن سے ہی کام لیں۔ اپنی لکھاؤں کی خوبیوں کو بھی میں سمجھتا ہوں۔ ہمارے پیرائت کے ساتھ ہیہ کے کچھ حصے اس بولی کی لکھاؤں سے بھی سمجھنے رکھتے ہیں۔ جیسے، تلسی واس جی کا نیچے کا مشہور دوہا ناگری کی لکھاؤں کے بنائے مطلب ہو جائے گا۔

ایک چھتر ایک ٹکٹ منی، سب برتی پر جوؤ

تلسی رکھوہ نام کے برن براجت دوؤ

اسی طرح نقطے کے پیر پھیر سے منی کیسے بدل جاتے ہیں، اس پر اُردو میں وی تظہیں ہیں، جن کا مزہ اُردو لکھاؤں میں ہی پایا جاسکتا ہے۔

لیکن ساتھ ہی مجھے یہ بھی کہنا چاہئے کہ ہماری لکھاؤں کو (جس میں اُردو بھی شامل ہے) بہت سادہ سادہ کرنے کی ضرورت ہے۔ اور جب تک ہم اس پر ایک رائے سے کوئی فیصلہ نہیں کر لیتے، تب تک آج کے استعمال میں بڑی عملی کٹھنایاں ہیں۔

دوسری بات یہ ہے کہ آج کے زمانے میں ٹائپ رائٹر جیسے سادہ سادوں کے بغیر اور تار وغیرہ کے کاموں میں دلہنی لکھاؤں کا اُپہیوگ کرنے میں بہت اڑھنیں ہوتی ہیں۔ نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ لکھاؤں کے لئے ہم اپنی بھاشائیں بھی چھوڑ دیتے ہیں، اور

दो से. दोनों तरीकों में सिक्र व्यंजन यानी हरूक तहज्जी को लिखाई में फरक है. और सब तरह से दोनों बराबर हैं. तरीका नम्बर एक में देशी—याने हिंदी—उर्दू—की लिखने की रीत बरती गयी है. यानी, जब दो या ज्यादा व्यंजन (हरूक तहज्जी) साथ आते हों, तब हर अक्षर को अलग अलग—'अ' से मिली हुआ—आवाज में पढ़ना चाहिये. जैसे, prt = परत. अगर किसी दो या ज्यादा व्यंजनों की मिली हुआ आवाज निकालनी हो, तो उन दो या ज्यादा के बीच (पहले ढंग में) 'v' या (दूसरे ढंग में) 'v' हरूक लिखा जाय. जैसे, p/vrt (pvrt) = परत, pr/vt (prvt) = परत, p/vr/vt (pvrvt) = पूत

तरीका नम्बर दो में अंगरेजी रीत का अ्युपयोग है. याने, दो या ज्यादा व्यंजन साथ आये हों, तो उनकी आवाज साथ मिला कर निकालनी चाहिये. जैसे, prt = पूत. अगर उनमें अलग अलग निकालनी हो तो उनमें @ या v से अलग किया जाय जैसे p @ r @ t (pvrvt) = परत; pr @ t (prvt) = परत, p @ rt (pvrt) = परत. पहले तरीके से लिखने में कुछ हरूक कम हो जाते हैं, और अक्सर जगह और समय दोनों की किरायत होती है. फिर, वह देशी लिखावटों के रिवाज से मेल खाता है. लेकिन, हो सकता है कि जिन्हें अंगरेजी का बहुत मुहावरा है, उन्हें दूसरा तरीका पसंद आवे.

अंगरेजी लिपि में पांच अक्षरों से हरूक है, जो देशी भाषाओं के लिये जरूरी नहीं. उनका आवाज दूसरी तरह दिखाई जा सकता है. यह हरूक v, x, d, q और f हैं. अिन हरूकों को अंगरेजी से जुदा मानी देकर उनकी मदद से हमारी भाषाओं

दो से. दोनों तरीकों में सर्व व्यंजन लैटिन ह्रस्व की लैटिन में रीत हो. और सब तरह से दोनों बराबर हैं. तरीके नम्बर एक में देशी—याने हिंदी—उर्दू—की लैटिन की रीत बरती गयी है. यानी, जब दो या ज्यादा व्यंजन (ह्रस्व लैटिन) साथ आते हों, तब हर एक को अलग अलग—'अ' से मेली हुआ—आवाज मिलना चाहिये. जैसे, prt = परत. अगर किसी दो या ज्यादा व्यंजनों की मेली हुआ आवाज निकालनी हो, तो उन दो या ज्यादा के बीच (पहले ढंग में) 'v' या (दूसरे ढंग में) 'v' हरूक लिखा जाय. जैसे, p/vrt (pvrt) = परत, pr/vt (prvt) = परत, p/vr/vt (pvrvt) = पूत

तरीके नम्बर दो में अंगरेजी रीत का अ्युपयोग है. याने, दो या ज्यादा व्यंजन साथ आये हों, तो उनका आवाज साथ मिला कर निकालनी चाहिये. जैसे, prt = पूत. अगर उनमें अलग अलग निकालनी हो तो उनमें @ या v से अलग किया जाय जैसे p @ r @ t (pvrvt) = परत; pr @ t (prvt) = परत, p @ rt (pvrt) = परत. पहले तरीके से लिखने में कुछ ह्रस्व कम हो जाते हैं, और अक्सर जगह और समय दोनों की किरायत होती है. फिर, वह देशी लिखावटों के रिवाज से मेल खाता है. लेकिन, हो सकता है कि जिन्हें अंगरेजी का बहुत मुहावरा है, उन्हें दूसरा तरीका पसंद आवे.

अंगरेजी लिपि में पांच अक्षरों से हरूक है, जो देशी भाषाओं के लिये जरूरी नहीं. उनका आवाज दूसरी तरह दिखाई जा सकता है. यह हरूक v, x, d, q और f हैं. अिन ह्रस्वों को अंगरेजी से जुदा मानी देकर उनकी मदद से हमारी भाषाओं

नया हिन्द रोमन हकों में देशी भाषाओं नवम्बर सन् '४७

के लिये खरूरी सब आवाजें बताओ जा सकती हैं. इनका जो उपयोग यहां सोचा गया है, वह नीचे है.

v—तरीका नम्बर एक में व्यंजन (तहजी) के साथ हलन्त साकिन) दिखाने के लिये और u के साथ मिल कर अ के लिये. तरीका नम्बर दो में a तथा व्यंजन दोनों के साथ अ के लिये.

x—'—'—नाँक से निकलने वाली आवाजों के लिये, अपने से जुड़े स्वर के साथ, और अपने प्रान्त के रिवाज के मुताबिक j, g, या d के साथ झ के लिये.

z—ख, घ, छ, य, ध, फ, भ, प, द आदि महाप्राणों के लिये यानी जिन हरकों के बोलने में भाप निकलती हो उनके लिये योग्य व्यंजन के साथ.

q—क, ग, च, ख, ट, ड, इ, ए, ल, श, जैसी खास खास आवाजों के लिये मुनासिब व्यंजन के साथ.

f—ज, ठ, ढ, फ आदि खास महाप्राण आवाजों के लिये, मुनासिब व्यंजन के साथ.

जब तक अिन हरकों के लिब्रे अपर बताये इशारे कथम नहीं किये जाते, तब तक नीचे लिखे निशानों का अिन्हीं कामों के लिब्रे अपयोग किया जा सकता है. यह सब निशान किसी भी अंगरेजी टाथिप राबिटर पर पाये जा सकते हैं.

v के लिब्रे तरीका १ में (/), तरीका २ में (—);
x के लिब्रे (-); z के लिब्रे (:); q के लिब्रे ('), और
f के लिब्रे (: ').

दोनों ह्रस्वों में दोषी ब्यासाश

के लिये ह्रस्वों सब आवाजें बतायी जा सकती हैं. इनका जो उपयोग सोचा गया है, वह नीचे है.

v—तरीका नम्बर एक में व्यंजन (तहजी) के साथ हलन्त साकिन) दिखाने के लिये और u के साथ मिल कर अ के लिये. तरीका नम्बर दो में a तथा व्यंजन दोनों के लिये.

x—'—'—नाँक से निकलने वाली आवाजों के लिये, अपने से जुड़े स्वर के साथ, और अपने प्रान्त के रिवाज के मुताबिक j, g, या d के साथ झ के लिये.

z—ख, घ, छ, य, ध, फ, भ, प, द आदि महाप्राणों के लिये यानी जिन हरकों के बोलने में भाप निकलती हो उनके लिये योग्य व्यंजन के साथ.

q—क, ग, च, ख, ट, ड, इ, ए, ल, श, जैसी खास खास आवाजों के लिये मुनासिब व्यंजन के साथ.

f—ज, ठ, ढ, फ आदि खास महाप्राण आवाजों के लिये, मुनासिब व्यंजन के साथ.

जब तक अिन हरकों के लिब्रे अपर बताये इशारे कथम नहीं किये जाते, तब तक नीचे लिखे निशानों का अिन्हीं कामों के लिये अपयोग किया जा सकता है. यह सब निशान किसी भी अंगरेजी टाथिप राबिटर पर पाये जा सकते हैं.

v के लिब्रे तरीका १ में (/), तरीका २ में (—);
x के लिब्रे (-); z के लिब्रे (:); q के लिब्रे ('), और
f के लिब्रे (: ').

नया हिन्द रोमन हर्कों में देशी भाषाओं नवम्बर सन् '४७

(यहाँ एक खुलासा कर देना जरूरी है. आम तौर पर ख, घ, छ, बौरा महाप्राण व्यंजनों को h के साथ मिलने का रिवाज है. जिसकी जगह z या f का अुपयोग यहां किया गया है. z का अुपयोग यूरोप की कुछ भाषाओं में जिस तरह होता है. h कमी कमी शक पैदा करने वाला होता है. जैसे kher तरीका १ में खेर पदा जाय या कहेर, या तरीका २ में खेर या कहेर? इसी तरह bhal से (१) में भाल या बहाल और (२) में भाल या बहाल? फिर मद्रास बौरा प्रान्तों में th और dh का अुपयोग त-थ और द-ध दोनों के लिखे होता है, और दूसरे प्रान्तों में ठ-थ और ड-ध दोनों के लिये. यह सब धोका z या f के अुपयोग से हट जाता है. f असल में pz के बराबर है. लेकिन अुस के अुपयोग से लिखाओी में ओक हरक की किकायत होती है.)

नीचे के निशान सिर्फ जगह और समय की बचत के लिये हैं. अनुस्वार के लिये -, विसर्ग के लिये %, अ के लिये @, अ के लिये @ " औ के लिये @ =, इ के लिये £, छ-रु के लिये r, l, ;

पूरी लिखावट

कमानों में दिये हुये हरक तार में काम में लाने के लिये हैं.

स्व-सू

अ—¹ आ—¹ अ—¹
@ (uv)* a

अ—¹ अ—¹

अ—¹ अ—¹

अ—¹ अ—¹

अ—¹ अ—¹

अनुस्वार के लिये -, विसर्ग के लिये %, अ के लिये @, अ के लिये @ " औ के लिये @ =, इ के लिये £, छ-रु के लिये r, l, ;
अनुस्वार के लिये -, विसर्ग के लिये %, अ के लिये @, अ के लिये @ " औ के लिये @ =, इ के लिये £, छ-रु के लिये r, l, ;
अनुस्वार के लिये -, विसर्ग के लिये %, अ के लिये @, अ के लिये @ " औ के लिये @ =, इ के लिये £, छ-रु के लिये r, l, ;

अनुस्वार के लिये -, विसर्ग के लिये %, अ के लिये @, अ के लिये @ " औ के लिये @ =, इ के लिये £, छ-रु के लिये r, l, ;

अनुस्वार के लिये -, विसर्ग के लिये %, अ के लिये @, अ के लिये @ " औ के लिये @ =, इ के लिये £, छ-रु के लिये r, l, ;

अनुस्वार के लिये -, विसर्ग के लिये %, अ के लिये @, अ के लिये @ " औ के लिये @ =, इ के लिये £, छ-रु के लिये r, l, ;

दोमन हर्कों में देशी भाषाओं

नया हिन्द

दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द
दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द
दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द
दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द
दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द
दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द
दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द
दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द
दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द
दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द

दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द
दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द
दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द
दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द
दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द
दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द
दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द
दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द
दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द
दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द

दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द
दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द
दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द
दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द
दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द
दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द
दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द
दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द
दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द
दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द

दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द

दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द

दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द

दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द

दोमन हर्कों में देशी भाषाओं नया हिन्द

غلة (अर्घानासिक)
= (2)

@ = (vo/vu)

o

@ " (ve/vi)

e

अनुस्वार (m/n)
: - 0 (विसर्ग) hv
हलन्त (हलन्त) ' / ' (v) *
ज - ङ

व्यंजन - त्जि - हروف

साधारण आवाज़ें (अल्प प्राण)

क - क	ग - ग	ज - ज	त - त	द - द
k	g	j	t	d
न - न	प - प	ब - ब	र - र	ल - ल
n	p	b	r	l
स - स	ह - ह	म - म		
s	h	m		

• / (v) की खरत तरीका १ में ही रहेगी. तरीका २ में हर पूरे व्यंजन (हरफ तहज्जी) के साथ v या कोअी दूसरा स्वर आवेगा (v) की खरत तरीका १ में ही रहेगी. तरीका २ में हर पूरे व्यंजन (हरफ तहज्जी) के साथ v या कोअी दूसरा स्वर आवेगा

• (v) की खरत तरीका १ में ही रहेगी. तरीका २ में हर पूरे व्यंजन (हरफ तहज्जी) के साथ v या कोअी दूसरा स्वर आवेगा

• (v) की खरत तरीका १ में ही रहेगी. तरीका २ में हर पूरे व्यंजन (हरफ तहज्जी) के साथ v या कोअी दूसरा स्वर आवेगा

बिस् लिखे बिस्को जहरत न रहेगी.

खास आवाज़ें (अल्प प्राण)

तार में ' की जगह q लगाया जाय
अ-क क-क
@' (avq)

ड-ड d'
ण-ण n'

साधारण आवाज़ें (महाप्राण)

(तार में : की जगह z लगाया जाय)
ख-क k:
घ-घ g:

फ-फ p:
भ-भ b:

खास आवाज़ें (महाप्राण)

(तार में : की जगह f लगाया जाय)
ख-क k:
घ-घ g:

खास आवाज़ें (अल्प प्राण)

तार में ' की जगह q लगाया जाय
अ-क क-क
@' (avq)

ड-ड d'
ण-ण n'
श-श s'

साधारण आवाज़ें (महाप्राण)

(तार में : की जगह z लगाया जाय)
ख-क k:
घ-घ g:

ज-ज j:
झ-झ j:

ष-ष s:
ज़-ज़ z:

खास आवाज़ें (महाप्राण)

(तार में : की जगह f लगाया जाय)
ख-क k:
घ-घ g:
ड-ड d:
प-प p:

میں آدمی نہیں ہوں

(عبدلطیف صاحب انصاری بھوپال)

منٹ منٹ کھٹ کھٹ

کر ڈٹ کر ڈٹ کھٹ پٹ

آواز پر آواز،

اور — لگاتار آواز

کون کر رہے؟

کان کھائے جارہا ہے، نیند حرام کر رہی ہے۔

صاف فرمائیے، ذرا باہر تشریف لائیے۔

ارے کھائی نام بتاؤ نہ — تم کون ہو؟

— میں ہوں انقلاب۔

کیا انقلاب؟

جی ہاں انقلاب!

یہ انقلاب و انقلاب کیا ہوتا ہے؟

آپ باہر آئیے، میں ملنا چاہتا ہوں۔

آپ تشریف لے جائیے — میں ملنا نہیں چاہتا

انداز سے مجھے آپ نہایت خطرناک آدمی معلوم ہوتے ہیں۔

ابھی جناب، میں آدمی نہیں ہوں۔

تو پھر آخر کون ہیں؟

میں جالیور نام آدمی کو انسانیت کے قالب میں ڈھالنے

والا سوڈیک اصلاحی عمل ہوں۔

میں آزاد مومن نہیں ہوں

(ابن عبدلہ ہلالیہ صاحب انصاری، بھوپال)

مینٹ مینٹ خٹ خٹ

کر خٹ کر خٹ پٹ

آواز پر آواز،

آواز — لگاتار آواز

کون ہے یہ؟

کان بھائے جا رہا ہے، نیند حرام کر رہی ہے۔

میں باہر آئیے، ذرا باہر تشریف لائیے۔

ارے کھائی نام بتاؤ نہ — تم کون ہو؟

— میں ہوں انقلاب۔

کیا انقلاب؟

جی ہاں انقلاب!

یہ انقلاب و انقلاب کیا ہوتا ہے؟

آپ باہر آئیے، میں ملنا چاہتا ہوں۔

آپ تشریف لے جائیے — میں ملنا نہیں چاہتا

انداز سے مجھے آپ نہایت خطرناک آدمی معلوم ہوتے ہیں۔

ابھی جناب، میں آدمی نہیں ہوں۔

تو پھر آخر کون ہیں؟

میں جالیور نام آدمی کو انسانیت کے قالب میں

ڈھالنے والا "ایک اصلاحی عمل" ہوں۔

उर्फ आम में लोग मुझे को "इनकलाव" के नाम से पुकारते हैं और उसी नाम से मैं अब सारे जहान में बदनाम हूँ.

आजादी के जज़बे से मशविरा-

एक मजबूर यानी कमजोर और बेख़वान इंसान और जबर का निशान बन चुका है. ज़लम और अत्याचार का वह खूब शिकार हो चुका है. उसके दिल के सारे भाव ख़त्म बन चुके हैं और सारे उसके अरमान मर चुके हैं. तो ऐसी ही हालत में वह थोड़ी देर के लिये अलग बैठकर आजादी के जज़बे से ख़रूरी सलाह मशविरा करता है. ताकि उसकी खिन्दगी क़ान्ति का रूप ले ले और आप ही आप वह कामयाबी का भेद पा ले.

हेजान में तूफ़ान-

बेवसी का दूसरा नाम है मजबूरी—मजबूरी असल में उत्पन्न करने वाली शक्ति है इरादे और करतब की.

—और, बानी है हिस्मत और टक्कर की.

जब मजबूरी को अपनी बेवसी और बदहाली के दर्शन का मौक़ा मिलता है तो उसको अपने जीवन की खिलत देखकर फुरेरी आ जाती है. वही फुरेरी उसको ग़ैरत और खुददारी पर कौड़े लगाती है. और उसके मुरदा एह्वास को जिलाती है जिसके असर से उसके बदन से आग के शोले निकलने लगते हैं. वस वह आग बगूला हो जाती है और आपे से बाहर !

धीरज को एक दम खो देती है. बरदाश्त को बिल्कुल रुल-सत कर देती है. ध्यान उसका पलट जाता है. विचार उसका

عرف عام میں لوگ مجھ کو "انقلاب" کے نام سے پکارتے ہیں اور اسی نام سے میں اب سارے جہان میں بدنام ہوں.

آزادی کے جذبے سے مشورہ-

ایک مجبور یعنی کمزور اور بے زبان انسان جو جبر کا نشانہ بن چکا ہے. ظلم اور اتیاچار کا وہ خوب نثار ہو چکا ہے. اس کے دل کے سارے بھاد زخم بن چکے ہیں اور سارے اس کے ارمان مٹ چکے ہیں. تو ایسی ہی حالت میں وہ کھوٹری دیر کے لئے الگ بیٹھ کر آزادی کے جذبے سے ضروری صلاح مشورہ کرتا ہے. تاکہ اس کی زندگی کرائی کا روپ لے لے اور آپ ہی آپ وہ کامیابی کا بھید پالے.

ہیجان میں طوفان —

بے بسی کا دوسرا نام ہے مجبوری—مجبوری اصل میں اُتین کرنے والی شکتی ہے اور ارادے اور کمرتب کی.

— اور بانی ہے اُتت اور کمرتب کی.

جب مجبوری کو اپنی بے بسی اور بدحال کے दर्شن کا موقع ملتا ہے تو اس کو اپنے جیون کی ذلت دیکھ کر پھیریں آجاتی ہے. وہ پھیریں اس کی غیرت اور خودداری پر کھڑے لگاتی ہے. اور اس کے مُردہ احساس کو جلاتی ہے جس کے اثر سے اس کے بدن سے آگ کے شعلے نکلنے لگتے ہیں. بس وہ آگ گولہ ہوجاتی ہے اور آپے سے باہر!

دھیرج کو ایک دم کھو دیتی ہے. برداشت کو بالکل منجست

کردیتی ہے. دھیان اس کا پلٹ جاتا ہے. دچار اس کا

बदल जाता है. मजबूरी अब अपने आप को महकूमी, गुलामी, बेकसी और बेवसी के मुकाम से हटा हुआ दूसरी जगह पर पाली है.

—यानी इनकलाबी माहौल में

इस माहौल में जब वह दाखिल हो जाती है तो मजबूरियों के द्वे दबाए और सिमटे सिमटाए खर्बोरों से जबरदस्त हेजान उमड़ पड़ता है—उसी हेजान में गरम गरम जलवों का वेपनाह तूफान होता है जो बड़े बड़े अत्याचारों की ऊंचो ऊंचो अटारियों को घास फूस की तरह बहा ले जाता है. और उन अत्याचारों की बिन्दा लाशों को फना के गार में ढकेल देता है, इनकलाब को आग में सुलस देता है और उनकी जड़ बुनियादों को उखाड़ फेंकता है. यहां तक कि जब वह जोश में और तैश (गुस्सा) में आता है तो अमीन आसमान को भी हिला देता है.

मजबूरी का तूफान क्योंकि मजबूरी का हालत में उठता है यानी जब जब्त की हद खतम हो चुकी होती है, सन्न का पैमाना भर चुका होता है, सन्तोष का प्रमान चमकने लगता है, तब वह उठता है और मजबूर होकर उठता है. इसलिये अत्याचारों को चुनौती देकर उठता है—और उन पर क्रयामत बन कर उठता है.

बदल जाता है. मजबूरी अब अपने आप को 'गुलामी', 'खुदामी' के किसी और बिल्कुली के मुकाम से हटा हुआ दूसरी जगह पर पाली है.

—یعنی القزایی ماحول میں .

اس ماحول میں جب وہ داخل ہوجاتی ہے تو جمہوریوں کے دیے دبائے اور سمیٹے سمیٹائے ذخیروں سے زبردست بیجان اُغند پڑتا ہے۔ اسی بیجان میں گرم گرم جذبوں کا بے پناہ طوفان ہوتا ہے جو ہرگز بڑے اتیاچاروں کی اونچی اونچی اٹاریوں کو گھاس کھوس کی طرح ہالے جاتا ہے۔ اور ان اتیاچاروں کی زندہ لاشوں کو فنا کے غار میں ڈسکیل دیتا ہے، انقلاب کی آگ میں مٹھلس دیتا ہے اور ان کی جڑ بنیادوں کو دکھاڑ پھینکتا ہے۔ یہاں تک کہ جب وہ جوش میں اور طیش (غصہ) میں آتا ہے تو زمین آسمان کو کھینچ لیا دیتا ہے.

مجبوری کا طوفان کیونکہ مجبوری کی حالت میں اُٹھتا ہے یعنی جب ضبط کی حد ختم ہوچکی ہوتی ہے، صبر کا پیمانہ بھرچکا ہوتا ہے، سنتوس کا پیمانہ چلنے لگتا ہے اور تب وہ اُٹھتا ہے اور مجبور ہوکر اُٹھتا ہے۔ اس لئے اتیاچاروں کو چوٹی دے کر اُٹھتا ہے۔ اور ان پر قیامت بن کر اُٹھتا ہے.

गो बद्ध

गो बद्ध के बारे में गांधी जी के यह शब्द काफी हैं, कि अगर तुम हिन्दुस्तान में गो-बध को कानून से रोकोगे तो पाकिस्तान में बुतपरस्ती यानी मूर्तिपूजा कानून से जरूर रोको जायगी. अब जो कुछ हम लिखेंगे वह गाँधी जी के ऊपर कहे सूत्र की सिर्फ तर्कसाल होगी.

वध करना ही बुरी चीज है, और फिर गाय जैसे उपयोगी जानवर का वध करना तो और भी बुरी चीज है. गाय की सेवाएं इतनी ज्यादा हैं कि वध करना तो एक तरह वह सचमुच इज्जत करने लायक जानवर बन जाती है. और आदमी उसकी इज्जत करते भी हैं. किसी भी जानवर को देवता या ईश्वर के नाम पर वध करना बहुत ही बुरी चीज है, और फिर गाय जैसे जानवर को ईश्वर के नाम पर वध करना तो वध करने को हद् तक खींच ले जाना है.

गो-बध

गो बध के बारे में गाँधी जी के यह शब्द काफी हैं, कि अगर तुम हिन्दुस्तान में गो-बध को कानून से रोकोगे तो पाकिस्तान में बुतपरस्ती यानी मूर्तिपूजा कानून से जरूर रोको जायगी. अब जो कुछ हम लिखेंगे वह गाँधी जी के ऊपर कहे सूत्र की सिर्फ तर्कसाल होगी.

वध करना ही बुरी चीज है, और फिर गाय जैसे उपयोगी जानवर का वध करना तो और भी बुरी चीज है. गाय की सेवाएं इतनी ज्यादा हैं कि वध करना तो एक तरह वह सचमुच इज्जत करने लायक जानवर बन जाती है. और आदमी उसकी इज्जत करते भी हैं. किसी भी जानवर को देवता या ईश्वर के नाम पर वध करना बहुत ही बुरी चीज है, और फिर गाय जैसे जानवर को ईश्वर के नाम पर वध करना तो वध करने को हद् तक खींच ले जाना है.

गो-बध हिन्दुस्तान में कब से है इसकी तारीख का पता तारीख को भी नहीं और इसके रोकने की कितनी चार कोशिशों की गईं इसका हाल भी तारीख ठीक ठीक नहीं बता सकती. हां, इस बात का पता जरूर चलता है कि जब जब गोबध रोकने की कोशिश की गई तब दो तरह के काम में लाए गए.

(१) यह कि गोबध रोकने वालों ने बड़े प्रेम से गोबध करने की कोशिशें कीं. गाय की सेवाएं उनके सामने

गो बद्ध हिन्दुस्तान में कब से है इस की तारीख का पता तारीख को भी नहीं और इस के रोकने की कितनी चार कोशिशों की गईं इसका हाल भी तारीख ठीक ठीक नहीं बता सकती. हां, इस बात का पता जरूर चलता है कि जब जब गो बद्ध रोकने की कोशिश की गयी तब दो तरीके काम में लाए गए.

(१) यह कि गो बद्ध रोकने वालों ने बड़े प्रेम से गो बद्ध

खेल खोल कर रक्बी, अपने त्याग और अपनी कैयाची से गोबध करने वालों के दिल पिघलाए, उन्हीं के धर्म प्रन्थों से सबूत निकाल निकाल कर दिए और आखिर उनको ऐसी सफलता मिली कि उन्होंने गाय के मारने वालों को गाय के बचाने वालों में बदल दिया. और उन्हीं महापुरुषों का असर हचारों बरस धीत जाने पर भी ताजा और जानदार बना हुआ है, जितना वह जब था जब नया नया जन्मा था. ऐसे महात्मा थे, महावीर स्वामी और बुद्ध भगवान.

(२) यह कि गोबध करने वाले खुद ही, अगर वह राजा हुए, तो प्रजा के भावों का खयाल रख कर अपने हुकुम के जरिये गोबध, को थोड़ा थोड़ा या बिलकुल रोक देते थे. या अगर मामूली आदमी हुए तो अपने पड़ोसियों का खयाल करके वैसा करने से रुक जाते थे. इस तरह के राजाओं में बाबर, हुमायूँ, अकबर गिनाए जा सकते हैं. और मामूली आदमियों में तो, रामचन्द्र जी के बसाने से आज तक, जगह जगह ऐसे आदमी आए. दिन पैदा होते रहते हैं फिर चाहे वह अँगुलियों पर गिने जाने लायक क्यों न हों जो अपने पड़ोसियों का खयाल रख कर गोबध को अपने यहाँ से हमेशा के लिए रोक देते हैं. हाँ, राजाओं के गोबध रोकने में आदमियत और दया का हिस्सा बहुत कम रहता है, ज्यादा हिस्सा रहता है राजनीति का. इसलिये उनके फरमानों का असर उनके राजा रहते हुए भी गोबध करने वालों पर बहुत कम पड़ता है. और उनके दुनिया से उठ जाने के बाद तो वह नाम को भी नहीं रह जाता. तभी तो बाबर के बाद उसके बेटे

कहो ल कहो ल कहो ल ' अने त्याग और अपनी फायसि से गोबध करने वालों के दिल गह्लाले अखिस के दहम गुरुन्थों से निमित नखाल नखाल कर दे लें और अखरान को ऐसी सफलता मिली कि उन्होंने गल्ले के मारने वालों को गल्ले के बचाने वालों में बदल दिया. और अखिस मयारोशुथों का अत्रेहरारो ल बरस धीत जाने पर भी ताजा और जानदार बना हुआ है, जितना वह जब नया नया जन्मा था. ऐसे महात्मा थे, महावीर स्वामी और बुद्ध भगवान.

(२) यह कि गोबध करने वाले खुद ही, अगर वह राजा हुए, तो प्रजा के भावों का खयाल रख कर अपने हुकुम के जरिये गोबध, को थोड़ा थोड़ा या बिलकुल रोक देते थे. या अगर मामूली आदमी हुए तो अपने पड़ोसियों का खयाल करके वैसा करने से रुक जाते थे. इस तरह के राजाओं में बाबर, हुमायूँ, अकबर गिनाए जा सकते हैं. और मामूली आदमियों में तो, रामचन्द्र जी के बसाने से आज तक, जगह होते रहते हैं फिर चाहे वह अँगुलियों पर गिने जाने लायक क्यों न हों जो अपने पड़ोसियों का खयाल रख कर गोबध को अपने यहाँ से हमेशा के लिए रोक देते हैं. हाँ, राजाओं के गोबध रोकने में आदमियत और दया का हिस्सा बहुत कम रहता है, ज्यादा हिस्सा रहता है राजनीति का. इसलिये उनके फरमानों का असर उनके राजा रहते हुए भी गोबध करने वालों पर बहुत कम पड़ता है. और उनके दुनिया से उठ जाने के बाद तो वह नाम को भी नहीं रह जाता. तभी तो बाबर के बाद उसके बेटे

हुमायूँ और उसके पोते अकबर को अपने अपने राजकाल में फिर से फरमान निकालने पड़े और तिस पर भी कहीं कहीं उनके फरमान की बेकदरी हो ही जाती थी, क्योंकि राजाओं के अपने खयाल से बध या गोबध कुछ बहुत घुरा नहीं समझा जाता था. राजाओं से कहीं ज्यादा तो वह मामूली आदमी अपना असर छोड़ जाते थे जो अपने पड़ोसियों की खातिर गोबध या सब तरह के बध को न सिर्फ छोड़ देते थे बल्कि खुद मांस खाना भी छोड़ देते थे और अपने घर में भी बनने देने को ध्यार से रोक देते थे.

मतलब यह कि जिन दो तरीकों से अब तक गोबध रोकना गया उन में आदमी के अंदर बैठे ईश्वर से या तो अपील की जाती थी या ईश्वर खुद ही गोबध करने वालों में जागर अपनी खुदाई सिफत, दया की मात्रा उनमें इतनी ज्यादा कर देता था कि वह बध जैसे काम को अपने आप ही छोड़ देते थे.

आज हिन्दू गोबध रोकने के लिये जिस तरीके को काम में लाना चाहते हैं वह बिलकुल नया है. हो सकता है कभी पहिले भी कहीं काम में लाया गया हो पर उसका हमको पता नहीं है न सही, पर हम इतना जरूर कह सकते हैं कि इस तरीके से अगर कम गोबध रुका होगा तो या तो वह रुका ही न होगा या अगर रुका होगा तो कुछ दिन बाद ही फिर चल पड़ा होगा. फिर जिस तरीके से, यानी कानून बनवाकर, आज के हिन्दू गोबध रोकना चाहते हैं उनके जी में सचमुच गाय के लिए, इतनी मुहब्बत है, यह भी तो ठीक ठीक पता नहीं चलता. जहाँ तक हम समझते हैं कानून से गोबध रोकने की खाहिश के पीछे या तो कोई राजनीति की

हायल और अंस के पोल्टे अक्र को अपने रान काल में घेर से फ्रान तकलने प्रुसे और तिस पर कभी कभिस कभिस अंस के फ्रान की बने कदरी हो ही जाती थी, कियुनके राजाओं के अपने खयाल से बध या गोबध कभिस बत बुरा नभिस समझा जाता था. राजाओं से कभिस जुरिदा तो वे समुली आदी अत्रा चहुरा जाते थे ग्हे ग्हे ग्वापने प्रुसेसियों की हाट ग्के बध या सब हाट ग्के बध को न सर्फ चहुरा दिते थे बल्के खुद मांस कखाना कभी चहुरा दिते थे और अपने क्हर

मी भी बने दिते को बियार से रुक दिते क्हे.

मलब ये क्के जिन दु हाटिलों से अब तक गोबध रुका गिया अंस मी आदी के अंदर ग्हे शिवुर से या तो अतिल की जाती थी या शिवुर खुद ही जुरिदा क्के दिते क्हे. बध या गोबध क्के दिते क्हे.

अज हैदू गोबध रुकने के लै जस हाटिले को काम मी लाना चाहते हिस वे बाकल नया हो. होसकता हो कभी हाटिले कभिस काम मी लाया गिया होर हाटिले से अक्र कभिस गोबध रुका होगा तो या तो वे रुका ही न होगा या अक्र कभिस गोबध रुका होगा तो कभिस रुक ही घेर मिल प्रुगा. घेर जस हाटिले से हैतनी हाटलन बनाकर अज के हैदू गोबध रुकना चाहते हिस अंस के जी मी सच हाटिले क्के लै हैतनी हाटलन हो. ये भी तो क्हेतलक हाटिले प्रुसे नभिस चलता. जहाँ तक हम क्हेते हिस हाटलन से

गोबध रुकने की खाहिस के पीछे या तो कौनी रान निति की

चाल है या अपने से दूसरे धर्म वालों को चिढ़ाने का खयाल. क्योंकि सच्चे जी से गोबध रोकने की बात जिस मन में आएगी वह मन बहुत ही पाक होना चाहिये. किसी भी जानवर के बध से जिसको दुख होता हो ऐसा ही आदमी सच्चे जी से गोबध रोकने की बात सोच सकता है, और अगर वह उसी काम में जी जान लाड़ाए तो शायद मरते मरते गोबध बंद कर सकता है, पर ऐसा आदमी तो कानून से रोकने की बात सोचेंगा भी नहीं, वह तो वैसा सोचने वाले को उल्टा रोकेगा. आज जो हिन्दू गोबध का आन्दोलन लेकर खड़े हुए हैं अगर वह पहिले हिन्दुओं के देवा के मंदिरों में देवता के नाम पर होते हुए भैस, बकरा, घट्टे को बलि का रोकने में लगे होते तब भी वह किसा दर्जे तक इस आन्दोलन का हाथ में लेने के क़ाबिल हो सकते थे, पर उनमें से तो बहुत से ऐसे हैं जो खुद मांस खाते हैं और देड़े सांधे गो मांस के सत को देवा की शक्ल में खुद भी खा लेते हैं क्यों कि आज कल गो मांस का सत हस्पतालों में विलायत से खूब आता रहता है. अगर हम सत वाला बात छोड़ भा दें जिसका अकसर खाने वालों को पता नहीं होता तब भी उनके मांस खाने की बात कैसे भी नहीं छोड़ी जा सकती. खुलासा यह कि उन लोगों का मन अभी इतना पवित्र नहीं हो पाया कि वह गोबध रोकने के आन्दोलन को बहुत दूर तक ले जा सकें और अगर सचमुच उसे दूर तक ले गए और दाने चार इस ने अपना जॉन कुरवान करदी तो हम यही समझेंगे कि वह जॉन गाय बचाने के लिए नहीं कुरवान हुई है, हुई है कुछ राजनीति के अधिकार पेंठने का कांशिरा में.

जाल हो या अपने से दूसरे देवम वालों को चिढ़ाने का खयाल. किونक सच्चे जी से गोबध रोकने की बात जिस मन में आकेगी वह मन बहुत ही पाक होना चाहिये. किसी भी जानवर के बध से जिसको दुख होता हो ऐसा ही आदमी सच्चे जी से गोबध रोकने की बात सोच सकता है, और अगर उसी काम में जी जान लाड़ाए तो शायद मरते मरते गोबध बंद कर सकता है, पर ऐसा आदमी तो कानून से रोकने की बात सोचेंगी भी नहीं, वह तो विसा सोचने वाले को उल्टा रोकेगा. आज जो हिन्दू गोबध का अन्दोलन लेकर खड़े हुए हैं अगर भैस, बकरा, घट्टे को बलि का रोकने में लगे होते तब भी वह किसा दर्जे तक इस आन्दोलन का हाथ में लेने के क़ाबिल हो सकते हैं, पर उन में से तो बहुत से ऐसे हैं जो खुद मांस खाते हैं और देड़े सांधे गो मांस के सत को देवा की शक्ल में खुद भी खा लेते हैं क्यों कि आज कल गो मांस का सत हस्पतालों में विलायत से खूब आता रहता है. अगर हम सत वाला बात छोड़ भा दें जिसका अकसर खाने वालों को पता नहीं होता तब भी उनके मांस खाने की बात कैसे भी नहीं छोड़ी जा सकती. खुलासा यह कि उन लोगों का मन अभी इतना पवित्र नहीं हो पाया कि वह गोबध रोकने के आन्दोलन को बहुत दूर तक ले जा सकें और अगर सचमुच उसे दूर तक ले गए और दाने चार इस ने अपनी जानें कुरवान करदी तो हम यही समझेंगे कि वह जॉन गाय बचाने के लिए नहीं कुरवान हुई है, हुई है कुछ राजनीति के अधिकार पेंठने का कांशिरा में.

कुछ लोग जल्दी में आकर सोचे समझे बिना यह दलील दे बैठते हैं कि हिंसा हिंसा से ही रुका करती है, वह यह भी कह सकते हैं कि आग आग से ही बुझाई जा सकती है और वह शायद दहकते हुए कोयले से जलती हुई मोमबत्ती को बुझाकर भी दिखा सकते हैं, पर इस पोच दलील पर खड़े हुए आदमी भी समाज के डर से यह कहने का हिम्मत नहीं कर सकते कि गोवध से गोवध रोका जा सकता है, इस तरह की पाच दलीलों में एक बहकावा छिपा रहता है और ऊपर से बड़े पक्के सुबूत का जामा पहने रहता है, जिसकी वजह से संकड़ों भोले आदमी धोके में आ जाते हैं और हिंसा को हिंसा से रोकने की बात को ठीक मान कर अपने धम में उसको जगह दे देते हैं, एसा धोके की दलीलें बड़ा नुकसान कर जाती हैं, सिक्ख गुरु वाराह वध से न गोवध रोक पाए न मुसलमानों का राज ख़ौन पाए, पर अंग्रेज बिना गोवध रोकें और बिना वाराह वध में दखल दिए कुल हिन्दुस्तान के मालिक बन बैठे, पर जिस तराङ्गे से वह मालिक बने वह भी हिंसा से हिंसा रोकने की तरह धोके का था, जमा तो सौ बरस से पहिले ही उनके पांच उखड़ गए और मुगल खानदान अपनी थोड़ी और बनावटा दया से भी तान सौ बरस से ऊपर हिन्दुस्तान की जमान पर ही नहीं हिन्दुस्तानियों के दिल पर भी राज कर सका, दहकते कोयले से मोमबत्ता बुझाकर हमें धोके में नहीं रहना चाहिये, हमने मोमबत्ता बुझाई है, आग की दहक मिटाई नहीं! हिंसा या क्रान्त से रोका गोवध रुका हुआ सा दिखाई दे सकता है पर रुक नहीं सकता, अमरीका जैसा मुल्क, और समन्दारों का मुल्क,

न्यास
 कुह लोक जल्दी में आकर सोचे समझे बिना ये दल दे बैठते हैं कि हिंसा हिंसा से ही रुका करती है, वह यह भी कह सकते हैं कि आग आग से ही बुझाई जा सकती है और शायद दहकते हुए कोयले से जलती हुई मोमबत्ती को बुझाकर भी समाज के डर से यह कहने का हिम्मत नहीं कर सकते कि गोवध से गोवध रोका जा सकता है, इस तरह की पाच दलीलों में एक बहकावा छिपा रहता है और ऊपर से बड़े पक्के सुबूत का जामा पहने रहता है, जिसकी वजह से संकड़ों भोले आदमी धोके में आ जाते हैं और हिंसा को हिंसा से रोकने की बात को ठीक मान कर अपने धम में उसको जगह दे देते हैं, एसा धोके की दलीलें बड़ा नुकसान कर जाती हैं, सिक्ख गुरु वाराह वध से न गोवध रोक पाए न मुसलमानों का राज ख़ौन पाए, पर अंग्रेज बिना गोवध रोकें और बिना वाराह वध में दखल दिए कुल हिन्दुस्तान के मालिक बन बैठे, पर जिस तराङ्गे से वह मालिक बने वह भी हिंसा से हिंसा रोकने की तरह धोके का था, जमा तो सौ बरस से पहिले ही उनके पांच उखड़ गए और मुगल खानदान अपनी थोड़ी और बनावटा दया से भी तान सौ बरस से ऊपर हिन्दुस्तान की जमान पर ही नहीं हिन्दुस्तानियों के दिल पर भी राज कर सका, दहकते कोयले से मोमबत्ता बुझाकर हमें धोके में नहीं रहना चाहिये, हमने मोमबत्ता बुझाई है, आग की दहक मिटाई नहीं! हिंसा या क्रान्त से रोका गोवध रुका हुआ सा दिखाई दे सकता है पर रुक नहीं सकता, अमरीका जैसा मुल्क, और समन्दारों का मुल्क,

कानून से शराब-बंदी न कर सका, पर अरब जैसे उजड़ मुल्क में हज़रत मुहम्मद ने प्रेम की लहर उठाकर और लोगों के दिल बदल कर शराब को ही नहीं बंद किया, सूद लेने जैसी, धीरे धीरे जान निकालने वाली, रस्म का भी बुनियाद से उखाड़ कर फेंक दिया. गोबध रोकने के लिये गोबध रोकने वालों को पूरा अहिंसक बनना पड़ेगा और अगर वह सब न बन सकें तो किसी एक को तो वैसा बनना ही होगा. अहिंसक बनना माने प्रेम रस में डूब जाना यानी दुनिया के सब आदमियों से, और हो सके तो, जगत के सब प्राणियों से प्रेम करने लग जाना. गोबध आन्दोलन के उठाने वाले, पर, इस संकट में ही क्यों पड़े? उन्हें तो ईश्वर ने पहिले से ही गाँधी नामी वैसा आदमी दे रक्खा है. उस पर पूरा तरह छोड़ देने में उनका काम हो सकता है. सन् १९२१ में गाँधी जी ने अपने तरीके से गोबध को बहुत हद तक कम करा दिया था. और गोबध करने वालों के दिल इतने बदल दिये थे जितने इतिहास की जानकारी में आज तक कोई नहीं बदल पाया. यह दूसरी बात है कि वह जोश सोहे की बोलत के उवाल की तरह ज्यादा देर न टिक पाया वजह यह थी कि वह काम अपने आप में कोई बड़ा था वह बड़े काम राजनीति की चालक का एक हिस्सा था. पर उससे हमें यह सबक जरूर मिला कि गोबध सुध्वत से जरूर रुक सकता है.

आज जो लोग गोबध आन्दोलन के कर्ता घता हैं वह इतने गोबध रोकने की किक में नहीं, जितने उस सरकार को बदनाम करने की किक में हैं जिसके हाथ में, उनकी मेहनतों की बजह

कानून से शराब बंदी न कर सका, पर अरब जैसे उजड़ मुल्क में हज़रत मुहम्मद ने प्रेम की लहर उठाकर और लोगों के दिल बदल कर शराब को ही नहीं बंद किया, सूद लेने जैसी, धीरे धीरे जान निकालने वाली, रस्म को भी बुनियाद से उखाड़ कर फेंक दिया. गोबध रोकने के लिये गोबध रोकने वालों को पूरा अहिंसक बनना पड़ेगा और अगर वह सब न बन सकें तो किसी एक को तो वैसा बनना ही होगा. अहिंसक बनना माने प्रेम रस में डूब जाना यानी दुनिया के सब आदमियों से, और हो सके तो, जगत के सब प्राणियों से प्रेम करने लग जाना. गोबध आन्दोलन के उठाने वाले, पर, इस संकट में ही क्यों पड़ें? उन्हें तो ईश्वर ने पहिले से ही गाँधी नामी वैया आदमी दे रक्खा है. उस पर पूरा तरह छोड़ देने में उनका काम हो सकता है. सन् १९२१ में गाँधी जी ने अपने तरीके से गोबध को बहुत हद तक कम करा दिया था. और गोबध करने वालों के दिल बदल दिये थे जितने इतिहास की जानकारी में आज तक कोई नहीं बदल पाया. यह दूसरी बात है कि वह जोश सोड़े की बोलत के उवाल की तरह ज्यादा देर न टिक पाया वजह यह थी कि वह काम अपने आप में कोई बड़ा था वह बड़े काम राजनीति की चाल का एक हिस्सा था. पर उससे हमें यह सबक जरूर मिला कि गोबध सुध्वत से जरूर रुक सकता है.

आज जो लोग गोबध आन्दोलन के कर्ता घतरा हैं वे इतने गोबध रोकने की किक में नहीं, जितने उस सरकार को बदनाम करने की किक में हैं जिस के हाथ में, उनकी मेहनतों की बजह

से 'या' 'निया' की حالت की वजह से या 'शुद्ध' की कुर्या से 'हकुर्या' की
 याग 'डोर' 'गंभी' हो। 'गो' 'बिध' 'अनु' 'न' का 'ये' 'छि' 'क' 'व' 'क' 'त' 'ही' 'न' 'ही' 'है'।
 'व' 'क' 'त' 'ही' 'न' 'ही' 'हो' 'र' 'हा'। 'यों' 'तो' 'ह' 'म' 'क' 'ान' 'न' 'से' 'गो' 'व' 'ध' 'रो' 'क' 'ने' 'के' 'व' 'ि' 'ल' 'कु' 'ल'
 'ख' 'ि' 'ल' 'ा' 'क' 'ह' 'ै' 'फ' 'ि' 'र' 'भी' 'अ' 'ग' 'र' 'क' 'ान' 'न' 'से' 'ही' 'रो' 'क' 'ना' 'था' 'तो' 'स' 'न्' १८५८
 'में', 'या' १८७२ 'में', 'या' १८८५ 'में', 'या' १९०५ 'में' 'रो' 'का' 'हो' 'ता'। 'गो' 'व' 'ध'
 'की' 'ज' 'ि' 'त' 'नी' 'ज' 'र' 'र' 'त' 'उ' 'स' 'अ' 'ंग' 'रे' 'जी' 'स' 'र' 'क' 'ार' 'को' 'है', 'जो' 'अ' 'प' 'ने' 'को'
 'हि' 'न्' 'दु' 'स्' 'त' 'ान' 'ि' 'यों' 'का' 'मा' 'ई' 'बा' 'प' 'स' 'म' 'भ' 'क्ती' 'आ' 'ई' 'है', 'उ' 'त' 'नी' 'दु' 'स' 'रों' 'को'
 'न' 'हीं'। 'व' 'ह' 'स' 'र' 'क' 'ार' 'अ' 'ग' 'र' 'चा' 'ह' 'ती' 'तो' 'क' 'ान' 'न' 'से' 'रो' 'क' 'स' 'क' 'ती' 'थी', 'पर'
 'व' 'ह' 'तो' 'उ' 'स' 'को' 'रो' 'क' 'ने' 'में' 'अ' 'प' 'ना' 'का' 'य' 'दा' 'न' 'हीं' 'दे' 'ख' 'ती' 'थी', 'इ' 'स' 'ल' 'िये'
 'गो' 'व' 'ध' 'का' 'अ' 'न' 'दो' 'ल' 'न' 'इ' 'स' 'स' 'म' 'य' 'व' 'ि' 'ल' 'कु' 'ल' 'वे' 'व' 'क्त' 'है'।

गोवध से अगर मतलब गो रक्षा है तब हम यह कहेंगे कि गो
 रक्षा के रास्ते में कोई रुकावट नहीं और हमें तो यह भी विश्वास
 है कि गोरक्षा से ही गोरक्षा होगी और गोवध बहुत हद तक रुक
 जायगा। गाय के दूध की हिन्दुस्तान में सभी को एक बराबर जरूरत है
 और सभी उसके लिये तड़प रहे हैं। सभी के बच्चे गाय के दूध के बिना
 बे वक्त चल बसते हैं। अगर बड़ी चरागाहें कायम करके दूध देने
 वाली गायों के बचाने में यह आन्दोलन लग जाय और दूध के
 भाव को चार सेर तक भी ले जा सकें तो करोड़ों गायों को जान ही
 नहीं बचा लेगा बल्कि करोड़ों मनु की सन्तानों को बे वक्त—काल के
 गाल में जाने से रोक लेगा। और फिर हो नहीं सकता कि उन
 बच्चों की दुआएं वह रंग न लाय कि इस देश में गोवध रुक जाय
 या नाम के लिये रह जाय।

गो' 'बि' 'ध' 'से' 'अ' 'ग' 'र' 'म' 'त' 'ल' 'ब' 'गो' 'र' 'क्षा' 'है' 'त' 'ब' 'ह' 'म' 'य' 'ह' 'क' 'हें' 'गे' 'कि' 'गो'
 'र' 'क्षा' 'के' 'रा' 'स्ते' 'में' 'को' 'ई' 'रु' 'का' 'व' 'ट' 'न' 'हीं' 'औ' 'र' 'ह' 'में' 'तो' 'य' 'ह' 'भी' 'वि' 'श्' 'वा' 'स'
 'है' 'कि' 'गो' 'र' 'क्षा' 'से' 'ही' 'गो' 'र' 'क्षा' 'हो' 'गी' 'औ' 'र' 'गो' 'व' 'ध' 'ब' 'हु' 'त' 'ह' 'द' 'त' 'क' 'रु' 'क'
 'जा' 'य' 'गा'। 'गा' 'य' 'के' 'दू' 'ध' 'की' 'हि' 'न्' 'दु' 'स्' 'त' 'ान' 'में' 'स' 'भ' 'ी' 'को' 'ए' 'क' 'ब' 'रा' 'ब' 'र' 'ज' 'रू' 'र' 'त' 'है'
 'औ' 'र' 'स' 'भ' 'ी' 'उ' 'स' 'के' 'ल' 'िये' 'त' 'ड़' 'प' 'र' 'हे' 'हैं'। 'स' 'भ' 'ी' 'के' 'ब' 'च्' 'चे' 'गा' 'य' 'के' 'दू' 'ध' 'के' 'ब' 'ि' 'ना'
 'बे' 'व' 'क्त' 'च' 'ल' 'ब' 'स' 'ते' 'हैं'। 'अ' 'ग' 'र' 'ब' 'ड़ी' 'च' 'रा' 'गा' 'हें' 'का' 'य' 'म' 'कर' 'के' 'दू' 'ध' 'द' 'े' 'ने'
 'वा' 'ली' 'गा' 'यों' 'के' 'ब' 'च' 'ाने' 'में' 'य' 'ह' 'अ' 'न' 'दो' 'ल' 'न' 'लग' 'जा' 'य' 'औ' 'र' 'दू' 'ध' 'के'
 'भा' 'व' 'को' 'च' 'ार' 'से' 'र' 'त' 'क' 'भी' 'ले' 'जा' 'स' 'कें' 'तो' 'क' 'रो' 'ड़ों' 'गा' 'यों' 'को' 'जा' 'न' 'ही'
 'न' 'हीं' 'ब' 'चा' 'ले' 'गा' 'ब' 'ल्' 'कि' 'क' 'रो' 'ड़ों' 'म' 'नु' 'की' 'स' 'न्त' 'ानों' 'को' 'बे' 'व' 'क्त—' 'क' 'ाल' 'के'
 'ग' 'ाल' 'में' 'जा' 'ने' 'से' 'रो' 'क' 'ले' 'गा'। 'औ' 'र' 'फ' 'ि' 'र' 'हो' 'न' 'हीं' 'स' 'क' 'ता' 'कि' 'उ' 'न'
 'ब' 'च्' 'चों' 'की' 'दु' 'आ' 'एं' 'व' 'ह' 'र' 'ंग' 'न' 'ला' 'य' 'कि' 'इ' 'स' 'दे' 'श' 'में' 'गो' 'व' 'ध' 'रु' 'क' 'जा' 'य'
 'या' 'ना' 'म' 'के' 'ल' 'िये' 'र' 'ह' 'जा' 'य'।

आज जब खुले खुले नर-बध हो रहा है तब नर-बध रोकने के आन्दोलन की न सूझ कर गोबध रोकने के आन्दोलन को चात सूझी ही क्यों ! हम तो यही चाहेंगे कि यह गोबध रोकने वाला दल अब गाँवों को गांधी जी के भरोसे छोड़ कर या ईश्वर के हाथों सौंप कर नर-बध रोकने में जुट जाय. पर यह तो वह समझ ही ले कि आग, आग से नहीं बुझा करती, हिंसा हिंसा से नहीं रुका करती, गुस्सा गुस्से से नहीं दबता, आग पानी से ही बुझेगी, हिंसा अहिंसा से ही रुकेगी, गुस्सा माफ़ी से ही दबेगा. हाँ, यह बात जरूर है कि आग बुझाते वस्तु पानी थोड़ा गरम हो जायगा, हिंसा रोकते रोकते अहिंसा थोड़ा हिंसा सी जँचने लगेगी और गुस्सा दबाने दबाने माफ़ी गुस्से का रंग ले आएगी, पर यह सब बातें तो ऊँदरती हैं. आग बुझाने के लिए पानी को उबालने को जरूरत नहीं, हिंसा को रोकने के लिए अहिंसा को सख्त बनने की जरूरत नहीं, गुस्से को दबाने के लिए माफ़ी को बिगड़ने की जरूरत नहीं. यह काम प्रकृति के खिलाफ़ होंगे. और सफलता नहीं मिलेगी. इसलिए हम तो गोबध आन्दोलन करने वालों को यही सलाह देते हैं, कि वह ठंडे जी से साँचें, ठंडे वन, और ठंडे ठंडे गोरखा में लगे हुए प्रेम के साथ दूध को गंगा बहाने की साँचें, और फिर देखें कि गोबध कैसे नहीं रुकता.

गामाता की जब गू जेगी, पर इसके गुँ जाने में मददगार होंगे बही जा प्रेम रस में शराबोर होंगे. वह तो उस गूँज को उल्टा रोक ही सकते हैं जो नकरत, गुस्सा, घमंड और लालच की आग

आज जब कहे कहे नरबध हो रहा है, तब नरबध रोकने के अंदोलन की न सुझकर गोबध रोकने के अंदोलन की बात सुजही ही क्यों! हम तो यही चाहेंगे कि यह गोबध रोकने वाला दल अब गाँवों को गांधी जी के भरोसे छोड़ कर नरबध रोकने में जुट जाय. पर यह तो वह समझ ही ले कि आग, आग से नहीं बुझा करती, हिंसा हिंसा से नहीं रुका करती, गुस्सा गुस्से से नहीं दबता, आग पानी से ही बुझेगी, हिंसा अहिंसा से ही रुकेगी, गुस्सा माफ़ी से ही दबेगा. हाँ, यह बात जरूर है कि आग बुझाने के लिए पानी थोड़ा गरम हो जायगा, हिंसा रोकते रोकते अहिंसा थोड़ा हिंसा सी जँचने लगेगी और गुस्सा दबाने दबाने माफ़ी गुस्से का रंग ले आएगी, पर यह सब बातें तो ऊँदरती हैं. आग बुझाने के लिए पानी को उबालने को जरूरत नहीं, हिंसा को रोकने के लिए अहिंसा को सख्त बनने के लिए अहिंसा को सख्त बनने की जरूरत नहीं, गुस्से को दबाने के लिए माफ़ी को बिगड़ने के लिए अहिंसा को सख्त बनने की जरूरत नहीं. यह काम प्रकृति के खिलाफ़ होंगे. और सफलता नहीं मिलेगी. इसलिए हम तो गोबध आन्दोलन करने वालों को यही सलाह देते हैं, कि वह ठंडे जी से साँचें, ठंडे वन, और ठंडे ठंडे गोरखा में लगे हुए प्रेम के साथ दूध को गंगा बहाने की साँचें, और फिर देखें कि गोबध कैसे नहीं रुकता.

गामाता की जब गू जेगी, पर इसके गुँ जाने में मददगार होंगे बही जा प्रेम रस में शराबोर होंगे. वह तो उस गूँज को उल्टा रोक ही सकते हैं जो नकरत, गुस्सा, घमंड और लालच की आग

ہمارے گناہوں کے کچھ آنکڑے اور ہمارا راج

(ڈاکٹر حفصہ حسن، عثمانیہ یونیورسٹی، حیدرآباد)

ہمارے ملک کے دو ٹکڑے ہو گئے۔ ہندستان اور پاکستان دو الگ الگ راج بن گئے۔ اس کے بعد اب ملک اور ملک والوں پر جو آفتیں لوٹیں وہ سب کو سلام ہیں۔ لاکھوں کے گھاؤ ابھی ہرے ہیں۔ ایسے موقع پر ہم ذرا ٹھنڈے دل سے یہ سوچنے کی کوشش کریں کہ ہم نے کیا کیا نہیں کیا کرنا چاہئے اور آئندہ ہمیں کیا کرنا چاہئے۔ ایک کھیلے لیکھ میں ہم یہ دکھایا ہے کہ ہمارے ملک میں لوگ

ہندو، مسلمان یا عیسائی کسی مذہب کی پھٹیک ٹھٹیک باتوں کو ماننے یا مان پر جانے کی وجہ سے نہیں کھلاتے بلکہ بہت ترکے صرف کسی مذہب کے نام لیا ہونے کی وجہ سے یعنی سیاسی یا زیادہ سے زیادہ سماجی صورتوں میں ہم ہندو، مسلمان وغیرہ رہ گئے ہیں اور جاننے جاتے ہیں۔ پھر بھی ہندستان کے فریبے والا سوال کو سمجھنے کے لئے نیلے ہم ذرا ٹھنڈے کے گناہوں کے مطابق اس ملک میں الگ الگ متوں کے نام لیا لوگوں کی تعداد پر ایک نگاہ ڈالیں۔ وہ تعدادیں یہ ہیں۔

- ہندو مت کے نام لیا
- اسلام کے نام لیا
- عیسائی
- سیکھ
- جین
- پنجیس کروڑ
- ڈکروڑ بیس لاکھ
- تیسٹھ لاکھ
- شاہوں لاکھ
- چودہ لاکھ، پچاس ہزار

ہمارے گناہوں کے کچھ آنکڑے اور ہمارا راج

(ڈاکٹر حفصہ حسن، عثمانیہ یونیورسٹی، حیدرآباد)

ہمارے ملک کے دو ٹکڑے ہوں گے۔ ہندستان اور پاکستان دو الگ الگ راج بن گئے۔ اس کے بعد اب ملک اور ملک والوں پر جو آفتیں لوٹیں وہ سب کو سلام ہیں۔ لاکھوں کے گھاؤ ابھی ہرے ہیں۔ ایسے موقع پر ہم ذرا ٹھنڈے دل سے یہ سوچنے کی کوشش کریں کہ ہم نے کیا کیا نہیں کیا کرنا چاہئے اور آئندہ ہمیں کیا کرنا چاہئے۔ ایک کھیلے لیکھ میں ہم یہ دکھایا ہے کہ ہمارے ملک میں لوگ

ہندو، مسلمان یا عیسائی کسی مذہب کی پھٹیک ٹھٹیک باتوں کو ماننے یا مان پر جانے کی وجہ سے نہیں کھلاتے بلکہ بہت ترکے صرف کسی مذہب کے نام لیا ہونے کی وجہ سے یعنی سیاسی یا زیادہ سے زیادہ سماجی صورتوں میں ہم ہندو، مسلمان وغیرہ رہ گئے ہیں اور جاننے جاتے ہیں۔ پھر بھی ہندستان کے فریبے والا سوال کو سمجھنے کے لئے نیلے ہم ذرا ٹھنڈے کے گناہوں کے مطابق اس ملک میں الگ الگ متوں کے نام لیا لوگوں کی تعداد پر ایک نگاہ ڈالیں۔ وہ تعدادیں یہ ہیں۔

- ہندو مت کے نام لیا
- اسلام کے نام لیا
- عیسائی
- سیکھ
- جین
- پنجیس کروڑ
- ڈکروڑ بیس لاکھ
- تیسٹھ لاکھ
- شاہوں لاکھ
- چودہ لاکھ، پچاس ہزار

नया हिन्द हमारे गिनावे के कुछ आंकड़े नवम्बर सन् '४७
 चौदह दो लाख बत्तीस हजार
 पारसी एक लाख चौदह हजार
 यहूदी बाइस हजार

यह कुल मिला कर हुए पैंतीस करोड़ अठारवन लाख सत्रह हजार. इनके अलावा तीन करोड़ आठ लाख तिरासी हजार लोग और हैं जिनको गिनावे में "क़बीले" बताया गया है. इस तरह कुल मिलकर सन १९४१ में इस मुल्क की आबादी अइतीस करोड़ सरसठ लाख बताई जाती है.

अगर सौ पीछे कौन कितने हँ देखा जावे तो हिन्दू सौ में छयासठ, मुसलमान सौ में चौबीस, ईसाई हजार में सोलह, सिक्ख हजार में चौदह, जैन दस हजार में सैंतीस, बौद्ध दस हजार में छे, पारसी दस हजार में तीन, यहूदी पचास हजार में तीन और क़बीले इस हजार में छे सौ तैंतालीस.

मजहबों के हिसाब से गिनती करते करते क़बीलों का अलग बिकर करना एक मनमानी और अनोखी बात है. तीन करोड़ से ज्यादा आदिमियों को इस तरह अलग दिखाना भेद से खाली नहीं है. क़बीले का सम्बन्ध नसल से है, मजहब से नहीं. मजहब बदलने के बाद भी क़बीला नहीं बदलता. इसलिये मजहबी गिनावे में कुछ क़बीलों को एक किसम ठहराना बेजोड़ बात है. यह भी माबस रहे कि इन क़बीलों में से बहुत से मुसलमान हैं जैसे सरहद के रानवारी क़बीले के पठान, बहुत से हिन्दू हैं और अपने को हिन्दू कहते हैं जैसे गोंड, चंचू बरौरा. इन्हीं में से कुछ ईसाई भी हो गए हैं.

न्यासहन्द
 नौबरसह
 नौकरे गिनावे के क़चे अक़र

दुवलक़ बत्तीस हजार
 एक लाख चोदह हजार
 बाइस हजार

यह कुल मिला कर हुये पैंतीस करोड़ अठारवन लाख सत्रह हजार. इनके अलावा तीन करोड़ आठ लाख तिरासी हजार लोग और हैं जिनको गिनावे में "क़बीले" बताया गया है. इस तरह कुल मिला कर अइतीस करोड़ सरसठ लाख बताई जाती है.

अगर सौ पीछे कौन कितने हँ देखा जावे तो हिन्दू सौ में छयासठ, मुसलमान सौ में चौबीस, ईसाई हजार में सोलह, सिक्ख हजार में चौदह, जैन दस हजार में सैंतीस, बौद्ध दस हजार में छे, पारसी दस हजार में तीन, यहूदी पचास हजार में तीन और क़बीले इस हजार में छे सौ तैंतालीस.

मजहबों के हिसाब से गिनती करते करते क़बीलों का अलग बिकर करना एक मनमानी और अनोखी बात है. तीन करोड़ से ज्यादा आदिमियों को इस तरह अलग दिखाना भेद से खाली नहीं है. क़बीले का सम्बन्ध नसल से है, मजहब से नहीं. मजहब बदलने के बाद भी क़बीला नहीं बदलता. इसलिये मजहबी गिनावे में कुछ क़बीलों को एक किसम ठहराना बेजोड़ बात है. यह भी माबस रहे कि इन क़बीलों में से बहुत से मुसलमान हैं जैसे सरहद के रानवारी क़बीले के पठान, बहुत से हिन्दू हैं और अपने को हिन्दू कहते हैं जैसे गोंड, चंचू बरौरा. इन्हीं में से कुछ ईसाई भी हो गए हैं.

नया हिन्दू हमारे गिनावे के कुछ आंकड़े नवम्बर सन् '४७

इन कर्बीलों को इस तरह अलग गिनावे से एक शरय तो यह मालूम होती है कि ईसाइयों की बढ़ती हुई तादाद को छिपाया जावे क्यों कि कर्बीले वाले इलाकों में ही ईसाई मत का प्रचार सब से ज्यादा कामयाब साबित हो रहा है.

जहाँ तक हमें मालूम है इन तीन करोड़ में से दो करोड़ हिन्दू या हिन्दू मत से नाता रखने वाले हैं जिनमें हिन्दुस्तानी रिवाज है. आधा करोड़ मुसलमान हैं जो बहुत कर सरहदी इलाकों में हैं और आधा करोड़ ईसाई यानी ईसाई मत के नाम लेवा हैं. इस अनोखे गिनावे से आबादी का मजहबों हिसाब बदल जाता है और हिन्दुस्तान का किरकंवारी सवाल गलत तादाद के धुँधलके में अच्छी तरह पहचाना नहीं जाता.

अब हम इनमें से एक एक मजहब वालों का कुछ अलग अलग खिकर करेंगे.

हिन्दू—हिन्दुस्तान के मजहबों की इलाक़ेबारी तक्रसीम से पता चलता है कि हिन्दुओं की सबसे ज़बरदस्त तादाद हिन्दुस्तान के बीच और दक्खिन में है. गंगा जी का पाक पानी न केवल हिन्दू तहजीब के मरकज़ी इलाक़े को सैराब कर रहा है बल्कि हिन्दुओं के बहुमत को भी बचाए हुए है. युक्त प्रान्त में जो हमेशा से हिन्दुस्तानी तहजीब का सरचरमा रहा है हिन्दुओं की तादाद ८५ फी सदी है और बिहार और उड़ीसा में भी हिन्दुओं का बहुत बड़ा बहुमत है. बीच के हिन्दुस्तान, राजपूताना, बम्बई और दक्खिन की रियासतों में उनका साक बहुमत है. हैदराबाद रियासत में सौ में ८५ हिन्दू हैं. सबसे ज्यादा हिन्दू मद्रास में

न्यासहन्द
बनारस के पंचे आंकड़े
नोब्रसहन्द

इन क्विलों को इस तरह अलग गिनावे से एक खरय तो ये मालूम होती है कि ईसाइयों की बढ़ती हुई तादाद को छिपाया जावे क्यों कि कर्बीले वाले इलाकों में ही ईसाई मत का प्रचार सब से ज्यादा कामयाब साबित हो रहा है.

जहाँ तक हमें मालूम है इन तीन करोड़ में से दो करोड़ हिन्दू या हिन्दू मत से नाता रखने वाले हैं जिनमें हिन्दुस्तानी रिवाज है. आधा करोड़ मुसलमान हैं जो बहुत कर सरहदी इलाकों में हैं और आधा करोड़ ईसाई यानी ईसाई मत के नाम लेवा हैं. इस अनोखे गिनावे से आबादी का मजहबों हिसाब बदल जाता है और हिन्दुस्तान का किरकंवारी सवाल गलत तादाद के धुँधलके में अच्छी तरह पहचाना नहीं जाता.

अब हम इनमें से एक एक मजहब वालों का कुछ अलग अलग खिकर करेंगे.

हिन्दू—हिन्दुस्तान के मजहबों की इलाक़ेबारी तक्रसीम से पता चलता है कि हिन्दुओं की सबसे ज़बरदस्त तादाद हिन्दुस्तान के बीच और दक्खिन में है. गंगा जी का पाक पानी न केवल हिन्दू तहजीब के मरकज़ी इलाक़े को सैराब कर रहा है बल्कि हिन्दुओं के बहुमत को भी बचाए हुए है. युक्त प्रान्त में जो हमेशा से हिन्दुस्तानी तहजीब का सरचरमा रहा है हिन्दुओं की तादाद ८५ फी सदी है और उड़ीसा में भी हिन्दुओं का बहुत बड़ा बहुमत है. बीच के हिन्दुस्तान, राजपूताना, बम्बई और दक्खिन की रियासतों में उनका साक बहुमत है. हैदराबाद रियासत में सौ में ८५ हिन्दू हैं. सबसे ज्यादा हिन्दू मद्रास में

यानी इतिहास का सबसे बड़ा फायदा यह है कि हम पिछले तत्परवर्षों से सीखें और इस जमाने में गुमराही से बचें तो यकीनी तौर पर हमें कुछ और बातों पर गौर करना पड़ेगा. इस मुल्क की तारीख से हमें चार बार यह सचक मितता है कि जंग के मैदान में और राज काज में हमारे मुल्क को हमेशा फूट की वजह से नाकामी हुई. आज कल राज काज और समाजी निकास को देखने से पता चलता है कि छोटी छोटी इकाइयों का खुद अपने पैरों पर खड़ा हो सकता मालो निगाह से तामुमकिन है और राज काजी निगाह से बहुत ही खतरनाक है. अमरीका की मिली हुई रियासतों जैसा बड़ा मुल्क आसानी से दुनिया के राज काज में इज्जत पा सकता है और समारजी, माली और दूसरी बातों में भी ऊँचा रुतबा हासिल कर सकता है. पहली और हाल की बड़ी जंगों में हम देख चुके हैं कि बड़ी बड़ी इक्मतों ने छोटी छोटी रियासतों का क्या कर डाला. अगर रूस भी छोटी छोटी इकाइयों में फटा हुआ होता तो शायद उसका भी वही हाल होता जो हालैंड, बेलजियम, दान्यूची रियासतों और यूनान का हुआ. दो अलग अलग इक्मतों में बँट जाने के बाद हिन्दुस्तान के लिये बाहर के हमलों या दखल देने वालों का मुकाबला करना या माली, तिजारती, कारवारी और समाजी तरक्की करना और जयादा सुराकिल हो गया है और हो जावेगा.

जयादा समन्दारी और अकलमन्दी की बात तो यह होती और आगे भी यही होगी कि इस मुल्क के राज काजी एकपन को और जयादा बढ़ाया जाता और नेपाल, भूटान, लंका और

लुबरसल

श्यासन्द

हमारे गिनावे के कच्चे आंकड़े
 یعنی اتقاس کا سب سے بڑا فائدہ یہ ہے کہ ہم پچھلے تجربوں سے سیکھیں اور اس زمانے میں گمراہی سے بچیں تو یقینی طور پر ہمیں کچھ اور باتوں پر غور کرنا پڑے گا. اس ملک کی تاریخ سے ہمیں بار بار یہ سبق ملتا ہے کہ جنگ کے میدان میں اور راج کالج میں ہمارے ملک کو ہمیشہ چھوٹ کی وجہ سے ناکامی ہوئی. آج کل راج کالج اور سماجی نظام کو دیکھنے سے پتہ چلتا ہے کہ چھوٹی چھوٹی راکائیوں کا خود اپنے پیروں پر کھڑا ہوسکتا مالی نگاہ سے نامن ہے اور راج کالجی نگاہ سے بہت ہی خطرناک ہے. امریکا کی ملی ہوئی ریاستوں جیسا بڑا ملک آسانی سے دنیا کے راج کالج میں عزت پاسکتا ہے اور سامراجی، مالی اور دوسری باتوں میں بھی ادبیا تہہ حاصل کرسکتا ہے. پہلی اور حال کی بڑی جگوں میں ہم دیکھ چکے ہیں کہ بڑی بڑی حکومتوں نے چھوٹی چھوٹی ریاستوں کو کسکا کر ڈالا. اگر روس بھی چھوٹی چھوٹی راکائیوں میں بھٹا ہوا ہوتا تو شاید اس کا بھی وہی حال ہوتا جو ہالینڈ، بلجیم، دانیوبی ریاستوں اور یونان کا ہوا. دو الگ الگ حکومتوں میں بٹ جانے کے بعد ہندستان کے لئے باہر کے حملوں یا دخل دینے والوں کا مقابلہ کرنا یا مالی، تجارتی، کاروباری اور سماجی ترقی کرنا اور زیادہ مشکل ہو گیا ہے اور

ہو جاوے گا.

زیادہ سمجھداری اور عقلمندی کی بات تو یہ ہوتی ہے اور آگے بھی یہی ہوگی کہ اس ملک کے راج کالجی ایکٹین

کو اور زیادہ بڑھایا جاتا اور نیپال، بھوٹان، لٹکا اور

نیاستہند ہمارے گناہوں کے پتھر اکٹرا رہے

افغانستان کے لئے بھی اس میں شامل ہوجانے کی گنجائش پیدا کی جاتی تاکہ وہ بہت بڑا ہندستان اور زیادہ آسانی سے راج کالج تجارت اور کاروبار میں اونچا مرتبہ حاصل کر سکتا۔ یہ کوئی نئی بات بھی نہ ہوتی۔ یہ سب پڑوسی ملک کسی زمانے میں ہندستان کے حصے رہ چکے ہیں۔

اس کی سب سے اچھی مثال ہیں امریکا کی تاریخ سے ملتی آتی۔ جب امریکا نے اپنی آزادی کا اعلان کیا اس وقت لی ہوئی امریکی ریاستوں کی تعداد تیرہ تھی۔ آج ۴۸ ہیں۔ دھیرے دھیرے نئی نئی ریاستوں کو امریکی یونین میں شریک کر لیا گیا اور آج ہر ریاست اپنے اپنی اور اندر کے معاملوں میں پوری طرح آزاد ہوتے ہوئے بھی باہر کی دوسری قوموں یا ملکوں کے سامنے سب امریکی ریاستیں مل کر ایسی ہی ہیں جیسے ایک بڑے جسم کے بالکل پیر پیچھے۔ سب کی ملی جلی طاقت سے نکل کی طاقت بڑھی ہو اور اسی ملی جلی طاقت اور آپسی میل کی وجہ سے راج کالج میں اور ہر بات میں امریکا کا بول بالا ہے۔

برطانوی سلطنت کا بھی دور اتنے دنوں میں لئے قائم رہ سکا کہ انگلستان نے الگ الگ نوآبادیوں کو اپنے اندر کے معاملوں میں آزاد کر دیا اور سلطنت سے باہر کے معاملوں کے لئے اپنے کو اور سب نوآبادیوں کو ایک ڈورے میں باندھ رکھا۔

عیسوی مثال اور سب سے کام کی مثال روس کی ہے۔ روس کی مرکزی حکومت نے حال ہی میں اعلان کر دیا ہے کہ روس

نیا ہند ہمارے گناہوں کے پتھر اکٹرا رہے
نومبر ۱۹۰۹

نومبر ۱۹۰۹

نومبر ۱۹۰۹

نومبر ۱۹۰۹

نیا ہند ہمارے گزاردے کے کچھ اکڑے لوہر سٹالہ

کچھ دن ہوئے مجھے جڑا بیچ اور اجڑا ہوا جب میں نے ایک جلسے میں ایک پڑانے طالب علم کو یہ کہتے سنا کہ —
"اگر پاکستان علاحدہ نہ ہو جائے تو مسلمان اسی طرح دوند دے جائیں گے جس طرح یہودی جرمنی میں چل گئے!"

گویا ہندستان میں ان دونوں کی آبادیوں کا اوسط ویسا ہی ہے جیسا جرمنی میں تھا یا کم سے کم اُس سے بلتا جلتا ہے! ہندستان میں مسلمانوں کی تعداد کل آبادی کا ایک چوتھائی ہے۔ بڑے بڑے علاقوں میں مسلمانوں کی بہت بڑی اکثریت *Overwhelming Great Majority* (بڑی اکثریت). کئی علاقوں اور شہروں میں آدھی، تہائی یا چوتھائی تعداد مسلمانوں کی ہے۔ ہاں ایسے بھی علاقے ہیں جہاں

ان کی تعداد بہت کم ہے۔ یہ جرمنی میں یہودیوں کی تعداد کبھی سو میں ایک کبھی نہیں تھی۔ اور کسی شہر، اور کسی قصبے اور کسی گاؤں میں بھی جرمنی بھر کے اندر یہودیوں کی اکثریت نہیں تھی۔ پھر بھی ان دونوں کا مقابلہ کرنا ایک پہلو ان کے سلنے یا بیچ سال کے رٹکے کو دنگل میں اتارنا ہے! ہندو اور مسلمانوں کا مقابلہ اچھی اور شیر کا مقابلہ ہو سکتا ہے، پور بچھے اور خرگوش کا نہیں!

سوچنا کہ ۶۶ فی صدی ہندو یا ۵۵ فی صدی غیر مسلمان ہندستان کے تو کروڑ مسلمانوں کو کھیل دے سکیں گے۔

نیا ہند ہمارے گناہ کے کھڑے آکر ڈے نواب سمر سن '۸۹
کھڑے دن دھاپے بڑا رنج اور اچر جھڑا جہ مئے ایک
جہل سے مئے اپنے ایک پورے تالیب و اہلم کو یہ کہتے سنا کہ —
"اگر پاکستان علاحدہ نہ ہو جائے تو مسلمان اسی
ترہ روت دیتے جاؤ گے جس ترہ یہودی جرمنی مئے کھول دیتے
ہے!"

گویا ہندوستان مئے ان دونوں کی آوازیوں کا آوازت ویا
ہی ہے جیسا جرمنی مئے یا یا کم سے کم اوسے میلتا جلتا ہے!
ہندوستان مئے مسلمانوں کی تعداد کل آبادی کا ایک چوتھا حصہ ہے،
بڑے بڑے علاقوں مئے مسلمانوں کی بہت بڑی اکثریت (*Overwhelming Majority*) بڑی اکثریت (*Great Majority*)۔
ساک اکثریت (*Absolute majority*) یا نوابت
اکثریت (*Relative Majority*) ہے، کئی علاقوں اور شہروں
مئے آوازی، تہاڑے یا چوتھا حصہ مسلمانوں کی ہے، ہاں اسی
مئے علاقے ہئے جہاں انکی تعداد بہت کم ہے، پور جرمنی مئے
یہودیوں کی تعداد کمی سے مئے ایک مئے نہی یی، اور کبھی
شہر، کبھی قصبے اور کبھی گاؤں مئے مئے جرمنی بھر کے اندر
یہودیوں کی اکثریت نہی یی، پور مئے ان دونوں کا مقابلہ
کرنا ایک پہلو ان کے سامنے پانچ سال کے لڑکے کا دنگل
مئے اتارنا ہے! ہندو اور مسلمانوں کا مقابلہ اچھی اور
شیر کا مقابلہ ہو سکتا ہے، پور بچھے اور خرگوش
کا نہیں!

یہ سوچنا کہ ۶۶ فی صدی ہندو یا ۵۵ فی صدی غیر مسلمان ہندستان کے تو کروڑ مسلمانوں کو کھیل دے سکیں گے۔

नया हिन्द हंसारे गिनावे के कुछ आंकड़े नवम्बर सन् '५७

रियासतें अपनी आजादी कायम रख सकेंगी या खुशहाली का दरजा हासिल करेंगी. इसके खिलाफ आपस में दुरमनियों के बढ़ने से बरवादी के सामान पहले से सैकड़ों गुना ज्यादा बढ़ जाते हैं.

इसके बाद हमें सिक्खों, ईसाइयों और दूसरे मजहब वालों की तादादों की तरफ भी एक नजर डालनी है और उनसे पैदा होने वाले मसलों पर गौर करना है. पर यह चाहे किसी दूसरे लेख के लिये है, यहाँ हम फिर सिर्फ यह कह कर खतम करते हैं कि आइन्दा के लिये हम सबका भला और सारे मुल्क का भला मुल्क के दुकड़े कायम रखने में नहीं बल्कि अपने अपने इलाकों की आजादी का कायम रखते हुए किसी न किसी तरह मुल्क की इकाई और एकता को और ज्यादा मजबूत करने में. हमें उम्माद है कि दिमागों के और ज्यादा ठंडे होने और दिलों के नरम पड़ने पर हम सब मिल कर फिर इसी राह पर चलेंगे.

‘हिन्दू मुस्लिम एकता’

पंडित सुन्दर लाल के

चार लेख जो उन्होंने

सेन्ट्रल कन्सीलियटरी बोर्ड ग्वालियर

की दावत पर ग्वालियर में दिये.

सौ सके की कितान की क्रीमत सिर्फ बारह आने

मेनेजर “नया हिन्द”

३३ बाई का बाग, इलाहाबाद

तया हंसरे गिनावे के कुछ आंकड़े नवम्बर सन् '५७

रियासतें अपनी आजादी कायम रख सकेंगी या खुशहाली का दरजा हासिल करेंगी. इसके खिलाफ आपस में दुरमनियों के बढ़ने से बरवादी के सामान पहले से सैकड़ों गुना ज्यादा बढ़ जाते हैं.

‘हिन्दू मुस्लिम एकता’

पंडित सुन्दर लाल के

चार लेख जो उन्होंने सेन्ट्रल कन्सीलियटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये.

मेनेजर “नया हिन्द”

३३ बाई का बाग, इलाहाबाद

जलियान والاباغ کی چھ یادگاریں

بھائی رام جی در

जलियानवाला बाग की कुछ यादगारें

भाई राम जी दर

(५)

आपस की बेतवारी

हमसे लोग भड़कते खरु थे. महज पुलिस के डर के मारे. इन्हें मारशल ला की आग से निकले अभी थोड़े ही दिन बीते थे. हर एक के दिल में हमारे लिये आदर का स्थान था. इसका हमें यकीन था. मौका पाकर लोग अपने असली भाव को जाहिर भी करते थे.

गुजरानवाला एक छोटी जगह थी. वहां के पदे लिखे लोग ज्यादातर वकील थे. इनमें हिन्दू मुसलमान दोनों थे और इन दोनों पर मारशल ला के जमाने में एक सी गुजरी थी.

हमार पंजाबी मित्र बड़े जुगत व सूझ बूझ के आदमी थे. उन्हीं की कोशिश से एक वकील साहब के बंगले पर किसी बहाने से शहर के खास खाम लोग बुलाये गए. दस या बारह की मंडली होगी. इनमें वकील, वैरिस्टर, डाक्टर और कुछ छोटे मोटे हाकिम भी थे.

हम चारों सबसे बाकायदा मिलायें गये. कुछ शायद मामूली नाशते का भी इन्तजाम था.

ऐसी पार्टी मैंने न कभी सुनी और न देखी थी.

हम सब सफेद पोश और पदे लिखे थे मगर साहब सलामत के बाद सब चुप बैठे रहे. ऐसा जान पड़ता कि किसी ने इनके होंदों पर ताले लगा दिये हैं.

(५)

आपस की बे اعتبارी

हम से लोग बहरते झुठे होते. بعض पुलिस के डर के मारे. 'अधिस' मारशल लाक आग से निकले अभी तहोटे से ही इन में त्ते. हर एक के دل में हमारे लै आदर का स्थान त्था. इस का भी लिस' गूनाला एक ज्ठोटी बंगली त्थी. वहाल के पड़े लके लुगं उरिादर के उमाने में एक सी गुजरी त्थी.

हमारे पंजाबी मित्र बड़े जगत व सूझ बूझ के आदमी त्थे. अन्हीं की कोशिश से एक वकील साहब के बंगले पर किसी बहाने से शहर के खास खास लोग बुलाये गये. दस या बारह की मंडली हुनी. इन में वकील, डाक्टर, वैरिस्टर, डाक्टर और कुछ छोटे मोटे हाकिम भी त्थे.

हम चारों सब से बातावद मिलाये गये. कुछ शायद मामूली नाशते का भी अन्तजाम त्था.

ऐसी पार्टी में ने न कभी सुनी और न देखी त्थी.

हम सब सफेद पोश और पड़े लिके त्थे लुगं साहब सलामत के बाद सब चुप बिठे रहे. ऐसा जान पड़ता कऱ किसी ने इन के हुनुतों पर ताले डाले दैये हैं.

हम कुरसियों पर बैठे थे. मेरे दाँयें बाँयें एक मुसलमान वैरिस्टर और एक हिन्दू वकील थे.

मैंने कुछ राजकाजी मामलों पर बात करनी चाही तो मेरे दाहिने हाथ वाले साहब ने हलके से कहा "जरा इनसे होशियार रहियेगा जो आप के बाँयें तरफ तशरीफ रखते हैं..... वह खुफिया पुलिस से मिले हैं."

मैंने जब बाँयें हाथ वाले साहब से कुछ पूछा तो उन्होंने गम्भीर शकल बना कर हलके से मुझे आगाह किया "देखिये यह जो आपके बराल में बैठे हैं वड़े चलते पुरखे हैं..... जरा सम्भल कर बात कीजियेगा..... पुलिस इनसे मिली है."

मैं कुछ चीँका और कुछ चकराया. दिल में दोनों से नफरत पैदा हुई. थोड़ी देर इधर उधर की दुनियादारी की बातें करके मैं कुरसी छोड़ कर और लोगों के पास चला गया.

जिससे बात करूँ वह इशारे से यही कहे कि बराल वाला आदमी खुफिया में है.

किसी को किसी पर जरा सा भी एतबार न था. शक की इन्तिहा हो गई थी. और थे सब पढ़े लिखे और एक दूसरे के रोख के मिलने बैठने वाले, दफ्तर व कचहरी में एक साथ काम करने वाले.

इस पार्टी में शामिल होकर एक नया तजुर्बा हुआ.

जैसे प्लेग या हैजे की बीमारी जोर पकड़ती है वैसे ही उस ख़माने में गुजरानवाला में एक दूसरे पर बेपतवारी की बीमारी फैली थी. यह था मारशल ला के जुल्मों का नतीजा.

अम कुरसियों पर बैठे थे. मेरे दाँयें बाँयें एक मुसलमान वैरिस्टर और एक हिन्दू वकील थे.

मैंने कुछ राजकाजी मामलों पर बात करनी चाही तो मेरे दाहिने हाथ वाले साहब ने हलके से कहा "जरा इनसे होशियार रहियेगा जो आप के बाँयें तरफ तशरीफ रखते हैं..... वह खुफिया पुलिस से मिले हैं."

मैंने जब बाँयें हाथ वाले साहब से कुछ पूछा तो उन्होंने गम्भीर शकल बना कर हलके से मुझे आगाह किया "देखिये यह जो आपके बराल में बैठे हैं वड़े चलते पुरखे हैं..... जरा सम्भल कर बात कीजियेगा..... पुलिस इन से मिली है."

मैं कुछ चीँका और कुछ चकराया. दिल में दोनों से नफरत पैदा हुई. थोड़ी देर इधर उधर की दुनियादारी की बातें करके मैं कुरसी छोड़ कर और लोगों के पास चला गया.

जिससे बात करूँ वह इशारे से यही कहे कि बराल वाला आदमी खुफिया में है.

किसी को किसी पर डरासा भी एतबार न लगा. शक की इन्तिहा हो गई थी. और थे सब पढ़े लिखे और एक दूसरे के रोख के मिलने बैठने वाले, दफ्तर व कचहरी में एक साथ काम करने वाले.

इस पार्टी में शामिल होकर एक नया तजुर्बा हुआ.

जैसे प्लेग या हैजे की बीमारी जोर पकड़ती है वैसे ही उस ख़माने में गुजरानवाला में एक दूसरे पर बेपतवारी की बीमारी फैली थी. यह था मारशल ला के जुल्मों का नतीजा.

(६)

कोतवाल का मुक़ाबला

गुजरानवाला में अंगरेजी सरकार ने निहत्थी जनता के आन्दोलन को दबाने के लिये हवाई जहाज से बम और मशीनगन से गोलियां बरसाई थीं।

हमें पता चला कि एक गरीब मुसलमान नानवाई की एक टांग एक बम के टुकड़े से, जो उसकी दूकान के पास गिरा था, खलसी हो गई थी और फिर डाक्टरों को उस टांग को घुटने से ऊपर काटना पड़ा था।

मुझसे कहा गया कि मैं इस नानवाई के पास जाकर बयान लूँ। बम्बई से एक फोटो खींचने वाले भी आए थे। इनका नाम मिस्टर पटेल था। यह उमर में मेरे ही बराबर होंगे। उस जमाने में कोई फोटोग्राफर पंजाब जाकर तसवीरें लेने के लिये हिम्मत नहीं करता था। पटेल साहब देश भक्त थे और अपने काम में काफी चतुर थे। जरूरत भी ऐसे ही शक्स की थी

मिस्टर पटेल और मैं इस नानवाई के मकान पर पहुँचे। पटेल साहब ने भटपट अपना कैमरा सड़क पर जमाया और उन जगहों की तसवीरें लीं जहाँ उस वक़्त तक बम के निशान कायम थे।

इतने में रास्ते चलते और पड़ोस के लोग और गर्ली के गरीब बच्चे तमाशा देखने की गरज़ से इकट्ठा हो गए उनके समक में नहीं आता था कि हम तसवीरें क्यों ले रहे हैं। कुछ काना फूसी करते

‘सरकार की तरफ़ से आए हैं।’

कुछ कहते “अपने ही लोग हैं।”

किसी ने कहा “देखो पुलिस आ गई।”

कोतवाल का मुक़ाबला (५)

गुजरानवाला में अंगरेजी सरकार ने नन्ही जनता के अन्दोलन को दबाने के लिये हवाई जहाज से बम और मशीनगन से गोलियां बरसाई कहीं।

हमें पता चला कि एक गरीब मुसलमान नानबाई की एक टांग एक बम के टुकड़े से ‘जो उस की दुकान के पास गिरा था, खलसी हो गई थी और फिर डाक्टरों को उस टांग को घुटने से ऊपर काटना पड़ा था।

मुझसे कहा गया कि मैं इस नानबाई के पास जाकर बयान लूँ। बम्बई से एक फोटो खींचने वाले भी आए थे। इनका नाम मिस्टर पटेल था। यह उमर में मेरे ही बराबर होंगे। उस जमाने में कोई फोटोग्राफर पंजाब जाकर तसवीरें लेने के लिये हिम्मत नहीं करता था। पटेल साहब देश भक्त थे और अपने काम में काफी चतुर थे। जरूरत भी ऐसे ही शक्स की थी

मिस्टर पटेल और मैं इस नानबाई के मकान पर पहुँचे। पटेल साहब ने जेष्ठपट अपना कैमरा सड़क पर जमाया और उन जगहों की तसवीरें लीं जहाँ उस वक़्त तक बम के निशान कायम थे।

इतने में रास्ते चलते और पड़ोस के लोग और गर्ली के गरीब बच्चे तमाशा देखने की गरज़ से इकट्ठा हो गये उनके समक में नहीं आता था कि हम तसवीरें क्यों ले रहे हैं। कुछ काना फूसी करते

‘सरकार की तरफ़ से आए हैं।’

कुछ कहते “अपने ही लोग हैं।”

किसी ने कहा “देखो पुलिस आ गई।”

लोग चुटकी बजाते में काफूर हो गए.

हम काफ़ी तसवीरों ल चुके थे. भाट कैमरा बन्द कर हम भी वहाँ से खिसके क्योंकि हमारी नियत भगड़ा फिसाद करने की नहीं थी और काम भी बन गया था.

पुलिसका महज डर था. किसीने हमसे कुछ न कहा. पटेल साहब घर लौट गए. मैं अकेला रह गया क्योंकि मुझे अभी नानवाई का बयान लेना था. नानवाई की दूकान बगल ही में थी. एक खपड़ेल की लम्बी सी कोठरी थी लंबे सड़क.

मैंने बाहर से उस कोठरी में भांका तो एक लम्बा चौड़ा अच्छे हाथ पैर का गोरा चिट्ठा, करीब तीस बरस का मुसलमान अन्दर चारपाई पर बैठा था.

"मैं आप से कुछ बातें करना चाहता हूँ"—मैंने उससे कहा.

"आइये जनाव" उसने एक लाठी के सहारे अपनी डेढ़ टांग के बल खड़े होकर आगे बढ़ते हुए, कुछ डरते हुए, जवाब दिया.

यह भी उसी डर व शक की बीमारी का मरीज था.

मैं उसके मन को दर्शा को ताड़ गया. पहले ही से मैं इस बात के लिये तय्यार था.

दरियाफ्त करने से और आधी टांग से मालूम हो गया कि यह बही नानवाई है जो बम का शिकार हुआ था.

उसने मुझे बड़ा नम्रता से अपनी खटिया पर बैठया मगर जब मैंने उससे बम के गिरने और तकसिल में हाल पूछना चाहा तो बोला "गरीब परवर मैं आप को बता तो सब सकता हूँ मगर मुझे डर लगता है. आप यहां से

लोक चुटकी बजाते में काफूर हो गये. हम काफ़ी तसवीरों ले चुके थे. जेष्ठ कैमरा बन्द कर हम भी वहाँ से कहेके किونक हमारी नियत जेष्ठका फाद करने की नहीं थी और काम भी बन गया कथा.

पुलिस का मखस डर कथा. किसी ने हम से कچه न कहा. मिलि साहब म्हर लुट गये. मैं अकेला रह गया किونक जेष्ठे अभी नानबाई का बयान लेना कथा.

नानबाई की दुकान बगल ही में कथी. अके कथेरिल की लंबी सी कुठरी म्ही लप र्कल.

मैंने बाहर से अं कुठरी में जेठानका तो अके लुभा जोड़ा अजेष्ठे अजेष्ठे र्का म्ही कुरा म्थना, करीब तीस बरस का मुसलमान अन्दर चारपाई पर बैठा कथा.

"मैं आप से कचे बातें करना चाहता हूँ"—मैंने उससे कहा.

"आइये जनाव" अं ने अके लुखी के सहासे अंती डुरेष्ठे म्नामर् के ल कथरने अुकर अंके डुरेष्ठे अुके अंके डुरते अुके अुबोब दया.

मैं भी असी डर व शक की बीमारी का मरियुष कथा.

मैं अं के मन की दुशा को नां लुगा. पले ही से मैं अं बात के लुं तयार कथा.

दरियाफ्त करने से अुदर अुदसी म्नामर् से मलुम अुगया क्क ये देही नानबाई

अुदर अुदसी म्नामर् से मलुम अुगया क्क ये देही नानबाई

अं ने म्जेठे डुरी म्त्रता से अंती कथिया पर बैठया अुकर जब मैंने अं से म्के क्क अुदर अुदसी म्नामर् से मलुम अुगया क्क ये देही नानबाई

अं ने म्जेठे डुरी म्त्रता से अंती कथिया पर बैठया अुकर जब मैंने अं से म्के क्क अुदर अुदसी म्नामर् से मलुम अुगया क्क ये देही नानबाई

کئے اور پولیس والے (اُس نے دو چار گالیاں دیں) مجھے زندہ نہ چھوڑیں گے۔"

میں نے جب اُسے پٹرت پٹرت لال نہرو کا نام بتایا اور لقمین دلایا کہ اگر پولیس سانسے گی تو پنڈت جی کھٹاری مدد کریں گے، تو اُس نے بڑی ہمت باندھ کر کہا "تو میں کسی سے نہیں ڈرتا۔"

اِس کے بعد نان بابی نے اپنا قصہ سنانا شروع کیا اور میں نے کاغذ پر لکھنا جاری کیا۔

کھوٹے ہی دیر بعد نان بابی نے بیان روک دیا اور سہم کر بولا—
 "دیکھئے وہ آگیا..... اب خدا خیر کرے..... آپ کو میں کیسے بچاؤں۔"
 میں اُس کے گھبراتے کا مطلب نہ سمجھا، مگر جیوں ہی میں نے اگلے صفحے کے سامنے ایک مانگا دکھائی دیا۔ اُس میں پولیس والے بیٹھے تھے۔ پولیس کی وردی دکھ رہی تھی۔ اُن میں ایک ہتھاکڑا تھے کٹا پہلوان جیسا، بڑی بڑی کل جھنڈیں کر کے اور ٹھٹھ کا صافا باندھا، ایک افسر بھی بیٹھا تھا۔ ایک نگاہ ہی میں مجھے گیا کہ یہ کوال شہر اور پیل بھر کے لئے میں سناتے ہیں رہ گیا۔ کل جسم میں ایک ٹھنڈی پھیروری سی دوڑ گئی۔ مگر فوراً ہی میں نے ہمت کسی اور نان بابی سے بڑی سا دھمکانی سے کہا جیسے کوئی بات ہی نہیں ہوئی

"ہاں! بتاؤ پھر کیا ہوا؟"

نان بابی ٹھٹھ کر رہ گیا تھا۔ میں نے ذرا دینگ ہو کر اُس سے کہا "درو مت..... تم کو کچھ نہیں ہو سکتا..... جب تک میری

نومبر ۱۹۷۹

زلیانوالا باغ

نومبر ۱۹۷۹

نومبر ۱۹۷۹

نومبر ۱۹۷۹

نومبر ۱۹۷۹

नया हिन्द

जलियानवाला बाग

नवम्बर सन् '४७

साहब ठंडी सांस भर के बाहर चले गए.

मैने लिखना फिर शुरू किया. हर दम यही खटका था कि अब पुलिस की चंगुल में फँसा और तब फँसा ! मेरे जीवन की वह अनोखी घड़ी थी.

टांगा कुछ ही देर और खड़ा रहा. फिर गायब हो गया.

बयान खतम करके और नानचाई से वादा करके कि मैं बड़े से बड़े हाकिम से मिलकर इस मामले को तय करूँगा, वहाँ से पर करे खाना हुआ.

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

चालाक शिकारी

(अक्रम साहब इलाहाबादी)

सन् ४६ अर्धो जवान हो रहा था कि साम्राज इंग्लिशिया के महल में खलवली सी मच गई.

एक ने खबर दी—हुबूर, हिन्दुस्तान के जानवरों में अकल आ चली है.

दूसरा बोला—सरकार, हमारे पालतू भी भड़क रहे हैं.

तीसरे ने सुनाया—मालिक मुअज्जम के हिन्दुस्तानी सरकार के दो पाए कुछ बागी हुए जा रहे हैं. गुलामों को नियत कुछ खराब मालूम होता है.

मगर साम्राज शाही ने सबकी सुनकर एकलम्बा सा ऊँकड़ा लगाया. वह अब भी वैककू है—नादान, हमारी ही सिखाई हुई सियासत

नोबल

जलियानवाला बाग

नया हिन्द

साहब क्यूरी साल्स बकर के बाहर चले गئے. मैंने लकना पहर शुरुआत किया. हरदम यही कलकात्ता कि अब पुलिस की चंगुल में फँसा और तब फँसा ! मेरे जीवन की वह अनोखी घड़ी थी.

टांगा कुछ ही देर और खड़ा रहा. फिर गायब हो गया. बयान खतम करके और नानचाई से वादा करके कि मैं बड़े से बड़े हाकिम से मिलकर इस मामले को तय करूँगा, वहाँ से पर करे खाना हुआ.

❀

❀

❀

❀

(४५)

चालाक शिकारी

(अक्रम साहब इलाहाबादी)

सन् ४६ अर्धो जवान हो रहा था कि साम्राज इंग्लिशिया के महल में खलवली सी मच गई. एक ने खबर दी—हुबूर, हिन्दुस्तान के जानवरों में अकल आ चली है.

दूसरा बोला—सरकार, हमारे पालतू भी भड़क रहे हैं. तीसरे ने सुनाया—मालिक मुअज्जम के हिन्दुस्तानी सरकार के दो पाए कुछ बागी हुए जा रहे हैं. गुलामों को नियत कुछ खराब मालूम होता है.

मगर साम्राज शाही ने सबकी सुनकर एकलम्बा सा ऊँकड़ा लगाया. वह अब भी वैककू है—नादान, हमारी ही सिखाई हुई सियासत

से क्या वह हमें फतह कर सकते हैं?.....मदारी के पिटारे में अभी और भी बहुत से गुर मौजूद हैं उन वेकूकों के लिये.....वह बोला.

मगर अब की बार तो खतरा मालूम होता है हुजूर—एक मशीर ने राय दी.

खतराहूँ.....हम अय्यारों के लिये खतरा क्या चीज है.....तुम देखना तो अब की बार उनको अकल पर ऐसे पत्थर डालेंगे हम कि कई वरसों तक वह फिर बगावत का नाम भी न ले सकें. साम्राजशाही का बड़ा शैतान बोला—कोई है उसने यह कह कर ताली बजाई, और कौरन तीन शिकारी सामने आ पहुँचे.

तुम आज ही हिन्दुस्तान के जंगलों को खाना हो जाओ और लो.....यह बारूद का पिटारा भी साथ लेते जाना, वहाँ काम आयेगा.

चुनचि बरूदादार सिपाही मई की गरमियों में ही चल पड़े. हिन्दुस्तानी सरकार के दरिन्दे वे सबों से राशन का इन्तजार कर रहे थे.

आलिखि उम्मीद बर आई, मन को आशा पूरन हो गई. अय्यार शिकारी अपने साथ एक बूढ़ी मेम भी लाये थे जिसकी शायद अब उन्हें जरूरत न थी. उसका नाम, "स्वराज्य या आजादी" था.

भूके के सामने अगर कड़वे फल भी रख दो तो वह मत्ते ले लेकर खा जायगा.

चालाक शिकारियों ने उस बूढ़ी मेम को अपनी बन्दूक से मार डाला—

या हैसन्द. से क्या वह हमें फतह कर सकते हैं?.....मदारी के पिटारे में अभी और भी बहुत से गुर मौजूद हैं उन वेकूकों के लिये.....वह बोला. मगर अब की बार तो खतरा मालूम होता है हुजूर—एक मशीर ने राय दी.

खतराहूँ.....हम अय्यारों के लिये खतरा क्या चीज है.....तुम देखना तो अब की बार उनको अकल पर ऐसे पत्थर डालेंगे हम कि कई वरसों तक वह फिर बगावत का नाम भी न ले सकें. साम्राजशाही का बड़ा शैतान बोला—कोई है उसने यह कह कर ताली बजाई, और फुर्र

तुम आज ही हिन्दुस्तान के जंगलों को खाना हो जाओ और लो.....यह बारूद का पिटारा भी साथ लेते जाना, वहाँ काम आयेगा.

चुनचि बरूदादार सिपाही मई की गरमियों में ही चल पड़े. हिन्दुस्तानी सरकार के दरिन्दे वे सबों से राशन का इन्तजार कर रहे थे.

आलिखि उम्मीद बर आई, मन को आशा पूरन हो गई. अय्यार शिकारी अपने साथ एक बूढ़ी मेम भी लाये थे जिसकी शायद अब उन्हें जरूरत न थी. उसका नाम, "स्वराज्य या आजादी" था.

भूके के सामने अगर कड़वे फल भी रख दो तो वह मत्ते ले लेकर खा जायगा.

चालाक शिकारियों ने उस बूढ़ी मेम को अपनी बन्दूक से मार डाला—

उन्में से एक ने पूछा—यह क्या किया तुमने ?

मखा तो जब है कि हल्दी लगे न फिटकिरी और रंग चोला आए, यानी सांप भी मरे और लाठी भी न टूटे..... देखो तो कि हम किस मखे से शिकार करते हैं, दूसरा बोला.

और उन्होंने इस "स्वराज" का मुर्दा जिस्म इन दरिन्दों के सामने फेंक दिया.

चारों तरफ से भूके भेड़िये बेताब होकर दौड़ पड़े मगर यह क्या..... देखते देखते वह आपस ही में लड़ पड़े..... कुछ कह रहे थे..... हम तो सर और पेट का हिस्सा खायेंगे. कुछ कह रहे थे, नहीं तुम कौन होते हो, हम सब खा जायेंगे. और कुछ कह रहे थे, ऊँ हैं ! तुम थोड़ा थोड़ा खा लो हम ज्यादा खा लें. मगर कुछ का कहना यह भी था कि भाई मलाड़ा क्या..... सब मिल बांटकर खा लो..... कि थोड़ा थोड़ा सब को मिल जाय.

जितने मुँह उतनी बातें—और फिर दरिन्दों के अकल कहां— थोड़ी बहुत सुरू वृम जो किसी जमाने की बाल्की थी, वह इस भूक ने छीन ली..... कम्बलत आपस ही में लड़ पड़े—एक खूनी मंजर खिच गया. एक दूसरे को चीर चीर कर फेंकने लगे. एक दूसरे का खून पाने बैठ गए, न अपना न परया—आखिर दरिन्दे उठरे..... मीलों तक सर सब्ब मैदानों में खून की नदियां वह उठी..... अन्धार शिकारी अपना काम कर चुके थे—हंसते हुए चले गए.

दरिन्दे अब भी लड़ रहे थे..... यहाँ तक कि वह लड़ते लड़ते निढाल होकर गिर पड़े..... और अब जो देखा तो—स्वराज की लारा सड़ चुकी थी. मगर अब उन पर इस आपस की जंग में

लन में से एक ने पूछा—यैसा क्या करने ?
मजा तो जब हरकत बल्दी लगे न फिटकिरी और रंग चोला आए, यानी सांप भी मरे और लाठी भी न टूटे..... देखो तो कि हम कस मखे से शिकार करते हैं, दूसरा बोला.

आर अकलने ने इस "सुराज" का मूरे जसम इन दरिन्दों के सामने कसदक दया.
चारों तरफ से भूके कसरे कसरे ताब होकर दौड़ पड़े मगर कसरे कसरे देखते देखते वे आपस ही में लड़ पड़े..... कुछ कह रहे थे..... हम तो सर और पेट का हिस्सा खायेंगे. कुछ कह रहे थे, नहीं तुम कौन होते हो, हम सब खा जायेंगे. और कुछ कह रहे थे, ऊँ हैं ! तुम थोड़ा थोड़ा खा लो हम ज्यादा खा लें. मगर कुछ का कहना यह भी था कि भाई मलाड़ा क्या..... सब मिल बांटकर खा लो..... कि थोड़ा थोड़ा सब को मिल जाय.

जितने मुँह उतनी बातें—अब कसरे दरिन्दों के अकल कहां— कसरे कसरे देखते देखते वे आपस ही में लड़ पड़े—एक खूनी मंजर खिच गया. एक दूसरे को चीर चीर कर फेंकने लगे. एक दूसरे का खून पाने बैठ गए, न अपना न परया—आखिर दरिन्दे उठरे..... अन्धार शिकारी अपना काम कर चुके थे—हंसते हुए चले गये.

दरिन्दे अब भी लड़ रहे थे..... यहाँ तक कि वह लड़ते लड़ते निढाल होकर गिर पड़े..... और अब जो देखा तो—सुराज की लारा सड़ चुकी थी. मगर अब उन पर इस आपस की जंग में

जबान के बारे में कुछ बातें

व्यारे पंडित जी !

मैंने न आप को 'श्री' लिखा और न मोहतरम. पिछले साल हलीम मुसलिम कालेज कानपुर में आप की तक्ररीर सुनी थी और आप से मिला भी था. आप की सचाई ने मुझपर बड़ा असर किया. मैं 'नया हिन्द' पढ़ता रहता हूँ. सोच रहा हूँ कि जबान के बारे में कुछ मैं भी लिखूँ.

जबान का मसला हमारे देस का बहुत अहम मसला है हमारी कुछ सियासी अंजमनों ने इसे सियासी चीज बना दिया हालांकि जबान का ताल्लुक तो कलचर से है. आज का हिन्दुस्तानी, हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी के दो-राहे पर खड़ा है और समझ में नहीं आता कि वह कियर जाय.

उर्दू के कुछ लिखने वाले अरबी और फारसी के इतने लफ्ज बढ़ा देते हैं कि उनकी लिखी हुई चीजें उर्दू नहीं रहती. और अगर आप मुझे माफ करें तो मैं यह कहूँ कि हिन्दी वाले तो इस मैदान में बहुत बढ़ गए हैं. अगर मौजूदा उर्दू के पांच फ्री सदी लफ्ज आम आदमियों की समझ में न आंयगे, तो हिन्दी के पचास फ्री सदी लफ्ज सुनने वाले न समझ सकेंगे.

हिन्दी और उर्दू के भलाड़े को मिटाने के लिये हिन्दुस्तानी पेश की गई. हिन्दुस्तानी का नारा लगाने वालों में सब से पहले

ज़बान के बारे में कुछ बातें

प्यारے پنڈت جی !

میں نے نہ آپ کو 'شری' لکھا اور نہ محترم. پچھلے سال مسلم کالج کانپور میں آپ کی تقریر سنی تھی اور آپ سے مل بھی لکھا. آپ کی سچائی نے مجھ پر بڑا اثر کیا. میں دنیا ہند پڑھتا رہتا ہوں. سوچ رہا ہوں کہ زبان کے بارے میں کچھ میں بھی لکھوں.

زبان کا مسلہ ہمارے دل میں کا بہت اہم مسلہ ہے ہمارے کچھ سیاسی انجمنوں نے اسے سیاسی چیز بنا دیا حالانکہ زبان کا تعلق تو کچھ سے ہے۔ آج کا ہندستانی، ہندی اور دو ہندستانی کے دو راہے پر کھڑا ہے اور سمجھ میں نہیں آتا کہ وہ کدھر جائے۔ اردو کے کچھ لکھے والے عربی اور فارسی کے اتنے لفظ

جو حادیتے ہیں کہ ان کی لکھی ہوئی چیزیں اردو نہیں رہتیں۔ اور اگر آپ مجھے حاف کریں تو میں یہ آؤں کہ ہندی والے تو اس میدان میں بہت بڑھ گئے ہیں۔ اگر موجودہ اردو کے پانچ فی صدی لفظ عام آدمیوں کی سمجھ میں نہ آئیں گے، تو ہندی کے پچاس فی صدی لفظ سننے والے نہ سمجھ سکیں گے۔

ہندی اور اردو کے جھگڑے کو مٹانے کے لئے ہندستانی پیش کی گئی۔ ہندستانی کا لغو لگانے والوں میں سب سے پہلے

गांधीजी थे. मगर बहुत दिनों तक यह लोग हिन्दुस्तानी का कोई नमूना न दिखा सके. आखिर उर्दू में 'हरिजन सेवक' छापा गया. उसे देख कर पूरे मुल्क के हर ईमानदार आदमी को दुख हुआ. उसमें तो ऐसी खवान लिखी गई जिसे कम से कम हिन्दुस्तान में शायद कोई आलिम आदमी नहीं समझ सकता. चाहे आप हिमालय से रास कुमारी तक चले जाय "सम्पादक" और "विषय-सूची" जैसे लफ्जों को खबरदस्ती ठूसने की कोशिश की गई. इसीलिये हिन्दुस्तानी बड़ा खतरनाक लफ्ज बन गया. फिर आल इन्डिया रेडियो ने हिन्दुस्तानी की आइ लेकर हिन्दी का प्रचार शुरू कर दिया.

इन बातों से उर्दू से मोहब्बत करने वाले चौंक गये. मगर जब 'नया हिन्दू' हमारा आलों के सामने आया तो हमें एक ऐसी खवान मिली जो कठिन उर्दू और हिन्दी के बीच बीच थी. यह खवान ऐसी है कि कोई इसकी अच्छाई से इनकार नहीं कर सकता. बुनाचे अंजुमन तरक्की उर्दू के सेक्रेटरी मौलवी अब्दुलहक़ आपकी कलचर सोसाइटी के नायब सदर हैं.

पंडित जी!

लिखावट और लिखने के ढंग की बहस को छोड़िये लेकिन सब पढ़िये तो असल में 'उर्दू' वही खवान है जो आप पेश करते हैं. हमें उर्दू से इस लिये मोहब्बत है कि वह हमारी मोहब्बत और मेल जोल की यादगार है.

जो खवान आप 'नया हिन्दू' में लिखते हैं या जिस खवान में इस परचे में मजबूत छपते हैं अगर उसे हमारे भाई मान लें तो

कामधनी जी त्छे. मगर अत दतुन तक ये लुक हन्दस्तानी का कुनी मयुने न देकाके. अखर उरदु मी 'हरिजन सेवक' छियाग्या. असे दिखेके परदे तक के हर अमानदार उदमी कु दुखे हवा. अस मी तु इसी खवान केही कुनी जैसे कम से कम हन्दस्तान मी शायद कुनी एलम उदमी नहीन त्छे सकता. चाहे अप अलक से रास कुमारी तक छे जायें. "सियाक" और "वश सुचु" जैसे लफ्जुन कु नीडरदस्ती त्छुनेने कु कुशुश कु कुनी. अस लै हन्दस्तानी जुरा फलरनाक लफ्ज बन गया. फिर आल इन्डिया रेडियो ने हन्दस्तानी कु कु लै कु

हन्दी का प्रचार शुरू कर दिया.

इन बातों से उर्दू से मोहब्बत करने वाले चौंक गये. मगर जब 'नया हिन्दू' हमारी अंजुमन के सामने आया तो हमें एक ऐसी खवान मिली जो कठिन उर्दू और हिन्दी के बीच बीच थी. यह खवान ऐसी है कि कोई इस की अच्छाई से इनकार नहीं कर सकता. बुनाचे अंजुमन तरक्की उर्दू के सेक्रेटरी मौलवी अब्दुलहक़ आपकी कलचर सोसाइटी के नायब सदर हैं.

पंडित जी!

लिखावट और लिखने के ढंग की बहस को छोड़िये लेकिन सब पढ़िये तो असल में 'उर्दू' वही खवान है जो आप पेश करते हैं. हमें उर्दू से इस लिये मोहब्बत है कि वह हमारी मोहब्बत और मेल जोल की यादगार है.

जो खवान आप 'नया हिन्दू' में लिखते हैं या जिस खवान में इस परचे में मजबूत छपते हैं अगर उसे हमारे भाई मान लें तो

हमारी लड़ाई खतम हो जाय. हम तो पूरे हिन्दुस्तान के लिये एक अजान चाहते हैं और वह उर्दू है. खवाह (चाहे) कोई उसे हिन्दुस्तानी कहे हमें "नाम" से मतलब नहीं है.

उर्दू में लम्ब तो अरबो फारसी के हैं लेकिन फेल (verbs) और जोड़ने वाले लम्ब हिन्दी के. इसलिये यह नहीं कहा जा सकता कि उर्दू गौर मुल्की अजान है—मैंने इस मजमून में जो कुछ लिखा है यहा वह अजान है जो पूरे मुल्क को हो सकती है. अगर किसी को उर्दू के नाम से जलन है तो इसे हिन्दुस्तानी कहले.

पिछले महाने में आपने खवाजा गुलामुरसैयदैन के मजमून में कुछ लकज कमनों (ब्रेकेट) में बढ़ा दिये थे. उनमें से कुछ तो बहुत खूबसूरत थे और कुछ भारी थे. चरूरत सिर्फ इस बात को है कि लिखते वक्त हम लोग यह खयाल रखें कि हमारी लिखी हुई चीज को सब समझ लें. मैंने इस मजमून में हर जगह इस बात का ध्यान रखा है. जैसे खलूस की जगह सचाई, सकाफत की जगह कलचर, पर्दा को जगह आइ और रवावित को जगह जोड़ने वाले अलफाज, वगैरा.

अगर हम ढंग के साथ उर्दू और हिन्दी के लम्बों को इस्तेमाल करें तो हमारी लिखाई में ढंग की खूबसूरती पैदा हो सकती है. हमें यह भी नहीं भूलना चाहिये कि इस्तेमाल ही लम्ब को खूबसूरत बनाता है. कोई लकज न तो अच्छा होता है और न बुरा.

उर्दू में 'शवनम' को 'ओस' से ज्यादा अच्छा समझा जाता है मगर उर्दू के बड़े शायर मीर अनीस कहते हैं.

हमारी लड़ाई खतम हो जाये. हम तो पूरे हिन्दुस्तान के लिये एक ज़बान चाहते हैं और वह उर्दू है. खवाह (चाहे) कोई उसे हिन्दुस्तानी कहे हमें "नाम" से मतलब नहीं है.

उर्दू में लफ्ज़ तो عربی فارسی के ही लेकिन फ़सल (Metaphors) और जोड़ने वाले लफ्ज़ हندی के. इस लिये ये नहीं कहा जा सकता कि उर्दू ख़ैर मुल्की ज़बान है—मैंने इस मضمون में जो कुछ लिखा है यहा वह ज़बान है जो पूरे मुल्क की हो सकती है. अगर किसी को उर्दू के नाम से जलन है तो उसे हिन्दुस्तानी कहले.

पिछले मियने में आपने ख़ाबे غلام السیدین के मضمون में कुछ लफ्ज़ कमनों (ब्रेकेट) में बढ़ा दिये थे. उनमें से कुछ तो बहुत ख़ूबसूरत थे और कुछ भारी थे. चरूरत सिर्फ इस बात की है कि लिखते वक्त हम ख़ैर मुल्की ज़बान का ध्यान रखा करें. मैंने इस मजमून में हर जगह इस बात का ध्यान रखा है. जैसे ख़लूस की जगह सचाई, सकाफत की जगह कलचर, पर्दा को जगह आइ और रवावित को जगह जोड़ने वाले الفاظ, वगैरा.

अगर हम डूबेनक के साथ उर्दू और हندی के लफ्ज़ों को इस्तेमाल करें तो हमारी कलामी में डूबेनक की ख़ूबसूरती पैदा हो सकती है. हमें यह भी नहीं भूलना चाहिये कि इस्तेमाल ही लफ्ज़ को ख़ूबसूरत बनाता है. कोई लफ्ज़ न तो अच्छा होता है और न बुरा.

उर्दू में 'शब्ज़' को 'ओस' से ज़्यादा अच्छा समझा जाता है मगर उर्दू के बड़े शायर मीर अनीस कहते हैं.

न्यासहस्त
زبان کے بارے میں کچھ باتیں
نوٹ کر لیں

کھا کھا کے اوس اور بھی سبز ہرا ہوا
اگر یہاں اوس کی جگہ شبنم آئے تو مہرے کی ساری حسرت
ختم ہو جائے۔
اردو کے کچھ شعر گنیے یہی زبان ایک دن پورے ہندستان کی
زبان بنے گی۔

اوچھاسا اک پیار ہو ڈوسیا۔ ریت کی سی دیوار ہو ڈوسیا
شاہد وہ بھیر آجائیں، کہتے ہیں دھرتی ہو گول
ماہر ان کا کیا کہنا، اچھی صورت بیٹھ بول

کچھ لوگ اندھے میں یہ بھول جاتے ہیں کہ ہندی کے بہت
سے لفظ بہت ٹھٹھے ہیں جیسے دھرتی، آکاش، یریمک اور ساگر۔
فلک سے مصیبت کا خیال آتا تو مگر آکاش سے تاروں کا۔ ساگر میں
ہر اور 'بجر' میں بوجھل ہیں۔ زمین میں کوئی بات نہیں مگر دھرتی میں بڑی
خاص سی بات ہے۔

اور دوسری طرف تو یہ حال ہے کہ "خدا حافظ" "بندگی" "آداب"
اور "تسلیمات" پر ناک بھجوں چڑھاتے ہیں۔
"نیا ہند" نے ہندستانی کے پاک صاف نمونے دے کے لیکن
کہیں کہیں کھاری پن پیدا ہو جاتا ہے۔ مجھے امید ہے کہ کچھ دنوں میں اس
زبان میں ودائی پیدا ہونے کے بعد یہ چیز ختم ہو جائے گی۔
میں ہندستانی کا ایک نمونہ پیش کر کے اپنی باتوں کو ختم کر دوں گا۔

نیا ہند
زبان کے بارے میں کچھ باتیں
نوٹ کر لیں

نवम्बर सन् ४७
खवा खा के ओस और भी सञ्चा हरा हुआ
अगर यहां ओस की जगह शबनम आए तो मिसरे की सारी
सुन्दरता खतम हो जाय.

उर्दू के कुछ शेर सुनिये यही खवान एक दिन पूरे हिन्दुस्तान
की खवान बनेगी.

ओछा सा इक प्यार है दुनिया—रेत की सी दीवार है दुनिया
शायद वह फिर आ जायें, कहते हैं धरती है गोल
माहिर उनका क्या कहना, अच्छी सूरत मीठे बोल

—मौलाना हाली
माहिर अल कादरी

कुछ लोग अंधेपन में यह भूल जाते हैं कि हिन्दी के बहुत से
लफ्ज बहुत मीठे हैं जैसे धरती, आकाश, प्रेम और सागर.
फलक से मुसीबत का खयाल आता है मगर आकाश से तारों का.
सागर में रस है और 'बहर' में वोमलपन. खमीन में कोई बात नहीं
मगर धरती में बड़ी खास सी बात है.

और दूसरी तरफ तो यह हाल है कि "खुदा हाफिज" "बंदगी"
"आदाब" और "तस्लीमात" पर नाक भौ चढ़ाते हैं.

'नया हिन्द' ने हिन्दुस्तानी के पाक साक नमूने दिये लेकिन
कहीं कहीं भारीपन पैदा हो जाता है. मुझे उम्मीद है कि कुछ
दिनों में इस खवान में रबानी पैदा होने के बाद यह चीज खतम
हो जायगी.

मैं हिन्दुस्तानी का एक नमूना पेश करके अपनी इन बातों
को खतम कर दूंगा.

नया हिन्दू अबान के चार में कुछ बातें नवम्बर सन् '४७

उर्दू के एक अफसाने से यह टुकड़ा लिखता हूँ—

“एक मराठे बाहर से आया हुआ मालूम होता था. लिबास से तमबुलनुमाया था. उसका चेहरा चंद हो रहा था, और निगाहों से करब नुमायां था. दस्तारास्त एक पट्टी से गले में लटका हुआ था.

काफी खन्त के बावजूद उसके मुंह से आह निकल ही जाती थी.

अगर इन नुमलों का इस तरह कर लिया जाय तो हिन्दुस्तान का आम अबान में बदल जायेंगे.

“एक बामार बाहर से आया हुआ मालूम होता था. कपड़ों से अमीर लगता था. उसका चेहरा पीला हो रहा था और आंखों से तकलीफ और दुख टपक रहा था. दायां हाथ एक पट्टी से गले में लटका हुआ था. काफ़ी रोकने के बावजूद उसके मुंह से आह निकल ही जाती थी”.

हो सकता है कि आप मेरे हम खयाल हर बात में न हों. मगर मैंने सचाई से अपने खयालों को इस खत में लिख दिया.

आपका भाई,

जाफ़र हुसैन खां कानपुर

नोबेर्स

ज़बान के बारे में क़िस्सियाँ

उर्दू के एक अफसाने से ये टुकड़ा क़िस्सा हूँ—
एक मरिचियन बाहर से आया हुआ मालूम होता क़िस्सा. लिबास से तमबुलनुमायां क़िस्सा. उस का चेहरा चंद हो रहा था, और निगाहों से करब नुमायां क़िस्सा. दस्त रस्त एक पट्टी से गले में लटका हुआ क़िस्सा.

काफ़ी खन्त के बावजूद उस के मुँह से आह निकल ही जाती क़िस्सी.

अगर इन क़िस्सियों को इस तरह कर लिया जायें तो हिन्दुस्तान की

क़िस्सा नुमायां क़िस्सा. उस का चेहरा पीला हो रहा था और आंखों से तकलीफ और दुख टपक रहा था. दायां हाथ एक पट्टी से गले में लटका हुआ क़िस्सा. काफ़ी रोकने के बावजूद उसके मुँह से आह निकल ही जाती क़िस्सी.

हो सकता है कि आप मेरे हम खयाल हर बात में न हों. मगर मैंने सचाई से अपने खयालों को इस खत में लिख दिया.

आप का क़िस्सा

जाफ़र हुसैन खां कानपुर

نواکھالی

(شری کیدار ناتھ مظفرنگر)

نواکھالی کے دنگے کو ایک سال سے اوپر ہو چکا۔ اس کی خبریں سارے ملک کے اخباروں میں چھپ چکیں اور ملک کے بڑے بڑے لیڈر اس پر اپنے بیان دے چکے۔ ان بیانات میں ایک دوسرے سے کافی فرق ہے۔ عام طور پر ہندوؤں کو شکایت ہے کہ بنگال گورنمنٹ کے بیانات نے مسلمانوں کی زیادتیاں اور ہندوؤں کے اوپر غلطیوں کو کم کر کے دکھایا ہے۔ مسلمانوں کو شکایت ہے کہ انڈیا اور ہندو خاص کر آجاریہ کورپوریشن اور ایجوکیشنل بورڈ کے بیان میں نواکھالی کے افسوس ناک کھٹناؤں کو بہت بڑھا کر دکھایا گیا ہے۔ اس میں شک نہیں ہے کہ ہندو اور مسلمان دونوں کے دلوں اور دماغوں پر ان دونوں طرف کے بیانات کا گہرا اثر پڑا ہے۔ ایک دہے تک ملک میں جو کچھ اس کے بعد ہوا وہ نواکھالی کا ہی نتیجہ کہا جاسکتا ہے۔ مجھے بھی اردواری ریٹیف سوسائٹی کلکتہ کی طرف سے دو عینے نواکھالی اور اس پاس کے علاقے میں رہنے اور سیوا کرنے کا موقع ملا۔ اس حرحے میں نواکھالی اور تیرہ پورہ دونوں ضلعوں کے ان سب سکتاؤں یونینوں اور گاؤں میں میں گیا جس میں فساد ہوا تھا اور ہر طبقہ اور مذہب کے لوگوں کے بیان لئے۔ میں نے جو کچھ دیکھا اور جس نتیجے پر میں پہنچا وہ یہ ہے۔

نواکھالی

(شری کیدار ناتھ مظفرنگر)

نواکھالی کے دنگے کو ایک سال سے اوپر ہو چکا۔ اس کی خبریں سارے ملک کے اخباروں میں چھپ چکیں اور ملک کے بڑے بڑے لیڈر اس پر اپنے بیان دے چکے۔ ان بیانات میں ایک دوسرے سے کافی فرق ہے۔ عام طور پر ہندوؤں کو شکایت ہے کہ بنگال گورنمنٹ کے بیانات نے مسلمانوں کی زیادتیاں اور ہندوؤں کے اوپر غلطیوں کو کم کر کے دکھایا ہے۔ مسلمانوں کو شکایت ہے کہ انڈیا اور ہندو خاص کر آجاریہ کورپوریشن اور ایجوکیشنل بورڈ کے بیان میں نواکھالی کے افسوس ناک کھٹناؤں کو بہت بڑھا کر دکھایا گیا ہے۔ اس میں شک نہیں ہے کہ ہندو اور مسلمان دونوں کے دلوں اور دماغوں پر ان دونوں طرف کے بیانات کا گہرا اثر پڑا ہے۔ ایک دہے تک ملک میں جو کچھ اس کے بعد ہوا وہ نواکھالی کا ہی نتیجہ کہا جاسکتا ہے۔ مجھے بھی اردواری ریٹیف سوسائٹی کلکتہ کی طرف سے دو عینے نواکھالی اور اس پاس کے علاقے میں رہنے اور سیوا کرنے کا موقع ملا۔ اس حرحے میں نواکھالی اور تیرہ پورہ دونوں ضلعوں کے ان سب سکتاؤں یونینوں اور گاؤں میں میں گیا جس میں فساد ہوا تھا اور ہر طبقہ اور مذہب کے لوگوں کے بیان لئے۔ میں نے جو کچھ دیکھا اور جس نتیجے پر میں پہنچا وہ یہ ہے۔

रामगंज थाने के अन्दर पन्द्रह युनियन हैं. आबादी एक लाख अठ्ठासी हजार है. जिसमें एक लाख सैंतीस हजार मुसलमान और एकतालिस हजार हिन्दू हैं. फैलाव एक सौ सत्तरह मील सुरब्बा है.

रामगंज थाने की युनियन नम्बर आठ में दो बड़े घराने थे. इनमें एक मुसलमान घराना था जिसके सबसे बड़े आदमी शाह सैयद गुलामसरवर चिराती हैं. यह खानदान शाहपुर गाँव में रहता है. दूसरा घराना हिन्दू है. जिसके सरदार रायसाहेब राजेन्द्रराय चौधरी थे. यह खानदान करपरा गाँव में रहता है. दोनों गाँव में करीब एक मील का फासला है. यह दोनों घराने साहूकारा यानी लेन देन का पेशा करते हैं. और पाट (सन) और छालिया नारियल वगैरा का ब्योपार करते हैं और जिर्मीदार भी है. इन दोनों घरानों में ब्योपार की वजह से बरसों से एक दूसरे से लागडाट और दुरामनी चली आती थी. नतीजा यह था कि आस पास के तमाम इलाक़े में कुछ लोग एक घराने के तरफदार थे और कुछ दूसरे के, क्रुदरती तौर पर यह लागडाट अकसर हिन्दू-मुसलिम भगड़े की शकल अखतियार कर लेती थी. दोनों घरानों के असली आदमी कभी लड़ते नहीं देखे गए. लेकिन जब कभी एक घराने के दस बीस सिपाही या दूसरे हम दई दूसरे घराने के नौकरों या आइतियों से मिलते थे तो अकसर गाली गलौज या मार पीट तक हो जाती थी. कलकत्ते के हिन्दू-मुसलिम दंगे के बाद से इन दोनों घरानों की लाग डाटने और भी गहरा रूप अखतियार कर लिया और दोनों में मनमुटाब

रामगंज खाने के अन्दर बन्दे यूनियन हैं. आबादी एक लाख अठ्ठासी हजार है. जिसमें एक लाख सैंतीस हजार मुसलमान और अठ्ठासी हजार हिन्दू हैं. फैलाव एक सौ सत्तरह मील सुरब्बा है.

रामगंज खाने की यूनियन नम्बर आठ में दो बड़े घराने थे. इन में एक मुसलमान घराना खाना खाना जिस के सब से बड़े आदमी शाह सैयद गुलाम सरवर चिराती हैं. यह खानदान शाहपुर गाँव में रहता है. दूसरा घराना हिन्दू है. जिस के सरदार राई साहब राजिन्द राई प्रजुधरी सन् है. यह खानदान करपरा गाँव में रहता है. दोनों गाँवों में करीब एक मील का फासला है. यह दोनों घराने साहूकारा यानी लेन देन का पेशा करते हैं. और पाट (सन) और छालिया नारियल और जिर्मीदार भी है. इन दोनों घरानों में ब्योपार करते हैं और जिर्मीदार भी है. इन दोनों घरानों में ब्योपार की वजह से बरसों से एक दूसरे से लागडाट और दुरामनी चली आती थी. नतीजा यह था कि आस पास के तमाम इलाक़े में कुछ लोग एक घराने के तरफदार थे और कुछ दूसरे के, क्रुदरती तौर पर यह लागडाट अकसर हिन्दू-मुसलिम भगड़े की शकल अखतियार कर लेती थी. दोनों घरानों के असली आदमी कभी लड़ते नहीं देखे गये. लेकिन जब कभी एक घराने के दस बीस सिपाही या दूसरे हम दई दूसरे घराने के नौकरों या आइतियों से मिलते थे तो अकसर गाली गलौज या मार पीट तक हो जाती थी. कलकत्ते के हिन्दू-मुसलिम दंगे के बाद से इन दोनों घरानों की लाग डाटने और भी गहरा रूप अखतियार कर लिया और दोनों में मनमुटाब

बढ़ता जा रहा था. इसका असर आस पास के तमाम इलाक़े पर पड़ रहा था.

काली पूजा के दिनों में रायसाहेब राजेन्द्रराय चौधरी के यहाँ एक साधू कहीं बाहर से आकर ठहरा. कहा जाता है कि वहाँ कोई आदमी उस साधू को पहले से नहीं जानता था. किसी मुसलमान का एक छोटा लड़का काली पूजा देखने आ निकला. उस साधू ने उस लड़के से काली देवी के सामने सर फुलाने को कहा. लड़के ने इनकार किया. साधू ने खबरदस्ती उसे पकड़ कर देवी के सामने सर झुकवाया. लड़का रोता हुआ अपने घर गया. कुछ मुसलमान शिकायत करने के लिये रायसाहेब राजेन्द्रराय चौधरी के पास आये. रायसाहेब के आदमियों से उनका झगडा हो गया. उसी झगडे में कहा जाता है उस साधू ने दो मुसलमानों को मारा जिनमें से एक मर गया. आस पास के मुसलमान शाह गुलामसरवर चिराती के पास शिकायत लेकर गए. शाह साहेब ने दस अक्टूबर सन् ४६ को अपने यहाँ शाहपुर गाँव में मुसलमानों को जमा किया. बहुत जोशीली तक्रारें हुईं. आम हिन्दुओं के खिलाफ़ लोगों को भड़काया गया और कहा जाता है कि यह ऐलान किया गया कि जो कोई राय साहेब राजेन्द्र राय चौधरी का सर काट कर लायेगा उसे शाह साहेब की तरफ़ से इनाम मिलेगा. उसी दिन शाम को कुछ मुसलमानों ने शाहपुर के बाजार में हिन्दू दूकानों को लूटा और आग लगा दी. पर उस दिन शाहपुर में किसी की जान नहीं गई. दूसरे दिन यह लोग जोश में भरकर करपरा गाँव की तरफ़ रवाना हुये और राय

ब्रह्माचारमात्मा. इस का अत्रास पास के तमाम एलाके पर छि रहा त्था. काली पूजा के दिनों में रासै रासब रासन्द रासै योदसरी के यहाँ एक सादसुकीस बाहर से अक्र भ्खरा. कहा जाता अक्र वहाँ काली आदी अस सादसुको यिले से न्हिस जानना त्था. कसु मुसलमान का अक्र भ्खुना लुका काली पूजा दिख्ने आकला. अस सादसुने अस लुके से काली दीवी के साने सर ज्हुकाने को कहा. लुके ने अकार किया. सादसुने डुरदुती असै बाक्रु दीवी के साने सर भ्खुकाया. लुका रोता अा अने भ्खुगया. क्छे मुसलान शक़ात करने के लुके रासै रासब रासन्द रासै योदसरी के पास आसै. रासै रासब के आदियों से अस का भ्खुगना होया. असै भ्खुके यिँ कहा जाता अक्र अस सादसुने दो मुसलानुं को बाडजन यिँ से असै अक मरगया. अस यस के मुसलान शाह एलाम सरुदर चिराती के यस शक़ात लेकुरे. शाह रासब ने दस अक्रुबर सन् १९०५ को असै यहाँ शाहपुड काडुं यिँ मुसलानुं को जभग किया. ससत ज्युशिली त्कर यिँ यिँ. एाम भन्दुदुं के शक़ात लुगुं को भ्खुकाया गिया अुदर कहा जाता अक्रुके ये एलान किया कि जो कोनी रासै रासब रासन्द रासै योदसरी का सर काकुरे लासै कासै शाह रासब की शरफ़ से अस लुके कासै. असै दन शाह को क्छे मुसलानुं ने शाहपुड के बाडर यिँ भन्दुदकानुं को लुटा अुदर अक लुकी दी यिँ अस दन शाहपुड यिँ कसु की जान न्हिस गिया. दुसरे दन ये लुगुं ज्युश यिँ भ्खुकरे कुरा काडुं की शरफ़ एलाके होसै अुदर रासै

साहेब राजेन्द्रनाथ के मकान पर धावा बोल दिया. राय साहेब को डकल कर दिया गया. मकान को आग लगा दी गई और गाँव लूट लिया गया. उस दिन उस गाँव में तेईस आदमी मारे गए. जिनमें ज्यदादातर आदमी राजेन्द्र बाबू के घर के थे. गाँव के कुछ और मालदार तिजारत पेशा लेन देन करने वालों पर भी हमला हुआ. लेकिन उस दिन गाँव में आम हिन्दुओं को या सरीब आदमियों की नहीं मारा गया और न लूटा गया.

ऊपर आ चुका है कि शाहपुर और करपरा दोनों गाँव यूनियन नम्बर आठ में हैं. बलवे की आग इस यूनियन से बढ़ कर सारे रामगंज थाने में फैल गई. और वहाँ से नोआखाली के आस पास के थानों, फरीदगंज, रायपुर, लखनीपुर में उत्तर पच्छिम को होती हुई खिला त्रिपुरा के हाजीगंज और चाँदपुर थानों तक फैल गई. नोआखाली के दक्खिन की तरफ स्वानदीप (Swandip) थाने के एक छोटें से टापू में भी बलवे का असर हुआ. इन इलाकों के अलावा नोआखाली जिले में या त्रिपुरा जिले में और कहीं बलवे का असर नहीं हुआ.

वह साधू जिससे यह मनाड़ा शुरू हुआ था, राजेन्द्र बाबू के मकान पर हमला होने ही वहाँ से भाग निकला. पुलिस की रिपोर्ट से मालूम होता है कि वह रामगंज और हाजीगंज होता हुआ कलकत्ता पहुँच गया. वह भी पता चला है कि कलकत्ते से उसने बलवे की इस तरह की खबरें अलवारों में भेजी जो निहायत बढ़ा कर बयान की हुई और रालत भी थी. यह खबरें ज्यदादातर पहले आनन्द चाञ्चर और अमृतबाञ्चर अलवारों में छपी.

صاحب راجندر ناتھ کے مکان پر دھاوا بول دیا۔ اسے صاحب کو قتل کر دیا گیا۔ مکان کو آگ لگا دی گئی اور گاؤں لوٹ لیا گیا۔ اس دن اس گاؤں میں تیس آدی مارے گئے۔ جن میں زیادہ تو آدی راجندر بابو کے گھر کے تھے۔ گاؤں کے کچھ اور مال دار تجارت پیشہ لین دین کرنے والوں پر بھی حملہ ہوا۔ لیکن اس دن گاؤں میں عام ہندوؤں کو یا عزیز آدمیوں کو نہیں مارا گیا اور نہ کوٹا گیا۔

اور آچھا ہو کہ شاہ پور اور کیرا دولل گاؤں یونین سب ڈویژن میں پھیل گئی۔ اور وہاں سے ڈوآخالی کے آس پاس کے کھانوں میں فرید گنج پور، کھنئی پور میں اترو پھیم کہ ہوتی ہوں ضلع تریپورا کے حاجی گنج اور چاند پور کھانوں میں پھیل گئی۔ ڈوآخالی کے دشمن کی طرف سوان دیپ (Swandip) کھانے کے ایک چھوٹے سے ٹاپو میں بھی بلوے کا اثر ہوا۔ ان علاقوں کے علاوہ ڈوآخالی ضلع میں یا تریپورا ضلع میں اور کہیں بلوے کا اثر نہیں ہوا۔

وہ سادھو جس سے یہ جھگڑا شروع ہوا کھٹا، راجندر بابو کے مکان پر حملہ ہوتے ہی وہاں سے بھاگ نکلا۔ پولیس کی رپورٹ سے معلوم ہوتا ہے کہ وہ رام گنج اور حاجی گنج ہوتا ہوا کلکتہ پہنچ گیا۔ یہ بھی پتہ چلا ہے کہ کلکتہ سے اس نے بلوے کی اس طرح کی خبریں اخباروں میں بھیجیں جو نہایت بڑھک بیان کی ہوئی اور غلط بھی تھیں۔ یہ خبریں زیادہ تر پہلے آئند بازار اور امرت بازار اخباروں میں چھپیں۔

दंगे के दौरान में कुछ हिन्दू औरतें भी भगाई गईं. कुछ की मुसलमानों के साथ अबरदस्तों शादी कर दी गई और कुछ मरदों और औरतों को अबरदस्तों मुसलमान भी बना लिया गया. जहाँ तक मुझे दो महाने का तहककात से पता चल सका, दोनों बिलों में मिला कर मरने वालों की तादाद दो सौ है. औरतों के खिलाफ सज़ोन जुनों की तादाद करोब चारह गिनाई जाती है. जिन लोगों को अबरदस्ती मुसलमान बनाया गया था वह करोब करोब सब फिर चन्द माह के अन्दर अपने मजहब के अन्दर वापस आ गये. जो हिन्दू डर को बजह से अपने गांव छोड़ कर भाग गए थे वह भी धीरे धीरे सब वापस आ रहे हैं. फसाद के दौरान में जगह जगह किसी किसी गांव में ऐसे मुसलमान भी निकले जिन्होंने अपने को खतरे में डाल कर अपने हम मजहबों के पागल पन से अपने गांव के हिन्दुओं को हिलाबत की.

पूरबी बङ्गाल की जमीन सबमुच सोने की जमीन है. जगह जगह पानी भरा हुआ है. धरती बेहद उपजाऊ है. कुदरत ने पूरबी बङ्गाल पर अपना बेगुमार दीलत बरसाई है. वहाँ के रहने वालों को थोड़ी ही सी मेहनत करके सुपारी और नारियल के बाराबों से काफी आमदनी हो जाती है जिस से वह अच्छी तरह गुजर बसर कर सकते हैं. जमान नीचो है इसलिये पानी से भरी रहती है. बारिश बहुत होती है. एक गांव से दूसरे गांव किरतो से जाना होता है. सड़कें या रास्ते बहुत कम हैं और जहाँ हैं वहाँ थोड़ी सी बारिश से बेकार हो जाते हैं. यह रास्ते इतने तंग हैं कि कभों भी दो बैलगाड़ी बराबर से नहीं निकल

दुर्ग के दौरान में कुछ हिन्दू औरतें भी भगाई गईं. कुछ की मुसलमानों के साथ अबरदस्तों शादी कर दी गई और कुछ मरदों औरतों को अबरदस्तों मुसलमान भी बना लिया गया. जहाँ तक मुझे दो महाने का तहककात से पता चल सका, दोनों बिलों में मिला कर मरने वालों की तादाद दो सौ है. औरतों के खिलाफ सज़ोन जुनों की तादाद करोब चारह गिनाई जाती है. जिन लोगों को अबरदस्ती मुसलमान बनाया गया था वह करोब करोब सब फिर चन्द माह के अन्दर अपने मजहब के अन्दर वापस आ गये. जो हिन्दू डर को बजह से अपने गांव छोड़ कर भाग गए थे वह भी धीरे धीरे सब वापस आ गये. जो हिन्दू डर को बजह से अपने गांव छोड़ कर भाग गए थे वह भी धीरे धीरे सब वापस आ गये. जो हिन्दू डर को बजह से अपने गांव छोड़ कर भाग गए थे वह भी धीरे धीरे सब वापस आ गये.

पूरबी बङ्गाल की जमीन सबमुच सोने की जमीन है. जगह जगह पानी भरा हुआ है. धरती बेहद उपजाऊ है. कुदरत ने पूरबी बङ्गाल पर अपना बेगुमार दीलत बरसाई है. वहाँ के रहने वालों को थोड़ी ही सी मेहनत करके सुपारी और नारियल के बाराबों से काफी आमदनी हो जाती है जिस से वह अच्छी तरह गुजर बसर कर सकते हैं. जमान नीचो है इसलिये पानी से भरी रहती है. बारिश बहुत होती है. एक गांव से दूसरे गांव किरतो से जाना होता है. सड़कें या रास्ते बहुत कम हैं और जहाँ हैं वहाँ थोड़ी सी बारिश से बेकार हो जाते हैं. यह रास्ते इतने तंग हैं कि कभों भी दो बैलगाड़ी बराबर से नहीं निकल

सकतीं. बाँसों और लकड़ी के तख्तों के पुल जगह जगह बने हुए हैं. यह पुल आम तौर से इतने कमजोर हैं कि उन पर जान हथेला पर लेकर चलना पड़ता है. हर वक्त गिरने का डर रहता है. नदी नालों और नहरों के रास्तों से नाओं में आते जाते हैं. नदियाँ आम तौर पर बहुत डरावनी मालूम होती हैं. लेकिन पूर्वी बंगाल का हर बच्चा, मर्द व औरत सब तरना जानते हैं. किराती खेने में भी यह लोग बहुत हाँ-होशियार हैं. छोटी छोटी किरातियों में यह लोग नारियल, सुपारी, सन वौर: अपने यहां की पैदावार की चीजें लेकर बाजार में आते हैं और इन ही में खाने पीने की चीजें बाजार से ले जाते हैं. देसावरी माल बड़ा किरातियों में ले जाते हैं.

लिबास व रहन सहन में यहां के हिन्दू और मुसलमानों में बहुत कम फरक नजर आता है. दोनों एक ही नोआखाली की बंगला बोलते हैं. वहां की बङ्गला खबान में और कलकत्ते की बङ्गला खबान में बहुत फरक है. हिन्दू और मुसलमान दोनों ही एक ही लिखावट लिखते हैं. दोनों का पोशाक आम तौर पर एक ही है. नौजवान मर्द रंग-बिरंगा की लुगियाँ बांधते हैं और कमीच पहनते हैं. कमीच के ऊपर आम तौर पर चादर ओढ़ लेते हैं. कमी कमी चादर कमर पर बँधी होती है. सब नंगे सर और नंगे पैर रहते हैं. सर पर सबके अंगरेजी बाल दिखाई देते हैं. दाढ़ी मूँछों का आम तौर पर सकाया नजर आता है. यहाँ साँप बहुत होते हैं और रास्ते की खराबी की वजह से हाँ-करीब करीब हर एक आदमी के हाथ में टांच रहती है जिसके पास टांच नहीं होती वह अकसर

सकतें. बाँसों और लकड़ी के तख्तों के पुल जगह जगह बने हैं. यह पुल आम तौर से इतने कमजोर हैं कि उन पर जान हथेला पर लेकर चलना पड़ता है. हर वक्त गिरने का डर रहता है. नदी नालों और नहरों के रास्तों से नाओं में आते जाते हैं. नदियाँ आम तौर पर बहुत डरावनी मालूम होती हैं. लेकिन पूर्वी बंगाल का हर बच्चा, मर्द व औरत सब तरना जानते हैं. किराती खेने में भी यह लोग पैदावार की चीजें लेकर बाजार में आते हैं और इन ही में खाने पीने की चीजें बाजार से ले जाते हैं. देसावरी माल बड़ा किरातियों में ले जाते हैं.

लिबास व रहन सहन में यहां के हिन्दू और मुसलमानों में बहुत कम फरक नजर आता है. दोनों एक ही नोआखाली की बङ्गला बोलते हैं. वहां की बङ्गला खबान में और कलकत्ते की बङ्गला खबान में बहुत फरक है. हिन्दू और मुसलमान दोनों ही एक ही लिखावट लिखते हैं. दोनों का पोशाक आम तौर पर एक ही है. नौजवान मर्द रंग-बिरंगा की लुगियाँ बांधते हैं. कमीच के ऊपर आम तौर पर चादर ओढ़ लेते हैं. कमी कमी चादर कमर पर बँधी होती है. सब नंगे सर और नंगे पैर रहते हैं. सर पर सबके अंगरेजी बाल दिखाई देते हैं. दाढ़ी मूँछों का आम तौर पर सकाया नजर आता है. यहाँ साँप बहुत होते हैं और रास्ते की खराबी की वजह से हाँ-करीब करीब हर एक आदमी के हाथ में टांच रहती है जिसके पास टांच नहीं होती वह अकसर

कहीं एक किसम का हलका सा परदा करती हैं। यानी या तो उनके घरों के सामने एक टाट का टुकड़ा टंगा रहता है और या वह कहीं कहीं बुरका ओढ़े हुए पालकी में आती जाती नजर आती हैं। एक करक यह भी है कि हिन्दू आम तौर पर व्योपार करता है और मुसलमान आम तौर पर खेती। खेती को पैदावार में सन, नावल, मिर्च, तम्बाकू सबसे ज्यादा है। जिस तरह उत्तर हिन्दुस्तान के बहुत से हिस्सों में ऊँची जाति के हिन्दू अपने हाथ से हल नहीं चलाते उसी तरह पूरबी बंगाल में आम तौर पर हिन्दू लोग हल नहीं चलाते। हिन्दुओं की जमीन में भी यह काम मुसलमानों से लिया जाता है। जमीन इतनी नर्म है कि एक मर्तवा हल चलाना काफी होता है। मैंने कहीं कहीं लोहे के जगह लकड़ी के हल भी देखे हैं।

आबोहवा बहुत अच्छी है। मौसम इतने सुहावने हैं कि जनवरी और फरवरी के महीने में सुबह को कोयल बोलती है और शाम को जुगुनू जगमगाते हैं। न तो सर्दी ज्यादा होती है और न गरमी। बहुत ही हल्के और कम कपड़ों से हर आदमी का चारह महीने गुजर हो सकता है।

पिछले दिनों के बाद से कहीं कहीं हिन्दू धरारण हुए नजर आते थे। मुसलमान खुश नजर आते थे। मुसलमान ज्यादा गरीब हैं। दोनों ज्यादातर अनपढ़ हैं। तालीम का इन्तजाम कुछ इलाकों में बहुत कम है। हिन्दू या मुसलमान जो भी पढ़ जाते हैं वह नौकरी के लिए कलकत्ते चले जाते हैं। हिन्दुओं में एक दूसरे से ऊँच नीच और छुआ छूत काफी बरती जाती है। मुसलमानों में यह चीज नहीं है।

किस एक قسم का हलका सा परदे करती हैं। यानी या तो उनके घरों के सामने एक टाट का टुकड़ा टंगा रहता है या वह कहीं कहीं कहीं बुरका ओढ़े हुए पालकी में आती जाती नजर आती हैं। एक करक यह भी है कि हिन्दू आम तौर पर व्योपार करता है और मुसलमान आम तौर पर खेती। खेती को पैदावार में सन, नावल, मिर्च, तम्बाकू सबसे ज्यादा है। जिस तरह उत्तर हिन्दुस्तान के बहुत से हिस्सों में ऊँची जाति के हिन्दू अपने हाथ से हल नहीं चलाते उसी तरह पूरबी बंगाल में आम तौर पर हिन्दू लोग हल नहीं चलाते। हिन्दुओं की जमीन में भी यह काम मुसलमानों से लिया जाता है। जमीन इतनी नर्म है कि एक मर्तवा हल चलाना काफी होता है। मैंने कहीं कहीं लोहे के जगह लकड़ी के हल भी देखे हैं।

आबोहवा बहुत अच्छी है। मौसम इतने सुहावने हैं कि जनवरी और फरवरी के महीने में सुबह को कोयल बोलती है और शाम को जुगुनू जगमगाते हैं। न तो सर्दी ज्यादा होती है और न गरमी। बहुत ही हल्के और कम कपड़ों से हर आदमी का चारह महीने गुजर हो सकता है।

पिछले दिनों के बाद से कहीं कहीं हिन्दू धरारण हुए नजर आते थे। मुसलमान खुश नजर आते थे। मुसलमान ज्यादा गरीब हैं। दोनों ज्यादातर अनपढ़ हैं। तालीम का इन्तजाम कुछ इलाकों में बहुत कम है। हिन्दू या मुसलमान जो भी पढ़ जाते हैं वह नौकरी के लिए कलकत्ते चले जाते हैं। हिन्दुओं में एक दूसरे से ऊँच नीच और छुआ छूत काफी बरती जाती है। मुसलमानों में यह चीज नहीं है।

मन्दिर और मस्जिद कम हैं और जो हैं वह एक मोपड़ी के नमूने के हैं. हिन्दू इन मोपड़ियों में जमा होकर कीर्तन करते हैं और ठाकुर का मूर्ति एक सिंहासन पर रख लेते हैं. मुसलमान एक मोपड़ो के अन्दर जमा होकर नमाज पढ़ते हैं. आम तौर पर पत्नी ईंटों को न मस्जिद है और न मन्दिर. मुसलमान कुरान पढ़ना कम जानते हैं फिर भी पढ़ते हैं. नमाज और रोजा अकसर रखते हैं. अरबों खबान तो कोई कोई ही जानता होगा. हिन्दू संस्कृत ज्यादा जानते हैं.

पूरबी बंगाल का इलाका दुनिया के सरसब्ज से सरसब्ज इलाकों में है. वहाँ के लोग नेक और मेहनती हैं. पिछला फसाद चाहे किसी वजह से हुआ हो, चाहे अन्दर की चीज हो चाहे बाहर की, मजहब की वजह से हुआ हो या तिजारती लाग डाट की वजह से, हर हालत में मैं अपने दो महीने के तजरवे से यह दावे से कह सकता हूँ कि इस फसाद के असर काफ़ी तेजी से मिट रहे हैं. इसमें कोई शक नहीं कि इस इलाके के हिंदू और मुसलमान फिर अमन से रहने लगे हैं और इससे ज्यादा अमन से रहेंगे. इस बारे में गाँधी जी और उनके साथियों, खास कर उनकी मुसलमान चेली अन्तुस्लाम का असर बहुत ही अच्छा पड़ा है इस असर के पैदा करने में मुसलिम लोग के कुछ मेम्बरों ने भी काफ़ी मदद दी है और गवर्नमेंट ने भी कोशिश की है. हमें भरोसा है कि थोड़े ही दिनों के अन्दर यह शर्मनाक फसाद एक गुजरा हुआ ख्वाब रह जायगा और नोआखाली फिर मेल महबूबत अमन और खुश हाली से लहलहायेगा.

न्यास

नोआखाली

नोब्रस

मन्दर और मस्जिद कम हैं और जो हैं वह एक ज्योडिया के नमूने के हैं. मन्दर इन ज्योडियों में जमा होकर कीर्तन करते हैं और मस्जिद की मूर्ति एक सिंहासन पर रख लेते हैं. मुसलमान एक ज्योडिया के अन्दर जमा होकर नमाज पढ़ते हैं. आम तौर पर पत्नी ईंटों को न मस्जिद है और न मन्दर. मुसलमान कुरान पढ़ना कम जानते हैं फिर भी पढ़ते हैं. अरबों खबान तो कोई कोई ही जानता होगा. हिन्दू संस्कृत ज्यादा जानते हैं.

पूरबी बंगाल का इलाका दुनिया के सरसब्ज से सरसब्ज इलाकों में है. वहाँ के लोग नेक और मेहनती हैं. पिछला फसाद चाहे किसी वजह से हुआ हो, चाहे अन्दर की चीज हो चाहे बाहर की, मजहब की वजह से हुआ हो या तिजारती लाग डाट की वजह से, हर हालत में मैं अपने दो महीने के तजरवे से यह दावे से कह सकता हूँ कि इस फसाद के असर काफ़ी तेजी से मिट रहे हैं. इसमें कोई शक नहीं कि इस इलाके के हिंदू और मुसलमान फिर अमन से रहने लगे हैं और इससे ज्यादा अमन से रहेंगे. इस बारे में गाँधी जी और उनके साथियों, खास कर उनकी मुसलमान चेली अन्तुस्लाम का असर बहुत ही अच्छा पड़ा है इस असर के पैदा करने में मुसलिम लोग के कुछ मेम्बरों ने भी काफ़ी मदद दी है और गवर्नमेंट ने भी कोशिश की है. हमें भरोसा है कि थोड़े ही दिनों के अन्दर यह शर्मनाक फसाद एक गुजरा हुआ ख्वाब से लहलहायेगा.

पूरबी बंगाल का इलाका दुनिया के सरसब्ज से सरसब्ज इलाकों में है. वहाँ के लोग नेक और मेहनती हैं. पिछला फसाद चाहे किसी वजह से हुआ हो, चाहे अन्दर की चीज हो चाहे बाहर की, मजहब की वजह से हुआ हो या तिजारती लाग डाट की वजह से, हर हालत में मैं अपने दो महीने के तजरवे से यह दावे से कह सकता हूँ कि इस फसाद के असर काफ़ी तेजी से मिट रहे हैं. इसमें कोई शक नहीं कि इस इलाके के हिंदू और मुसलमान फिर अमन से रहने लगे हैं और इससे ज्यादा अमन से रहेंगे. इस बारे में गाँधी जी और उनके साथियों, खास कर उनकी मुसलमान चेली अन्तुस्लाम का असर बहुत ही अच्छा पड़ा है इस असर के पैदा करने में मुसलिम लोग के कुछ मेम्बरों ने भी काफ़ी मदद दी है और गवर्नमेंट ने भी कोशिश की है. हमें भरोसा है कि थोड़े ही दिनों के अन्दर यह शर्मनाक फसाद एक गुजरा हुआ ख्वाब से लहलहायेगा.

آج کی دنیا

(کئی خدایت گار)

- یو. این. او. کا انڈیا اور پاکستان کی غلامی کو منظور کرنا ہے
- خطرناک نہیں ہے
- لڑائی کے لئے اسٹیکو اوپن ڈاکوؤں کو شری مٹی پنڈت کی مدد ہے

بہت کم لوگوں نے اس بات پر غور کیا ہوگا۔ = چیز آتی ہے پیر جاپ ہوئی کہ معلوم ہوتا ہے کیے استادوں کے ذمے کام سونپا گیا تھا جنہوں نے اسے بہت خوبی سے انجام دیا۔ اگر لکل نے اس بات پر دھیان دیا ہوتا کہ ہر آکسلی شری مٹی پنڈت کے لئے ماسکو پنڈت، جو کہ ماسکو میں آمدیا کی ایچی ہیں، بجائے ماسکو میں مشغول ہونے کے اس وقت نیویارک میں یو. این. اوکلام میں گلی ہوئی ہیں تو سب باتوں کا اصلی پتہ چل جاتا۔ آکسلی شری مٹی پنڈت کے لئے اس وقت

ہر ایکسلی شری مٹی پنڈت اس وقت

اس لیکھ کے لئے — ہندستان = پاکستان جمع انڈیا۔

انڈیا = پاکستان کم ہندستان۔

की दशाओं में बता दिया गया है. वह कर्नडा, साउथ आफ्रीका, आस्ट्रेलिया वगैरा की तरह वेस्ट मिनिस्टर के स्टेच्यूट के सुताविक 'डोमिनियन्स' नहीं होंगी बल्कि इन्डियन इनडिपेन्डेन्स एक्ट के सुताविक "खुदमुख्तार डोमिनियन्स" होंगी.

जैसे पहले थे वैसे अब भी—

वर्तानिया के इन्डिया और पाकिस्तान को ताकत सौंप देने के बाद और उन्हें 'खुदमुख्तार डोमिनियन्स' मंजूर कर लेने पर भी इन्डिया और पाकिस्तान ब्रिटिश कामनवेल्थ और साम्राज के अन्दर ही बने रहेंगे. 'खुदमुख्तार डोमिनियन्स' के फ़िक्कर से हमें धोके में नहीं आना चाहिये. यह महज़ एक नाम है जो इन्डिया और पाकिस्तान के नए रुतबे हासिल करने पर दिया गया है. इस तरह हम देखते हैं कि खुदमुख्तारी का तो कहीं सवाल ही नहीं उठता है. अन्तरराष्ट्रीय क़ानून के सुताविक इन्डिया और पाकिस्तान खुदमुख्तार हकूमतें नहीं हैं क्योंकि यह हकूमतें वर्तानवी ताज की बकादार हैं.

फिर भी आजकल जो ग़ैर खुदमुख्तार हकूमतें हैं उन्हें भी दूसरे देशों से सीधा सम्बन्ध रखने का हक़ है बशर्ते कि जिस बड़ी ताकत की वह बकादार हैं वह उन्हें ऐसा करने की इजाजत दे दे. इसलिये हिन्दुस्तान से सीधा सम्बन्ध रखने के बारे में रुस ने जो रुतब अख्तियार किया है वह बिलकुल ठीक है. अमरीका और दूसरे देशों के साथ जो सीधा सम्बन्ध क़ायम किया जा रहा है वह भी जैसा ऊपर बताया जा चुका है, बकायदा हो सकता है. लेकिन क्योंकि इसे ताकत हासिल करने के पहले ही

नोबे १९४७
आज की दुनिया

की दखावों में बता दिया गया है. वह कर्नडा, साउथ आफ्रीका, आस्ट्रेलिया वगैरा की तरह वेस्ट मिनिस्टर के स्टेच्यूट के सुताविक 'डोमिनियन्स' नहीं होंगी बल्कि इन्डियन इनडिपेन्डेन्स एक्ट के सुताविक "खुदमुख्तार डोमिनियन्स" होंगी.

जैसे पहले थे वैसे अब भी—
ब्रिटानिय के इन्डिया और पाकिस्तान को ताकत सौंप देने के बाद और उन्हें 'खुदमुख्तार डोमिनियन्स' मंजूर कर लेने पर भी इन्डिया और पाकिस्तान ब्रिटिश कामनवेल्थ और साम्राज के अन्दर ही बने रहेंगे. 'खुदमुख्तार डोमिनियन्स' के फ़िक्कर से हमें धोके में नहीं आना चाहिये. यह महज़ एक नाम है जो इन्डिया और पाकिस्तान के नए रुतबे हासिल करने पर दिया गया है. इस तरह हम देखते हैं कि खुदमुख्तारी का तो कहीं सवाल ही नहीं उठता है. अन्तरराष्ट्रीय क़ानून के सुताविक इन्डिया और पाकिस्तान खुदमुख्तार हकूमतें नहीं हैं क्योंकि यह हकूमतें वर्तानवी ताज की बकादार हैं.

फिर भी आजकल जो ग़ैर खुदमुख्तार हकूमतें हैं उन्हें भी दूसरे देशों के साथ जो सीधा सम्बन्ध रखने का हक़ है बशर्ते कि जिस बड़ी ताकत की वह बकादार हैं वह उन्हें ऐसा करने की इजाजत दे दे. इसलिये हिन्दुस्तान से सीधा सम्बन्ध रखने के बारे में रुस ने जो रुतब अख्तियार किया है वह बिलकुल ठीक है. अमरीका और दूसरे देशों के साथ जो सीधा सम्बन्ध क़ायम किया जा रहा है वह भी जैसा ऊपर बताया जा चुका है, बकायदा हो सकता है. लेकिन क्योंकि इसे ताकत हासिल करने के पहले ही

نیا ہند
آج کی دنیا
نومبر ۱۹۵۰ء

نیا ہند
آج کی دنیا
نومبر ۱۹۵۰ء

نیا ہند
آج کی دنیا
نومبر ۱۹۵۰ء

نیا ہند
آج کی دنیا
نومبر ۱۹۵۰ء

نیا ہند
آج کی دنیا
نومبر ۱۹۵۰ء

نیا ہند
آج کی دنیا
نومبر ۱۹۵۰ء

نیا ہند
آج کی دنیا
نومبر ۱۹۵۰ء

نیا ہند
آج کی دنیا
نومبر ۱۹۵۰ء

نیا ہند
آج کی دنیا
نومبر ۱۹۵۰ء

نیا ہند
آج کی دنیا
نومبر ۱۹۵۰ء

نیا ہند
آج کی دنیا
نومبر ۱۹۵۰ء

نیا ہند
آج کی دنیا
نومبر ۱۹۵۰ء

نیا ہند
آج کی دنیا
نومبر ۱۹۵۰ء

نیا ہند
آج کی دنیا
نومبر ۱۹۵۰ء

نیا ہند
آج کی دنیا
نومبر ۱۹۵۰ء

نیا ہند
آج کی دنیا
نومبر ۱۹۵۰ء

نیا ہند
آج کی دنیا
نومبر ۱۹۵۰ء

یو۔ این۔ او۔ کی بڑی اسمبلی کے سامنے رکھ لی۔ یاد رہے کہ اریکا کے ماتحت ایک ریاست اور وہ ہر بات میں امریکا کی ہاں میں ہاں ملاتی ہے۔ وہ بھونپہ سے ہے۔

چونکہ سوچا ہندستان، پہلی جنوری ۱۹۷۲ء کے اعلان پر دستخط کرنے کے نالے ایلے سے ہی یونائیٹڈ نیشنس کا ممبر تھا اور دیگر وہ شین فرانسکو کانفرنس میں، جہاں کی یونائیٹڈ نیشنس کا سنگھڑ کی گیا تھا، موجود تھا اور چونکہ پاکستان اور انڈیا یوٹے ہندستان کو رضامندی سے بانٹنے کا نتیجہ ہیں، اس لئے اس کی کوئی ضرورت نہیں کہ یہ دونوں نئے ممبر کی حیثیت سے اس سنگھڑ میں شامل ہونے کی عرضی دیں جس کے کہ وہ ایلے سے ہی یقینی طور پر ممبر ہیں؛ اور اس لئے یہ بڑی اسمبلی اعلان کرتی ہے کہ پاکستان اور دہندہ انڈیا، یونائیٹڈ نیشنس کے ممبر ہیں۔“

اس تجویز کی چار باتوں کو دھیان میں رکھنے کی ضرورت ہے۔

(۱) یہ بالکل صاف ہے کہ پورا ہندستان ۱۹۷۲ء سے ہی جس حیثیت کے یونائیٹڈ نیشنس کا ممبر تھا اسی حیثیت سے اب بھی ممبر رہے گا۔ یو۔ این۔ او۔ کے سب کاموں کے لئے اب سے ”انڈیا“ پاکستان سمیت نکل ہندستان کے معنی ہیں گئے۔ انگریزوں کا ہندستانی سامراج!

(۲) ”پاکستان“ اور ”ہندو انڈیا“ انگریزی گورنمنٹ کے

نئی سرکاروں کو ادھکار دینے کا نتیجہ نہیں ہیں اور نہ

अँगरेजी राज को हटाकर खुद के क़ायम किये राज हैं बल्कि "इन्डिया" के रखामन्दी से किये गए बटवारे के नतीजे हैं. सिर्फ यह माना गया है कि हिन्दुस्तान में अँगरेजी साम्राज का बटवारा हुआ है और हर हिस्सा अँगरेजी साम्राज का ही हिस्सा है.

(३) क्यों कि ऐसा है इसलिये "पाकिस्तान" और "हिन्दू इन्डिया" नए मेम्बर की हैसियत से यू० एन० ओ० में शामिल होने की अर्जी न दें. वह तो हिन्दुस्तान में अँगरेजी साम्राज के नाते दो अलग अलग हिस्से होते हुए भी पहले से ही यू० एन० ओ० के मेम्बर हैं.

(४) यू० एन० ओ० ऐलान करता है कि "पाकिस्तान" और "हिन्दू इन्डिया" पहले के तरह ही उसी अँगरेजी साम्राज के मेम्बर हैं.

खयाली खुशी—

बाद में यू० एन० ओ० ने अरजेनटाइना की तजवीज को मंजूर करके पूरे हिन्दुस्तान में अँगरेजी राज बने रहने की गारंटी करदी. लेकिन इसे साम्राजवाद क़ायम करना नहीं कहा जाता बल्कि पाकिस्तान का यू० एन० ओ० में 'खुद व खुद बिना किसी मदद के दाखिल होना' (Automatic Admission) कहा जाता है. 'हिन्दू इन्डिया' के नुमाइन्दे श्रीमती पंडित और पाकिस्तान के नुमाइन्दे सर अफ़क़ुल्ला खाँ दोनों ने अपने आप को इस पर बधाई दी और दोनों बहुत खुश हुए. सिर्फ अफ़ग़ानिस्तान ही ऐसा निकला जिसने इस चीज को नापसन्द किया और अपनी खिलाफ़ राय सादिर की क्यों कि उसने अपनी सीमा के नजदीक बढ़ते

अँगरेजी राज को हटाकर खुद के क़ायम किये राज हैं बल्कि "इन्डिया" के रखामन्दी से किये गये बटवारे के नतीजे हैं. सिर्फ यह माना गया है कि हिन्दुस्तान में अँगरेजी साम्राज का बटवारा हुआ है और हर हिस्सा अँगरेजी साम्राज का ही हिस्सा है.

(३) क्यों कि ऐसा है इसलिये "पाकिस्तान" और "हिन्दू इन्डिया" नए मेम्बर की हैसियत से यू० एन० ओ० में शामिल होने की अर्जी न दें. वह तो हिन्दुस्तान में अँगरेजी साम्राज के नाते दो अलग अलग हिस्से होते गये कभी कभिले से ही यू० एन० ओ० के मेम्बर हैं.

(४) यू० एन० ओ० ऐलान करता है कि "पाकिस्तान" और "हिन्दू इन्डिया" कभिले की तरह ही उसी अँगरेजी साम्राज के मेम्बर हैं.

बद में यू० एन० ओ० ने अरजेनटाइना की तजवीज को मंजूर करके पूरे हिन्दुस्तान में अँगरेजी राज बने रहने की गारंटी करदी. लेकिन इस साम्राजवाद क़ायम करना नहीं कहा जाता बल्कि पाकिस्तान का यू० एन० ओ० में 'खुद खुद बनाकसी मदद के दाखल होना' (Automatic Admission) कहा जाता है. 'हिन्दू इन्डिया' के नुमाइन्दे श्रीमती पंडित और पाकिस्तान के नुमाइन्दे सर अफ़क़ुल्ला खाँ दोनों ने अपने आप को इस पर बधाई दी और दोनों बहुत खुश हुए. सिर्फ अफ़ग़ानिस्तान ही ऐसा निकला जिसने इस चीज को नापसन्द किया और अपनी खिलाफ़ राय सादिर की. क्योंकि उसने अपनी सीमा के नजदीक बढ़ते

हुए ब्रिटिश साम्राजवाद के खतरे को महसूस कर लिया.

यह मार्क की बात है कि "हिन्दू इन्दिया" और पाकिस्तान दोनों सरकारों ने अपने अपने नुमाइन्दे श्रामती पंडित और सर अफरुल्ला को इस बात की हिदायत नहीं दी कि वह यू० एन० ओ० की मेम्बरी के सवाल को तब तक के लिये मंजूर कर दें जब तक कि इन्दिया और पाकिस्तान नए सिरे से अपनी मेम्बरी के लिये दरखास्त न दें. इन्दिया और पाकिस्तान दोनों को यह चाहिये था कि वह, अँगरेजी साम्राज को हटाने वाली नई आजाद हकूमतों की हैसियत से अलग अलग यू० एन० ओ० की मेम्बरी के लिये दरखास्त देते. यह तभी मुमकिन था जब कि बर्तोनिया इन्दिया और पाकिस्तान की सरकारों को बाकायदा तारत सौंप देता. अब तो यही उम्मीद बाक़ी रह गई है कि रूस हमारी इस आजाद हैसियत को मान ले.

यू० एन० ओ० की बड़ी असेम्बली में यूनाइटेड किंगडम की तरफ से सर हार्टले शाकास ने यह माँग पेश की थी कि पाकिस्तान को नए मेम्बर की हैसियत से दाखिल कर लिया जाय और इन्दिया को, जो पहले से ही मेम्बर है, मेम्बर रहने दिया जाए. पर इस बात पर जोर नहीं दिया गया. अगर इस पर जोर दिया जाता तो इसके यह माने हो जाते कि यू० एन० ओ० ने इस बात को मान लिया कि बर्तोनिया ने हिन्दुस्तान के सिर्फ उस हिस्से को आजाद कर दिया है जिसका नाम पाकिस्तान है. यानी हिन्दुस्तान में अँगरेजी साम्राज की जगह पर या उसके किसी टुकड़े के बदले आजाद पाकिस्तान कायम किया गया है और इन्दिया को

होने ब्रिटिश साम्राज वाद के खतरے کو محسوس کر لیا۔

یہ مارک کی بات ہے کہ "ہندو انڈیا" اور پاکستان دونوں برطانوی نے اپنے اپنے نمائندے شرمیتی پنڈت اور سرافر اللہ کو اس بات کی ہدایت نہیں دی کہ وہ یو۔ این۔ او کی ممبری کے سوال کو تب تک کے لئے منسوخ کر دیں جب تک کہ انڈیا اور پاکستان نئے نئے سے اپنی ممبری کے لئے درخواست نہ دیں۔ انڈیا اور پاکستان دونوں کو یہ چاہئے کہ وہ 'انگریزی سامراج کو ہٹانے والی نئی آزاد حکومتوں کی حیثیت سے الگ الگ یو۔ این۔ او۔ کی ممبری کے لئے درخواست دیتے۔ یہ بھی ممکن تھا جب کہ برطانیہ انڈیا اور پاکستان کی سرکاموں کو باقاعدہ طاقت سونپ دیتا۔ اب تو نئی امید باقی رہ گئی ہے کہ رول ہاربی اس آزاد حیثیت کو مان لے۔ یو۔ این۔ او۔ کی بڑی اسمبلی میں یونائیٹڈ کنگڈم کی طرف سے سرا پارٹلے نے یہ مانگ پیش کی تھی کہ پاکستان کو نئے ممبر کی حیثیت سے داخل کر لیا جائے اور انڈیا کو، جو پہلے سے ہی ممبر ہے، ممبر رہنے دیا جائے۔

پھر اس بات پر زور نہیں دیا گیا۔ اگر اس پر زور دیا جاتا تو اس کے یہ معنی ہو جاتے کہ یو۔ این۔ او۔ نے اس بات کو مان لیا کہ برطانیہ نے ہندستان کے صرف اس حصے کو آزاد کر دیا ہے جس کا نام پاکستان ہے۔ یعنی ہندوستان میں انگریزی سامراج کی جگہ پر یا اس کے کسی ٹکڑے کے بدلے آزاد پاکستان قائم کیا گیا ہے اور انڈیا کی

मुस्ताकिल मेम्बरी के रूप में अंगरेजी राज अभी मौजूद है. पर जब वोट लिये गए तो सर हाटले ने अपनी तजवीज की परवाह न करके अरजेनटाइना की तजवीज के हक में ही राय दी और पाकिस्तान को यह भी मौका नहीं दिया कि वह उनका शुक्रिया अदा कर सके.

अब जो हालत है वह श्री एस० लाल ने तसलीम करली है. श्री एस० लाल यूनाइटेड नेशन्स की कानूनी कमेटी में इन्दिया के नुमाइन्दे हैं. इस कानूनी कमेटी ने इस बारे में अपना फैसला श्री एस० लाल के कहने के मुताबिक किया है. श्री लाल ने और बातों के अलावा यह कहा कि—

“हिन्दुस्तान के अब पूरी तरह आजाद हकूमत होने के बावजूद हिन्दुस्तान की अन्तरराष्ट्रीय अहमियत में, जो उसने तीस साल पहले लीग आफ नेशन्स में दाखिल होने पर हासिल की थी, बरा भी फरक नहीं आया है.”

वर्तानिया और अमरीका ने श्री एस० लाल के इस एलान का समर्थन किया कि हिन्दुस्तान पूरी तरह आजाद तो हो गया है मगर उसकी अन्तरराष्ट्रीय अहमियत में कोई फरक नह हुआ है!!

खुशी की हद हो गई!

नासन्द
 مستقل मेम्बरी के रूप में अंगरेजी राज अभी मौजूद है.
 प्रिडब वोट लिये गए तो सर हाटले ने अपनी तजवीज की
 प्रिडवाह न करके अरजेनटाइना की तजवीज के हक में ही राय दी
 लन्द याकस्तान को यह भी मौका नहीं दिया कि वह उनका शुक्रिया
 अदा कर सके.

अब जो हालत है वह श्री एस० लाल ने तसलीम करली है.
 श्री एस० लाल यूनाइटेड नेशन्स की कानूनी कमेटी में इन्दिया के
 नुमाइन्दे हैं. इस कानूनी कमेटी ने इस बारे में अपना फैसला
 श्री एस० लाल के कहने के मुताबिक किया है. श्री लाल ने
 और बातों के अलावा यह कहा कि—

“हिन्दुस्तान के अब पूरी तरह आजाद हकूमत होने के
 बावजूद हिन्दुस्तान की अन्तरराष्ट्रीय अहमियत में, जो उसने
 तीस साल पहले लीग आफ नेशन्स में दाखिल होने पर हासिल
 की थी, बरा भी फरक नहीं आया है.”

वर्तानिया और अमरीका ने श्री एस० लाल के इस एलान
 का समर्थन किया कि हिन्दुस्तान पूरी तरह आजाद तो हो गया है
 मगर उसकी अन्तरराष्ट्रीय अहमियत में कोई फरक नह
 हुआ है!!

खुशी की हद होगी!

साम्राजि गुटबन्दी—

एंग्लो अमरीकन साम्राजवादी ढाकू आज कल इस बात की बड़े जोरों से कोशिश कर रहे हैं कि जर्मनी के एंग्लो अमरीकन और फ्रेन्च इलाकों में नाखी जर्मनी को फिर से उठा कर उसे पूरी तरह ताकतवर बना दिया जाए. जर्मनी को योरप में, रूस को छोड़ कर, सबसे बड़ी ताकत बनाने की तय्यारियाँ हो रही हैं. आचेन व रूस में जंगी सामान के कारखाने और कौलाद व कोयले के फर्म कायम किये जा रहे हैं.

यह बातें उस 'छिपी चिट्ठी' से जाहिर होती हैं जो पेरिस में होने वाली सोलह देशों की 'माली कानफरेन्स' में भेजी गई है. इस कानफरेन्स का मकसद मारशल प्लैन को सफल बनाना है. ऐसा मालूम होता है कि पेरिस कानफरेन्स ने जर्मनी के अमरीकी इलाके के गवरनर, जेनरल क्ले और ब्रिटिश इलाके के कमान्डर-इन-चीफ सर राबर्टसन से पूछा था कि जर्मनी के एंग्लो अमरीकन इलाके को फिर से ताकतवर बनाने के लिये कितने कितने चीजों की थीर कितनी तादाद में जरूरत होगी. जो छिपी चिट्ठी भेजी गई है वह इन्हीं दो जनरलों के जवाब की शकल में है. उस चिट्ठी पर राबर्टसन के दस्तखत हैं. जनरल क्ले उससे पूरी तरह हमराय है पर उनके दस्तखत उस पर नहीं हैं क्योंकि पेरिस में होने वाली सोलह देशों की कानफरेन्स में अमरीका हिस्सा नहीं ले रहा था. अमरीका ने इस कानफरेन्स में इसलिये हिस्सा नहीं लिया जिससे कि यह मालूम हो कि मारशल प्लैन को सफल

साम्राजि गुटबन्दी—

अइंग्लो अरिगिन साम्राज वादी डाको आक कल इस बात की बड़े जददों से कुशुश कर रहे हैं कि जर्मनी के अइंग्लो अरिगिन और फ्रेन्च एलकों में नारी जर्मनी को बहर से 'अइंग्लो अरिगिन' से उठा कर उसे पूरी तरह ताकतवर बना दिया जाये. जर्मनी को योरप में, रूस को बहोठोठो सब से बड़ी ताकत बनाने की तयारियाँ हो रही हैं. अइगिन व रूस में जंगी सामान के कारखाने और फुलाद व कुन्के के जर्म कालिम कले जा रहे हैं. ये बातें इस 'छिपी चिट्ठी' से ظاهر होती हैं जो पेरिस में होने वाली सोलह देशों की माली कानफरेन्स में किये गयीं हैं. इस कानफरेन्स का मकसद मारशल प्लिन को सफल बनाना है. ऐसा मालूम होता है कि पेरिस कानफरेन्स ने जर्मनी के अइंग्लो अरिगिन इलाके के गवरनर, जेनरल क्ले और ब्रिटिश एलके के कमान्डर-इन-चीफ सर राबर्टसन से पूछा क्त्ता कि जर्मनी के अइंग्लो अरिगिन इलाके को बहर से ताकतवर बनाने के लै कुन कुन चीजों की ओर कुन्ती कुन्ती जरूरत होगी. जो छिपी चिट्ठी भेजी गयी है वह इन्हीं दो जेनरलों के जवाब की शकल में है. उस चिट्ठी पर राबर्टसन के दख्तखत हैं. जेनरल क्ले इस से पूरी तरह हमराय हैं पर उनके दख्तखत उस पर नहीं हैं किनुके पेरिस में होने वाली सोलह देशों की कानफरेन्स में अरिका हिस्से नहिन ले सक्त्ता. अरिका ने इस कानफरेन्स में इस लै हिस्से नहिन लिया जिस से कि ये मालूम होकर मारशल प्लिन को कखल

बनाने के लिये जो जो तरकीबों की जा रही हैं उनसे अमरीका का कोई ताल्लुक नहीं है. इस दस्तावेज के मुताबिक जरमनी को चार साल में फिर से ताकतवर बनाया जा सकता है.

उसी चिट्ठी में यह सुझाया गया है कि जर्मनी के एंग्लो अमरीकी इलाक़े में फौलाद की पैदावार बढ़ाई जावे. सन् १९४७ में यह पैदावार सत्ताइस लाख पचास हजार टन होगी. अब यह तजवीज है कि सन् १९५१ तक इसको बढ़ाकर एक करोड़ टन कर लिया जावे. तब रूस को छोड़ कर बाक़ी सारे योरप में फौलाद की पैदावार जरमनी में सबसे ज्यादा होगी. कोयले की पैदावार भी बढ़ाई जाएगी. सन् १९४६ में यह पाँच करोड़ तरेपन लाख टन था. सन् १९५१ तक इसे बढ़ा कर बारह करोड़ दस लाख टन कर लिया जायगा. उसी चिट्ठी में बताया गया है कि इन चार बरस में जरमनी को अमरीका हर तरह की माली मदद दे. ऐसा अन्दाजा लगाया गया है कि लाने और खेतों के सम्बन्ध में अमरीका नीचे लिखे हुए हिसाब से जरमनी की मदद करेगा—

- १९४७-४८ में अठहत्तर करोड़ बीस लाख डालर
- १९४८-४९ " " सत्तासी करोड़ पचास लाख डालर
- १९४८-५० " " एक अरब एक करोड़ पचास लाख डालर
- १९५०-५१ " " एक अरब अट्ठारह करोड़ साठ लाख डालर

जरमनी को फिर से उठाने के लिये जो यह तजवीजों की जा रही हैं वह आसान नहीं हैं. इन तजवीजों को काम में लाने के लिये न सिर्फ़ उन सोलह देशों के जोरदार सहयोग की जरूरत है बल्कि तमाम दूसरी बड़ी और छोटी ताकतों की दिली रजामन्दी

नियामतें के लिये जो जो तरकीबों की जा रही हैं उनसे अमरीका का कोई ताल्लुक नहीं है. इस दस्तावेज के मुताबिक जरमनी को चार साल में फिर से ताकतवर बनाया जा सकता है.

उसी चिट्ठी में यह सुझाया गया है कि जर्मनी के अंग्लो अमरीकी इलाक़े में फौलाद की पैदावार बढ़ाई जावे. सन् १९४७ में यह पैदावार सत्ताइस लाख पचास हजार टन होगी. अब यह पैदावार बढ़ाई जाएगी. सन् १९५१ तक इसको बढ़ाकर एक करोड़ टन होगी. कोयले की पैदावार भी बढ़ाई जाएगी. सन् १९४६ में यह पाँच करोड़ तरेपन लाख टन था. सन् १९५१ तक इसे बढ़ा कर बारह करोड़ दस लाख टन कर लिया जायगा. उसी चिट्ठी में बताया गया है कि इन चार बरस में जरमनी को अमरीका हर तरह की माली मदद दे. ऐसा अन्दाजा लगाया गया है कि लाने और खेतों के सम्बन्ध में अमरीका नीचे लिखे हुए हिसाब से जरमनी की मदद करेगा—

- अष्ट करोड़ बीस लाख डालर १९४७-४८ में
- सत्तासी करोड़ बीस लाख डालर " १९४८-४९
- एक अरब एक करोड़ पचास लाख डालर " १९४९-५०
- एक अरब अठ्ठारह करोड़ साठ लाख डालर " १९५०-५१

जरमनी को फिर से उठाने के लिये जो यह तजवीजों की जा रही हैं वह आसान नहीं हैं. इन तजवीजों को काम में लाने के लिये न सिर्फ़ उन सोलह देशों के जोरदार सहयोग की जरूरत है बल्कि तमाम दूसरी बड़ी और चھوटी ताकतों की दली रजामन्दी

की भी ज़रूरत है. ताक़तवर नाज़ी जर्मनी के ख़याल से फ़्रांस अग्नी से डरता है और वर्तानिया भी जल्दी या देर में इस ख़तरे को महसूस कर लेगा. हालाँकि इस वक़्त, वर्तानिया और फ़्रांस दोनों जर्मनी को फिर से उठाने की अमरीकी तजवीज़ का साथ दे रहे हैं. एंग्लो अमरीकन साम्राज्यवादी डाकू इस तजवीज़ को ख़ास तौर से पूरबी योरप के मुल्कों और रूस पर लादना चाहते हैं.

चोर अदालत की तयारियाँ—

एंग्लो अमरीकन साम्राज्यवादी डाकू अपनी तजवीज़ों को दुनिया के हर एक देश पर लादने की तरकीबें किया करते हैं यानी सारी दुनिया पर अपना सिक्का जमाना, नाज़ी जर्मनी और तानाशाह जापान को फिर से उठाना और बढ़ाना और फिर रूस पर चढ़ाई करके उसे बरबाद करने के लिये यू० एन० ओ० को सिक्योरिटी काउन्सिल के ऊपर एक अलग कमेटी बनाना वगैरह. इस तरह की एक कमेटी बनाने की तजवीज़ अमरीका के सेक्रेटरी आफ़ स्टेट जार्ज मारशल ने बनाई है. ऐसी कमेटी बनाना यू० एन० ओ० चार्टर के बिल्कुल खिलाफ़ है. पहले इस कमेटी को 'अमन और हिफ़ायत की बिच वक़्ती कमेटी' कहा गया. अब इसे सिर्फ़ 'बिचवक़्ती कमेटी' (Interim committee) कहा जाता है.

सिक्योरिटी काउन्सिल तो किसी काम को करने के लिये 'सबके एक राय होने' के असूल से बँधी है पर 'बिचवक़्ती कमेटी' के

की भी ज़रूरत है. ताक़तवर नाज़ी जर्मनी के ख़याल से फ़्रांस अभी से डरता है और ब्रिटानिया भी जल्दी या देर में इस ख़तरे को महसूस करेगा. हालाँकि इस वक़्त ब्रिटानिया और फ़्रांस दोनों जर्मनी को फिर से उठाने की अमरीकी तजवीज़ का साथ दे रहे हैं. एंग्लो अमरीकन साम्राज्यवादी डाकू इस तजवीज़ को ख़ास तौर से पूरबी योरप के मुल्कों और रूस पर लादना चाहते हैं.

चोर अदालत की तयारियाँ—

एंग्लो अमरीकन साम्राज्यवादी डाकू अपनी तजवीज़ों को दुनिया के हर एक देश पर लादने की तरकीबें किया करते हैं यानी सारी दुनिया पर अपना सिक्का जमाना, नाज़ी जर्मनी और दोसरे राष्ट्रवादी राष्ट्रों को फिर से उठाना और बढ़ाना और फिर रूस पर चढ़ाई करके उसे बरबाद करने के लिये यू० एन० ओ० की सिक्योरिटी काउन्सिल के ऊपर एक अलग कमेटी बनाना वगैरह. इस तरह की एक कमेटी बनाने की तजवीज़ अमरीका के सेक्रेटरी आफ़ स्टेट जार्ज मारशल ने बनाई है. ऐसी कमेटी बनाना यू० एन० ओ० चार्टर के बिल्कुल खिलाफ़ है. पहले इस कमेटी को 'अमन और हिफ़ायत की बिच वक़्ती कमेटी' कहा गया. अब इसे सिर्फ़ 'बिच वक़्ती कमेटी' (Interim committee) कहा जाता है.

सिक्योरिटी काउन्सिल तो किसी काम को करने के लिये 'सबके एक राय होने' के असूल से बँधी है पर 'बिच वक़्ती कमेटी' के

लिये ऐसी कोई रोक न रहेगा. ऐसी तजवीज हो रही है कि अभी इस कमेटी को एक साल के लिये कायम किया जाए और फिर बाद में उसे मुस्तकिल कर दिया जाए. बुराई इस चीज में इतनी नहीं है कि सब देशों को इस कमेटी को तय की हुई बातों को मानना ही पड़ेगा बल्कि बुराई इस बात में है कि सब तय की हुई बातें ऐसी होंगी जिसका वजह से अङ्गरेज और अमरीका वालों के डाके मारने जायज समझे जा सकें.

अङ्गरेजी और अमरीकी अखबारी दुनिया के भले मानस लम्बी लम्बी जीम निकाल कर एक तरफ तो यह साबित करना चाहते हैं कि सब एक राय यानी सर्वसम्मति ही का दूसरा नाम 'वीटो पावर' है और दूसरी तरफ 'वीटो पावर' को बुरा कह कर उसे हटाना भी चाहते हैं. असल में वीटो पावर ही एक ऐसा असूल है जिससे सिक्योरिटी काउन्सिल में ठीक ठीक इनसाफ हो सकता है, वही ताकत बेलग रह सकता है और बड़ी ताकतों में एका भी बना रह सकता है. यही असूल यू० एन० ओ० को किसी बड़ी ताकत या किसी ताकतों की जमात का हथियार बनने से रोकता है. यू० एन० ओ० के चार्टर के मुताबिक ऐसे सब सवालों का फ़ैसला, जिनका सम्बन्ध अमन कायम रखने से है या जिनका ताल्लुक पाँच बड़ी ताकतों से है, सिक्योरिटी काउन्सिल के जरिये सबकी रजामन्दी से होना चाहिये.

कामरेड मोलोटोव ने पिछले साल सितम्बर में कहा था कि 'यह वीटो का असूल ऐसी हालत पैदा होने से रोकता है जब कि दो, तीन या चार ताकतें भी आपस में मिल कर किसी एक पर या

के लिये ऐसी कौन रोक न रहेगी. ऐसी बचोत्र हो ही है कि अभी इस कमेटी को एक साल के लिये कायम किया जायें और फिर बाद में उसे मुस्तकिल कर दिया जायें. बुराई इस चीज में इतनी नहीं है कि सब देशों को इस कमेटी को तय की हुई बातों को मानना ही पड़ेगा बल्कि बुराई इस बात में है कि सब तय की हुई बातें ऐसी होंगी जिसकी वजह से अङ्गरेज और अमरीका वालों के डाके मारने जायज समझे जा सकें.

अङ्गरेजी और अमरीकी अखबारी दुनिया के भले मानस लम्बी लम्बी जीम निकाल कर एक तरफ तो यह साबित करना चाहते हैं कि सब एक राय यानी सर्वसम्मति ही का दूसरा नाम 'वीटो पावर' है और दूसरी तरफ 'वीटो पावर' को बुरा कह कर उसे हटाना भी चाहते हैं. असल में वीटो पावर ही एक ऐसा असूल है जिससे सिक्योरिटी काउन्सिल में ठीक ठीक इनसाफ हो सकता है, वही ताकत बेलग रह सकता है और बड़ी ताकतों में एका भी बना रह सकता है. यही असूल यू० एन० ओ० को किसी बड़ी ताकत या किसी ताकतों की जमात का हथियार बनने से रोकता है. यू० एन० ओ० के चार्टर के मुताबिक ऐसे सब सवालों का फ़ैसला, जिनका सम्बन्ध अमन कायम रखने से है या जिनका ताल्लुक पाँच बड़ी ताकतों से है, सिक्योरिटी काउन्सिल के जरिये सबकी रजामन्दी से होना चाहिये.

कामरेड मोलोटोव ने पिछले साल सितम्बर में कहा था कि 'यह वीटो का असूल ऐसी हालत पैदा होने से रोकता है जब कि दो, तीन या चार ताकतें भी आपस में मिल कर किसी एक पर या

एक नई चोरों की अदालत' बनाने से बह इन्हें नहीं रोक सकता. आइये अब हम देखें कि सारी दुनिया को अपने पंजे में जकड़ने की इनकी (एंग्लो अमरीका की) इस नापाक कोशिश में हिन्दुस्तान का क्या हिस्सा है.

इन्दिया के नुमाइन्दे श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ने इस बारे में जो रुख अखिलतयार किया है उससे साफ जाहिर है कि हिन्दुस्तान अँगरेजी साम्राजशाही का महज एक दुमखला है. इस सिलसिले में ब्राडकास्ट करते हुए श्रीमती पंडित ने कहा है कि "मैं यह महसूस करती हूँ कि अपने अन्दर के तमाम भगडों के बावजूद यूनाइटेड नेशन्स ठाँक रास्ते पर जा रहा है."

यह तो बिलकुल यही कहना हुआ कि "रूस के तमाम विरोध के बावजूद यू० एन० ओ० ठीक रास्ते पर जा रहा है. रूस की कुछ परवाह न करो." यू. एन. ओ. की बड़ी असेम्बली में १९ सितम्बर को श्रीमती पंडित ने खुद कहा—"इस 'वीटो पावर' का बेक़ायदा इस्तेमाल उतना ही बेजा है जितना कि किसी भी ताकत का ग़लत इस्तेमाल करना." दूसर लफ्जों में बड़ी बड़ी ताकतों के बीच लाचमी एकता बेजा है—उन्हें अपने फ़ायदे के लिये अलग अलग पाटियों में बटने दो ! श्रीमती पंडित ने कहा कि—"हम शान्ति बनाए रखना चाहते हैं. हम अपनी सारी ताकत उन कार्यों को हटा देने में लगा देंगे जिनकी वजह से लड़ाइयाँ होती हैं. जो मुल्क इस मक़सद को सामने रख कर काम करेंगे उनसे हम पूरी तरह सहयोग करेंगे.....अगर हम इस भावना से यू० एन० ओ० चार्टर पर अमल करने के लिये तय्यार नहीं हैं तो

नया है. एक नयी चोरों की अदालत' बनाने से वे अख़्तियार नहीं रोक सकता. आइये अब हम देखें कि सारी दुनिया को अपने पंजे में जकड़ने की इनकी (अँग्लो अमरीका की) इस नापाक कोशिश में हिन्दुस्तान का क्या हिस्सा है.

इन्दिया के नुमाइन्दे श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ने इस बारे में जो अख़्तियार किया है उस से साफ़ ظाहिर है कि हिन्दुस्तान अँगरेजी साम्राज शाही का मख़्तयार एक दुमख़ला है. इस सिले में ब्राडकास्ट करते हुये श्रीमती पंडित ने कहा है कि "मैं ये मख़सूस करती हूँ कि अपने अन्द के तमाम मख़सूलों के बावजूद यूनाइटेड नेशन्स अख़्तियार रास्ते पर जा रहा है."

ये तो बालक़ल भी कना हवा कि "रुस के तमाम दरुदुद के बावजूद यू. एन. ओ. मख़्तियार रास्ते पर जा रहा है. रुस की कख़्तियार बुरदा नकरुद." यू. एन. ओ. की बुरी अख़्तियार में १९ सख़्तर को श्रीमती पंडित ने खुद कहा—"इस 'वोटो पावर' का बेक़ायदा इस्तेमाल उतना ही बे जा है जितना कि किसी बख़्तियार ताकत का मख़्तयार इस्तेमाल करना." दुसरे लफ़्जों में बुरी बुरी ताकतों के बीच लाचमी अख़्तियार बे जा है—अख़्तियार अख़्तियार के कना कना—अब अख़्तियार अख़्तियार में बख़्तियार अख़्तियार ने कहा कि—"हम शान्ति बनाए रखना चाहते हैं. हम अपनी सारी ताकत उन कार्यों को हटा देने में लगा देंगे जिनकी वजह से लड़ाइयाँ होती हैं. जो मुल्क इस मक़सद को सामने रख कर काम करेंगे उन से हम पूरी तरह सहयोग करेंगे.....अगर हम इस भावना से यू. एन. ओ. चार्टर पर अमल करने के लिये तय्यार नहीं हैं तो

नया हिन्द आज की दुनिया नवम्बर सन् ४७
 सुके डर है कि किसी शब्द का इधर से उधर बदलना या किसी
 क्रायदे का घटाना या बढ़ाना.....

साफ जाहिर है कि इन्दिया के नुमाइन्दे को यू० एन० ओ०
 चार्टर की कानूनी अहमियत से कोई दिलचस्पी नहीं है. उन्हेंने
 यह सावित कर दिया कि यू० एन० ओ० चार्टर में बदलाव किया
 जा सकता है और अगर इस तरह का कोई बदलाव किया गया
 तो वह उसका समर्थन करेंगी और इस बारे में दूसरे से सहयोग
 करेंगी क्यों कि उनके खयाल में ऐसा करने से अमन क्रायम रहेगा.
 अब फैसला यह करना है कि क्या वर्तानिया और अमरीका का
 यू० एन० ओ० सिक्योरिटी काउन्सिल को हटा कर उसकी
 जगह खुद अपनी 'चोरों की अदालत' क्रायम करना और इस
 तरह सारी दुनिया को अपने पंजे में जकड़ना, श्रीमती पंडित के
 खयाल से, दुनिया में अमन क्रायम करने में मदद देगा? श्रीमती
 पंडित ने इस तरह से कहा तो नहीं पर उन्हेंने 'वोटोपावर' के
 बेकायदा इस्तेमाल की कड़ी निन्दा की और जब वोट देने का
 बक्त आया तो उन्हेंने एंग्लो अमरीकन साम्राजवादी डाकुओं की
 तरफ वोट दिया.

श्रीमती पंडित को विश्वास है कि इस तरह दुनिया में अमन
 क्रायम रहेगा! उन्हेंने चिराम लेकर सूरज को ढूँढने की कोशिश
 की और आखिर उसे पालिया!

याहस्त
 गे डूर हो कि किसी शब्द का अदर से अदर बदलना या किसी
 क्रायदे का घटाना या बढ़ाना.....
 वक्त खल्ले हो कि अदर के नुमाइन्दे को यू० एन० ओ०
 चार्टर की कानूनी अहमियत से कोई दिलचस्पी नहीं है. उन्हेंने
 यह सावित कर दिया कि यू० एन० ओ० चार्टर में बदलाव किया जा सकता
 है और अगर इस तरह का कोई बदलाव किया गया तो वह दूसरे से सहयोग
 करेंगी क्यों कि उनके खयाल में ऐसा करने से अमन क्रायम रहेगा.
 अब फैसला यह करना है कि क्या वर्तानिया और अमरीका का
 यू० एन० ओ० सिक्योरिटी काउन्सिल को हटा कर उसकी
 जगह खुद अपनी 'चोरों की अदालत' क्रायम करना और इस
 तरह सारी दुनिया को अपने पंजे में जकड़ना, श्रीमती पंडित के
 खयाल से, दुनिया में अमन क्रायम करने में मदद देगा? श्रीमती
 पंडित ने इस तरह से कहा तो नहीं पर उन्हेंने 'वोटोपावर' के
 बेकायदा इस्तेमाल की कड़ी निन्दा की और जब वोट देने का
 बक्त आया तो उन्हेंने एंग्लो अमरीकन साम्राजवादी डाकुओं की
 तरफ वोट दिया.

श्रीमती पंडित को विश्वास है कि इस तरह दुनिया में अमन
 क्रायम रहेगा! उन्हेंने चिराम लेकर सूरज को ढूँढने की कोशिश
 की और आखिर उसे पालिया!

खटपट लाल—

यह किताब बच्चों के लिये लिखी गई है. लिखने वाले हैं सुदर्शन जी. इसमें बारह कहानियां हैं. बच्चे इसको जरूर मन लगाकर पढ़ेंगे क्योंकि बोली इसकी वही है जो बोल चाल में है. और यह उस तरह लिखी गई है मानो नानी कहानी कह रही है और कोई बैठ जायों का त्यों उसको लिख रहा है.

यह ६४ सफे की किताब है. दाम डेढ़ रुपए. लिखावट नागरी. मिलने का पता—हिन्द किताब लिमिटेड २६१—२६३ हार्नबी रोड, बम्बई.

नोआखाली में— लिखने वाले श्री सियाराम शरण गुप्त, सके १२, श्रीमत आठ आने, लिखावट नागरी. पता—साहित्य-सदन, चिरगाँव (माँसी)

इस किताब के लिखने वाले श्री सियाराम शरण जी गुप्त हिन्दुस्तान के मशहूर कवि हैं. नोआखाली के दर्दनाक कान्ठों से गुप्त जी को बहुत दुख हुआ. जैसा कि आपने इस किताब में "दो शब्द" में लिखा है, आपकी भी तबियत नोआखाली जाने की थी मगर तन्दुरुस्ती ठीक न होने की वजह से लाचार थे. उसी समय आपने यू. पी. के तालीम के महकमें के मिनिस्टर श्री सम्पूर्णानन्द जी का नोआखाली के ऊपर एक लेखर सुना. इसी बुनियाद पर आपने अपने खयालातों को इस किताब की शकल दी. किताब कविताओं (नवमों) में लिखी है.

इसमें कुछ ग्यारह कविताएँ हैं. कुछ कविताएँ तो इतनी जानदार और बोलती हुई हैं कि उन्हे पढ़ कर नोआखाली के नजारे आँखों के सामने नाच उठते हैं.

नया हस्त
कुछ किताबें
नोब्रस

कहलूथ बिथ लाल—

किताब बच्चों के लिये लिखी गयी है. लिखने वाले हैं सुदर्शन जी. इस में बारह कहानियां हैं. बच्चों को जरूर मन लगाकर पढ़ेंगे किونकि बोली इस की वही है जो बोल चाल में है. और ये इस तरह लिखी गयी है मानो नानी कहानी कह रही है और कौन बच्चा बच्चों का त्यों उसको लिख रहा है.

ये १२ सफे की किताब है. दाम डेढ़ रुपए. लिखावट नागरी. लिखने वाले हैं सुदर्शन जी. लिखने वाले हैं सुदर्शन जी. लिखने वाले हैं सुदर्शन जी.

नोआखाली में— लिखने वाले श्री सियाराम शरण गुप्त, सके १२, श्रीमत आठ आने, लिखावट नागरी. पता—साहित्य-सदन, चिरगाँव (माँसी)

इस किताब के लिखने वाले श्री सियाराम शरण जी गुप्त हिन्दुस्तान के मशहूर कवि हैं. नोआखाली के दर्दनाक कान्ठों से गुप्त जी को बहुत दुख हुआ. जैसा कि आपने इस किताब में "दो शब्द" में लिखा है, आपकी भी तबियत नोआखाली जाने की थी मगर तन्दुरुस्ती ठीक न होने की वजह से लाचार थे. उसी समय आपने यू. पी. के तालीम के मिनिस्टर श्री सम्पूर्णानन्द जी का नोआखाली के ऊपर एक लेखर सुना. इसी बुनियाद पर आपने अपने खयालातों को इस किताब की शकल दी. किताब कविताओं (नवमों) में लिखी है.

इसमें कुछ ग्यारह कविताएँ हैं. कुछ कविताएँ तो इतनी जानदार और बोलती हुई हैं कि उन्हे पढ़ कर नोआखाली के नजारे आँखों के सामने नाच उठते हैं.

किताब के शुरु में ही लेखक के बड़े भाई भारत के महान कवि श्री मैथिली शरण गुप्त को एक कविता है जिसका एक बन्द यहाँ दिया जाता है—

सुख से रहना है तो सबको, मिल जुल कर रहना होगा.
हमें तुम्हारा, तुम्हें हमारा, दुख स्वयं सहना होगा.
सदा शान्ति से सुनना होगा, संयम से कहना होगा.
बन्धु-मिलन के गले उलहना, एक बड़ा गहना होगा.
किताब में "रमजानी" नाम की कविता बहुत अच्छी है.

बेचारे बूढ़े रमजानी मियाँ सारा दिन हिन्दू मुसलमान बच्चों में घुल मिल कर बच्चों का जी बहलाते थे मगर आपस को फूट और नफरत की वजह से हिन्दू बच्चे उनसे कटे कटे फिरने लगे और गांव के हिन्दू उन पर शक करने लगे. रमजानी अकेले पड़े गए और इसका उन्हें बड़ा दुख हुआ. "पाक—कलाम" नाम की कविता में फौज की रखवाली में गांधी जी का 'नोआखाली सऊर' को सुन कर बूढ़े कासिम को बड़ा दुख होता है और वह अपने बेटे से कहता है—

बेटा कह अपने बजीर से

गांधी की रखवाली में,

गीरत है जो भेज रहे हो

फौजी नोआखाली में,

फौज बड़ी या दीन बड़ा है ?

फौजें करती हैं बदनाम

तुम्हें भेजना ही हो कुछ तो

भेजो अपना पाक-कलाम.

नया है—
कुछ कथायें
नोबल पुरस्कार

किताब के शुरु में ही लिक्क के बड़े बहाने बहानों के ममान की शरीर मच्छली शरीर गीत की एक कविता जो इस का एक बन्द दिया जाता है—
कुछ से देना हो तो सब को, भूल भूल कर देना होगा.

हैं मच्छला, मच्छलें हमारा, कुंहे सुक सुक देना होगा.

सदा शान्ति से सुनना होगा, सुनना होगा.

बंदूक—भूल के कुंहे देना, एक बड़ा देना होगा.

किताब में "रमजानी" नाम की कविता बहुत अच्छी है. बिजारे बूढ़े

रमजानी मियाँ सारा दिन हिन्दू मुसलमान बच्चों में घुल मिल कर बच्चों की मच्छली शरीर गीत की एक कविता जो इस का एक बन्द दिया जाता है—
कुछ से देना हो तो सब को, भूल भूल कर देना होगा.

हैं मच्छला, मच्छलें हमारा, कुंहे सुक सुक देना होगा.
सदा शान्ति से सुनना होगा, सुनना होगा.
बंदूक—भूल के कुंहे देना, एक बड़ा देना होगा.

किताब में "रमजानी" नाम की कविता बहुत अच्छी है.

रमजानी मियाँ सारा दिन हिन्दू मुसलमान बच्चों में घुल मिल कर बच्चों की मच्छली शरीर गीत की एक कविता जो इस का एक बन्द दिया जाता है—

कुछ से देना हो तो सब को, भूल भूल कर देना होगा.

हैं मच्छला, मच्छलें हमारा, कुंहे सुक सुक देना होगा.

सदा शान्ति से सुनना होगा, सुनना होगा.

बंदूक—भूल के कुंहे देना, एक बड़ा देना होगा.

किताब में "रमजानी" नाम की कविता बहुत अच्छी है.

रमजानी मियाँ सारा दिन हिन्दू मुसलमान बच्चों में घुल मिल कर बच्चों की मच्छली शरीर गीत की एक कविता जो इस का एक बन्द दिया जाता है—

कुछ से देना हो तो सब को, भूल भूल कर देना होगा.

हैं मच्छला, मच्छलें हमारा, कुंहे सुक सुक देना होगा.

नोआखाली का जवाब बिहार वालों ने दिया. उसी पर इशारा करते हुए "बिहार के प्रति" नाम की कविता में लिखा है— "अनल अनल से, बैर बैर से बुभता नहीं कदापि." सच है आग से आग नहीं बुझती, दुशमनी से दुशमनी नहीं मिटती. "नोआखाली में" नाम की कविता में एक ऐसे गांव की तस्वीर उतारी गई है जो जला कर बरबाद कर दिया गया है. जहाँ लारों इधर उधर पड़ी हुई है. जहाँ एक अजीब सी डरावनी और दंभरी समां छाई हुई है. सभी कविताएं बहुत सुन्दर हैं. गुप्त जी अपनी कोशिश में बहुत सफल हुए हैं.

—गणेश प्रसाद

प्रारंभिक रचनाएँ (तीसरा भाग कहानियाँ)

लिखने वाले श्री 'बच्चन', सके १७१, कीमत दो रुपए, लिखावट नागरी, पता-भारती—भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद.

हिन्दुस्तान के मशहूर कवि श्री हरिवंश राय जी 'बच्चन' को सभी अच्छी तरह जानते हैं. साहित्यिक (अदबी) दुनियाँ में उन्होंने पहले एक कहानी लेखक की हैसियत से ही कदम रक्खा था, कवि के रूप में नहीं. कवि तो वह बाद में हुए. इस किताब में उन्हीं की शुरु शुरु में लिखी हुई चारह कहानियाँ दी हुई हैं. कहानियाँ सभी मजेदार हैं. कुछ कहानियाँ जैसे "माता और माटभूमि", "उच्छरण" और "ठाकुर जी" ऊँचे और सुन्दर भावों से भरी हुई हैं.

"माता और माट भूमि" में उमर की माँ अंजुमन की कुर्बानी ऊँचे दरजे की है. "अंचल का बंदी" और "हृदय की आँखें" में

नोआखाली का जवाब भार वालों ने दा. असी पर अशारे करते हुये "भार के प्रति" नाम की कविता में लिखा है— "अनल अनल से, बैर बैर से बुझता नहीं कदापि." सच है आग से आग नहीं बुझती, दुशमनी से दुशमनी नहीं मिटती. "नोआखाली में" नाम की कविता में एक ऐसे गांव की तस्वीर उतारी गई है जो जला कर बरबाद कर दिया गया है. जहाँ लारों इधर उधर पड़ी हुई है. जहाँ एक अजीब सी डरावनी और दंभरी समां छाई हुई है. सभी कवितायें बहुत सुन्दर हैं. गिरी जी अपनी कोशिश में बहुत सफल हुये हैं.

—गिरी प्रसाद

प्रारंभिक रचनायें (तीसरा भाग कहानियाँ)—
लिखने वाले श्री 'बच्चन', सके १७१, कीमत दो रुपए, लिखावट

नागरी, पता-भारती—भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद.
हिन्दुस्तान के मशहूर कवि श्री हरिवंश राय जी 'बच्चन' को सभी अच्छी तरह जानते हैं. साहित्यिक (अदबी) दुनियाँ में उन्होंने पहले एक कहानी लेखक की हैसियत से ही कदम रक्खा कवि के रूप में नहीं. कवि तो वह बाद में हुए. इस किताब में उन्हीं की शुरु शुरु में लिखी हुई चारह कहानियाँ दी हुई हैं. कहानियाँ सभी मजेदार हैं. कुछ कहानियाँ जैसे "माता और माटभूमि", "उच्छरण" और "ठाकुर जी" ऊँचे और सुन्दर भावों से भरी हुई हैं.

"माता और माटभूमि" में उमर की माँ अंजुमन की कुर्बानी ऊँचे दरजे की है. "अंचल का बंदी" और "हृदय की आँखें" में

प्रेम का अच्छा आदर्श दिखाया है.

“बुन्नी मुन्ती” बहुत अच्छी कहानी है. सिर्फ चौदह सतरों की बहुत ही छोटी कहानी को लेखक ने खूब निवाहा है.

किताब की जवान बहुत आसान और रोजमर्रा के बोल चाल की है. इससे कहानियाँ और भी रसीली हो जाती हैं.

—गनेश प्रसाद

प्रेम तरंग उर्फ तरानए उल्कृत (हिस्सा दोय)—

लेखक—श्री काशी राम चावला, सन् २७२, क्रीमत बारह आने, लिखावट उरदू, पता—श्री काशी राम चावला, किरोजपूर.

श्री काशी राम जी चावला के “प्रेम तरंग उर्फ तराने उल्कृत (हिस्सा अब्बल) का रिठ्यू “नया हिन्द” के जून '४७ के अंक में शायी हो चुका है. इसी किताब का यह दूसरा हिस्सा भी उसी सिलसिले में हमें मजहब का सचवा रास्ता दिखाने की कोशिश करता है.

किताब बाईस अध्यायों में बटी है, जैसे—सब का खालिक एक है, एक ही मालिक का जल्वा सबके अन्दर, सबसे मुहवत करो, खिदमत मखलूक से खालिक राबो होता है, नेक आमाल ही काम आएंगे, निकाक न पैदा करो, नफरत से नकरत करो बगैरा बगैरा. हर अध्याय में दुनिया के सभी मजहबों, मजहबी लीडरों, मशहूर लेखकों और शायरों को उम्दा नसीहतों और चुने चुने जुमलों को देकर लेखक ने किताब में यह दिखाने की कोशिश की है कि मजहब आपस में दुरमनी और नकरत करना नहीं सिखाता

नया हिन्द
कुछ कितानें

नया हिन्द

प्रेम का अच्छा आदर्श दिखाया है.

“बुन्नी मुन्ती” बहुत अच्छी कहानी है. सिर्फ चौदह सतरों की बहुत ही छोटी कहानी को लेखक ने खूब निवाहा है.

किताब की जवान बहुत आसान और रोजमर्रा के बोल चाल की है. इससे कहानियाँ और भी रसीली हो जाती हैं.

—गनेश प्रसाद

प्रेम तरंग उर्फ तरानए उल्कृत (हिस्सा दो-सम)—

लेखक—श्री काशी राम चावला, सन् २७२, क्रीमत बारह आने, लिखावट उरदू, पता—श्री काशी राम चावला, किरोजपूर.

श्री काशी राम जी चावला के “प्रेम तरंग उर्फ तराने उल्कृत (हिस्सा अब्बल) का रिठ्यू “नया हिन्द” के जून '४७ के अंक में शायी हो चुका है. इसी किताब का यह दूसरा हिस्सा भी उसी सिलसिले में हमें मजहब का सचवा रास्ता दिखाने की कोशिश करता है.

किताब बाईस अध्यायों में बटी है, जैसे—सब का खालिक एक है, एक ही मालिक का जल्वा सबके अन्दर, सबसे मुहवत करो, खिदमत मखलूक से खालिक राबो होता है, नेक आमाल ही काम आएंगे, निकाक न पैदा करो, नफरत से नकरत करो बगैरा बगैरा. हर अध्याय में दुनिया के सभी मजहबों, मजहबी लीडरों, मशहूर लेखकों और शायरों को उम्दा नसीहतों और चुने चुने जुमलों को देकर लेखक ने किताब में यह दिखाने की कोशिश की है कि मजहब आपस में दुरमनी और नकरत करना नहीं सिखाता

बल्कि मुहूर्त्त के खुरागवार सक्क पढ़ाता है. यह दिखाया गया है जितनी बातें हम को सबे और सही रास्ते पर ले जाती हैं उन के बारे में करीब करीब सभी मजहबों की राय एक ही है. लिखा है—

'इस दुनिया का बाप, दादा, माँ और सहारा देने वाला मैं ही हूँ—(गीता).

'सब में उसी का नूर है और उसी की तजल्ली से सब में रोशनी है'—(सिक्ख धर्म)

'रहम करने वालों पर अल्लाह रहम करता है. तुम जमीन वालों से भलाई करो तो तुम पर आसमान वाला रहम करेगा'—(अवृदाऊद).

'अवान के तीर यानी कड़वे बोल का जखम कभी नहीं भरता'—(पंचतंत्र)

किसी से दुश्मनी रखना मैं मौत के बराबर समझता हूँ. मुझे इस रवैयें से नकरत है. मैं तो तमाम नेक इनसानों का प्यारा बनना चाहता हूँ—(शेक्सपियर)

इस किताब की तारीफ हिन्दुस्तान के बड़े बड़े लोगों और अखबारों ने की है. किताब सचमुच बड़े फायदे की है. सभी इसे पसन्द करेंगे. मजहब को समझाने और लोगों को सबाई के रास्ते पर लाने के लिये ऐसी ही किताबों की जरूरत है. हम इस किताब का ज्यादा से ज्यादा प्रचार चाहते हैं.

—गणेश प्रसाद

कुछ किताबें
नोबर् सक्क

नया हिन्द
बल्कि محبت के خوشगुद سبق पृष्ठाना हो. ये क्हा या ग्ना हो
हम को सच्चे ओद सच्च रास्ते पर ले जाती हैं उन के बारे में करीब
करीब सच्ची म्दहबों की रास्ते एक ही हो. क्हा हो—

'इस दुनिया का बाप, दादा, माँ ओद सहारा देने वाला मैं ही हूँ—(गीता).

'सब में उसी का नूर है और उसी की तजल्ली से सब में रोशनी है'—(सिक्ख धर्म)

'रहम करने वालों पर अल्लाह रहम करता है. तुम जमीन वालों से भलाई करो तो तुम पर आसमान वाला रहम करेगा'—(अवृदाऊद).

'अवान के तीर यानी कड़वे बोल का जखम कभी नहीं भरता'—(पंचतंत्र)

किसी से दुश्मनी रखना मैं मौत के बराबर समझता हूँ. मुझे इस रवैयें से नकरत है. मैं तो तमाम नेक इनसानों का प्यारा बनना चाहता हूँ—(शेक्सपियर)

इस किताब की तारीफ हिन्दुस्तान के बड़े बड़े लोगों और अखबारों ने की है. किताब सचमुच बड़े फायदे की है. सभी इसे पसन्द करेंगे. मजहब को समझाने और लोगों को सबाई के रास्ते पर लाने के लिये ऐसी ही किताबों की जरूरत है. हम इस किताब का ज्यादा से ज्यादा प्रचार चाहते हैं.

—गणेश प्रसाद

ہمدردی کے

اب اردو لکھاوٹ کیوں ہے؟
 جو لوگ بچے ہی سے یہ سمجھے بیٹھے تھے کہ اردو لکھنا وہ
 صرف مسلمانوں کو خوش کرنے کے لئے سیکھ رہے تھے وہ یہ کہنے
 کے ہر طرح حقی دار ہیں کہ اب جب پاکستان بن گیا اور ہندستان
 کے دو ٹکڑے ہو چکے تھے تب اردو لکھنا سیکھنے کی بل امان کے
 کیوں لگی ہوئی ہے؟ یہ ان کو معلوم نہیں کہ اردو لکھاوٹ کی ابتدا
 دیش نے مسلمانوں کو خوش کرنے کے لئے اٹھائی ہی نہیں تھی۔
 ہندستانی ہندستان کے جس حصے کی بولی ہے وہاں بہت پہلے
 سے ہندستانی، اردو، ناگری، دونوں لکھاوٹوں میں لکھی جاتی رہی
 ہے۔ اگر اردو ہندو مسلمان سبھی نہیں، تو بہت سے اردو لکھنا پہلے سے
 ہی جانتے ہیں اور یہ کہ اردو لکھاوٹ ٹھوڑی بہت ہر صوبے میں
 رواج میں بھی پڑی ہے۔ ٹھیک ہے کہ اور صوبوں میں اردو کے لکھنے والے
 تو بے پیمانے فی صدی مسلمان ہی ہیں۔ اس کے علاوہ کئی
 صوبوں اور ریاستوں کے بہت سے عدالتی کاغذ اردو لکھاوٹ میں
 ہی ہیں۔ اتنا ہی نہیں، اب سے ہزار آٹھ سو برس پہلے تک کے
 سارے تاریخی کاغذ اردو لکھاوٹ میں ہی لے لے ہیں۔ پنجاب اور مدھی
 صوبوں میں تو ناگری لکھاوٹ، اپنی گہنی عورتوں کو چھوڑ کر، بہت
 کم مردوں کو آتی ہے۔ ان کو تو ناگری سیکھنا ایسا ہی
 ایسا بیچنے کا جیسا کسی برکالی کو اردو لکھاوٹ سیکھنا۔
 ان سب باتوں کو سامنے رکھ کر اور سب کے سوچنے کا خیال

ہماری راہ

اب اردو لکھاوٹ کبوں؟

جو لوگ، سب سے پہلے یہ سمجھ گئے کہ اردو لکھنا وہ
 صرف مسلمانوں کو خوش کرنے کے لئے سیکھ رہے تھے وہ یہ کہنے
 کے ہر طرح حقی دار ہیں کہ اب جب پاکستان بن گیا اور ہندستان
 کے دو ٹکڑے ہو چکے تھے تب اردو لکھنا سیکھنے کی بل امان کے
 کیوں لگی ہوئی ہے؟ یہ ان کو معلوم نہیں کہ اردو لکھاوٹ کی ابتدا
 دیش نے مسلمانوں کو خوش کرنے کے لئے اٹھائی ہی نہیں تھی۔
 ہندستانی ہندستان کے جس حصے کی بولی ہے وہاں بہت پہلے
 سے ہندستانی، اردو، ناگری، دونوں لکھاوٹوں میں لکھی جاتی رہی
 ہے۔ اگر اردو ہندو مسلمان سبھی نہیں، تو بہت سے اردو لکھنا پہلے سے
 ہی جانتے ہیں اور یہ کہ اردو لکھاوٹ ٹھوڑی بہت ہر صوبے میں
 رواج میں بھی پڑی ہے۔ ٹھیک ہے کہ اور صوبوں میں اردو کے لکھنے والے
 تو بے پیمانے فی صدی مسلمان ہی ہیں۔ اس کے علاوہ کئی
 صوبوں اور ریاستوں کے بہت سے عدالتی کاغذ اردو لکھاوٹ میں
 ہی ہیں۔ اتنا ہی نہیں، اب سے ہزار آٹھ سو برس پہلے تک کے
 سارے تاریخی کاغذ اردو لکھاوٹ میں ہی لے لے ہیں۔ پنجاب اور مدھی
 صوبوں میں تو ناگری لکھاوٹ، اپنی گہنی عورتوں کو چھوڑ کر، بہت
 کم مردوں کو آتی ہے۔ ان کو تو ناگری سیکھنا ایسا ہی
 ایسا بیچنے کا جیسا کسی برکالی کو اردو لکھاوٹ سیکھنا۔
 ان سب باتوں کو سامنے رکھ کر اور سب کے سوچنے کا خیال

करके ही देश ने हिन्दुस्तानी बोली और नागरी उर्दू दोनों लिखावटों को सबके लिये जरूरी तय कर दिया था.

आइये अब उर्दू लिखावट के मुकद्दमे की सुनवाई इस बुनियाद पर करें कि अब भी उसकी हिन्दुस्तान को जरूरत है या नहीं ?

दो लिखावटें क्यों सीखें -

जिनको आज मन मुटाव के कारण उर्दू लिखावट से चिढ़ हो गई है उर्दू को यह लिखावट बड़ी दूर मालूम होती है. और है भी ठीक. जिससे जी उतर जाय वह कितनी ही भली क्यों न हो बुरी ही लगती है. पर यहाँ यह सवाल नहीं है. हम को जवाब इस बात का देना है कि जब एक लिखावट से काम चले तो दो लिखावटों की बला क्यों सिर मोल ली जाए.

आदमी कुछ इस क्रिस्म का बना है कि एक बला से उसका जी कर्मा नहीं भरता. बलाओं से घिरे रहने में उसे मजा आता है. अच्छा भला अकेले रहते शादी कर बैठता है और फिर बच्चे पैदा कर बैठता है. लिखावट के मामले में भी किसी मुल्क और किसी आदमी को एक से तसल्ली नहीं होती. जब फारसी लिखावट हिन्दुस्तान में थी ही नहीं तब भी हिन्दी की और बृज की हिन्दी को दो नहीं तीन लिखावटें थीं और आज भी तीनों खिन्दा है. एक छापे की यानी साक साक लिखी हुई, दूसरी घसीट की और तीसरी का नाम है मुद्रिया जो सेठ लोगों के बही खाते में और चिट्ठी पत्री में मुद्रतों से है और मुद्रतों तक रहेगी. और नागरी की घसीट की लिखावट को तो कितनी ही लिखावटों में

करके ही देश ने हिन्दुस्तानी बोली और नागरी उर्दू दोनों लिखावटों को सबके लिये जरूरी तय कर दिया था.

आइये अब उर्दू लिखावट के मुकद्दमे की सुनवाई इस बुनियाद पर करें कि अब भी उसकी हिन्दुस्तान को जरूरत है या नहीं ?

दो लिखावटें क्यों सीखें -

जिनको आज मन मुटाव के कारण उर्दू लिखावट से चिढ़ हो गई है उर्दू को यह लिखावट बड़ी दूर मालूम होती है. और है भी ठीक. जिससे जी उतर जाय वह कितनी ही भली क्यों न हो बुरी ही लगती है. पर यहाँ यह सवाल नहीं है. हम को जवाब इस बात का देना है कि जब एक लिखावट से काम चले तो दो लिखावटों की बला क्यों सिर मोल ली जाए.

आदमी कुछ इस क्रिस्म का बना है कि एक बला से उसका जी कर्मा नहीं भरता. बलाओं से घिरे रहने में उसे मजा आता है. अच्छा भला अकेले रहते शादी कर बैठता है और फिर बच्चे पैदा कर बैठता है. लिखावट के मामले में भी किसी मुल्क और किसी आदमी को एक से तसल्ली नहीं होती. जब फारसी लिखावट हिन्दुस्तान में थी ही नहीं तब भी हिन्दी की और बृज की हिन्दी को दो नहीं तीन लिखावटें थीं और आज भी तीनों खिन्दा है. एक छापे की यानी साक साक लिखी हुई, दूसरी घसीट की और तीसरी का नाम है मुद्रिया जो सेठ लोगों के बही खाते में और चिट्ठी पत्री में मुद्रतों से है और मुद्रतों तक रहेगी. और नागरी की घसीट की लिखावट को तो कितनी ही लिखावटों में

बाँटा जा सकता है. हर आदमी की अपनी लिखावट है. इसलिये नागरी खुद दो तरह लिखी जाती है और हिन्दी नागरी और मुड़िया दो लिखावटों में मौजूद है. उर्दू की लिखावट से चिढ़ने वाले अँगरेजी की चार चार लिखावटें बड़े चाव से सीख लेते हैं यानी छापे की बड़ी छोटों लिखावट और लिखने की बड़ी छोटों लिखावट. अँगरेजी की पाँचवाँ लिखावट वर्सीट को तो जाने ही दीजिये. हम जब स्कूल में पढ़ते थे तो उर्दू की घसीट लिखावट भी सीखनी पड़ती थी और उसकी एक किताब थी जिसका नाम था "मकतूब अहमदी". अब अगर अदालतों में और पुलिस के रोजनामचों में नागरी का खोर बढ़ा तो फिर मकतूब अहमदी जैसी कोई 'पत्री पोखनी' जल्दी ही मदरसों में जारी करनी पड़ेगी. नहीं तो पुलिस के रोजनामचे पढ़ने के लिये उनके लिखने वालों को ही बुलाया जाया करेगा. इसलिये दो दो लिखावट सीखने का एतराज जोरदार नहीं है.

एक हिन्दुस्तान ही नहीं दुनिया का कोई मुल्क ऐसा नहीं है जहाँ एक से ज्यादा लिखावट न सीखनी पड़ती हो. हाँ, चीन, एक ऐसा मुल्क है कि जहाँ सब सूबों की एक लिखावट है पर उस लिखावट को सीखना तो आठ लिखावट नहीं सोलह लिखावटें जितनी मेहनत चाहता है और सिरदर्दी तो न जाने कितनी चाहता है. हिन्दुस्तानी तो चार दिन के बाद उसके सीखने से बागी होकर भाग बैठे.

मुल्क के लिहाज से ही नहीं, वक्त के लिहाज से कोई ऐसा वक्त नहीं रहा जब एक मुल्क के आदमियों को एक से ज्यादा

बान्ठा जा सकता हो. हर आदमी की अपनी लिखावट हो. इस नागरी खुद दो तरह लिखी जाती हो. और हिन्दी नागरी और मुड़िया दो लिखावटों में मौजूद हो. उर्दू की लिखावट से चिढ़ने वाले अँगरेजी की चार चार लिखावटें बड़े चाव से सीख लेते हैं यानी छापे की बड़ी छोटों लिखावट और लिखने की बड़ी छोटों लिखावट. अँगरेजी की पाँचवाँ लिखावट वर्सीट को तो जाने ही दीजिये. हम जब स्कूल में पढ़ते थे तो उर्दू की घसीट लिखावट भी सीखनी पड़ती थी और उसकी एक किताब थी जिस का नाम था "मकतूब अहमदी". अब अगर अदालतों में और पुलिस के रोजनामचों में नागरी का खोर बढ़ा तो फिर मकतूब अहमदी जैसी कौनी "पत्री पोखनी" पड़ेगी. नहीं तो पुलिस के रोजनामचे पढ़ने के लिये उनके लिखने वालों को ही बुलाया जायेगा. इस लिये दो दो लिखावट लिखने का एतराज जोरदार नहीं हो.

एक हिन्दुस्तान ही नहीं दुनिया का कौनी मुल्क ऐसा नहीं हो जहाँ एक से अधिक लिखावट न सीखनी पड़ती हों. हाँ, चीन, एक ऐसा मुल्क हो कि जहाँ सब लिखावटों की एक लिखावट हो पर उस लिखावट को सीखना तो आठ लिखावटें जितनी मेहनत चाहता है और सिरदर्दी तो न जाने कितनी चाहता है. हिन्दुस्तानी तो चार दिनों के

बाँटने के लिहाज से ही नहीं, वक्त के लिहाज से कोई ऐसा वक्त नहीं रहा जब एक मुल्क के आदमियों को एक से ज्यादा

लिखावटें न सीखनी पड़ी हों. आदमी जब भी अपने दोस्तों से कुछ छिपाना चाहता है तब या तो एक नई लिखावट तय्यार करता है या नई बोली और यही वजह है कि लिखावटों की बला से वह नहीं बच पाता. अपने मतलब के लिये उसे लिखावटों की बला में फँसना पड़ता है और उसी मतलब की वजह से उस बला में फँसा हुआ भी वह सुख ही मानता है.

जैसे हिन्दी बोली के साथ साथ धर्म की खातिर हिन्दुओं को संस्कृत, जिसे वह देव वाणी कहते हैं, सीखनी पड़ती है और जैसे जैनों को प्राकृत, बौद्धों को पाली, राधा स्वामियों को फारसी मिली उर्दू और सिक्खों को पंजाबी और मुसलमानों को फारसी अरबी बोली सीखनी पड़ती है वैसे ही और लिखावटें सीखनी ही पड़ेंगी नहीं तो वह अपने अपने धर्म ग्रन्थ कैसे पढ़ सकेंगे. हिन्दुस्तानियों में यह हिम्मत तो है ही नहीं कि वह अपने सब धर्म ग्रन्थों को एक लिखावट और एक बोली में कर लें और उससे अपनी तसल्ली कर लें. इसलिये सिक्खों को गुरु ग्रन्थ साहब पढ़ने के लिये गुरुमुखी लिखावट सीखनी ही होगी, ईसाइयों को बाइबिल की खातिर अँगरेजी लिखावट कायम रखनी ही होगी. मतलब यह कि धर्म भी एक कारण है जिसकी वजह से हमको रिबाज की लिखावट के अलावा एक लिखावट और सीखनी ही होती ही है. यों भी हमारा काम एक लिखावट से न चल सकेगा.

अँगरेजों से पहले मुसलमानों का राज था और उर्दू लिखावट सारे मुल्क में फैली हुई थी. अँगरेज अगर उस वक्त मुसलमानों को दुशमन समझ कर उर्दू की लिखावट की जगह नागरी

लिखावटें न सीखनी पड़ी हों. आदमी जब भी अपने दोस्तों से कुछ छिपाना चाहता है तब या तो एक नई लिखावट तय्यार करता है या नई बोली और यही वजह है कि लिखावटों की बला से वह नहीं बच पाता. अपने मतलब के लिये उसे लिखावटों की बला में फँसना पड़ता है और उसी मतलब की वजह से उस बला में फँसा हुआ भी वह सुख ही मानता है.

जैसे हिन्दी बोली के साथ साथ धर्म की खातिर हिन्दुओं को संस्कृत, जिसे वह देव वाणी कहते हैं, सीखनी पड़ती है और जैसे जैनों को प्राकृत, बौद्धों को पाली, राधा स्वामियों को फारसी मिली उर्दू और सिक्खों को पंजाबी और मुसलमानों को फारसी अरबी बोली सीखनी पड़ती है वैसे ही और लिखावटें सीखनी ही पड़ेंगी नहीं तो वह अपने अपने धर्म ग्रन्थ कैसे पढ़ सकेंगे. हिन्दुस्तानियों में यह हिम्मत तो है ही नहीं कि वह अपने सब धर्म ग्रन्थों को एक लिखावट और एक बोली में कर लें और उससे अपनी तसल्ली कर लें. इसलिये सिक्खों को गुरु ग्रन्थ साहब पढ़ने के लिये गुरुमुखी लिखावट सीखनी ही होगी, ईसाइयों को बाइबिल की खातिर अँगरेजी लिखावट कायम रखनी ही होगी. मतलब यह कि धर्म भी एक कारण है जिसकी वजह से हमको रिबाज की लिखावट के अलावा एक लिखावट और सीखनी ही होती ही है. यों भी हमारा काम एक लिखावट से न चल सकेगा.

अँगरेजों से पहले मुसलमानों का राज था और उर्दू लिखावट सारे मुल्क में फैली हुई थी. अँगरेज अगर उस वक्त मुसलमानों को दुशमन समझ कर उर्दू लिखावट की जगह नागरी

लिखावट जारी कर देते तो इस वरस में ही उनका राज उखड़ जाता और अँगरेजी पर खोर देते तो दो बरस भी राज न कर पाते. पर उन्हें राज करना आता था, उन्होंने उर्दू लिखावट दूर नहीं की. उसे कायम रखने में मदद की और अपनों में उसके जानकार पैदा किये जिस जानकारी की मदद से वह मुसलमानों की रग रग को समझ पाए. अँगरेजों के बाद आज हकूमत काँग्रेस के हाथ में आई है. काँग्रेस हकूमत करना जानती है. जभी तो वह अँगरेजी हटाने में जल्दी नहीं कर रही है. ध्यान से देखा जाय तो अँगरेजी की अब कोई खरूरत नहीं रह गई. क्यों कि सिर्फ अँगरेजी के जानकार जो अद्यगरे यहाँ के रहने वाले हैं वह गिनती में बहुत थोड़े हैं और सिर्फ उनकी खातिर अँगरेजी लिखावट और अँगरेजी बोली को बनाए रखना किसी तरह समझदारी की बात नहीं समझी जा सकती. पर काँग्रेस है कि अभी अँगरेजी को नहीं हटाना चाहती. अगर वह जल्दवाजी करे तो अपने पाँव में कुल्हाड़ी मारेगा. और यह भी उसकी समझदारी ही है कि वह उर्दू लिखावट को कायम रखना चाहती है. इस वकत उर्दू लिखावट को हटा कर हम अपना बहुत बड़ा नुकसान कर लेंगे. जिनके सिरों में एक हिन्दुस्तान का नकशा घूम रहा है वह कभी यह न चाहेंगे कि उर्दू की लिखावट दूर करदी जाए. जिनके सिरों में यह खयाल मौजूद है कि एक न एक दिन पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनों मिल कर एक होंगे वह कभी उर्दू लिखावट के खिलाफ आवाज नहीं उठा सकते. जिनके हाथ में आज हिन्दुस्तानी संघ की सरकार है वह हिन्दुस्तानी समझ के दरख्त के फूल हैं. उनकी

न्यास है
 अमरी राई
 नुम्बर १५७

लकھاوٹ جاری کر دیتے تو دس برس میں ہی ان کا راج اُکھڑ جاتا اور انگریزی پر زور دیتے تو دو برس بھی راج نہ کر پاتے۔ پھر انھیں راج کرنا آنا کھتا۔ انھوں نے اُردو لکھاوٹ دُور نہیں کی۔ اُسے قائم رکھنے میں مدد کی اور ایوں میں اُس کے جان کار پیدا کیے۔ جس جان کاری کی مدد سے وہ مسلموں کی رگ رگ کو سمجھ پائے۔ انگریزوں کے بعد آج حکومت کا انگریزوں کے ہاتھ میں آئی ہے۔ کانگریس حکومت کرنا جانتی ہے۔ جیسی تو وہ انگریزی ہٹانے میں ملاری نہیں کر رہی ہے۔ دھماں سے دیکھا جائے تو انگریزی کی اب کوئی ضرورت نہیں رہ گئی۔ کیونکہ صرف انگریزی کے جان کار جو ادھ گردت پیرا رہنے والے ہیں وہ گینتی میں بہت کھوڑے ہیں اور صرف ان کی خاطر انگریزی لکھاوٹ اور انگریزی بولی کو بنائے رکھنا کسی طرح سمجھ داری کی بات نہیں سمجھی جاسکتی۔ پر کانگریس ہے کہ ابھی انگریزی کو نہیں ہٹانا چاہتی۔ اگر وہ جلد بازی کرے مائے پاؤں میں گھٹاڑی مارے گی۔ اور یہ بھی اُس کی سمجھ داری ہی ہے کہ وہ اُردو لکھاوٹ کو قائم رکھنا چاہتی ہے۔ اس وقت اُردو لکھاوٹ کو ہٹا کر ہم ایسا بہت بڑا نقصان کریں گے۔ جن کے سروں میں ایک ہندستان کا نقشہ گھوم رہا ہے وہ بھی یہ نہ چاہیں گے کہ اُردو کی لکھاوٹ دُور کر دی جائے۔ جن کے سروں میں یہ خیال موجود ہے کہ ایک نہ ایک دن پاکستان بنے اور ہندستان دونوں مل کر ایک ہوں گے وہ بھی اُردو لکھاوٹ کے لئے آواز نہیں اٹھا سکتے۔ جن کے ہاتھ میں آج ہندستانی سنگھ کی ہرکار ہے وہ ہندستانی سمجھ کے درخت کے پھول ہیں۔ ان کی

بات ہمیں دھیان سے سوننی اور سمجھنی چاہئے اور اردو کھاوٹ کے

وڈے لیکھناوٹ کو بناوے رکھنے کی ایک وجہ اور بھی ہے۔ اور وہ ایک سے زیادہ ریاستیں ایسی ہیں جہاں سارا کام اردو کھاوٹ میں ہوتا ہے۔ وہاں کے معاملوں سے پوری جان کاری رکھنا اور وہاں سے نکلنے والے اخباروں کو پڑھ سکا ہم سب کے لئے ضروری ہے۔ اور پھر ہماری بالکل قریب کی ریاست پاکستان بھی اپنی ساری کارروائی اردو کھاوٹ میں ہی کرتی ہے اور اس سے لگے ہوئے دو ملک افغانستان اور فارس ایسی کھاوٹ سے کام لیتے ہیں۔ اور پھر سب سے بڑی بات یہ کہ اردو کھاوٹ ہم نیلے ہی سے لیکھنے ہوئے ہیں اور اس کے لیکھنے کی آسانی ہمارے خون میں بھی آگئی ہے۔ پھر اس ضروری اور ہمارے لئے آسان کھاوٹ کو دور کرنے میں کوئی کھجوری ہے یہ ہمارے کھجور میں نہیں آتا۔ اسی تو ہندوستانی سنگھ میں جگہ جگہ ایسی کتنی ہی جہیں ہیں جہاں اردو کھاوٹ کام میں آ رہی ہے۔ ایسی حالت میں ہم اپنے بچوں کو اردو کھاوٹ سے دور رکھ کر کتنا بڑا نقصان کریں گے۔ اگر ہم اس وقت جلد بازی کر لیجئے تو ہم کو اپنی غلطی پر جلدی ہی پکھتانا پڑے گا۔

آزاد ہو کر ہماری سب قابلیتیں بڑھی ہیں اور کھساویں لیکھنے کی تو بے حد بڑھی ہیں۔ اب تو وہ دن ہے کہ ہم نئی نئی کھاوٹیں لیکھیں۔ اپنے دلش کی بنگالی، گجراتی، اڑیسا،

نیا ہند سے سوننی اور سمجھنی چاہئے اور اردو کھاوٹ کے

وڈے لیکھناوٹ کو بناوے رکھنے کی ایک وجہ اور بھی ہے۔ اور وہ ایک سے زیادہ ریاستیں ایسی ہیں جہاں سارا کام اردو کھاوٹ میں ہوتا ہے۔ وہاں کے معاملوں سے پوری جان کاری رکھنا اور وہاں سے نکلنے والے اخباروں کو پڑھ سکا ہم سب کے لئے ضروری ہے۔ اور پھر ہماری بالکل قریب کی ریاست پاکستان بھی اپنی ساری کارروائی اردو کھاوٹ میں ہی کرتی ہے اور اس سے لگے ہوئے دو ملک افغانستان اور فارس ایسی کھاوٹ سے کام لیتے ہیں۔ اور پھر سب سے بڑی بات یہ کہ اردو کھاوٹ ہم نیلے ہی سے لیکھنے ہوئے ہیں اور اس کے لیکھنے کی آسانی ہمارے خون میں بھی آگئی ہے۔ پھر اس ضروری اور ہمارے لئے آسان کھاوٹ کو دور کرنے میں کوئی کھجوری ہے یہ ہمارے کھجور میں نہیں آتا۔ اسی تو ہندوستانی سنگھ میں جگہ جگہ ایسی کتنی ہی جہیں ہیں جہاں اردو کھاوٹ کام میں آ رہی ہے۔ ایسی حالت میں ہم اپنے بچوں کو اردو کھاوٹ سے دور رکھ کر کتنا بڑا نقصان کریں گے۔ اگر ہم اس وقت جلد بازی کر لیجئے تو ہم کو اپنی غلطی پر جلدی ہی پکھتانا پڑے گا۔

آزاد ہو کر ہماری سب قابلیتیں بڑھی ہیں اور کھساویں لیکھنے کی تو بے حد بڑھی ہیں۔ اب تو وہ دن ہے کہ ہم نئی نئی کھاوٹیں لیکھیں۔ اپنے دلش کی بنگالی، گجراتی، اڑیسا،

आसामी, कन्नड़, तामिल, तेलुगू ही नहीं हमको चीनी, जापानी और रूसी लिखावटें भी सीखना होगी. हम उदू लिखावट से इतना घबराएं क्यों.

पर हम जिस वजह से उदू लिखावट को खिन्दा रखना चाहते हैं वह बिल्कुल अपनी वजह है और ऊपर की बातों से कोई ताल्लुक नहीं रखती.

वह वजह यह है.

हम जनता धर्म में विश्वास रखते हैं और जनता की बोली के पूजने वाले हैं. हम यह नहीं चाहते कि सरकार कोई ऐसी बोली काम में लाए जिसे जनता न समझ सके और अगर साखने की भी कोशिश करे तो पाँच फीसदी से ज्यादा सफल ही न हो सके. आज के दिन भी अङ्गरेजों पार्लमेन्ट को बोली हर अङ्गरेज न बोल सकता है और न समझ सकता है. जभी तो बरतानियों की हकूमत को बाग डोर इने गिने आदमियों के हाथ में रहती है. अमरीका में यह बात नहीं है. अमराका को अङ्गरेजों अङ्गरेजी ही नहीं है. वह तो अमराको है. वहाँ के कुछ आदमियों ने उसे अङ्गरेजों बनाए रखने को बड़ी कोशिश को पर सफल न हुए. हम भी सिर्फ जनता का खातिर उदू लिखावट को खिन्दा रखना चाहते हैं. उदू और नागरो दोनों लिखावटें मिलकर जनता को बोली को खिन्दा रखेंगे. उदू का लिखावट हिन्दो को संस्कृत की तरफ बढ़ कर और पंडिताऋषि वन कर जनता से दूर न जाने देगी और नागरो लिखावट जनता को बोली को फारसी की तरफ बढ़ने से रोके रखेंगे. और यों जनता की बोली की नदी जिसे हम

नया हिन्द
हमारा राय
लुईस ब्रान्डेज
आसामी, कन्नड़, तामिल, तेलुगू को ही नहीं हमको चीनी, जापानी और रूसी लिखावटें भी सीखना होंगी. हम उदू लिखावट से इतना घबराएँ क्यों.
पर हम जिस वजह से उदू लिखावट को खिन्दा रखना चाहते हैं वह उदू लिखावट की वजह है और ऊपर की बातों से कोई ताल्लुक नहीं रखती.

उदू वजह है. हम जनता धर्म में विश्वास रखते हैं और जनता की बोली के पूजने वाले हैं. हम यह नहीं चाहते कि सरकार कोई ऐसी बोली काम में लाए जिसे जनता न समझ सके और अगर साखने की भी कोशिश करे तो पाँच फीसदी से ज्यादा सफल ही न हो सके. आज के दिन भी अङ्गरेजों पार्लमेन्ट को बोली हर अङ्गरेज न बोल सकता है और न समझ सकता है. जभी तो बरतानियों की हकूमत को बाग डोर इने गिने आदमियों के हाथ में रहती है. अमरीका में यह बात नहीं है. अमराका को अङ्गरेजों अङ्गरेजी ही नहीं है. वह तो अमरीकी है. वहाँ के कुछ आदमियों ने उसे अङ्गरेजों बनाए रखने की बड़ी कोशिश की पर सफल न हो सके. हम भी सिर्फ जनता की खातिर उदू लिखावट को खिन्दा चाहते हैं. उदू और नागरो दोनों लिखावटें मिलकर जनता को बोली को खिन्दा रखेंगे. उदू का लिखावट हिन्दो को संस्कृत की तरफ बढ़ कर और पंडिताऋषि वन कर जनता से दूर न जाने देगी और नागरो लिखावट जनता को बोली को फारसी की तरफ बढ़ने से रोके रखेंगे. और यों जनता की बोली की नदी जिसे हम

हिन्दुस्तानी नदों के नाम से पुकारते हैं उर्दू नागरी लिखावटों के दो किनारों के बीच अपनी सुहानी चाल से बहती रहेगी.

जनता का भला उर्दू की लिखावट कायम रहने में है. इने गिने पंडितों का भला उर्दू लिखावट के भिट जाने में है. आज जनता जोश में है. उर्दू लिखावट का खूबी को नहीं समझ पा रही है. इसलिये उसे धोका दिया जा सकता है. पर हम जनता को यह बताए देते हैं कि उसका भला इसी में है कि वह उर्दू लिखावट को कायम रखे. उस लिखावट के बिना जनता की बोली मर जायगी और फिर जनता-राज जैसी कोई चीज हिन्दुस्तान में न रह सकेगी.

—भगवानदीन

हिन्दुस्तानी नदी के नाम से क्लारते हैं उर्दू नागरी क्लारतों के दो क्लारतों के बिच अपनी सुहानी चाल से बहती रहेगी. जनता का क्लारत उर्दू की क्लारतों के भिट जाने में है. आज जनता जोश में है. उर्दू क्लारतों की खूबी को नहीं समझ पा रही है. इसलिये उसे धोका दिया जा सकता है. पर हम जनता को यह बताए देते हैं कि उसका भला इसी में है कि वह उर्दू क्लारतों को कायम रखे. उस क्लारतों के बिना जनता की बोली मर जायगी और फिर जनता-राज जैसी कोई चीज हिन्दुस्तान में न रहे सकेगी.

—भगवानदीन



“गीता और कुरान”

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे देकर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों को बयान किया गया है।

उसके बाद गीता के लिले जाने के वक् की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है।

आखिर में कुरान से पहले की अरब की हालत, कुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर कुरान की तालीम को बयान किया गया है। इस में कुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ्ज़ी तरजुमा दिया गया है। यह भी बताया गया है कि कुरान में जेशद, आक़ेबत, अख़ेरत, जन्नत, नइन्नन, काहिर बतौर कित कश गया है, जो लोग सब धर्मों की एका को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों को इन दो अमर पुस्तकों को सचको जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को जरूर पढ़ना चाहिये।

किताब आसान हिन्दुस्तानी बयान में, नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकता है। पौने तीन सौ सके की सुन्दर जिल्द धन किताब की कीमत सिर्फ़ डेढ़ हरार. डाक खर्च अलग।

मैनेजर “नया हिन्द”

४८ बाई का बाग, इलाहाबाद

“गीता और कुरान”

लेखक - पंडित सुन्दर लाल

अस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे देकर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों को बयान किया गया है। उसके बाद गीता के लफ्ज़ी जाने के वक् की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है।

आखिर में कुरान से पहले की अरब की हालत, कुरान के बड़े बड़े धर्मों की एकता को बतलाया गया है। यह भी बताया गया है कि कुरान में जेशद, आक़ेबत, अख़ेरत, जन्नत, नइन्नन, काहिर बतौर कित कश गया है, जो लोग सब धर्मों की एका को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों को इन दो अमर पुस्तकों की सचको जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को जरूर पढ़ना चाहिये।

किताब आसान हिन्दुस्तानी बयान में, नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकता है। पौने तीन सौ सके की सुन्दर जिल्द धन किताब की कीमत सिर्फ़ डेढ़ हरार. डाक खर्च अलग।

मैनेजर “नया हिन्द”

४८ - ४९ बाई का बाग, इलाहाबाद

تلاوة

عقود



दिसम्बर
सन् १९४७
१४ भासा

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडिटर—

ताराचन्द, भगवानदीन, मुजफ्फर हसन, विशम्भरनाथ, सुन्दरलाल.

दिसम्बर १९४७

क्या-किससे

- १—नया दौर (गीत)—‘विस्मिल’ साहब इलाहाबादी
- २—खून के आँसुओं का नखराना—अबदुल हलीम साहब अन्तरी
- ३—अहिंसा के विकास पर एक नजर—श्री किशोर लाल
- मश्रुवाला
- ४—अपने दिल से एक दो बातें—गु० म०
- ५—हाजी रशीद अहमद गंगोही—श्री रतन लाल बंसल
- ६—हिन्दुस्तानी कलचर और संगीत—श्री गणेश प्रसाद द्विवेदी
- ७—त्रिलयानशाला बाग की कुछ यादगारें—श्री रामजी हर
- ८—रेवनागरी में सुधार—डा० गोरख प्रसाद
- ९—आज की दुनिया—श्रीमी खिदमतगार
- १०—कुछ किताबें
- ११—हमारी राय

कीमत—द्विदुस्तान में छै रुपए साल. बाहर इस रु०११ साल. एक

परचा इस आने

५८ बाई का बाग, इलाहाबाद

मैनेजर

‘नया हिन्द’

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

अडिटर—

‘नया हिन्द’ बहगवान दीन, मुजफ्फर हसन, विशम्भरनाथ, सुन्दरलाल.

दिसम्बर १९४७

क्या-किससे

- १—नया दौर (गीत)—‘बंसल’ साहब अलाहाबादी...
- २—खून के आँसुओं का नखराना—‘अबदुल हलीम’ साहब अन्तरी
- ३—अहिंसा के विकास पर एक नजर—श्री किशोर लाल
- ४—अपने दिल से एक दो बातें—गु० म०
- ५—हाजी रशीद अहमद गंगोही—श्री रतन लाल बंसल
- ६—हिन्दुस्तानी कलचर और संगीत—श्री गणेश प्रसाद द्विवेदी
- ७—त्रिलयानशाला बाग की कुछ यादगारें—श्री रामजी हर
- ८—रेवनागरी में सुधार—डा० गोरख प्रसाद
- ९—आज की दुनिया—श्रीमी खिदमतगार
- १०—कुछ किताबें
- ११—हमारी राय

कीमत—द्विदुस्तान में छै रुपए साल. बाहर इस रु०११ साल. एक

परचा इस आने

५८ बाई का बाग, इलाहाबाद

मैनेजर

‘नया हिन्द’

नया हिन्दू

जिल्द ३

दिसम्बर '४७

नम्बर ६

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्दू' पहुँचेगा घर घर, लिये प्रेम की मोली.

दिनेर १५५६

जल्द ३

जात आदी, प्रेम, दम, हस्तानी बोली,
नया हिन्दू, सिखे गा कहर, लिये प्रेम की जवली.

(५/५)

नया दौर

('बिस्मिल' साहब इलाहाबादी)

हर वक्त नए भांगे भाई के हैं भाई से
मिलता नहीं अब फुरसत आपस की लड़ाई से.

अब है न मेल जोल न उलकत का रंग है
आपस में नोक मोक है आपस की जंग है.

x x x x x x x x x x

नया दौर

(बिस्मिल साहब इलाहादी)

हरदत नये जगदये बहानी के हैं बहानी से
मनी भविस अब नुस्त आपिस की लड़ाई से.

अब ओ न मिल जोल न भलत का रंग है
आपिस में नोक ज्जोन्क ओ आपिस की जंग है.

x x x x x x x x x x

नजर आई मेलक कव दीन की दुनिया के धंदों में
फंसाया अहले मजहब ने हमें मजहब के फन्दों में।

अलग जब हो गए दोनों तो लुटके अंजुमन क्या है

यह हिन्दू संगठन क्या है यह मुसलिम संगठन क्या है।

सब कह रहा है तुमसे यह, ऐ हम नशीं न हो
मजहब न हो तो कोई भी भगाड़ा कहीं न हो।

मेल होने का नहीं तो काम होने का नहीं
देश में तो और सब कुछ है मगर एका नहीं।

वो यूँ जकड़े हुए हैं बेतरह हिलने नहीं पाते
इसीसे हिन्दु-ओ-मुसलिम कभी मिलने नहीं पाते।

जोश मजहब पर अकड़ना चाहिये,
आग हो तो कूद पड़ना चाहिये।

बात यह मुझको नहीं 'विश्मिल' पसन्द,
हिन्दू-ओ-मुसलिम को लड़ना चाहिये।

नजर आई जहलक कब दीन की दुनिया के दोन्दों में
बिछाया अब मजहब ने है मजहब के फन्दों में।

अब जब होगे दोनों तो लुटके अंजुमन क्या है
ये मजहब संगठन क्या है ये मुसलिम संगठन क्या है।

सच कह रहा हूँ तुमसे यह, ऐ हम नशीं न हो
मजहब न हो तो कोई भी भगाड़ा कहीं न हो।

मेल होने का नहीं तो काम होने का नहीं
देश में तो और सब कुछ है मगर एका नहीं।

वो यूँ जकड़े हुए हैं बेतरह हिलने नहीं पाते
इसीसे हिन्दू-ओ-मुसलिम कभी मिलने नहीं पाते।

जोश मजहब पर अकड़ना चाहिये,
आग हो तो कूद पड़ना चाहिये।

बात ये मुझे को नहीं 'विश्मिल',
हिन्दू-ओ-मुसलिम को लड़ना चाहिये।

खून के खांभुओं का नज़राना
भाल के तिकोने कटोरे में।

खून के आंसू कतराने
बहारत के तिकोने कटोरे में -



A. N. ANJARI
— BHOPAL
1947.

खून के असुवों का नदराने

निसावुल की सिला में

(عبدالحکیم صاحب انصاری، کھوپال)

بھارت کی آزادی اور آزادی کی حیثیت پر دس اور بدیس کے لوگوں میں کثرت کے ساتھ آپ کو مبارک بادیاں دی ہیں اور بے شمار خوشی کے بار سنائے ہیں۔ لیکن مجھے انہوں نے یہ کہتے کہ میری ہنکوں میں خوشی کے آئینہ ڈبڈبا کے ہی رہ گئے۔ اور یہ غریب اور محسرت زدہ شائق کا سماں دیکھنے بھی نہ پائے کہ وہیں کے وہیں لوگوں کے۔

جیسے ہی دس کی آزادی کا سندھیا فضا میں پھیلا، کرڈوں کے آس کھڑے دون کے آسے کھڑے باغ املہا اٹھے۔ من من میں امید کی کرن چمک پڑی، پھولوں کی کھیری سمھاس میں چر سگیوں کا آس، کیا آس، ہونے لگیں، کلیاں جھوم جھوم کر پتوں کے آسے آسے تختوں پر ناچ کرنے لگیں۔ پر، ننگ کا یہ ستم دیکھو کہ آزادی کی صبح ہونے ہی کلی کلی پر اوس پڑی۔ ساری کلیاں مڑھیا گئیں اور کھیلنے سے پہلے ہی پہلے پہلے جھڑ مڑھ رہ گئیں۔ ایک دم ایسا معلوم پڑا جیسے بے وقت خزاں آگئی اور بہاہ آسنا گلزار دان سمیٹ کر چلتی بنی، یا آزاد ہند سے پندہ چھڑا کہ نہ جانے کدھر کھاگ نکلی یا دہشت کھا کہ کسی کنویں میں جا گئی۔ تب ہی تو وہ لاپتہ ہو۔ کوئی کھوج نہیں مل رہا۔

खून के असुवों का नजराना

नेताओं की सेवा में

(अब्दुल हलीम साहब अंसारी, भोपाल)

भारत की आजादी और आजादी की जीत पर देस और बिदेस के लोगों में कसत के साथ आपको मुबारक-बादियाँ दी हैं और बेशुमार खुशी के हार पहिनाए हैं। लेकिन मुझे अफसोस है यह कहते कि मेरी आँखों में खुशी के आँसू डबडबा के ही रह गए, और वह गरीब और हसरतबदा शान्ति का समा देखने भी न पाए कि वहाँ के वहाँ सुख गए।

जैसे हो देस की आजादी का सन्देशा क्रिजा में फैला, करोड़ों आस भरे दिलों के हरे भरे बाग लहलहा उठे। मन-मन में उम्मीद की किरन चमक पड़ी, फूलों की भरी सभा में चमीगोइयाँ (क्या कहें, क्या कहें) होने लगीं, कलियाँ झूम झूम कर पत्तों के हरे हरे तख्तों पर नाच करने लगीं, पर, फलक का यह सितम देखो कि आजादी की सुबह होते ही कली कली पर ओस पड़ गई, सारी कलियाँ मुरझा गईं और खिलने से पहिले ही पहिले झड़ मर कर रह गईं, — एक दम ऐसा मालूम पड़ा जैसे बे-बजन क्लियाँ आ गईं और बहार अपना गुलजार दामन समेट कर चलती बनी, या आजाद हिन्द से पिण्ड छुड़ा कर न जाने किवर भाग निकली या दहशत खाकर किसी कुण में जा गिरी। तब ही तो वह लापता है, कोई खोज नहीं मिल रहा।

हमको तो नए दिनकर (सूरज) के तेवर देखते ही अन्दाजा हो गया था कि आजादी का आरूताव बड़े पंच ताव के साथ निकलने वाला है. उसका उषा काल आकाश पर फैलकर खुले यह खबर दे रहा था कि अब इनसान इन्सान के हाथ से हलाल होने वाला है. लेकिन अरुसांस कि किसी ने उसके हाव-भाव को न ताड़ा और उसके रंगों के सन्देश को न जाना.

हाँ, हाँ! जब वह निकला है तो मैंने देखा उसका चेहरा सारे गुस्से के सुर्ख अंगारे की तरह लाल भभूका हो रहा था. इसी कारन उसने अपनी गरम गरम किरनों से और क्रोध की अग्नि से दम के दम में लावों इनसानों को फुलस कर रख दिया और खंड खंड ढा दिया यानी यह कि हिन्दुस्तान को समशान बना दिया. इस सबव में अपने बहिन माइयों के गम में और शरीफ सृष्टि को तवाही के मातम में हिन्दुस्तान अथवा पाकिस्तान के महान नेताओं और प्रधान मंत्रियों की सेवा में खून के आँसुओं का नवराना पेश करता है.

भारत के तिकोने कोटारे में बूँद बूँद जमा करके.

क्यों कि बतन के शहीदों का खून और माता के खून में लुथड़ा दामन कौमी भंडार का धन है इसलिये वही उसकी सेवा और रत्ता करे.

प्रेमी आर्टिस्ट का दिल त्याग और ईसार के जखनों से लबरेब होता है. जखमों से वह तकलीफ पाता है, मखमों से वह हमदर्दी रखता है, प्रेम का शब्द उसको प्यारा है और सुन्दरता का वह मतवाला है क्यों कि विनाश. (तखरीब) वह चाहता नहीं,

हमको तो नए दिनकर (सूरज) के तेवर देखते ही अन्दाजा हो गया कि आजादी का आरूताव बड़े पंच ताव के साथ निकलने वाला है. उसका उषा काल आकाश पर फैलकर खुले यह खबर दे रहा था कि अब इनसान इन्सान के हाथ से हलाल होने वाला है. लेकिन अरुसांस कि किसी ने उसके हाव-भाव को न ताड़ा और उस के रंगों के सन्देश को न जाना.

हाँ, हाँ! जब वह निकला है तो मैंने देखा उसका चेहरा सारे गुस्से के सुर्ख अंगारों की तरह लाल भभूका हो रहा था. इसी कारन उसने अपनी गरम गरम किरनों से और क्रोध की अग्नि से दम के दम में लावों इनसानों को फुलस कर रख दिया और खंड खंड ढा दिया यानी यह कि हिन्दुस्तान अथवा पाकिस्तान के महान नेताओं और प्रधान मंत्रियों की सेवा में खून के आँसुओं का नवराना पेश करता है.

क्योंकि बतन के शहीदों का खून और माता के खून में लुथड़ा दामन कौमी भंडार का धन है इसलिये वही उसकी सेवा और रत्ता करे.

प्रेमी आर्टिस्ट का दिल त्याग और ईसार के जखनों से लबरेब होता है. जखमों से वह तकलीफ पाता है, मखमों से वह हमदर्दी रखता है, प्रेम का शब्द उसको प्यारा है और सुन्दरता का वह मतवाला है क्यों कि विनाश. (तखरीब) वह चाहता नहीं,

یا سندر
 خون کے آنسوؤں کا نذرانہ
 دمبر سار
 زمان (تعمیر) اس کا کام ہو اور سیوا اس کا دھرم یعنی خدمت اس کا مذہب۔ کربیا کر کے مجھ دل ڈکھے اور غم بھڑکے کی طرف سے السائیت کے نام پر اپنے تمام دلش بھائیوں کے سوگ اور تیاگ میں "خون ہندستان" کے دامن پر یہ انمول تحفہ قبول کیجئے۔ بھارت کی آزادی کی یادگار میں اور کرائی کی نشانی میں۔

ایک لحاظ سے ایسا بھی کھجور کہ یہ جنت کی طرف سے نیتاؤں کی گردن میں ڈالنے کے لئے ان کی پڑائی اس کی ایک امر بھینٹ، البتہ روپ میں ذرا فرق آیا ہو وہ بھی آج کی پرمستھی کے لحاظ سے۔ ہند بلا شک انمول بہ تن مالا ہو اور آنسوؤں کے موتیوں کا بہت بھاری ہار ہو۔

کتنا سندر سندر جیسے دن کی زنگت!

کیسا چھل بل چھل بل جیسے بہتا سمندر!!
 میری دلی دعا ہو کہ خدا بہ ہشر ہند (بڑا عظم ہند) کے تمام رہنے والوں کی قسمت میں امن اور آسکشتی کی زندگی نصیب کرے۔ یعنی انسانی زندگی— اور جموالتی زندگی کے بڑے رکھے۔ آمین!

پیش دن کے = جھگڑے نئے ساری سرکشتی کے لئے عذاب جان ہو سہیت تھیں۔ بات یہ ہو کہ سوار تکہ اور خود غرضی دلش کا مات بگلا ہو اور تباہی کو دعوت دے دے کر بلا رہی ہو۔ یہی ہمارے درد دکھ کا اصلی کارن ہو۔ جب تک ہمارے کاموں میں تباہی وہ سیاسی ہوں سماجی ہوں یا رہتی! رواداری

نیا ہیند خون کے آسٹوؤں کا نذرانا ديسمببر سن ۱۹۰۶
 निर्माण (तामोर) उसका काम है और सेवा उसका धर्म यानी खिदमत उसका मन्वह्व. कृपा करके मुक्त दिल दुखे और राम भरे की तरफ से इनसानियत के नाम पर अपने तमाम देश भाइयों के सोग और त्याग में "खूनी हिन्दुस्तान" के दामन पर यह अनमोल तोहफा कुबूल कीजिये—भारत की आजादी की यादगार में और कान्ति की निशानी में.

एक लिहाज से ऐसा भी समझो कि यह जनता की तरफ से नेताओं की गरदन में डालने के लिये उनकी पुरानी आस की एक अमर भेंट. अलवत्ता रूप में जरा फर्क आ गया है वह भी आज की परिस्थिति के लिहाज से. वरना चिला शक अनमोल यह रतन माला है और आसुओं के मोतियों का बहुत भारी हार है—

कितना सुन्दर, सुन्दर जैसे दिल की रंगत!
 कैसा झिलमिल झिलमिल जैसे बहता समन्दर!!
 मेरी दिली दुआ है कि खुदा बृहत्कार हिन्द (चर्रे आचम हिन्द) के तमाम रहने बसने वालों की किस्मत में अमन और आशती को खिन्दगी नसीब करे. यानो इनसानो खिन्दगी—और हैवानी खिन्दगी से परे रखे. आर्मीन!

निश दिन के यह भागड़े टंटे सारी सृष्टि के लिये आचाव जान हो रहे हैं. बात यह है कि स्वार्थ और खुदगर्बी देश का माट बिगाड़ रही है और तवाही को दावत दे दे कर बुला रही है. यही हमारे दर्द दुख का असली कारन है. जब तक हमारे कामों में चाहे वह सियासी हों, समाजी हों या निजी, रबादारी

नया हिन्द खून के आँसुओं का नजराना दिसम्बर सन १९७७

नहीं बरती जाएगी जिन्दगी ऐश और आराम को तरसती रहेगी. अगर जानो समझो तो फ़क़त एक उदारता का नाम मानवता का काम दे सकता है, यानी इन्सानियत के अच्छे और सुन्दर मक़सद का प्रचारक बन सकता है. यह वह वक़्त है कि इन्सान को अत्याचारी की जगह प्रेमधारी होना चाहिये क्यों कि प्रेम में अपना ही मान है और बिला प्रेम नुक़सान ही नुक़सान है. दोनों तरफ़.

ख़रूरत है कि हर तरफ़ प्रेम का चाव हो. रबादारी का प्रचार हो. परोपकार हो. विश्वास हो यानो सारो मृष्टि एक जीवन, एक प्राण हो. तबही जीवन सुखारी बन सकता है और आनन्द मिल सकता है, वरना नहीं.

मेरा पक्का विश्वास है कि सिर्फ़ उदारता के शब्द के अन्दर शान्ति का सन्देश मौजूद है और जीवन का सुन्दरपन भी उसी के अन्दर छिपा हुआ है. उसको काम में लाना हमारा काम है. जब तक हमारे अन्दर से पहली चीज़ (स्वार्थ) न जाए और दूसरा (उदारता) हमारे अन्दर न आए अमन शान्ति का आस रखना, मेरे खयाल में, एक सपने (ख़्वाब) से ज्यादा कुछ नहीं. लेकिन तज़रबा (अनुभव) हमें यह भी बताता है कि इस एक का जाना और दूसरी का आना जीवन के इस ख़ूनी भाग में या कम से कम इस युग में बहुत दुर्बार है.

मैं बड़ी नछता के साथ परमात्मा (खुदा) से प्रार्थना करता हूँ और बड़ी आशा रखता हूँ कि देश राज के लोक राज में सुख का राज हो ताकि हर किस्म के लोग चाहा सुख सन्तोष पाएँ और अमन चैन से रहें सहें और मेरा

दम्बरसिंह

नियामसन्द

खून के आँसुओं का नजराना
नहीं बरती जाएगी
जिन्दगी ऐश और आराम को तरसती रहेगी. अगर जानो समझो तो फ़क़त एक उदारता का नाम मानवता का काम दे सकता है, यानी इन्सानियत के अच्छे और सुन्दर मक़सद का प्रचारक बन सकता है. यह वह वक़्त है कि इन्सान को अत्याचारी की जगह प्रेमधारी होना चाहिये क्यों कि प्रेम में अपना ही मान है और बिला प्रेम नुक़सान ही नुक़सान है. दोनों तरफ़.

ज़रूरत है कि हर तरफ़ प्रेम का चाव हो. रबादारी का प्रचार हो. परोपकार हो. विश्वास हो यानी सारो मृष्टि एक जीवन, एक प्राण हो. तब ही जीवन सुखारी बन सकता है और आनन्द मिल सकता है, वरना नहीं.

मेरा पक्का विश्वास है कि सिर्फ़ उदारता के शब्द के अन्दर शान्ति का सन्देश मौजूद है और जीवन का सुन्दरपन भी उसी के अन्दर छिपा हुआ है. जब तक हमारे अन्दर से पहली चीज़ (स्वार्थ) न जाए और दूसरा (उदारता) हमारे अन्दर न आए अमन शान्ति का आस रखना, मेरे खयाल में, एक सपने (ख़्वाब) से ज्यादा कुछ नहीं. लेकिन तज़रबा (अनुभव) हमें यह भी बताता है कि इस एक का जाना और दूसरी का आना जीवन के इस ख़ूनी भाग में या कम से कम इस युग में बहुत दुर्बार है.

मैं बड़ी नछता के साथ परमात्मा (खुदा) से प्रार्थना करता हूँ और बड़ी आशा रखता हूँ कि देश राज के लोक राज में सुख का राज हो ताकि हर किस्म के लोग चाहा सुख सन्तोष पाएँ और अमन चैन से रहें सहें और मेरा

खून के आँसुओं का नजराना
नियामसन्द
नहीं बरती जाएगी
जिन्दगी ऐश और आराम को तरसती रहेगी. अगर जानो समझो तो फ़क़त एक उदारता का नाम मानवता का काम दे सकता है, यानी इन्सानियत के अच्छे और सुन्दर मक़सद का प्रचारक बन सकता है. यह वह वक़्त है कि इन्सान को अत्याचारी की जगह प्रेमधारी होना चाहिये क्यों कि प्रेम में अपना ही मान है और बिला प्रेम नुक़सान ही नुक़सान है. दोनों तरफ़.

वह पैगाम क्या है ?

प्रेम और सेवा यानी मुहब्बत और खिदमत. यही धरम और इल-
लाह की शिक्षा है. यही इनसानियत की सुन्दरता है. यही कुरान की
रूह है, यही गीता का सार है. और यहाँ पवित्र आत्मा की पुकार है.
जिसने इस पुकार को सुन लिया और जिसने इस राज (रहस्य)
को समझ लिया समझो उसने अपने नैतिक कर्तव्य (इल्लाही कर्ज)
को पहचान लिया. वस जीवन भर उसके लिये शान्ति ही शान्ति है.
यहाँ भी और वहाँ भी.

जहाँ पर आप है, फिर तुम है और फिर तू है
इसी से हिन्दू में फैली निकाह की बू है.

मादरे हिन्दोस्ताँ तेरे अगर दिन नेक हों
फिर तो मुसलिम और हिन्दू दिल से दोनों एक हों.

नखले उलकत काट कर बैठोगे किसकी छाँव में
अपने हाथों से न मारो तुम कुल्हाड़ी पाँव में

खुदा जाने यह कैसी जंग है यह कैसी अनबन है.
किसी के हम नहीं दुशमन जमाना फिर भी दुशमन है.

—'विस्मिल' साहब
इलाहाबादी.

वह पैगाम क्या है ?
प्रेम और सेवा यानी मुहब्बत और खिदमत. यही धरम और इल-
लाह की शिक्षा है. यही इनसानियत की सुन्दरता है. यही कुरान की
रूह है, यही गीता का सार है. और यहाँ पवित्र आत्मा की पुकार है.
जिसने इस पुकार को सुन लिया और जिसने इस राज (रहस्य)
को समझ लिया समझो उसने अपने नैतिक कर्तव्य (इल्लाही कर्ज)
को पहचान लिया. वस जीवन भर उसके लिये शान्ति ही शान्ति है.
यहाँ भी और वहाँ भी.

जहाँ पर आप है, फिर तुम है और फिर तू है
इसी से हिन्दू में फैली निकाह की बू है.

मादरे हिन्दोस्ताँ तेरे अगर दिन नेक हों
फिर तो मुसलिम और हिन्दू दिल से दोनों एक हों.

नखले उलकत काट कर बैठोगे किसकी छाँव में
अपने हाथों से न मारो तुम कुल्हाड़ी पाँव में

खुदा जाने यह कैसी जंग है यह कैसी अनबन है.
किसी के हम नहीं दुशमन जमाना फिर भी दुशमन है.

—'विस्मिल' साहब
इलाहाबादी.

अहंसा के विकास पर एक नज़र

(श्री केशव लाल शर्मा द्वारा)

असल के तौर पर अहिंसा का विचार महावीर और बुद्ध से ज्योत पुराना हो सकता है. महावीर का तरह शायद बुद्ध भी जैनों के पारसनाथ तीर्थकर के पंथ में पले हुए थे. तब यह नहीं कहा जा सकता कि अहिंसा धर्म की दोनों में से किसी ने नई स्थापना की. लेकिन मुझे पता नहीं कि उनके जमाने से पहले अहिंसा का किस रूप में आम तौर पर पालन होता था, और लोगों में कितनी हद तक फैला हुआ था. इस लिये मैं बुद्ध महावीर से इस लेख को शुरूआत करता हूँ.

देखने में अहिंसा शब्द नाकारी (निवृत्ति पर) है. खास तरह के काम करने से हिंसा होती है. अहिंसा के माने सिर्फ इतने ही हो सकते हैं कि वैसे काम से रुक जाना. मैं दूसरे जीव को तक-लॉफ़ देने से हाथ रोक लूँ. इसका मतलब यह नहीं कि मुझे उस जीव के लिये कुछ अनुराग हमदर्दी होना चाहिये या उसकी सेवा, मदद करनी चाहिये. इतना ही नहीं बल्कि अहिंसा के लिये यह भी जरूरी नहीं कि अगर वह जीव ऐसी मुश्किल में हो जिसके लिये मैं जिम्मेदार नहीं तो उसे बचाने के लिये मुझे कुछ करना चाहिये. ❀

❀ अहिंसा धर्म के माने हैं हिंसा न करना और इस हिंसा

देखने में अहंसा शब्द, नालायी (नो रसि) पर) है.

खास तरह के काम करने से अहंसा होती है. अहंसा के लिये मुझे इतने ही हो सकते हैं कि वैसे काम से रुक जाना. मैं दूसरे जीव को तक-लॉफ़ देने से हाथ रोक लूँ. इसका मतलब नहीं कि मुझे उस जीव के लिये कुछ अनुराग हमदर्दी होना चाहिये या उसकी सेवा, मदद करनी चाहिये. इतना ही नहीं बल्कि अहंसा के लिये यह भी जरूरी नहीं कि अगर वह जीव ऐसी मुश्किल में हो जिसके लिये मैं जिम्मेदार नहीं तो उसे बचाने के लिये मुझे कुछ करना चाहिये. ❀

❀ अहंसा धर्म के लिये अहंसा न करना और इस अहंसा

आदमी को अहिंसा धर्म सूझता ही नहीं अगर जिस समाज में वह रहा हो उसमें बड़े पैमाने पर हिंसा की आदतें फैली हुई न हों। ऐसी आदतों में एक आदत मानस यानी गोरत खाने की है, आम तौर पर आदमी जल भान्स खाने वाली है, और अपने खुराक के लिये हर रोज हचारों की जान लेती है, पिछले जमाने में सब लोग अपने देवों को भी मानस का भोग देते थे, वह धर्म का एक पाक काम समझा जाता था, तब क्रूरता थी कि जो आदमी समाज में ज्यादा धार्मिक या पैसे वाला या ऊँचे अधिकार न करने पर ही जोर दिया जाता है, यह नीचे के लिखान से समझ में आ जायगा, मान लो एक आदमी भूकों को नाज बाटता है और किसी अहिंसा धर्मों से पूछता है कि उसका यह काम पुन्य का है या पाप का इस बारे में भगवान महावीर ने साफ बताया है कि ऐसे सौके पर अहिंसा धर्मो चुप रहे, कोई जवाब न दे, वह ऐसा भी न कहे कि वह काम पुन्य का है क्यों कि उसका कर्ज है कि वह किसी भी बल या अचल जान की हिंसा को अपनी मंजूरी न दे, और वह यह भी न कहे कि वह काम पाप का है क्यों कि उससे वह भूके को दान पाने में रुकावट डालने वाला हो जायगा, जो ऐसे दान की सराहना करता है वह नाज में रहे जीवों के नाश में सामी-होला है और जो उसमें पाप बताता है वह दूसरे जीवों के जीने का साधन बन्द करता है, इसलिये अहिंसा धर्मो चुप रह कर दोनों पापों से खुद को बचा ले,

"The Cult of Ahimsa"—Le Shri Chand Rampuriya pr. 41.

न्यास-सुन्दर अहंसा के दकास पर एक नजर दिसम्बर १९७७

आदमी को अहंसा दसम सुज्झता ही नहीं अगर जिस समाज में वह माया हो उस में बुरे बिलाने पर अहंसा की आदतें बसली होती न हों, ऐसी आदतों में एक आदत मानस यानी गोरत खाने की है, आम तौर पर आदमी जल भान्स खाने वाली है, और अपने खुराक के लिये हर रोज हचारों की जान लेती है, पिछले जमाने में सब लोग अपने देवों को भी मानस का भोग देते थे, वह धर्म का एक पाक काम समझा जाता था, तब क्रूरता थी कि जो आदमी समाज में ज्यादा धार्मिक या पैसे वाला या ऊँचे अधिकार न करने पर ही जोर दिया जाता है, यह नीचे के लिखान से समझ में आ जायगा, मान लो एक आदमी भूकों को नाज बाटता है और किसी अहिंसा धर्मों से पूछता है कि उसका यह काम पुन्य का है या पाप का इस बारे में भगवान महावीर ने साफ बताया है कि ऐसे सौके पर अहिंसा धर्मो चुप रहे, कोई भी न कहे कि वह काम पुन्य का है क्यों कि उसका कर्ज है कि वह किसी भी बल या अचल जान की हिंसा को अपनी मंजूरी न दे, और वह यह भी न कहे कि वह काम पाप का है क्यों कि उससे वह भूके को दान पाने में रुकावट डालने वाला हो जायगा, जो ऐसे दान की सराहना करता है वह नाज में रहे जीवों के नाश में सामी-होला है और जो उसमें पाप बताता है वह दूसरे जीवों के जीने का साधन बन्द करता है, इसलिये अहिंसा धर्मो चुप रह कर दोनों पापों से खुद को बचा ले,

नकुरने पर ही जोर दिया जाता है, यह नीचे के लिखान से समझ में आ जायगा, मान लो एक आदमी भूकों को नाज बाटता है और किसी अहिंसा धर्मों से पूछता है कि उसका यह काम पुन्य का है या पाप का इस बारे में भगवान महावीर ने साफ बताया है कि ऐसे सौके पर अहिंसा धर्मो चुप रहे, कोई भी न कहे कि वह काम पुन्य का है क्यों कि उसका कर्ज है कि वह किसी भी बल या अचल जान की हिंसा को अपनी मंजूरी न दे, और वह यह भी न कहे कि वह काम पाप का है क्यों कि उससे वह भूके को दान पाने में रुकावट डालने वाला हो जायगा, जो ऐसे दान की सराहना करता है वह नाज में रहे जीवों के नाश में सामी-होला है और जो उसमें पाप बताता है वह दूसरे जीवों के जीने का साधन बन्द करता है, इसलिये अहिंसा धर्मो चुप रह कर दोनों पापों से खुद को बचा ले,

"The Cult of Ahimsa"—Le Shri Chand Rampuriya pr. 41.

नया हिन्दू अहिंसा के विकास पर एक नजर - दिसम्बर सन् '४७
 पर हो वह धर्म के लिये या मेखबानों के लिये मामूलो आदिमियों
 से ज्यादा जानें ले. इसलिये सैकड़ों यज्ञों में अनगिनत जांबों की
 बलि कर अपनी बड़ी धार्मिकता के लिये मराहर हुए राजाओं की
 कथाएँ हम पुरानों में पढ़ते हैं.

पैसी हालत में हिन्दुस्तान जैसे देश में इस तरह की बेहद
 हिंसा से परेशान गम्भीर विचारकों का पैदा होना अचरज की
 बात नहीं. वेखबान प्राणियों की जान लेना और वह भी
 धर्म के नाम पर, उन्हें बरदाश्त न हुआ हिन्दुस्तान की आबोहवा
 में जीने के लिये भी मान्स खाने की जरूरत नहीं, बल्कि कह
 सकते हैं कि वह बेजरूरी है. शायद मानसाहार सारी प्रजा में,
 आर्यों में और यहाँ के पुराने रहने वालों दोनों में एक सा हो
 तो भी मुमकिन है कि यज्ञ के लिये जानवर मारने का रिवाज
 वैदिक धर्म का खास हिस्सा रहा हो. जैसा मैंने शुरू में बतलाया
 है मुमकिन है बुद्ध वैदिक धर्म में पले न हों. इस लिये पहले
 से ही उन पर यज्ञ पर श्रद्धा का कोई खारदार संस्कार न
 हो. खास कर उन्होंने ही यज्ञों के खिलाफ जोर से प्रचार किया
 माख्म होता है. उन्होंने मानसाहार छोड़ने पर बहुत जोर दिया
 हो ऐसा नहीं दिखता. लेकिन यज्ञों के नाम पर होती हुई हिंसा
 के सामने उन्होंने आवाज उठाई और मान्स खाने की आदत
 का कुछ हद तक रोकने की कोशिश की. कुछ दिन ऐसे भी
 ठहराए जिनमें मान्स ग्याया न जाए. चिना मान्स की खुराक का
 हो बुद्ध धर्म में खार न होने से आम तौर पर बौद्ध लोग सिक
 सबकी खाने वाले नहीं पाये जाते. लेकिन बुद्ध धर्म के प्रचार

न्यास -
 अन्सा के क्वास पर एक नजर
 १७००
 के लिये यासिर्बानी के लिये معمولी आदिमों से
 १७००
 के लिये सैकड़ों गिणों में अनगिनत जीवों
 की बली कर अपनी बड़ी धार्मिकता के लिये मराहर हुए राजाओं की
 कथाएँ हम पुरानों में पढ़ते हैं.

पैसी हालत में हिन्दुस्तान जैसे देश में इस तरह की बेहद
 हिंसा से परेशान गम्भीर विचारकों का पैदा होना अचरज की बात नहीं.
 वेखबान प्राणियों की जान लेना और वह भी धर्म के नाम पर, उन्हें
 बरदाश्त न हुआ. हिन्दुस्तान की अब व हवा में जिने के लिये भी मान्स
 खाने की जरूरत नहीं बल्कि कह सकते हैं कि वह बेजरूरी हो. शायद
 मानसाहार सारी प्रजा में, आर्यों में और यहाँ के पुराने रहने
 वालों दोनों में एक सा हो तो भी मुमकिन है कि यज्ञ के लिये जानवर
 मारने का रिवाज वैदिक धर्म में पले न हों. इस लिये पहले
 से ही उन पर यज्ञ पर श्रद्धा का कोई खारदार संस्कार न हो. खास कर
 उन्होंने ही यज्ञों के खिलाफ जोर से प्रचार किया
 माख्म होता है. उन्होंने मानसाहार छोड़ने पर बहुत जोर दिया
 हो ऐसा नहीं दिखता. लेकिन यज्ञों के नाम पर होती हुई हिंसा
 के सामने उन्होंने आवाज उठाई और मान्स खाने की आदत
 का कुछ हद तक रोकने की कोशिश की. कुछ दिन ऐसे भी
 ठहराए जिनमें मान्स ग्याया न जाए. चिना मान्स की खुराक का
 हो बुद्ध धर्म में खार न होने से आम तौर पर बौद्ध लोग सिक
 सबकी खाने वाले नहीं पाये जाते. लेकिन बुद्ध धर्म के प्रचार

नया हिन्दू अहिंसा के विकास पर एक नजर दिसम्बर सन् १९७७

के साथ जानवर यज्ञ कम हुए और हिन्दुस्तान के कुछ हिस्सों में से विल्कुल निकल गए. आगे जाकर अग्रचे बौद्ध धर्म इस देश में से टल गया फिर भी नई खिन्दगी पाए हुए वैदिक धर्म में यज्ञ धर्म को पहले जितनी इज्जत नहीं मिली. वैदिक धर्म से ही निकले हुए वैष्णव वगैरा सम्प्रदायों ने पशु यज्ञ की जगह नाज वगैरा के यज्ञ जारी किये और जानवर की कुरबानी का विरोध वादों की तरह ही किया.

दर्मियान में महावीर के उपदेशों का भी साथ साथ प्रचार होता रहा. यह शक है कि महावीर के समय के जैन पूरे शाका-दारी होंगे या नहीं लेकिन इसमें शक नहीं कि आगे चल कर जैनियों ने अहिंसा के इस पइलू को एक तय किये रूप में बढ़ाया और उसका विकास किया. इस दिशा में अहिंसा की भावना का ज्यादा से ज्यादा अमल होने के खयाल से खिन्दगी की आदतों और खुराक कायम कर देने के लिये उन्होंने जीव-विद्या (Biology) को बड़ी लगन के साथ पढ़ा और समझा और जात जात के जावों के भेद खोले. उन्होंने बतलाया कि सन्धी की खुराक पर जीवन अच्छी तरह चल सकता है और सैकड़ों गृहस्थियों में वैसी आदतें डालीं. सन्धी की खुराक जैन धर्म का खास और जरूरी हिस्सा बना और न्यौहार में अहिंसा के मानी इतने ही हो गए कि छोटे से छोटे जानदार को भी मारा न जाए. मानसाहार किया न जाये इतना ही नहीं कई तरह की सब्बियाँ भी छोड़ दी जाईं.

मालूम होता है कि वैष्णव धर्म ने बौद्ध और जैन धर्मों के

सिंहासना के अन्हा के एक नजर

के साथ जावर गिमे कम होये और हन्दस्तान के कुछ हिस्सों में से अकल नल गये. आगे जाकर अग्रचे बौद्ध धर्म इस देश में से टल गया फिर भी नई खिन्दगी पाए हुए वैदिक धर्म में यज्ञ धर्म को पहले जितनी इज्जत नहीं मिली. वैदिक धर्म से ही निकले हुए वैष्णव वगैरा सम्प्रदायों ने पशु यज्ञ की जगह नाज वगैरा के यज्ञ जारी किये और जानवर की कुरबानी का विरोध वादों की तरह ही किया.

दरमियान में महावीर के अइदेशों का भी साथ साथ प्रचार होता रहा. यह शक है कि महावीर के समय के जैन पूरे शाका-दारी होंगे या नहीं लेकिन इस में शक नहीं कि आगे चल कर जैनियों ने अहिंसा के इस पइलू को एक तय किये रूप में बढ़ाया और उसका विकास किया. इस दिशा में अहिंसा की भावना का ज्यादा से ज्यादा अमल होने के खयाल से खिन्दगी की आदतों और खुराक कायम करने के लिये उन्होंने जीव-विद्या (Biology) को बड़ी लगन के साथ पढ़ा और समझा और जात जात के जावों के भेद खोले. उन्होंने बतलाया कि सन्धी की खुराक पर जीवन अच्छी तरह चल सकता है और सैकड़ों गृहस्थियों में वैसी आदतें डालीं. सन्धी की खुराक जैन धर्म का खास और जरूरी हिस्सा बना और न्यौहार में अहिंसा के मानी इतने ही हो गये कि छोटे से छोटे जानदार को भी मारा न जाये. मानसाहार किया न जाये इतना ही नहीं कई तरह की सब्बियाँ भी छोड़ दी जाईं.

मसलूम होता है कि विश्वो दसम ने बौद्ध और जैन धर्मों के

बीच का रास्ता लिया. उसने यह बहुत कुछ मान लिया कि यत् और श्रुतक के लिये जानदारों की हिंसा नहीं की जा सकती. लेकिन साग-सन्धियों के बारे में वह जैनों जैसी वारीकियों में नहीं उतरा और खाने लायक करीब सब तरह की सन्धियों लेने की छुट्टी रखली. अगर एक दो चीजें छोड़ दीं तो वह अहिंसा की नजर से नहीं किसी दूसरी वजह से.

अब यह समझ लेना चाहिये कि अहिंसा की भावना दिल में पैदा होने से पहले आदमी में कुछ हद तक प्यार मुहब्बत की भावना का विकास हो जाना चाहिये. प्यार और मुहब्बत के कारन अहिंसा में श्रद्धा पैदा होती है. यह नहीं होता कि अहिंसा की वजह से प्यार मोहब्बत जागते हों. इसलिये व्यौहार में हिंसा न करने की यान्ती अहिंसा धर्म के साथ साथ हिंसा के फैलने में भी मदद मिली और वह बेजवान प्राणियों के लिये प्यार मोहब्बत की शकल में जाहिर हुई. फिर वह चाहे किसी एक आदमी में रही हो या एक समाज में. गोरक्षा, पिंजरा पोल, बन्दर, कुत्ते, चाँटी, मक्खी, कछुवा वगैरा जानदारों को खिलाना, खटमल जैसे नाबीज जानदार को भी बचाना वगैरा का जीव दया के नाम पर रिवाज चला.

इसमें भले ही यह कहा जाए कि इन कामों में समझ की तराब के दोनों पल्ले ठीक ठीक न रह सकें, फिर भी इन धर्मों के मानने वालों में बेजवान जानवरों को प्यार मोहब्बत करने की कोशिश पाई जाती है. इन कोशिशों की वजह से जो एक खास भावना हिन्दुस्तान में मजबूती के साथ बढ़ गई वह गोरक्षा की है. गोबध

नया हस्त अहिंसा के विकास पर एक नजर
 निज का रास्ता लिया. उसने यह बहुत कुछ मान लिया कि यत् और श्रुतक के लिये जानदारों की हिंसा नहीं की जा सकती. लेकिन साग-सन्धियों के बारे में वह जैनों जैसी वारीकियों में नहीं उतरा और खाने लायक करीब सब तरह की सन्धियों लेने की छुट्टी रखली. अगर एक दो चीजें छोड़ दीं तो वह अहिंसा की नजर से नहीं किसी दूसरी वजह से.
 अब यह समझ लेना चाहिये कि अहिंसा की भावना दिल में पैदा होने से पहले आदमी में कुछ हद तक प्यार मुहब्बत की भावना का विकास हो जाना चाहिये. प्यार और मुहब्बत के कारन अहिंसा में श्रद्धा पैदा होती है. यह नहीं होता कि अहिंसा की वजह से प्यार मोहब्बत जागते हों. इसलिये व्यौहार में हिंसा न करने की यान्ती अहिंसा धर्म के साथ साथ हिंसा के फैलने में भी मदद मिली और वह बेजवान प्राणियों के लिये प्यार मुहब्बत की शकल में जाहिर हुई. फिर वह चाहे किसी एक आदमी में रही हो या एक समाज में. गोरक्षा, पिंजरा पोल, बन्दर, कुत्ते, चाँटी, मक्खी, कछुवा वगैरा जानदारों को खिलाना, खटमल जैसे नाबीज जानदार को भी बचाना वगैरा का जीव दया के नाम पर रिवाज चला.

इसमें भले ही यह कहा जाए कि इन कामों में समझ की तराब के दोनों पल्ले ठीक ठीक न रह सकें, फिर भी इन धर्मों के मानने वालों में बेजवान जानवरों को प्यार मोहब्बत करने की कोशिश पाई जाती है. इन कोशिशों की वजह से जो एक खास भावना हिन्दुस्तान में मजबूती के साथ बढ़ गई वह गोरक्षा की है. गोबध

नया हिन्दू अहिंसा के विकास पर एक नजर दिसम्बर सन् '४७

हो ही नहीं सकता—यज्ञों के लिये भी नहीं और खुराक के लिये तो चिल्कुल ही नहीं। पशु हिंसा को इस रोक को करीब करीब सभी ने मान लिया। पारसियों, यूरोपियों के आने से पहले के ईसाइयों और बहुत से मुसलमान राजाओं और अलग अलग आदिमियों ने भी इस रोक को माना। वेद धर्म की नए से बढ़ती होने के बाद कुछ पशु यज्ञ फिर से जारी हुए। तो भी गाय और बैल बलि न देने लायक और न खाए जाने लायक हो समझे गए। दूसरे प्राणियों की हिंसा के बारे में गारत खाने वाले और साग सब्जो खाने वाले ऐसे दो भेद पड़े गए। गोशत खाने वालों को तादाद बहुत बड़ी होने पर भी साग सब्जी खाने वालों को जमात काली बड़ी और बर्सी-लेदार हिन्दुओं को बनी हुई है।

बौद्ध जैन और नए चले वेद धर्म की मिली जुली कोशिशों के प्रचार के बारे में निकला हुआ यह मोटा हिसाब है, ऐसा कह सकते हैं।

बौद्ध धर्म के उपदेशों में अमली अहिंसा यानो प्यार मोहब्बत के कामों पर भी बहुत जोर दिया गया है। बौद्ध धर्म को कितानों में मिसाल के तौर पर ऐसी बहुत सो कथाएँ मिलती हैं लेकिन कम से कम हिन्दुस्तान में अहिंसा का यह पहलू तरीके से और इन्तजाम के साथ काम में लाया गया हो, ऐसा देखने में नहीं आता। इस अमली अहिंसा के विकास के लिये दुनिया ईसाई धर्म की एहसान-मन्द है।

ऐसा मालूम होता है कि ईसा मसीह का खानगी जीवन धर्म के उपदेश के साथ साथ रोगियों की सेवा में भी लगा हुआ रहता

दिसम्बर १९४७

अहिंसा के विकास पर एक नजर

हो ही नहीं सकता—गैरों के लिये भी नहीं और खुराक के लिये तो बिल्कुल ही नहीं। पशु हिंसा को इस रोक को करीब करीब सभी ने मान लिया। पारसियों, यूरोपियों के आने से पहले के ईसाइयों और बहुत से मुसलमान राजाओं और अलग अलग आदिमियों ने भी इस रोक को माना। वेद धर्म की नए से बढ़ती होने के बाद कुछ पशु यज्ञ फिर से जारी हुए। तो भी गाय और बैल बलि न देने लायक और न खाए जाने लायक हो समझे गए। दूसरे प्राणियों की हिंसा के बारे में गारत खाने वाले और साग सब्जो खाने वाले ऐसे दो भेद पड़े गए। गोशत खाने वालों को तादाद बहुत बड़ी होने पर भी साग सब्जी खाने वालों को जमात काली बड़ी और बर्सी-लेदार हिन्दुओं को बनी हुई है।

बौद्ध जैन और नए चले वेद धर्म की मिली जुली कोशिशों के प्रचार के बारे में निकला हुआ यह मोटा हिसाब है, ऐसा कह सकते हैं।

बौद्ध धर्म के उपदेशों में अमली अहिंसा यानो प्यार मोहब्बत के कामों पर भी बहुत जोर दिया गया है। बौद्ध धर्म को कितानों में मिसाल के तौर पर ऐसी बहुत सो कथाएँ मिलती हैं लेकिन कम से कम हिन्दुस्तान में अहिंसा का यह पहलू तरीके से और इन्तजाम के साथ काम में लाया गया हो, ऐसा देखने में नहीं आता। इस अमली अहिंसा के विकास के लिये दुनिया ईसाई धर्म की एहसान-मन्द है।

ऐसा मालूम होता है कि ईसा मसीह का खानगी जीवन धर्म के उपदेश के साथ साथ रोगियों की सेवा में भी लगा हुआ रहता

होगा. दिल दिमाग के मरीजों को उपदेशों से और तन के मरीजों की खिदमत दवाइयों से बह करते रहे होंगे. इस दूसरे क्रिसम की सेवा को बाइबिल में चमत्कारों के तौर पर बताया गया है. धार्मिक पुरुषों की चिन्दगी इस तरह लिखने का पुराने खमाने में सारी दुनिया में रिवाज था. मेरा खयाल है कि चमत्कारों के अलावा खुद को मान्स् हों ऐसी दवाइयों और खिदमत सेवा के चरिये ईसा रोगियों की सेवा करते होंगे. क्यों कि अगर चमत्कारों से ही रोगियों को बह अच्छा करते होते तो यह मुमकिन नहीं कि जिस तरह इस प्रकार की सेवा का काम करना ईसाई साधुओं और दाताओं का एक खास अंग बना है वैसा बह हो सकता. लगभग सारी दुनिया के बड़े गुरुओं और सन्तों के चरित्रों में चमत्कार से रोग मिटाने के क्रिस्से पाए जाते हैं. फिर भी उनके पन्थों में रोगियों की खिदमत करने को आदत पैदा हुई हो सो बात देखने में नहीं आती. ऐसा लिखते वक़्त मैं इस बात को नहीं भुला सकता कि ऐसे भी कष्ट पादरी हो चुके हैं जिन्होंने दवाइयों से इलाज करने वालों को सख्त मना किया है और अपनी हुकूमत के दिनों में बंसा करने वालों को सजायें फरमाई हैं. फिर भी इस तरह की खिदमत ईसाई साधना का एक कायमी हिस्सा बना है और उस काम के लिये अपनी चिन्दगी शर्हाद करने वाले पवित्र मंद औरतों को अटूट परम्परा आज तक चली आई है. ऐसी सेवा के बड़े बड़े मिशन कायम कर उन्होंने उनकी नमूनेदार संस्थाएँ बनाई हैं और सभी पन्थों और फिरकों के सब देशों के ईसाइयों ने इन संस्थाओं को खुले हाथ मदद दी है. नासमझों असंस्कारी

खासतः अहंसा के विकास पर एक नजर दिसम्बर ४७

होगा. दिल दिमाग के मरीजों को उपदेशों से और तन के मरीजों की खिदमत दवाइयों से बह करते रहे होंगे. इस दूसरे क्रिसम की सेवा को बाइबिल में चमत्कारों के तौर पर बताया गया है. धार्मिक पुरुषों की चिन्दगी इस तरह लिखने का पुराने खमाने में सारी दुनिया में रिवाज था. मेरा खयाल है कि चमत्कारों के अलावा खुद को मान्स् हों ऐसी दवाइयों और खिदमत सेवा के चरिये ईसा रोगियों की सेवा करते होंगे. क्यों कि अगर चमत्कारों से ही रोगियों को बह अच्छा करते होते तो यह मुमकिन नहीं कि जिस तरह इस प्रकार की सेवा का काम करना ईसाई साधुओं और दाताओं का एक खास अंग बना हो सकता. लगभग सारी दुनिया के बड़े गुरुओं और सन्तों के चरित्रों में चमत्कार से रोग मिटाने के क्रिस्से पाए जाते हैं. फिर भी उनके पन्थों में रोगियों की खिदमत करने की आदत पैदा हो चुकी है और अपनी हुकूमत के दिनों में बंसा करने वालों को सजायें फरमाई हैं. फिर भी इस तरह की खिदमत ईसाई साधना का एक कायमी हिस्सा बना है और उस काम के लिये अपनी चिन्दगी मने करने वाले पवित्र मंद औरतों को अटूट परम्परा आज तक चली आई है. ऐसी सेवा के बड़े बड़े मिशन कायम कर उन्होंने उनकी नमूनेदार संस्थाएँ बनाई हैं और सभी पन्थों और फिरकों के सब देशों के ईसाइयों ने इन संस्थाओं को खुले हाथ मदद दी है. नासमझों असंस्कारी

نیا ہندہ
اہنسا کے وکاس پر ایک نظر
دیکر سٹارٹ

اور روگیاں سے دکھی آدمیوں کی سیدیا کے سنگھٹن کو عیسائی مذہب سے یوسا ہوا اہنسا دھرم کی خاص چیز کی جاسکتی ہے۔

اسلام نے نام لے کر اہنسا کے اصول پر بہت زور نہیں دیا لیکن اس کا مطلب یہ نہیں کہ اس نے اہنسا کو کچھ جملہ نہیں دیا۔ جوں جوں کہ بیابج کا ناجائز فائدہ اٹھا کر جس طرح آدمی آدمی کی اہنسا کرتا ہو اس پر سب سے پہلے دھیان دینے والوں میں شاید اسلام

ہو۔ جنی مضمون میں آج ہم بھائی چارے اور سماج واد کو سمجھتے ہیں۔ (یعنی پو پوچی۔ واد خاص اٹھکار، اگرتی حکومت وغیرہ کے ورو دھما) ان

مضمونوں میں اسلام کے ان اصولوں کا امیڈیش کیا نہیں، لیکن غلامی کی پرکھا سیدو خوری اور دھارمک اور سماج واد میں دکھائے جانے والے فرقوں کا اس نے ورو دھ کیا ہے اور ان اور تمیوں کی سنتھما

پر زور دیا ہے۔ کہہ سکتے ہیں کہ سیدو خوری کی منا ہی اہنسا کو اسلام کی غلامی دین ہے۔ اس بار سے میں یہودی اور ہندو دھرموں سے اس کا ورو دھما

دھارمک بیلاری سے سمبندھ نہ رکھتے ہوئے بھی مارٹن کو پھر کے بعد یورپ میں جو وگیاں کا نیا زمانہ شروع ہوا اور جو کھیلے

جو پڑھ سوا سال میں بہت تیزی کے ساتھ پنا اس نے بھی ایک نئی لائن میں اہنسا کو پنا یا ہے۔ جہاں تکلیف دینا لازمی ہے۔

ہاں اتنا تو ہو کہ وہ کم سے کم دیکھ دینے والی ہوں، ایسے طریقے کھوجنا اور آزمانا یہ وہ لائن ہے۔ ہو سکتا ہے کہ تکلیف تو

جان بوجھ کر ہنسا کے بھاء سے بھی کی جاتی ہو جیسے پھانسی دینے میں، قتل کرنے میں یا زندہ جانوروں کے پیر پھاڑ

نیا ہندہ
دیسمببر سن ۱۹۰۷
نیا ہندہ
آرہیسا کے وکاس پر ایک نظر
دیکر سٹارٹ

اور روگیاں سے دکھی آدمیوں کی سیدیا کے سنگھٹن کو عیسائی مذہب سے یوسا ہوا اہنسا دھرم کی خاص چیز کی جاسکتی ہے۔

اسلام نے نام لے کر اہنسا کے اصول پر بہت زور نہیں دیا لیکن اس کا مطلب یہ نہیں کہ اس نے اہنسا کو کچھ جملہ نہیں دیا۔ جوں جوں کہ بیابج کا ناجائز فائدہ اٹھا کر جس طرح آدمی آدمی کی اہنسا کرتا ہو اس پر سب سے پہلے دھیان دینے والوں میں شاید اسلام

ہو۔ جنی مضمون میں آج ہم بھائی چارے اور سماج واد کو سمجھتے ہیں۔ (یعنی پو پوچی۔ واد خاص اٹھکار، اگرتی حکومت وغیرہ کے ورو دھما) ان

مضمونوں میں اسلام کے ان اصولوں کا امیڈیش کیا نہیں، لیکن غلامی کی پرکھا سیدو خوری اور دھارمک اور سماج واد میں دکھائے جانے والے فرقوں کا اس نے ورو دھ کیا ہے اور ان اور تمیوں کی سنتھما

پر زور دیا ہے۔ کہہ سکتے ہیں کہ سیدو خوری کی منا ہی اہنسا کو اسلام کی غلامی دین ہے۔ اس بار سے میں یہودی اور ہندو دھرموں سے اس کا ورو دھما

دھارمک بیلاری سے سمبندھ نہ رکھتے ہوئے بھی مارٹن کو پھر کے بعد یورپ میں جو وگیاں کا نیا زمانہ شروع ہوا اور جو کھیلے

جو پڑھ سوا سال میں بہت تیزی کے ساتھ پنا اس نے بھی ایک نئی لائن میں اہنسا کو پنا یا ہے۔ جہاں تکلیف دینا لازمی ہے۔

ہاں اتنا تو ہو کہ وہ کم سے کم دیکھ دینے والی ہوں، ایسے طریقے کھوجنا اور آزمانا یہ وہ لائن ہے۔ ہو سکتا ہے کہ تکلیف تو

جان بوجھ کر ہنسا کے بھاء سے بھی کی جاتی ہو جیسے پھانسی دینے میں، قتل کرنے میں یا زندہ جانوروں کے پیر پھاڑ

नया हिन्द अहिंसा के विकास पर एक नजर दिसम्बर सन् '४७ में, लेकिन वैसी हिंसा भी फुर्ती से और जिस तरह प्राणी, को कम से कम तकलीफ हो उस तरह करनी चाहिये, ऐसी एक भावना बढ़ी है, चोरफाइ में बेहोश करने वाली दवाइयों की खोज भी इसी भावना में से हुई, पेड़ और पौदों की काट छाँट में भी बहुत बार यह भावना काम करता हुई दिखाई देती है.

एक तरफ से विज्ञान युग ने पिछले जमाने से हजारों गुनी ज्यादा जोर को और फैजा हुई हिंसा बढ़ा दी है और हिंसा की नजर से आदमा को करीब करीब बेरहम और अविचारी बना दिया है, दूसरी तरफ से जो तकलीफ दूर की जा सकती है उसे न होने देने के बारे में उसे यानी आदमी को बहुत ही किक करने वाला और तकलीफ से हमदर्दी रखने वाला बना दिया है.

विज्ञान और उद्योग के जमाने के पीछे आए हुए समाजवाद ने भी अहिंसा के अब तक ध्यान न पाए हुए लेकिन जरूरी हिस्से का विकास करने में हाथ बढ़ाया है, अगर सिर्फ जिस्म की तकलीफों में ही हिंसा समझी जाती हो तो अहिंसा हिंसा का फरक समझाना कुछ आसान है लेकिन तरह तरह के चूसने के तरीकों के जरिये आदमी आदमी में जा बाराक हिंसा चलता है उसे परखना या रोकना बहुत मुशकिल है, जब से इनसानी समाज बंधा है, तब से जैसे गोशत खाने के बार में वैसे ही दूसरी बोसा हिलक आदतों के बारे में वह ऐसा ही मान कर चला है, मनों वह उनका जिन्दगी के गुबारे के लिये जरूरी समझता है, लेकिन गहरा सांचने पर मालूम होता है कि बहुत सी ऐसी मानताएं वे बुनियाद हैं, इस तरह के सैकड़ों हिंसक

नाहंसा के विकास पर एक नजर दिसम्बर सन् '४७ में, लेकिन वैसी हिंसा भी फुर्ती से और जिस तरह प्राणी, को कम से कम तकलीफ हो उस तरह करनी चाहिये, ऐसी एक भावना बढ़ी है, चोरफाइ में बेहोश करने वाली दवाइयों की खोज भी इसी भावना में से हुई, पेड़ और पौदों की काट छाँट में भी बहुत बार यह भावना काम करता हुई दिखाई देती है.

एक तरफ से विज्ञान युग ने पिछले जमाने से हजारों गुनी ज्यादा जोर को और फैजा हुई हिंसा बढ़ा दी है और हिंसा की नजर से आदमा को करीब करीब बेरहम और अविचारी बना दिया है, दूसरी तरफ से जो तकलीफ दूर की जा सकती है उसे न होने देने के बारे में उसे यानी आदमी को बहुत ही किक करने वाला और तकलीफ से हमदर्दी रखने वाला बना दिया है.

विज्ञान और उद्योग के जमाने के पीछे आए हुए समाजवाद ने भी अहिंसा के अब तक ध्यान न पाए हुए लेकिन जरूरी हिस्से का विकास करने में हाथ बढ़ाया है, अगर सिर्फ जिस्म की तकलीफों में ही हिंसा समझी जाती हो तो अहिंसा हिंसा का फरक समझाना कुछ आसान है लेकिन तरह तरह के चूसने के तरीकों के जरिये आदमी आदमी में जा बाराक हिंसा चलता है उसे परखना या रोकना बहुत मुशकिल है, जब से इनसानी समाज बंधा है, तब से जैसे गोशत खाने के लिये जरूरी समझता है, लेकिन गहरा सांचने पर मालूम होता है कि बहुत सी ऐसी मानताएं वे बुनियाद हैं, इस तरह के सैकड़ों हिंसक

न्याहास्त - अहंसा के कास पर एक نظر -

राजों की طرف दھیान कियेपने में समाज वाद ने बेत न्याहा
या हो ओर जो सने को सोलत दीने वाली बेत सी न्याहा तरेकीयों के
खलाफ लोक मत त्तार किया हो - ये मत शरफ वषार की सद में ही न्ये
रुके बके समाज वादी ओर शनों पर के की सन्तहात में ओर राज काल
करके हस की मथालें बेी पेश की हैं - ये बेी अहंसा के लसे में
न्या सोलत क्येकर रकहा होा एक कदम तारने

स के बेद नुद होा रलिन कानुमी क्येसा आता हो - न्येसी के बेद
वे अहंसा के सब से बुरे आचार्य हैं - अहंसा ने ही पेली बार
पार की कर अहंसा शरफ नहंसा न करके का ही नाम न्ये हो 'बके
काल में कलाने वाला एक जोश हो ओर दोसरे दुन्यादी ओर दोनो
पलातों की शरफ अहंसा से बेी काल या जाकता हो - अहंसा ने ये
बेी त्तार कर से अहंसा ओर शरफ कालों को एक दोसरे से अलग
न्येसा जाकता - एक की शरफ से नुद क्येकर दोसरे बुरहासे न्ये
जाकते - ये सही ओर अहंसा ने न्येसा की शरफ आशा ओर
परिक्रम या दोसरो की पार म्मत्त की बनाने शकल को न्येसा
अहंसा ने नहंसा न करके न्ये सन्त को ही अपने काल में या हो -
क्येन हे वे रचनाक या त्तरी काल नाम दीने में असे अहंसा
के सातके जोकर अहंसा ने असे शरफ कलके के लसे
की पलात लीने परदी क्येदी हो - रचनाक काल के अलग अलग
सवों ओर अहंसा पलाते के शरफों में क्ये ही न्येसी बके ओर
न्याहात हो वला शरफ होा रहे - शरफ की बात ये क्येने की

नया हिन्द अहिसा के विकास पर एक नजर दिसम्बर सन् '४७
रिवाजों की तरफ ध्यान र्खाने में समाजवाद ने बहुत जयादा
हिससा लिया हे और चूसने को सहूलियत देने वाली बहुत सी
इनसानो तरकीबों के खिलाल लोकमत तैयार किया हे. यह मत
सिर्फ विचार की हद में ही नहीं रहे बल्कि समाजवादी आदर्शों
पर कई तरह को संस्थाएँ और राज कायम करके उसकी मिसालें
भा पेश की हैं. यह भी अहिसा के रास्ते में ही सोच समक कर
रकबा हुआ एक कदम हे.

इसके बाद सुद हमारा यानी गान्धी युग आता हे. इसा के
बाद वह अहिसा के सबसे बड़े आचार्य हैं. उन्होंने ही पहली बार
जाहिर किया कि 'अहिसा सिर्फ 'हिसा न करने' का ही नाम नहीं हे,
बल्कि काम में लगाने वाला एक जोश हे और दूसरे दुनियावी
और दोनों ताकतों को तरद अहिसा से भी काम लिया जा सकता
हे. उन्होंने यह भी बतलाया कि सत्य अहिसा बगैर रुहानी गुणों
को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता. एक की तरफ से
सुंद फेर कर दूसरे बढ़ाए नहीं जा सकते. यह सही हे कि उन्होंने
इसाई धर्म को श्रद्धा, आशा और प्रेम या बौद्धों को ध्यार मुहब्बत
की बनाई हुई शकल को नहीं अपनाया. उन्होंने 'हिसा न करने' की
सिक्त को ही अपने काम में लिया हे. लेकिन जिसे वह रचना-
त्मक या तामीरी काम नाम देते हैं उसे अहिसा के साथ जोड
कर उन्होंने उस शब्द में गले तक लगे रहने की ताकत यानी
प्रयत्ति भर दी हे. रचनात्मक काम के अलग अलग हिस्सों
और उन्हे चलाने के तरीकों में भले ही नैसी जगह और नैसा
बक्त हो नैसा फर्क होता रहे. मार्के की बात यह समझने की

नया हिन्दू अहिंसा के विकास पर एक तजर दिसम्बर सन् '४७ है कि कोई न कोई रचनात्मक सेवा के बिना अहिंसा की जड़ कभी गहरी जम नहीं सकती. और उन्होंने यह भी दिखलाया कि अहिंसा का अमली मैदान किसी खास काम में ही बँधकर नहीं रह जाता. आदमी की चिन्दी के तरह तरह के कामों में और उलझनों में सुभीते के लिये हम धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक सामाजिक, अदबी, कलात्मक वगैरा चाहें जिस नाम से पहचानें, हर एक का फ़ैसला हिंसक और अहिंसक दोनों तरह से हो सकता है. गान्धी जी उनका अहिंसक फ़ैसला लाने का आग्रह रखना सिखाते हैं.

उनके सिद्धान्त का इसे मोटा ढाँचा समझो. लेकिन पिछले पचास बरस में जिन खास सवालों का उन्हें मुकाबला करना पड़ा वह कितने राजनीतिक सामाजिक और आर्थिक रिवाजों के बदलने के बारे में थे. इन मैदानों ने खबदस्त और संगठित आदमियों के गिरोहों के खरिये कमजोर और असंगठित लोगों के किये जुलमों का सामना करना उनके खास काम बने. इन कामों को कराने हुए उन्होंने एक ऐसा तरीका पैदा कर दिया कि जिससे अहिंसा पर खोर के साथ मजबूत रह कर कमजोर से कमजोर लोग या शक्स खबर से खबर गिरोह का सामना कर सकता है. यह सच है कि जिन हालतों में उन्हें काम करना पड़ा उसमें उन्हें हर बक्त अपने काम में हिंसा की थोड़ी ज्यादा भेल-सेल भी निभा लेनी पड़ी. यह उनकी इच्छा के खिलाफ ही था और उनकी राय में इसके कारन उन्हें हमेशा अचूरी कामयाबी मिली. गान्धी जी के रचनात्मक काम के १७-१८ हिस्से गिनाए जाते हैं. हो सकता

ताहसद
 अहंसा के विकास पर एक तजर दिसम्बर सन् '४७
 है कि कोई न कोई रचनात्मक सेवा के बिना अहंसा की जड़ कभी गहरी जम नहीं सकती. और उन्होंने यह भी दिखलाया कि अहंसा का अमली मैदान किसी खास काम में ही बँधकर नहीं रह जाता. आदमी की चिन्दी के तरह तरह के कामों में और उलझनों में सुभीते के लिये हम धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक सामाजिक, अदबी, कलात्मक वगैरा चाहें जिस नाम से पहचानें, हर एक का फ़ैसला हिंसक और अहिंसक दोनों तरह से हो सकता है. गान्धी जी उनका अहिंसक फ़ैसला लाने का आग्रह रखना सिखाते हैं.

अहंसा के सदेहत का असे मोटा ठुवा ठुवा तजुवो. लेकिन कखिले
 बियास बरस में जिन खास सवाल का अहंसा ने मुकाबला करना पड़ा वह कितने
 राजनीतिक सामाजिक और आर्थिक रिवाजों के बदलने के बारे में थे. इन मैदानों ने खबदस्त और संगठित आदमियों के गिरोहों के किये जुलमों का सामना करना पड़ा. इन कामों को कराने के लिये उन्होंने एक ऐसा तरीका पैदा किया कि जिससे अहिंसा पर खोर के साथ मजबूत रह कर कमजोर से कमजोर लोग या शक्स खबर से खबर गिरोह का सामना कर सकता है. यह सच है कि जिन हालतों में उन्हें काम करना पड़ा उसमें उन्हें हर बक्त अपने काम में हिंसा की थोड़ी ज्यादा भेल-सेल भी निभा लेनी पड़ी. यह उनकी इच्छा के खिलाफ ही था और उनकी राय में इसके कारन उन्हें हमेशा अचूरी कामयाबी मिली. गान्धी जी के रचनात्मक काम के १७-१८ हिस्से गिनाए जाते हैं. हो सकता

नया हिन्द अहिंसा के विकास पर एक नजर दिसम्बर सन् '४७

है यह कम ज्यादा हों और वह अपनी तय की हुई आज की मर्यादा में रहें या न रहें. लेकिन इतना तो तय है कि ख़ुलम का सामना करने का उनका पैदा किया हुआ सत्याग्रह का रास्ता और उसकी कला (Technique) और उसे सफल करने के लिये किसी न किसी तरह से कोई रचनात्मक काम से उसका रिश्ता जोड़ने की जरूरत एक पक्की चीज रहेगी. हिन्दुस्तान का आजादी तो आज मिल गई है पर उसमें कुछ दोष भी आगया है. दोनों गांधी जी की नज़र में हैं. अहिंसा कामयाब तो हुई है लेकिन उसमें हिंसा मिल गई है और अहिंसा की कामयाबी अधूरी रह गई है. यह अधूरेपन का सबूत हमेशा बना रहेगा.

लेकिन आज कल हिंसा दो बहुत ही डरावनी शक्तों में उछल पड़ी है. लड़ाई और आपसी खरैखी लड़ाई की हिंसा कोई नई चीज तो नहीं है लेकिन अपनी खूबवारी और बढ़वारी की वजह से पिछली दो लड़ाइयों ने दुनिया के सब आगे की लड़ाइयों को पीछे हटा दिया है. लड़ाई को हिंसा जुदा जुदा हकूमतों के बीच है. कौमों के अन्दर आपसी दंगे भी कोई अनजानी बात नहीं, वह एक प्रजा का भीतरी युद्ध है. राज्यों के बीच होती हुई हिंसा से यह ज्यादा कठिन और गहरी चीज है क्योंकि वह न पूरी संगठित होती है और न विलकुल असंगठित ही और इतनी हिंसा भी पहले कभी न हुई होगी जितनी बुरे रूप और बड़े पैमाने पर इस खमाने में फट निकली है.

पहले महायुद्ध ने बहुत से गहरे विचारकों के सोच में डाल दिया था. उनमें से अमन पसन्दों का एक दल पैदा हुआ. दूसरी जंग

न्यासहस्र
अहंसा के विकास पर एक नज़र

होने कम ज्यादा हों और वह अपनी तय की हुई आज की मर्यादा में रहें या न रहें. लेकिन इतना तो तय है कि ख़ुलम का सामना करने का उनका पैदा किया हुआ सत्याग्रह का रास्ता और उसमें उसकी कला (Technique) और उसे सफल करने के लिये किसी न किसी तरह से कोई रचनात्मक काम से उसका रिश्ता जोड़ने की जरूरत एक पक्की चीज रहेगी. हिन्दुस्तान को आजादी तो आज मिल गई है पर उसमें कुछ दोष भी आगया है. दोनों गांधी जी की नज़र में हैं. अहिंसा कामयाब तो हुई है लेकिन उसमें हिंसा मिल गई है और अहिंसा की कामयाबी अधूरी रह गई है. यह अधूरेपन का सबूत हमेशा बना रहेगा.

लेकिन आज कल अहंसा दो बहुत ही डरावनी शक्तों में उछल पड़ी है. लड़ाई और आपसी खरैखी लड़ाई की अहंसा कोई नई चीज तो नहीं है लेकिन अपनी खूबवारी और बढ़वारी की वजह से पिछली दो लड़ाइयों ने दुनिया के सब आगे की लड़ाइयों को पीछे हटा दिया है. लड़ाई को अहंसा जुदा जुदा हकूमतों के बीच आ जाती है. अहंसा का भीतरी युद्ध है. राज्यों के बीच होती हुई अहंसा से यह ज्यादा कठिन और गहरी चीज है क्योंकि वह न पूरी संगठित होती है और न विलकुल असंगठित ही और इतनी अहंसा भी पहले कभी न हुई होगी जितनी बुरे रूप और बड़े पैमाने पर इस खमाने में फट निकली है.

पहले महायुद्ध ने बहुत से गहरे विचारकों को सोच में डाल दिया था. उनमें से अमन पसन्दों का एक दल पैदा हुआ. दूसरी जंग

नया हिन्द अहिंसा के विकास पर एक नजर दिसम्बर सन् '४७

के वक्त उनमें से कई की श्रद्धा कच्ची पड़ी थी और वह फिर हिंसा की हिमायत करने लगे. लेकिन कुछ अहिंसा पर मजबूत रहे. आपसी हिंसा के विरोधी भी कम नहीं हैं लेकिन इन दोनों तरह की हिंसा को रोकने की इच्छा रखते हुए भी वह विचारक कैसे किया जाए, किस अहिंसक तरीके से हिंसा की वजह से होने वाले सबालों का सन्तोष देने वाला फ़ैसला किया जाए या हिंसा उछल ही पड़े तो वहका किस तरह अहिंसक सामना किया जाए.-इसका कोई सीधा रास्ता अभी तक नहीं खोज पाए. इसमें शक नहीं कि प्रेम भरी सेवा और अहिंसक व संगठित रचनात्मक कामों के जरिए ही ऐसा रास्ता हाथ आ सकेगा जिससे जंग या दंगों के बीच बचने वालों की कोशिशें सफल होने ही न पाएँ. उनकी बात सुनने और मानने वाले उन्हें मिलें ही नहीं. लोगों के दिलों में यह यकीन हो जाना चाहिये कि अपने लोगों के किसी हिस्से की या दूसरे राज के लोगों की हिंसा करने के लिये पैदा हुई किसी खाहिश को वह किसी तरह मदद कर नहीं सकते. भगड़ा चाहे जिस प्रकार का क्यों न हो उसका हिंसा से फ़ैसला करने की कोशिश करने वालों को वह मदद दे नहीं सकते और इसके साथ ही उन्हें ऐसा रास्ता भी सोच निकालना चाहिए जिससे उन लोगों का मुकाबला किया जा सके जो सीधे सादे लोगों को भगड़ में शामिल होने के लिये मजबूर करते हैं या उन पर जुल्म करके अपने में मिला लेना चाहते हैं.

इसका साफ़ रास्ता अभी हाथ नहीं लगा. इसे ऐसा जंगल समझना चाहिये जिसके अभी बहुत से हिस्से का पता नहीं चला

ना है. अहिंसा के विकास पर एक नजर
के वक्त उनमें से कई की श्रद्धा कच्ची पड़ी थी और वह फिर हिंसा की
हिमायत करने लगे. लेकिन कुछ अहिंसा पर मजबूत रहे. आपसी हिंसा के
विरोधी भी कम नहीं हैं लेकिन इन दोनों तरह की हिंसा को रोकने की
इच्छा रखते हुए भी वह विचारक कैसे किया जाए, किस अहिंसक
तरीके से हिंसा की वजह से होने वाले सबालों का सन्तोष देने
वाले फ़ैसला किया जाए या हिंसा उछल ही पड़े तो उसका किस
तरह अहिंसक सामना किया जाए.-इसका कोई सीधा रास्ता अभी
तक नहीं खोज पाएँ. इसमें शक नहीं कि प्रेम भरी सेवा
और अहिंसक व संगठित रचनात्मक कामों के जरिए ही ऐसा रास्ता
हाथ आ सकेगा जिससे जंग या दंगों के बीच बचने वालों की
कोशिशें सफल होने ही न पाएँ. उनकी बात सुनने और मानने
वाले अहिंसक लोगों की हिंसा करने के लिये पैदा हुई किसी
खाहिश को वह किसी तरह मदद कर नहीं सकते. भगड़ा चाहे
जिस प्रकार का क्यों न हो उसका हिंसा से फ़ैसला करने की कोशिश
करने वालों को वह मदद दे नहीं सकते और इसके साथ ही उन्हें
ऐसा रास्ता भी सोच निकालना चाहिए जिससे उन लोगों का मुकाबला
किया जा सके जो सीधे सादे लोगों को भगड़ में शामिल होने के लिये
मजबूर करते हैं या उन पर जुल्म करके अपने में मिला लेना चाहते हैं.

अहिंसा जानते हैं.
अहिंसा का मतलब अहिंसा नहीं लगा. अहिंसा जंगल
समझना चाहिये जिस के अभी बहुत से हिस्से का पता नहीं चला

किलहाल गान्धी जी इस रास्ते को ढूँढने के काम में लगे हुए हैं। रास्ता साफ नहीं पर किसी भी वक्त साफ हो सकता है। इस बीच हम इतना तो अरुहर कर सकते हैं कि लगन से हम सेवा के काम जारी रखें, और बदले की हिंसा करने की भूल न करें। इस सदी के शुरु के वरसों में जब हिन्दुस्तान के नेता और नौजवान इस किक से दुखी थे कि कैसे अंगरेजी सल्तनत जैसी अवरदस्त हकूमत से आजाद होने का रास्ता निकले, और जब वह सब कभी डर फैलाने और कभी कानूनी तहरीक चलाने के बीच भोटे खा रहे थे तब गान्धी जी ने एक सफल रहनुमाई की थी। वैसे ही हम आशा करें और विश्वास रखें कि इस वक्त जो अपना नाश करने वाली हिंसा उछल पड़ी है उसे हटाने का भी सफल रास्ता दिखाने का यश उन्हें हासिल होगा। ईश्वर उन्हें वह शक्ति दे.ॐ

ॐ इसी सिलसिले में हमारी राय में दिया हुआ 'एक अवतार और चाहिये' नोट भी पढ़िये—एडिटर

ताम्रसुन्दर
 अपना के कास पर एक नजर
 दुम्बरसुन्दर
 फी अल गान्धी जी इस रास्ते को ढूँढने के काम में लगे हुए हैं। रास्ते साफ नहीं पर किसी भी वक्त साफ हो सकता है। इस बीच हम इतना तो अरुहर कर सकते हैं कि लगन से हम सेवा के काम जारी रखें, और बदले की हिंसा करने की भूल न करें। इस सदी के शुरु के वरसों में जब हिन्दुस्तान के नेता और नौजवान इस किक से दुखी थे कि कैसे अंगरेजी सल्तनत जैसी अवरदस्त हकूमत से आजाद होने का रास्ता निकले, और जब वह सब कभी डर फैलाने और कभी कानूनी तहरीक चलाने के बीच भोटे खा रहे थे तब गान्धी जी ने एक सफल रहनुमाई की थी। वैसे ही हम आशा करें और विश्वास रखें कि इस वक्त जो अपना नाश करने वाली हिंसा उछल पड़ी है उसे हटाने का भी सफल रास्ता दिखाने का यश उन्हें हासिल होगा। ईश्वर उन्हें वह शक्ति दे.ॐ

इसी सिले में हमारी राई में दिया हुआ 'एक अवतार और चाहिये' नोट भी पढ़िये—एडिटर

अपने दिल से एक दो पाठ

रंग

शाम का वक्त تھا ' میں سمندر کے کنارے گوشہ خاموشی میں اس طرح سے خوش اور صحیح سلامت بیٹھا تھا جیسا کہ ایک ننھا سا بچہ اپنی ماں کی گود میں بیٹھا ہوا ہوتا ہو۔ اور مجھے ایسا معلوم ہوا تھا کہ میں بادشاہوں کے بادشاہ کا خوبصورت غیبی محل اس گوشہ سے دیکھ رہا تھا۔

ایک ایک کسی نے میرے اندر سے مجھ سے پوچھا۔
 "کیوں میاں، آرام کا مطلب تمہیں معلوم ہو؟"
 یہ سوال سن کر میں ذرا ہنس پڑا کیونکہ میں نے اپنے آپ سے کہا کہ "یہ بھی کھلا کوئی سوال پوچھنے کا ہے؟ آرام کا مطلب آرام اور کیا؟"

جو میرے اندر بیٹھا ہوا تھا اس نے ایسا معلوم ہوتا ہو میری یہ بھی ہونئی بات بھی سن لی۔ اور کیوں ہی نہ سنتا کیونکہ اس کی آنکھیں اور اس کے کان تو کبھی بند ہنہلتے ہی نہیں۔
 پھر میرے کانوں پر کسی کے گلنے کی آواز آئی۔ یہ سننے لگانے والے کو تو نہ دیکھا مگر اس کے گیت کی ایک سطر جو وہ بار بار گاردا تھا وہ میں نے اچھی طرح سے اور صاف طور پر سنتی۔

"یہ پریت کی ریت نہیں تیری، وہ چاکلت ہو تو سووت ہو۔"
 تب میرے دل میں ایک سوال اٹھا۔ کیا پریم کرنا ہمیشہ ہی جگے رہتا ہو؟

अपने दिल से एक दो बातें

(गु० म०)

शाम का वक्त था, मैं समुद्र के किनारे गोशए खामोशी में इस तरह से खुश और सही सलामत बैठा था जैसा कि एक नन्हा सा बच्चा अपनी माँ की गोद में बैठा हुआ होता है. और मुझे ऐसा मालूम हो रहा था कि मैं बादशाहों के वाहशाह का खूब-सूरत गैबी महल उस गोशे से देख रहा था.

यकायक किसी ने मेरे अन्दर से मुझसे पूछा—
 "क्यों मियाँ, आराम का मतलब तुम्हें मालूम है?"
 यह सवाल सुनकर मैं खरा हँस पड़ा क्योंकि कि मैंने अपने आप से कहा कि "यह भी भला कोई सवाल पूछने का है? आराम का मतलब आराम और क्या?"

जो मेरे अन्दर बैठा हुआ था, उसने ऐसा मालूम होता है मेरी यह छिपी हुई बात भी सुनली. और क्योंकि ही न सुनता क्योंकि उसको आँखें और उसके कान तो कभी बन्द होते ही नहीं. फिर मेरे कानों पर किसी के गाने की आवाज आ पहुँची. मैंने गाने वाले को तो न देखा मगर उसके गीत की एक सतर जो वह बार बार गा रहा था वह मैंने अच्छी तरह से और साफ तौर पर सुनी.

"यह प्रीति की रीति नहीं तेरी, वह जागत है तू सोवत है."
 तब मेरे दिल में एक सवाल उठा— "क्या प्रेम करना हमेशा ही जगें रहना है?"

नया हिन्द अपने दिल से एक दी बातें दिसम्बर सन् '४७
 "मैंने समझ तो लिया मगर उस पर अमल करना मुझे तो बहुत
 मुशकिल मालूम होता है।"
 "तो उसका भी तुम्हें एक आसान रास्ता बता दू, मियां, अगर
 चाहो तो!"

"अरूर, अरूर" मैंने जवाब दिया.
 उसने कहा, "दिल को छोड़ो और दिल को पकड़ो."
 "मैंने अर्ज की, वरा इसे आसान कर दीजिये!"
 "सुशी से खिन्दगी तो एक बाजी है न, कबीर साहब का वह
 भजन तुम्हें याद है जिसमें वह कहते हैं कि खिन्दगी एक चौपड़
 की बाजी है. मगर यह खेल अजीब है. अगर तुम हारते हो तो
 भी प्रांतम के हो जाते हो और अगर जीतते हो तो प्रांतम तुम्हारा
 हो जाता है. हर हालत में तुम्हें प्रांतम तो मिल ही जाता है."
 इसी तरह से मैं तुम्हें कहता हूँ, मियां, "पार्टी बाजी छोड़ो
 प्रेम बाजी खेलो."

इतने में मुझे कुछ शोराशर सुनाई दिया. जहाँ मैं बैठा हुआ था
 वहीं से वरा दूर लोगों का एक हुजूम दिखाई दिया था. कई लोग
 के हाथों में क्रिस्म क्रिस्म के झंडे थे और जोर जोर से नारे लगा
 रहे थे "—खिन्दावाद" "—खिन्दावाद" "—खिन्दावाद" मैं अपने
 गोशए खामोशी से निकल कर घर वापिस आया और वार वार
 मुझे यह खयाल आता रहा, "दिल की बात रूप में सोलह आना
 सब है."

न्याहसद अपने दिल से एक दुबानियां दिसम्बर सन् '४७
 "मैंने समझ तो लिया मगर उस पर अमल करना मुझे तो बहुत
 मुशकिल मालूम होता है।"
 "तो उसका भी तुम्हें एक आसान रास्ता बता दू, मियां, अगर
 चाहो तो!"

"अरूर, अरूर" मैंने जवाब दिया.
 उसने कहा, "दिल को छोड़ो और दिल को पकड़ो."
 "मैंने अर्ज की, वरा इसे आसान कर दीजिये!"
 "सुशी से खिन्दगी तो एक बाजी है न, कबीर साहब का वह
 भजन तुम्हें याद है जिसमें वह कहते हैं कि खिन्दगी एक चौपड़
 की बाजी है. मगर यह खेल अजीब है. अगर तुम हारते हो तो
 भी प्रांतम के हो जाते हो और अगर जीतते हो तो प्रांतम तुम्हारा
 हो जाता है. हर हालत में तुम्हें प्रांतम तो मिल ही जाता है."
 इसी तरह से मैं तुम्हें कहता हूँ, मियां, "पार्टी बाजी छोड़ो
 प्रेम बाजी खेलो."

इतने में मुझे कुछ शोराशर सुनाई दिया. जहाँ मैं बैठा हुआ था
 वहीं से वरा दूर लोगों का एक हुजूम दिखाई दिया था. कई लोग
 के हाथों में क्रिस्म क्रिस्म के झंडे थे और जोर जोर से नारे लगा
 रहे थे "—खिन्दावाद" "—खिन्दावाद" "—खिन्दावाद" मैं अपने
 गोशए खामोशी से निकल कर घर वापिस आया और वार वार
 मुझे यह खयाल आता रहा, "दिल की बात रूप में सोलह आना
 सब है."

हाजी रशीद अहमद गंगोही

(श्री रतन लाल बंसल, फ़िरोज़ाबाद)

सन् १८७८ ईसवी में बलीउल्लाई जमात के पांचवे इमाम मौलाना मुहम्मद कासिम साहब का इन्तकाल हो जाने पर जब इस संगठन को एक नए नेता की जरूरत हुई तो सब की नज़र मौलाना महमूदुल हसन साहब पर पड़ी। मौलाना महमूदुल हसन बलीउल्लाई जमात के नए मरकज़ मदरसा देवबन्द के पहिले विद्यार्थी थे। बलीउल्लाई संगठन के असूल और इरादों की पूरी तालीम इस इन्को खास तरीके पर, मौलाना कासिम साहब ने दी थी। इस तालीम की ही बदीलत मौलाना महमूदुल हसन साहब ने अपनी पढ़ाई के ख़माने से ही मुल्क को आजादी के लिये तजवीज़ों सोचना और उन पर काम करना शुरू कर दिया था। अपनी दूरन्देशी, निडरपन और पाक साक चाल चलन की वजह से अपने हल्के में वह बहुत इज्जत की निगाह से देखे जाते थे। इस लिये उनको इमाम बनाने और मानने में इनकार किस को होता ? लेकिन वह ख़माना बहुत नासुक था। सन् १८५७ की लड़ाई की नाकामयाबी और उसके बाद होने वाले भयानक जुल्मों ने बड़ों बड़ों के हीसले पस्त कर दिये थे। ख़ासकर मुसलमानों में तो लोग सियासत तो क्या मज़हबी बातों की चर्चा करने में भी डरते थे। इस हालत से फ़ायदा उठा कर कुछ मौक़ा परस्तों ने इसलाम के नाम पर नई नई बातों को गढ़ना और फैलाना शुरू कर दिया था, यहाँ तक कि

हाजी रशीद अहमद गंगोही

(श्री रतन लाल बंसल, फ़िरोज़ाबाद)

१८५७ ईसवी में बलीउल्लाई जमात के पांचवें इमाम मौलाना मुहम्मद कासिम साहब का इन्तकाल हो जाने पर जब इस संगठन को एक नए नेता की जरूरत हुई तो सब की नज़र मौलाना महमूदुल हसन साहब पर पड़ी। मौलाना महमूदुल हसन बलीउल्लाई जमात के नए मरकज़ मदरसा देवबन्द के पहिले विद्यार्थी थे। बलीउल्लाई संगठन के असूल और इरादों की पूरी तालीम इस इन्को खास तरीके पर, मौलाना कासिम साहब ने दी थी। इस तालीम की ही बदीलत मौलाना महमूदुल हसन साहब ने अपनी पढ़ाई के ख़माने से ही मुल्क को आजादी के लिये तजवीज़ों सोचना और उन पर काम करना शुरू कर दिया था। अपनी दूरन्देशी, निडरपन और पाक साक चाल चलन की वजह से अपने हल्के में वह बहुत इज्जत की निगाह से देखे जाते थे। इस लिये उनको इमाम बनाने और मानने में इनकार किस को होता ? लेकिन वह ख़माना बहुत नासुक था। सन् १८५७ की लड़ाई की नाकामयाबी और उसके बाद होने वाले भयानक जुल्मों ने बड़ों बड़ों के हीसले पस्त कर दिये थे। ख़ासकर मुसलमानों में तो लोग सियासत तो क्या मज़हबी बातों की चर्चा करने में भी डरते थे। इस हालत से फ़ायदा उठा कर कुछ मौक़ा परस्तों ने इसलाम के नाम पर नई नई बातों को गढ़ना और फैलाना शुरू कर दिया था, यहाँ तक कि

سنا ہند، حاجی رشید احمد گنگوہی دسمبر ۱۹۰۹ء
 محمد قاسم صاحب سے ہوئی، جو اسی مدرسے میں پڑھنے گئے اور
 رشید احمد صاحب کی طرح اپنے تیز ذہن کے لئے مدرسہ
 کھڑے ہیں مشہور ہو گئے۔

اس مدرسہ کی تعلیم کا رشید احمد صاحب اور مولانا قاسم
 صاحب پر بہت اثر پڑا اور پڑھائی سے فارغ ہونے سے
 پہلے ہی دونوں نے ملک کی آزادی کے لئے کام کرنا شروع کر دیا۔
 اس زمانے میں دینی کا یہ مدرسہ ملک کھر کے انقلابیوں کا ایک
 خاص مرکز بنا ہوا تھا۔ انقلابیوں کے سب سے بڑے نیتا حاجی
 امداد اللہ صاحب تھے جو رشید احمد صاحب و مولانا قاسم صاحب
 کے بھی استاد رہ چکے تھے۔ حاجی امداد اللہ صاحب چاہتے تھے کہ
 اپنی الائی سٹوڈنٹس کو جلدی سے جلدی انگریزوں کے خلاف جنگ
 کا اعلان کر دینا چاہئے۔ اس کے لئے انھوں نے ایک جنگی کمیٹی
 بھی بنائی تھی، جس میں حاجی امداد اللہ صاحب کے علاوہ مولانا
 عبدالغنی، مولانا محمد یعقوب، رشید احمد صاحب اور مولانا قاسم
 صاحب بھی تھے۔ کچھ دنوں کے بعد جب حاجی امداد آ
 صاحب کو دلی الائی خیماعت کا پوکھا امام چنا گیا، تو یہی چار آدمی
 ان کے وزیر مقرر کئے گئے۔ اس سے ظاہر ہوتا ہے قاسم
 صاحب کی طرح حاجی رشید احمد صاحب نے بھی کتنی
 جلدی دلی الائی سٹوڈنٹس میں اپنے لئے یقین پیدا کر
 لیا تھا۔
 اس کے بعد کچھ دنوں تک رشید احمد صاحب جگہ جگہ گھوم

نوا ہند، حاجی رشید احمد گنگوہی دسمبر ۱۹۰۹ء
 محمد قاسم صاحب سے ہوئی، جو اسی مدرسے میں پڑھتے تھے اور
 رشید احمد صاحب کی طرح اپنے تیز ذہن کے لئے مدرسہ
 کھڑے ہیں مشہور ہو گئے۔

اس مدرسہ کی تعلیم کا رشید احمد صاحب اور مولانا قاسم
 صاحب پر بہت اثر پڑا اور پڑھائی سے فارغ ہونے سے
 پہلے ہی دونوں نے ملک کی آزادی کے لئے کام کرنا شروع کر دیا۔
 اس زمانے میں دینی کا یہ مدرسہ ملک کھر کے انقلابیوں کا ایک
 خاص مرکز بنا ہوا تھا۔ انقلابیوں کے سب سے بڑے نیتا حاجی
 امداد اللہ صاحب تھے جو رشید احمد صاحب و مولانا قاسم صاحب
 کے بھی استاد رہ چکے تھے۔ حاجی امداد اللہ صاحب چاہتے تھے کہ
 اپنی الائی سٹوڈنٹس کو جلدی سے جلدی انگریزوں کے خلاف جنگ
 کا اعلان کر دینا چاہئے۔ اس کے لئے انھوں نے ایک جنگی کمیٹی
 بھی بنائی تھی، جس میں حاجی امداد اللہ صاحب کے علاوہ مولانا
 عبدالغنی، مولانا محمد یعقوب، رشید احمد صاحب اور مولانا قاسم
 صاحب بھی تھے۔ کچھ دنوں کے بعد جب حاجی امداد آ
 صاحب کو دلی الائی خیماعت کا پوکھا امام چنا گیا، تو یہی چار آدمی
 ان کے وزیر مقرر کئے گئے۔ اس سے ظاہر ہوتا ہے قاسم
 صاحب کی طرح حاجی رشید احمد صاحب نے بھی کتنی
 جلدی دلی الائی سٹوڈنٹس میں اپنے لئے یقین پیدا کر
 لیا تھا۔
 اس کے بعد کچھ دنوں تک رشید احمد صاحب جگہ جگہ گھوم

نوا ہند، حاجی رشید احمد گنگوہی دسمبر ۱۹۰۹ء
 محمد قاسم صاحب سے ہوئی، جو اسی مدرسے میں پڑھتے تھے اور
 رشید احمد صاحب کی طرح اپنے تیز ذہن کے لئے مدرسہ
 کھڑے ہیں مشہور ہو گئے۔

नया हिन्द हाजी रशीद अहमद गंगोही दिसम्बर सन् १९०७

कहना था कि हम जम्हूरियत के आज भी हामी हैं और हमेशा रहेंगे, लेकिन अंगरेजों को मुल्क से बाहर निकालने के लिये हमें इस इनकलाब में पूरी ताकत से हिस्सा लेना चाहिये, क्यों कि जब तक अंगरेज यहाँ पर मौजूद हैं, तब तक न यहाँ जम्हूरियत ही कायम हो सकती है और न शाहवलीउल्ला साहब के दूसरे असूलों को ही अमल में लाया जा सकता है.

एतराफ करने वालों को हाजी इमदादुल्ला साहब के इस जवाब से तसल्ली नहीं हुई, क्यों कि उनमें कुछ लोग ऐसे भी थे, जो लड़ाई की मुसीबतें सहने के लिये तय्यार नहीं थे, इन लोगों ने इस दलील के बहाने उन मुसीबतों से अपना बचाव कर लिया और वलीउल्लाई संगठन से अलग हो गए, हाजा रशीद अहमद साहब भी चाहते तो इस वक़्त अपना बचाव कर सकते थे, लेकिन वह अपने दोस्त और साथी मौलाना कासिम साहब की तरह अपनी जगह पर अडिग रहे और उन्होंने आजादी की इस लड़ाई में अमली हिस्सा लेना शुरू कर दिया, अपने उस्ताद और इमाम हाजी इमदादुल्ला साहब के साथ वह भी शामिली के मोर्चे पर अंगरेजी कौजों के दाँत खट्टे करते रहे, और तब तक लड़ते रहे जब तक कि वह लड़ाई में घायल हो जाने की वजह से पकड़ नहीं लिये गए.

जेलखाने में रशीद अहमद साहब को बड़ी बड़ी सख्त तकलीफें सहनी पड़ीं, उस वक़्त लड़ाई में हजारों कैदी अंगरेजों के पास थे, तिनके खाने पीने का इन्तजाम उस वक़्त की हालत में न तो हो ही सकता था, और न अंगरेजों को उसकी परवाह ही थी.

जमिंदार साहब

जामि

कितना कष्टकर जमिंदारिता के आज भी जामि हैं और हमेशा रहेंगे, लेकिन अंगरेजों को मुल्क से बाहर निकालने के लिये हमें इस इनकलाब में पूरी ताकत से हिस्सा लेना चाहिये, क्यों कि जब तक अंगरेज यहाँ पर मौजूद हैं, तब तक न यहाँ जम्हूरियत ही कायम हो सकती है और न शाहवलीउल्ला साहब के दूसरे असूलों को ही अमल में लाया जा सकता है.

जमिंदारिता ही कायम हो सकती है, और न शाहवलीउल्ला साहब के दूसरे असूलों को ही अमल में लाया जा सकता है. एतराफ करने वालों को हाजी इमदादुल्ला साहब के इस जवाब से तसली नहीं होती, किونक़े उनमें किंचे लोग ऐसे भी थे, जो आजादी की मुसीबतें सहने के लिये तय्यार नहीं थे, इन लोगों ने इस दलील के बहाने उन मुसीबतों से अपना बचाव कर लिया और वलीउल्लाई संगठन से अलग हो गए, हाजी इमदादुल्ला साहब भी चाहते तो इस वक़्त अपना बचाव कर सकते थे, लेकिन वह अपने दोस्त और साथी मौलाना कासिम साहब की तरह अपनी जगह पर अडिग रहे और उन्होंने आजादी की इस लड़ाई में अमली हिस्सा लेना शुरू कर दिया, अपने उस्ताद और इमाम हाजी इमदादुल्ला साहब के साथ वह भी शामिली के मोर्चे पर अंगरेजी फौजों के दाँत खट्टे करते रहे, और तब तक लड़ते रहे जब तक कि वह लड़ते रहे जब तक कि वह लड़ाई में घायल हो जाने की वजह से पकड़ नहीं लिये गए.

जमिंदारिता ही कायम हो सकती है, और न शाहवलीउल्ला साहब के दूसरे असूलों को ही अमल में लाया जा सकता है. एतराफ करने वालों को हाजी इमदादुल्ला साहब के इस जवाब से तसली नहीं होती, किونक़े उनमें किंचे लोग ऐसे भी थे, जो आजादी की मुसीबतें सहने के लिये तय्यार नहीं थे, इन लोगों ने इस दलील के बहाने उन मुसीबतों से अपना बचाव कर लिया और वलीउल्लाई संगठन से अलग हो गए, हाजी इमदादुल्ला साहब भी चाहते तो इस वक़्त अपना बचाव कर सकते थे, लेकिन वह अपने दोस्त और साथी मौलाना कासिम साहब की तरह अपनी जगह पर अडिग रहे और उन्होंने आजादी की इस लड़ाई में अमली हिस्सा लेना शुरू कर दिया, अपने उस्ताद और इमाम हाजी इमदादुल्ला साहब के साथ वह भी शामिली के मोर्चे पर अंगरेजी फौजों के दाँत खट्टे करते रहे, और तब तक लड़ते रहे जब तक कि वह लड़ाई में घायल हो जाने की वजह से पकड़ नहीं लिये गए.

नया हिन्द हाजी रसीद अहमद गंगोही दिसम्बर सन् '४७

इन क़ैदियों के मुकदमों वही जल्दी जल्दी निबटाए जा रहे थे. ज्यादातर लोगों को फौसी पर चढ़ा कर ठिकाने लगाया जा रहा था. रशीद अहमद साहब भी इस बात को जानते थे कि मुक़े फौसी को ही सजा मिलेगी. क्यों कि उनके जिस्स पर गोली का निशान इस बात का साक़ सबूत था कि उन्होंने इस जंग में हिस्सा लिया है. फिर भी न उनको कोई फ़िक्र थी और न कोई अक़सोस. उन्होंने तो जिस दिन इस राह में क़दम रक्खा था, उसी दिन इस नतीजे को जान लिया था. अक़सोस तो उनको सिर्फ़ यह था कि आबादी को वह लड़ गई हिन्दुस्तानियों की आपसी फूट की वजह से कामयाब न हो सकी. और फ़िक्र भी उनको सिर्फ़ यह थी कि किसी तरह वलीउल्लाई संगठन के कुछ ऐसे खास नेता अंगरेजों के पंजों से बच जाँय, जो इसके बाद भी वलीउल्लाई तहरीक को चलाते रहें और आबादी के मंडे को ऊँचा उठाये रखें.

कहा जाता है कि मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है. खुशकिस्मती से रशीद अहमद साहब के साथ भी यही हुआ. उनके मुक़दमे का नम्बर आने से पहिले ही आम माफ़ी का ऐलान हो गया. इस ऐलान के मुताबिक़ रशीद अहमद साहब भी रिहा हुए. जेल से निकलते ही उन्होंने फिर अपना पुराना काम शुरू कर दिया. सबसे पहले उन्होंने यह पता लगाया कि वलीउल्लाई संगठन के कौन कौन से नेता फौसी के तल्ले की नज़र हो गए और कौन कौन से बच सके हैं. उनको यह जान कर बहुत खुशी हुई कि संगठन के सब से बड़े नेता हाजी इमदादुल्ला

याहेंद - حاجی رشید احمد گنگوہی دسمبر ۱۹۴۷

ان نید یوں کے مقدمہ برقی جلدی جلدی بنائے جا رہے تھے۔ زیادہ تر لوگوں کو پھانسی پر چڑھا کر ٹھکانے لگا یا جا رہا تھا۔ رشید احمد صاحب بھی اس بات کو جانتے تھے کہ مجھے پھانسی کی ہی سزا ملے گی۔ کیونکہ ان کے جسم پر گولی کا نشان اس بات کا صاف ثبوت تھا کہ انھوں نے اس جنگ میں حصہ لیا ہے۔ پھر بھی نہ ان کو کوئی بڑے قسمی اور نہ کوئی افسوس۔ انھوں نے بوجہ اس راہ میں قدم نہ لگنا تھا، اسی دل کی بیجے کو جان لیا تھا۔ افسوس تو ان کو صرف یہ تھا کہ آزادی کی وہ طوائف ہندوستانیوں کی آپسی بھوش کی وجہ سے کامیاب نہ ہو سکی اور نہ ہی ان کو صرف یہی کہ کسی طرح نئی نئی سنگٹھن کے کچے ایسے خاص نیشنل انگریزوں کے پنجوں سے بچ جائیں جو اس کے بعد بھی دل آلائی ٹھیکرک کو چلاتے رہیں اور آزادی کے جھنڈے کو آگیا اٹھائے گئیں

کسا جاتا ہے کہ مارنے والے سے بچانے والا بڑا ہوتا ہے۔ خوش قسمتی سے رشید احمد صاحب کے ساتھ بھی یہی ہوا۔ ان کے مقدمے کا نمبر آنے سے پہلے ہی عام معافی کا اعلان ہو گیا۔ اس اعلان کے مطابق رشید احمد صاحب بھی رہا ہوئے۔ جیل سے نکلنے ہی انھوں نے پھر اپنا پرانا کام شروع کر دیا۔ سب سے پہلے انھوں نے یہ پتہ لگا لیا کہ وہی آلائی سنگٹھن کے کون کون سے تینا پھانسی کے کتنے کی نظر ہو گئے اور کون کون سے نئے نئے تینا پھانسی ہیں۔ ان کو یہ جان کر بہت خوشی ہوئی کہ سنگٹھن کے سب سے بڑے نیتا حاجی امداد اللہ

थे. इसी लिये एक चार उन्होंने यह भी राय जाहिर की थी कि मद्रसा देवबन्द में फलसके को तालीम देने की कोई जरूरत नहीं है. यानी वह चाहते थे कि नौजवानों को सिर्फ वही बातें पढ़ाई जावें जो उनमें कैरेक्टर और मजहब व वतन की मुहव्वत पैदा करने के लिये जरूरी हों. वह सिपाही चाहते थे आलिम या पंडित नहीं. मतलब यह कि बलौडल्लाई संगठन में भी अपने जमाने में वह गरम दल के लोगों में से थे.

सन् १८७८ ईसवी में अपने वचपन के साथी मौलाना क़ासिम साहब का इन्तक़ाल हो जाने से रशीद अहमद साहब को बहुत गहरा धक्का लगा. दोनों ही एक दूसरे को भाई की तरह प्यार करते थे और मुल्क की आजादी की लड़ाई में दोनों ने साथ साथ हिस्सा लिया था. दोनों के दिलों में एक दूसरे के लिये यक़ीन और इज्जत थी और खास तौर पर रशीद अहमद साहब तो क़ासिम साहब को अपना नेता भी मानते थे. और उन पर ग़ैर मामूली भरोसा रखते थे. इसीलिये क़ासिम साहब के इन्तक़ाल को खबर पाते ही रशीद अहमद साहब ने एक ठंडी साँस लेकर कहा था, "सालार क़ाक़िला चल बसा, जो किसी दिन खुद भी शहीद होता और हमको भी कुर्बान कराता."

रशीद अहमद साहब के इन लफ़्ज़ों में उनकी आखों के न जाने कितने सपने बोल रहे थे.

मौलाना क़ासिम साहब के इन्तक़ाल के बाद रशीद अहमद साहब से जब इमामत का बोझ सन्हालने को कहा गया, तो वह इन्कार न कर सके. इन दिनों वह गंगोह में रहते थे और कभी

नियामत
हाजी रशीद अहमद गंगोही
दिसम्बर
थे. इसी लिये एक बार अख़बों ने ये भी दाँनें छापहर की छपी की छहर
दुबिन्द में फलसके की तालीम देने की कौनी जरूरत नहीं है. यानी वह चाहते
है. यानी वह चाहते थे कि नौजवानों को सिर्फ वही बातें पढ़ाई
जावें जो उनमें कैरेक्टर और मजहब व वतन की मुहव्वत पैदा करने के लिये जरूरी हों. वह साहबी
चाहते थे कि बलौडल्लाई संगठन में भी अपने जमाने में वह गरम दल के लोगों में से थे.

मौलाना क़ासिम साहब का इन्तक़ाल हो जाने से रशीद अहमद साहब को बहुत गहरा धक्का लगा. दोनों ही एक दूसरे को भाई की तरह प्यार करते थे और मुल्क की आजादी की लड़ाई में दोनों ने साथ साथ हिस्सा लिया था. दोनों के दिलों में एक दूसरे के लिये यक़ीन और इज्जत थी और खास तौर पर रशीद अहमद साहब तो क़ासिम साहब को अपना नेता भी मानते थे. इसीलिये क़ासिम साहब के इन्तक़ाल को खबर पाते ही रशीद अहमद साहब ने एक ठंडी साँस लेकर कहा था, "सालार क़ाक़िल ज़िल बसा, जो किसी दिन खुद भी कुर्बान कराता."

रशीद अहमद साहब के इन लफ़्ज़ों में उन की आखों के न जाने कितने सपने बोल रहे थे.

मौलाना क़ासिम साहब के इन्तक़ाल के बाद रशीद अहमद साहब से जब इमामत का बोझ सन्हालने को कहा गया, तो वह इन्कार न कर सके. इन दिनों वह गंगोह में रहते थे और कभी

نیا ہند حاجی رشید احمد گنگوہی دسمبر سن ۱۹۷۹

کبھی دیوبند آکر مدرسے کے قادیانیتھیوں کو درس (پاٹھ) دے جایا کرتے تھے، یا جو قادیانیتھی مدرسے کی بڑھائی سے فارغ ہو کر گنگوہ پینچے تھے، ان کو بڑھا دیا کرتے تھے۔ اس طرح سے انھوں نے قریب تین سو قادیانیتھیوں کو تعلیم دی، جن میں سے کچھ نے آگے چل کر ہندستان کی آزادی کی لڑائی میں بڑھ چڑھ کر حصہ لیا۔ ایسے لوگوں میں ولی اللہی جماعت کے چھٹے امام مولانا محمود الحسن صاحب، مشہور کرانیکاری مولوی عبید اللہ سندھی، موجودہ زمانے میں جمعیت کے بہت بڑے لیڈر مولانا حسین احمد صاحب مدنی کا نام مثال کے طور پر لیا جاسکتا ہے۔

ظہیر احمد صاحب کی سب سے بڑی خواہش یہ تھی کہ کسی بظہر ہندستان کے مسلمان انگریزوں کی چال بازیوں سے آگے نہ بڑھیں اور ہندستان میں آزادی کی لڑائی میں سب سے آگے بڑھ کر حصہ لیں۔ اسی وجہ سے ان کو ایسے لوگوں سے بڑی چڑھ تھی، جو انگریزی راج کی وفاداری کا مسلمانوں میں پرجا کرتے تھے، یا ایسے لوگوں کی راہ میں روڑے اٹھاتے تھے جو انگریزوں کی مخالفت کرتے تھے۔ بدقسمتی سے ایسے لوگوں میں سرسید احمد صاحب بھی تھے، جن کی شان دار شخصیت کے کہنے بڑے بڑے ٹھکانے تھے۔ لیکن حاجی رشید احمد صاحب سے ان کی کبھی نہ بیٹ سکی۔ یہیں تک نہیں بلکہ کچھ برسوں کے بعد کانگریس کی مخالفت کرنے کے لئے جب سرسید صاحب نے 'انجمن اسلامیہ' قائم کی اور مسلمانوں کو کانگریس سے نکل کر اس میں شریک ہونے کی دعوت دی، تو حاجی صاحب نے

نیا ہند حاجی رشید احمد گنگوہی دسمبر سن ۱۹۷۹

کبھی دیوبند آکر مدرسے کے قادیانیتھیوں کو درس (پاٹھ) دے جایا کرتے تھے، یا جو قادیانیتھی مدرسے کی بڑھائی سے فارغ ہو کر گنگوہ پینچے تھے، ان کو بڑھا دیا کرتے تھے۔ اس طرح سے انھوں نے قریب تین سو قادیانیتھیوں کو تعلیم دی، جن میں سے کچھ نے آگے چل کر ہندستان کی آزادی کی لڑائی میں بڑھ چڑھ کر حصہ لیا۔ ایسے لوگوں میں ولی اللہی جماعت کے چھٹے امام مولانا محمود الحسن صاحب، مشہور کرانیکاری مولوی عبید اللہ سندھی، موجودہ زمانے میں جمعیت کے بہت بڑے لیڈر مولانا حسین احمد صاحب مدنی کا نام مثال کے طور پر لیا جاسکتا ہے۔

ظہیر احمد صاحب کی سب سے بڑی خواہش یہ تھی کہ کسی بظہر ہندستان کے مسلمان انگریزوں کی چال بازیوں سے آگے نہ بڑھیں اور ہندستان میں آزادی کی لڑائی میں سب سے آگے بڑھ کر حصہ لیں۔ اسی وجہ سے ان کو ایسے لوگوں سے بڑی چڑھ تھی، جو انگریزی راج کی وفاداری کا مسلمانوں میں پرجا کرتے تھے، یا ایسے لوگوں کی راہ میں روڑے اٹھاتے تھے جو انگریزوں کی مخالفت کرتے تھے۔ بدقسمتی سے ایسے لوگوں میں سرسید احمد صاحب بھی تھے، جن کی شان دار شخصیت کے کہنے بڑے بڑے ٹھکانے تھے۔ لیکن حاجی رشید احمد صاحب سے ان کی کبھی نہ بیٹ سکی۔ یہیں تک نہیں بلکہ کچھ برسوں کے بعد کانگریس کی مخالفت کرنے کے لئے جب سرسید صاحب نے 'انجمن اسلامیہ' قائم کی اور مسلمانوں کو کانگریس سے نکل کر اس میں شریک ہونے کی دعوت دی، تو حاجی صاحب نے

एक कृतवा देकर यह एलान किया था कि मुसलमानों को काँप्रे स में शरीक होना चाहिये, अंजुमने इस्लामिया में नहीं, यहाँ पर यह बात भी साक कर देना जरूरी है कि न तो हाजी रशीद अहमद साहब खुद काँप्रे स में शरीक थे और न उस वक़्त की काँप्रे स का प्रांगम उन जैसे गरम दिल के देशभक्त को पसन्द ही आ सकता था. फिर भी इतना तो साक था ही कि काँप्रे स अंगरेजों से हिन्दुस्तानियों को कुछ हक़ दिलवाना चाहती थी. सर सय्यद अहमद साहब और उनके साथी इस बात को भी नापसन्द करते थे और सिर्फ़ इस बात का प्रचार करते थे कि मुसलमानों को अपने हर एक काम से यह आहिर करना चाहिये कि वह अंगरेजी राज के पूरे पूरे बकादार हैं. यही वजह थी कि हाजी रशीद अहमद साहब ने काँप्रे स की हिमायत करना जरूरी समझा.

इसके कुछ दिन बाद जब मौलाना सादुद्दीन साहब काश्मीरी और मौलाना अमानुल्ला साहब ने हाजी साहब से हिन्दुस्तान के 'दारुल हरब' होने या न होने की बात फैसला माँगा, तो हाजी साहब ने हमेशा याद रखने के क़ाबिल बहादुरी और हिम्मत के साथ यह कृतवा दिया कि हिन्दुस्तान 'दारुल हरब' है. इस कृतवे का कुछ हिस्सा इस तरह से था.

"अकन् हाले हिन्द, रा खुद गौर कर्मायन्द कि इजराये अहकाम कुफकार नसारा दर्रीजा बचे कुव्वत व गल्ला हस्त. अगर अदना कलक्टर हुक्म कर्द कि दर मसजिद जमान अदा न कुनेद, हेच मर्द अज अमीरो गरीब कुदरत नदारद कि अदाये औ नमायद.

x x वहर हाल नसल्लुले कुफकार वर हिन्द दर्रीजा अस्त कि

एक फ़ौली दे के ये एलान किया गया कि मुसलमानों को काँग्रेस में शामिल होना चाहिये, अंजन इस्लामिया में नहीं. यहाँ पर ये बात भी साक कर देना जरूरी है कि न तो हाजी रशीद अहमद साहब खुद काँग्रेस में शामिल हो सकते थे और न उस वक़्त की काँग्रेस का प्रोग्राम उन जैसे गरम दिल के देशभक्त को पसन्द ही आ सकता था. फिर भी इतना तो साक था ही कि काँग्रेस अंगरेजों से हिन्दुस्तानियों को कुछ हक़ दिलवाना चाहती थी. सर सय्यद अहमद साहब और उनके साथी इस बात को भी नापसन्द करते थे और सिर्फ़ इस बात का प्रचार करते थे कि मुसलमानों को अपने हर एक काम से यह आहिर करना चाहिये कि वह अंगरेजी राज के पूरे पूरे बकादार हैं. यही वजह थी कि हाजी रशीद अहमद साहब ने काँग्रेस की हिमायत करना जरूरी समझा.

इसके कुछ दिन बाद जब मौलाना सद्दीन साहब काश्मीरी और मौलाना अमानुल्ला साहब ने हाजी साहब से हिन्दुस्तान के 'दारुल हरब' होने या न होने की बात फ़ैसला माँगा, तो हाजी साहब ने हमेशा याद रखने के क़ाबिल बहादुरी और हिम्मत के साथ यह कृतवा दिया कि हिन्दुस्तान 'दारुल हरब' है. इस कृतवे का कुछ हिस्सा इस तरह से था.

"अकन् हाले हिन्द, रा खुद गौर कर्मायन्द कि इजराये अहकाम कुफकार नसारा दर्रीजा बचे कुव्वत व गल्ला हस्त. अगर अदना कलक्टर हुक्म कर्द कि दर मसजिद जमान अदा न कुनेद, हेच मर्द अज अमीरो गरीब कुदरत नदारद कि अदाये औ नमायद.

x x वहर हाल नसल्लुले कुफकार वर हिन्द दर्रीजा अस्त कि

دیکبر ۱۹۰۷ء حاجی رشید احمد گنگوہی

در پہنچ وقت کفار را بر دو حرب زیادہ ازیں نمود . و ادا کے
 ماکیم اسلام از مسلمانان محض بہ اجازت ایثا نست و از
 مسلمانان عزیز ترین رعایا کے نیست .
 یعنی "اب ہندستان کی حالت پر آپ غم نہ کریں کہ جس ملک
 میں عیسائی کافروں کے قانون اپنی طاقت رکھتے ہیں کہ اگر ایک
 اولیٰ سا کلکتہ بھی یہ حکم کرے کہ مسجدوں میں آگے ہو کر نماز نہ پڑھی
 جائے تو پھر کسی ایسے غریب کی یہ ہمت نہیں پڑ سکتی کہ وہ مسجد
 میں نماز پڑھ سکے ."

x بہر حال ہندستان پر کافروں کا اختیار اس درجے تک
 بڑھا ہوا ہے کہ کسی وقت بھی کسی 'دارالطرب' پر اس سے زیادہ کافروں کا
 اختیار نہیں ہوتا . یہاں پر جو اپنے مذہبی کام مسلمان کرتے ہیں وہ صرف
 کافروں کی اجازت سے . مسلمان یہاں کی سب سے زیادہ دکھی رعایا ہے ."
 یہ فتویٰ حاجی رشید احمد صاحب نے اس زمانے میں دیا تھا جب
 سورج کا نام لینے پر لوگوں کو لمبی لمبی سزائیں دی جاتی تھیں اور کچھ
 لوگوں کو صرف اس لئے کالے پانی کی سزا دی گئی تھی کہ ان کی کسی
 نظموں سے ملک کو آزاد کرنے کا جذبہ ابھرتا تھا .

اس طرح حاجی رشید احمد صاحب ہمیشہ یہ کوشش کرتے رہے
 کہ ہندستان کے مسلمان آزادی کی لڑائی میں پورے طور سے حصہ لیتے
 - ہیں اور اس کے لئے اگر غیر مسلمانوں کو بھی ساتھ لینا پڑے ، تو ان کو
 بھی پناہ کسی ایک کے ساتھ میں لیں . وہ ۱۸۵۷ء جیسی فضا ایک بار پھر ملک
 میں دیکھنا چاہتے تھے . انگریزوں کا ہندستان میں دہنا ہر وقت ان کے دل

نیا ہند ۸۷ء دیسمبر سن ۱۸۷۰ء
 نیا ہند ہاजी रशीद अहमद गंगोही
 दर हेच वक्त कुफकार रा बर दरे हरब ज्यादा अर्जी नबूद . व अदाये
 मरामिमे इस्लाम अब मुसलमानान . महज व इजाजत ईशानस्त
 व अब मुसलमान अजीज तरीन रियाया कसे नेस्त ."

यांनी "अब हिन्दुस्तान की हालत पर आप खुद गौर करें कि
 इस मुल्क में ईसाई काफिरों के कानून इतनी ताकत रखते हैं कि
 अगर एक अदना सा कलक्टर भी यह हुक्म कर दे कि, मसजिदों
 में इकट्ठे होकर नमाज न पढ़ी जाय, तो फिर किसी अमीर शरीफ की
 यह हिम्मत नहीं पड़ सकती कि वह मसजिद में नमाज पढ़ सके ."

x x बहर हाल हिन्दुस्तान पर काफिरों का अख्तियार इस दर्जे
 तक बढ़ा हुआ है कि किसी वक्त भी किसी 'दारुल हरब' पर
 इससे ज्यादा काफिरों का अख्तियार नहीं होता . यहाँ पर जो अपने
 मजहबों का काम मुसलमान करते हैं, वह सिर्फ काफिरों की इजाजत
 से . मुसलमान यहाँ की सबसे ज्यादा दुखी रियाया है ."

यह फतवा हाजी रशीद अहमद साहब ने उस زمانे में दिया था,
 जब स्वराज का नाम लेने पर लोगों को लम्बी लम्बी सजायें दी जाती थीं
 और कुछ नौजवानों को सिर्फ इसलिये काले पानी की सजा दी गई थी कि
 उनकी लिखी नज्मों से मुल्क को आजाद करने का जज्बा उभरता था .

इस तरह हाजी रशीद अहमद साहब हमेशा यह कोशिश
 करते रहे कि हिन्दुस्तान के मुसलमान आजादी की लड़ाई में पूरे
 तौर से हिस्सा लेंत रहें और इसके लिये अगर गौर मुसलमानों
 को भी साथ लेना पड़े, तो उनको भी बिना किसी हिचक के साथ
 में लें . वह सन् १८५७ जैसी फिजा एक बार फिर मुल्क में देखना
 चाहते थे . अंग्रेजों का हिन्दुस्तान में रहना हर वक्त उनके दिल

دبر سلسلہ
 حاجی رشید احمد گنگوہی
 نیا ہند
 میں کائنات کی طرح چمکتا تھا۔ اُن کی خواہش تھی کہ وہ ملک کی آزادی کے لئے لڑتے ہوئے ہی شہید ہوں۔ جب بھی کوئی ایسا موقع آیا، انھوں نے کبھی اپنا پاؤں پیچھے نہ ہٹایا اپنے ہر ایک شاگرد اور ٹرید کو بھی وہ یہی تعلیم دیتے تھے۔ جب وہ اپنے کچھ خاص شاگردوں کو اس میدان میں کام کرتے دیکھتے تھے تو ان کو بڑی تسلی اور خوشی ہوتی تھی۔

حاجی رشید احمد صاحب کا انتقال ۱۱ اگست ۱۹۰۵ء صیوسی دن شکرپور کو قریب ۸۹ برس کی عمر میں ہوا۔ اُس وقت تک ہندستان میں ایک نئی لہر پیدا ہو چکی تھی اور تیلک جیسے نینامائیت، صفات صاف لفظوں میں ہندستان نئی آزادی کی بانگ کر رہے تھے، جس کے اثر میں اگر بہت سے نوجوانوں نے انگریزوں کے خلاف ہتھیاروں کو بھی استعمال کرنا شروع کر دیا تھا۔ اس مجموع میں انگریز سرکار بہت سے نوجوانوں کو پھانسی پر بھی چڑھا چکی تھی۔ لیکن یہ ننگ بڑھتی ہی جا رہی تھی۔ اس وقت تک ولی اللہ سنگھن بھی کافی مضبوط ہو چکا تھا اور حاجی رشید احمد صاحب کے نکال ٹرید مولانا محمود الحسن صاحب کی لیڈی میں ہندستان میں انگریزی حکومت کے خلاف ایٹائی شروع کر دینے کی کافی توجہ دیا تیاریاں لگے۔

اس طرح حاجی رشید احمد صاحب کو اپنی زندگی میں ہی اپنے مشن کی کامیابی دیکھنا نصیب ہو گیا تھا اور مرتے وقت ان کو یہ پورا اطمینان تھا کہ اب ہندستان زیادہ دنوں تک غلام نہیں رکھا جائے گا۔

۸۹ء ديسم্বর सन् 1899
 नया हिन्द हाजी रशीद अहमद गंगोही
 में काँटे की तरह चुभता रहता था. उनकी खादिश थी कि वह मुल्क की आजादी के लिये लड़ते हुए ही शहीद हों. जब भी कोई ऐसा मौका आया, उन्होंने कभी अपना पाँव पीछे न हटाया. अपने हर एक-शागिर्द और सुरीद को भी वह यही तालीम देते थे. जब वह अपने कुछ खास शागिर्दों को इस मैदान में काम करते देखते थे, तो उनको बड़ी तसल्ली और खुशी होती थी.

हाजी रशीद अहमद साहब का इन्तकाल ११ अगस्त सन् १९०५ ईसवी दिन शुक्रवार को करीब ८९ बरस की उम्र में हुआ. उस वक़्त तक हिन्दुस्तान में एक नई लहर पैदा हो चुकी थी और तिलक जैसे नेता निहायत साफ साफ लफ्जों में हिन्दुस्तान की आजादी को माँग कर रहे थे, जिसके असर में आकर बहुत से नौजवानों ने अंगरेजों के खिलाफ हथियारों का भी इस्तेमाल करना शुरू कर दिया था. इस जुर्म में अंग्रेज सरकार बहुत से नौजवानों को फाँसों पर भी चढ़ा चुकी थी. लेकिन यह आग बढ़ती ही जा रही थी. इस वक़्त तक वलीउल्लाई संगठन भी काफ़ी मजबूत हो चुका था और हाजी रशीद अहमद साहब के खास सुरीद मौलाना महमूदुल हसन साहब को लीडरी में हिन्दुस्तान में अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ लड़ाई शुरू कर देने की काफ़ी जोरदार तय्यारियाँ कर रहा था.

इस तरह हाजी रशीद अहमद साहब को अपनी जिन्दगी में ही अपने मिशन की कामयाबी देखना नसीब हो गया था और मरते वक़्त उनको यह पूरा इतमीनान था कि अब हिन्दुस्तान ज्यादा दिनों तक गुलाम नहीं रक्खा जा सकेगा.

हिन्दुस्तानी कलचर और संज्ञित

तानसेन का रवाबी खानदान

(पं० गंनेश प्रसाद द्विवेदी)

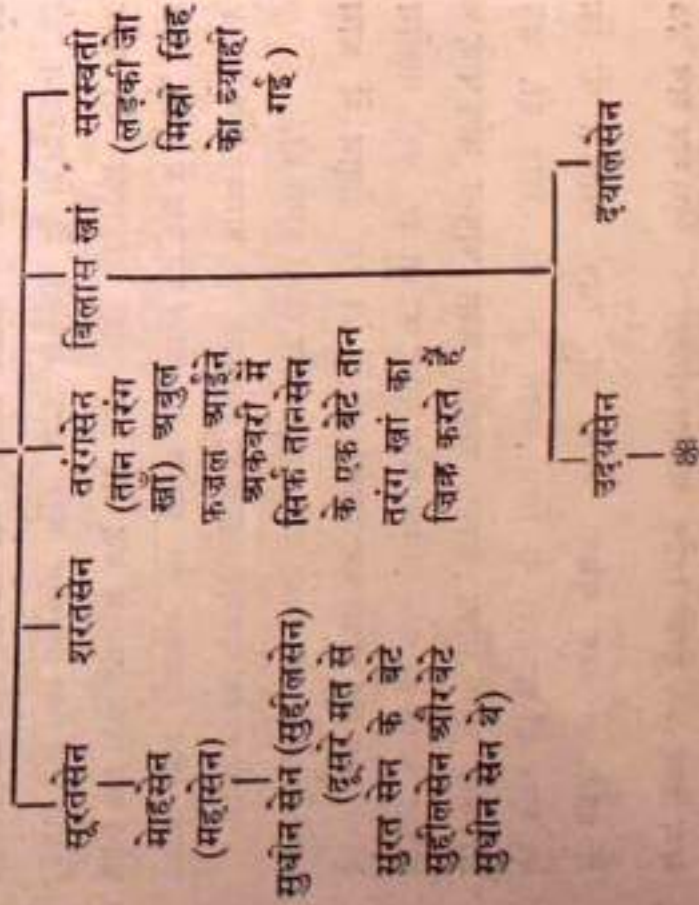
(७)

तानसेन की लड़की सरस्वती देवी और मिस्रीसिंह से जो खानदान चला उसके सब गुनियों की चर्चा हम कर चुके हैं. अब तानसेन के बेटे के बंस का हाल लिखना है. नीचे इनका बंसपेड़ दिया जा रहा है. यह ज्यादातर रवाब के माहिर थे इसलिये यह खानदान 'रवाबी खानदान' के नाम से मशहूर है.

तान सेन के बेटे का बंस (रवाबिये)

सुकुन्द राम या मकरंद पांडे

रामतनु पांडे या तानसेन (बो का नाम प्रेम कुमारी)



हन्दस्तानी कलचर और संज्ञित

तानसेन का रवाबी खानदान

(रिण्ट गंनेश प्रसाद द्विवेदी)

(८)

तानसेन की लड़की सरस्वती देवी और मिस्रीसिंह से जो खानदान चला उस के सब गंणियों की चर्चा हम कर चुके हैं. अब तानसेन के बेटे के बंस का हाल लिखना है. नीचे इनका बंसपेड़ दिया जा रहा है. यह ज्यादातर रवाब के माहिर थे इसलिये यह खानदान 'रवाबी खानदान' के नाम से मशहूर है.

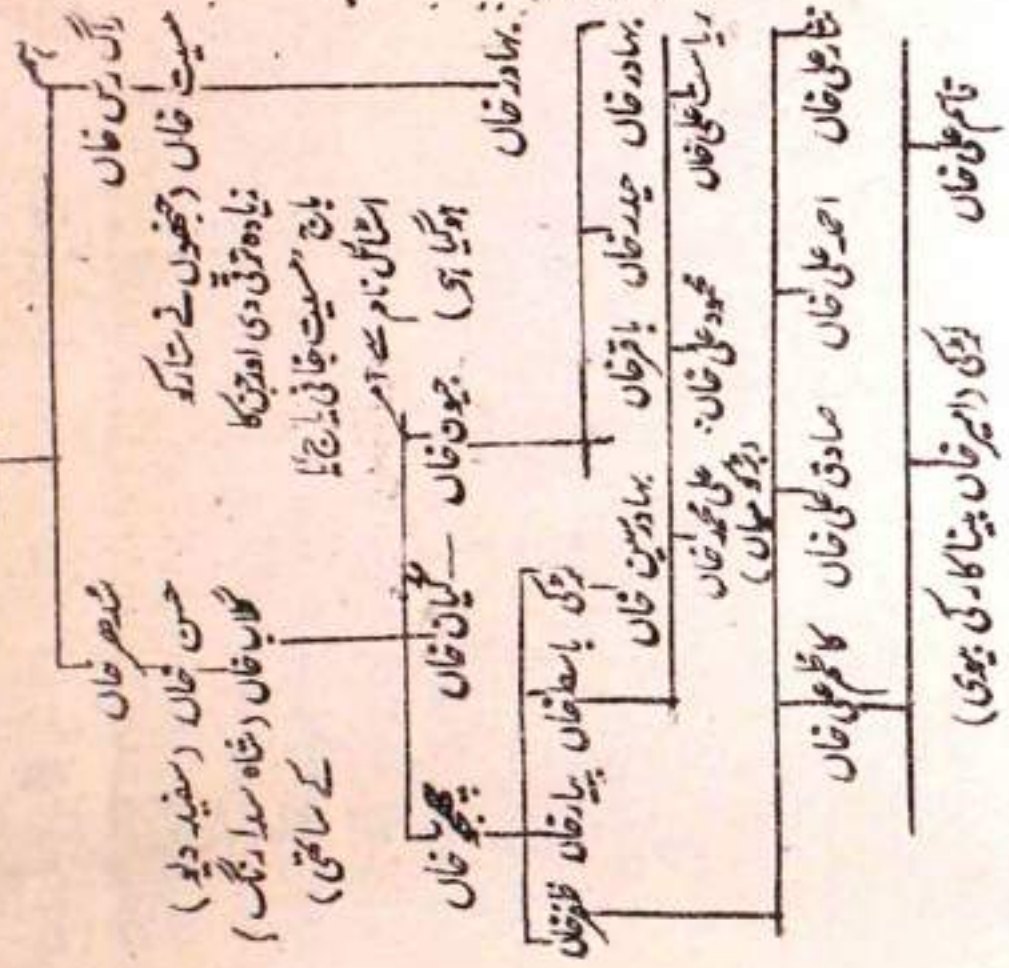
तानसेन के बेटे का बंस (रवाबिये)

सुकुन्द राम या मकरंद पांडे

रामतनु पांडे या तानसेन (असरी का नाम प्रेम कुमारी)



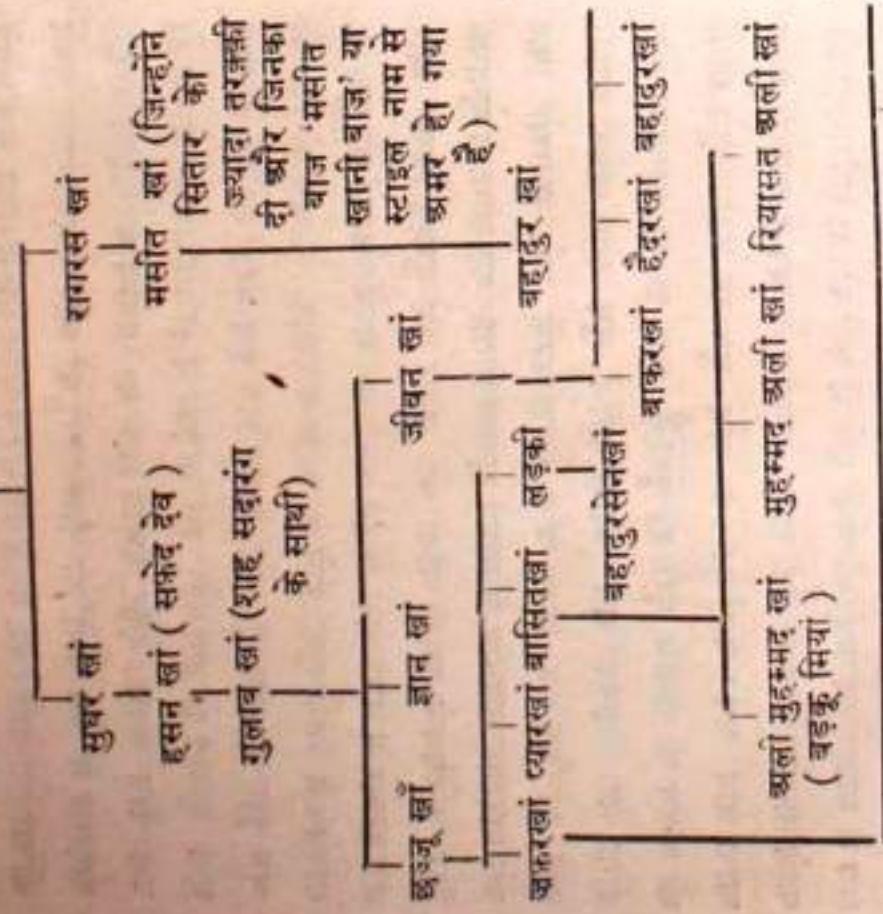
کریم سین



تاکم علی خاں (بیادوسین خاں کا بیٹا) (بیادوسین خاں کا بیٹا) (بیادوسین خاں کا بیٹا) (بیادوسین خاں کا بیٹا)

تاکم سین کی زندگی کے بارے میں کچھ باتیں ہم پہلے کہ چکے ہیں۔ کچھ ایسی اور کہنی ہیں۔ ابھی ان کے چل لینے کا اور ان کے چالوں لاکھوں کا کچھ حال کہنا ہے۔ تاکم سین کے چار بیٹے تھے۔

کریم سین



کاشم خاں (بھادور خاں کا بیٹا) (بھادور خاں کا بیٹا) (بھادور خاں کا بیٹا) (بھادور خاں کا بیٹا)

کاشم خاں (بھادور خاں کا بیٹا) (بھادور خاں کا بیٹا) (بھادور خاں کا بیٹا) (بھادور خاں کا بیٹا)

शरत सेन, सूरत सेन, तरंग सेन और विलास खां. इनमें से छोटे विलास खां का ही वंश चला जिसके आखिरी चिराग, मुहम्मद अली खां साहब (५० भात खड़े और राजा नवाब अली के गुरु) थे जो अभी सन् १९२८ तक जिन्दा थे. इस बीच इस खानदान में एक से एक गुनी हुए जो ज्यादातर रवाकिये थे. इनमें से जो सब से मशहूर हुए उन्हीं की चर्चा थोड़े में यहां की जा सकेगी. सबसे पहले तानसेन के चारों बेटों को लें. तानसेन ने अपना आखिरी वक्त आया जान अपने चारों बेटों को पास बुलाकर कहा, 'तुम लोगों की संगीत की तालीम पूरी हो चुकी है, अब उसका इम्तहान देना होगा, मेरी जिन्दगी अब ज्यादा नहीं है. तुम लोग अपनी अपनी रची हुई एक एक अलग चोच तैयार करके मुझे सुनाओ. फिर उसे बादशाह सलामत के सामने सुनाना होगा. उन लोगों ने सुनाया. फिर तानसेन ने उनकी चीखों को सुधार कर दुरुस्त किया और तब दरबार में बारी बारी से इन लोगों ने अपनी चीखों को सुनाया. तानसेन ने गाना शुरू होने के पहले बादशाह से अर्ज की कि "मैं अब बूढ़ा हो गया हूँ, मेरी तारुत अब कुछ नहीं रह गई है, अब मुझे फुरसत दी जाए और इन लड़कों में से जो जिस लायक हो उसे वैसा रुतबा देकर इनकी रोजी का प्रबन्ध कर दिया जाए." बादशाह ने उन चारों की जिम्मेदारी ली और उनका गाना सुनने की खाहिश जाहिर की. पहले बड़े लड़के सूरत सेन ने गाया. सब लोगों ने तारीफ की. फिर दूसरे लड़के शरत सेन ने गाया. इनकी भी वैसी

❖ तानसेन के बड़े लड़के सूरतसेन थे या शरतसेन इस बारे में दो रायें हैं. कुछ लोगों की राय में शरतसेन ही सबसे बड़े थे.

शरत सेन, सूरत सेन, तरंग सेन और ब्लास खां. इन में से चोखूटे ब्लास खां का ही बंस चला जिस के अखरी चिराग, मुहम्मद अली खां साहब (रिन्डत बहत कन्हडू रे और राजा नुवाब अली के गुरु) क्ते. जो अभी १९२८ तक जन्डे क्ते. अस निच अस खानदान में अक के अक ग़ुनी हुं रे जो ज़यादे तर बाये क्ते. इन में से जो सब के शम्शेर् हुं रे अक्हीं की चिराग क्छोटू रे में सेबा की जासके. सब के पिळे तान सेन के चारुल पिळुल कुलिस. तान सेन ने अिना अखरी वक़्त आया जान अणे चारुल पिळुल कुलिस ब्लाकर कहा, 'दुम ग़ुनुल की सङ्गीत की तेलिम बुदी भुंकी रे' अब अस का अखान दिना हुंका, 'मेरी जन्डगी अब ज़यादे क़ीन रे. तुम ग़ुनुल अिनी अिनी हुंकी अक अक अक चरतार बकर के ग़ुने सङ्गा रे, अकर अस बादशाह सलामत के सभने सङ्गा ना हुंका. इन ग़ुनुल ने सङ्गा. अकर तान सेन ने उन की चिरुल कु सुदहार कर दुरस्त किया और तब दरबार में बारी बारी से इन ग़ुनुल ने अिनी चिरुल सुकुसुनाया. तान सेन ने काना शुरुंग हुंने के पिळे बादशाह के अरुस की करेन अब बुठुवा हुंकी हुं. मेरी ललक़त अब क़ेच भेन रे हुंकी रे. अब ग़ुने वक़्त दी जाते और इन ग़ुनुल में से जो ललक़त हुं असे वीसा क़ते देके उन की रुडी का क़िरबन्ध करु दिया जाते. "बादशाह ने उन चारुल की ड़ुते वारी ली और उन का काना सुनेने की ख़ाहिश फ़ा हर की. पिळे बूरे लूके सूरत सेन ने काना. सब ग़ुनुल ने तुरीफ की. अकर दुसरे लूके शरत सेन ने काना. इन की भी वीसी

तान सेन के बड़े लूके सूरत सेन क्ते या शरत सेन अस बाये में दुराभ में. क़ेच ग़ुनुल की राये में शरत सेन ही सब से बड़े क्ते.

नया हिन्द हिन्दुस्तानी कलचर और सङ्गीत दिसम्बर सन् '४७
 ही तारीक हुई. इसी तरह तीसरे लड़के तरंगसेन की भी तारीक हुई. इन तीनों ही के गाने में कोई किसी तरह का दोष या गलती न निकाल सका. दरबार के सभी गुनी और भिन्नोसिंह जो भी इस मौके पर मौजूद थे. पर बाद में जब छोटे लड़के विलास खां ने गाया तो सब की आंखें खुल गईं. सब सन्नाटे में आ गए. और खुद बादशाह ने कहा कि स्वामी हरीदास के बाद इतनी तारीक और इतना दद किसी गाने में नहीं पाया गया. सब गुनी जनों ने एक राय होकर कहा कि तानसेन तुम्हारा और तुम्हारे बंस का नाम इसी लड़के से अमर होगा. इसके बाद दरबारी गायक के रूप में विलास खां तैनात कर दिए गए. इस के कुछ दिन बाद तानसेन सखत बामार हुए और बादशाह अकबर खुद उनके पास आए. तानसेन ने इस वक्त अपने को ग्वालियर भेज दिये जाने की खाहिश जाहिर की. वह एक बार अपने गुरु हजरत मुहम्मदगौस के यहाँ जाना चाहते थे. पर उनकी हालत उस वक्त ऐसी नहीं थी कि उन्हें एक जगह से दूसरी जगह ले जाया जा सकता. शाही हकीमों ने राय नहीं दी. तब खुद बादशाह ने उनकी सेज के बराल में आकर उन्हें समझाया और ग्वालियर जाने का मतसूचा छोड़ देने को कहा. इस वक्त बादशाह को अपने पास बैठा हुआ देखकर तानसेन ने आंखों में आंसू भर कर उनसे कहा: 'खुदावंद, अब और क्या कहूँ मेरा वक्त हो गया. ग्वालियर अगर नहीं जाने देना चाहते तो कम से कम मेरी समाधि (कब्र) वहीं बनें!' बादशाह उन्हें इसका यकीन दिलाकर चले गए. पर थोड़ी ही देर बाद तानसेन की हालत और

न्यासना
 मन्दातानि लक्ष्मी और शक्ति
 ही तारीफ होती. इसी तरह तीसरे लड़के तरंगसेन की भी तारीफ होती. इन तीनों ही के गाने में किसी तरह का दोष या गलती न निकाल सका. दरबार के सभी गुनी और भिन्नोसिंह जो भी इस मौके पर मौजूद थे. पर बाद में जब छोटे लड़के विलास खां ने गाया तो सब की आंखें खुल गईं. सब सन्नाटे में आ गए. और खुद बादशाह ने कहा कि स्वामी हरीदास के बाद इतनी तारीक और इतना दद किसी गाने में नहीं पाया गया. सब गुनी जनों ने एक राय होकर कहा कि तानसेन तुम्हारा और तुम्हारे बंस का नाम इसी लड़के से अमर होगा. इसके बाद दरबारी गायक के रूप में विलास खां तैनात कर दिए गए. इस के कुछ दिन बाद तानसेन सखत बामार हुए और बादशाह अकबर खुद उनके पास आए. तानसेन ने इस वक्त अपने को ग्वालियर भेज दिये जाने की खाहिश जाहिर की. वह एक बार अपने गुरु हजरत मुहम्मदगौस के यहाँ जाना चाहते थे. पर उनकी हालत उस वक्त ऐसी नहीं थी कि उन्हें एक जगह से दूसरी जगह ले जाया जा सकता. शाही हकीमों ने राय नहीं दी. तब खुद बादशाह ने उनकी सेज के बराल में आकर उन्हें समझाया और ग्वालियर जाने का मतसूचा छोड़ देने को कहा. इस वक्त बादशाह को अपने पास बैठा हुआ देखकर तानसेन ने आंखों में आंसू भर कर उनसे कहा: 'खुदावंद, अब और क्या कहूँ मेरा वक्त हो गया. ग्वालियर अगर नहीं जाने देना चाहते तो कम से कम मेरी समाधि (कब्र) वहीं बनें!' बादशाह उन्हें इसका यकीन दिलाकर चले गए. पर थोड़ी ही देर बाद तानसेन की हालत और

नया हिन्द हिन्दुस्तानी कलचर और सङ्गीत दिसम्बर सन् '४७

हाथ कभी भी किसी का गाना सुनकर नहीं उठ सकेगा, पहले तीन लड़के एक एक करके गा चुके, पर हाथ नहीं उठा. इस पर उस विलायती दूत ने अपनी राय दुहराई कि यह बेकार कोशिश है, तब सबसे छोटे विलास खां ने उस विलायती दूत को बता कर अपना रचा हुआ विलास खानी तोड़ी का यह ध्रुपद शुरू किया— "कौन भ्रम भूलो रे मन अज्ञानी!" इस राग का समा बँधने के साथ ही साथ तानसेन का दाहना हाथ उठा, मानों आशीर्वाद देता हो, और विलास खां ने इसे अपने सिर से लगा कर गाना बंद किया. फिर लोगों ने विलास खां को अलग कर मिट्टी को चादर से ढक दिया. उस विलायती दूत के अबम्भे का ठिकाना न रहा. फिर विलास खां को सब लोगों ने एक राय से तानसेन का गद्दी नशीन मान लिया. उनकी मिट्टी बड़ी धूम धाम से ग्वालियर पहुँचाकर हजरत गौस के मकबरे को बगल में दकनाई गाँव और अकबर ने वहाँ एक सुन्दर चंदोबा बनवा दिया जो अभी भी मौजूद है. हर साल वहाँ फागुन में तानसेन की याद में उर्स होता है और हिन्दुस्तान के मशहूर गुनी खासकर सेनी खानदान से तालीम पाए हुए संगीत घराने के हस्ताद लोग शरीक होते हैं और जो खोलकर अपना अपना करतब दिखाते हैं, ग्वालियर दरवार की तरफ से इनके रहने बगैरा का पूरा इन्तकाम कर दिया जाता है. तानसेन की कबर के पास एक बहुत बड़ा और पुराना इमली का पेड़ है. कहते हैं कि यह उनके दफनाए जाने के बाद ही अपने आप उगा और फला फूला. गाने वालों का विश्वास है कि इस दरखत की पत्तियाँ एक बार खा लेने से आवाज सुरीली हो जाती है.

भद्रसानी कछि और सङ्गीत

बाह्ये कछि कछि किसी का नासून क्रमिन् सङ्गीत काले. यिले तिन लुके के एक एक करके गाके, यि बाह्ये नशिन अट्ट्या. इस पर अस वलायती दूत ने ऐनी रासै दुहराई कि ये बेकार कोशिश हो. तब सब सै ज्योटे ब्लास खां ने अस वलायती दूत को बता कर गाना बंद किया. फिर लोगों ने विलास खां को अलग कर मिट्टी को चादर से ढक दिया. उस विलायती दूत के अबम्भे का ठिकाना न रहा. फिर विलास खां को सब लोगों ने एक राय से तानसेन का गद्दी नशीन मान लिया. उनकी मिट्टी बड़ी धूम धाम से ग्वालियर पहुँचाकर हजरत गौस के मकबरे की बगल में वहाँ एक सुन्दर चंदोबा बनवा दिया जो अभी भी मौजूद है. हर साल वहाँ कछि कछि तानसेन की याद में उर्स होता है और हिन्दुस्तान के मशहूर गुनी खासकर सेनी खानदान से तालीम पाए हुए संगीत घराने के हस्ताद लोग शरीक होते हैं और जो खोलकर अपना अपना करतब दिखाते हैं, ग्वालियर दरवार की तरफ से इनके रहने बगैरा का पूरा इन्तकाम कर दिया जाता है. तानसेन की कबर के पास एक बहुत बड़ा और पुराना इमली का पेड़ है. कहते हैं कि यह उनके दफनाए जाते के बाद ही अपने आप उगा और फला फूला. गाने वालों का विश्वास है कि इस दरखत की पत्तियाँ एक बार खा लेने से

आवाज सुरीली हो जाती है.

जो धन मिला उससे गिरिली का हमेशा के लिये पका इन्तजाम करके यह सदा केलिये लोप हो गए. फिर इनका कभी किसी को पता न चला. इनकी एक निशानी—'विलास खानी तोड़ी, नाम का राग आज भी हमारे पास है. शान्ति, करुणा रस और दर्द की उपज जितनी इस राग से होती है उतनी शायद और किसी से नहीं और इसका गाना भी बड़ा कठिन है. स्वर तो इसमें सब भैरवी के ही लगते हैं. पर गंधार और धैवत की वंशिश कुछ ऐसी है कि तोड़ी का रूप साफ मलक आता है और भैरवी के सब स्वर लगते हुए भी यह भैरवी से विलकुल अलग दिखती है. रस में भी बहुत फरक है. तानसेत के पुत्रवंस के सभी गुणियों में हम विलासखां का अस्वर देखते हैं. इन में से ज्यादा उस्तादों का स्वभाव साधु फकीरों का सा रहा है. हजरत गौस की सूफी विचार धारा का अस्वर आखीर तक इस खानदान के साथ रहा. इनकी कला में भी वही बात हम पाते हैं. इनके गाने बजाने में रंगों के खेल और वाहरी सजावट की बहार इतनी नहीं होती थी जितनी बीनकार घराने में, पर राग की पूरी तस्वीर खड़ी कर देने में, उसके हर एक अंग की खूबसूरती को निखार कर रख देने में इनकी बराबरी कोई नहीं कर सकता था. पर उसके ऊपर इनकी कला में जो अन्त का संकेत या इशारा मिलता है वही सेनी घराने की जान है. विलास खां से लेकर इसन खां, छञ्जुखां, गुलाबखां, जानखां, जीवनखां, जफरखां वगैरा सभी गुणियों की कला में इस अनोखेपन की छटा हम पाते हैं. यह सभी पहुँचे हुए फकीर और ज्ञानी थे. इसन खां को सभी शुद्धदेवता यानी 'सफेद देवता' कहा करते थे. इनका शरीर

न्यास
 बंदस्तानी कच्चा और सुनलित
 जो वहाँ ला आसते गर्जती का हमेशा के लिये अन्तजाम करके ये सदा के लिये लोप हो गये. फिर इन का कभी किसी को पता न चला.

इन की एक निशानी—'ब्लास खां तोड़ी' नाम का राग कि भी हमारे पास है. शान्ति, करुणा रस और दर्द की उत्पत्ति इस राग से होती है. शायद और किसी से नहीं और इस का गाना भी बड़ा कठिन है. स्वर तो इसमें सब भैरवी के ही लगते हैं. पर गंधार और धैवत की वंशिश कुछ ऐसी है कि तोड़ी का रूप साफ मलक आता है और भैरवी के सब स्वर लगते हुए भी यह भैरवी से विलकुल अलग दिखती है. रस में भी बहुत फरक है. तानसेत के पुत्रवंस के सभी गुणियों में हम ब्लास खां का अस्वर देखते हैं. इन में से ज्यादा अस्तादों का अस्वर साधु फकीरों का सा रहा है. हजरत गौस की सूफी विचार धारा का अस्वर आखीर तक इस खानदान के साथ रहा. इन की कला में भी वही बात हम पाते हैं. इनके गाने बजाने में रंगों के खेल और वाहरी सजावट की बहार इतनी नहीं होती थी जितनी बीनकार घराने में, पर राग की पूरी तस्वीर खड़ी कर देने में, उसके हर एक अंग की खूबसूरती को निखार कर रख देने में इनकी बराबरी कोई नहीं कर सकता था. पर सब के सब के अंगों की कला में जो अन्त का संकेत या इशारा मिलता है वही सेनी घराने की जान है. विलास खां से लेकर इसन खां, छञ्जुखां, गुलाबखां, जानखां, जीवनखां, जफरखां वगैरा सभी गुणियों की कला में इस अनोखेपन की छटा हम पाते हैं. यह सभी पहुँचे हुए फकीर और ज्ञानी थे. इसन खां को सभी शुद्धदेवता यानी 'सफेद देवता' कहा करते थे. इन का अस्वर

(हब्सेदम) को भी तालीम दी थी. क्यों कि गाना और तंत्रकारी इन दोनों ही में ऊँचे दर्जे का काम बिना योग साधना (इब्से दम) के नहीं होता. सेनी घराने के ज्यादातर नामी गुनी योग और प्राणायाम (हब्से दम) में कमाल हासिल कर चुके थे. और यही वजह है कि लगभग सभी बड़ी उमर वाले हुए हैं. इनमें से कई को हम जानते हैं जो १०० बरस के ऊपर को उमर पाकर परलोक सिधारे और आखिरी दम तक निरोग रहे.

तानसेन के बाद उस घराने में सबसे बड़े और नामी गुनी यही तीनों भाई जरूर खां, धार खां, और वासित खां हुए. इन लोगों को खास तालीम तंत्र (रबाब) की ही थी. हम यह कह चुके हैं कि तानसेन के बोनकार और रबाबी दोनों घरानों ने तंत्र का स्थान ध्रुपद (धुरपद) से ऊपर कर दिया था. इन तीनों भाइयों ने रबाब के अलावा बोन को भी पूरा तालीम हासिल की थी. बोनकारों की लाइन में उस वक्त निमल शाह मौजूद थे जो इन तीनों को अपनी औलाद से कम नहीं समझते थे और उन्होंने बोन को सभा घातें उन्हें बला दी थीं. निमल शाह के भतीजे उमराव खां इन लोगों के हमजोली और दिली दोस्त थे. साथ ही गाने बजाने के मामले में इनमें आपस की लाग डाँट भी खूब रहती थी. इन चारों को तालीम एक साथ ही हुई थी. बहुत दिन तक यह एक साथ रहे भी थे. कभी कभी यह रजबाड़ों के दरबार में घूमने निकल जाते और जिसके यहाँ पहुँच जाते वह अपना बड़ा भाग समझता था. पर ज्यादातर यह महाराजा बनारस के दरबार में ही इकट्ठे होते थे. एक दके का जिक्र है कि निमलशाह

महाराजा की कृपा और सख्त
द्वारा
महाराजा की कृपा और सख्त
द्वारा

महाराजा की कृपा और सख्त
द्वारा
महाराजा की कृपा और सख्त
द्वारा

महाराजा बनारस के दरबार में बोन के तारों पर पूरे तीन सप्ताह का काम दिखा रहे थे. नायकों तार पर मध्य सप्तक के स्वर कहते हुए किस तरह यह विजलों को चमक को सी फुर्ती से रवाज मंदर स्वरों में पहुँच जाते और किस तरह यह फिर मध्य और तार में पहुँच जाते थे यह उन तीनों भाईयों की समझ में नहीं आता था. पूछने पर इन्होंने कहा 'देखा और नक़्त करलो.' लगातार एक महीने तक यह देखा किए, पर बोन का यह गुर न समझ सके. आखिर में निर्मलशाह ने यह जुगत इनको समझा दो.

सुर सिंगार (स्वर शृंगार, नाम के यंत्र की ईजाद जकर खाँ ने ही की. जकर खाँ ने देखते देखते संगीत की दुनिया में निर्मल शाह के बराबर का दर्जा हासिल कर लिया. एक बार ऐसा संजोग हुआ कि महाराज बनारस के दरबार में दोनों को एक ही जलसे में बजाना पड़ा. मौसम बरसात का था. निर्मल शाह की बोन के बाद जकर खाँ की रवाब न जम सकी. बात यह है कि बरसात में रवाब अच्छी बोलती नहीं, क्यों कि इसमें बोन को तरह लोहे या पीतल के तार नहीं चढ़ते, इसमें रोदा (बटा हुआ रेशम या ताँत) चढ़ता है और इसकी तबली सारंगी की तरह चमड़े की होती है. इस वजह से बरसात में रवाब से सिकं डप को आवाज निकलती है और ज़्यादा चढ़ाएँ तो ताँत टूट जाता है. खैर तो जकर खाँ ने उस मौक पर तुरन्त बजाना बन्द कर दिया और राजा साहब से एक महीने की मुहलत मांगी. इस बीच यह बनारस शहर के एक मशहूर यंत्र बनाने वाले के यहाँ रहकर एक नए तरह की रवाब बनवाने लगे. इसकी बनावट तो रवाब ही जैसी थी. फरक सिर्फ़ कह था कि

महाराजा बनारस के दरबार में बोन के तारों पर पुरसे तीन सप्ताह का काम देखा रहते थे. नायक तार पर मध्य सप्तक के सुर कते होसै कस तरह ये बजली की चक की सी चकती से. रवाज मन्दर मुरों में बरज जाते अद कस तरह ये पिर मधिर अद-तार में बरज जाते थके ये अन तिनों बजानों की चक में निस आता थका. योचने पर अखुल ने कहा 'दिको अद फल कीरो. लकतार अक निसै कक ये दिक्या के'। पर बोन का ये सुर न चक के. अत्र में बजल शाह ने ये चकत अन को चक्या दी.

सुर शकल (सुर शकल) नाम के यंत्र की ایجاد ظفرखान نے ہی کی. ظفرخان نے دیکھتے دیکھتے سنگیت کی دنیا میں بزل شاہ کے برابر کا درجہ حاصل کر لیا. ایک بار ایسا संजोग ہوا کہ مہاراج بنارس کے بعد بار میں دونوں کو ایک ہی طبلے میں بجانا پڑا. موسم بربسات کا تھا. بول شاہ کی بین کے بعد ظفرخان کی رباب نہ جم سکی. بات یہ ہو کہ بربسات میں رباب اچھی بولتی نہیں کیونکہ اس میں بین کی طرح بوب یا پیل کے تار نہیں چڑھتے. اس میں رودا رہتا ہوا لیٹیم لٹانٹ (پیرھتتا ہو اور اس کی طبلی سارنگی کی طرح چمڑے کی ہوتی ہو. اس وجہ سے بربسات میں رباب سے صرف ڈھپ ڈھپ کی آواز نکلتی ہو اور زیادہ چڑھا میں تو مانع ٹوٹ جاتی ہو. خیر ظفرخان نے اس موقع پر ٹونٹ بجانا بند کر دیا اور راجا صاحب سے ایک مہینے کی ہلت مانگی. اس وقت یہ بنارس شہر کے ایک مشہور یंत्र بنانے والے کے یہاں نہ ایک نے طرح کی رباب بنوانے لگے. اس کی بناوٹ تو رباب ہی جیسی تھی. فرق صرف یہ تھا کہ

रबाव में तौबा लकड़ी का, तबली चमड़े की और ढाँड़ी लकड़ी की होती है जिस पर तांत चढ़ती थी पर इस नए वाजे में तौबा लौकी का (बीन की तरह) और तबली चमड़े की जगह लकड़ी की और ढाँड़ पर पक्के लोहे की चमकीली चादर (प्लेट) चिपकाई हुई थी. तांत की जगह फौलाद और पीतल के तार चढ़े. इसकी बाहरी शकल तो वही रबाव की ही रही, पर इसकी रूह बदल गई. आबख इसकी बीन और रबाव दोनों से निराली हुई. गर्मी और जाड़े में रबाव बहुत अच्छा बोलता है, ऐसा मालूम होता है मानों कई परबावों एक साथ मिल कर बोल रही हैं. पर बीन बहुत धीमी बोलती है. यह नया वाजा दोनों के बीच की जगह लेता है. इसका नाम अफ़र खां ने 'सुरसिंगार' रक्खा. इस में बीन और रबाव दोनों की हरकतें अदा की जा सकती हैं. रबाव में कुछ बातें ऐसी थीं जो बीन पर नहीं हो सकतीं, और उसी तरह बीन के कुछ करतब रबाविये अपने वाजे पर नहीं अदा कर पाते थे.

एक महीने बाद काशीराज की सभा में अफ़र खां ने अपना नया यंत्र सुनाने का एलान किया और इसमें आपने निर्मल शाह को खास तौर पर बुलाया. साथ ही देश के बहुत से चोटों के गुनी दूर दूर से बुलाये गए. इन्होंने अभी तक अपना नया बजा न बाहर के किसी को दिखाया था न सुनाया था. उसी कारीगर के

ॐ उस कारीगर के पते—लाल जी—जिससे यह हाल हमको खास तौर से मालूम हुआ अभी बनारस में मौजूद हैं, और इनकी दूकान राजा दरबाजा नाम के मुहल्ले में है. उनके पिता सितार बीन वगैरह का बनावट में मशहूर थे.

रबाव में तौबा लकड़ी का, तबली चमड़े की और ढाँड़ी लकड़ी की होती है जिस पर तांत चढ़ती थी पर इस नए वाजे में तौबा लौकी का (बीन की तरह) और तबली चमड़े की जगह लकड़ी की और ढाँड़ पर पक्के लोहे की चमकीली चादर (प्लेट) चिपकाई हुई थी. तांत की जगह फौलाद और पीतल के तार चढ़े. इसकी बाहरी शकल तो वही रबाव की ही रही, पर इस की रूह बदल गई. आबख इसकी बीन और रबाव दोनों से निराली हुई. गर्मी और जाड़े में रबाव बहुत अच्छा बोलता है, ऐसा मालूम होता है मानों कई परबावों एक साथ मिल कर बोल रही हैं. पर बीन बहुत धीमी बोलती है. यह नया वाजा दोनों के बीच की जगह लेता है. इसका नाम अफ़र खां ने 'सुरसिंगार' रक्खा. इस में बीन और रबाव दोनों की हरकतें अदा की जा सकती हैं. रबाव में कुछ बातें ऐसी थीं जो बीन पर नहीं हो सकतीं, और उसी तरह बीन के कुछ करतब रबाविये अपने वाजे पर नहीं अदा कर पाते थे.

एक महीने बाद काशीराज की सभा में अफ़र खां ने अपना नया यंत्र सुनाने का एलान किया और इस में आपने निर्मल शाह को खास तौर पर बुलाया. साथ ही देश के बहुत से चोटों के गुनी दूर दूर से बुलाये गये. इन्होंने अभी तक अपना नया बजा न बाहर के किसी को दिखाया न सुनाया था. उसी कारीगर के

ॐ उस कारीगर के पते—लाल जी—जिससे यह हाल हमको मालूम हुआ अभी बनारस में मौजूद हैं, और इन की दुकान राजा दरवाजा नाम के मुहल्ले में है. उनके पिता सितार बीन वगैरह का बनावट में मशहूर थे.

नया हिन्दू हिन्दुस्तानी कलचर और संगीत दिसम्बर सन् '४७ मकान पर कमरा बन्द कर रियाज करते और जो नुक्स पाते उसे उससे ठीक कराते रहे.

राजा साहब (स्वर्गीय महाराजा ईश्वरी नागायण सिंह के पिता जो खुद वीन का शौक करते थे) और निर्मल शाह के सामने इनका सुरसिंगार बजा और इन्होंने वीन और रवाब दोनों के सब करतब बड़ी खूबी से अदा किये. निर्मल शाह ने वहीं उन्हें गले लगाया और बहुत तारीफ की. तब से रवाबियों में बरसात में चार महीने 'सुरसिंगार' ही बजाने का रिवाज हो गया.

हमें दुख है कि इस सुन्दर बाले का प्रचार ज्यादा न हो सका रामपुर के नवाब सआदत अली खां उर्फ छम्मन साहब इसके आखिरी माहिर थे. मौजूदा गुनियों में हमने सिर्फ अलाउद्दीन खां साहब मैहर और बकाल के वीरेन्द्रकिशोर राय चौधरी से सुर सिंगार सुना है. पर रवाब के साथ ही इसका भी अंत हुआ. रवाब की खास कमी को पूरी करने के लिये यह पैदा हुआ था और कमी पूरा कर चलता बना. इसको ईजाद हमें खास तौर से उस अम्रेजी कहावत की याद दिलाती है जिसका मतबल है "खरूत सार इजादों की माता है".—

जफर खां और प्यारे खां बहुत दिन तक रीवां के महाराजा विश्वनाथ सिंह जी के दरबार में भी रहे थे. हम शुरु में कह चुके हैं कि तानसेन पहले रीवां के महाराजा राजाराम के दरबारी कलावंत थे और उन्हीं के यहां से अकबर इन्हें अपने दरबार में ले गए थे. तानसेन को औलाद के लिये रीवां दरबार का दरजाजा हमेशा खुला हुआ था. महाराज विश्वनाथ सिंह

स्तंभान पर कूबन्द. कर्मिष करते और जो लक्ष्मि पाते उसे उस से छेक करवाते रहे.

राजा साहब (सुदुर्ग ममलाबा शिरोय नारिन सुदुर्ग के पना जो खुद वीन का शुक करते रहे) और नरुल शाह के सामने इन का सुदुर्ग बजा और अन्धुन ने वीन और रबाब दुवुन के सब करतब उनी अदा किये. नरुल शाह ने वीन अन्धुन के लकाया और बेत तरुफ की. तब से रबाबुन में बरसात में चार महीने सुदुर्ग बजा ही बजाने का वीज बगुद है. सुदुर्ग जो कर्मिष बाबे का प्रचार ज्यादा न हो सका, वाम पर के वीन सादत एली खां एन चम्पन साहब इस के अन्तुन माहिर रहे.

जो वीन सुदुर्ग वीन अम ने वरुन एलाउद्दीन खां साहब मीर अदु बकाल के वीन सुदुर्ग बाबे सुदुर्ग सुना हो. प्र रबाब के साहब वीन का वी अन्त हो. रबाब की फास की को पुरी करने के लिये प्र पैदा हो अन्त हो. प्र रबाब की फास की को पुरी करने के लिये प्र पैदा हो अन्त हो. प्र रबाब की फास की को पुरी करने के लिये प्र पैदा हो अन्त हो.

सारे अजादुन की माता है. प्र पैदा हो अन्त हो. प्र रबाब की फास की को पुरी करने के लिये प्र पैदा हो अन्त हो. प्र रबाब की फास की को पुरी करने के लिये प्र पैदा हो अन्त हो. प्र रबाब की फास की को पुरी करने के लिये प्र पैदा हो अन्त हो.

खुद एक ऊंचे दर्जे के सङ्गीत के गुनी और हिन्दी के कवि थे। राजाओं में जैसे रावों के राजाराम और ग्वालियर के राजा मान सङ्गीत के पूरे पंडित और रागी थे वैसे ही इधर हाल में महाराजा विरवनाथ सिंह जी हुए। वह अफर लों साहब के शागिर्द थे और उनके रचे हुए बहुत से धुरपद अब भी लोगों को याद हैं। तंत्र से कहीं ज्यादा इनको गाने में दिलचस्पी थी। और इसी लिये इन्हें गले की तालीम ही ज्यादा मिली। रागों के अलाप और अपने रचे हुए अलगिनत पदों को यह राग रागिनियों में शुद्ध स्वरताल में वीणा और सृष्टी की संगत से गाते थे। बरफर लों साहब यों तो बहुत से दरबारों में आए गए पर उनका ज्यादा रहना रावों दरबार में ही रहा।

इनके भाई ध्यारे लों भी अज्ञसर रावों में रहते पर उनका ज्यादा ताल्लुक बेतिया के महाराजा नन्दकिशोर जी से हो गया जो इनके शागिर्द हो गए। यह (नन्दकिशोर) भी गाने और कविता में ही ज्यादा दिलचस्पी रखते थे और तंत्र से कम धुरपदिए, तो यह इतने बड़े हुए कि इनका एक मान्य गुरु घराना कायम हो गया। यह जब तक नियम से रोञ्जाना कुछ नए धुरपद रचकर तैयार कर और उन्हें गाकर ठीक बैठान लेते तबतक दातून नहीं करते थे। यह कथक ब्राह्मणों का तालीम भी देते थे और इनसे सीखे हुए मशहूर कथकों में बखताबर जी, शिवनारायन जी, गुरु प्रसाद जी बगौरा अपने समय के चोटी के धुरपदिए माने जाते थे। कलकत्ते के मशहूर धुरपदिए धमरिए विश्वनाथ राव इन्हीं शिवनारायण भिसिर के ही शागिर्द थे। बंगाल के सबसे बड़े गुनी और संगीत पंडित श्री राधिका गोसाईं गुरुप्रसाद जी के शागिर्द थे।

यह सन् १९४७ में हिन्दुस्तानी कलचर और संगीत के एक अग्रणी कवि थे। राजाओं में जैसे रावों के राजाराम और ग्वालियर के राजा मान सङ्गीत के पूरे पंडित और रागी थे वैसे ही इधर हाल में महाराजा विरवनाथ सिंह जी हुए। वह अफर लों साहब के शागिर्द थे और उनके रचे हुए बहुत से धुरपद अब भी लोगों को याद हैं। तंत्र से कहीं ज्यादा इनको गाने में दिलचस्पी थी। और इसी लिये इन्हें गले की तालीम ही ज्यादा मिली। रागों के अलाप और अपने रचे हुए अलगिनत पदों को यह राग रागिनियों में शुद्ध स्वरताल में वीणा और सृष्टी की संगत से गाते थे। बरफर लों साहब यों तो बहुत से दरबारों में आए गए पर उनका ज्यादा रहना रावों दरबार में ही रहा।

इनके भाई ध्यारे लों भी अज्ञसर रावों में रहते पर उनका ज्यादा ताल्लुक बेतिया के महाराजा नन्दकिशोर जी से हो गया जो इनके शागिर्द हो गए। यह (नन्दकिशोर) भी गाने और कविता में ही ज्यादा दिलचस्पी रखते थे और तंत्र से कम धुरपदिए, तो यह इतने बड़े हुए कि इनका एक मान्य गुरु घराना कायम हो गया। यह कथक ब्राह्मणों का तालीम भी देते थे और इनसे सीखे हुए मशहूर कथकों में बखताबर जी, शिवनारायन जी, गुरु प्रसाद जी बगौरा अपने समय के चोटी के धुरपदिए माने जाते थे। कलकत्ते के मशहूर धुरपदिए धमरिए विश्वनाथ राव इन्हीं शिवनारायण भिसिर के ही शागिर्द थे। बंगाल के सबसे बड़े गुनी और संगीत पंडित श्री राधिका गोसाईं गुरुप्रसाद जी के शागिर्द थे।

دکبر ۱۹۵۷ء
ہندستانی کچر اور سنگیت

نیا ہند

نیا ہند ہندوستانی کلاچر اور سڈھیٹ دیسمبر سن ۱۹۵۷ء
پیار لہاں نے دیل لہول کر اہلاپ اور دھرپد کو ساری
کوکریٹوں اور واریکیوں مہاراج نندکیشور جی کو سیکھا دی کھتیں۔ اس طرح ہم دیکھتے
ہیں کہ ہندستان کے جتنے مشہور گائے اور نتر کے گھرانے قائم
ہوئے وہ کبھی کسی نہ کسی سینی گھرانے کے استاد سے لہی
شروع ہوئے۔ اگلے لیکھ میں ہم کچھ گھرانوں کا اور ذکر کریں گے۔

‘ہندھ مسلیم اکتا’

پنڈت سندر لال کے

چار لکچر جو انہوں نے

سنٹرل کونسل آف انڈیا کے

کو داوت پر مہالینر میں دیے۔

سے سب سے پہلے کی کتاب کی قیمت صرف چار روپے آئے

مہینہ ’نیا ہند‘

۳۳ باغی کا باغ، الہ آباد

ہندو مسلم ایک کی

پنڈت سندر لال کے

چار لکچر جو انہوں نے سنٹرل کونسل آف انڈیا کے

کو داوت دیے۔

سے سب سے پہلے کی کتاب کی قیمت صرف چار روپے آئے

مہینہ ’نیا ہند‘

۳۳ باغی کا باغ، الہ آباد

जलियान والا बाग की चक्रे या दागदग

(धरती राम जी दर)
कोतवाल से मलाकात

जलियानवाला बाग की कुछ यादागारे

(श्री रामजी दर)
कोतवाल से मुलाकात

(७)

मुझे अपना वादा, जो नान वाई से मैंने किया था, पूरा करना था. यह भी डर था कि मेरे अलग होने के बाद कहीं पुलिस वाले उसे तंग न करें. अपने साथियों से सलाह करके मैं सीधा कमिश्नर की कचहरी की तरफ खाना हुआ. मैंने सोचा कि सब से बड़े हाकिम से ही मिलना मुनासिब है.

रास्ते में उन्होंने बकील साहब का बंगला पड़ा जिनके यहाँ हमने पहली रात गुजरानवाला पहुँचते ही गुजारी थी. उनसे भी मैंने सलाह की. वह कुछ राय कायम न कर सके.

मैं किसी किराये की सवारी पर चलने ही को था कि बकील साहब की निगाह किसी पर पड़ी और उन्होंने मुझसे कहा, 'आइये आपको कोतवाल शहर से मिला दूँ.'

यह वही साहब थे जो नानवाई के मकान पर मुझे अपने भयानक दर्शन दे चुके थे.

कोतवाल साहब एक बम्बूकार्ट पर बैठे थे. उन्होंने अपनी दो पहिये की गाड़ी रोकी और बड़े तपाक से अपना जबरदस्त हाथ— या पंजा कहिये—बढ़ाया. मैंने भी हाथ मिलाया. जब मेरा नाम बतौर परिचय के बकील साहब ने उनको बताया तो कोतवाल

(६)

जैसे अपना वचन 'जो नान बाग से मैंने किया था, पूरा करना है. ये भी डर था कि मेरे अलग होने के बाद कहीं पुलिस वाले उसे तंग न करें. अपने साथियों से सलाह करके मैं सीधा कमिश्नर की कचहरी की तरफ खाना हुआ. मैंने सोचा कि सब से बड़े हाकिम से

मिलना मुनासिब है. रास्ते में अखिल साहब का बंगला पड़ा जिनके यहाँ हमने पहली रात गुजरानवाला पहुँचते ही गुजारी थी. उनसे भी मैंने सलाह की. वह कुछ राय कायम न कर सके.

मैं किसी किराये की सवारी पर चलने ही को था कि बकील साहब की निगाह किसी पर पड़ी और उन्होंने मुझसे कहा, 'आइये आपको कोतवाल शहर से मिला दूँ.'

यह वही साहब थे जो नान बाग के मकान पर मुझे अपने भयानक दर्शन दे चुके थे.

कोतवाल साहब एक बम्बूकार्ट पर बैठे थे. उन्होंने अपनी दो पहिये की गाड़ी रोकी और बड़े तपाक से अपना जबरदस्त हाथ— या पंजा कहिये—बढ़ाया. मैंने भी हाथ मिलाया. जब मेरा नाम बतौर परिचय के बकील साहब ने उनको बताया तो कोतवाल

साहब जरा चौंक कर बोले, "मैं तो आपको सैयद हुसैन साहब, एडिटर 'इन्डिपण्डन्ट' समझता था।"

मैंने जोर से कहकरहा मारा और कहा, "यह आपके डिपार्टमेंट की तारीफ है।"

कोतवाल साहब ने दो एक बातें मेरी तारीफ में कहीं। फिर बोले, "आप लोगों के यहाँ आने से खतरा सिर्फ इतना है कि जाहिल तबके को इशतिआल मिलता है....." इतने में उनका घोड़ा भड़का और कोतवाल साहब ने लगाम को ताना मैंने चुटकी काटी देखिये घोड़े को भी इशतिआल हो रहा है।"

चात मजाक में टल गई, हम जुदा हुये.

x x x x x

(८)

कमिशनर से भेंट

कमिशनरी पहुँचा, जैसे हर कचहरी की फिजा होती है वैसे वहाँ भी थी, सिर्फ फर्क इतना था कि हर व्यक्ति मुझे घूर कर दूर से देखता था, बकील आपनों काली गाउन पहने दूर से इकट्ठा हो मुझे बड़े गौर से देख रहे थे, चपरासी और मोअकिल भी कर्नीखियों से मेरी तरफ ताकते थे, मैं सबके लिये या तो कोई खौफनाक जानवर था या कोई अनोखा आदमी सब मुझसे कतराए हुए थे.

मैं कमिशनर के कोर्ट के दरवाजे पर पहुँचा और मैंने दरवाजा खटखटा कर अंगरेजों में कहा, "मैं अन्दर आ सकता हूँ ?"

"आजाओ" अन्दर से किसी अंगरेज ने जवाब दिया.

साहब जरा चुनक कर बोले, "मैं तो आप को सैद حسين صاحب एडिटर 'इन्डिपण्डन्ट' समझता हूँ।"

मैंने जोर से तर्क मारा अउ कहा, "ये आप के डिपार्टमेंट की तारीफ है।"

कोतवाल साहब ने दो एक बातें मेरी तर्क में कहीं। फिर बोले, "आप लोगों के सियाँ आने से खतरा खतरा इतना है कि जाहिल तबके को इशतिआल मिलता है....." इतने में उनका घोड़ा भड़का और कोतवाल साहब ने लगाम को ताना मैंने चुटकी काटी देखिये घोड़े को

बिगनी इशतिआल हो रहा है।"

चात मजाक में टल गयी, हम जुदा हुये.

x x x x x

कमिशनर से भेंट

कमिशनरी पहुँचा, जैसे हर कचहरी की फिजा होती है वैसे वहाँ भी कचहरी थी, सिर्फ फर्क इतना था कि हर व्यक्ति मुझे घूर कर दूर से देखता था, बकील आपनों काली गाउन पहने दूर से इकट्ठा हो मुझे बड़े गौर से देख रहे थे, चपरासी और मोअकिल भी कर्नीखियों से मेरी तरफ ताकते थे, मैं सबके लिये या तो कोई खौफनाक जानवर था या कोई अनोखा आदमी सब मुझसे कतराए हुए थे.

मैं कमिशनर के कोर्ट के दरवाजे पर पहुँचा अउ मैंने दरवाजा खटखटा कर अंगरेजों में कहा, "मैं अन्दर आ सकता हूँ ?"

"आजाओ" अउर से किसी अंगरेज ने जवाब दिया.

में अन्दर घुसकर सीपा इजलास के कटहरे के पास जाकर खड़ा हो गया।

कुरसी पर एक फौजो अकसर बैठा था।

मैंने पूछा "आप यहां के कमिशनर हैं?"

"हाँ" उसने जवाब दिया।

"मुझे आपसे कुछ अर्थ करना है। इजाजत हो तो अर्थ करूँ?"

मैंने कहा।

वह बोला "कहो, क्या कहना है?" तब मैंने मुख्तसिर में सीधे सादे लफ्जों में कहा "मुझे पंडित मोती लाल नेहरु ने हुक्म दिया है कि मैं कांग्रेस इतकवारी कमेटों को तरक से सबलूमों के बयान लूँ गवर्नमेंट आफ इन्डिया यह एलान कर चुकी है कि वह इस काम में कोई बाधा नहीं डालेगी। मगर मैं जहां जाता हूँ लोग यही कहते हैं कि पुलिस उन्हें मना करती है और धमकी देती है कि हमसे किसी क्रिम का सम्बन्ध न करें। मैं आप से सिर्फ यह कहने आया था कि मैं तो अपने लीडर का बताया हुआ काम जरूर करूँगा। आप यहां के सब से बड़े अफसर हैं इसलिये मैंने मुनासिब समझा कि आपको अपना असली मकसद इस शहर में आने का और पबलिक का भाव पुलिस के तरफ से क्या है, बता दूँ जिसमें आगे कोई गलत कहसो न होने पाए।"

कमिशनर ने भी मुझे मुख्तसिर जवाब दिया, "मैं कोतवाल से खुद बात करके सब ठीक कर दूँगा"

मैंने कमिशनर का शुक्रिया अदा किया और वहां से खाना हुआ।

मैं अन्दर घुसकर सیدहा अजरास के कठरे के पास जाकर खड़ा हुआ।

कुरसी पर अकसर बैठा था।

मैंने पूछा "आप यहां के कमिशनर हैं?"

"हाँ" उसने जवाब दिया।

"मुझे आपसे कुछ अर्थ करना है। इजाजत हो तो अर्थ करूँ?"

मैंने कहा।

वह बोला "कहो, क्या कहना है?" तब मैंने मुख्तसिर में सीधे लफ्जों में कहा "मुझे पंडित मोती लाल नेहरु ने हुक्म दिया है कि मैं कांग्रेस इतकवारी कमिटी की तरफ से मुख्तसिर के बयान लूँ गवर्नमेंट आफ इन्डिया यह एलान कर चुकी है कि हमें आपसे सिर्फ यह कहने आया था कि मैं तो अपने लीडर का बताया हुआ काम जरूर करूँगा। आप यहां के सब से बड़े अफसर हैं इसलिये मैंने मुनासिब समझा कि आपको अपना असली मकसद इस शहर में आने का और पबलिक का भाव पुलिस के तरफ से क्या है, बता दूँ जिसमें आगे कोई गलत कहसो न होने पाए।"

कमिशनर ने भी मुझे मुख्तसिर जवाब दिया, "मैं कोतवाल से खुद बात करके सब ठीक कर दूँगा"

मैंने कमिशनर का शुक्रिया अदा किया और वहां से खाना हुआ।

नानचाई से जो मैंने वादा किया था वह पूरा हो गया. मेरे दिल को कुछ डारस मिली.

वहाँ से लौटते समय भी वहाँ के लोग मुझे ऐसी निगाहों से देख रहे थे जैसे कोई शेर के पास से बच कर सही सलामत जा रहा हो.

x x x x x x x

देवनागरी में सुधार

(डाक्टर गोरख प्रसाद, इलाहाबाद यूनीवर्सिटी)

(१)

इस लेख के लिखने में दो बातों पर ध्यान रखना गया है, एक तो यह कि भाषा इतनी सरल हो कि वह हिन्दुस्तानी में गिनी जा सके, दूसरे यह कि देव नागरी-सुधार के बारे में मैं अपनी राय बता सकूँ. भाषा को सरल रखने के विचार से बहुत से ठेठ हिंदी के शब्द रक्खे गये हैं जो न संस्कृत के हैं और न अरबी-फारसी के; बहुत बार तो इस विचार से संस्कृत शब्द न आये, बोलने का ढंग ही बदल दिया गया है.

मैं भी चाहता हूँ कि देवनागरी में—हिंदी के लिखने के आज-कल के ढंग में—सुधार किया जाय और देवनागरी को और भी अच्छा बनाया जाय. मैं सुधार से चिढ़ता नहीं, मैं सुधारों का चाहने वाला हूँ सुधार कैसा हो इसे दूसरों ने भी बताया है. कुछ सुधार मुझे अच्छे जान पड़ते हैं, कुछ बुरे. श्रीयुत भी निवास जी ने हाल में ही कुछ सुधार बताये हैं जिसे, न जाने क्यों, काशी-नागरी-प्रचारिणों सभा ने भी कुछ-कुछ

(५५)

नानचाई से जो मैंने वादा किया था वह पूरा हुआ. मेरे दिल को कुछ डारस मिली.

वहाँ से लौटते से भी वहाँ के लोग मुझे ऐसी निगाहों से देख रहे थे जैसे कोई शेर के पास से बच कर सही सलामत जा रहा हो.

दिलोनागरी में सुधार

(डाक्टर गोकुल प्रसाद, अलाहाबाद यूनिवर्सिटी)

(१)

इस लेख के लिखने में दो बातों पर ध्यान रक्खा गया है, एक तो यह कि भाषा इतनी सरल हो कि वह हिन्दुस्तानी में गिनी जा सके, दूसरे यह कि देव नागरी-सुधार के बारे में मैं अपनी राय बता सकूँ. भाषा को सरल रखने के विचार से बहुत से ठेठ हिंदी के शब्द रक्खे गये हैं जो न संस्कृत के हैं और न अरबी-फारसी के; बहुत बार तो इस विचार से संस्कृत शब्द न आये, बोलने का ढंग ही बदल दिया गया है.

मैं भी चाहता हूँ कि देवनागरी में—हिंदी के लिखने के आज-कल के ढंग में—सुधार किया जाय और देवनागरी को और भी अच्छा बनाया जाय. मैं सुधार से चिढ़ता नहीं, मैं सुधारों का चाहने वाला हूँ सुधार कैसा हो इसे दूसरों ने भी बताया है. कुछ सुधार मुझे अच्छे जान पड़ते हैं, कुछ बुरे. श्रीयुत भी निवास जी ने हाल में ही कुछ सुधार बताये हैं जिसे, न जाने क्यों, काशी-नागरी-प्रचारिणों सभा ने भी कुछ-कुछ

पसंद किया है. मुझे तो अचरज होता है कि सभा को श्री निवास जी का सुधार अच्छा लगा है. मेरी राय में तो श्री निवास जी के सुभाव में बहुत सी बुराइयाँ हैं और उनको अपनाने पर देवनागरी अपने आज के रूप से भी बुरी हो जायगी.

सुधार क्यों?

पहले हमें यह समझ लेना चाहिये कि हम क्यों सुधार चाहते हैं और आज कल की देवनागरी में क्या कमी है. मेरी राय में सुधार नीचे लिखी बातों के लिये हो सकते हैं.

(१) सुधारी गई देवनागरी ऐसी हो कि वह बहुत जल्द लिखी जा सके.

(२) वह बहुत जल्द हाथ से सीखी जा सके.

(३) वह बहुत सरल में छापी जा सके और उसको छपाई में इतने कम अक्षर लगें कि बहुत कम पैसे में ही प्रेस वाले तरह-तरह के टाइप रख सकें और इसलिये वे बहुत सुन्दर छपाई कर सकें. अंग्रेजी में रोमन, इटैलिकस और एंटाक ये तीन तरह के टाइप बहुत सी पाथियों में लगे रहते हैं, पर आज कल की देवनागरी के एक केस के लिये इतने अक्षर रखने पड़ते हैं कि दो से ज्यादा तरह के टाइपों का खरीदना प्रेस वालों के लिए बहुत भारी हो जाता है.

(४) सुधारी हुई देवनागरी ऐसी हो कि वह लाइनों-टाइप मशीन पर छापी जा सके.

(५) वह टाइप राइटर पर चल सके.

(६) वह टेलिप्रिंटर पर भी चल सके.

किस तरह दिवनागरी सुधार

नया है. सिद्ध है. यह तो अचरज होता है कि सभा को श्री निवास जी का सुधार अच्छा लगा है. मेरी राय में तो श्री निवास जी के सुभाव में बहुत सी बुराइयाँ हैं और उनको अपनाने पर देवनागरी अपने आज के रूप से भी बुरी हो जायगी.

सुधार क्यों? पहले हमें यह समझ लेना चाहिये कि हम क्यों सुधार चाहते हैं और आज कल की देवनागरी में क्या कमी है. मेरी राय में सुधार नीचे लिखी बातों के लिये हो सकते हैं.

(१) सुधार दी दिवनागरी ऐसी हो कि वह बहुत जल्द लिखी जा सके.

(२) वह बहुत जल्द हाथ से सीखी जा सके.

(३) वह बहुत सरल में छापी जा सके और उसको छपाई में इतने कम अक्षर लगें कि बहुत कम पैसे में ही प्रेस वाले तरह-तरह के टाइप रख सकें और इसलिये वे बहुत सुन्दर छपाई कर सकें. अंग्रेजी में रोमन, इटैलिकस और एंटाक ये तीन तरह के टाइप बहुत सी पाथियों में लगे रहते हैं, पर आज कल की दिवनागरी के एक केस के लिये इतने अक्षर रखने पड़ते हैं कि दो से ज्यादा तरह के टाइपों का खरीदना प्रेस वालों के लिये बहुत भारी हो जाता है.

(४) सुधार दी दिवनागरी ऐसी हो कि वह लाइनों-टाइप मशीन पर छपायी जा सके.

(५) वह टाइप राइटर पर चल सके.

(६) वह टेलिप्रिंटर पर भी चल सके.

अब मैं इन बातों पर एक एक करके विचार करता हूँ. महात्मा गांधी, और देश की भलाई चाहने वाले कई और लोग भी, चाहते हैं कि हिंदी और देवनागरी ऐसी हो कि उसे बहुत चटपट ही नौसिखिये सीख सकें. उनका कहना है कि ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं और अः की मात्राएँ अक्षर को लिख लेने पर लगायी जाती हैं और यह मात्राएँ अक्षर की दाहिनी ओर या उसके ऊपर या नीचे लगाई जाती हैं, तब फिर क्यों छोटी इ की मात्रा को अक्षर के पहले लगाया जाय और उसे अक्षर के लिखने के पहले लिखा जाय.

मैं कहता हूँ कि यह सुधार बहुत आवश्यक नहीं है. इतना याद रखना कि इ की मात्रा बायाँ ओर लगती है, उ और ऊ की मात्राएँ नीचे लगती हैं, ए और ऐ की मात्राएँ ऊपर और बाकी सब मात्राएँ दाहिनी ओर, बहुत कठिन नहीं हैं. जो कोई क, ख, ब, गौरह ४० अक्षरों के रूपों को सीख सकता है वह इ की मात्रा को बाईं ओर लगाना भी सीख सकता है.

इ की मात्रा को बाईं ओर से हटा कर दूसरी जगह ले जाने पर देवनागरी फिर देवनागरी सी नहीं लगती. मेरी राय है कि जहाँ तक हो सके सुधार कम किया जाय. पर लोग अगर पूरा सुधार चाहते हैं तो क्यों न हिन्दी को बदल कर एसपेरेंटो कर दिया जाय और देवनागरी को सुधारा हुआ रोमन, जिसमें २६ अक्षर से भी कम अक्षर रहें ?

केवल सिद्धांत के लिए देवनागरी में इतना सुधार करना कि आज कल के हिन्दी पढ़े लोग हमारी सुवरी हुई हिंदी को बेधड़क न पढ़ पावें मुझे ठीक नहीं जँचता.

लेकिन इन बातों पर एक एक करके विचार करता हूँ. महानागरी, और देश की भलाई चाहने वाले कई और लोग भी, चाहते हैं कि हिन्दी और देवनागरी ऐसी हो कि उसे बहुत चटपट ही नौसिखिये सीख सकें. उनका कहना है कि ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं और अः की मात्राएँ अक्षर को लिख लेने पर लगायी जाती हैं और यह मात्राएँ अक्षर की दाहिनी ओर या उसके ऊपर या नीचे लगाई जाती हैं, तब फिर क्यों छोटी इ की मात्रा को अक्षर के पहले लगाया जाय और उसे अक्षर के लिखने के पहले लिखा जाय.

मैं कहता हूँ कि यह सद्वार बहुत आवश्यक नहीं है. इतना याद रखना कि इ की मात्रा बायाँ ओर लगती है, उ और ऊ की मात्राएँ नीचे लगती हैं, ए और ऐ की मात्राएँ ऊपर और बाकी सब मात्राएँ दाहिनी ओर लगती हैं. जो कोई क, ख, ब, गौरह ४० अक्षरों के रूपों को सीख सकता है वह इ की मात्रा को बाईं ओर लगाना भी सीख सकता है.

इ की मात्रा को बाईं ओर से हटा कर दूसरी जगह ले जाने पर देवनागरी फिर देवनागरी सी नहीं लगती. मेरी राय है कि जहाँ तक हो सके सुधार कम किया जाय. पर लोग अगर पूरा सुधार चाहते हैं तो क्यों न हिन्दी को बदल कर एसपेरेंटो कर दिया जाय और देवनागरी को सुधारा हुआ रोमन, जिसमें २६ अक्षर से भी कम अक्षर रहें ?

केवल सिद्धांत के लिए देवनागरी में इतना सुधार करना कि आज कल के हिन्दी पढ़े लोग हमारी सुवरी हुई हिंदी को बेधड़क न पढ़ पावें मुझे ठीक नहीं जँचता.

बिना सुधारी हुई देवनागरी भी जल्द लिखी जा सकती है. अब जल्द लिखने पर विचार कीजिये. साधारण देवनागरी में हर अक्षर के माथे पर डाँड़ी लगाई जाती है जिसे शिरोरेखा कहते हैं. लिखने में बहुत से लोग इस शिरोरेखा को छोड़ देते हैं. साथ ही इ, ड, बगैरह के कालतू शोशों को छोड़ देते हैं. ऐसा करने से देवनागरी काफ़ी जल्द लिखी जा सकती है. यदि यह शर्त लगायी जाय कि एक का लिखा दूसरे लोग भा घड़ाघड़ पढ़ते चले जायँ, कहीं कोई शक न पड़े और जिस शब्द के पढ़ने में शक पड़े उसे गलत माना जाय तो दावे के साथ कहा जा सकता है रोमन और उर्दू दोनों से हिंदी जल्द लिखी जा सकती है. मैंने इस बात को पूरी जाँच की है. एक ही पैराग्राफ़ को मैंने कई लोगों से शर्त लगा कर लिखाया है कि देखें वे कितना जल्द लिख सकते हैं. पता चला कि एक मिनट में ४० शब्द तक हिंदी ऐसी लिखी जा सकती है जिसके पढ़ने में किसी को अड़चन न हो. इस ४० में का, कि, के, में, से आदि को अलग अलग शब्द माना गया है. इसी से एक मिनट में लिखे जाने वाले शब्दों की गिनती इतनी अधिक है. तो भां, जब उसी हिंदुस्तानी भाषा के पैराग्राफ़ को फारसी अक्षरों में लिखाया गया तब लिखावट इतनी गिच पिच हो गई कि दूसरे लोग उसे ठीक से नहीं पढ़ पाते थे. जब कभी कोई देखना चाहे मैं तेज लिख कर दिखा सकता हूँ.

इसलिए मेरी राय में देवनागरी में इसलिये सुधार करने की जरूरत नहीं है कि वह धीरे धीरे ही लिखी जा सकती है. यह मैं मानता हूँ कि हिंदी आज कल के शॉर्ट हैंड की बग़वरी नहीं

दुनागरी में सुधार
 ब्रह्मसुधारी हूँ दुनागरी भी जल्द लिखी जा सकती है. अब जल्द लिखने पर विचार कीजिये. साधारण देवनागरी में हर अक्षर के माथे पर डाँड़ी लगाई जाती है जिसे शिरोरेखा कहते हैं. लिखने में बहुत से लोग इस शिरोरेखा को छोड़ देते हैं. साथ ही इ, ड, बगैरह के कालतू शोशों को छोड़ देते हैं. ऐसा करने से देवनागरी काफ़ी जल्द लिखी जा सकती है. यदि यह शर्त लगायी जायँ, कहीं कोई शक न पड़े और जिस शब्द के पढ़ने में शक पड़े उसे गलत माना जाय तो दावे के साथ कहा जा सकता है रोमन और उर्दू दोनों से हिंदी जल्द लिखी जा सकती है. मैंने इस बात को पूरी जाँच की है. एक ही पैराग्राफ़ को मैंने कई लोगों से शर्त लगा कर लिखाया है कि देखें वे कितना जल्द लिख सकते हैं. पता चला कि एक मिनट में ४० शब्द तक हिंदी ऐसी लिखी जा सकती है जिसके पढ़ने में किसी को अड़चन न हो. इस ४० में का, कि, के, में, से आदि को अलग अलग शब्द माना गया है. इसी से एक मिनट में लिखे जाने वाले शब्दों की गिनती इतनी अधिक है. तो भां, जब उसी हिंदुस्तानी भाषा के पैराग्राफ़ को फारसी अक्षरों में लिखाया गया तब लिखावट इतनी गिच पिच हो गई कि दूसरे लोग उसे ठीक से नहीं पढ़ पाते थे. जब कभी कोई देखना चाहे मैं तेज लिख कर दिखा सकता हूँ.

इसलिये मेरी राय में देवनागरी में इसलिये सुधार करने की जरूरत नहीं है कि वह धीरे धीरे ही लिखी जा सकती है. यह मैं मानता हूँ कि हिंदी आज कल के शॉर्ट हैंड की बग़वरी नहीं

कर सकती; तो भी, जब कोई और भी तेज लिखना चाहे तो वह सुड़िया में लिख सकता है मात्राओं को छोड़ देने से हमें सुड़िया मिलती है. उर्दू में भी बहुत सी मात्राएँ छोड़ दी जाती हैं, सुड़िया में सभी छोड़ दी जाती हैं. इस बात में सुड़िया उर्दू (या फारसी) से भी बढ़ कर है. हाँ, यह जरूर ठीक है कि मात्राओं के न रहने से कभी कभी कुछ का कुछ पढ़ा जा सकता है. 'बाबा जी अजमेर गए' को 'बाबा जी आज मर गए' पढ़ने की बात तो सभी ने सुनी होगी. फारसी लिखावट में भी ऐसी मूल हो जाती है.

सस्ती छपाई

सस्ती छपाई बहुत जरूरी बात है. देवनागरी की छपाई में यह अड़चन पड़ती है कि उसमें बहुत तरह के अक्षरों के रखने की आवश्यकता पड़ती है. बहुत से पढ़े लिखे लोग छपाई के बारे में कुछ भाँ नहीं जानते और इसलिये सुधार की बात समझ नहीं पाते, या गलत समझ लेते हैं. इसलिये यहाँ सब बातें अच्छी तरह समझाई जा रही हैं.

हिंदी की छपाई के लिये नीचे लिखे अक्षर रहते हैं.

अक्षर

गिनती

(१) अ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, क, ख, ग, गोरह, च, त्र, ज, त, क ४७

(२) चूल कटे अक्षर (जिसे प्रेस के लोग कने वाले

अक्षर कहते हैं).

४७

कने कटे रहने से जब चूल में रोक (याने अक्षर के ऊपर

कर सकती; तो भी, जब कोई और भी तेज लिखना चाहे तो वह सुड़िया में लिख सकता है. मात्राओं को छोड़ देने से हमें सुड़िया मिलती है. उर्दू में भी बहुत सी मात्राएँ छोड़ दी जाती हैं, सुड़िया में सभी छोड़ दी जाती हैं. इस बात में सुड़िया उर्दू (या फारसी) से भी बढ़ कर है. हाँ, यह जरूर ठीक है कि मात्राओं के न रहने से कभी कभी कुछ का कुछ पढ़ा जा सकता है. 'बाबा जी अजमेर गए' को 'बाबा जी आज मर गए' पढ़ने की बात तो सभी ने सुनी होगी. फारसी लिखावट में भी ऐसी मूल हो जाती है.

सस्ती छपाई

सस्ती छपाई बहुत जरूरी बात है. देवनागरी की छपाई में यह अड़चन पड़ती है कि उसमें बहुत तरह के अक्षरों के रखने की आवश्यकता पड़ती है. बहुत से पढ़े लिखे लोग छपाई के बारे में कुछ भाँ नहीं जानते और इसलिये सुधार की बात समझ नहीं पाते, या गलत समझ लेते हैं. इसलिये यहाँ सब बातें अच्छी तरह समझाई जा रही हैं.

(१) अ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, क, ख, ग, गोरह, च, त्र, ज, त, क ४७

(२) चूल कटे अक्षर (जिसे प्रेस के लोग कने वाले

अक्षर कहते हैं).

४७

कने कटे रहने से जब चूल में रोक (याने अक्षर के ऊपर

लगाने वाला आधार) बैठाया जाता है तब रेफ़ अक्षर के ठीक ऊपर आता है, जैसे कि यदि कर्न न हो तो रेफ़ बगल में छपेगा, जैसे क जो अच्छा नहीं लगता.

(३) आधे अक्षर जैसे क, ख, र, वगैरह, इनमें त, द, वगैरह और क, ख वगैरह भी गिन लिये गये हैं. ३८

(४) उ, ऊ, ए, ऐ की मात्रा लगे अक्षर, याने कु, खु, वगैरह; कू, खू, वगैरह; के, खे, वगैरह; और कै, खै, वगैरह. इन अक्षरों के बिना भी काम चल सकता है क्योंकि कर्न वाले अक्षरों में उ, ऊ, वगैरह की मात्रा लगा देने से कु, कू, वगैरह बन सकते हैं. मोनोटाइप कंपनी की मशीन से डले टाइपों में यह नहीं रहते. १५७

(५) कर्न कटे कु, खु, वगैरह, और कू, खू वगैरह, जिसमें इन पर रेफ़ या चंद्रबिंदु लगने पर वह अक्षर के ठीक ऊपर आवे, जैसे कु, न कि कु. इनकी पूरी गिनती करीब ८० है, पर बहुत कम प्रेसों में सब अक्षर रहते हैं. रेफ़ वगैरह को बगल में लगा कर काम चला लिया जाता है. ८०

(६) ऋ को मात्रा लगे अक्षर जैसे कृ वगैरह ... १६

(७) ऌ को मात्रा वाले कर्न कटे अक्षर (प्रेसों में सब अक्षर नहीं रहते, पर रहें तो उनकी भी गिनती १६ होगी) १६

(८) मिले हुये अक्षर, इनमें से अब बहुत से धीरे धीरे छूटते चले जा रहे हैं, जैसे पहले च में च जोड़ने के लिए एक टाइप अलग रहता था जिसमें च के नीचे च रहता था. अब सभी लोग च की बगल में च रखते हैं, जैसे च्च, मोटे हिस्सों में

लकने वाला आधा (बिछाया जाता) तब रफ़ अक्षर के ठीक ऊपर आता है. जैसे क्रेम की कर्न न हो तो रफ़ अक्षर के ठीक ऊपर आता है. जैसे क्रेम की कर्न न हो तो रफ़ अक्षर के ठीक ऊपर आता है.

(३) आधे अक्षर जैसे क, ख, र, वगैरह, इनमें त, द, वगैरह और क, ख वगैरह भी गिन लिये गये हैं. ३८

(४) उ, ऊ, ए, ऐ की मात्रा लगे अक्षर, याने कु, खु, वगैरह; कू, खू, वगैरह; के, खे, वगैरह; और कै, खै, वगैरह. इन अक्षरों के बिना भी काम चल सकता है क्योंकि कर्न वाले अक्षरों में उ, ऊ, वगैरह की मात्रा लगा देने से कु, कू, वगैरह बन सकते हैं. मोनोटाइप कंपनी की मशीन से डले टाइपों में यह नहीं रहते. १५७

(५) कर्न कटे कु, खु, वगैरह, और कू, खू वगैरह, जिसमें इन पर रेफ़ या चंद्रबिंदु लगने पर वह अक्षर के ठीक ऊपर आवे, जैसे कु, न कि कु. इनकी पूरी गिनती करीब ८० है, पर बहुत कम प्रेसों में सब अक्षर रहते हैं. रेफ़ वगैरह को बगल में लगा कर काम चला लिया जाता है. ८०

(६) ऋ को मात्रा लगे अक्षर जैसे कृ वगैरह ... १६

(७) ऌ को मात्रा वाले कर्न कटे अक्षर (प्रेसों में सब अक्षर नहीं रहते, पर रहें तो उनकी भी गिनती १६ होगी) १६

(८) मिले हुये अक्षर, इनमें से अब बहुत से धीरे धीरे छूटते चले जा रहे हैं, जैसे पहले च में च जोड़ने के लिए एक टाइप अलग रहता था जिसमें च के नीचे च रहता था. अब सभी लोग च की बगल में च रखते हैं, जैसे च्च, मोटे हिस्सों में

से इनकी गिनती ७० मानी जा सकती है.

(९) कर्न कटे मिले हुए अक्षर (प्रेसों में सब अक्षर नहीं

रहते, पर रहना चाहिये)

(१०) विदी लगे अक्षर, जैसे क, ख, ब, व, गौरह

(११) कर्न कटे विदी लगे अक्षर

(१२) एकहरी मात्राएँ, और दो दो मात्राएँ एक साथ,

जैसे ' या ' , एक साथ ही मात्रा और रेफ़ वगैरह

(१३) रुपया, आना, पाई, मन, सेर, छटाक, तथा गणित

के लिये

(१४) गिनती १, २, वगैरह

(१५) कॉमा, फुलस्टाप, पाई वगैरह

कुल ६३८

मोनोटाइप कंपनी ने उन अक्षरों को जो कर्न कटे अक्षरों में मात्रा बैठाने से बन सकते हैं छोड़ दिया है और इस प्रकार उनकी मशान से ढाल कर बचे जाने वाले टाइप में करीब ३५० अक्षर होते हैं.

में कहता है इतना भी बहुत है. इतने अक्षरों के रहने के कारण कोई भी प्रेस एक ही नाप के अक्षरों में तीन चार मेल का 'केस' आसानी से नहीं रख सकता. गणित की छपाई में इससे बड़ी अड़चन पड़ती है. अँग्रेजी में मोटे और विना सेरिफ़ (शोशा) वाले अक्षर से बिंदु, मोटे और सेरिफ़ वाले अक्षरों से वेक्टर (Vectors), तिरछे (इटैलिक्स) अक्षरों से गिनती लिखी जाती है. साधारण अक्षरों में भी कैपिटल्स (CAPITALS), स्माल

से इनकी गिनती ७० मानी जा सकती है.

(९) कर्न कटे मिले हुए अक्षर (प्रेसों में सब अक्षर

रहते, पर रहना चाहिये)

(१०) विदी लगे अक्षर, जैसे क, ख, ब, व, गौरह

(११) कर्न कटे विदी लगे अक्षर

(१२) एकहरी मात्राएँ, और दो दो मात्राएँ एक साथ,

जैसे ' या ' , एक साथ ही मात्रा और रेफ़ वगैरह

(१३) रुपया, आना, पाई, मन, सेर, छटाक, तथा गणित

के लिये

(१४) गिनती १, २, वगैरह

(१५) कॉमा, फुलस्टाप, पाई वगैरह

कुल ६३८

मोनोटाइप कंपनी ने उन अक्षरों को जो कर्न कटे अक्षरों में मात्रा बैठाने से बन सकते हैं छोड़ दिया है और इस प्रकार उनकी मशान से ढाल कर बचे जाने वाले टाइप में करीब ३५० अक्षर होते हैं.

में कहता है इतना भी बहुत है. इतने अक्षरों के रहने के कारण कोई भी प्रेस एक ही नाप के अक्षरों में तीन चार मेल का 'केस' आसानी से नहीं रख सकता. गणित की छपाई में इससे बड़ी अड़चन पड़ती है. अँग्रेजी में मोटे और विना सेरिफ़ (शोशा) वाले अक्षर से बिंदु, मोटे और सेरिफ़ वाले अक्षरों से वेक्टर (Vectors), तिरछे (इटैलिक्स) अक्षरों से गिनती लिखी जाती है. साधारण अक्षरों में भी कैपिटल्स (CAPITALS), स्माल

केपिटल्स (SMALL CAPITALS) और छोटे (Lower case) अक्षरों से बड़ा सुभीता रहता है. हिंदी में अब तो पतले मोटे और तिरछे ये तीन तरह के अक्षर बनने लगे हैं, पर ऐसा ही कोई प्रेस होगा जिसमें साधारण छपाई के लिये ये तीनों टाइप काफ़ी ज्यादा रहते हों. नेवता वगैरह तो छप सकता है क्योंकि उसमें दो चार लाइन हो कैंसो छपाई रहती है, पर पुस्तक छपने भर का टाइप रखना दूसरी बात है. सवा छे सौ अक्षरों में से कोई न कोई बराबर घटा हो रहता है, और यदि तीन तरह का टाइप रखना जाय तो और भी असुविधा होती है.

फिर, हेडिंग के लिए अङ्करेखा में केवल २६ अक्षरों से काम चल जाता है, पर हिंदी छापने के लिये, बंबइया स्टाइल में भी, जिसमें ऊपर लगाने वाली

(२६)

मात्राएँ अलग से कंपोज की जाती हैं, करीब २०० अक्षर लगते हैं.

इन सब अइंचनों को दूर करने के लिये सुधार की आवश्यकता है. श्रोनिवास जी ने भी सुधार खास कर इसी मतलब से किया है. पर उन्होंने ज़रूरत से ज्यादा सुधार कर डाला है. अक्षरों को उन्होंने इतना बदल डाला है कि उनके नये अक्षर और मात्राओं को आजकल की हिंदी जानने वाला पहचान नहीं पाता. इसलिये मैं कहता हूँ कि उनकी सुधारी हुई देवनागरी सब पृथिये ता देवनागरी ही नहीं रह गयी. मेरे मत में तो सुधार इतना कम होना चाहिये कि हो सके तो लोगों को पता ही न

केपिटल्स (SMALL CAPITALS) और छोटे (Lower case) अक्षरों से बड़ा सुभीता रहता है. हिंदी में अब तो पतले मोटे और तिरछे ये तीन तरह के अक्षर बनने लगे हैं, पर ऐसा ही कोई प्रेस होगा जिसमें साधारण छपाई के लिये ये तीनों टाइप काफ़ी ज्यादा रहते हों. नेवता वगैरह तो छप सकता है क्योंकि उसमें दो चार लाइन हो कैंसो छपाई रहती है, पर पुस्तक छपने भर का टाइप रखना दूसरी बात है. सवा छे सौ अक्षरों में से कोई न कोई बराबर घटा हो रहता है, और यदि तीन तरह का टाइप रखना जाय तो और भी असुविधा होती है.

फिर, हेडिंग के लिए अङ्करेखा में केवल २६ अक्षरों से काम चल जाता है, पर हिंदी छापने के लिये, बंबइया स्टाइल में भी, जिसमें ऊपर लगाने वाली

(२६)

मात्राएँ अलग से कंपोज की जाती हैं, करीब २०० अक्षर लगते हैं. इन सब अइंचनों को दूर करने के लिये सुधार की आवश्यकता है. श्रोनिवास जी ने भी सुधार खास कर इसी मतलब से किया है. पर उन्होंने ज़रूरत से ज्यादा सुधार कर डाला है. अक्षरों को उन्होंने इतना बदल डाला है कि उनके नये अक्षर और मात्राओं को आजकल की हिंदी जानने वाला पहचान नहीं पाता. इसलिये मैं कहता हूँ कि उनकी सुधारी हुई देवनागरी सब पृथिये ता देवनागरी ही नहीं रह गयी. मेरे मत में तो सुधार इतना कम होना चाहिये कि हो सके तो लोगों को पता ही न

चले कि सुधार किया गया है; या पता चले भी तो वह खटके नहीं, कम से कम सुधार ऐसा न हो कि इस सुधारी हुई देवनागरी को सब लोग पहली ही बार बेधड़क पढ़ न सकें

मेरी राय तो यह है कि अक्षरों की गिनती कम करने के लिये मात्राओं को कुछ दहिनी और हटा कर लगाना चाहिये. इससे कर्न कटे अक्षरों को जहरत न रहेगी और इसलिये तब करीब आधे अक्षरों से काम चल जायगा. यदि यह बात मान ली जाय तो अक्षरों की गिनती यों होगी :

- | | |
|--|----|
| (१) अ इ ई उ ऊ ए ऋ क ख ग वगैरह और इ ङ | ४३ |
| (२) गिनती १, २, ३, वगैरह | १० |
| (३) मात्राएँ I, f, | २३ |
| (४) कॉमा वगैरह | १५ |
| (५) आधे अक्षर | २५ |
| (६) मिले हुए अक्षर | ३० |

कुल १४६

केवल इतने ही अक्षरों से छपी हिंदी को बानगी साथ में हे. इसके पढ़ने में कहीं रुकावट नहीं पड़ती. बहुत बुरी भी नहीं है. जब इस स्टाइल के लिए अक्षर खास करके ढाले जायेंगे तब शिरोरेखा मात्राओं के लगने पर टूटने नहीं पायेगी और छपाई इससे भी सुंदर लगेगी.

यह तो मानो हुई बात है कि भारतीय बणमाला संसार की सभी बणमालाओं में अधिक वैज्ञानिक और सुगम है. भारतीय लिपियों का एक मात्र खोत अशोक कालीन ब्राह्मी लिपि है. प्रांतीय

दिल्ली के शिखर की गीता या पत्रे चले भी तो वह खटके नहीं, कम से कम सुधार ऐसा न हो कि इस सुधारी हुयी देवनागरी को सब लोग पहली ही बार बेधड़क पढ़ न सकें

मेरी राय तो यह है कि अक्षरों की गिनती कम करने के लिये मात्राओं को कुछ दहिनी और हटा कर लगाना चाहिये. इससे कर्न कटे अक्षरों को जहरत न रहेगी और इसलिये तब करीब आधे अक्षरों से काम चल जायगा. यदि यह बात मान ली जाय तो अक्षरों की गिनती यों होगी :

- | | |
|--|----|
| (१) अ इ ई उ ऊ ए ऋ क ख ग वगैरह और इ ङ | ४३ |
| (२) गिनती १, २, ३, वगैरह | १० |
| (३) मात्राएँ I, f, | २३ |
| (४) कॉमा वगैरह | १५ |
| (५) आधे अक्षर | २५ |
| (६) मिले हुए अक्षर | ३० |

कुल १४६

केवल इतने ही अक्षरों से छपी हिंदी की बानगी साहचर्य में ११-१२ के चिह्नों में कहीं रुकावट नहीं पड़ती. बहुत बुरी भी नहीं है. जब इस स्टाइल के लिये अक्षर खास करके ढाले जायेंगे तब शिरोरेखा मात्राओं के लगने पर टूटने नहीं पायेगी और छपाई इससे भी सुंदर लगेगी.

यह तो मानो हुयी बात है कि भारतीय बणमाला संसार की सभी बणमालाओं में अधिक वैज्ञानिक और सुगम है. भारतीय लिपियों का एक मात्र खोत अशोक कालीन ब्राह्मी लिपि है. प्रांतीय

इन तीन सुधारों से ३० अक्षर कम हो जायँगे और इस तरह से कुल ११६ अक्षरों से काम चल जायगा, परंतु इन अक्षरों का छोड़ना मुझे अच्छा नहीं लगता. इनकी गिनती कुल ३० है, पर इनके न रहने से देवनागरी का रूप बहुत बदल जाता है. इ. इ. इ. बंगरह के बदले अ पर मात्रा लगा कर तो कई लोगों ने पुस्तकें छपाई हैं, पर बहुत से लोगों को अपर इ इ बंगरह की मात्रा लगाने से चिढ़ है.

छोटे अक्षर

दिक्रानरी, रेलवे टाइम टेबुल, बंगरह को इस तरह छापने में कि वे फूल कर बहुत बड़े न हो जाँय—वे इतने छोटे रहें कि उनको बार-बार ठठाने में और देखने में सुभीता रहे—छोटे अक्षरों की जरूरत पड़ती है. हिंदी के बहुत से अक्षरों में इतना घुमाव फिराव है कि अभी तक बहुत छोटे टाइप बन नहीं पाये हैं. सब से छोटी छपाई जो कंपोज किये अक्षरों से अभी तक हिंदी में हो सकी है ऐसी है कि एक इंच में ८ लाइनें आ सकती हैं. प्रेस वाले टाइप का नाप प्वाइंट में करते हैं और १ इंच में ७२ प्वाइंट मानते हैं. इसलिये ऊपर के टाइप को वे ९ प्वाइंट का टाइप कहेंगे. अङ्गरेजी में ५ प्वाइंट तक का टाइप बनता है. पर इतना छोटा टाइप कम चलता है. जहाँ छोटे अक्षरों को जरूरत होती है वहाँ अङ्गरेजी में अक्सर ६ प्वाइंट वाला टाइप ही लगाया जाता है. ऐसे टाइप से एक इंच में १२ लाइनें छप सकती हैं.

हिंदी में छोटे टाइप के न रहने से बड़ी हान होती

इन तीन अक्षरों से ३० अक्षर कम हो जायँगे और इस तरह से कुल ११६ अक्षरों से काम चल जायँगे. परंतु इन अक्षरों का छोड़ना मुझे अच्छा नहीं लगता. इनकी गिनती कुल ३० है, पर इनके न रहने से देवनागरी का रूप बहुत बदल जाता है. इ. इ. इ. बंगरह के बदले अ पर मात्रा लगा कर तो कई लोगों ने पुस्तकें छपाई हैं, पर बहुत से लोगों को अपर इ इ बंगरह की मात्रा लगाने से चिढ़ है.

दोनागरी में सुधार

दोनागरी में सुधार

है. काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा से छपी हिंदी की सबसे बड़ी डिक्शनरी, जिसका नाम शब्द-सागर है, कई जिल्लों में छपी है और बड़ी महंगी हो गयी है. यदि हिंदी में भी ६ प्वाइंट का टाइप होता तो इस पुस्तक के पन्ने घट कर ४००० के बदले कुल ८०० ही रह जाते और ऐसी पुस्तक लड़ाई के पहले ५) में विक सकता थी.

एक बहुत साधारण सुधार करने से छोटे अक्षर हिंदी में भी बन सकते हैं. यह वही सुधार है जिसे हाथ से लिखने में बहुत से लोगों ने अपना लिया है. यदि अक्षरों पर से शिरोरेखा हटा दी जाय तो हिंदी में ६ प्वाइंट के टाइप आसानी से बन सकते हैं. शिरोरेखा के रहने से छोटे टाइपों में स्याही भर जाने का डर रहता है. १२ प्वाइंट के आज कल के टाइपों से कंपोज किये मीटर का प्रफू जब आता है तब उसमें व और व, प और प, कों और कों वगैरह में कोई अंतर नहीं दिखाई देता. ६ प्वाइंट के शिरो रेखा वाले टाइप को छपाई तो इस चार में बहुत ही खराब होगी.

लाइनो टाइप पर देवनागरी

लाइनो टाइप मशीन से कंपोज करने में अखबार वालों को बहुत सुभीता होता है. इस मशीन से काम बहुत जल्द होता है और टाइप के गिर कर बिखर जाने का, या छपते समय एक-दो टाइप के उखड़ कर निकल जाने का डर नहीं रहता, क्योंकि लाइनो टाइप मशीन से हर बार नया टाइप ढलता है और एक-एक अक्षर अलग ढलने के बदले लाइन-की-लाइन ही ढलती है. मशीन का नाम लाइनो टाइप इर्सॉलिये पड़ा है कि इससे. लाइन. आफ

हो. काशी नागरी प्रचारिणी सभा से छपी हिंदी की सब से बड़ी डिक्शनरी 'अस' का नाम शब्द सागर है, कई जिल्लों में छपी है और बड़ी महंगी होगी जो हिंदी में भी ६ प्वाइंट का टाइप होता तो इस पुस्तक के पन्ने घट कर ४००० के बदले कुल ८०० ही रह जाते और ऐसी पुस्तक लड़ाई के पहले ५) में विक सकता थी.

एक बहुत साधारण सुधार करने से छोटे अक्षर हिंदी में भी बन सकते हैं. यह वही सुधार है जिसे हाथ से लिखने में बहुत से लोगों ने अपना लिया है. यदि अक्षरों पर से शिरोरेखा हटा दी जाय तो हिंदी में ६ प्वाइंट के टाइप आसानी से बन सकते हैं. शिरोरेखा के रहने से छोटे टाइपों में स्याही भर जाने का डर रहता है. १२ प्वाइंट के आज कल के टाइपों से कंपोज किये मीटर का प्रफू जब आता तो उसमें व और व, प और प, कों और कों वगैरह में कोई अंतर नहीं दिखाई देता. ६ प्वाइंट के शिरो रेखा वाले टाइप को छपाई तो इस चार में बहुत ही खराब होगी.

लाइनो टाइप पर देवनागरी

लाइनो टाइप मशीन से कंपोज करने में अखबार वालों को बहुत सुभीता होता है. इस मशीन से काम बहुत जल्द होता है और टाइप के गिर कर बिखर जाने का, या छपते समय एक-दो टाइप के उखड़ कर निकल जाने का डर नहीं रहता, क्योंकि लाइनो टाइप मशीन से हर बार नया टाइप ढलता है और एक-एक अक्षर अलग ढलने के बदले लाइन-की-लाइन ही ढलती है. मशीन का नाम लाइनो टाइप इर्सॉलिये पड़ा है कि इससे. लाइन. आफ

टाइप अर्थात् टाइप की समूची लाइन ढलती है. इस मशीन में टाइप राइटर के की-बोर्ड की तरह की-बोर्ड होता है, और जैसे टाइप किया जाता है उसी तरह इससे कंपोज किया जाता है. कुल मिला कर इसमें ६० ही चाभियाँ होती हैं. इसलिये इस मशीन पर साधारण हिंदी के कंपोज करने में अड़चन होत है. हरि जी गोविल के सुझाव पर चल कर लाइनो टाइप कंपनी ने देवनागरी की छपाई के लिये भी अक्षरों के साँचे बनाये थे. पर मशीन में केवल ६० अक्षरों के लिये ही जगह रहने से अच्छी छपाई न हो सकती थी और मशीन चल नहीं पायी. अब कंपनी देवनागरी के अक्षर नहीं बनाती. तो भी, यदि कुछ आधे अक्षरों के बनाने के लिए हलंत को काम में लाया जाय और कुछ पूरे अक्षरों को आधे में पाई जोड़ कर बनाया जाय, जैसे ग तो ६० चाभियों से ही चल सकता है. लाइनो टाइप कंपनी उस आदमी को काफ़ी रुपया देगी जो ६० ही चाभियों से ऐसी कंपोजिंग का ढंग बता सके जिससे हिंदी वाले सुन्दर समझें.

टाइप राइटर पर हिंदी

टाइपराइटर पर हिंदी छप तो जाती ही है, पर हिंदी में, जैसा हम देख चुके हैं, अक्षर बहुत हैं और टाइपराइटर में कुल ८४ अक्षरों के लिए जगह रहती है. इसलिये हिंदी जल्द टाइप नहीं हो पाती. अंग्रेजी में एक मिनट में ४० शब्द टाइप करना साधारण बात है, पर टाइप राइटर से हिंदी की इतनी तेज छपाई नहीं हो पाती क्योंकि बार बार शिफ्ट-की को दबाना पड़ता है (शिफ्ट-की वह चाभी है जिसके दबाने से, अंगरेजी छापने वाले टाइप राइटरों

दिसंबर १९४७ में देवनागरी में सुधार

नया हिन्द

मशीन राइटर मशीन की सुचयी अर्थात् डबल्टी हो. इस मशीन में मशीन राइटर के की-बोर्ड की तरह की-बोर्ड होता है, और जैसे मशीन राइटर की असी तरह इससे कंपोज किया जाता है. कुल मिला कर इसमें ६० ही चाभियाँ होती हैं. इस लिये इस मशीन पर साधारण हिंदी के कंपोज करने में अड़चन होत है. हरि जी गोविल के सुझाव पर चल कर लाइनो टाइप कंपनी ने देवनागरी की छपाई के लिये भी अक्षरों के साँचे बनाये थे. पर मशीन में केवल ६० अक्षरों के लिये ही जगह रहने से अच्छी छपाई न हो सकती थी और मशीन चल नहीं पायी. अब कंपनी देवनागरी के अक्षर नहीं बनाती. तो भी, यदि कुछ आधे अक्षरों के बनाने के लिये हलंत को काम में लाया जाय और कुछ पूरे अक्षरों को आधे में पाई जोड़ कर बनाया जाय, जैसे ग तो ६० चाभियों से ही चल सकता है. लाइनो टाइप कंपनी उस आदमी को काफ़ी रुपया देगी जो ६० चाभियों से ऐसी कंपोजिंग का ढंग बता सके जिसे हिंदी वाले सुन्दर समझें.

मशीन राइटर पर हिंदी

मशीन राइटर पर हिंदी छप तो जाती ही है, पर हिंदी में, जैसा हम देख चुके हैं, अक्षर बहुत हैं और टाइपराइटर में कुल ८४ अक्षरों के लिये जगह रहती है. इसलिये हिंदी जल्द टाइप नहीं हो पाती. अंग्रेजी में एक मिनट में ४० शब्द टाइप करना साधारण बात है, पर टाइप राइटर से हिंदी की इतनी तेज छपाई नहीं हो पाती क्योंकि बार बार शिफ्ट-की को दबाना पड़ता है (शिफ्ट-की वह चाभी है जिसके दबाने से, अंगरेजी छापने वाले टाइप राइटरों

नया हिन्द देवनागरी में सुधार दिसम्बर सन् '४७
 में, छोटों के बदले कैपिटल अक्षर छपते हैं; हिंदी में इस चाभी को
 दवाने पर समूचे के बदले, आधे अक्षर छपते हैं या ऐसा ही
 कोई दूसरा उपाय रहता है (तेज छाप सकने के लिये यह जरूरी
 जान पड़ता है कि हलंत से आधा अक्षर बनाने का ढंग अपना
 लिया जाय, अब भी लोग टाइप राइटर पर द्वारा के बदले द्वारा
 छापते हैं और लोग इस भोंडपन को माफ़ ही कर देते हैं।

श्री निवास जी ने जो सुधार बताया है उससे टाइप राइटर का
 काम कुछ ज्यादा तेज नहीं हो सकेगा, क्योंकि उनकी बात मानी
 जाय तो एक अक्षर के लिये अकसर दो चाभियाँ दवानी पड़ेंगी
 और उसमें समय लगेगा, मेरी राय में तेज टाइप करने के लिये
 आधे अक्षरों के बनाने में करीब सब जगह हलंत को काम में
 लाना चाहिये, अक्षरों और मात्राओं का रूप बदलने से यह उपाय
 कहीं ज्यादा अच्छा है।

टेलिप्रिंटर पर देवनागरी

टेलिप्रिंटर वह मशीन है जिससे तार की खबरें आती हैं
 और बिना किसी के हाथ लगाये आप-से-आप एक-एक अक्षर
 करके छपती जाती हैं, इसमें कुल मिला कर ६० अक्षर तक रह
 सकते हैं।

टेलिप्रिंटर की छपाई जनता के लिये नहीं है, इसकी छपाई
 को कंपोजिटर पढ़ ले, वसु इतना ही चाहिये, यदि (१) आधे
 अक्षर सब हलंत से बनाये जाँय और (२) इ. ई. वगैरह के
 बदले अ पर मात्रा लगायी जाय तो टेलिप्रिंटर पर आज कल
 की देवनागरी अच्छी तरह काम देगी और जनता समझ भी न

नया हिन्द देवनागरी में सुधार -
 में, छोटों के बदले कैपिटल अक्षर छपते हैं; हिंदी में इस चाभी को
 दवाने पर समूचे के बदले, आधे अक्षर छपते हैं या ऐसा ही
 कोई दूसरा उपाय रहता है (तेज छाप सकने के लिये यह जरूरी
 जान पड़ता है कि हलंत से आधा अक्षर बनाने का ढंग अपना
 लिया जाय, अब भी लोग टाइप राइटर पर द्वारा के बदले द्वारा
 छापते हैं और लोग इस भोंडपन को माफ़ ही कर देते हैं।

श्री निवास जी ने जो सुधार बताया है उससे टाइप राइटर का
 काम कुछ ज्यादा तेज नहीं हो सकेगा, क्योंकि उनकी बात मानी
 जाय तो एक अक्षर के लिये अकसर दो चाभियाँ दवानी पड़ेंगी
 और उसमें समय लगेगा, मेरी राय में तेज टाइप करने के लिये
 आधे अक्षरों के बनाने में करीब सब जगह हलंत को काम में
 लाना चाहिये, अक्षरों और मात्राओं का रूप बदलने से यह उपाय
 कहीं ज्यादा अच्छा है।

टेलिप्रिंटर वह मशीन है जिससे तार की खबरें आती हैं
 और बिना किसी के हाथ लगाये आप-से-आप एक-एक अक्षर
 करके छपती जाती हैं, इसमें कुल मिला कर ६० अक्षर तक रह
 सकते हैं।

टेलिप्रिंटर की छपाई जनता के लिये नहीं है, इसकी छपाई
 को कंपोजिटर पढ़ ले, वसु इतना ही चाहिये, यदि (१) आधे
 अक्षर सब हलंत से बनाये जाँय और (२) इ. ई. वगैरह के
 बदले अ पर मात्रा लगायी जाय तो टेलिप्रिंटर पर आज कल
 की देवनागरी अच्छी तरह काम देगी और जनता समझ भी न

नया हिन्द देवनागरी में सुधार दिसम्बर सन् '४७

सकेगी कि कहीं भी कभी अइचन थी. सच पूछा जाय तो ६० से बहुत कम चाभियों के रहने में भी काम अच्छी तरह चल जायगा. पहले बताये गये दो नियमों के ऊपर से बस एक और यह नियम लगाना पड़ेगा कि ख. घ. छ. बौरह के बदले क. ग. च. बौरह लिखा जाय. टेलिप्रिटर की छपाई को जनता तो पढ़ेगी नहीं. उसे तो कंपोजिटर ही पढ़ेगा और कंपोजिटर एक मिनट में याद कर लेगा कि जहाँ क' हो वहाँ ख कंपोज करो, जहाँ क' हो वहाँ क कंपोज करो इसलिये टेलिप्रिटर के लिये देवनागरी में किसी-भी सुधार की जरूरत नहीं है.

इस तरह हम देखते हैं कि देवनागरी में इतना ही सुधार से काम चल सकता है कि मात्राओं को थोड़ा-सा दाहिनी ओर हटा दिया जाय. इससे प्रेस का काम बहुत सुभीते से हो जाया करेगा. फिर, जब बहुत छोटे अक्षरों की जरूरत हो तब शिरोरखा हटा दी जाय. बस इन्हीं दो सुधारों से बहुत कुछ काम चल सकता है. कुछ समय बीतने पर, जब अच्छी तरह चालू हो जाँय, नये सुधारों का बात सोचनी चाहिये. सुधारों के बारे में हमें धीरे-धीरे आगे बढ़ना चाहिये.

द्विभागी में सुधार

नियम

सकती हैं कि किसी कभी अइचन नहीं. सच पूछा जाय तो ५० से बहुत कम चाभियों के रहने में भी काम अच्छी तरह चल जाय. पहले बताये गये दो नियमों के ऊपर से बस एक और यह नियम लगाना पड़ेगा कि ख. घ. छ. बौरह के बदले क. ग. च. बौरह लिखा जाय. टेलिप्रिटर की छपाई को जनता तो पढ़ेगी नहीं. उसे तो कंपोजिटर ही पढ़ेगा और कंपोजिटर एक मिनट में याद कर लेगा कि जहाँ क' हो वहाँ ख कंपोज करो, जहाँ क' हो वहाँ क कंपोज करो इसलिये टेलिप्रिटर के लिये देवनागरी में किसी-भी सुधार की जरूरत नहीं है.

इस तरह हम देखते हैं कि देवनागरी में इतना ही सुधार से काम चल सकता है कि मात्राओं को थोड़ा-सा दाहिनी ओर हटा दिया जाय. इससे प्रेस का काम बहुत सुभीते से हो जाया करेगा. फिर, जब बहुत छोटे अक्षरों की जरूरत हो तब शिरोरखा हटा दी जाय. बस इन्हीं दो सुधारों से बहुत कुछ काम चल सकता है. कुछ समय बीतने पर, जब अच्छी तरह चालू हो जाँय, नये सुधारों का बात सोचनी चाहिये. सुधारों के बारे में हमें धीरे-धीरे आगे बढ़ना चाहिये.

आज की दुनिया

(कौमी खिदमतगार)

- ❁ सबा जनता-राज ❁
- ❁ इंडिया और पाकिस्तान ❁
- ❁ अंगरेजी चालें और लट्ट ❁
- ❁ रूस और एंग्लो अमरीका ❁

सच्चा जनता-राज

दो तरह की हकूमतें आज दुनिया में सबसे ज्यादा मशहूर हैं. एक फ़ासिस्ट हकूमतें और दूसरी सोशलिस्ट हकूमतें. फ़ासिस्ट हकूमतें वह हैं जिनमें राज की बाग थोड़े से सरमायादारों या उनके एजेन्टों के हाथों में होती है. सोशलिस्ट हकूमतों में राज की बाग आम जनता या जनता के चुने हुए अगुवों के हाथों में होती है. फ़ासिस्ट हकूमत में माल और दौलत पैदा करने के सब साधन जैसे रेल, खानें, जंगल ख़र्मान, बड़े बड़े कारखाने, बगैरा थोड़े से साहूकारों के हाथों में होते हैं सोशलिस्ट राज में इन सब चीजों पर आम जनता की मिलकीयत होती है. हमारे देश में जो इस वक़्त हकूमत चल रही है वह सारु फ़ासिस्ट रंग ढंग की है. सोशलिस्ट हकूमत या सच्चा जनता का राज अभी हमसे कौनों दूर है. अभी तो यहाँ देश के करोड़ों बालिग मर्द औरतों को वोट देने का हक तक नहीं मिला है. न हमारे राज की नींव जनता की चुनी हुई कौमी पंचायतों पर कायम है. हमारी तालीम का तराका

आज की दुनिया

(कौमी खिदमतगार)

- ❁ सच्चा जनता राज ❁
- ❁ इंडिया और पाकिस्तान ❁
- ❁ अंगरेजी चालें और लोट्ट ❁
- ❁ रूस और अंग्लो अमरीका ❁

सच्चा जनता राज

दो तरह की हकूमतें आज दुनिया में सब से زیادे مشहूर हैं. एक फ़ासिस्ट हकूमतें और दूसरी सोशलिस्ट हकूमतें. फ़ासिस्ट हकूमतें वह हैं जिनमें राज की बाग थोड़े से सरमायदारों या उनके एजेन्टों के हाथों में होती है. सोशलिस्ट हकूमतों में राज की बाग आम जनता या जनता के चुने हुए अगुवों के हाथों में होती है. फ़ासिस्ट हकूमत में माल और दौलत पैदा करने के सब साधन जैसे रेल, खानें, जंगल ख़र्मान, बड़े बड़े कारखाने, बगैरा थोड़े से साहूकारों के हाथों में होते हैं सोशलिस्ट राज में इन सब चीजों पर आम जनता की मिलकीयत होती है. हमारे देश में जो इस वक़्त हकूमत चल रही है वह सारु फ़ासिस्ट रंग ढंग की है. सोशलिस्ट हकूमत या सच्चा जनता का राज अभी दूर है. अभी तो यहाँ देश के करोड़ों बालिग मर्द औरतों को वोट देने का हक तक नहीं मिला है. न हमारे राज की नींव जनता की चुनी हुई कौमी पंचायतों पर कायम है. हमारा तस्लिम का तरीक़े

बहुत ही पुराना, देश में फूट डालने वाला और जनता को सच्ची तरक्की में रुकावट है. हमें इ प सब को बदलना होगा. हमें तेजी से आगे बढ़ती हुई दुनिया के साथ चलना है तो राज का, तालीम का, पैदावार का, अमान के बटवारे का, सब का नया ढंग और नया डील डालना होगा. यह सब बिना एक नए इनकलाब के नहीं हो सकता. इस आने वाले इनकलाब की बात तो १९ अक्टूबर को पंडित जवाहरलाल जी नेहरू ने भी यू० पी० एन० काँग्रेस के सामने कही थी. पर हमारा खयाल है कि यह इनकलाब अब जवाहर लाल जी और उनके सरकारी साथियों के बूते का खेल नहीं है. इसके लिये दुनिया के और देशों की तरह समाज के धुर नाचे से एक नए उभार और नए तूफान की जरूरत होगी.

इंडिया और पाकिस्तान

बहुत से लोगों को डर है कि इंडिया और पाकिस्तान में लड़ाई न खिड़ जावे. लड़ाई तो हो रही है. हो सकता है कि यह लड़ाई और ज्यादा खूनी हो जावे. पर इसमें न दोनों में से किसी का कभी भला होगा और न किसी का जीत. जब तक यह दो दो हैं तब तक भगड़ा रहेगा ही. कभी माली भगड़ा, कभी तिजारती, कभी एक दूसरे पर उलाहना, कभी दोनों तरफ से यू० एन० ओ० और दूसरी बाहर की कौमों से मदद की अपील, आज कर्माँर में और कल हैदराबाद में.

इस खेचातानी में चार पार्टियाँ हैं. अंगरेज, देसी रियासतें, काँग्रेस और लीग. हर एक दूसरे को भगड़े की जड़ बताती है. अंगरेज कहते हैं काँग्रेस और लीग लड़ रही हैं. काँग्रेस कहती

बैत ही 'गिराना' दिस में क्यूठ डालने वाला अद जन्ता की पत्नी तन्ती में मकावट पर हैं। इस सब को बदलना होगा. हमें तेजी से आगे बढ़ती हूँ दुनिया के साथ चलना है तो राज का, तालीम का, पैदावार का, अमान के बटवारे का, सब का नया ढंग और नया डील डालना होगा. यह सब बिना एक नए इनकलाब के नहीं हो सकता. इस आने वाले इनकलाब की बात तो १९ अक्टूबर को पंडित जवाहर लाल जी नेहरू ने भी यू० पी० एन० काँग्रेस के सामने कही थी. पर हमारा खयाल है कि यह इनकलाब अब जवाहर लाल जी और आन के सरकारी साथियों के बूते का खेल नहीं हो. इस के लिये दुनिया के और देशों की तरह समाज के धुर नाचे से एक नए उभार और नए तूफान की जरूरत होगी.

इंडिया और पाकिस्तान

बैत से लोगों को डर है कि इंडिया और पाकिस्तान में लड़ाई न खिड़ जावे. लड़ाई तो हो रही है. हो सकता है कि यह लड़ाई और ज्यादा खूनी हो जावे. पर इस में न दोनों में से किसी का कभी भला होगा. और न किसी की जीत. जब तक ये दो दो हैं तब तक भगड़ा रहेगा ही. कभी माली भगड़ा, कभी तिजारती, कभी एक दूसरे पर उलाहना, कभी दोनों तरफ से यू० एन० ओ० और दूसरी बाहर की कौमों से मदद की अपील, आज कर्माँर में और कल हैदराबाद में.

इस खेचातानी में चार पार्टियाँ हैं. अंगरेज, देसी रियासतें, काँग्रेस और लीग. हर एक दूसरे को भगड़े की जड़ बताती है. अंगरेज कहते हैं काँग्रेस और लीग लड़ रही हैं. काँग्रेस कहती

है लोग और लोग को पिट्टू रियासतें भगड़े को जड़ है. लोग कहती हैं काँग्रेस और काँग्रेस की पिट्टू रियासतें भगड़े का बुनियाद है. रियासतें कहती हैं काँग्रेस और लोग दोनों खबरदरती हमें अपनी अपनी तरफ खेच कर बरवाद कर रही हैं. हमें मालूम होता है यह दोनों ही अँगरेजो हकूमत की शतरंज के मोहरें बनी हुई हैं.

जो लोग चिल्लाते रहते हैं कि हम अब आजाद हो गए वह बहुत ही भोले हैं. पाकिस्तान और इन्डिया दोनों अभी तक ब्रिटिश राज के दो हिस्से हैं. असली ताकत दोनों में से किसी के हाथ में नहीं है. दोनों इंग्लैण्ड के राजा की रियाया है और राज भक्ति को क्रसमें खाते हैं. यू० एन० आ० के मेम्बर बन जाने से किसी को धोके में नहीं आना चाहिये. यू० एन० आ० का एक कायदा यह है कि जो राज पूरी तरह आजाद नहीं है वह भी अपने अधिराज मुल्क की रजामन्दी से, यानो इन्डिया और पाकिस्तान इंगलिस्तान का सरकार की रजामन्दी से यू० एन. आ. के मेम्बर हो सकते हैं और दूसरे मुल्कों में एलचो भेज सकते हैं.

हुआ यह है कि अँगरेजों ने अपना हिन्दुस्तान को सलतनत के दो टुकड़े कर दिये. एक में हिन्दुओं का जोर ज्यादा और दूसरे में मुसलमानों का. इन दोनों में राजकाजी, माली और तज्जारतो लागडाट खूब बढ़ता रहेगा. पहले तो मिर्क रामलीला बकरीद और मोहर्रम के ही भगड़े हैं तिथे अब हिन्दू राज और मुसलिम राज का लड़ायें चलेंगी जिन्हें रियासतों ने, जिनमें कहीं हिन्दू ज्यादा कहीं मुसलमान, कहीं हिन्दू राजा कहीं मुसलमान, और भी पंचादा

ना है. आज की दुनियाँ
जो लिगे और लिगे की पिट्टू रियासतें भगड़े की जड़ है. लिगे कसती हो काँग्रेस और काँग्रेस की पिट्टू रियासतें भगड़े की बुनियाद है. रियासतें कसती हैं काँग्रेस और लोग दोनों खबरदरती हमें अपनी अपनी तरफ खेच कर बरवाद कर रही हैं. हमें मालूम होता है यह दोनों ही अँगरेजो हकूमत की शतरंज के मोहरें बनी हुई हैं.

जो लोग चिल्लाते रहते हैं कि हम अब आजाद हो गये वे बहुत ही भोले हैं. पाकिस्तान और इन्डिया दोनों अभी तक ब्रिटिश राज के दो हिस्से हैं. असली ताकत दोनों में से किसी के हाथ में नहीं है. दोनों इंग्लैण्ड के राजा की रियाया है और राज भक्ति को क्रसमें खाते हैं. यू० एन० आ० के मेम्बर बन जाने से किसी को धोके में नहीं आना चाहिये. यू० एन० आ० का एक कायदा यह है कि जो राज पूरी तरह आजाद नहीं है वह भी अपने अधिराज मुल्क की रजामन्दी से, यानो इन्डिया और पाकिस्तान इंगलिस्तान का सरकार की रजामन्दी से यू० एन. आ. के मेम्बर हो सकते हैं और दूसरे मुल्कों में एलचो भेज सकते हैं.

हुआ यह है कि अँगरेजों ने अपना हिन्दुस्तान को सलतनत के दो टुकड़े कर दिये. एक में हिन्दुओं का जोर ज्यादा और दूसरे में मुसलमानों का. इन दोनों में राजकाजी, माली और तज्जारतो लागडाट खूब बढ़ता रहेगा. पहले तो मिर्क रामलीला बकरीद और मोहर्रम के ही भगड़े हैं तिथे अब हिन्दू राज और मुसलिम राज का लड़ायें चलेंगी जिन्हें रियासतों ने, जिनमें कहीं हिन्दू ज्यादा कहीं मुसलमान, कहीं हिन्दू राजा कहीं मुसलमान, और भी पंचादा

कर दिया. इन रियासतों की वजह से इन्डिया और पाकिस्तान की लड़ाई और भी टिकाऊ रहेगी और तारीक यह कि किसी रियासत पर भी इन्डिया या पाकिस्तान का न कब्जा होगा, न पूरा खोर चलेगा.

अंगरेजी चालें और छूट—

हिन्दुस्तान पर इंगलिस्तान की हकूमत के खाल पहलू छे थे—(१) नौकरियों में और कौज में अंगरेज. (२) हिन्दुस्तान और इंगलिस्तान की तजारत में अंगरेजों का हिस्सा (३) हिन्दुस्तान में लगी हुई अंगरेजों की पूजा (४) हिन्दुस्तान का यह कर्ज कि लड़ाई छिड़ने पर इंगलिस्तान को आदमियों, सामान और रुपए से मदद दे. (५) बह माली टकसाली ढाँचा जिसे स्टरलिंग ब्लाक कहते है (६) हिन्दुस्तान में और देसी रियासतों में हिन्दुस्तानी व्यापार के साथ मिल कर और उसका आइ में ब्रिटिश व्यापार. इन सब बातों में अंगरेजों का पंजा इस मुल्क पर ढोला नहीं हुआ बल्कि और ज्यादा कस गया है. सिर्फ नौकरियों में कुछ अंगरेज घटे हैं. पहले दस फीसदी थे अब छे और सात फीसदी के बीच में हैं. उसा के मुक्तावले में इंगलिस्तान ने अपना माली और तजारती पंजा और ज्यादा मजबूती के साथ कस लिया. हमारे कुल व्यापार में आज नब्बे फीसदी से ऊपर हिस्सा इंगलिस्तान का है.

इंगलिस्तान के 'जान बुत' नाम के अखबार में हेरी हाप किन्स लिखता है कि—'डंडी के वह रफट्स में जिनहोंने पूर्वी बंगाल में सन के कारबार को इतना बढ़ाया, लंका शायर और यार्क

कर दिया. इन रियासतों की वजह से अठिया और पाकिस्तान की लड़ाई और भी टिकाऊ रहेगी और तारीक यह कि किसी रियासत पर भी अठिया या पाकिस्तान का न कब्जा होगा, न पूरा खोर चलेगा.

अंगरेजी चालें और छूट—

हिन्दुस्तान पर अंग्लिस्तान की حکومت के खास पलु छे त्हे (१) यूकरोल में और फुज में अंगरेज. (२) हिन्दुस्तान और अंग्लिस्तान की तजारत में अंगरेजों का हिस्सा (३) हिन्दुस्तान में लगी हुई अंगरेजों की पूजा (४) हिन्दुस्तान का यह कर्ज कि लड़ाई छिड़ने पर इंगलिस्तान को आदमियों, सामान और रुपए से मदद दे. (५) बह माली टकसाली ढाँचा जिसे स्टरलिंग ब्लाक कहते है (६) हिन्दुस्तान में और देसी रियासतों में हिन्दुस्तानी व्यापार के साथ

मिल कर और उस की अउर में ब्रिश् वियापार. इन सब बातों में अंगरेजों का पंजा इस मुल्क पर ढोला नहीं हुआ बल्कि और ज्यादा कस गया है. सिर्फ नौकरियों में कुछ अंगरेज घटे हैं. पहले दस फीसदी थे अब छे और सात फीसदी के बीच में हैं. उसा के मुक्तावले में इंगलिस्तान ने अपना माली और तजारती पंजा और ज्यादा मजबूती के साथ कस लिया. हमारे कुल व्यापार में आज नब्बे फीसदी से ऊपर हिस्सा इंगलिस्तान का है.

शायर के बहू लोग जिन्होंने बम्बई, अहमदाबाद और कानपुर का मिले खड़ा की, साउथ वेल्स के बहू लोग जिन्होंने टाटा के लोहे के कारखाने चलबाए, बहू अंगरेज जिन्होंने आसाम का दुनिया के लिये चाय का बारीचा बनाया—सब न सिर्फ अपनी जगह बाकी हो हैं बल्कि इंडिया और पाकिस्तान दोनों पर अपना कब्जा ज्यादा मजबूती से जमाए हुए हैं. कुछ छोटे छोटे व्यापारी साहबों ने अपना कारबार बेच दिया है. बहू इसलिये कि जिन हिन्दुस्तानी साहकारों ने लड़ाई में खूब रुपया कमाया था उन्होंने अंधे हो कर इन्हें खूब मुँह प्राँगे दाम दिये. हिन्दुस्तान के पहाड़ी शहरों में एक अङ्गरेज के तीन छोटे छोटे होटल थे. उन्हें बेच कर उसने बोनमाउथ में एक बहुत बड़ा रेस्टोरँ खरीद लिया है.....

.....एक सन के कारखाने के अङ्गरेज मैनेजर साहब खूब रुपया कमा कर अपने घर डंडा लौट गए. एक एकाउन्टेन्ट कल-कल से बरसिमवम चला गया. यह छोटी छोटी चीजें हैं. इतका मतलब अङ्गरेजों का चला आना नहीं है. हिन्दुस्तान हमारे लिये अब भी वैसा ही भरा पूरा और मालामाल भंडार है जैसा पहले था. बड़ा व्यापारी साहब वहाँ से नहीं सरका, न सरकेगा. कहीं कहीं बहू अपना काम और बढ़ा रहा है. बम्बई में जितने अङ्गरेज अब हैं उतने पहले कभी नहीं थे.”

वहीं अंगरेज लिखता है कि—“एक अंगरेज पादरी कहता था कि हम हिन्दुस्तान में रहेंगे जब तक कि हमें कोई धक्के देकर न निकाल दें.....जब से कैबिनेट मिशन आया है तब से लोगों की दोस्ती हम से बढ़ गई है. हिन्दुस्तानियों के खयाल में

शायरों के वे लोग जिनमें ने कबी, अहमदाबाद और कानपुर की लीज कहर की हैं, साउथ वेल्स के वे लोग जिनमें ने टाटा के लोहे के कारखाने चलाए, वे अंगरेज जिनमें ने आसाम को खाना के लिये चाय का बारीचा बनाया—सब न सिर्फ अपनी जगह बाकी हैं बल्कि अहमदाबाद और कानपुर पर अपना कब्जा ज्यादा मजबूती से जमाए हुए हैं. कुछ छोटे छोटे व्यापारी साहबों ने अपना कारबार बेच दिया है. बहू इसलिये कि जिन हिन्दुस्तानी साहकारों ने लड़ाई में खूब रुपया कमाया था उन्होंने अंधे हो कर इन्हें खूब मुँह प्राँगे दाम दिये.....

.....एक सन के कारखाने के अंगरेज मैनेजर साहब खूब रुपया कमा कर अपने घर डंडा लौट गए. एक एकाउन्टेन्ट कल-कल से बरसिमवम चला गया. यह छोटी छोटी चीजें हैं. इतका मतलब अङ्गरेजों का चला आना नहीं है. हिन्दुस्तान हमारे लिये अब भी वैसा ही भरा पूरा और मालामाल भंडार है जैसा पहले था. बड़ा व्यापारी साहब वहाँ से नहीं सरका, न सरकेगा. कहीं कहीं बहू अपना काम और बढ़ा रहा है. बम्बई में जितने अङ्गरेज अब हैं उतने पहले कभी नहीं थे.”

वहीं अंगरेज लिखता है कि—“एक अंगरेज पादरी कहता था कि हम हिन्दुस्तान में रहेंगे जब तक कि हमें कोई धक्के देकर न निकाल दें.....जब से कैबिनेट मिशन आया है तब से लोगों की दोस्ती हम से बढ़ गई है. हिन्दुस्तानियों के खयाल में

इन्डियन गवर्मेन्ट पर असर रखते हैं, हिन्दुस्तान की कौमी दौलत इस वक्त इनके थोड़े से जत्थों के हाथों में हैसिर्फ अमरीका ही एक ऐसा देश है जो हिन्दुस्तान में रुपया लगा सकता है, अमरीका के व्यापारियों और हिन्दुस्तान के इन बड़े बड़े व्यापारियों ने मिलकर हिन्दुस्तान के अन्दर कारखाने चलाने और अमरीका के बने हुए माल की बिक्री का हिन्दुस्तान में ठीक ठीक इन्तजाम करने के लिये बराबर साज बाज हो रही है."

श्री अरुन बोसने "इन्डो ब्रिटिश विग बिजनेस डीलम" नाम की किताब में जो इसी साल पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस बम्बई से निकली है (कीमत चौदह आने) अच्छी तरह दिखलाया है कि हिन्दुस्तान के बड़े व्यापारियों के जरिये अंगरेज व्यापारी किस तरह हिन्दुस्तान को लूटने को तरकोब कर रहे हैं. हिन्दुस्तान के यह बड़े व्यापारी जो इंगलिस्तान और अमरीका के व्यापारियों को इस देश के लूटने में दिल खोल कर मदद दे रहे हैं, ज्यादा कहाँ रहते हैं, इन्डिया में या पाकिस्तान में ? इन्डिया में अभी तक एक हजार तीन सौ अरसठ बड़े बड़े कल कारखाने हैं, पाकिस्तान में तैतालीस. इन्डिया में कुल व्यापारी आमदनी एक सौ चौरानवे करोड़ रुपए सालाना है. पाकिस्तान में इक्कीस करोड़ रुपए सालाना. यानी इस देश के ज्यादातर बड़े बड़े व्यापारी इन्डिया में रहते हैं और देश भक्त बने हुए हैं.

रूस और ऐङ्गलो अमरीका—

वर्तानिया और अमरीका मिलकर जरमनी को फिरसे इसके लिये तय्यार कर रहे हैं कि उसकी मदद से यूर्षी योस के मुल्कों से

नया हिन्द
अर्थीन गवर्मेन्ट पर असर रखते हैं. हिन्दुस्तान की कौमी दौलत इस वक्त इनके थोड़े से जत्थों के हाथों में हैसिर्फ अमरीका ही एक ऐसा देश है जो हिन्दुस्तान में रुपया लगा सकता है, अमरीका के व्यापारियों और हिन्दुस्तान के इन बड़े बड़े व्यापारियों ने मिलकर हिन्दुस्तान के अन्दर कारखाने चलाने और अमरीका के बने हुए माल की बिक्री का हिन्दुस्तान में ठीक ठीक इन्तजाम करने के लिये बराबर साज बाज हो रही है."

श्री अरुन बोसने "इन्डो ब्रिटिश विग बिजनेस डीलम" नाम की किताब में जो इसी साल पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस बम्बई से निकली है (कीमत चौदह आने) अच्छी तरह दिखलाया है कि हिन्दुस्तान के बड़े व्यापारियों के जरिये अंगरेज व्यापारी किस तरह हिन्दुस्तान को लूटने को तरकोब कर रहे हैं. हिन्दुस्तान के यह बड़े व्यापारी जो इंगलिस्तान और अमरीका के व्यापारियों को इस देश के लूटने में दिल खोल कर मदद दे रहे हैं, ज्यादा कहाँ रहते हैं, इन्डिया में या पाकिस्तान में ? इन्डिया में अभी तक एक हजार तीन सौ अरसठ बड़े बड़े कल कारखाने हैं, पाकिस्तान में तैतालीस. इन्डिया में कुल व्यापारी आमदनी एक सौ चौरानवे करोड़ रुपए सालाना है. पाकिस्तान में इक्कीस करोड़ रुपए सालाना. यानी इस देश के ज्यादातर बड़े बड़े व्यापारी इन्डिया में रहते हैं और देश भक्त बने हुए हैं.

रूस और अइङ्ग्लो अमरीका
वर्तानिया और अमरीका मिलकर जरमनी को फिरसे इसके लिये तय्यार कर रहे हैं कि उसकी मदद से यूर्षी योस के मुल्कों से

वर्तानिया और अमरीका मिलकर जरमनी को फिरसे इसके लिये तय्यार कर रहे हैं कि उसकी मदद से यूर्षी योस के मुल्कों से

और फिर रूस से लड़ सकें और उन्हें हरा सकें. सन् १९४२ से १९४५ तक तीन बरस अंगरेजों और अमरीका वालों ने जर्मनी के बड़े बड़े जंगों कल कारखानों पर खूब बम बरसाए. उसके बाद सन् ४५ के शुरु में जब अमरीका को फौजें जर्मनी में घुसीं तो वह यह देखकर दंग रह गई कि जर्मनी के वह सब बड़े बड़े कारखाने जिनमें तरह तरह का लड़ाई का सामान बनता था बिल्कुल अछूते बचे हुए थे. उन्हें जरा भी नुकसान नहीं पहुँचा था. इन सब कारखानों को फहरिस्ते तक अमरीका के बड़े बड़े अखबारों में छपी थी. इन अखबारों के तुमाइन्दों ने जाकर अपनी आँखों से इन जर्मन कारखानों का धड़ाधड़ बंदूकें, तोपें, बम और तरह तरह का सामान ढालते हुए देखा था.

इसकी वजह क्या थी कि अंगरेजी हवाई जहाजों ने निहत्थी जर्मन आवाइयों पर तो खूब बम बरसाए और उन्हें तबाह कर दिया. पर इन कारखानों को अछूता छोड़ दिया. वजह यह थी कि इन जर्मन कारखानों के अंदर खुद इंग्लैन्ड और अमरीका के बड़े बड़े साहूकारों की अरबों और खरबों की पूंजी लगी हुई थी. हवाई जहाजों से कह दिया गया था कि इन्हें हाथ न लगावें. इस तरह इजलिस्तान और अमरीका के बड़े बड़े अरबपति एक तरफ तो अपनी सरकारों को हथियार पहुँचा रहे थे जिनसे वह जर्मनों को मार सकें. और दूसरी तरफ जर्मनों को हथियार मुहय्या कर रहे थे जिनसे वह अंगरेजों, अमरीका वालों, रूसियों और दूसरों को मिटा सकें, और दोनों तरफ से धन कमा कर अपनी जेबें भर रहे थे.

और फिर दोन से लड़सकिये और अखिये हरासकिये सन् १९४७ से १९४७ तक तीन बरस अंगरिजदल और अमरिका दालन ने जर्मनी के बुरे बुरे जन्गल कल कारखानों पर खूब बम बरसाये अस के बाद सन् ४५ के शुरु मे मी जर्मिब अमरिका की फुजेन जर्मनी मी कखिये तु दे ये दिखकर डंक रहे सकिये के मरिनी के दे सब बुरे बुरे कारखाने जिन मी तरह तरह का लडाई का सामान बना कथा अकल अछुते बचे हुये कथे. अखिये डरा कभी लखान न मीन कखिया कथा. इन सब कारखानों की फरिस्ते तक अमरिका के बुरे बुरे अखबारदल मी कखिये कथिये. इन अखबारदल के नाम अरबदल ने जाकर अती अखिये से इन जर्मन कारखानों को दम दम बन्द मीन 'तुमिये' सन् ४७ के अरुद तरह तरह का सामान डुवालते हुये दिखकर कथा.

इस की वजह क्या कथी के अंगरिजी हुवायी जहाजदल ने नमती मीन आदलिये मी तु खूब बम बरसाये और अखिये तबाह कर दिया. पर इन कारखानों को अछुता दिखकर देया वजह ये कथी के इन जर्मन कारखानों के अरुद खुद अंगलैन्ड और अमरिका के बुरे बुरे साहकारदल की अरुलु और कखिये की युजेनी कली हुवायी कथी हुवायी मरानुल से के दिखगिया कथा के अखिये हाथ न लकाविये इन तरह अंगलैस्तान और अमरिका के बुरे बुरे अरबपती अकल कल तुवायी मरकादल को अखियार बिजारप कथे जिन से दे जर्मनुल को मारसकिये, और दुदुसरी कलफ जर्मनुल को अखियार मरिया करप कथे जिन से दे अंगरिजदल 'अमरिका दालन', रुसियुल और दुदुसरोल को मरियासकिये, और दुवुल कलफ से दमन कमा कर अती जमिये कखरप कथे.

अमरीका में एक सोसाइटी है जिसका नाम है 'सोसाइटी फार दि प्रोबेन्शन आफ वर्ल्ड वार थ्री' यानी आने वाले तीसरे महायुद्ध का रोकने के लिये सोसाइटी। इसका दफ्तर न्यूयार्क शहर में है। इस सोसाइटी ने हाल में ऐसे बड़े बड़े जर्मन खरबपतियों, जर्मनों और राजकाजियों की एक लम्बी फहरिस्त ज्वापी है जिन्होंने पिछली जंग में अँग्रेजों और अमरीका के खिलाफ खास हिस्सा लिया था और जो अब जर्मनी के उन दोनों टुकड़ों में जो इंग्लैण्ड और अमरीका के कब्जे में हैं बड़े बड़े ओहदों पर हैं। इनमें एक साहब डा० अर्नस्ट पेन्सगेन वह है जो सारा दुनिया को बर्तानिया और जर्मनों इन दोनों के बीच बाँट देने का तजवीज कर रहे थे। एक साहब राबट फर्डिमेंगोज है जो जर्मनी के सबसे बड़े सरमाणद्वार माने जाते थे। एक साहब हर मान एक्स है जो बर्लिन के रुसियों के हाथ में आने से ठाक दो दिन पहले सात हजार अरब राइल मार्क (जर्मन सिक्का बराबर चारह आने) नक़द लिये हुए अँग्रेजी फौज के बाच से अछूते निकाल दिये गए थे। इस वक़्त वह जर्मनी के अँग्रेजी टुकड़े में अँग्रेजों के सब से बड़े माली सलाहकार बने हुए हैं।

यह लोग हैं जिनके साथ मिल कर इंग्लैण्ड और अमरीका के बड़े बड़े पूँजीपति हिन्दुस्तान के बड़े बड़े साहूकारों को अपने साथ मिलाए हुए आज रूस को मिटाने और दुनिया को तबाह करने की बड़ी बड़ी तरकाजें कर रहे हैं।

अमरीका में एक सोसाइटी हो जिस का नाम हो 'सोसाइटी फार दि प्रोबेन्शन ऑफ वर्ल्ड वार थ्री' यानी आने वाले तीसरे महायुद्ध को रोकने के लिये सोसाइटी। इसका दफ्तर न्यूयार्क शहर में है। इस सोसाइटी ने हाल में ऐसे बड़े बड़े जर्मन खरबपतियों, जर्मनों और राजकाजियों की एक लम्बी फहरिस्त ज्वापी है जिन्होंने पिछली जंग में अँग्रेजों और अमरीका के खिलाफ खास हिस्सा लिया क्ता जो अब जर्मनी के उन दोनों टुकड़ों में जो इंग्लैण्ड और अमरीका के कब्जे में हैं बड़े बड़े ओहदों पर हैं। इनमें एक साहब डा० अर्नस्ट पेन्सगेन वह है जो सारा दुनिया को बर्तानिया और जर्मनों इन दोनों के बीच बाँट देने के लिये अँग्रेजों के हाथ में आने से ठाक दो दिन पहले सात हजार अरब राइल मार्क (जर्मन सिक्का बराबर चारह आने) नक़द लिये हुए अँग्रेजी फौज के बाच से अछूते निकाल दिये गए थे। इस वक़्त वह जर्मनी के अँग्रेजी टुकड़े में अँग्रेजों के सब से बड़े माली सलाहकार बने हुए हैं।

यह लोग हैं जिनके साथ मिल कर इंग्लैण्ड और अमरीका के बड़े बड़े पूँजीपति हिन्दुस्तान के बड़े बड़े साहूकारों को अपने साथ मिलाए हुए आज रूस को तबाह करने की बड़ी बड़ी

कुछ किताबें

विश्व का राजनैतिक भविष्य— लिखने वाले पंडित कृष्ण-कान्त मालवीय, सन् १९६०, कीमत दो रुपए, लिखावट नागरी, पता—अभ्युदय प्रेस, प्रयाग.

यह किताब अभ्युदय में छपे हुए सन् १९१९ से सन् १९३७ तक के स्वर्गीय पंडित कृष्ण कान्त मालवीय के कुछ राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय लेखों का एक ज्ञानमत्ता भंडार है. किताब को पढ़ने से मालूम होता है कि स्वर्गीय पंडित कृष्णकान्त मालवीय सचमुच एक ऊँचे दर्जे के विद्वान और हिन्दुस्तानी देशभक्त थे, राजनीति के एक पहुँचे हुए पंडित थे और राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मामलों की ठोस जानकारों रखने वाले एक दूरदेश थे.

किताब में जगह जगह स्वर्गीय पंडित जी की पेशानगोइयाँ हैं जो सभी अब तक सच साबित हो चुकी हैं. पिछले महायुद्ध के शुरू होने के बीस साल पहले ही पंडित जी ने उसकी पेशानगोई कर रखी थी और वह सचमुच दुनिया की आँखों के सामने आया. इस महायुद्ध के बारे में पंडित जी के कई लेख हैं जो ध्यान से पढ़ने लायक हैं.

नैपोलियन से लेकर हिटलर के समय तक के योरप की तारीख का इस किताब में सियासो निचोड़ दिया हुआ है. सन् १९१४ की जंग के रहस्य, उसके कारन, उसके मतसद और जर्मनी के फिर से तरक्की करने के बारे में भी काफी अच्छा तरह समझाया गया

कौटुम्बिक किताबें
 शत्रु का राज निष्ठा बहोश— लिखने वाले पंडित कृष्ण-कान्त मालवीय, सन् १९५५, कीमत दो रुपए, लिखावट नागरी, पता—

अबुदुस प्रेस, ब्रिगाद.
 किताब अबुदुस में छपे हुए सन् १९१९ से १९३७ तक के स्वर्गीय पंडित कृष्ण कान्त मालवीय के कुछ राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय लेखों का एक ज्ञानमत्ता भंडार है. किताब को पढ़ने से मालूम होता है कि स्वर्गीय पंडित कृष्णकान्त मालवीय सचमुच एक ऊँचे दर्जे के विद्वान और हिन्दुस्तानी देशभक्त थे, राजनीति के एक पहुँचे हुए पंडित थे और राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मामलों की ठोस जानकारों रखने वाले एक दूरदेश थे.

किताब में जगह जगह स्वर्गीय पंडित जी की पेशानगोइयाँ हैं जो सभी अब तक सच साबित हो चुकी हैं. पिछले महायुद्ध के शुरू होने के बीस साल पहले ही पंडित जी ने उसकी पेशानगोई कर रखी थी और वह सचमुच दुनिया की आँखों के सामने आया. इस महायुद्ध के बारे में पंडित जी के कई लेख हैं जो ध्यान से पढ़ने लायक हैं.

नैपोलियन से लेकर हिटलर के समय तक के योरप की तारीख का इस किताब में सियासो निचोड़ दिया हुआ है. सन् १९१४ की जंग के रहस्य, उसके कारन, उसके मतसद और जर्मनी के फिर से तरक्की करने के बारे में भी काफी अच्छी तरह समझाया गया

है, जगह जगह पर यह बताया गया है कि भारतीयों का कर्त्तव्य क्या है और हम कैसे आजाद हो सकते हैं, आखिरी अध्याय 'मिनिस्ट्री' में सन् १९३७ से १९४२ तक के जमाने के बारे में पंडित जी की पेशानगोई सचयुच गौर करने लायक है.

सभी लेख ऊँचे दर्जे के हैं, गहरे विचारों से भरे हैं और अन्तर्राष्ट्रीय ज्ञान को ऊँचा उठाने वाले हैं, यह किताब हमारे लिये लेखक की एक क्रीमती देन है.

—गणेश प्रसाद

ए. सुसलिम भाई—लिखने वाले श्री काशीराम चावला, सन् २७२, क्रीमत डेढ़ रूपण, लिखावट उरद, पता—श्री काशीराम चावला, सिविल लाइन्स, लुधियाना.

इस किताब के लिखने वाले श्री काशीराम जी चावला एक मशहूर लेखक हैं, यह किताब खास कर इसलाम धर्म के बारे में है, पहले क़रीब सौ सत्रों में कुछ सवाल जवाब हैं जो लेखक और कुछ और लोगों के बीच हुए हैं.

किताब २६ अध्यायों में बटी है, "ए हिन्दू भाई" नाम के अध्याय में लेखक ने हिन्दुओं को इसलाम धर्म की अच्छाइयों समझाई हैं और हिन्दुओं को अपनी कमजोरी दूर करने के कुछ तराँके बताए हैं, "इसलाम क्या है" में समझाया है कि किस तरह खुदा तक पहुँचा जा सकता है, "इसलाम का जहर क्यों हुआ" में बताया है कि दुनिया में पापियों की तादाद बढ़ जाने से एक ऐसे मशहब की जरूरत पड़ी जो अमन और शानि फैलाए

न्यास

५७. **जगह जगह** पर यह बताया गया है कि भारतीयों का कर्त्तव्य क्या है और हम कैसे आजाद हो सकते हैं, आखिरी अध्याय 'मिनिस्ट्री' में सन् १९३७ से १९४२ तक के जमाने के बारे में पंडित जी की पेशानगोई सचयुच गौर करने लायक है.

किसी लिखे देखने दबे के हैं, गहरे विचारों से भरे हैं और अन्तर्राष्ट्रीय ज्ञान को ऊँचा उठाने वाले हैं, यह किताब हमारे लिये लेखक की एक क्रीमती देन है.

—गणेश प्रसाद

ए. सुसलिम भाई—लिखने वाले श्री काशीराम चावला, सन् २७२, क्रीमत डेढ़ रूपण, लिखावट उरद, पता—श्री काशीराम चावला, सिविल लाइन्स, लुधियाना.

इस किताब के लिखने वाले श्री काशीराम जी चावला एक लिखक हैं, यह किताब खास कर इसलाम धर्म के बारे में है, पहले क़रीब सौ सत्रों में कुछ सवाल जवाब हैं जो लिखक और पढ़ने वालों के बीच हुए हैं.

किताब २६ अध्यायों में बटी है, "ए हिन्दू भाई" नाम के अध्याय में लेखक ने हिन्दुओं को इसलाम धर्म की अच्छाइयों समझाई हैं और हिन्दुओं को अपनी कमजोरी दूर करने के कुछ तराँके बताए हैं, "इसलाम क्या है" में समझाया है कि किस तरह खुदा तक पहुँचा जा सकता है, "इसलाम का जहर क्यों हुआ" में बताया है कि दुनिया में पापियों की तादाद बढ़ जाने से एक ऐसे मशहब की जरूरत पड़ी जो अमन और शानि फैलाए

से अमन और शानि फैलाए

से कोशिश कर रहे थे. उस जमाने से मौजूदा जमाने तक का मुसलमानों की सियास्त का नखर में रखते हुए लेखक ने हमें बहुत कुछ बातें बताई हैं जिनका हम आज कल भूल रहे हैं और जिनकी हमें इस समय खास जरूरत है. इसमें मुसलमानों की तमाम सियासी तहरोंकें, बाकाए और हाल सिलसिलेवार दिये गए हैं. और यह खास तौर से बताया गया है कि मुसलमानों की सबसे पहली सियासी पार्टी 'मुस्लिम लीग' किन हालतों में कायम हुई और जमाने के साथ साथ इसकी नीति किस तरह बदलती रही. कुछ खास बाक्यों को खूब अच्छी तरह समझाया गया है जैसे—क्रिपस मिशन, १९४४ की गौर्धा-अन्ना मुलाकात, शिमला कान्फरेन्स वगैरा. 'पाकिस्तान' जैसे बड़े मसले का लेखक ने अच्छी तरह समझाने की कोशिश की है और तमाम बड़े बड़े लीडरों की रायें देकर सब बातों का समझने के लिये पूरी सहूलियत पैदा की है.

किताब पढ़ने से मालूम होता है कि किस तरह सन् १८८५ में इन्डियन नेशनल काँग्रेस कायम हुई और उसके पहले प्रेसिडेन्ट मिस्टर डलहीजी वॉन्ट हुए. किस तरह उस समय के अलौगढ़ यूनिवर्सिटी के प्रिन्सिपल मि० वेक ने सर सैय्यद अहमद खाँ साहब को भड़का कर काँग्रेस के खिलाफ आवाज बुलन्द करवाई और मुसलमानों की पहली जमात 'इन्डियन पैट्रिआटिक-एसोसिएशन' सर सैय्यद अहमद खाँ को देख रख में कायम हुई. कैसे सन् १९०५ में लार्ड कर्जन ने बंगाल को तर्कसीम करने का भगड़ा शुरू किया. कैसे १९०६ में मुसलिम लीग और हिन्दू महासभा की

से कोशिश कर रहे थे. इस जमाने से موجودे जमाने तक की मुसलमानों की सियास्त को देखते रहते रहते लिखक ने हमें बहुत बातें बताई हैं जिन को हम आज कल भूल रहे हैं और जिन की हमें इस समय खास जरूरत है. इसमें मुसलमानों की तमाम सियासी तहरोंकें, बाकाए और हाल सिले वार दिये गए हैं. और ये खास तौर से बताया गया है कि मुसलमानों की सब से पहली सियासी पार्टी 'मुस्लिम लीग' किन हालतों में कायम हुई और जमाने के साथ साथ इसकी नीति किस तरह बदलती रही. कुछ खास बाक्यों को खूब अच्छी तरह समझाया गया है जैसे—क्रिपस मिशन, १९४४ की गौर्धा-अन्ना मुलाकात, शिमला कान्फरेन्स वगैरा. 'पाकिस्तान' जैसे बड़े मसले को लिखक ने अच्छी तरह समझाने की कोशिश की है और तमाम बड़े बड़े लीडरों की रायें देकर सब बातों को समझने के लिये पूरी सहूलियत पैदा की है.

किताब पढ़ने से मालूम होता है कि किस तरह सन् १८८५ में इन्डियन नेशनल काँग्रेस कायम हुई और उसके पहले प्रेसिडेन्ट मिस्टर डलहीजी वॉन्ट हुए. किस तरह उस समय के अलौगढ़ यूनिवर्सिटी के प्रिन्सिपल मिस्टर वेक ने सर सैय्यद अहमद खाँ साहब को भड़का कर काँग्रेस के खिलाफ आवाज बुलन्द करवाई और मुसलमानों की पहली जमात 'इन्डियन पैट्रिआटिक-एसोसिएशन' सर सैय्यद अहमद खाँ को देख रख में कायम हुई. कैसे सन् १९०५ में लार्ड कर्जन ने बंगाल को तर्कसीम करने का भगड़ा शुरू किया. कैसे १९०६ में मुसलिम लीग और हिन्दू महासभा की

बुनियाद पड़ी, किस तरह टरकी की हार के बाद इस्लामी दुनिया में एक हलचल मच गई और १९१९ में "खिलाफत कमिटी" कायम हुई जिसके आन्दोलन में हिन्दू-मुसलमान दोनों ने भाग लिया, कैसे १९२२ में चौरी चौरा का खून खराबा हुआ और उसी साल गाँधी जी को छै साल की कैद हुई, कैसे १९२६ में "जमीयत-उल-उलमा" कायम हुई और १९२७ में मुसलिम नेशनलिस्ट पार्टी का पहला जलसा इलाहाबाद में मौलाना आजाद की सदारत में हुआ और इसी के बाद मुसलमानों की कई और पार्टियाँ कायम हुईं जैसे मजलिसे अहरार, खुदाई खिदमतगार, शिया पार्टी वगैरा, कैसे १९४० में लाहौर में मि० जिन्नाह की सदारत में "पाकिस्तान" की पैदाइश हुई, वगैरा वगैरा.

आखरी अध्याय "हासिल कलाम" में सारी किताब का खुलासा दे दिया गया है जिसके पढ़ लेने से हमें पूरी किताब के बारे में बहुत कुछ मालूम हो जाता है. मुसलिम सियासत के बारे में जानकारी पैदा करने के लिये यह किताब बहुत अच्छी है.

—गणेश प्रसाद

दुबेर शस्त्र
कच्चे की हैं

न्यासन्द

बुनियाद पड़ी, किस तरह टरकी की हार के बाद इस्लामी दुनिया में एक हलचल मच गई और १९१९ में "खिलाफत कमिटी" कायम हुई, कैसे १९२२ में चौरी चौरा का खून खराबा हुआ और उसी साल गाँधी जी को कैद किया गया, कैसे १९२६ में "जमीयत अलमा" कायम हुई और १९२७ में मुसलिम नेशनलिस्ट पार्टी का पहला जलसा इलाहाबाद में मौलाना आजाद की सदारत में हुआ और उसी के बाद मुसलमानों की कई और पार्टियाँ कायम हुईं जैसे मजलिसे अहरार, खुदाई खिदमतगार, शिया पार्टी वगैरा, कैसे १९४० में लाहौर में मि० जिन्नाह की सदारत में "पाकिस्तान" की पैदाइश हुई, वगैरा वगैरा.

आखरी अध्याय "हासिल कलाम" में सारी किताब का خلاصा दे दिया गया है जिसके पढ़ लेने से हमें पूरी किताब के बारे में बहुत कुछ मालूम हो जाता है. मुसलिम सियासत के बारे में जानकारी पैदा करने के लिये यह किताब बहुत अच्छी है.

—गणेश प्रसाद

ہماری رائے

ایک اوتار اور چاہئے۔

تجائی آتما کی ایک صفت ہو۔ وہ سب میں ہمیشہ سے ہو اور

ہمیشہ رہے گی۔ جیسے چرخ کی نوک کے چاروں طرف طرح طرح کی چینیوں

کی مدد سے روشنی کم زیادہ ہو جاتی ہو ویسے ہی آتما کی صفت تجائی

میں بھی کمی بیشی ہوتی رہتی رہتی رہتی رہتی رہتی رہتی رہتی رہتی رہتی رہتی

ہے باہر باہری دنیا میں رہتی ہیں آدمی انہیں دہوں سے اپنی

آتما کو مانج کر تجائی کو چمکاتا ہے۔ تجائی کے ساتھ ساتھ سب سے

میل محبت نام کی صفت بھی چمک اٹھتی ہے جس کو کتابوں میں

پتھیم یا عشق کے نام سے لکھا گیا ہے اور جس کو غلط ما

اہنسا نام بھی دے دیا گیا ہے۔ اور پھر اس اہنسا کے کام

چرانے کے لئے کہتے ہی درجے بنا دئے گئے ہیں۔ ہم یہ بال

کی کھال کھینچ کر صرف اتنا ہی کہنا چاہتے ہیں کہ ستیہ اور

اہنسا یہ آتما کے اپنے گن ہیں اور انہیں دو پیرائوں

میں یا انہیں دو آدمیوں میں ایک سے نہیں پائے جاسکتے۔ یہ

کسی دھرم کے اصول بن سکتے ہیں کسی دھرم کی جان بن سکتے

ہیں یا پھر ایک ہی شکل میں عمل میں نہ لائے جانے کی وجہ سے

کسی دھرم کا دیوا ہر نہیں بن سکتے اور ایسی وجہ سے کسی

دھرم کے سنگٹھن کا جسم نہیں بن سکتے۔ جان جسم ہو رہی

نہیں سکتی۔ یہی وجہ ہے کہ آتما کا جھنڈا ہاتھ میں لے کر

ہماری رائے

— ایک آتما کی ایک صفت ہو۔ وہ سب میں ہمیشہ سے ہو اور

ہمیشہ رہے گی۔ جیسے چرخ کی نوک کے چاروں طرف طرح طرح کی چینیوں

کی مدد سے روشنی کم زیادہ ہو جاتی ہو ویسے ہی آتما کی صفت تجائی

میں بھی کمی بیشی ہوتی رہتی رہتی رہتی رہتی رہتی رہتی رہتی رہتی رہتی

ہے باہر باہری دنیا میں رہتی ہیں آدمی انہیں دہوں سے اپنی

آتما کو مانج کر تجائی کو چمکاتا ہے۔ تجائی کے ساتھ ساتھ سب سے

میل محبت نام کی صفت بھی چمک اٹھتی ہے جس کو کتابوں میں

پتھیم یا عشق کے نام سے لکھا گیا ہے اور جس کو غلط ما

اہنسا نام بھی دے دیا گیا ہے۔ اور پھر اس اہنسا کے کام

چرانے کے لئے کہتے ہی درجے بنا دئے گئے ہیں۔ ہم یہ بال

کی کھال کھینچ کر صرف اتنا ہی کہنا چاہتے ہیں کہ ستیہ اور

اہنسا یہ آتما کے اپنے گن ہیں اور انہیں دو پیرائوں

میں یا انہیں دو آدمیوں میں ایک سے نہیں پائے جاسکتے۔ یہ

کسی دھرم کے اصول بن سکتے ہیں کسی دھرم کی جان بن سکتے

ہیں یا پھر ایک ہی شکل میں عمل میں نہ لائے جانے کی وجہ سے

کسی دھرم کا دیوا ہر نہیں بن سکتے اور ایسی وجہ سے کسی

دھرم کے سنگٹھن کا جسم نہیں بن سکتے۔ جان جسم ہو رہی

ہماری رائے

— ایک آتما کی ایک صفت ہو۔ وہ سب میں ہمیشہ سے ہو اور

ہمیشہ رہے گی۔ جیسے چرخ کی نوک کے چاروں طرف طرح طرح کی چینیوں

کی مدد سے روشنی کم زیادہ ہو جاتی ہو ویسے ہی آتما کی صفت تجائی

میں بھی کمی بیشی ہوتی رہتی رہتی رہتی رہتی رہتی رہتی رہتی رہتی رہتی

ہے باہر باہری دنیا میں رہتی ہیں آدمی انہیں دہوں سے اپنی

آتما کو مانج کر تجائی کو چمکاتا ہے۔ تجائی کے ساتھ ساتھ سب سے

میل محبت نام کی صفت بھی چمک اٹھتی ہے جس کو کتابوں میں

پتھیم یا عشق کے نام سے لکھا گیا ہے اور جس کو غلط ما

اہنسا نام بھی دے دیا گیا ہے۔ اور پھر اس اہنسا کے کام

چرانے کے لئے کہتے ہی درجے بنا دئے گئے ہیں۔ ہم یہ بال

کی کھال کھینچ کر صرف اتنا ہی کہنا چاہتے ہیں کہ ستیہ اور

اہنسا یہ آتما کے اپنے گن ہیں اور انہیں دو پیرائوں

میں یا انہیں دو آدمیوں میں ایک سے نہیں پائے جاسکتے۔ یہ

کسی دھرم کے اصول بن سکتے ہیں کسی دھرم کی جان بن سکتے

ہیں یا پھر ایک ہی شکل میں عمل میں نہ لائے جانے کی وجہ سے

کسی دھرم کا دیوا ہر نہیں بن سکتے اور ایسی وجہ سے کسی

دھرم کے سنگٹھن کا جسم نہیں بن سکتے۔ جان جسم ہو رہی

या सचाई के कंडे के नीचे खड़े होकर बनी जमातें या जुटे दल आपस में ही लड़ने लगते हैं और भूट बोलने लगते हैं. इसलिये सचाई और अहिंसा न बड़ी बड़ी लड़ाइयों को रोक सकती है और न घर में आपस में लड़ने वालों में सुलह करा सकती है. अभी दुनिया को ऐसे अवतार की जरूरत है जो धर्म के नाम पर बने संगठनों का जी जान से दुश्मन हो. पर उसे दुनिया का हर एक आदमी और हर एक प्राणी प्रान से प्यारा हो. सचाई और अहिंसा के सिलसिले की वह अवतार आखरी कड़ी होगा. वहाँ अवतार सारी दुनिया में एक राज की स्थापना कर सकेगा. एक राज की स्थापना के माने हैं किसी राज का न रहना और सारी दुनिया में सच्चे भाई चारों का फैल जाना. सचाई और अहिंसा से कहीं ज्यादा भूट और हिंसा हमारे लन में जगह पा गए हैं. जमा तो हम सचाई और अहिंसा की बातें लड़ाई के बोल काम में लाकर करते हैं. 'कीलाद की तलवार' लड़ाई का बोल है इस लिये सचाई का तलवार भी लड़ाई का बोल हुआ. सचाई की तलवार न धर्म का बोल है न सचाई का बोल. पर धमबाले और सबे और सन्त और महन्त और महात्मा और परमात्मा नामधारी 'सचाई की तलवार' बोल से काम लेते रहे हैं, ले रहे हैं और जब तक लेते रहेंगे सचाई की जीत न हो पाएगी. 'सचाई की जीत' खुद लड़ाई का बोल है. जीत, हार दोनों लड़ाई के लफ्ज हैं. 'सचाई का जीत' न कह कर कहना चाहिये 'सचाई की खेती की फूल फलन'. मतलब यह कि हम धर्म की बातों में भी लड़ाई की बातों की बोली ही काम में लाते रहते हैं. धर्म की खेती फले तो कैसे फले.

या सचाई के जेठे के नीचे कष्टों के बनी जायें या जेठे दिल आपस में ही लड़ने लगते हैं और भूट बोलने लगते हैं. इस लिये सचाई और अहिंसा न बड़ी बड़ी लड़ाइयों को रोक सकती है और न घर में आपस में लड़ने वालों में सुलह करा सकती है. अभी दुनिया को ऐसे अवतार की जरूरत है जो धर्म के नाम पर बने संगठनों का जी जान से दुश्मन हो. पर उसे दुनिया का हर एक आदमी और हर एक प्राणी प्रान से प्यारा हो. सचाई और अहिंसा के सिलसिले की वह अवतार आखरी कड़ी होगी. वहाँ अवतार सारी दुनिया में एक राज की स्थापना कर सकेगा. एक राज की स्थापना के माने हैं किसी राज का न रहना और सारी दुनिया में सच्चे भाई चारों का फैल जाना. सचाई और अहिंसा से कहीं ज्यादा भूट और हिंसा हमारे लन में जगह पा गए हैं. जमा तो हम सचाई और अहिंसा की बातें लड़ाई के बोल काम में लाकर करते हैं. जमा तो हम सचाई और अहिंसा की बातों में भी लड़ाई की बातों की बोली ही काम में लाते रहते हैं. धर्म की खेती फले तो कैसे फले.

दो लड़ने वाले चाहें फिर वह दो आदमी हों, दो दल हों या दो मुलक हों यही कहते हैं कि सचाई हमारी तरफ है, हमारी जीत होगी और इसी बुनियाद पर अपने साथियों को भड़काते रहते हैं, लड़ाते रहते हैं, लुटवाते रहते हैं और कटाते रहते हैं, जब दो तलवार लेकर खड़े हो गए तो सचाई दोनों तरफ से भाग गई, क्योंकि सचाई का दूसरा पहलू प्रेम है, सचाई और प्रेम एक सिक्के के दो पहलू हैं, वह अलग नहीं हो सकते, दो सच्चे आदमों कभी लड़ नहीं सकते और न दो प्रेमी दो सच्चे आदमी जब भी आमने सामने आवेंगे तो जिसकी सचाई जरा तेज होगी उसके सामने दूसरे का सचाई का पहलू अपने आप पीछे को हो जावेगा और प्रेम का पहलू सामने आ जावेगा, जैसे दो चुम्बक के उत्तरी हिस्से कभी सामने नहीं रह सकते, उनमें से कोई एक जरूर धूम जाता है, और यं दो सच्चे आदमियों में कभी लड़ाई नहीं हो पाती, कभी झड़प हो जाती है तो वह टिक नहीं पाती, होनी तो झड़प भी नहीं चाहिये पर जैसे दो चुम्बकों के उत्तरी हिस्से कोई मिला ही दे तो वह क्या करे? झड़प में भी उनकी वह चिमनी ही कारन होती है जो सचाई की असली चमक को छिपाए रखती है.

जब तक, धर्म जैसी ध्यारी चीज के नाम पर लड़ाई जैसे गन्दे काम के लिये जल्ये बनाने का रिवाज या संगठन खड़े करने का तरीका कोई अवतार इस दुनिया से नहीं उठा देता तब तक दुनिया से लड़ाई न उठेगी और न आपसी मारकाट ही खतम होगी, जैसे आपसी ध्यार मोह्वन्त पैदा करने के लिये रचनात्मक या तामीरी काम जरूरी है, वैसे ही संसार से लड़ाई उठ जाने

दो लड़ने वाले चाहे घेर दो आदमी हों दो दल हों या दो मुलक हों यही कहते हैं कि सचाई हमारी तरफ है, हमारी जीत होगी और इसी बुनियाद पर अपने साथियों को भड़काते रहते हैं, लड़ाते रहते हैं, लुटवाते रहते हैं और कटाते रहते हैं, जब दो तलवार लेकर खड़े हो गए तो सचाई दोनों तरफ से बहाक गयी, किन्तु सचाई का दूसरा पहलू प्रेम है, सचाई और प्रेम एक सिक्के के दो पहलू हैं, वे अलग नहीं हो सकते, दो सच्चे आदमी कभी लड़ नहीं सकते और न दो प्रेमी दो सच्चे आदमी जब भी आमने सामने आवेंगे तो जिसकी सचाई जरा तेज होगी उसके सामने दूसरे की सचाई का पहलू अपने आप पीछे को हो जावेगा और प्रेम का पहलू सामने आ जावेगा, जैसे दो चुम्बक के उत्तरी हिस्से कभी सामने नहीं रह सकते, उनमें से कोई एक जरूर धूम जाता है, और यं दो सच्चे आदमियों में कभी लड़ाई नहीं हो पाती, कभी झड़प हो जाती है तो वह टिक नहीं पाती, होनी तो झड़प भी नहीं चाहिये पर जैसे दो चुम्बकों के उत्तरी हिस्से कोई मिला ही दे तो वह क्या करे? झड़प में भी उनकी वह चिमनी ही कारन होती है जो सचाई की असली चमक को छिपाए रखती है.

जब तक, धर्म जैसी ध्यारी चीज के नाम पर लड़ाई जैसे गन्दे काम के लिये जल्ये बनाने का रिवाज या संगठन खड़े करने का तरीका कोई अवतार इस दुनिया से नहीं उठा देता तब तक दुनिया से लड़ाई न उठेगी और न आपसी मारकाट ही खतम होगी, जैसे आपसी ध्यार मोह्वन्त पैदा करने के लिये रचनात्मक या तामीरी काम जरूरी है, वैसे ही संसार से लड़ाई उठ जाने

के लिये सरकार का हर एक काम करना हर एक को आना जरूरी है. जैसे रचनात्मक काम का आदर्श है मिलों को समीपोज कर देना, शहरों को खत्म कर देना, सिक्के को काकूर बना देना, ऊंच नीच के जोड़े को न रहने देना वैसे ही हर आदमी को 'सरकार का काम करना' आजाने का आदर्श है संसार से सरकार को उठा देना. नौकरी को उड़ा देना. काम के बदले पैसे पाने के रिवाज को दुनिया में न रहने देना और काम के बदले तारीफ करने या सुनने की आदत को भरी आदत गंदी आदत समझना और तारीफ करने या सुनने के काम को पाप का काम समझना. काम के बदले काम रहेगा पर वह हमारे खून में रहेगा, मस्तक में नहीं रहेगा और मन में इच्छा के रूप में भी नहीं रहेगा. बात बड़ी मुशकिल है पर हम क्या करें. आदर्श होते ही ऐसे हैं. जितना आप लड़ाई से बचना चाहते हो उतना ही उस तरफ बढ़ते चलिये.

आज की मारकाट में देखने के लिये लीगियों की तरफ से भले ही पाकिस्तान को लेन हो और काँग्रेसियों की तरफ से भले ही पाकिस्तान को देन हो पर उसको जड़ में पाकिस्तान की लेन देन जैसी चीज हमें कहीं नहीं दिखाई देती. हमें उसकी जड़ में सारु दिखाई देती है वह अन्धधुन्द ताकतें जो जनता ने समझ कर या नासमझी से गवर्मेन्ट के हाथ में थमा दी हैं. नाज वोए तो सरकार, नाज कांटे तो सरकार, नाज बेचे तो सरकार, कपड़ा पहनाए तो सरकार यानी सब कुछ सरकार सरकार सरकार. जब तक यह ताकतें सरकार के हाथ से निकल कर जनता के हाथ में नहीं आती तब तक इस मारकाट को परमात्मा भी आकर नहीं रोक सकता.

काम के लिये सरकार का हर एक काम करना हर एक को आना जरूरी है. जैसे रचनात्मक काम का आदर्श है मिलों को समीपोज कर देना, शहरों को खत्म कर देना, सिक्के को काकूर बना देना, ऊंच नीच के जोड़े को न रहने देना वैसे ही हर आदमी को 'सरकार का काम करना' आजाने का आदर्श है संसार से सरकार को उठा देना. नौकरी को उड़ा देना. काम के बदले पैसे पाने के रिवाज को दुनिया में न रहने देना और काम के बदले तारीफ करने या सुनने की आदत को भरी आदत गंदी आदत समझना और तारीफ करने या सुनने के काम को पाप का काम समझना. काम के बदले काम रहेगा पर वह हमारे खून में रहेगा, मस्तक में नहीं रहेगा और मन में इच्छा के रूप में भी नहीं रहेगा. बात बड़ी मुशकिल है पर हम क्या करें. आदर्श होते ही ऐसे हैं. जितना आप लड़ाई से बचना चाहते हो उतना ही उस तरफ बढ़ते चलिये.

आज की मारकाट में देखने के लिये लीगियों की तरफ से भले ही पाकिस्तान को लेन हो और काँग्रेसियों की तरफ से भले ही पाकिस्तान को देन हो पर उसको जड़ में पाकिस्तान की लेन देन जैसी चीज हमें कहीं नहीं दिखाई देती. हमें उसकी जड़ में सारु दिखाई देती है वह अन्धधुन्द ताकतें जो जनता ने समझ कर या नासमझी से गवर्मेन्ट के हाथ में थमा दी हैं. नाज वोए तो सरकार, नाज कांटे तो सरकार, नाज बेचे तो सरकार, कपड़ा पहनाए तो सरकार यानी सब कुछ सरकार सरकार सरकार. जब तक यह ताकतें सरकार के हाथ से निकल कर जनता के हाथ में नहीं आती तब तक इस मारकाट को परमात्मा भी आकर नहीं रोक सकता.

सुख चैन से रहना है तो धार्मिक संगठनों का खासा कीजिये. संगठन बनाइये गाँव के लिहाज से, मोहल्लों के लिहाज से, पेशों के लिहाज से वगैरा वगैरा.

सुख चैन से रहना है तो सरकार के अस्तित्वाओं को घटाइये. सरकार के बोझलपन को हलका कीजिये. सरकार को व्यापार से क्या काम? सरकार को अस्पताल से क्या लेना? सरकार को तालीम से क्या मतलब?

पर सुख चैन से रहना किसे है! लड़ाई में जो मजा है वह खेत बोनो में कहाँ! बह लोहार और बढ़ई के काम में कहाँ! खून में घुसी लड़ाई तो कोई अबतार ही आकर निकालेगा.

५ अक्टूबर '४७

—भगवान दीन

देहाती दुनिया—सागर के मशहूर देश भक्त भाई अब्दुल रानी ने अपने अखबार "देहाती दुनिया" की काफी हमारे पास भेजी है. यह एक आठवें दिन निकलने वाला हिन्दी अखबार है जो 'भारत प्रेस' सागर से निकलता है. सी. पी. और वरार के शिक्षा विभाग ने इसे मंजूर किया है. अपने एडिटर भाई अब्दुल रानी की तरह देहाती दुनिया खरा, सबा और किरक्रेवाराना जहर से बिल्कुल ऊपर है. आस पास का देहाती दुनिया में इसे खूब फैलना चाहिये.

—सुन्दर लाल

दिसम्बर

नया हिन्द

शकह चिन न्त रेहना हो तो दहारक संकष्टनों का खामरे कीजे. संकष्टन बनाये कालों के लघाट से, मक्तों के लघाट से, पेशियों के लघाट से वगैरे वगैरे.

शकह चिन से रेहना हो तो सरकार के अस्तित्वाओं को कष्टाये. सरकार के बोझिलपन को हलका कीजे. सरकार को व्यापार से क्या काम? सरकार को अस्पताल से क्या लेना? सरकार को तालीम से क्या मतलब?

पर सुख चैन से रहना के हो! लघाटी में जो मजा है वह खेत बोनो में कहाँ! बह लोहार और बढ़ई के काम में कहाँ! खून में घुसी लघाटी तो कोणी ओतार ही ओकर डकाले का.

—बङ्गवान दीन

५ अक्टूबर '४७

देहाती दुनिया—सङ्क के मशहूर दलित बङ्कत बङ्गानी अब्दुल गनी ने अपने अखबार "देहाती दुनिया" की काफी हमारे पास भेजी हो. ये एक अठवें दिन निकलने वाला हिन्दी अखबार हो जो बङ्गवारी प्रेस, मङ्गलूर से निकलता हो. सी. पी. और बरार के शिक्षा विभाग ने इसे मंजूर किया हो. अपने एडिटर बङ्गानी अब्दुल गनी की तरह देहाती दुनिया खरा, सबा और किरक्रेवाराना जहर से बिल्कुल ऊपर है. आस पास का देहाती दुनिया में इसे खूब फैलना चाहिये.

—सुन्दर लाल

पंजाब हमें क्या सिखाता है-

पंजाब की खबरें सारे मुल्क में फैल चुकी हैं. लाखों आदमी अपने घरों से जबरदस्ती निकाले जा चुके हैं. इस देश निकाले से पहले जो जो ज़ुलम उन पर हुए और सफर में जो जो मुसीबतें उन्हें मेलनी पड़ीं उनका भा देश को थोड़ा बहुत पता है. हर अखबारों ने कम से कम दूसरे मजहब वालों के ज़ुल्मों को खूब उछाला है. दोनों धरमों के लोगों में इससे काफ़ी ज़हर भी फैला है और फैलता जा रहा है. अखबारों की खबरें एकतरफ़ा तो अक्सर होती ही हैं. फिर भी यह मानना पड़ेगा कि लासकर पंजाब में जो कुछ हुआ है वह बयान से बाहर है और कोई आदमी जिसने अपनी आँखों से न देखा हो वहाँ का मुसीबत और बरबादी का अन्दाजा नहीं लगा सकता.

पिछली अक्टूबर के महीने में मैंने पूर्वी पंजाब और पच्छिमी पंजाब दोनों का दौरा किया. उत्तर में काश्मीर की सरहद तक और पच्छिम में सरहद प्रांत तक, कहीं रेल से, कहीं मोटर से, कहीं हवाई जहाज से और कहीं ट्रक से, कुल मिला कर मैंने २००० मील से ऊपर का सफर किया. पंजाब का कई रियासतों में से भी निकला. तोस तीस और चालीस चालीस हजार आदमियों के क़ाकिले मैंने देखे. इनमें बहुत से मुसलिम क़ाकिले थे जो पूरब से पच्छिम को जा रहे थे और बहुत से हिन्दू क़ाकिले थे जो पच्छिम से पूरब को जा रहे थे. इन क़ाकिले वालों से मैंने खूब दिल खोल

पंजाब हमें क्या सिखाता है-

पंजाब की खबरें सारे मुल्क में फैल चुकी हैं. लाखों आदमी अपने घरों से जबरदस्ती निकाले जा चुके हैं. इस देश निकाले से पहले जो जो ज़ुलम उन पर हुए और सफर में जो जो मुसीबतें उन्हें मेलनी पड़ीं उनका भा देश को थोड़ा बहुत पता है. हर अखबारों ने कम से कम दूसरे मजहब वालों के ज़ुल्मों को खूब उछाला है. और फैलता जा रहा है. अखबारों की खबरें एकतरफ़ा तो अक्सर होती ही हैं. फिर भी यह मानना पड़ेगा कि लासकर पंजाब में जो कुछ हुआ है वह बयान से बाहर है और कोई आदमी जिसने अपनी आँखों से न देखा हो वहाँ का मुसीबत और बरबादी का अन्दाजा नहीं लगा सकता.

पिछली अक्टूबर के महीने में मैंने पूर्वी पंजाब और पच्छिमी पंजाब दोनों का दौरा किया. उत्तर में काश्मीर की सरहद तक और पच्छिम में सरहद प्रांत तक, कहीं रेल से, कहीं मोटर से, कहीं हवाई जहाज से और कहीं ट्रक से, कुल मिला कर मैंने २००० मील से ऊपर का सफर किया. पंजाब का कई रियासतों में से भी निकला. तोस तीस और चालीस चालीस हजार आदमियों के क़ाकिले मैंने देखे. इन में बहुत से मुसलिम क़ाकिले थे जो पूरब से पच्छिम को जा रहे थे और बहुत से हिन्दू क़ाकिले थे जो पच्छिम से पूरब को जा रहे थे. इन क़ाकिले वालों से मैंने खूब दिल खोल

बर बातें की और उनका दर्द भरी कहानियाँ सुनीं. मैं जगह जगह रेफ्यूजी कैम्पों में उहरा. दोनों तरफ के गाँवों में भी गया और जो लोग अभी तक गाँवों में रह रहे थे उनकी हालत देखी और उनसे बातें कीं. उन सब दुख भरी कहानियों को यहाँ दोहराना न तो सुमकिन ही है और न उससे कोई फायदा. पर सब कुछ सुनते और देखते के बाद मेरा अन्दाजा है कि दोनों तरफ मिलाकर कुल ऐसे लोगों की तादाद जिन्हें मार डाला गया पाँच लाख के करीब जरूर है. अबहीं रुपय का माल लुटाया वरवाद हुआ. जो औरतें उनके घर वालों से जबरदस्ती छीन ली गईं और जो लोग जबरदस्ती दूसरे धर्म में लाये गए उनकी तादाद भी कम से कम पन्चोस पन्चोस हजार जरूर होगी. मैं यह अन्दाजा बहुत से जिला अफसरों, लियेजान अफसरों और दोनों सरकारों के वजीरों से बातें करने के बाद लगा रहा हूँ. इनसे ज्यादा काले पापों की बात तो छोड़ ही देनी चाहिये.

रही सारे पंजाब की समाजी, तितारती, कारवारी और माली जिन्दगी. इस सब पर भी बरसों के लिये मट्टी छित गई. लाहौर का शहर इस मुल्क के खुशहाल से खुशहाल, सुन्दर से सुन्दर और बड़े से बड़े शहरों में से था. कुछ लोग हाल में लाहौर को हिन्दुस्तान का पेरिस कहने लगे थे. हिन्दुओं और मुसलमानों की आबादी वहाँ करीब करीब बराबर थी. मुसलमान हिन्दुओं से कहने भर के लिये मुशकिल से एक फी सदी ज्यादा थे. व्यापार और तितारत बहुत कर हिन्दुओं के हाथों में थी. मैं लाहौर शहर की बहार-बीवारी के अन्दर गला गला पैदल घूमा. आर लाहौर का कम से

को यात्रा कीं और उन की दूरे बहरी कहा नाल सुनिये. मैं एक एक रेफ्यूजी कैम्पों में पहुँचा. दोनों तरफ के गाँवों में भी गया. जो लोग अभी तक गाँवों में रहे रहते हैं उनके हालत देखी और उन से बातें कीं. उन सब दुख भरी कहानियों को यहाँ दोहराना न तो सुमकिन ही है और न उससे कोई फायदा. पर सब कुछ सुनते और देखते के बाद मेरा अन्दाजा है कि दोनों तरफ मिलाकर कुल ऐसे लोगों की तादाद जिनसे मार डाला गया पाँच लाख के करीब जरूर है. अबहीं रुपय का माल लुटाया वरवाद हुआ. जो औरतें रुपय की तादाद भी कम से कम पन्चोस पन्चोस हजार जरूर होगी. मैं यह अन्दाजा बहुत से जिला अफसरों, लियेजान अफसरों और दोनों सरकारों के वजीरों से बातें करने के बाद लगा रहा हूँ. इनसे ज्यादा काले पापों की बात तो छोड़ ही देनी चाहिये.

इस सब पर केली बरसों के लिये मुल्क का शहर इस मुल्क के खूब हाल से खूब हाल, सुन्दर से सुन्दर और बड़े से बड़े शहरों में से था. कुछ लोग हाल में लाहौर को हिन्दुस्तान का पेरिस कहने लगे थे. हिन्दुओं और मुसलमानों की आबादी वहाँ करीब करीब बराबर थी. मुसलमान हिन्दुओं से कहने भर के लिये मुशकिल से एक फी सदी ज्यादा थे. व्यापार और तितारत बहुत कर हिन्दुओं के हाथों में थी. मैं लाहौर शहर की बहार-बीवारी के अन्दर गला गला पैदल घूमा. आज लाहौर का कम से

इसलिये कि असृतसर अब एक सरहदी बस्ती बन गया जहां वह अपने को महफूज नहीं समझते. दूसरी दुख की बात यह भी है कि वहाँ सिक्खों और हिन्दुओं में भागड़े शुरू हो गए हैं और आगे बढ़ने का डर है. यह सब व्यापारी दिल्ली और बम्बई में बस रहे हैं. जानकारों का खयाल है कि लाहौर या असृतसर को अपनी पुरानी हालत में पहुँचने के लिये कम से कम तीस तीस बरस लगेंगे. कुछ का यह भी खयाल है कि जब कि लाहौर फिर एक बार खुशहाल, तिजारती और तालीमी शहर बन सकता है असृतसर अब नहीं बन सकता. अगर कोई खास नई बात न हुई तो असृतसर अब शायद हमेशा के लिये सरहद पर की एक सिक्ख कौजी छावनी रह जावेगा. कम या ज्यादा यही दुर्दशा देहात और दूसरे शहरों की है. पूरबी और पच्छिमी पंजाब दोनों में गाँव के गाँव उजड़े पड़े हैं. घर जले पड़े हैं. डंगर इधर उधर घूम रहे हैं. कोई रखवाली करने वाला नहीं. फसलें खड़ी हैं कोई काटने वाला नहीं. खेत हैं पर कोई जोतनेवाला नहीं. तिजारत और दस्तकारियाँ मलियामेट हो गईं क्यों कि हिन्दू मुसलमानों और सिक्खों तीनों की खिन्दगी एक दूसरे में गुथी हुई थी. एक दस्तकारी एक के हाथ में थी तो दूसरी दूसरे के हाथों में. लाहौर को एक गली में मुसलमान दखियों ने मुझ से शिकायत की कि उनके बरुचे भूके मर रहे हैं क्यों कि कपड़ा बेचने वाला हिन्दू दूकानदार भी चला गया और कपड़ा सिलवाने वाले गाहक भी मिट गए.

अब रही काफलों की बात. जो मदे औरत और बरुचे इन

इस लै के अत्रसर अब एक सरहदी बस्ती बन गया जहाँ वह अपने को महफूज नहीं समझते. दूसरी दुख की बात यह भी है कि वहाँ सिक्खों और हिन्दुओं में भागड़े शुरू हो गए हैं और आगे बढ़ने का डर है. यह सब व्यापारी दिल्ली और बम्बई में बस रहे हैं. जानकारों का खयाल है कि लाहौर या असृतसर को अपनी पुरानी हालत में पहुँचने के लिये कम से कम तीस तीस बरस लगेंगे. कुछ का यह भी खयाल है कि जब कि लाहौर या असृतसर अब नहीं बन सकता. अगर कोई खास नई बात न होगी तो असृतसर अब शायद हमेशा के लिये सरहद पर की एक रकम फौजी बहादुरी रहे जावेगा. कम या ज्यादा यही दुर्दशा देहात और दूसरे शहरों की है. पूरबी और पच्छिमी पंजाब दोनों में गाँव के गाँव उजड़े पड़े हैं. घर जले पड़े हैं. डंगर इधर उधर घूम रहे हैं. कोई रखवाली करने वाला नहीं. फसलें खड़ी हैं कोई काटने वाला नहीं. खेत हैं पर कोई जोतनेवाला नहीं. तिजारत और दस्तकारियाँ मलियामेट हो गईं क्यों कि हिन्दू मुसलमानों और सिक्खों तीनों की खिन्दगी एक दूसरे में गुथी हुई थी. एक दस्तकारी एक के हाथ में थी तो दूसरी दूसरे के हाथों में. लाहौर को एक गली में मुसलमान दखियों ने मुझ से शिकायत की कि उनके बरुचे भूके मर रहे हैं क्यों कि कपड़ा बेचने वाला हिन्दू दूकानदार भी चला गया और कपड़ा सिलवाने वाले गाहक भी मिट गए.

अब रही काफलों की बात. जो मदे औरत और बच्चे इन

में उस वक्त लाहौर रंगयूजी कैम्प में था. जब ट्रक लाहौर पहुँचे तो चार औरतों के बच्चे किसी तरह सही सालिम मिल गए. पाँचवें बच्चे का पता नहीं चला कि वह चलते ट्रक से कहीं गिर गया या कुबल गया. खुशकिस्मती से सर गंगाराम अस्पताल अभी तक लाहौर में थोड़ा बहुत काम कर रहा था. उषा और बच्चे सब वहाँ भेज दिये गए.

अमृतसर से लाहौर मोटर में जाते हुए व्यास नदी के बाएँ किनारे के पास हमें एक बड़ा मैदान दिखाई दिया जिसमें मिट्टी के अन्दर से जगह जगह टूटे हुए ट्रक, विस्तर और गठरियाँ मूँह बा रहे थं. पृथ्वा यह क्या है, तो मालूम हुआ कि पूरव की तरफ से तीस चालीस हजार का एक काकला आ रहा था. २८ सितम्बर की शाम को उस काकले ने इस मैदान में डेरा डाला. उन्हें पता न था कि वह मैदान नीचा था और उसके एक तरफ व्यास नदी और दूसरी तरफ एक और छोटो सा नदी था. उसी रात दोनों नदियों में बाढ़ आई और काकले के एक एक बच्चे को बहा कर ले गई.

शायद दुनिया के सारे इतिहास में इनसानी समाज पर इतना बड़ा जुलम या इनसानियत के खिलाफ इतना बड़ा पाप आज तक कोई नहीं हुआ जितना आज के हिन्दुस्तान में इन बड़ी बड़ी आवा-दियों का एक जगह से दूसरो जगह भेजा जाना. यह कहना कुछ मुशकिल है कि इस पाप की जिम्मेवारी किस पर है. मुझे कई बार यह खयाल आया कि इन्हीं मुसाबतबदा रिकयूजियों के चुने हुए कुछ सीधे सादे, नेक और समझदार नुमाइन्दों की एक अदालत बनाई जावे और उसके सामने हमारे मुल्क की सब पाटियों के कुछ

में उस وقت लाहौर रंगयूजी कैम्प में था. जब ट्रक लाहौर पहुँचे तो चार औरतों के बच्चे किसी तरह सही सालिम मिल गए. पाँचवें बच्चे का पता नहीं चला कि वह चलते ट्रक से कहीं गिर गया या कुबल गया. खुशकिस्मती से सर गंगाराम अस्पताल अभी तक लाहौर में थोड़ा बहुत काम कर रहा था. उषा और बच्चे सब वहाँ भेज दिये गए.

मिरासर से लाहौर मोटर में जाते हुए व्यास नदी के बाएँ किनारे के पास हमें एक बड़ा मैदान दिखाई दिया जिसमें मिट्टी के अन्दर से जगह जगह टूटे हुए ट्रक, विस्तर और गठरियाँ मूँह बा रहे थं. पृथ्वा यह क्या है, तो मालूम हुआ कि पूरव की तरफ से तीस चालीस हजार का काले ट्रक आ रहा था. २८ सितम्बर की शाम को उस काले ट्रक में इस काले ट्रक में आया था. उसी रात दोनों नदियों में बाढ़ आई और काले ट्रक के बच्चे को बहा कर ले गयी.

शायद दुनिया के सारे इतिहास में इनसानी समाज पर इतना अत्याचार आज तक कहीं नहीं हुआ जितना आज के हिन्दुस्तान में इन बड़ी बड़ी आवा-दियों का एक जगह से दूसरो जगह भेजा जाना. यह कहना कुछ मुशकिल है कि इस पाप की जिम्मेवारी किस पर है. मुझे कई बार यह खयाल आया कि इन्हीं मुसाबतबदा रिकयूजियों के चुने हुए कुछ सीधे सादे, नेक और समझदार नुमाइन्दों की एक अदालत बनाई जावे और उसके सामने हमारे मुल्क की सब पाटियों के कुछ

दिन मास्टर तारासिंह ने लाहौर में वह मशहूर तक्तीर की जिसमें उन्होंने क्रसम खाई कि मैं मुसलिम लीग की मिनिस्ट्री हरशिव बनने नहीं दूंगा. उसी दिन लाहौर में हिन्दू विचारियों का एक बहुत बड़ा जलूस निकला जिसमें लीग और पाकिस्तान दोनों के खिलाफ तरह के नारे लगाए गए. चार मार्च की शाम को लाहौर में कुछ किसान हुआ जिसमें पाँच सात मुसलमान मारे गए. यह गोलमाल तीन चार दिन चलता रहा. उसी वक्त इसी तरह की गड़बड़ अमृतसर में हुई. उसके बाद इससे कहीं ज्यादा बढ़ कर खून खराबा रावलपिन्डी, मियाँवाली, सुलतान, डेराराजी खाँ और कुछ और सरहदी खिलों में हुआ. कहा जाता है कि सरहदी सूबे के कुछ मुसलिम बालंटियर बिहार गए थे. उन्होंने वहाँ से उन मुसलमानों की कुछ हड्डियाँ लाकर जो बिहार में मारे गए थे उनकी मालाएँ बना कर सरहदी सूबे के शहरों और गावों में लोगों को दिखलाई. रावलपिन्डी में और सरहद के कुछ खिलों में काफी शर्मनाक वारदातें हुईं. पर यह मानना पड़ेगा कि लाहौर बहुत दूरे तक शान्त रहा. लाहौर पर न बिहार का ज्यादा असर हुआ, न रावलपिन्डी का. लाहौर और अमृतसर में किसान उस वक्त बड़ा जब कि आधी मई के करीब पंजाब के दो टुकड़े किये जाने पर गरमागरम वहमें होने लगीं. वजह साफ थी. इन दोनों शहरों के हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों को इस बात का फिक्र हुआ कि उनका शहर पाकिस्तान में जायगा या हिन्दुस्तान में. इस चबराहट और कोशिश में किसने ज्यादा पाप किये इसका अब पता लगाने में कोई फायदा नहीं. कहा जाता है कि जब अमृतसर एक मजहब

दल मास्टर तारासिंह ने लाहौर में दो مشهور تقریر کی جس میں انھوں نے قسم کھائی کہ میں مسلم لیگ کی منسٹری ہرگز بننے نہیں دوں گا. اسی دن لاہور میں ہندو و دیگر شخصوں کا ایک بہت بڑا جلوس نکلا جس میں لیگ اور پاکستان دونوں کے خلاف طرح طرح کے نعرے لگائے گئے. چار مارچ کی شام کو لاہور میں پچھ فساد ہوا جس میں پانچ سات سٹالان مارے گئے. یہ گول مال تین چار دن چلتا رہا. اسی وقت کسی طرح کی گڑبڑ امرتسر میں ہوئی. اس کے بعد اس سے کہیں زیادہ بڑھ کر خون خرابہ راولپنڈی، میانوالی، ملتان، ٹبرہ غازی خاں اور کھنڈ اور سرحدی ضلعوں میں ہوا. کہا جاتا ہے کہ سرحدی صوبے کے دیگر مسلم والنس بہار گئے تھے. انہوں نے وہاں سے ان مسلمانوں کی پختہ پختہ لاکر جو بہار میں مارے گئے تھے ان کی مالائیں بنا کر سرحدی صوبے کے شہروں اور گاؤں میں لوگوں کو دکھلائیں. راولپنڈی میں اور سرحد کے کئی ضلعوں میں کافی شرمناک وارداتیں ہوئیں. پھر یہ ماسٹرس نے لگا کہ لاہور بہت درجے تک شانت رہا. لاہور پر نہ بہار کا زیادہ اثر ہوا نہ راولپنڈی کا. لاہور اور امرتسر میں فساد نہیں وقت بڑھا جس کے آدھی مئی کے قریب پنجاب کے دیگر ضلعوں کے جانے پر گورنر بھینس ہونے لگیں. وجہ صاف تھی. ان دونوں گھنروں کے ہندوؤں اور مسلمانوں دونوں کو اس بات کا فکر ہوا کہ ان کا شہر پاکستان سمند جانے کا یا ہندستان میں. اس گھبراہٹ اور کوشش میں کس نے زیادہ پاپ کئے اس کا اب پتہ لگانے میں کوئی فائدہ نہیں. کہا جاتا ہے کہ جب امرتسر میں ایک مذہب

के लोगों पर जुल्म हुए और लाहौर में उसका कोई बदला नहीं लिया जा रहा था तो अमृतसर वालों ने अपने लाहौर के हम-मजहबों के पास कुछ 'चूड़ियाँ' और 'मैहदी' भेजी. मतलब साफ था. आग बढ़ती चली गई. तीन जून के ऐलान से इस आग पर और भी तेल पड़ गया. लाहौर में २१ जून के करीब यह आफत अपने पूरे जोर पर थी. उसी दिन शाह आलमी दरवाजे के अन्दर की शानदार इमारतें जला कर खाक कर दी गईं. मुकामी सरकारी आफसर तब ही साफ एक फिरकें की तरफदारी करते और तरह तरह के जुर्मों में हिस्सा लेते दिखाई देने लगे. लाहौर और अमृतसर के यह फिसाद करीब करीब साथ साथ चल रहे थे. २७ जून की शाह आलमी की आग के बाद से हिन्दू लाहौर से भागने शुरू हो गए. फिर भी लाहौर से हिन्दुओं की जबरदस्त आम भगदड़ १५ अगस्त के बाद शुरू हुई. १७ अगस्त को वाउन्डरी कमीशन का फैसला हुआ. उस दिन से तेजी के साथ लाहौर एक खालिस मुसलिम शहर और अमृतसर एक खालिस हिन्दू सिक्ख शहर बनता चला गया क्योंकि लाहौर में हिन्दू और अमृतसर में मुसलमान अब अपने को महकूज नहीं समझते थे.

एक मजहब के लोगों ने दूसरे मजहब के लोगों पर क्या क्या जुल्म किये इसके हज़ारों किस्से सुनने को मिले जिन्हें सुन सुन कर हृदयों का दुख होता है. इन किस्सों को दोहराने से कोई फायदा नहीं. पर एक नतीजा उनसे साफ निकलता है. वह यह कि कोई ऐसा पाप नहीं रहा जो मुसलमान ने न किया हो. कोई ऐसा पाप नहीं जो हिन्दू ने न किया हो. कोई ऐसा पाप नहीं जो सिक्ख ने न किया

के लोगों पर जुल्म होयै और लाहौर में अस का कौनो बदला निया जावला क्हा तो अमृतसर वालों ने असे लाहौर के हम मजहबों के असे क्हा कि मोजियाँ और मन्दी बघिजी. म्पलब साव क्हा. अग ब्रुह्मी जल गयी. तिनो ह्योन के अعلان से असे अग पर और बघि तिल पड़गया. लाहौर में २१ जूज के करीब ये अफत अिजे पारसे नुदरे पर क्ही. असे म्पलब शाह हाली दुराजसे के अन्दर की शांन वारु एमारतें जलाकर खाक करदी ग्गिगी. क्हाणी सकारदी अमृतब ही सावद अक फरे की म्रुन्दारी करते और म्रुच म्रुच के म्रुचों में सक्ते लिते دکहाणी दिने लके. लाहौर और अमृतसर के ये फसाद करीब करीब साक्ते साक्ते चल रहे क्हे. २७ जून की शाह हाली की अग के बाद से हन्दे लाहौर से क्हागने शुरू हो गये. बघि बघि लाहौर से हन्दे वल की नुदरेस्त आम क्हाकदर और अमृतसर में अलान असे अने को म्पुफा न्हीन क्हेते क्हे.

एक मजहब के लोगों ने दूसरे मजहब के लोगों पर किया जुल्म के असे अमृतसर के मजहबों के लिये क्हे जिनके म्पलब का दुख होता है. इन किस्सों को दोहराने से कोई फायदा नहीं. पर एक नतीजा उनसे साफ निकलता है. वह यह कि कोई ऐसा पाप नहीं रहा जो मुसलमान ने न किया हो. कोई ऐसा पाप नहीं जो हिन्दू ने न किया हो. कोई ऐसा पाप नहीं जो सिक्ख ने न किया

हो. जब कभी किसी खास तरह के पाप या जुर्म की खबर, सबी या भूटी, एक तरफ से दूसरी तरफ पहुंचती थी तो दूसरी तरफ वाले ठीक उसी तरह का जुर्म अपने यहाँ के दूसरी जमात वालों पर कर डालते थे, और फिर अगर वह खबर भूटी होती थी तो अब पहली तरफ मो ठीक उसी तरह का जुर्म कर डाला जाता था चाहे वह जुर्म कितना ही गन्दा और बुरा क्यों न हो. इस तरह एक शैतानी चक्कर के अन्दर दूसरा शैतानी चक्कर बन जाता था. दोनों तरफ दिखाई दे जाता था कि आदमी कितना गिर सकता है. यह भी साफ पता चल गया कि ऊपर के नामों या अलग अलग मजहबों के साइन बोर्डों से हमारे स्वभाव और चलन में कोई खास फरक नहीं पड़ता.

इस तसवीर का एक दूसरा भी पहलू है. जब हम लाहौर की गलियों में घूम रहे थे लगभग हर गली में सैकड़ों आदमी हमारे चारों तरफ जमा हो गये. वह सब मुसलमान थे. उनमें मर्द, औरत, बच्चे, बूढ़े, अमीर, गरीब, पढ़े, वेपढ़े सब तरह के आदमी थे. हमारी उन सब से खुल कर बातें हुईं. कुछ ही दिन पहले लाहौर यूनिवर्सिटी के एक बहुत नेक प्रोफेसर डा० अब्दुल्ला ने मुझसे कहा था कि जो जुलम लाहौर में हो चुके हैं उन पर शहर के कम से कम चालीस फी सदी आदमियों को अकसोस है और वह फिर से अपने हिन्दू भाइयों के साथ मिल कर अमन से रहना चाहते हैं. मैंने अपने शहर में घूमने के वक़्त महसूस किया कि चालीस फी सदी से बहुत ज्यादा लोगों के दिलों की यही हालत थी. पूरबी पंजाब और पच्छिमी पंजाब दोनों के और सब हिस्सों में भी मैंने यही पाया. इसमें कुछ

खिलाफत
हमारी राय
दिसम्बर '४७

हो. जब कभी किसी खास तरह के पाप या जुर्म की खबर या भूटी, एक तरफ से दूसरी तरफ पहुँचती थी तो दूसरी तरफ वाले ठीक उसी तरह का जुर्म अपने यहाँ के दूसरी जमात वालों पर कर डालते थे, और फिर अगर वह खबर भूटी होती थी तो अब पहली तरफ भी ठीक उसी तरह का जुर्म कर डाला जाता था चाहे वह जुर्म कितना ही गन्दा और खतराकामी न हो. इस तरह एक शैतानी चक्कर के अन्दर दूसरा शैतानी चक्कर बन जाता था. दोनों तरफ دکھानी दसे जाता क्हाके आदमी कितना गिर सकता हो. ये भी वहाँ पत्रे चल गियाके ओपर के नामों या अलग अलग मजहबों के साइन बोर्डों से हमारे सोचकार और चलन में

कोई खास फरक नहीं पड़ता.
इस तस्वीर का एक दूसरा भी पहलू हो. जब हम लाहौर की गलियों में घूम रहे थे. हर गली में सैकड़ों आदमी हमारे चारों तरफ जमा हो गये. वह सब मुसलमान क्हे. उन में मर्द, औरत, बच्चे, बूढ़े, अमीर, गरीब, पढ़े, वेपढ़े सब तरह के आदमी थे. हमारी

बोर्डों में आदमी कितना गिर सकता हो. ये भी वहाँ पत्रे चल गियाके ओपर के नामों या अलग अलग मजहबों के साइन बोर्डों से हमारे सोचकार और चलन में कोई खास फरक नहीं पड़ता.
इस तस्वीर का एक दूसरा भी पहलू हो. जब हम लाहौर की गलियों में घूम रहे थे. हर गली में सैकड़ों आदमी हमारे चारों तरफ जमा हो गये. वह सब मुसलमान क्हे. उन में मर्द, औरत, बच्चे, बूढ़े, अमीर, गरीब, पढ़े, वेपढ़े सब तरह के आदमी थे. हमारी

बोर्डों में आदमी कितना गिर सकता हो. ये भी वहाँ पत्रे चल गियाके ओपर के नामों या अलग अलग मजहबों के साइन बोर्डों से हमारे सोचकार और चलन में कोई खास फरक नहीं पड़ता.
इस तस्वीर का एक दूसरा भी पहलू हो. जब हम लाहौर की गलियों में घूम रहे थे. हर गली में सैकड़ों आदमी हमारे चारों तरफ जमा हो गये. वह सब मुसलमान क्हे. उन में मर्द, औरत, बच्चे, बूढ़े, अमीर, गरीब, पढ़े, वेपढ़े सब तरह के आदमी थे. हमारी

भी शक नहीं हो सकता कि पाकिस्तान में मुसलमानों और हिन्दुस्तान में हिन्दुओं और सिक्खों की बहुत बड़ी तादाद इन आपसी झगड़ों को पसन्द नहीं करती और दूसरे मजहब के लोगों के साथ मिल जुल कर अमन से रहना चाहती है। मुझे यकीन है कि इन कुल लोगों की तादाद जिन्होंने इस तमाम कल्ल, लूट वगैरह में हिस्सा लिया कुल आबादी का एक फी सदी से ज्यादा नहीं थी। इसका मतलब है एक लाख की आबादी में एक हजार आदमी। इतने आदमी सारी आबादी के अमन को खत्म कर देने, शहर को वीरान कर देने और सारे शहर को लारों से पाट देने के लिये काफी हैं। यही बात देहात में थी। मेरा अन्दाजा है कि लाहौर शहर में छूरे चलाने वालों की कुल तादाद किसी वक्त भी दो सौ से ज्यादा नहीं रही। शायद किसी वक्त ज्यादा से ज्यादा रही होगी तो सौ और दो सौ के बीच में। यही बात अमृतसर के बारे में कही जा सकती है। इनके अलावा हर जगह दस बीस की सदी आबादी ऐसी भी थी जिनका खून दूसरी तरफ के जुल्मों की कहानियां सुन सुन कर खौलता रहता था और इसीलिये जिन्हें अपनी तरफ के मुजरिमां के साथ थोड़ी बहुत हमदर्दी थी। लेकिन जैसा आम तौर पर ऐसे मौकों पर होता है लाखों और करोड़ों अमन पसन्द जनता को न आवाज सुनाई देती थी, न उनका कोई संगठन था और न वह कुछ कर पाते थे।

दूसरी बात ध्यान देने की यह है कि जब कि यह कई हजार आदमी तरह तरह के जुर्मों में लगे हुए थे, पूर्वी पंजाब और पच्छिमी पंजाब दोनों जगह हजारों ही लोग ऐसे थे जो ठीक उसी आकाल के समय अपनी अपनी जान पर खेल कर दूसरे मजहब

भी नुक़ हो सकता कि अक़तान में मुसलमान और हिन्दुस्तान में हिन्दुओं और सिक्खों की बहुत बड़ी तादाद इन आपसी झगड़ों को पसन्द नहीं करती और दूसरे मजहब के लोगों के साथ मिल जुल कर अमन से रहना चाहती है। मुझे यकीन है कि इन कुल लोगों की तादाद जिन्होंने इस तमाम कल्ल, लूट वगैरह में हिस्सा लिया कुल आबादी का एक फी सदी से ज्यादा नहीं क्थी। इस का मतलब है एक लाख की आबादी में एक हजार आदमी। इतने आदमी सारी आबादी के अमन को खत्म कर देने, शहर को वीरान कर देने और सारे शहर को लारों से पाट देने के लिये काफी हैं। यही बात देहात में थी। मेरा अन्दाजा है कि लाहौर शहर में छूरे चलाने वालों की कुल तादाद किसी वक्त भी दो सौ से ज्यादा नहीं रही। शायद किसी वक्त ज्यादा से ज्यादा रही होगी तो सौ और दो सौ के बीच में। यही बात अमृतसर के बारे में कही जा सकती है। इनके अलावा हर जगह दस बीस की सदी आबादी ऐसी भी क्थी जिनका खून दूसरी तरफ के मुजरिमां के साथ थोड़ी बहुत हमदर्दी थी। लेकिन जैसा आम तौर पर ऐसे मौकों पर होता है लाखों और करोड़ों अमन पसन्द जनता की न आवाज सुनाई देती क्थी, न उनका कोई संगठन था और न वह कुछ कर पाते क्थे।

दूसरी बात ध्यान देने की है कि जब कि ये कौी हिन्दु आदमी और सिक्खों के जुर्मों में लगे क्थे, पूर्वी पंजाब और पच्छिमी पंजाब दोनों जगह हजारों ही लोग ऐसे क्थे जो ठीक उसी आकाल के क्थे अपनी अपनी जान पर क्थिल कर दूसरे मजहब

बिबरस
तमारी रासै

वालों की जान और عزت. काने की कुशेश्चों में लगे होئے تھے.
پنجابی پنجاب میں اس طرح کے نیک اور بہادر مسلمانوں اور یورپی پنجاب
میں ایسے ہی نیک اور بہادر ہندوؤں اور سکھوں کی تعداد ہزاروں
تک رہتی جاسکتی ہو۔ ہم نے یہ قصے ان لوگوں کے منہ سے سنے
جن کی جانیں یا جن کی آبرو بچانی تھی۔ ہم جب چکوال پہنچے تو اس
پاس کے گاؤں سے بھاگ کر آئے ہوئے سیکڑوں ہندوؤں اور سکھوں
نے ہمیں گھیر لیا۔ انہوں نے اس بات پر حسد کی کہ میں ان کے ہر گائے
کی رہتی سنبوں اور مکھ لیں۔ میں نے ایسا ہی کیا۔ ہر جگہ وہی کہانی
حاصل ہوا۔ کچھ لوگ مار ڈالے گئے، کچھ گھر جلا دیئے گئے، کچھ مال کوٹ لیا
گیا، کچھ عورتیں بھگائی گئیں اور گائے کے باقی ہندو اور سکھ گائوں
چھوڑ کر چلے آئے۔ ان میں سے لگ بھگ ہر گائوں والوں نے کوئی نہ کوئی
اس طرح کا حال بھی سنایا کہ ہر جگہ کسی نہ کسی نیک مسلمان نے اپنے
اہم مذہبوں کی بھیر کا سامنا کر کے کسی نہ کسی ہندو یا سکھ بڑوسی کی
جان بامسک کے یا اس کی عزت کو بچایا۔ اس طرح کے قصے ان
لوگوں نے سوال کرنے پر یا جرح کرنے پر نہیں سنائے۔ یہ قصے
ان کی زبان سے خود بخود قدرتی طور پر نکلے۔ یورپی پنجاب سے
گھر بار پھوڑ کر آئے ہوئے مسلم رفیقوں نے بھی وہاں کے
ہزاروں ہندوؤں اور سکھوں کے اسی طرح کے نیک کاتائے سنائے۔
لاہور میں ڈاکٹر گزٹیکش رائے نام کے ایک بہت ہی نیک
سچے سے لافیات ہوئی۔ وہ شہر سے اور اس پاس کے
دیہات کے مسلم گھروں سے ان ہندو عورتوں کو نکلنے کے کام

نیا ہند
ہماری راہے

दिसम्बर सन् '४७
हमारी राय
बचाने की कोशिशों में लगे हुए थे.
पंचमी पंजाब में इस तरह के नेक और बहादुर मुसलमानों और
पूर्वी पंजाब में ऐसे ही नेक और बहादुर हिन्दुओं और सिक्खों की
तादाद हजारों तक गिनी जा सकती है. हमने यह क्रिस्से उन लोगों के
मुँह से सुने जिनकी जानें या जिनकी आवरु बचाई गई थी. हम जब
चकवाल पहुँचे तो आसपास के गांव से भाग कर आए हुए सैकड़ों
हिन्दुओं और सिक्खों ने हमें घेर लिया. उन्होंने इस बात पर ज़िद्द
की कि मैं उनके हर गांव की बीती सुनूँ और लिख लूँ. मैंने ऐसा
ही किया. हर जगह वही कहानी—हमला हुआ, कुछ लोग मार डाले
गए, कुछ घर जला दिये गए, कुछ माल लूट लिया गया, कुछ
औरतें भगाई गईं, और गांव के बाकी हिन्दू और सिक्ख गांव छोड़
कर चले आये. इनमें से लगभग हर गांव वालों ने कोई न कोई
इस तरह का हाल भी सुनाया कि हर जगह किसी न किसी नेक
मुसलमान ने अपने हम मजहबों की भीड़ का सामना करके किसी
न किसी हिन्दू या सिक्ख पड़ोसी की जान या उसके माल या
उसकी इज्जत को बचाया. इस तरह के क्रिस्से उन लोगों ने सवाल
करने पर या जिरह करने पर नहीं सुनाए. यह क्रिस्से उनकी
बचान से खुद व खुद और कुदरती तौर पर निकले. पूर्वी पंजाब
से घर बार छोड़ कर आए हुए मुसलिम रेस्यूजियों ने भी वहाँ के
हजारों हिन्दुओं और सिक्खों के इसी तरह के नेक कारनामे सुनाए.
लाहौर में, डा० गुरबलश राय नाम के एक बहुत ही नेक
सज्जन से मेरी मुलाकात हुई. वह शहर से और आसपास के
देहात के मुसलिम घरों से उन हिन्दू औरतों को निकालने के काम.

बिबरस
तमारी रासै

में लगे हुए थे जिन्हें मुसलमान जबरदस्ती भगा ले गए थे. डा० गुरबख्श राय ने मुझसे कहा और मैंने खुद भी देखा कि उन्हें आकर यह खबरें देने वाले कि फलाँ गाँव में या फलाँ घर में कोई हिन्दू औरत बन्द है सब ज्यादातर मुसलमान होते थे. इन सबर देने वालों में कभी कभी औरतें भी होती थीं. इनकी सेवा सदा बिल्कुल निस्वार्थ होती थी. इनमें से कोई कोई मीलों चलकर आकर खबर देता था. अपने पड़ोस में मुसोचत जदा हिन्दू औरत की चीख पुकार या उसका रोना उन्होंने सुन लिया था और उनसे सहा नहीं गया. इस तरह जो औरतें मुसलिम घरों से निकाली गईं वह भी आमतौर पर किसी न किसी मुसलमान मर्द या औरत ही की मदद से निकाली जा सकीं. इस काम में हमें कुछ ऐसी औरतें भी मिलीं जो अपने नए मुसलिम घर छोड़ने को राजी नहीं थीं. इस तरह की दो औरतों ने लाहौर रेस्यूजी कैम्प तक आकर फिर वापिस जाने की विद् की. जब उनसे बजह पूछी गई तो उन्होंने कहा हमें डर है हमारे घर के हिन्दू हमें फिर वापिस नहीं लेंगे और अगर ले भा लेंगे तो मुमकिन है हमें मार डालें. उनके इस डर से कई हिन्दू दोस्तों की आँखें सी खुल गईं.

डा० गुरबख्श राय खुद बहुत ही सचे, बेलाग और सौ-जानिबदार आदमी हैं. उनके दिमाग में हिन्दू मुसलमान का फरक नहीं. लाहौर के कुछ विस्मैदार अफसरों ने उन्हें एक लम्बी फेहरिस्त ऐसी मुसलमान औरतों की दी जिन्हें अमृतसर में या उसके आस पास हिन्दू या सिक्ख जबरदस्ती उठाकर ले गए थे और जो अभी तक हिन्दू या सिक्ख घरों में थीं. यह फेहरिस्त उधर से

में लगे होकर चले जिनमें मुसलमान जबरदस्ती भगा ले गए थे. डा० गुरबख्श राय ने मुझसे कहा और मैंने खुद भी देखा कि उन्हें आकर यह खबरें देने वाले कि फलाँ गाँव में या फलाँ घर में कोई हिन्दू औरत बन्द है सब ज्यादातर मुसलमान होते थे. इन खबर देने वालों में कभी कभी औरतें भी होती थीं. इनकी सेवा सदा बिल्कुल निस्वार्थ होती थी. इनमें से कोई कोई मीलों चलकर आकर खबर देता था. अपने पड़ोस में मुसोचत जदा हिन्दू औरत की चीख पुकार या उसका रोना उन्होंने सुन लिया था और उनसे सहा नहीं गया. इस काम में हमें कुछ ऐसी औरतें भी मिलीं जो अपने नए मुसलिम घर छोड़ने को राजी नहीं थीं. इस तरह की दो औरतों ने लाहौर रेस्यूजी कैम्प तक आकर फिर वापिस जाने की विद् की. जब उनसे बजह पूछी गई तो उन्होंने कहा हमें डर है हमारे घर के हिन्दू हमें फिर वापिस नहीं लेंगे और अगर ले भा लेंगे तो मुमकिन है हमें मार डालें. उनके इस डर से कई हिन्दू दोस्तों की आँखें सी खुल गईं.

डा० गुरबख्श राय खुद बहुत ही सचे, बेलाग और सौ-जानिबदार आदमी हैं. उनके दिमाग में हिन्दू मुसलमान का फरक नहीं. लाहौर के कुछ विस्मैदार अफसरों ने उन्हें एक लम्बी फेहरिस्त ऐसी मुसलमान औरतों की दी जिन्हें अमृतसर में या उसके आस पास हिन्दू या सिक्ख जबरदस्ती उठाकर ले गए थे और जो अभी तक हिन्दू या सिक्ख घरों में थीं. यह फेहरिस्त उधर से

आए हुए उन औरतों के रिश्तेदार मुसलिम रेफ्यूजियों ने तय्यार करके दी थी. डा० गुरबख्श राय कौरन इस बात के लिये राखी हो गए कि वह खुद अमृतसर जाकर उन औरतों को निकालें और उनके मुसलमान रिश्तेदारों के हवाले कर दें. वह इस काम के लिये बैचैन दिखाई दिये, जो क्रीमती शब्द उस मौके पर उनके मुंह से निकले वह मेरे दिल में घर कर गए. उन्होंने कहा कि—“जब मैं मुसलमानों के हिन्दू औरतों को उठा ले जाने के किस्से सुनता हूँ तो मुझे तकलीफ होती है, पर जब मैं हिन्दुओं या सिक्खों के मुसलिम औरतों को उठा ले जाने के किस्से सुनता हूँ तो मुझे तकलीफ भी होती है, और शर्म भी आती है.” मुझे पंजाब में इसी तरह के कई बेलागा नेक और बहादुर भाई मिले और कई बहिनें भी मिलीं जो बहुत ही क्रीमती काम कर रहे हैं.

पंजाब की घटनाओं का एक और पहलू है जिसे बयान करना जरूरी है. हमारी इस तमाम मुसीबत में अंगरेजों का हाथ कुछ कम नहीं है. मुझे पूरा यकीन है कि किसी भी और जानिवदार अदालत या कमीशन के सामने इस बात के साबित करने में कोई दिक्कत नहीं पड़ सकती कि जो हथियार दिल्ली के मुसलमान इस्तेमाल करने वाले थे, या पूरबी पंजाब और वहाँ की रियासतों में हिन्दुओं और सिक्खों ने इस्तेमाल किये या जो हथियार पच्छिमी पंजाब या सरहद के मुसलमानों ने इस्तेमाल किये वह सब दिसम्बर अंगरेज अफसरों के जरिये उन तक पहुँचे थे. लायलपुर के मुसलमान डिप्टी कमिश्नर ने वहाँ की म्युनिस्पैलिटी के हिन्दू चेयरमैन से कहा था कि अगर कर्नल फिलड्र नाम का एक आदमी

नया हिन्द
हमारी राय
दिसम्बर 'सन '४७
आए हुये उन औरतों के रिश्तेदार मुसलिम रेफ्यूजियों ने तय्यार करके दी थी. डा० गुरबख्श राय कौरन इस बात के लिये राखी हो गए कि वह खुद अमृतसर जाकर उन औरतों को निकालें और उनके मुसलमान रिश्तेदारों के हवाले कर दें. वह इस काम के लिये बैचैन दिखाई दिये, जो क्रीमती शब्द उस मौके पर उनके मुंह से निकले वह मेरे दिल में घर कर गए. उन्होंने कहा कि—“जब मैं मुसलमानों के हिन्दू औरतों को उठा ले जाने के किस्से सुनता हूँ तो मुझे तकलीफ होती है, पर जब मैं हिन्दुओं या सिक्खों के मुसलिम औरतों को उठा ले जाने के किस्से सुनता हूँ तो मुझे तकलीफ भी होती है, और शर्म भी आती है.” मुझे पंजाब में इसी तरह के कई बेलागा नेक और बहादुर भाई मिले और कई बहिनें भी मिलीं जो बहुत ही क्रीमती काम कर रहे हैं.

पंजाब की घटनाओं का एक और पहलू है जिसे बयान करना जरूरी है. हमारी इस तमाम मुसीबत में अंगरेजों का हाथ कुछ कम नहीं है. मुझे पूरा यकीन है कि किसी भी और जानिवदार अदालत या कमीशन के सामने इस बात के साबित करने में कोई दिक्कत नहीं पड़ सकती कि जो हथियार दिल्ली के मुसलमान इस्तेमाल करने वाले थे, या पूरबी पंजाब और वहाँ की रियासतों में हिन्दुओं और सिक्खों ने इस्तेमाल किये या जो हथियार पच्छिमी पंजाब या सरहद के मुसलमानों ने इस्तेमाल किये वह सब दिसम्बर अंगरेज अफसरों के जरिये उन तक पहुँचे थे. लायलपुर के मुसलमान डिप्टी कमिश्नर ने वहाँ की म्युनिस्पैलिटी के हिन्दू चेयरमैन से कहा था कि अगर कर्नल फिलड्र नाम का एक आदमी

दिसम्बर 'सन '४७

खिले से हट लिया जाता तो वहां एक भी हिन्दू या सिख न मारा जाता और न लूटा जाता. रावलपिंडी से आने वाले इब्नेतदार हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों की यह राय थी कि मार्च के महीने में वहां जो कुछ किसान हुआ उस सब की खिम्बेवारी वहां के डिप्टी कमिश्नर सी. एल. कोटस और होम सेक्रेटरी मैकडानल्ड पर थी. पूरबी पंजाब के एक जिले में जब हिन्दुओं ने यह तय कर लिया कि वह किसी मुसलमान को तकलीफ न देंगे तो एक अँगरेज फौजी अफसर ने मौलों घोड़े पर जाकर जगह जगह कितने ही आदिमियों को केवल इसलिये अपनी गोली का निशाना बनाया ताकि आग फिर से भड़क उठे. पच्छिम पंजाब के एक जिले में जब कुछ हिन्दुओं और सिखों ने एक अँगरेज फौजी कमांडर के पास जाकर उससे मदद चाही तो अँगरेज अफसर ने उनसे कहा कि आप एक अर्ची लिखकर लोगों से उस पर दस्तखत कराइये कि अँगरेज सरकार फिर से आकर हुकूमत अपने हाथ में लेले. एक अर्ची तय्यार की गई. उस पर कुछ दस्तखत भी हुए. पर यह काम आगे न चला. खुद लाहौर में जुलाई सन् १७ के आखीर में एक अँगरेज फौजी अफसर ने एक मुसलमान पुलिस अफसर से कहा—“क्या आप समझते हैं हम हिन्दुस्तान छोड़कर जा रहे हैं? नहीं. हम मलाया में रहेंगे और जब हालत काफी खराब हो जायगी तो फिर लौट आवेंगे.” और भी भिसालें दी जा सकती हैं और इससे चुरी भिसालें दी जा सकती हैं. अँगरेज अफसरों ने जिनके पास वसीला था और जिनके इसका मौका मिला न सिर्फ आग को सुलगाने और फैलाने ही में

जिससे आपस में वहाँ एक-दूसरे को मारना शुरू हो गया. वहाँ के लोगों ने रावलपिंडी से आने वाले इब्नेतदार हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों की यह राय थी कि मार्च के महीने में वहां जो कुछ किसान हुआ उस सब की खिम्बेवारी वहां के डिप्टी कमिश्नर सी. एल. कोटस और होम सेक्रेटरी मैकडानल्ड पर थी. पूरबी पंजाब के एक जिले में जब हिन्दुओं ने यह तय कर लिया कि वह किसी मुसलमान को तकलीफ न देंगे तो एक अँगरेज फौजी अफसर ने मौलों घोड़े पर जाकर जगह जगह कितने ही आदिमियों को केवल इसलिये अपनी गोली का निशाना बनाया ताकि आग फिर से भड़क उठे. पच्छिम पंजाब के एक जिले में जब कुछ हिन्दुओं और सिखों ने एक अँगरेज फौजी कमांडर के पास जाकर उससे मदद चाही तो अँगरेज अफसर ने उनसे कहा कि आप एक अर्ची लिखकर लोगों से उस पर दस्तखत कराइये कि अँगरेज सरकार फिर से आकर हुकूमत अपने हाथ में लेले. एक अर्ची तय्यार की गई. उस पर कुछ दस्तखत भी हुए. पर यह काम आगे न चला. खुद लाहौर में जुलाई सन् १७ के आखीर में एक अँगरेज फौजी अफसर ने एक मुसलमान पुलिस अफसर से कहा—“क्या आप समझते हैं हम हिन्दुस्तान छोड़कर जा रहे हैं? नहीं. हम मलाया में रहेंगे और जब हालत काफी खराब हो जायगी तो फिर लौट आवेंगे.” और भी भिसालें दी जा सकती हैं और इससे चुरी भिसालें दी जा सकती हैं. अँगरेज अफसरों ने जिनके पास वसीला था और जिनके इसका मौका मिला न सिर्फ आग को सुलगाने और फैलाने ही में

लड़े, किसी भी गाँव का एका नहीं टूटा. लड़ने वालों की तादाद दोनों तरफ़ दसों हजार थी. यह लोग दिन में लड़ते थे और रात को मेझों और जाट दोनों 'पाल' में जमा होकर बातें करते थे और एक दूसरे पर इलजाम लगाते थे कि तुमने बाहर वालों के हाथों में खेल कर अपने इलाक़े के एके को बरबाद कर दिया. कई दिन गुज़राए पर इस लड़ाई के दौरान में किसी दिन भी न किसी मेझो ने किसी औरत या बच्चे को हाथ लगाया और न किसी जाट ने इस पुरानी मरजादा को तोड़ा. आखिरकार एक दिन शाम को दोनों ने महसूस किया कि इस भाई की लड़ाई से किसी का भला नहीं हो सकता. अगले दिन लड़ाई बंद रही. विला मैजिस्ट्रेट को बुलाया गया. मैजिस्ट्रेट और फ़ौजी अफसरों की मौजूदगी में मुसलमान मेझो और हिंदू जाट दोनों ने क्रसम खाई कि अब हम एक दूसरे से नहीं लड़ेंगे. दोनों ने उन बाहर के फिरकापरस्तों को गालियाँ दीं जिन्होंने उनके सदियों के मेल मिलाप और अमन आमान को तबाह करना चाहा था. मैं पाँच नवम्बर को गुड़गाँव खिले के इन गाँवों में गया. मेझा और जाट बड़े प्रेम से मिल जुल कर रहे थे. वह सब सिर्फ़ एक बात पर हटे हुए थे. वह यह कि अब हम किसी बाहर के भड़काने वाले हिन्दू फिरकापरस्त या मुसलिम फिरकापरस्त को अपने इलाके में घुसने न देंगे.

इस सब का इलाज क्या है? अभी किलहल पहली चीज़ यह है कि सब इस बात को समझें और महसूस करें कि यह आवादियों का शहर से उधर भेजा जाना हद दरजे की गलती थी. खुशक्रिसमती से मैंने यह देखा कि पाकिस्तान की सरकार और इंडिया की सरकार

किसी भी कानून का अर्थ नहीं होता. लड़ने वालों की तदारद दोनों दिनों में ही दिनों में लड़ते रहे और रात को मेझो और जाट दोनों 'पाल' में जमा होकर बातें करते रहे और एक दूसरे पर इलजाम लगाते रहे कि तुमने बाहर वालों के हाथों में खेल कर अपने इलाके को बरबाद कर दिया. कई दिन गुज़राए पर इस लड़ाई के दौरान में किसी दिन भी न किसी मेझो ने किसी औरत या बच्चे को हाथ लगाया और न किसी जाट ने इस पुरानी मरजादा को तोड़ा. आखिरकार एक दिन शाम को दोनों ने महसूस किया कि इस भाई की लड़ाई से किसी का भला नहीं हो सकता. अगले दिन लड़ाई बंद री. विला मैजिस्ट्रेट को बुलाया गया. मैजिस्ट्रेट और फ़ौजी अफसरों की मौजूदगी में मुसलमान मेझो और हिंदू जाट दोनों ने क्रसम खाई कि अब हम एक दूसरे से नहीं लड़ेंगे. दोनों ने उन बाहर के फिरकापरस्तों को गालियाँ दीं जिन्होंने उनके सदियों के मेल मिलाप और अमन आमान को तबाह करना चाहा था. मैं पाँच नवम्बर को गुड़गाँव खिले के इन गाँवों में गया. मेझा और जाट बड़े प्रेम से मिल जुल कर रहे थे. वह सब सिर्फ़ एक बात पर हटे हुए थे. वह यह कि अब हम किसी बाहर के भड़काने वाले हिन्दू फिरकापरस्त या मुसलिम फिरकापरस्त को अपने इलाके में घुसने न देंगे.

इस सब का इलाज क्या है? अभी किलहल पहली चीज़ यह है कि सब इस बात को समझें और महसूस करें कि यह आवादियों का शहर से उधर भेजा जाना हद दरजे की गलती थी. खुशक्रिसमती से मैंने यह देखा कि पाकिस्तान की सरकार और इंडिया की सरकार

दोनों अब इस चीज को समझ गई हैं. वजीर आजम नवाबजादा लियाकत अली खां और रिफ्यूजियों के वजीर राजा ग़ज़नफ़र अली खां दोनों ने मुझे यकीन दिलाया कि उनकी सरकार अब अपनी यह पालिसी तय कर चुकी है कि जो हिंदू भी पाकिस्तान में रहने को राखी हों उन्हें उनके घरों में रक्खा जावे और उनकी पूरी हिरासत की जावे और उनके साथ और मुसलमानों के साथ बर्ताव में किसी तरह का फ़रक़ न किया जावे. वह इसके लिये भी तय्यार हैं कि जो हिन्दू पाकिस्तान छोड़ कर चले आए हैं वह भी अगर वापस जाने को तय्यार हों. तो उनकी भी हर तरह हिरासत और मदद की जावे. कोई वजह नहीं कि इस मामले में हम पाकिस्तान सरकार की बात पर भरोसा क्यों न करें. कुछ भी हो तजरवे ने और उनके अपने नफ़े नुकसान ने उन्हें इस नतीजे पर पहुँचा दिया है. मैंने यह भी देखा कि इस मामले में राजा ग़ज़नफ़र अली की कोशिशें बहुत अच्छा असर कर रही हैं और तारीफ़ के काबिल हैं. हाल में अपने हिंदू दोस्त और साथी पूरबी पंजाब की सरकार के मेलम के लिये ज़ान अकसर लाला अबतार नरायन की मदद से राजा ग़ज़नफ़र अली ने करीब नौ हजार ऐसे हिंदूओं को जो मेलम से चले जाने का फैसला कर चुके थे समझा बुझा कर उनके घरों में रोक लिया. तीन स्पेशल ट्रेन उन्हें मेलम से हिंदुस्तान पहुँचाने के लिये तय हो चुकी थीं. उन सब की रखायमंदी से यह तीनों ट्रेन वापिस कर दी गईं.

पच्छिमों (पंजाब के इन्स्पेक्टर जनरल आफ़ पुलिस मि० कुरवान अली) की सूबे के अन्दर फिर से अमन अमान कायम करने की पूरी कोशिशें कर रहे थे. जब वहाँ का असेम्बली ने दो मुसलमानों

दोनों अब इस चीज को समझ गई हैं. वजीर आजम नवाबजादा खां और रिफ्यूजियों के वजीर राजा ग़ज़नफ़र अली दोनों ने मुझे यकीन दिलाया कि उनकी सरकार अब अपनी यह पालिसी तय कर चुकी है कि जो हिंदू भी पाकिस्तान में रहने को राखी हों उन्हें उनके घरों में रक्खा जावे और उनकी पूरी हिरासत की जावे. वह इसके लिये भी तय्यार हैं कि जो हिन्दू पाकिस्तान छोड़ कर चले आए हैं वह भी अगर वापस जाने को तय्यार हों. तो उनकी भी हर तरह हिरासत और मदद की जावे. कोई वजह नहीं कि इस मामले में हम पाकिस्तान सरकार की बात पर भरोसा क्यों न करें. कुछ भी हो तजरवे ने और उनके अपने नफ़े नुकसान ने उन्हें इस नतीजे पर पहुँचा दिया है. मैंने यह भी देखा कि इस मामले में राजा ग़ज़नफ़र अली की कोशिशें बहुत अच्छा असर कर रही हैं और तारीफ़ के काबिल हैं. हाल में अपने हिंदू दोस्त और साथी पूरबी पंजाब की सरकार के मेलम के लिये ज़ान अकसर लाला अबतार नरायन की मदद से राजा ग़ज़नफ़र अली ने करीब नौ हजार ऐसे हिंदूओं को जो मेलम से चले जाने का फैसला कर चुके थे समझा बुझा कर उनके घरों में रोक लिया. तीन स्पेशल ट्रेन उन्हें मेलम से हिंदुस्तान पहुँचाने के लिये तय हो चुकी थीं. उन सब की रखायमंदी से यह तीनों ट्रेन वापिस कर दी गईं.

पच्छिमों (पंजाब के इन्स्पेक्टर जनरल आफ़ पुलिस मि० कुरवान अली) की सूबे के अन्दर फिर से अमन अमान कायम करने की पूरी कोशिशें कर रहे थे. जब वहाँ का असेम्बली ने दो मुसलमानों

मेम्बरों के घरों में जिनका जनता पर काकी असर था हिन्दू घरों की लूट का माल पकड़ा गया, और ऐसे ही एक मुसलमान सेशन्स जब के यहाँ भी इसी तरह का माल मिला तो इन्स्पेक्टर जनरल ने बिना किसीके इन तीनों को गिरफ्तार कर लिया. बकरीद से कुछ दिन पहले मैंने इन्स्पेक्टर जनरल से कहा कि जो हजाराँ हिन्दू खबर-दस्ती मुसलमान कर लिये गए थे उनमें यह डर फैला हुआ था कि उनके मुसलमान पड़ोसी बकरीद के दिन उन्हें इस बात पर मजबूर करेंगे कि वह उनके साथ गाय की कुरबानी में शामिल हों वगैरा. इन्स्पेक्टर जनरल ने मुझे यक़ीन दिलाया कि पाकिस्तान सरकार इस तरह की मजहब की तबदीली को हरगिब जायब नहीं मानती. उन्होंने फौरन ही अपने एक असिस्टेंट को बुलाकर सूबे भर के सब पुलिस सुपरिन्टेन्डेंटों के नाम एक हुकुम लिखवाया कि इस मामले में सब हिन्दुओं की और जो नए मुसलमान कहे जाते हैं उनकी पूरी पूरी हिफाजत की जावे. यह हुकुम ऐसे शब्दों में लिखाया गया जिनसे मेरी पूरी तसल्ली हो गई और बेतार के तार से सब जिलों को भेज दिया गया. बाद में मुझे मालूम हुआ कि इस हुकुम पर सब जगह ठीक ठीक अमल हुआ और बकरीद सूबे भर में अमन से गुजर गई.

इस पर भी पच्छिमो पंजाब को हालत अभी वहाँ की सरकार के पूरी तरह काबू में नहीं आई थी. जिन तर्कितों को शायद उन्होंने ख़ुद उकसा दिया था उन्हें काबू में लाना इतना आसान नहीं था. इन्स्पेक्टर जनरल ने ख़ुद मुझसे कहा कि जब उन्होंने चार्ज लिया था उस वक़्त कुल पुलिस वालों में से मुशकिल से सौ पीछे दो

मेम्बरों के घरों में जिनका असर था हिन्दू घरों की लूट का माल पकड़ा गया, और ऐसे ही एक मुसलमान सेशन्स जब के यहाँ भी इसी तरह का माल मिला तो इन्स्पेक्टर जनरल ने बिना किसीके इन तीनों को गिरफ्तार कर लिया. बकरीद से कुछ दिन पहले मैंने इन्स्पेक्टर जनरल से कहा कि जो हजाराँ हिन्दू खबर-दस्ती मुसलमान कर लिये गए थे उनमें यह डर फैला हुआ था कि उनके मुसलमान पड़ोसी बकरीद के दिन उन्हें इस बात पर मजबूर करेंगे कि वह उनके साथ गाय की कुरबानी में शामिल हों वगैरा. इन्स्पेक्टर जनरल ने मुझे यक़ीन दिलाया कि पाकिस्तान सरकार इस तरह की मजहब की तबदीली को हरगिब जायब नहीं मानती. उन्होंने फौरन ही अपने एक असिस्टेंट को बुलाकर सूबे भर के सब पुलिस सुपरिन्टेन्डेंटों के नाम एक हुकुम लिखवाया कि इस मामले में सब हिन्दुओं की और जो नए मुसलमान कहे जाते हैं उनकी पूरी पूरी हिफाजत की जावे. यह हुकुम ऐसे शब्दों में लिखाया गया जिनसे मेरी पूरी तसल्ली हो गई और बेतार के तार से सब जिलों को भेज दिया गया. बाद में मुझे मालूम हुआ कि इस हुकुम पर सब जगह ठीक ठीक अमल हुआ और बकरीद सूबे भर में अमन से गुजर गई.

इस पर भी पच्छिमो पंजाब को हालत अभी वहाँ की सरकार के पूरी तरह काबू में नहीं आई थी. जिन तर्कितों को शायद उन्होंने ख़ुद उकसा दिया अथवा इन्स्पेक्टर जनरल ने चार्ज लिया था उस वक़्त कुल पुलिस वालों में से मुशकिल से सौ पीछे दो

उनके सब हुकुम मानते थे. लेकिन अब कुछ हफ्तों के अन्दर दो से बढ़ते बढ़ते यह तादाद पैंतीस तक पहुँच चुकी थी. यह तादाद बढ़ती जा रही थी. जहाँ तक मैं देख सकू पच्छिमी पंजाब की सरकार न पूरी तरह मजबूत थी और न हर तरह काबिल. पर उनकी नियत कम से कम जहाँ तक अमन अमान कायम रखने का संवाल है अच्छी थी और उनकी ताकत और काबलियत दोनों धीरे धीरे बढ़ती जा रही थी.

पूरबी पंजाब की सरकार कुछ ज्यादा कमजोर और नाकाबिल थी. वहाँ के कुछ महकमों की हालत तो खासी अफसोसनाक थी. शायद इसकी खास वजह यह थी कि पच्छिम पंजाब वालों को जमी जमाई सरकार और बने बनाए महकमों मिल गए. पूरबी पंजाब वालों को गवर्मेन्ट का सारा ढाँचा नए सिरे से खड़ा करना पड़ा और वह भी इन अफरतफरी के दिनों में. उन्होंने जलन्धर के इसलामियां कालेज को अपना काम चलाऊ सेक्रेटेरियट बना रक्खा था. उस इमारत की हालत सेक्रेटेरियट कहलाने के काबिल नहीं थी. मुझे उम्माद है यह सारी हालत वहाँ सुधरती जा रही है.

अब हम जरा ज्यादा टिकाऊ इलाज की तरफ ध्यान दें. इसके लिये पहले हमें यह समझना होगा कि हमारी बीमारी असल में है क्या? किन किन कारणों ने मिल कर आज कल की इस सुसीबत को खड़ा किया है? दो चीजें हैं जो इस हालत के लिये जिम्मेवार हैं. इनमें पहली चीज हमारा यह स्वभाव है कि हम जिन्दगी को किरकों, सम्प्रदायों, मजहबी गिराहों यहाँ तक कि चीलों और जातपाल की शकल में ही देखते हैं. दूसरी चीज विदेशियों

न्यासन्द
हमारी राई
दिसम्बर '४७
उन के सब حکم मानते تھے. لیکن اب کچھ ہفتوں کے اندر دو سے بڑھتے بڑھتے یہ تعداد پینتیس تک پہنچ چکی تھی. یہ تعداد بڑھتی جا رہی تھی. جہاں تک میں دیکھ سکا تھی پنجاب کی سرکار. پوری طرح مضبوط تھی اور نہ ہر طرح قابل. پر ان کی نیت کم سے کم یہاں تک امن امان قائم رکھنے کا سوال تو اچھی تھی اور ان کی طاقت اور قابلیت دونوں دھیرے دھیرے بڑھتی جا رہی تھیں.

پوری پنجاب کی سرکار کچھ زیادہ کمزور اور ناقابل تھی. وہاں کے کچھ محکموں کی حالت تو خاصی افسوسناک تھی. شاید اس کی خاص وجہ یہ تھی کہ پچھی پنجاب والوں کو جی جمائی سرکار اور بنے بنائے محکمے مل گئے. پوری پنجاب والوں کو گورنمنٹ کا سارا ڈھانچا بننے سے کھڑا کرنا پڑا اور وہ بھی ان اثر آفری کے دنوں میں. انہوں نے جلدھر کے اسلامیہ کالج کو اپنا کام چلاؤ لیکر ٹریٹ بنا رکھا تھا. اس عمارت کی حالت سکرٹریٹ کہلانے کے قابل نہیں تھی. مجھے اُمید ہے یہ ساری حالت وہاں دھیرے دھیرے جا رہی ہے.

اب ہم زیادہ نکاؤ علاج کی طرف دھیان دیں. اس کے لئے پہلے ہمیں یہ سمجھنا ہوگا کہ ہماری بیماری اصل میں کیا ہے؟ کن کن کارنوں نے مل کر آج کل کی اس مصیبت کو کھڑا کیا ہے؟ دو چیزیں ہیں جو اس حالت کے لئے ذمے دار ہیں. ان میں سے پہلی چیز ہمارا یہ سوجھاؤ ہے کہ ہم زندگی کو

مغزوں، کیردالیوں، مذہبی گروہوں یہاں تک کہ قبیلوں اور جان بوجھ کر شکل میں ہی دیکھتے ہیں. دوسری چیز ہمارے دلچسپوں

के राजकाजी हथकंडे. दूसरी चीज बीज है और पहली वह मिट्टी जिसमें वह बीज पनपा और फला फूला. एक चार जब चक्कर चल पड़ा तो चक्कर के अन्दर चकर, एक से एक बढ़ कर शैतानी चक्कर बनते चले गए. हमारी फिरकवाराना गिरोह बन्धियों से दंगे किसाद हुए और इन दंगों ने फिरकवाराना मन मुटाव को और बढ़ाया. परदेसियों के राज ने हमें इस हालत तक पहुँचाया और जिस हालत तक हम पहुँच गए हैं उससे मालूम होता है कि हमारी बचसी और शैतानी गैरों का आसरा ढूँढ़ने की मजबूरी और बढ़ जावेगी. मैं यहाँ इस हालत के राजकाजी पहलू में ज्यादा जाना नहीं चाहता. पर पाकिस्तान के बाद सिक्खिस्तान, जाटिस्तान और न जाने किस किस 'स्तान' की अवाजें अभी से सुनाई देने लगी हैं. यह भी डर है कि अगर, भगवान न करे, पाकिस्तान और इन्डिया दोनों की सरकारों में लड़ाई बढ़ी तो दोनों को दुनिया की दो सब से बड़ी लुटेरी सरकारों इंगलिस्तान और अमरीका का मुँह ताकना पड़ेगा, क्यों कि दोनों को बेशुमार हवाई जहाजों और तरह तरह के नए से नए क्रीजों सामान की जरूरत होगी. तब फिर क्या करें?

सब से पहले हमें इस बात की खबरदस्त कोशिश करनी चाहिये कि हमारी फिरकवारी, मजहबी या इसी तरह के दूसरे गिरोहों में सोचने की आदत विलकुल खत्म हो. हमारा सबसे बड़ा रोग ही यह है कि हम पाँखे को ज्यादा देखते हैं और काल्ह के बिल की तरह हमारे दिमाग पुरानी धुरियों के इर्द गिर्द ही चक्कर लगाते रहते हैं. हमारे इस फिरकापरस्ती और मजहबी

के राजकाजी हथकंडे. दूसरी चीज बीज है और पहली वह मिट्टी जिसमें वह बीज पनपा और फला फूला. एक चार जब चक्कर चल पड़ा तो चक्कर के अन्दर चकर, एक से एक बढ़ कर शैतानी चक्कर बनते चले गए. हमारी फिरकवाराना गिरोह बन्धियों से दंगे किसाद हुए और इन दंगों ने फिरकवाराना मन मुटाव को और बढ़ाया. परदेसियों के राजकाजी पहलू में ज्यादा जाना नहीं चाहता. पर पाकिस्तान के बाद सिक्खिस्तान, जाटिस्तान और न जाने किस किस 'स्तान' की अवाजें देने लगी हैं. यह भी डर है कि अगर, भगवान न करे, पाकिस्तान और इन्डिया दोनों की सरकारों में लड़ाई बढ़ी तो दोनों को दुनिया की दो सब से बड़ी लुटेरी सरकारों इंगलिस्तान और अमरीका का मुँह ताकना पड़ेगा, क्यों कि दोनों को बेशुमार हवाई जहाजों और तरह तरह के नए से नए क्रीजों सामान की जरूरत होगी. तब फिर क्या करें?

सब से पहले हमें इस बात की खबरदस्त कोशिश करनी चाहिये कि हमारी फिरकवारी, मजहबी या इसी तरह के दूसरे गिरोहों में सोचने की आदत विलकुल खत्म हो. हमारा सबसे बड़ा रोग ही यह है कि हम पाँखे को ज्यादा देखते हैं और काल्ह के बिल की तरह हमारे दिमाग पुरानी धुरियों के इर्द गिर्द ही चक्कर लगाते रहते हैं. हमारे इस फिरकपरस्ती और मजहबी

गिरौह बन्दी से हममें अंधे विश्वास, तरह तरह के रालत वहम बढ़ते जाते हैं जिनसे हमारे दिमाग और हमारा चलन दोनों तबी से गिर रहे हैं. यह अनोखा असूल कि हिन्दू और मुसलमान दो नेशन या दो राष्ट्र हैं रालत था, पर इसकी जड़ें हिन्दुओं की लुआलत और उनकी अलगपसन्दी में थीं. मुल्क के बटवारों की मांग बुरी मांग थी, लेकिन पंजाब और बंगाल के दो दो टुकड़े कर डालने की मांग उससे भी ल्यादा बुरी थी. अगर कोई एक नतीजा पंजाब की मुसीबतों से साफ निकलता हुआ दिखाई देता है तो वह यह है कि हमारे मजहबी या धार्मिक साइन बोर्डों से हमारे चलन में कोई फरक नहीं पड़ा. हमें इन तंगनजरियों से ऊपर उठना होगा. आम लोगों का मजहबी मानताओं और रीतरिवाज के मामले में जहाँ तक हो सके अजादी देनी होगी. पर जो लोग इस काबिल हैं उन्हें चाहिये बल्कि उनका कर्ज है कि इन साइन बोर्डों और गिरौह बन्दियों से ऊपर उठें और इस तरह से रहें सहें जिससे इनसानियत, प्रेम और एक दूसरे की सेवा के लयाल बढ़ें, लोग इन्ही असूलों को असली मजहब समझें और इस मजहबे इन्सानियत के फलने फूलने में मदद मिले. इस बात से कौन इनकार कर सकता है कि हमारे ज्यादातर पढ़े लिखे लोग सिर्फ पोलिटिकल मुसलिम, पोलिटिकल हिन्दू या पोलिटिकल सिक्ख हैं. हमारे इस दिखावे से देश की जनता बुरी तरह तबाह हो रही है. यह दिखावा बन्द होना चाहिये.

दूसरी बात यह है कि भोली भाली लेकिन साफ दिल आम जनता का हथ मजबूल संघटन करना चाहिये. मैं कह चुका हूँ

ग़रुद बन्दी से हम में अन्धे विश्वास, तरह तरह के छल्ले दाम ब्रह्म जाते हैं जिन से हमारे दिमाग और हमारा चलन दोनों तब से गिर रहे हैं. यह अनोखा असूल कि हिन्दू और मुसलमान दो नेशन या दो राष्ट्र हैं छल्ले दाम ब्रह्म. हमें इनकी जड़ें हिन्दुओं की लुआलत और उनकी अलगपसन्दी में थीं. मुल्क के बटवारों की मांग बुरी मांग थी, लेकिन पंजाब और बंगाल के दो दो टुकड़े कर डालने की मांग अस किन पंजाब और बंगाल के दो दो टुकड़े कर डालने की मांग अस से बही ल्यादा बुरी थी. अगर कोई एक नतीजा पंजाब की मुसीबतों से साफ निकलता हुआ दिखाई देता है तो वह यह है कि हमारे मजहबी या धार्मिक साइन बोर्डों से हमारे चलन में कोई फरक नहीं पड़ा. हमें इन तंगनजरियों से ऊपर उठना होगा. आम लोगों का मजहबी मानताओं और रीतरिवाज के मामले में जहाँ तक हो सके अजादी देनी होगी. पर जो लोग इस काबिल हैं उन्हें चाहिये बल्कि उनका कर्ज है कि इन साइन बोर्डों और गिरौह बन्दियों से ऊपर उठें और इस तरह से रहें सहें जिससे इनसानियत, प्रेम और एक दूसरे की सेवा के लयाल बढ़ें, लोग इन्ही असूलों को असली मजहब समझें और इस मजहबे इन्सानियत के फलने फूलने में मदद मिले. इस बात से कौन इनकार कर सकता है कि हमारे ज्यादातर पढ़े लिखे लोग सिर्फ पोलिटिकल मुसलिम, पोलिटिकल हिन्दू या पोलिटिकल सिक्ख हैं. हमारे इस दिखावे से देश की जनता बुरी तरह तबाह हो रही है. यह दिखावा बन्द होना चाहिये.

दूसरी बात यह है कि भोली भाली लेकिन साफ दिल आम जनता का हथ मजबूल संघटन करना चाहिये. मैं कह चुका हूँ

कि उस नेशन या राष्ट्र का अस्ती दिल, जिसमें मैं हिन्दुओं मुसलमानों, सिक्खों, ईसाइयों, पारसियों और सब को शामिल करता हूँ, अभी तक साफ है. यह समझना गलत है कि आम जनता पढ़े लिखों की निस्वत ज्यादा फिरकापरस्त है. अंधे विश्वासों को पुश्ते बांधकर खिन्दा रखने वाले और फिरकापरस्ती को बनाए रखने वाले असल में पढ़े लिखे ही हैं. हमें मामूली जनता का इस तरह संगठन करना चाहिये कि वह खुद अपने अन्दर के बहके हुये लोगों और बुरे लोगों को काबू में रख सके.

तीसरी चीज यह है कि हमें अपने देश के राजकाज से अँगरेजों, अमरीका वालों या किसी भी और मुल्क वालों को जितनी जल्दी हो सके विल्कुल अलग कर देना चाहिये. इसके लिये हमें अपनी उन सब तजवीबों और योजनाओं को बदलना होगा जो हम अपनी आगे को राजकाजी, माली या तिजारीति जिन्दगी के बारे में कर रहे हैं. हमें अपने राजकाज, दस्तकारी और तिजारीति सबका आगे का नकशा ज्यादा समझ के साथ, सबके और खासकर जनता के भले का ज्यादा से ज्यादा ख्याल रखते हुए, नेकी और बढी के पुराने आदर्शों को सामने रखते हुए और अँगरेजों से तय्यार करना होगा कि जिससे हमारा एक एक गाँव और हमारा सारा देश पूरी तरह अपने पैरों पर खड़ा हो सके. उसे किसी बाहर वाले का मुँह तकना न पड़े.

आखरी चीज यह है कि हमें अपनी हिन्दू और मुसलिम देसी रियासतों का बह डौंचा जो हजारों बरस का पुराना हो गया है और जो आजकल की दुनिया की हालत में हमारा कोई भला नहीं कर

कमरे में बैठें या राश्ट्र का अस्ती दिल जिस में हमें हिन्दुओं मुसलमानों, सिक्खों, ईसाइयों, पारसियों, सब को शामिल करना होगा. अभी तक साफ है. यह समझना गलत है कि आम जनता पढ़े लिखों की निस्वत ज्यादा फिरकापरस्त है. अंधे विश्वासों को पुश्ते बांधकर खिन्दा रखने वाले और फिरकापरस्ती को बनाए रखने वाले असल में पढ़े लिखे ही हैं. हमें मामूली जनता को बनाए रखने वाले असल में पढ़े लिखे ही हैं. हमें मामूली जनता को बनाए रखने वाले असल में पढ़े लिखे ही हैं.

तीसरी चीज यह है कि हमें अपने देश के राजकाज से अँगरेजों, अमरीका वालों या किसी भी और मुल्क वालों को जितनी जल्दी हो सके विल्कुल अलग कर देना चाहिये. इसके लिये हमें अपनी उन सब तजवीबों और योजनाओं को बदलना होगा जो हम अपनी आगे को राजकाजी, माली या तिजारीति जिन्दगी के बारे में कर रहे हैं. हमें अपने राजकाज, दस्तकारी और तिजारीति सब का आगे का नकशा ज्यादा समझ के साथ, सबके और खासकर जनता के भले का ज्यादा से ज्यादा ख्याल रखते हुए, नेकी और बढी के पुराने आदर्शों को सामने रखते हुए और अँगरेजों से तय्यार करना होगा कि जिससे हमारा एक एक गाँव और हमारा सारा देश पूरी तरह अपने पैरों पर खड़ा हो सके. उसे किसी बाहर वाले का मुँह तकना न पड़े.

आखरी चीज यह है कि हमें अपनी हिन्दू और मुसलिम देसी रियासतों का बह डौंचा जो हजारों बरस का पुराना हो गया है और जो आजकल की दुनिया की हालत में हमारा कोई भला नहीं कर

सकता, खत्म कर देना चाहिये. राजा और प्रजा दोनों का इसी में भला है. सारे देश का इसी में भला है. हमारे इन राजाओं और नवाबों को समझ लेना चाहिये कि जब समाज ऊँच नीच में बँट जाता है तो एक समय आता है कि जब ऊँचे कहलाने वालों का सबसे बड़ा फर्क यही होता है कि वह खुद अपने ऊँचेपन की बात खोद लें. पटियाला और फरीदकोट, अलवर और भरतपुर, कपूरथला और बहावलपुर ने ऊपर की तमाम मुसीबतों को बढ़ाने में जो अफ़सोसनाक और बुरा हिस्सा लिया है उसे मैं यहाँ

बयान करना नहीं चाहता.

दुनिया के जो गिरोह इस वक्त इन्सानि समाज के सबसे आगे आगे चल रहे हैं और दूसरे गिरोहों को रास्ता दिखा रहे हैं वह अब आदमी आदमी की राजकाजी बराबरी यानी सियासी जम्हूरियत या राजनीतिक जनतंत्र से बढ़कर माली बराबरी यानी इन्तसादी जम्हूरियत या आर्थिक जनतंत्र तक पहुँच चुके हैं. अब इस माली बराबरी से बढ़कर आत्मिक या रहनी बराबरी तक पहुँचने का रास्ता दिखाना शायद हिन्दुस्तान ही के लिये बड़ा है. पन्ध्रम के सोशलिज्म यानी समाजवाद का एक ऐसी मजहबी निगाह के साथ गठजोड़ करना जो सब धर्मों और इन्सानों को अपने अन्दर लिये हुए हो हमारा खास काम है. मालूम होता है कि हमारे इस वक्त के सब दुख दई आगे के इसी सफ़ाई की तय्यारी हैं.

सकता खत्म कर देना चाहिये. राजा और प्रजा दोनों का इसी में भला है. सारे देश का इसी में भला है. हमारे इन राजाओं और नवाबों को समझ लेना चाहिये कि जब समाज ऊँच नीच में बँट जाता है तो एक समय आता है कि जब ऊँचे कहलाने वालों का सबसे बड़ा फर्क यही होता है कि वह खुद अपने ऊँचेपन की बात खोद लें. पटियाला और फरीदकोट, अलवर और भरतपुर, कपूरथला और बहावलपुर ने ऊपर की तमाम मुसीबतों को बढ़ाने में जो अफ़सोसनाक और

दुनिया के जो गिरोह इस वक्त इन्सानि समाज के सबसे आगे आगे चल रहे हैं और दूसरे गिरोहों को रास्ता दिखा रहे हैं वह अब आदमी आदमी की राजकाजी बराबरी यानी सियासी जम्हूरियत या राजनीतिक जनतंत्र से बढ़कर माली बराबरी यानी इन्तसादी जम्हूरियत या आर्थिक जनतंत्र तक पहुँच चुके हैं. अब इस माली बराबरी से बढ़कर आत्मिक या रहनी बराबरी तक पहुँचने का रास्ता दिखाना शायद हिन्दुस्तान ही के लिये बड़ा है. पन्ध्रम के सोशलिज्म यानी समाजवाद का एक ऐसी मजहबी निगाह के साथ गठजोड़ करना जो सब धर्मों और इन्सानों को अपने अन्दर लिये हुए हो हमारा खास काम है. मालूम होता है कि हमारे इस वक्त के सभी सफ़ाई की तय्यारी हैं.

“गीता और कुरान”

लेखक—पंडित सुन्टरलाल

इस किताब के गुरु में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे देकर मिलती जुलती बुनियादी सवाइयों को बयान किया गया है.

उसके बाद गोता के लिखे जाने के बरक की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अश्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आखिर में कुरान से पहले की अरब की हालत, कुरान के बड़प्पन और एक एक शत पर कुरान को तालीम को बयान किया गया है. इस में कुरान को पाँच सौ से ऊपर आयतों का लक्ष्मी तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि कुरान में जेशद, अक्रेवत, आलेवत, तन्नत, जइन्न, कातिर वगैर कित कश गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों को इन दो अमर पुस्तकों को सबका जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को जरूर पढ़ना चाहिये.

किताब आमान हिन्दुस्तानी बरान में, नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकते हैं. पौनेतीन सौ सके की सुन्दर जिल्द बंधो किताब की कोमत बिक्र डई रुप, डाक खर्च अलग.

मैनेजर “नया हिन्दू”

४८ बाई का नाग, इलाहाबाद

Printer—Bishambhar Nath, Vishwavani Press, South Malaka, Allahabad.

Publisher—Bishambhar Nath for Hindustani Culture Society, 48 Bai ka Bagh, Allahabad.

“दुकिता ओरु قرآن”

लिखकिपा - पंडित सुन्टर लाल

अस किताब के शुरुओ में दुनिया के सब बड़ो बड़ो धर्मों की एकता को देखाया गया है. ओरु सब धर्मों की किताबों से हवाले दे के कर मल्लु जल्लु बनिदादी सवाइयों को बयान किया गया है. अस्के बाद गीता के लखे जाने के वकत की अस दिश की हालत, गीता के बड़प्पन ओरु अइक अइक अदीयाई को लिख गीता की तेलीम को बतलाया गया है.

अखिर में कुरान से पहले ओरु की हालत, कुरान के बड़प्पन ओरु अइक अइक बात ओरु कुरान की तेलीम को बयान किया गया है. अइस में कुरान की पाँच सौ से ओरु आइतों का लफ्जु तरजे देया गया है. अइसी वतयाया गया है के कुरान में जेहा, एाकबत, अखर, जन्त, जेन्न, काफु ओखरु कसे गया गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म ओरु इसलाम दोनों को इन दो अमर पुस्तकों की तेलीम जानकारी हासिल करना चाहें ओरु अइस किताब को जरूर पढ़ना चाहिये.

किताब अमल्लु हिन्दुस्तानी बरान में, नागरी ओरु उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकते हैं. पौने तीन सौ सके की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की वकत वकत रोपु - डाक खरुओ अलग

मैनेजर ‘नया हिन्दू’

४८ - पाँच, का बाग, अलाहाबाद

ہندوستانی کلچر سوسائٹی

بمقصد ہندوستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پروجیکٹ کرنا جس میں سب ہندوستانی شامل ہوں۔
(۲) ایکٹا پھیلاتے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا۔

(۳) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سہاؤں، کانفرنسوں، کنجروں کے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں چھل کا پھیلانا۔

—o:—
سہائتی کے پریسیڈنٹ — سر قیصر بہادر سپرو، وائس پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگت داس اور ڈاکٹر عبدالعق، گورننگ کمی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس، سکریٹری — پنڈت ہندو لال، خزانچی — ڈاکٹر قارا چند۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر —
ڈاکٹر سید محمود، مسٹر عبدالعزیز خواجہ، مولوی سید سلیمان مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی جی گھیر، مسٹر ایس، رولرا، پنڈت بشیمبر ناتھ۔

—o:—
سوسائٹی کی ہیمٹی شاخ کا ڈاکٹر —
جھانگیر واتیہ بلڈنگ، ۵۱ سہاتا، گاندھی روڈ، فورٹ ہیمٹی، ہیمٹی شاخ کی مینیجنگ کمیٹی کے ممبر —
شری بی جی — جی — گھیر، شری مہدی صوفی واتیہ، پرنسپل اے —
اے — اے فیضی، شری ایم — بیج — پکواسا، شری مہدی ہنسہ سہتا، سید عبداللہ بریلوی، مسٹر کے — وی — شاہ۔
ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھیے۔

سندھ لال
سکریٹری ہندوستانی کلچر سوسائٹی
۱۴۸ بائیس کا باغ، الہ آباد۔

نوٹ — سوسائٹی کے ممبروں کو "نیا ہند" اور "سوسائٹی کی"

ہندوستانی کلچر سوسائٹی

مکرمہ —
(۱) ایک ایسی ہندوستانی کلچر کا بڑھانا، کھلانا اور پروجیکٹ کرنا جس میں سب ہندوستانی شامل ہو۔
(۲) ایکٹا کھلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا۔

(۳) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سہاؤں، کانفرنسوں، کنجروں کے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں چھل کا پھیلانا۔

—o:—
سوسائٹی کے پریسیڈنٹ — سر تاج بھادور سہتا، وائس پریسیڈنٹ —
ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر بھگوان داس، گورننگ کمیٹی کے پریسیڈنٹ —
ڈاکٹر بھگوان داس، سکریٹری — پنڈت ہندو لال، خزانچی — ڈاکٹر قارا چند۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر —
ڈاکٹر سید محمود، مسٹر عبدالعزیز خواجہ، مولوی سید سلیمان مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی جی گھیر، مسٹر ایس، رولرا، پنڈت بشیمبر ناتھ۔

—o:—
سوسائٹی کی ہیمٹی شاخ کا ڈاکٹر —
جھانگیر واتیہ بلڈنگ، ۵۱ سہاتا، گاندھی روڈ، فورٹ ہیمٹی، ہیمٹی شاخ کی مینیجنگ کمیٹی کے ممبر —
شری بی جی — جی — گھیر، شری مہدی صوفی واتیہ، پرنسپل اے —
اے — اے فیضی، شری ایم — بیج — پکواسا، شری مہدی ہنسہ سہتا، سید عبداللہ بریلوی، مسٹر کے — وی — شاہ۔
ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھیے۔

سندھ لال
سکریٹری ہندوستانی کلچر سوسائٹی
۱۴۸ بائیس کا باغ، الہ آباد۔

نوٹ — سوسائٹی کے ممبروں کو "نیا ہند" اور "سوسائٹی کی"